श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ

7

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ

जिल्द 7

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ

(चतुरथ रुत कथनं)

जिल्द 7

भाई संतोख सिंह

भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला

Shri Gur Partap Suraj Granth (Hindi)

Vol. (VII)

by

Bhai Santokh Singh

Transliterated and Annotated by

Dr. Ratan Singh Jaggi

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ

जिल्द 7

डा० रत्न सिंह जग्गी

प्रकाशक:

भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला।

प्रथम संस्करण: 1976

मूल्य : 8.55 रुपये

मुद्रक:—

स्वैन प्रिंटिंग प्रैस, अड्डा टाँडा, जालन्धर—1

द्वारा

कण्ट्रोलर, प्रिंटिंग एवं स्टेशनरी विभाग, पंजाब, चण्डीगढ़।

प्राक्कथन

पंजाब को भारत की खड्ग भुजा कहा जाता है । यह ठीक भी है । किन्तु पंजाब को मात्र शक्ति एवं सम्पन्न प्रदेश कहना या समझना भ्रामक है । भारतीय साहित्य व संस्कृति के कोष को भी पंजाब ने जगमगाते रत्नों से भरा-पूरा है । भ्रान्ति का कारण काफ़ी हद तक तालमेल की कमी तथा हमारी परतन्त्रता थी । इन्हीं कारणों से भारतीय अपने साहित्य और संस्कृति से कट गए और पाश्चात्य साहित्य के अध्ययन और अनुसंधान को ही अपने जीवन की इति श्री मान बैठे । स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् हमारी भाषाओं और साहित्य ने भी करवट ली और इस दशा में नवजागरण हुआ । इसका प्रभाव यह हुआ कि हम अपने प्रति जागरूक होकर उपने साहित्य और संस्कृति की ओर मुड़े । फलतः जहाँ देशीय भाषाओं में नव साहित्य का सृजन प्रारम्भ हुआ वहाँ हमारी दृष्टि उस भूले-बिसरे साहित्य की ओर भी गई जो किन्हीं कारणों से जनता के सम्मुख नहीं आ पाया था ।

भाषा विभाग, पंजाब ने ऐसे साहित्य को प्रकाश में लाने का बीड़ा उठाया है और अब तक कई दुर्लभ ग्रंथ यथा गुरु नानक प्रकाश, कथा हीर रांझणि की, पंचनद, ज्ञान त्रिवेणी इत्यादि हिन्दी जगत् को भेंट कर चुका है ।

प्रस्तुत ग्रंथ 'श्री गुर प्रताप सूरज' एक महान् रचना है । कवि चूड़ामणि भाई संतोख सिंह जी ने इस अपूर्व काव्य ग्रंथ का सृजन बीस वर्ष की निरन्तर साहित्य साधना के पश्चात् किया । कवि का जन्म गाँव नूरदी, तहसील तरनतारन, ज़िला अमृतसर में भाई देवा सिंह जी के घर 1785 ई० में हुआ । भाई देवा सिंह जी, जिन्हें अपने काम-धंधे के लिए प्रायः अमृतसर आना पड़ता था, ने अपने सुपुत्र संतोख सिंह की शिक्षा-दीक्षा का भार ज्ञानी संत सिंह जी के हाथों सौंप दिया । इनके यहाँ रह कर भाई संतोख सिंह ने गुरुमत विद्या, संस्कृत और ब्रजभाषा का गहन अध्ययन किया । लगभग दस वर्ष तक 'बूड़िए' गाँव में रहने के पश्चात् वे कुछ समय के लिए पटियाला दरबार में आ गए । मगर महाराज राम सिंह के यहाँ वे बहुत दिन टिक न सके । इसके पश्चात् वे श्री उदे सिंह, कैथल नरेश, के राज्य आश्रय में आ गए जहाँ उनको सादर रखा गया :—

उदे सिंह बड भूप बहादुर ।
कवि बुलाए राखिउ ढिग सादर ।
(सतद्रव रासनी)

और फिर 1829 से जीवन पर्यन्त अर्थात् अक्तूबर, 1845 तक वहीं दरबारी कवि रहे और इस काल में उन्होंने प्रस्तुत ग्रंथ की रचना की। इससे पूर्व वे नामकोश, गुरु नानक प्रकाश, गरब गंजनी, बाल्मीकि रामायण का काव्यानुवाद, आत्म पुराण आदि रचनाएँ लिख चुके थे।

वस्तुत: गुरु नानक प्रकाश भी "श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" का ही एक अंग है। गुरु नानक प्रकाश, जिसे कुछ वर्ष पूर्व हम पाठकों के सम्मुख भेंट कर चुके हैं, में श्री गुरु नानक देव जी का जीवन-वृत्त काव्य में लिखा गया है। भाई संतोख सिंह जी इसी प्रकार अन्य गुरुओं के जीवन काव्य लिखना चाहते थे। इसी आशा को फलीभूत करने के लिए उन्होंने गुरु प्रताप सूरज ग्रंथ की रचना की। उन्होंने स्वयं लिखा है :—

श्री गुरु को इतिहास जगत महि, रलमिल रह्यो एक थल सम नाहि
जिम सकता महिं कंचन मिले, बीन डावला ले तिह भले,
तथा जगत ते मैं चुनि लेऊँ कथा समसत सु लिख कर देऊँ।
बानी सफल बरन के कारण, करिहौ सत गुरु सु जस उचारन।
जिम दधि बिखै घ्रित मिल रहै, करहि कथन नीके शुभ लहै,
तिम जग महि बाद बिवादु, गुरु जस संची दे अहिलादु।

(गु० प्र० सू० अंशु 5)

भाई संतोख सिंह जी ने गुरु-काव्य लिखने का बीड़ा उठाया। मगर यह कार्य कोई सरल नहीं था। गुरुओं के जीवन पर प्रकाश डालने के लिए उन्हें कोई भी प्रमाणिक सामग्री उपलब्ध न हुई। फिर भी उन्होंने गुरु ग्रंथ साहिब, दशम ग्रंथ, वारां भाई गुरदास, बाले वाली जन्म साखी, पंज सौ साखी, भक्त माल, ज्ञान रत्नावली, महिमा प्रकाश आदि ग्रंथों का गहन अध्ययन तथा अनुशीलन किया। ऐतिहासिक तथ्यों को अपनी कल्पना एवं प्रतिभा का रंग चढ़ा कर इन्होंने अपने अद्भुत काव्य-भवन का निर्माण कर डाला।

इस बृहद् काव्य रचना का नाम उन्होंने गुरु प्रताप सूरज रखा था, इसलिए संपूर्ण कथानक को सूर्य की गति के आधार पर 12 राशियों, 6 ऋतुओं और 2 अयनों अर्थात् कुल बीस बड़े भागों में विभक्त किया है। पुन: सूर्य की किरणों के आधार पर अध्यायों को अंशुओं की संज्ञा प्रदान की गई है। इसलिए रचना के नामकरण तथा इसके रचना विधान में एक सुन्दर रूपक की कल्पना की गई है। सूर्य की भाँति गुरुओं का जीवन भी अंधकार को दूर करता है।

बारह राशियों में गुरु नानकोत्तर गुरुओं की जीवन गाथा है, छ: ऋतुओं और अयनों में संत सिपाही श्री दशमेश जी का जीवन वृत दिया गया है। इस संपूर्ण रचना के कुल 1150 अध्याय हैं जिनका विवरण निम्न अनुसार है :—

सूरज गुर प्रताप ते, वरनी द्वादश रासि,
अपट साच पातशाह के, बरनों वर गुण रास । (15)
दछणाइने उतराइणे, अयन बनैंगे दोइ,
बदनत रितु जो खषट शुभ, तिम पर बरनन होइ । (16)
प्रथम कही कविता रुचिर, श्री नानक प्रकाश,
पूरबारध उतराध इम, बर बरने गुण लास । (17)
अब कलगीधर की कथा, खषट रुतन पर होइ,
गुरु प्रताप सूरज भयो, या ते सभ गति जोइ । (18)

(गु० प्र० रु० 1, अंशु 1)

केवल परिमाण और आकार की दृष्टि से देखें तो पंजाब के इस हिन्दी कवि की इस अद्वितीय रचना की तुलना में विश्व भर के किसी अन्य कवि की रचना नहीं ठहर पाती । पंजाब के प्रत्येक गुरुद्वारे में सायंकाल इस ग्रंथ की विधिवत् एवं नियमित कथा की जाती है ।

भाई साहिब ब्रजभाषा के विद्वान् कवि होने के साथ-साथ, संस्कृत, पंजाबी तथा अन्य कई भाषाओं के महान् पण्डित थे । बाल्मीकि रामायण तथा आत्म पुराण जैसे संस्कृत ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद इसके ज्वलन्त उदाहरण कहे जा सकते हैं । यह तो गुरु प्रताप सूरज के प्रारम्भ में दिए गए, 'मंगलाचरण' से भी भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है कि उन्हें भिन्न-भिन्न भारतीय भाषाओं पर कितना अधिकार प्राप्त था ।

कवि की काव्य प्रतिभा को परखने के लिए हमारे पास उनके दो ग्रंथ हैं, गुरु नानक प्रकाश और गुरु प्रताप सूरज । इसमें ऐसा काव्य सौष्ठव है कि हर पंक्ति पर कवि की काव्य प्रतिभा को देखकर चकाचौंध हो जाना पड़ता है । भाव और भाषा दोनों की दृष्टि से ही ये अनुपम काव्यत्व के स्वामी ठहरते हैं ।

सोहलवीं-सत्तारहवीं शती में हिन्दी साहित्य में भक्ति-भाव की काव्य रचना का बाहुल्य था । इस धारा के शिरोमणि कवि गोस्वामी तुलसीदास (1532-1625) और सूरदास (1473-1563) थे । गोस्वामी तुलसीदास जी और सूरदास के काव्य मृदुलता और मधुरता के लिए अद्वितीय हैं और लोक कल्याण की भावना से भी इनका काव्य ओत-प्रोत है । कुछ ऐसी ही बात चूड़ामणि भाई संतोख सिंह जी के समूचे काव्य-जगत के बारे भी कही जा सकती है । चाहे इनकी रचना भक्ति भावना प्रधान है फिर भी यह भक्ति काल के अन्तर्गत नहीं आती ।

इस ग्रंथ के हिन्दी में प्रकाशित होने से आलोचक इसका तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे और अन्य हिन्दी कवियों के परिप्रेक्ष्य में पंजाब के इस मेधावी हिन्दी-सेवी का यथोचित स्थान निर्धारित कर पायेंगे । कवि ने इसमें पौराणिक शैली को अपनाया है ।

इस रचना को इसी दृष्टि से देखना उपयुक्त होगा। भाई संतोख सिंह का काव्य गुणों का गुलदस्ता है जिसकी महक के बारे में किसी समकालीन कवि ने लिखा है : –

कविता अपार है कि गुन को पहार है,
कि माधुरी आगार है, कि भाव कवि कोश है।
भूखन है कवि के कि दूखन हा कवि के,
बिदूखन के बीच भी प्रसिद्ध हरि दोष है।
बानी ही उतंग है सु अंक हीऊ रंग है,
अनग अंग भंग के बिसूत्रन निसेस है।
नानक. अरथ जोऊ कीनो कली कल सोऊ,
नाम तो संतोख सिंह धीयवर कोश है।

प्रस्तुत ग्रंथ को आठ जिल्दों में प्रकाशित किया जा रहा है। "सातवीं जिल्द का लिप्यन्तर डा० रत्न सिंह जग्गी ने किया है। इसमें गुरु गोबिन्द सिंह जी के विविध युद्ध, उनके दरबारी कवियों के काव्य सृजन इत्यादि का विशद वर्णन है"। संज्ञा कोश तथा टीका भी पाठकों की सुविधा के लिए इसके साथ ही दे दिए गए हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी जगत् पंजाब के इस महा कवि की महान् रचना का भव्य स्वागत करेगा।

रजनीश कुमार
निदेशक,
भाषा विभाग, पंजाब

पटियाला
10 सितम्बर, 1974

विषय सूची

चौथी रुत — पृष्ठ

पंचम रुत

अथ चतुरथ रुत कथनं

१ ओं सतिगुर प्रसादि[1] ।। श्री वाहिगुरु जी की फते ।।

अंशु १

मंगल : खालसा बहिर चढ़न प्रसंग

१. इश्टदेव—श्री अकाल पुरख—मंगल ।

दोहरा

दीननि द्‌यालु अनंदघन[2] जो सभि मैं लय[3], लीनि[4] ।
लीनि नाम जन जांहि ने तिन कौ कैवल[5] दीनि ।। १ ।।

२. इश्ट गुरु—दसों गुरु साहिबों का—मंगल ।

कबित्त

हरि हरि[6] खोटी मति हरि हरि दै दै नाम[7],
गुरु गुरु[8] नानक जहाजनि को भरि भरि ।
करि करि पार गुरु अंगद अमरदास,
सोढ़ी कुल चंद रामुदास दया ढरि ढरि[9] ।
घरु घरु जस गुर अरजन जानीयति,
श्री हरिगुबिंद हरिराइ रूप धरि धरि ।
दरि दरि[10] दुख हरिक्रिशन नवम गुरु,
श्री गोबिदसिंह लौ चरन पर परि परि[11] ।। २ ।।

३. 'कवि-संकेत' मर्यादा का मंगल ।

चौपई

चंदन सेत[12] सु चरचति[13] अंगा । चंद मनिंद[14] बदन सितरंगा[15] ।
चंद्रिक[16] सेत लग्यो तन संग । जल प्रवाहि जिह रंग सु रंग ।। ३ ।।

---

1. जपु जी के परमात्मा सम्बंधी मूल-मंत्र का संक्षिप्त रूप 2. आनंद से भरपूर 3. समाहित 4. विलीन, तन्मय 5. कैवल्य, मुक्ति 6. प्रत्येक की 7. ऐ परमात्मा ! हरि-नाम दे दे कर 8. गुरुओं के गुरु, परम-गुरु 9. ढल ढल कर 10. दल दल कर, मसल मसल कर 11. पड़ पड़ कर 12. श्वेत 13. लेपित 14. मानिंदु, समान 15. श्वेत रंग का 16. कपूर

चौदहिं लोकनि व्याप महांनी। उचरति कोटहुं अंत न जानी।
नई नई नित कविनि बखानी। अस बानी पद बंदन[1] ठानी ॥ ४ ॥
सुनहु कथा श्री कलग़ीधर की। श्रोता परहरि दुरमति उर की।
अचरज चरित्र गुरु के अहैं। किस महिं शकति जु सगरे कहैं ॥ ५ ॥
गुरक्रिपाल जेतिक किय करुना। मैं भी करहुं तितिक जसु बरना।
मो महिं शकति न रंचक भर है। अपने चलित आप ही करिहै ॥ ६ ॥
भयो खालसा पंथ बिसाला[2]। तिनकौ जुध प्रबंध कराला[3]।
बरनन करौं सुनो मन लाए। श्री कलग़ीधर जिम करिवाए ॥ ७ ॥
नित सिंहनि की सभा लगावैं। 'हतहु रिपुन'[4] उपदेश द्रिड़ावैं।
शसत्रन को अभ्यास सदीवा[5]। मति ऊची राखहु मनि नीवा[6] ॥ ८ ॥
आयुध[7] को विसाहु[8] नहिं करैं। अग मनिंद रैन दिन धरैं।
वाहिगुरु जी की कहिं फते। गरजति भयों खालसा अते[9] ॥ ९ ॥
नितप्रति संगति अतिशै[10] आवै। वसहि अनंदपुरि मोद[11] वढावे।
थिरहिं सदीव सिंह दल भयो। बली[12] तुरंगम चढिवे लयो ॥ १० ॥
किसकौ असु[13] कलग़ीधर देति। को मुल आनहि अपनि निकेत[14]।
ब्रिंद[15] बटोरि सुदागर आनैं। लेति[16] मोल गुर दरब[17] महानै ॥ ११ ॥
लगे तबेले सुंदर घोड़े। चपल, बिसाल, भरे तन, जोड़े[18]।
केतिक हाथी रहि गुरद्वारे[19]। झूलति झूलन डारि शिंगारे ॥ १२ ॥
ब्रिंद ब्रिंद[20] नर ब्रिंद सथान। उतरे डेरे परे महान।
सतिगुर पौर[21] भीर बहु रहै। राजन के वकील थिर लहैं ॥ १३ ॥
भीर बज़ार विखै बहु नर की। देश बिदेशी बेसन धर की[22]।
बध्यो[23] अनंदपुरा बड़ नगरं। आवहिं चले सिख दिशि सगरं ॥ १४ ॥
निकट निकट त्रिण[24] कितहुं न रहे। खोजति तिसी दूण[25] को लहै।
छुधिति[26] रहति घोरे गन हाथी। चारा अलप आइ बन साथी[27] ॥ १५ ॥
मिल्यो खालसा इक दिन गरज़ी[28]। मरज़ी लखी गुज़ारति अरज़ी।
सुनीअहि श्री सतिगुर महाराजा। निकट न रह्यो हाथीअनि खाजा[29] ॥ १६ ॥

---

1. पूजन; नमस्कार 2. विशाल 3. भयानक 4. शत्रु का वध करो 5. सदैव 6. नीचा 7. शस्त्र 8. उपेक्षा 9. अत्यधिक 10. बहुत अधिक 11. आनंद 12. बलवान् 13. अश्व, घोड़ा 14. घर 15. समूह 16. लेकर 17. धन 18. युगल 19. गुरु के द्वार पर 20. समूहों के समूह 21. ड्योढ़ी 22. भेस धारण करने वालों की 23. वृद्धि हुई 24. घास 25. घाटी 26. भूखे 27. साथ वाले, समीपवर्ती 28. स्वार्थी बन कर 29. चारा

तिम ही त्रिण न तुरंगम केरे। नहिं पाईयत हैं कितहं नेरे।
रहैं छुधिति गज बाजि सु दुरबल। तुम बिन कहे न जाहिं अनत थल ॥ १७ ॥
मरदन दून[1] भई सभि नेरे। नित आमद गज हयनि[2] घनेरे।
इस कारण हम भाखी अरज़ी। करहि खालसा रावरि[3] मरज़ी ॥ १८ ॥
कीरतपुरि आनंदपुर साने। संगत बिचरति गिरनि किनारे।
तिम ही सिंहन को दल होवा। विचरहि बहिर अखेरनि जोवा[4] ॥ १९ ॥
श्री कलग़ीधर गुन गन खानी। सुनी खालसे की अस बानी।
अवनी[5] भार निवारन हेत। घालन घनो जंग रिपु खेत ॥ २० ॥
सिंहनि को संघर[6] सिखरावनि। देनि राज को, तेज वधावनि।
देग़ तेग़ महिं फते करन को। लेनि बचाइ जु गहे शरन को ॥ २१ ॥
घनसुर सों गरजे रिपु हानी[7]। कही खालसे सों इम बानी।
सुत परवार बधति है ज्यों ज्यों। जल सम धरनी पसरहिं त्यों त्यों ॥ २२ ॥
एक दून अबि कहां बिचारी। पसरहिं सिंह धरा महिं सारी।
अपर दून महिं चढि गमनीजै[8]। सावधान शसत्रनि धरि लीजै ॥ २३ ॥
जहिं त्रिण हेरहु हरे किसू के। तहां खालसे को दल ढूके[9]।
बहुर खेत लिहु बाढि उठाई। गज बाजिनि चारहु समुदाइ[10] ॥ २४ ॥
दै करि भेट[11], मिलहि जो आइ। हुइ सहाइ तिह लेहु बचाइ।
जहिं अकरहिं[12] मिलिबे नहिं आवहिं। निज गजनि को जोर जनावहि ॥ २५ ॥
तहां न तजीअहि लेहु कहि करि[13]। आनहुं त्रिपत तुरंगम लें चर।
दिन प्रति करहु इस बिधि फेरे। सभि राजनि ढिग देश घनेरे ॥ २६ ॥
सुनि गुर हुकम खालसा गरज्यो। बांछहि हिंदू तुरकनि तरज्यो[14]।
जे न जरहिं[15] उर जरि जरि जाहि। दुख देवे जिम त्रिण द्रिग मांहि ॥ २७ ॥
अवनी लेनि इरादा धर्यो। चहति गरब राजन परहर्यो।
गुरु मनोरथ साच करनि को। सफलहिं सिंहनि शसत्र धरन को ॥ २८ ॥
सभा बिखै आइसु[16] इम करे। उठे प्रभू निज मंदिर बरे।
खान पान करिकै सुख पायं। सुपति जथा सुख निसा बितायं ॥ २९ ॥
बडी प्राति उठि बज्यो नगारा। सुनति खालसा होयसि तयारा।
गहि गहि तुपकनि[17] चढे तुरंग। गमनहिं वहिर बीरता संग ॥ ३० ॥

---

1. घाटी 2. घोड़े 3. तुम्हारी 4. ढूंढना 5. धरती 2. युद्ध-विद्या 7. शत्रु का विनाश 8. गमन करिए 9. पहुंच गए 10. समूह 11. मूल्य, कीमत 12. अकड़ना 13. कुदाली से भूमि की सीमा निश्चित करके 14. ताड़ना करना 15. सहन करते 16. आज्ञा, आदेश 17. बंदूक

भीमचंद के ग्रामनि गए। जिन डर धारि अकोरन दए[1]।
दुग्ध दधी दे करि घिघिआए। क्रिपा धारि से लीनि बचाए ॥ ३१ ॥
भए समुख जो शसत्रनि गहि गहि। तिन पर मची मारि रिपु तहि तहि।
दुहरि चोब धौंसे पर धरी। तबि गुलकनि[2] की बरखा करी ॥ ३२ ॥
खेती लई बहिर ते काट। बारे ग्राम बिखै रिपु डाटि[3]।
लादि लादि सो डेरनि आए। लरे खालसे शत्रु हटाए ॥ ३३ ॥
जे न टरहिं लरिबे दुख मान। पिखि खेती को बहु नुकसान।
तिनहुं पलावहिं[4] ग्राम मझारे। चलहिं सदन ते निकसि डरारे[5] ॥ ३४ ॥
लूट लूट सभिहिनि को लेईं। महां त्रास रिपु गन को देईं।
बिजै पाइ करि करति अनंद। हटहि खालसा पुरी अनंद ॥ ३५ ॥
मन भावति गज बाजनि आगे। पावहिं त्रिणनि खान सभि लागे।
करहिं सुचेता[6] सतिगुर दरसैं। हरखहिं चरन कमल कहु परसैं ॥ ३६ ॥
वाहिगुरु जी की कहिं फते। लगे दिवान खालसा मते[7]।
सुध सतिगुर को सकल बतावैं। 'इम दूणन[8] महिं धूम मचावैं' ॥ ३७ ॥
'अमुके ग्राम आज बहु लरे'। 'अमुके ते त्रिण बाढनि करे'।
'अमुके लूट खालसे लीनो'। 'अमुको मिल्यो बचावनि कीनो' ॥ ३८ ॥
दुतिय दिवस महिं तिसविधि गए। जाइ कही कीनसि त्रिण लए।
नए ग्राम को नित चलि जावैं। लूट कूट करिकै चलि आवैं ॥ ३९ ॥
माची धूम सु देश पहारनि। परहि लराई मरिबे मारन।
मरे सैंकरे आयुध धारी[9]। परे सैंकरे घाइल भारी ॥ ४० ॥
खेती कटी बहिर ते सारी। किते ग्राम ह्वै गए उजारी।
केतिक राखी लगे सु देनि[10]। सकल समाज बचाइ सु लेनि ॥ ४१ ॥
ढिग ढिग हुते अनंदपुरि जेई। मानी आन[11] नंम्रि भे तेई।
जे राजन के बल को धरैं। तिन पर गज़ब गुज़ारनि करैं ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ चतुरथ रुते 'खालसा बहिर चढन प्रसंग' बरननं नाम प्रथमो अंशु ॥ १ ॥

---

1. भेंट देना 2. शोर; अथवा गोलियों की 3. डांट-डपट कर 4. भगा दिया 5. डर के मारे 6. भाव निवृत्त होकर 7. परामर्श के लिए 8. घाटियों में 9. शस्त्र धारण करने वाले 10. जो घास आदि देने लगे 11. अधीन होना

अंशु २

प्रसंग सुनावनि खालसे प्रति

दोहरा

प्रजा गई दुख पाइकै राजन पास पुकार ।
'लुटे ग्राम सभि खालसे मारे करे उजार ।। १ ।।

चौपई

क्यों न करो परजा रखवारी ? जिस ते लेते दाम हज़ारी ।
जे नहिं चल करि करहु सहाइ । तौ सभि दून उजर करि जाइ'।। २ ।।
भीमचंद ते आदिक राजे । सुनति प्रजा ते कीनि कुकाजे[1] ।
ग्राम ग्राम गहिं चमूं[2] उतारी । दुंदभि ढोल दीनि संग भारी ।। ३ ।।
चिंतातुर सुनि सुनि सभि भए । आपस विखै मेल करि लए ।
मिल्यो हंडूरी अरु जसवाल । भीमचंद आदिक गिरपाल ।। ४ ।।
'अबि गुर दल करि धूम मचाई । बिना लरे बहु क्यों वनि आई ।
इत दिशि जे अखेड़[3] वी चड़ैं । करि नुकसान सिंह दल लड़ैं ।। ५ ।।
सभि मिलि इकथल होइ लरीजे । राज अपनो राखनि कीजै ।
ऐसी मार करहु इक बारी । पुन इत आइ न करे संभारी ।। ६ ।।
आप जि गुर शिकार इत आइ । फिरिबे देहु न तुपक[4] चलाइ ।
जग गुर भयो त क्या हुइ गयो । नहिं राज तो हम ने दयो ।। ७ ।।
जे सनमुख हुइ देहु न जंग । राज बिनाश करै सरबंग[5] ।
कितने ग्रामनि खेत उजारे । नुह[6] बजरूड़[7] कतल करि मारे' ।। ८ ।।
इम सलाह करि चमूं बिथारी । जित आवहि सिंहनि असवारी ।
ले ले ढोल बजाइ नगारे । करति ऊँच धुनि मार बकारे ।। ९ ।।
दुंद मच्यो[8] जबि देश मझारी । तिम ही सिंह चढे बल धारी ।
क्रिखि[9] काटति बहु मचै लराई । तड़भड़ चलहि तुपक समुदाई ।। १० ।।

---

1. बुरे कार्य 2. सेना 3. शिकार 4. बंदूक 5. सम्पूर्ण 6. आनंदपुर के निकट एक ग्राम 7. होशियारपुर जिला का एक ग्राम 8. द्वंद्व-युद्ध शुरू हुआ 9. खेती

मारहिं मरहिं जंग नित होति। कबि कितहुं कबि कितहुं उदोति[1]।
सीखे जंग घात बिधि नाना। दिन प्रति रिपुनि[2] संग घमसाना ॥ ११ ॥

इक दिन बैठ्यो लगै दिवान। बीच बिराजहिं गुर भगवान।
चली वारता करिबे जुध। 'लरहिं पहारी करि करि क्रुध'॥ १२ ॥

तऊ न ठहिरहिं खेत मझारे। कातुर[3] होति परहि जबि मारे'।
क्रिपा धारि गुरु तबहि बखाना। 'तेज खालसे बधहि[4] महाना ॥ १३ ॥

सगा पाइ पसरहि सभि धरा। हिंदू तुरक न होवहि खरा[5]।
बधे समाज राज को भारा। जबि बिदतहि[6] जानहि जग सारा' ॥ १४ ॥

सुनि करि दयासिंह बड धीर। उदेसिंह, आलमसिंह बीर।
मुहकमसिंह, साहिबसिंह जोधा। हिमतसिंह, रामसिंह बोधा ॥ १५ ॥

इन ते आदि खालसा सारा। कर जोरति सरबत्र उचारा।
'मुगल पठाननि तेज बडेरा[7]। सगरो जगत जीत करि जेरा[8] ॥ १६ ॥

अबि हम हुकम आप को चाहति। हरिबे तुरकन हेतु उमाहति[9]।
भयो खालसा बीर बिसाला। मुग़ल पठान होंहि बसि काला ॥ १७ ॥

प्रथम मरद को गरद मिलावैं। बनहिं जरदरू[10] भीरू पलावैं।
दिन प्रति करि करि जंग निबेरैं। पुरि के दुरग कोट सभि घेरैं ॥ १८ ॥

चौंप[11] खालसे की सुनि सतिगुर। कर्यो प्रसंग सुनावनि भा धुर[12]।
'जम ने ठट्यो नेम इक बेरी। हिंसा मैं न करउं किस केरी ॥ १९ ॥

प्रजा बिसाल वधी तिस काला। भयो दूर डर काल कराला।
इक इक कै परवार घनेरे। निपजी संतति[13] अगहुं अगेरे ॥ २० ॥

धरनी पर नर भीर बडेरी। जनमहिं नित म्रितु किसहुं न केरी।
जित कित बन थल ग्राम बसे हैं। सुख ते हरखति नहीं त्रसे हैं ॥ २१ ॥

देव करम जे बेदहुं बरने। जग्य[14] दान सति सिमरन करने।
सो सभि छोरि भ्रशट हुइ गए। बिना मरन हंकारी भए ॥ २२ ॥

समता लगे सुरनि की करने। अहैं तिनहुं सम नांहनि मरने[15]।
तबहि देवता मिलि करि सारे। कमलासन[16] के पास पुकारे ॥ २३ ॥

---

1. प्रकट होते हैं; अथवा प्रातःकाल 2. शत्रु 3. कायर, डरपोक 4. बढ़ेगा 5. सामने खड़ा नहीं हो सकेगा 6. विदित, प्रसिद्ध 7. बड़ा, अधिक 8. अधीन करना 9. उत्साहित करना 10. पीले मुख वाले अर्थात् भयभीत 11. उल्लास, उत्साह 12. आदि घर से हुआ प्रसंग, परमात्मा की दरगाह का प्रसंग 13. संतान उत्पन्न हुई 14. यज्ञ 15. मरने योग्य नहीं, अमृत हैं 16. ब्रह्मा

हे प्रभु ! सभि तुम स्रिशटि बनाई । निज निज कारज सरब लगाई ।
जिम आग्या दिगपालन दई । तिम तिम कार हमहुं सभि कई ॥ २४ ॥
तप आदिक जे करम हमारे । देखति उपजी दया तुमारे ।
अपनी सेवा जानि बिसाला । हम को बखशिश करी क्रिपाला ॥ २५ ॥
जिस ते सरब लोक हित लेने । हम कहु मानि लगे बलि देने ।
सो हमरी मनता जग मांही । भई बिनास, करति को नांही ॥ २६ ॥
तप को करन नेम जम लए । लोक मरन ते सभि रहि गए ।
देवन ते भए धारति जोइ । सभि जीवन अवि त्याग्यो सोइ ॥ २७ ॥
सुनिदेवन ते बाक दुखारे । कमलासन[1] तिह साथ उचारे ।
करता पुरख अकाल क्रिपाल । तिसकी नेत[2] लखहु इस ढाल[3] ॥ २८ ॥
करता अहै अकरती सोइ । तिम ही करहि जथावति[4] होइ ।
अपने अपने थान पयानो । करहि सुक्रित रिदे तुम जानहुं ॥ २९ ॥
जबि प्रमेसरी देव बखाने । गीरबान निज थान पयाने ।
करि करि बंदन पद अरबिंद[5] । पहुंचे धारति रिदै अनंद ॥ ३० ॥
केतिक काल बित्यो तप कियो । जम को नेम सपूरन भयो ।
जबहि जगत की दिशि को देखा । प्रजा बधी[6] जिस बिखै बिशेखा ॥ ३१ ॥
जथा तरी[7] बहुभारी भार । डगमग डोल सकहि न सहार ।
तिस प्रकार होई सभि धरनी । अप्रमान तरनी[8] समु बरनी ॥ ३२ ॥
पाप कलापन[9] ते जम आप । पिख्यो क्रोध करि भा परताप ।
रुद्र ध्यान करि भसमी होए । अगन प्रज्वलत दगध भे कोए ॥ ३३ ॥
बायू वही उडाइ डिगाए । मरि मरि जम के लोक सिधाए ।
पुन दुरभिख्य[10] पर्यो दुखदाई । तिस ते मरे लोक समुदाई ॥ ३४ ॥
नहिं अन प्रापति जबि होवा । बचे जु कुछक मरन तिन जोवा ।
देश छोरि सो चले पलाई[11] । अधिक अन की सुध जित पाई ।
सतुद्रव उलंघि बिपासा गए । रावी चंद्रभगा[12] उलंघए ॥ ३५ ॥
नदी बिदसतां[13] सिंधु बिसाला । तरि करि पारि परे तिस काला ।
गंध्रब इक जलाल तहि भयो । पुरि जलाल तिह नगर बसयो ॥ ३६ ॥
नाम जलालाबाद कहैं अबि । पहुंचे गंध्रब देश जाइ सबि ।
नगर कंधार आदि जे जहां । बसे जाइ जीवे सभि तहां ॥ ३७ ॥

---

1. ब्रह्मा 2. नियति 3. प्रकार 4. यथावत 5. पवित्र चरण, चरणकमल 6. बढ़ी 7. नौका 8. अधिक भार से लदी हुई नौका 9. समूह 10. अकाल 11. भाग चले 12. पंजाब प्रदेश की एक नदी, चनाब 13. नदी विशेष का नाम, जेहलम

गंध्रब देश विखे तिन केरी। वधति भई संतान घनेरी।
कैरव पांडव करि करि क्रुधं। वध्यो बिखाद[1] भयो बड जुधं ॥ ३८ ॥
करिओ महां भारथ[2] भारे। तिन की संतति केरहि मारे।
दुरजोधन को मातुल[3] राजा। सकुनी नाम वधाइ समाजा ॥ ३९ ॥
संग ल्याइ तिन बहु मरिवाए। अरजन खर तीरन सों धाए।
हने नेत के थोरे हरे। तिनहुं बिपरजै[4] मारग लहे ॥ ४० ॥
चार बरन को भेद मिटायो। एक मेक ह्वै भोजन खायो।
आपस महिं सनबंध बनाए। पुत्र सुता के व्याह रचाए ॥ ४१ ॥
तन के संतति पुन वध[5] गई। सकल रीति मरजादा हुई[6]।
निज बित्रहारन को करि लयो। संकर बरन एस विधि भयो ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे चतुरथ रुते **'प्रसंग सुनावनि खालसे प्रति'** बरननं नाम दुतीओ अंशु ॥ २ ॥

---

1. विषाद, अवसाद 2. युद्ध 3. मामा 4. वर्जित 5. बढ़ गई 6. नष्ट हो गई

अंशु ३

श्री गुरु चढन प्रसंग

दोहरा

'जहां वधी संतान तिन भई सकल इक रंग ।
तनुजा उपटी गोरटी[1] बहु सुंदर सरबंग ।। १ ।।

चौपई

मोमन शरफ भयो तहिं राजा । अधिक ब्रिधायहु[2] राज समाजा ।
तिनके सदन हुती पटराणी[3] । सुंदर अंगनि सकल सवाणी[4] ।। २ ।।
तिसते पुत्र भयो बलवाना । ज्वान महान अधिक सवधाना ।
कछु अनयाइ राज मैं कीना । मोमन शरफ जबहि सुनि लीना ।। ३ ।।
रिस धरि तिस को सदन निकारा । नहिं हकारनि बहुर संभारा ।
पिता निकास्यो चलि सो आयो । तिन लोकन मिलि समा बितायो ।। ४ ।।
चिरंकाल जबि मिलि करि रह्यो । नाम सजादा तिस को कह्यो ।
एक सुता उपजी तिस केरी । जो सुंदर सरबंग वडेरी ।। ५ ।।
संकर वरण सु नरन[5] मझारा । तरुनापन[6] तन मांहि संभारा ।
राजा मोमन शरफ महाना । इक दिन पुरि ते करि प्रसथाना ।। ६ ।।
सहिज सुभाइक बिचरति भयो । देश विदेशन देखति गयो ।
आयो तिन लोकन के नगर । जिह ठां बास करति वै सगर[7] ।। ७ ।।
उतर्‍यो बाग मांहि सुख पाए । पिखि बाला को राह बिरमाए[8] ।
उपज्यो काम रिदै तबि भारी । तिन लोकनि की सुता कुमारी ।। ८ ।।
हेरि हेरि[9] करि उर बिरमायो[10] । ब्याहनि हेतु तिनहि ललचायो ।
करि जबरी[11] जबि लई मंगाइ । पास आपने लई बिठाइ ।। ९ ।।

---

1. गोर देश की ; ग़ज़नी और हरात का मध्यवर्ती देश 'गौर' कहलाता है 2. विकसित किया 3. मुख्य रानी, पटरानी 4. सभी की स्वामिनी 5. उन लोगों के बीच 6. यौवन 7. वे सभी 8. भ्रम में पड़ गया 9. देख देख कर 10. भ्रांत हुआ 11. बलपूर्वक

तिन लोकनि की सुता रिसाई। हम नहिं रमहिं, मरहिं बिख खाई।
कै गर पासी पाइ मरैंगी। जल डूबहिं निज प्राण हरैंगी ॥ १० ॥
इम तिनको हठ हेरनि कीना। मोमन शरफ जतन मन कीना।
धन को देन अपर सिरदारी। लोभ दिखायो अनिक प्रकारी ॥ ११ ॥
सभि के संग रम्यो सुख पाए। गरभवती हुइ सुत तिन जाए।
बिद्याधरि पाठक की सुता। तिस ते पोटलखां उतपता ॥ १२ ॥
शेखशरफ इक मुग़ल रहाई। नाम शेखरा सुता सु तांही।
सुंदर रूप तांहि को चीना[1]। तांको गहिकै रमन सु कीना ॥ १३ ॥
तिस के एक पुत्र जनमयो। नाम शेखसमन तिस भयो।
हुती शज़ादे की इक तनीआ[2]। नाम सजाती तिस को भनीआ[3] ॥ १४ ॥
जनम्यों वेटा तिस ते जबै। मोमन शरफ सु बूझी तबै।
तेरा गोत कहहु क्या अहै? सुनति शज़ादी तिस को कहै ॥ १५ ॥
सुता सजादराइ की मैं हौं। तुझ बूझी ते सभि कहि दैहों।
मोमन शरफ सुनति शरमायो। पोती संग रम्यो पछुतायो ॥ १६ ॥
शरफ हिदाइत साईं लोग। तिस को लख्यो वंदगी जोग।
बिसमावत[4] तिस के ढिग गयो। सेवा बिखे रात दिन भयो ॥ १७ ॥
सभी हकीकत[5] कहि समुझाई। बिन जाने अपराध कमाई।
करहि वंदगी पीर तिसी की। उचरति रहै दुआइ खुशी की ॥ १८ ॥
बीत गए वहुते दिन जबै। शरफ हिदायत बोल्यो तबै।
एक समा ऐसा चलि आवै। पुत्र सजाती के विरधावै[6] ॥ १९ ॥
सय्यद संग्या हुइ तिन केरी। राखहिंगे तबि संतति तेरी।
तूं भी नेत[7] मानि जगदीशा। साधन करो वैठि चलीसा ॥ २० ॥
पाप कर्‌यो अनजानपने महि। होइ बिनाशन, देहि कशट नहिं'।
श्री कलग़ीधर करति उचारो। सुनीअह सिंहहु रिदै बिचारो ॥ २१ ॥
जम ते जो भाजे धरि त्रास। सो अरजन ते भए बिनाश।
भीम सैन जुति पांडव आना। तिनै हज़ारनि कीने हाना ॥ २२ ॥
कोप्यो तिसी अंश[8] पर काल। बचहि न क्योहूं अलप विसाल।
महांकाल कालहि कहि काला। उग्र समरथ त्रिसाल कराला ॥ २३ ॥

---

1. देखा 2. पुत्री 3. बताया जाता है 4. भ्रमित हो कर 5. वास्तविकता 6. बड़ा होगा 7. नियति 8. मोमन शरफ़ की संतान पर

दोहरा

अकाल पुरख ते होति है कोटक[1] बिशन महेश ।
तसे सेवक साथ हम मारों चारों शेख[2] ।। २४ ।।

चौपई

सुनि करि सिंह सकल बिसमाए । अद्भुत सतिगुर वाक सुनाएं ।
'साचे पातिशाहु हम तांई । श्रीमुख[3] ते दिहु भेव सुनाई ।। २५ ।।
तिन को अंश सरब ही मरि है । किधौं बीच ते कोइ उबारि है' ।
फुरमायो बच[4] 'लोक घनेरे । तिनकी अंश बिलोकि बडेरे ।। २६ ।।
निज निज धरम छोडि मिल रहैं । तिन पर हुकम नहीं प्रभु कहैं ।
तिसी अंश के सभि मरि जेहैं । इत दिशि को नहिं रहिणा[5] पै हैं ।। २७ ।।
हम ह्वैं पीछे बरख सवासै[6] । तबहि खालसा इनहु बिनासै ।
बिनसति रहैं समै प्रति फेर । यौ तिन की हुइ मूल उखेर' ।। २८ ।।
इस प्रकार सिंहनि समुझायो । सभा उठन को समै सु आयो ।
मंदिर अन्दर ज़ाइ प्रवेशे । गयो खालसा सिवर[7] अशेशे[8] ।। २९ ।।
खान पान करि निसा बिताई । भई प्राति पुन सभा लगाई ।
आनि खालसे दरशन कीना । करि वंदन ढिग बैठि प्रबीना ।। ३० ।।
गरज गरज गुर फते बलावैं । शसत्रन सहत बैसि दुति पावैं ।
राजन के बति चले प्रसंगा । घरे त्रास मिलि भे इक रंगा ।। ३१ ।।
कैतिक ले करि चमूं[9] बिसाला । दिशि अनंदपुर घेरो डाला ।
चहति रहैं लरिबे कहु जंग । जेतिक आगे आइ निसंग ।। ३२ ।।
सिंहन संग भिरति ही रहैं । जे जे बडे सु ऐसे कहैं ।
श्री कलग़ीधर चढि इत ओर । आवहिं तिनहिं दिखावहिं जोर[10] ।। ३३ ।।
सिंहन संग लरहिं नहिं जाइ । संग चमूं के चमूं लराइ ।
बैठि सभा महिं बोलहिं बातन । चाहति हैं संघर के घातन[11] ।। ३४ ।।
सुनि श्री मुख ते तबि फुरमायो । 'भए प्रभाति चहति हम जायो ।
बहु दिन बीते गए अखेर[12] । तित दिशि चलहिं हतहिं कित शेर' ।। ३५ ।।
इस ते आदिक अनिक प्रसंग । भए सुने सभि सिंहन संग ।
सो भि राति सतिगुरु बिताई । होति प्राति के करी चढ़ाई ।। ३६ ।।

---

1. करोड़ों 2. चारों—सय्यद, मुग़ल, पठान और शेख 3. अपने पवित्र मुख से 4. वचन 5. रहना 6. सवा सौ 125 7. शिविर, छावनी 8. अशेष, सभी 9. सेना 10. शक्ति, बल 11. युद्ध का अवसर 12. शिकार

पाइ हुकम रणजीत नगारा। गरज उठ्यो जिम जलधर[1] भारा।
सुनति खालसा होयसि त्यारू। ज़ीन तुरंगम करि शिंगारू।। ३७।।
वसत्र शसत्र ते सजे बिसालै। गहे तुफंगनि[2] चढि चाले।
शौच शनाने[3] शसत्र सजाए। कलग़ीधर आयुध[4] अंग लाए।। ३८।।
बिधि संग कट मों खड़ग निखंग[5]। गह्यो धनुख कर सबज़[6] सुरंग।
जिगा[7] जवाहर ज़ाहिर जोति। झूलति कलग़ी अति दुति होती।। ३९।।
दीन हुकम, अनवाइ तुरंग। भए अरोहनि गहि बल अंग।
जबि कीनसि प्रसथान अगेरे। दुदभि[8] बाज्यो शबद उचेरे।। ४०।।
तुपकन[9] सो तोड़े सु लगाइ। चले बीर होए पिछवाइ।
चंचल बली कुदाइ हयनि[10] को। गमने प्रभु के सग सु बन को।। ४१।।
दीरघ कानन[11] जाइ प्रवेशे। हेरि हेरि म्रिग हने विशेशे।
तुपकन के तड़ाक गन होवैं। दूर दूर इत उत फिर जोवैं।। ४२।।
धुनि ऊची पुन वज्यो नगारा। बन महिं होति कुलाहल[12] भारा।
खेलि अखेर सेल पर सैल[13]। गए गुरु दल जुति सो गैल[14]।। ४३।।
थल उतंग[15] सतिगुर थिर होए। चारहुं दिशि कानन[16] गिर जोए।
हाथ धनुख धार खैंचन कर्यो। शबद उतंग देश तिस भर्यो।। ४४।।
गरज्यो गगन भई धुनि भारी। इस सभि सथल अवाज़ उचारी।
'राखलेहु गुरु जी रखि लेहु। तुम समानता बनहि न केहू।। ४५।।
तजहु छोब[16] उर करुना कीजैं। अपने जानहु राख लईजैं।
हय नीलो[18] पुन तले उतारा। परचति लागे करन शिकारा।। ४६।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'श्री गुर चढन प्रसंग'** बरननं नाम द्वितीओ अंशु।। ३।।

---

1. बादल 2. बंदूक 3. शौच, स्नान आदि से निवृत्त हो कर 4. शस्त्र 5. तरकश, तूणीर 6. हरे रंग का 7. सिर का एक भूषण 8. नगारा 9. बंदूकों से 10. घोड़ों को 11. जंगल 12. शोर 13. सैर, भ्रमण 14. उसी मार्ग पर 15. ऊँचे स्थान पर 16. जंगल 17. क्षोभ शेष 18. नीले रंग के घोड़े से

अंशु ४

जंग प्रसंग

दोहरा

परचति करति शिकार को दूर गए जगनाथ ।
नाद कुलाहल[1] गैल[2] महिं दुंदभि तुपकन साथ ।। १ ।।

चौपई

निकट रह्यो राजनि को डेरा। जिनके मन हंकार वडेरा ।
बलीआचंद सु आलमचंद । सुनि धुनि को उतसाह बिलंद[3] ।। २ ।।
तूरन[4] त्यार होइ असवारा । जिन के संग सिपाहि हज़ारा ।
चहिं[5] वहादरी करनि दिखावनि । कहैं परसपर 'भा मन भावन' ।। ३ ।।
जंग करन को उर हंकारी। आए समुख चमूं[6] ले सारी ।
मिले आनिकरि[7] अनिक पहारी । तुपक चलनि लागी तिस बारी ।। ४ ।।
सिंह शसत्रधारी इत थोरे। जोधा घने आइ उत ओरे ।
तबि कलगीधर पूरव दिशि को । गए भजाइ कुदाइत असु[8] को ।। ५ ।।
केतिक काल खालसा लर्यो । अपने महिं गुर नहीं निहर्यो ।
'हम को छोरि गए करि भाणा[9] । को जाणहिं मन महिं क्या जाणा' ।। ६ ।।
धीरज रह्यो न सिंहनि केरा । रण ते भाजि चले तिस वेरा[10] ।
बिचल्यो[11] पिख्य खालसा जबे । मिलि पहारीयनि मारे तबै ।। ७ ।।
निकसे खड़ग कटे बहु अंग । भई लाल छित श्रोणत[12] संग ।
बिथरी लोथ पोथना[13] होई । मारन मरन भिरे दिशि दोई ।। ८ ।।
बहुत सिंह जबि रण महिं मारे । को दौरति गुर तीर पुकारे ।
'साचे पातशाहु रखि लीजै । तेरो बिरद[14] त्याग नहिं दीजै ।। ९ ।।
शोभति बिना शेर नहिं कानन[15] । जित कित सुनि बाति इहु काननि' ।
सिंहन ते इस बिधि सुनि जबै । श्री कलग़ीधर बोले तबै ।। १० ।।

---

1. शोर 2. मार्ग 3. ऊँचा 4. चलते 5. चाहते 6. सेना 7. आकर 8. घोड़ा 9. इच्छा के अनुसार चले गए 10. बेला, समय 11. विचलित 12. रक्त, खून 13. शव फैल गए 14. विरद, मर्यादा 15. जगल

दोहरा

'सिदक[1] पुकारे खालसा गुर की बानी पाठ ।
आप सिंह आपे बिपन[2], बिरद बिहारी राठ' ।। ११ ।।

चौपई

थिरे गुरु कर धनुख संभारे। सर निखंग ते पंच निकारे।
तान कान लगि तुरत चलाए। शूंकति[3] चाले नाद उठाए ।। १२ ।।
चहुं दिशि ते चल दल उमडायो। सरब खालसे को दिखरायो।
तुमल जुध[4] तबि होवनि लागा। मनहुं रुद्र रस[5] सोवति जागा ।। १३ ।।
भिड़े भेड़ भट मुड़ मुड़[6] लड़े। जे भाजति धरि धीरज खड़े।
हती शलख गुलकनि के ऐसे[7]। हट्यो जलद मुचि[8] बरखा जैसे ।। १४ ।।
लोह परे दुहिं दिशि के जोधा। दंतन पीस धारि बहु क्रोधा।
उर फूटे टूटे भट अंगा। श्रोणत संग भरे सरबंगा ।। १५ ।।
मानहुं खेल फाग को आए। कै पलासा[9] फूले समुदाए।
बूटा एक करौंदे केरा[10]। तिस तरु थिरे गुरु रण हेरा ।। १६ ।।
दुहि दिशि को तबि पिखहिं तमाशा। लरहिं सूरमे होति बिनाशा।
सतिगुर को बलपाई बडेरा[11]। लरति खालसा वध्यो अगेरा[12] ।। १७ ।।
अर्यो जु सनमुख खड़ग प्रहारे। रुंड मुंड करि भू पर डारे।
परी अकाशी फौजां आइ[13]। जित कित देखि रहे बिसमाइ ।। १८ ।।
परहा बंधि[14] जनु घन घट आइ। गन गुलकां[15] बरखा बरखाई।
तुपकनि कड़क गाज जनु परै। छटा पलीते धुखि धुखि टरै ।। १९ ।।
दुंदभि ढोलनि शबद महाना। जनु बरखति घन धुनि गरजाना।
क्रिखि[16] पाकी सम परम पहारी। तोरि फोरि चूरन करि डारी ।। २० ।।
हेला[17] घालि खालसा लर्यो। भाग्यो प्रथम लाज करि मुर्यो।
बलीआचंद आनि पग रोप्यो। पिखि सिपाह भाजी उर कोप्यो ।। २१ ।।
इत ते उदेसिंह धरि धीर। पहुंच्यो ले सिंहनि की भीर।
आलमचंद खड़गि करि नंगा। भयो समुख चहति रण जंगा ।। २२ ।।
आलमसिंह कुप्यो इस देखि। दोनहुं के मनि कोप विशेख।
दोनहुं गहे सिपर शमशेर[18]। घात करनि जूटे सम शेर ।। २३ ।।

---

1. आस्था, विश्वास 2. वन 3. शूं-शूं के नाद के साथ 4. घोर युद्ध 5. रौद्र रस 6. फिर फिर 7. गोलियों की बूछाड़ ने उस का इस प्रकार हनन किया 8. त्याग कर 9. पलाश वृक्ष 10. करौंदा का एक पौधा 11. बड़ा 12. आगे 13. सेनाएं आ गई 14. पंक्ति बांध कर 15. गोलियों के समूह 16. खेती 17. आक्रमण करके 18. तलवार

बाम दाहने फिर मिलि गए। खड़ंग प्रहार प्रहारति भए।
गिरपति समुख सिपर करि दई। रोक्यो वार हुते बलमई ॥ २४ ॥

तिछ पाछै निज वार प्रहारा। खड़ग समेत हाथ कटि डारा।
तिस के भट वहुचे लिय आगा। आलकमंद त्यागि रण भागा ॥ २५ ॥

इम आलमसिंह ले कर फते[1]। वाहिगुरु जी की कहि फते।
दिशा दूसरी बलीआचंद। लरति करति उतसाहि बिलंद[2] ॥ २६ ॥

ऊची धुनि ते बाजति ढोल। ललकारित सूरनि को टोलि।
ऐंचि ऐंचि धनु बान चलावै। तन सिंहनि के पुंज धसावैं ॥ २७ ॥

उदेसिंह चलि सनमुख होवा। सिंहनि संग कर्यो रिपु जोवा[3]।
ब्या देखति हो हतहु तुफंगे। आवहि शत्रू वध्यो कुढंगे ॥ २८ ॥

सुनति खालसे इक विर[4] छोरी। चली समूह शूंकती[5] गोरी।
बलीआचंद जंघ महिं लागी। भाट बहु मरे चमू[6] बहु भागी ॥ २९ ॥

घाइल ह्वै बलीआ हटि पर्यो। बहुर पहारी नहिं को थिर्यो[7]।
चले पलाइन ह्वै बिन धीर। परे गगन के बड बर वीर ॥ ३० ॥

हते सैंकरे जो अर रहे। भजी सिपाह त्रास कौ कहे।
रामकुइर सभि कहति प्रसंग। तीव मैं हुतो प्रभु के संग ॥ ३१ ॥

हुतो अवसथा विखै छुटेरा[8]। मरे सिंह केतिक रण हेरा[9]।
तबि मुझ को कंपा हुइ आई। उपज्यो रिदै त्रास समुदाई ॥ ३२ ॥

क्रिपा द्रिशटि अविलोकन कर्यो। श्री मुख ते मुसकाइ उचर्यो।
'जिम ऊधव को राखि अशोक। क्रिशन सिधार गए परलोक ॥ ३३ ॥

तिम विधि करहिं गुरु भी करनी। रखि गुरबखश सिंह तल धरनी।
बहुर सिधारनगे परलोक। नहिं डर, नहिं डर, बनहु अशोक' ॥ ३४ ॥

श्री कलग़ीधर भाख्यो जबिहूं। रुदन करनि लाग्यो मैं तबिहूं।
श्री मुख ते पुन बाक अलावै। 'रिपुनि चलाइ खालसा आवै ॥ ३५ ॥

धर धीरज कौ उर नहिं रोवहु। संघर मच्यो खरो रहु जोवहु'।
इतने बिखै भजाइ पहारी। अर्यो रह्यो, तिहिं दीनसि मारी[10] ॥ ३६ ॥

चमू अकाशी सभि चलि गई। अंतरध्यान बिलोकति भई।
बहुर खालसा हटि करि आयो। खरे प्रभु को दरशन पायो ॥ ३७ ॥

---

1. विजय 2. बुलंद, ऊंचा 3. देख कर 4. एक बार 5. शूं-शूं का नाद करती हुई 6. सेना 7. रहा 8. छोटा 9. देखा 10. मार दिया

क्रिपा द्रिशटि को देखि गुसाई। धीरज दीनि सभिनि के तांई।
सिंहनि दिशि को पिखत उचारे। हिंदू है पहारीए सारे॥ ३८॥
सुनति खालसा बिनती कहैं। सकल पहारी बनचर[1] अहैं।
सो हमरो हैं खाज बिसाला। खावति रहैं सरबथा काला॥ ३९॥
तबि कलग़ीधर पुन मुसकाए। सभिनि सुनावति बाक अलाए।
सुनहु खालसा जी दे कान। करहिं गिरीश[2] राज अभिमान॥ ४०॥
नहीं नेत[3] भाणे की मानहिं। परमेशुर की गति नहिं जानहिं।
आइ सभा इन के सिर बली। बिन हंकार होई बिधि भली॥ ४१॥

दोहरा

भली निबाही पुरख ने कीनो तीजा लोग[4]।
जिन सिरजी गोई तिसै[5] भिटै तुमारा रोग॥ ४२॥

चौपई

तीन बार इस रीति बखाना। 'रोग समान शत्रु हुइ हाना'।
सुनति खालसे खुशी बिसाले[6]। श्री गुर को रुख[7] लख्यो क्रिपाले॥ ४३॥
बूझ्यो गुर पुन कस[8] रण भयो। महासिंह तबि सभि कहि दयो।
द्वै सरदार हुए सो घाइल। सहत सिपाहि भए करसायल[9]॥ ४४॥
भाग गए नहिं पाइ जमाए। मरे परे को धर तरफाए।
बल रावर को पाइ बडेरा[10]। फते खालसे की इस बेरा॥ ४५॥
सकल बारतौ भाखि सुनाई। तबि सतिगुर सभिहूंनि अलाई।
मरे सिंह सभि दाहन करीअहि। सभि थल खोजि एक बल धरीअहि॥ ४६॥
मान बचन को तत छिन कीनि। करि इकत्र सभि दाह सु दीनि।
घाइल हुते उठाइ सु ल्याए। फते पाइ गुर पुरि को आए॥ ४७॥
बजे खुशी के ब्रिंद[11] नगारे। 'भई जीत' नर नारि उचारे।
मंगल करे अनेक प्रकारा। भा शत्रुनि के शोक अपारा॥ ४८॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'जंग प्रसंग'** बरननं नाम चतुरथे अंशु॥ ४॥

---

1. वन में निवास करने वाले 2. पहाड़ी राजा लोग 3. नियति 4. अर्थात् खालसा पंथ 5. उसी ने इसे लय किया 6. विशाल, अधिक 7. मुख 8. किस प्रकार 9. हरिण के समान भाग गए 10. बड़ा 11. समूह

अंशु ५

काज़ी को प्रसंग

दोहरा

सुनी लड़ाई गिरपतिनि[1] चित शंकत सभि होइ ।
'अलप चमूं गुर संग है हमरे राजे दोइ' ॥ १ ॥

चौपई

सैना पठी संग समुदाई[2] । किस रण करति पराजै[3] पाई ।
वडे बहादुर उर हंकारी । अयुध बिद्या जानत सारी ॥ २ ॥
ठहिरे क्यों न गुरु के आगे । हुइ घाइल से ततछिन भागे ।
जे गुर संग होइ दल महां । हमरो राज थिरहि[4] तबि कहा ॥ ३ ॥
नितप्रति जाट कमीनी जाति । बर्नहि सिंह पाहुल[5] ले जाति ।
खड़ग तुझंग केस कछ धरैं । बहु बिधि मार बकारा[6] करैं ॥ ४ ॥
पातिशाह राजा नहिं गनैं । मारि मारि सभिहिन को भनैं[7] ।
वधति जाति नितप्रति इम पईअति । जिम पड़वा[8] ते निशपति लही अहि ॥ ५ ॥
इनको चहीऐ करनि उपाइ । अलप अहैं सभि किछु बनि जाइ ।
लघु बूटे की तुरत उखारैं । सकैं हलाइ न बट जबि भारै[9] ॥ ६ ॥
अगनि चिंगारा तुरत बुझाई । बनि लगि पसरै ह्वै न उपाई ।
थोरनि दिन को केहरि होइ । पकर लेहिं निरबल हुइ सोइ ॥ ७ ॥
जबि अपनो बल धरि करि गरजै । कौण समुख हुइ तिह तबि तरजै ।
अबि तो सिंह सैंकरे अहैं । इम उतपाति करति सो रहैं ॥ ८ ॥
जबहि हज़ारों गिनती होइ । अरै लर तिन सों तबि कोइ' ?
इत्यादिक मिलि गिरपति[10] कहैं । दल तुरकान हकार्यो चहैं ॥ ९ ॥

---

1. पहाड़ी राजागण 2. समुदाय 3. पराजय, हार 4. स्थिर 5. अमृत संस्कार 6. सिंहनाद 7. तोड़े 8. एकम 9. भारे, बड़े 10. पहाड़ी राजागण

दखण गयों नुरंगा[1] आपि। दिल्ली महिं सूबा बड थापि।
तहां वकील पठन के कारन। कर्यो त्यार समुझाइ उचारनि ॥ १० ॥
दरव हज़ारहुं वसतु समाजे। प्रिथक प्रिथक दीनसि गन राजे।
बहुत मोल ते जो कर आवै। हेतु खुशामद कहि पहुंचावै ॥ ११ ॥
लिखे पत्र पर गुरु ब्रितांत[2]। 'ऊधम देश पाइ बहु भांत।
कहै खालसा मैं अबि कर्यो। हम सों कई बार लरि पर्यो' ॥ १२ ॥
पातिशाहु को त्रास बिसारा[3]। जित कित चाहहि जंग अखारा।
बिगरै तुमसों भी इक वारी। यांते सुध भेजी हम सारी ॥ १३ ॥
अबि उपाइ इस को हुइ आवै। नतु[4] दिन प्रति निज पंथ वधावै।
सैना पठहु मिलहिं हम संग। देहिं निकार करहिं बहु जंग ॥ १४ ॥
इत्यादिक बहु लिखे पठाए। कहि वकील सों बच[5] समुझाए।
सूबे[6] ढिग दिल्ली चलि गयो। सने सने तहिं पहुंचति भयो ॥ १५ ॥
हाथ जोरि बहु दईं अकोरा[7]। सरब प्रसंग भन्यो इत ओरा।
सभि राजन मिलि मोहि पठायो। आस पास इस हित चलि आयो ॥ १६ ॥
तिन सूबे सुनि करि सभि बात। लिख्यो नुरंगे[8] कौ बिरतांत।
धीरज निस वकील कौ दई। गज बाजी जुति भेटैं लई ॥ १७ ॥
इत राजनि बहु सैन बनाई। त्रास गुरु को करि तकराई[9]।
चढ़ैं सिंह गन[10] खेत उजारैं। अरैं लरैं रण मरैं सु मारैं ॥ १८ ॥
राजनि के नित बडो हंगामा[11]। इन कै सहिज सुभाइक कामा।
इक दिन बैठे सभा लगाइ। प्रापति संगति भी समुदाइ ॥ १९ ॥
दरशन करन दूर ते आई। अनिक प्रकार उपाइन ल्याई।
तबि अरदासी[12] अग्र खरोइ। सांभति सकल वसतु को सोइ ॥ २० ॥
पैसा मुहर रजतपण[13] जेते। करहि संभारनि राखहि तेते।
भयो गुरु ढिग अनिक खज़ाना। पुरहिं भावना दासन नाना ॥ २१ ॥
हुतो सलारदीन इक काज़ी। सांईलोक[14] भयो नहिं पाजी।
नहिं हिंदुनि सो धोखा करंता। सभि महिं इक समान बरतंता[15] ॥ २२ ॥
हित दरशन के गुर ढिग आयो। बैठ्यो बहुर अनंद को पायो।
संगति अरु गुर को बिवहार। चिरंकाल लगि रह्यो निहार ॥ २३ ॥

---

1. औरंगज़ेब बादशाह 2. वृत्तांत 3. विशाल, अधिक 4. अथवा, नहीं तो 5. वचन 6. प्रांताधीश 7. भेंट, उपहार 8. औरंगज़ेब बादशाह 9. दृढ़ता 10. समूह 11. शोर 12. प्रार्थना करने वाला 13. चांदी के सिक्के 14. साधु व्यक्ति 15. व्यवहार करता

मन महिं तरकन करहिं बिचारन। लहि अवकाशहिं करहिं उचारनि।
जबहि भीर बहु हटिकरि गई। तबि बूझनि की चित महिं भई॥ २४॥
कह्यो 'गुरु जी तुमरे पास। नर क्यों करि करिते अरदास ?
दिहु असीस कैसे करि देत ? इस को मैं नहिं जान्यो हेत॥ २५॥
जो खुदाइ ने दीन बनाइ। सो भोगति है जित कित जाइ।
हिंदुनि के मति महिं भी ऐसे। पूरब करी प्रमेशुर जैसे॥ २६॥
भोगति सरब जीव सद तैसे[1]। तिस को मेट सकै को कैसे।
खुशी होइ करि बित[2] सुत देति। ऐसो झूठ कहनि किस हेत॥ २७॥
बड प्रशन काज़ी को सुनिकै। उतर दीन सुमति ते भनि कै[3]।
सुनि काज़ी बड बुधि बिचारी। अहै जथावत[4] तथा उचारी॥ २८॥
तऊ जनन को जिम हम देति। तिस गति को अविलोकहु हेतु।
इम कहि करि कागद मस[5] लैकै। पूरब मुहर दिखावनि कै कै॥ २९॥
बरन अपूठे[6] इस पर अहैं। इन ते काज सरति नहिं लहै[7]।
पुन कागद पर दई लगाइ। भए बरन सूधे[8] इस भाइ॥ ३०॥
सुनि काज़ी नर जनमैं जबै। प्रथम करम अनुसारी तबै।
होनहार सिर लिखी सु जाइ। पूठे बरण मुहर जिस भाइ॥॥ ३१॥
जबहि लगावणहार[9] लगावै। हुई सुधे तबि नंम्रि[10] टिकावै॥ ३२॥
तबहि कहहि एह मानुख जोइ। गुरु पीर के आगे होइ।
मसतक शरधा सहत निवावै। सूधे अखर तबि हुइ जावैं॥ ३३॥
तिस को फल सुख भोगनि करै। इस प्रकार जे काज सवरै।
जे मसतक को टेकै नांही। पूठे[11] करम रहैं बिधि तांही॥ ३४॥
गुर महि सिख भावना धरै। सुत बितादि[12] सुख पावन करै।
काज़ी सुनि मन भयो अनंद। ठाढा भयो हाथ द्वै बंदि[13]॥ ३५॥
झुकि झुकि करै सलाम अगारी[14]। गुर तारीफ बलंद उचारी[15]।
प्रभु जी! संसे भयो बिनाश। वाह वाह बड बुधि प्रकाश॥ ३६॥

---

1. सदा उस प्रकार 2. वित्त, धन 3. कथन करके 4. यथावत, उसी प्रकार 5. सिपाही 6. उलटे अक्षर 7. इन से कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता 8. सही, ठीक 9. लगाने वाला 10. नीची, नम्र 11. उलटे, प्रतिकूल 12. वित्त आदि, धन-सम्पत्ति 13. दोनों हाथ बाँध कर 14. आगे, सम्मुख 15. ऊँचे स्वर में गुरु का स्तवन किया

बचन

ऐन खुदाइ अबल गुर आमदह् ।
कदम मिश्रत बंदहि जहान पार करदमहि[1] ।। १ ।।

चौपई

हति संसै सु तसली हौन[2] । अस उतर दे सकहै कौन ।
तुम बिन सुमति धरहि को ऐसे । आप दिखाइ कर्‍यो शुभ जैसे ।। ३७ ।।
पुन सादर बैठायहु काज़ी । सुनि उतर जो अतिशै[3] राज़ी ।
अपर संबाद कर्‍यो सुख पाए । दरशन दे संगति समुदाए ।। ३८ ।।
पूरन कीनि कामना मन की । सुत बित[4] सुख की लालस तिनकी ।
बहुरो[5] उठे चले शुभ मंदिर । जहि इकांत बैठनि थल सुंदर ।। ३९ ।।
सकल खालसा बंदन करि करि । प्रभु दरशन ते मुद[6] बहु धरि धरि ।
निज निज थांन पहुंचते भए । करति सुजसु गुर सुर सुख बहु लए ।। ४० ।।
खान पान करि करि मन भाए । रुचिर प्रयंक[7] प्रभू सुपताए ।
जाम जामनी[8] जागनि धरे । सौच शनान सकल विधि करे ।। ४१ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे चतुरथ रुते **'काज़ी को प्रसंग'** बरननं नाम पंचमों अंशु ।। ५ ।।

---

1. यहाँ आते ही गुरु परमात्मा का रूप (प्रतीत हुए), उनके चरण दासों को प्रतिष्ठा प्रदान करने वाले हैं, (जिन्होंने मुझे) संसार से पार कर दिया है 2. हो गई 3. अत्यधिक प्रसन्न हो गया 4. धन और संतान की 5. पुनः, फिर 6. आनन्द 7. सुखदायक पलंग 8. एक प्रहर यामिनी के रहते, अर्थात् प्रातःकाल

अंशु ६
सिखन प्रसंग

दोहरा

भई प्राति सतिगुर तबै शसत्र बसत्र कौ पाइ[1] ।
अलंकार दीपति रतन सुंदर रूप सुहाइ ।। १ ।।

चौपई

सभा सथान आनि गुर पूरे । सुनि करि पहुंचे सिंह हजूरे[2] ।
सिर नंम्री[3] करि दरशन चिते । वाहिगुरु जी की कहि फते[4] ।। २ ।।
लग्यो दिवान[5] खालसा आयो । सुर गन महिं जिम इन्द्र सुहायो ।
जो संगति दरशन हित आई । करि करि नमो थिरे समुदाई ।। ३ ।।
इक टक हेरति हैं नर नारी । सिर पर ढुरहि चौर बहु बारी ।
चहुंदिशि दूर दूर लगि बैसे । ऊचे धुनि बोले प्रभु ऐसे ।। ४ ।।
अस इसत्री को संगति मांही ? मरद नहीं फिटकार्यौ जांही ।
छोटा बड़ा होइ वय[6] कोई । रिदै सुमति धरि कह्यो न जोई ।। ५ ।।
संगति बिखै सिखणी[7] जेती । गुर वाक सुनि तूशनि[8] तेती ।
कर जोरे इक सिख की तनीआ । खरी होहि सभि महिं बच[9] भनीआ ।। ६ ।।
सचे पातिशाह ! मैं दीन । मरद न कबि फिटकारनि कीनि ।
अपना पुत्र न झिखयो कबही । जाति मरद की लखि बड सभि ही ।। ७ ।।
तबि कलगीधर बाक बखाने । साध साध तुव जे इम जाने ।
तऊ जि सिखसंगति इन चीत । सभि को हुइ किस रीति प्रतीत ।। ८ ।।
भागण नाम त्रिया[10] तबि कह्यो । महाराज सुनीयहि जिम त्रह्यो ।
वसहि आगरे नगर महांन । पातिशाह मम पिता दिवान[11] ।। ९ ।।
सभि पर हुकम दरब बहु आवै । सरब कार सरकार चलावै ।
चिरकाल लगि कारज कर्यो । सभा पुज्यो मेरी पित मर्यो ।। १० ।।

---

1. पहन कर 2. दरबार में 2. झुका कर 4. जीत, विजय 5. सभा 6. आयु 7. सिख स्त्रियां 8. चुप हो जातीं 9. वचन (कहे) 10. स्त्री ने 11. दीवान, मंत्री

पातिशाह ने जबिही सुन्यो । निज लोकनि सों ततछिन भन्यो[1] ।
चौंकी दिहु बिठाइ तिस द्वारे । वसतु संभारहु भेरहु तारे[2] ॥ ११ ॥
तिस के पुत्र होइ जे कोई । मुहि डिग जाइ आनियो सोई ।
तूरन[3] शाहि सिपाही आऐ । सभि द्वारन तारे भिरवाए ॥ १२ ॥
हमरे नर हटाइ समुदाई । चौंकी करि ताकीद[4] बिठाई ।
बूझि बारता हम ते सारी । जाइ शाहु के पास उचारी ॥ १३ ॥
सपतसुता तिस के घर मांही । अशटम है अधीन[5] त्रिय तांही ।
भ्राता बंधू अपर नहिं कोई । जो निकेत को मालिक होई ॥ १४ ॥
पातिशाहि इम सुनति उचारी । जनमैं जबि लौ लेहु निहारी[6] ।
होहि पुत्र तों करहु खलासे । सुता भए करि जबत अवासे[7] ॥ १५ ॥
हुकम मानि चौंकी थिरद्वारे । पुजे[8] गरभ के जबि दिन सारे ।
जनम्यो पुत्र तहां सभि जोवा । मंगल को उतसव बहु होवा ॥ १६ ॥
दुंदभि बजे नौबतैं वाजी[9] । सभि परवार भयो बहु राज़ी ।
पातिशाहि जबि सुनिबो कीनि । करहु खलासी आइसु[10] दीनि ॥ १७ ॥
बखश्यो प्रथम समान रुज़ीना[11] । घर खलास ततछिन करि दीना ।
चौंकीदार सिपाही गए । जन[12] मनमान करति सभि भए ॥ १८ ॥
सपत भगनि महिं कहिं तिसकाला । धन मरद की शमस बिसाला[13] ।
सभि परवारि छुट्यो जिस पाछे । इस ते अपर नहीं को आछे ॥ १९ ॥
जिस दाढ़ी ते जप तप जोग । ढलहि सकल दे सुख गन भोग ।
मरद कचहिरी दर दरगाहि । शमश कबूल[14] परहि दुति[15] जाहि ॥ २० ॥
मरद बिना शमस दसतार[16] । इन बिन औरत परहि निहार ।
साचे पातिशाहि मैं चीत । तबि की धरी बिसाल प्रतीत ॥ २१ ॥
जनमति मरद सु बंदखलासी । हम ज़नानीयां सपत प्रकाशी ।
नहिं मुलाहजा[17] किनहिं उबाची । यांते धन शमस है साची ॥ २२ ॥
[18]फारसी—ज़न ज़ुलम जंमहि लानतुहि शबहि रोज़ हरदो मांहि ।
मरदहि जेमहि दर गोश खैर करदमहि ।
दाढी बंदगी ऐनखुदाइ दीदार शुमरहि ।
बग़ैर दाढ़ी शैतान बिसाहस न करदमहि ॥ २३ ॥

---

1. उसी समय कहा 2. ताले लगा दो 3. तुरन्त 4. चेतावनी करके 5. गर्भ 6. देख लो 7. घर पर अधिकार कर लो 8. पूरे हो गए 9. कई प्रकार के नगाड़े बजे 10. आज्ञा 11. प्रतिदिन 12. सभी लोग 13. विशाल दाढ़ी 14. स्वीकृति 15. शोभा 16. पगड़ी 17. परवाह 18. स्त्री का जन्मना पाप है । प्रातः सायं दोनों समय तिरस्कार होता है । पुरुष के जन्म लेने पर कानों में अच्छे शब्द पड़ते हैं । दाढ़ी रखना बंदगी के समान है, प्रभु के दर्शन होने के तुल्य है । दाढ़ी के बिना व्यक्ति शैतान के समान अविश्वस्त है

चौपई

सुनि करहि सकल सभा बिसमाई। धनु धनु बोले तिस तांई।
तवि सतिगुर माख्यो तिस हेरी। धन प्रतीत रिदै अस तेरी ॥ २४ ॥
फारसी—सिखो दाढी तारीफ केश शुमार बालतणह[1]।
बगैर दाढी बदन चशम न दीदमहि[2] ॥ २५ ॥

चौपई

इम सरिगुर करि बचन विलासा। करी संपूरन संगति आसा[3]।
केतिक दिन अनंदपुर रहिकै। भई बिदा पुन बिनती कहि कै ॥ २६ ॥
ले पाहुल[4] खंडे की केते। आयुध धारि गुरु हरखेते[5]।
'ले सिरु पाऊ अवास[6] सिधाए। जस को उचरति जित जित जाए ॥ २७ ॥
जिम आमद तिम खरच बिसाला। गुर के घर होवति सभि काला।
कातक बित्यो सु अगहन आवा। बैठे गुरु दिवान[7] लगावा ॥ २८ ॥
तबि सिखन कर जोरि उचारा। गुर साचे पतिशाहि उदारा।
भाणा[8] प्रभु को जिम उर चाहो। तिम विहार तोरहु[9] सभि माहो ॥ २९ ॥
तऊ परंतु खरच अबि चहीअहि। सीतकाल आयो बहु लहीअहि।
इस प्रकार जबिहु सभि कर्यो। इक वणजारा आवति लह्यो ॥ ३० ॥
धर्यो रजतपण दौन हज़ारे[10]। मसतक टेक्यो गुरु अगारे[11]।
हाथ जोरि जवि सनमुख बैसा। बोलें प्रभु इहु धन है कैसा ? ॥ ३१ ॥
किस को सिख कहां तू रहे ? सुनि गुर संग वेनती कहै।
पुरि[12] मुलताने करहुं बसेरा। अहौं मुरीद निगाहे केरा ॥ ३२ ॥
इत बिवहार[13] करन को आयो। बिक्यो न माल फिर्यो अकुलायो।
बूझ्यो मैं—को ज़हार[14] पीर। सुखों जिस की सुख सधीर[15] ॥ ३३ ॥
लोकन कह्यो—आज के समैं। गुरु पीर ज़हार जग निमैं[16]—।
सुखी सुख, तबहि बिक गयो। साठ हज़ार बनज करि लयो ॥ ३४ ॥
भयो नफ़[17] जेतिक मन जानी। तिस दसवंध[18] भेट मुहि आनी।
श्री सतिगुर तबि भन्यो बचन। जिस को खेत तिसी कहु अन ॥ ३५ ॥
सुनि भाई—को पंथी जाइ। चरित खेत गो दई हटाइ।
दावेदार खेत को होइ न। इह क्या बात लखति है कोइ न ॥ ३६ ॥

---

1. केशों से तो बचपन समझा जाता है 2. आंखों से देखना नहीं चाहते 3. आशाएं 4. अमृत पान कर के 5. प्रसन्न करते 6. घर को 7. सभा 8. भावना, इच्छा 9. उसी प्रकार का व्यवहार अथवा वर्तनी चलाओ 10. दो हज़ार रुपये 11. सामने 12. नगर 13. व्यापार 14. प्रकट 15. धैर्यपूर्वक जिससे सुखों की इच्छा की जाए 16. प्रणाम करो 17. लाभ 18. दसवां भाग

जिह मुरीद दिहु भेंट सु ताहु[1]। गुर के राहु न मारति काहू।
कहि वणजारा सुनहुं गुसाईं। मैं सु मुरीदी पिछल सुनाई ॥ ३७ ॥
सुख गुरु घर ते जबि पाई। तबि को रावरि सिख गुसाईं।
बखशहु कर्‌यो गुनाहु[2] जु पाछे। अबि दीजे सिखी मुझ आछे ॥ ३८ ॥
गुरु भनयों हिंदुनि सिख जेही। बन जैहैं हमरे सिख तेही।
तुरक शत्रु हम मारन करने। पकर्‌यो खंडा तिन को हरने ॥ ३९ ॥
जो उन का सो नहिन मेरा। जो मेरा तिनको नहिं हेरा[3]।
होनि सिख रखि केस बिसाले[4]। देनि लैनि इह सरब सुखाले ॥ ४० ॥
साबत सिदक[5] राखिबो जोइ। अहै कठन ते कठनै सोइ ॥ ४१ ॥
[6]बिसिदक बोइ मंद आमदह। सिदक बोइ खूब मग़ज़ खरैशुदह।
[7]बिमुखाणामिह परत्रंच न सुखं द्रिश्यते क्वचित ॥ ४२ ॥

दोहरा

सिदक[8] बलाई छै करे, बिसिदकी[9] घरन उजाड़।
गुर पीर बिसिदकी के नहीं नानक खेति बिबाड़[10] ॥ ४३ ॥

चौपई

इत्यादिक शुभ बाक सुनाए। रिदे सिदक होयसि अधिकाए।
भयो सिख ले पाहुल[11] सोई। बस्यो निकट गुर शरधा होई ॥ ४४ ॥
केतिक दिन रहि कीनि पयाना। पहुच्यो अपने जाइ सथाना।
भेजनि लग्यो भेट बिधि नाना। लसतु अजाइब[12] दरब महांना ॥ ४५ ॥
श्री सतिगुर पिख की परतीत। पालन करति भए भलि रीति।
कबि कबि गुर दरशन को आवै। संगति संग हज़ारहु ल्यावै ॥ ४६ ॥
द्वै हज़ार धन दयो सुनाए। 'सीत काल लिहु बसत्र बनाए।
तबहि खालसे मोल मंगाइ। लेफ निहाली[13] लए बनाइ ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतरथ रुते **'सिखन प्रसंग'** बरननं नाम खशटमो अंशु ॥ ६ ॥

---

1. उसी को 2. पाप 3. चिंता, हानि 4. लम्बे 5. पूर्ण निष्ठा 6. निष्ठाहीन व्यक्ति दुर्गंध है और निष्ठावान सुगंध के समान है जिससे मस्तिष्क प्रसन्न हो जाता है 7. विमुख व्यक्तियों को यहां और वहां कहीं भी सुख की प्राप्ति नहीं होगी 8. निष्ठा या विश्वास 9. निष्ठाहीनता की अवस्था 10. बिना वाड़ के 11. अमृत पान कर के 12. अद्भुत 13. तुलाई और लिहाफ

अंशु ७

चमूं आवन प्रसंग

दोहरा

इक दिन जन थोरन विखै बैठे गुरु गंभीर।
प्यास लगी इत उत पिख्यो, तबि गडवई न तीर[1] ॥ १ ॥

चौपई

नाम सु ज़ालमसिंह पुकार्यो। जालम[2] पिआस लगी सु हकार्यो।
'ल्याउ सरद जल पीवे हेतु'। इम जबि बोले क्रिपानिकेत[3] ॥ २ ॥
इक सिख सुत सुंदर तिस बारी। निज सरूप उजल हंकारी।
तिन कर जोरति गिरा उचारी। 'हुइ आग्या मैं आनौं बारी'[4] ॥ ३ ॥
शारत करी[5], गयो ततकाले। ले जल को करि प्रेम बिसाले।
पहुंच्यो रुचिर कटोरा हाथ। तिस की दिशि अवलोक्यो नाथ ॥ ४ ॥
अपने हाथ उठाइ कटोरा। देख्यो सिख जुत हाथनि ओरा।
देखति ही बोले तबि नाथ। 'कोमल बहु मलूक तव हाथ ॥ ५ ॥
कहु सिख! क्या कारज करै। बहुत बरीक[6] हाथ दिख परै'।
हाथ जोरि बोल्यो सिख गुर ते। 'किरत न करी कछु में धुर ते[7] ॥ ६ ॥
पातशाह रावरि सिख जोई[8]। अरु कुटंब की सेवा कोई।
मैं नहि करी हेत किसु फल को। आन्यो आज कटोरा जल को ॥ ७ ॥
निज कर ते पूरन करि आना[9]। अपर[10] न कीनसि अपन बिगाना'।
सतिगुर सुनते ही ततकाल। दियो कटोरे ते जल डाल ॥ ८ ॥
कह्यो 'कुसिख का कर जल छुह्यो। पान करन के उचित न रह्यो'।
सुनि करि पायो त्रास बिसाला। गहे चरण सिख ने ततकाला ॥ ९ ॥

---

1. पानी पिलाने वाला पास नहीं था 2. अत्यधिक 3. कृपा के घर ने, कृपा के खज़ाने ने 4. जल 5. संकेत पाकर 6. सूक्ष्म 7. शुरू से 8. जो तुम्हारा सिक्ख है 9. भर कर लाया हूं 10. इस के बिना

शरमिंदति[1] बोल्यो तिस वेरा। 'सिख कदीमी[2] मैं गुर केरा।
पाहुल चरनन[3] की लिय मोही। बखशहु प्रभू दोश जे होही' ॥ १० ॥
तबि सतिगुर उपदेशति भनै। पढिबे ते कुछ सिख न बने।
सेवा करन सिदक[4] इहु जानि। सो तैं किसकी करी न पान[5] ॥ ११ ॥
सुनि सिखा गुरमति इह सार। सति संगति की सेव उदार।
हाथ पवित्र टहिल[6] ते जानहुं। पद पवित्र गुरदरस पयानहु[7] ॥ १२ ॥
संतन तीरथ परसन पंथा। पद पावन भाखहिं सभि ग्रंथा।
सकल रिखीक[8] समेत सरीर। शुभ करमन की सेव सधीर ॥ १३ ॥
कौन कौन शुभ करम गिनीजे। करिबे गो तन पावन कीजै।
सो तैं करी न किसकी कैसे। रह्यो अपावन[9] सभि बिधि ऐसे ॥ १४ ॥
जिम मुरदे के अंग अपावन। सुकचति सभि नहिं करहिं छुवावन।
बिना सेव सति संगति केरी। देहि अपावन तिम नर केरी ॥ १५ ॥
यांते हाथ अपावन तेरा। कर्यो न पान हमहु जल गेरा।
सिख समझ्यो सुनि गुर उपदेशू। बखशायहु बनि दीन विशेशू ॥ १६ ॥
सिख संतन दिज अतिथन केरी[10]। करिबे लाग्यो सेव घनेरी।
तन मन धन ते सेव करंता। होहि भला मेरी चितवंता[11] ॥ १७ ॥
सिख संगति पिखि करि बहु सेवा। करहिं प्रशंशनि[12] ढिग गुरदेवा।
'नितप्रति सेवा महिं सिख राता[13]। अपनो भला करनि तिन जाता' ॥ १८ ॥
सुनि कलग़ीधर भए प्रसंन। खुशी करी भा ततछिन धन।
इतनी कथा उचारि सुनाई। प्रेम समाधि रिदै हुइ आई ॥ १९ ॥
रामकुइर मुंदित[14] करि नैन। बैठ्यो अचल, ~कहै को बैन।
सभि श्रोता मन आनंद पाए। अपने अपने थान सिधाए ॥ २० ॥
पाछल पहिर दिवस को हुतो। बुढा तबि समाधि महिं जुतो।
सरब जामनी[15] तिवं बिताई। जागे जबि प्रभाति हुइ आई ॥ २१ ॥
उठि करि सौच समेत शनाने। थिरे आनि आसन जिस थाने।
सुननि हेतु श्रोता चलि आए। गुरु चरित्र जिन के मन भाए ॥ २२ ॥
संमत सत्रां सैय इक्कासी। जेठ मास इहु कथा प्रकाशी।
सिंह सिखन को लग्यो दिवान[16]। रामकुइर तबि करती बखान ॥ २३ ॥

---

1. लज्जित हो कर 2. आदि काल का 3. चरणामृत 4. निष्ठा, विश्वास 5. हाथ 6. सेवा 7. जाने से 8. सभी ऋषि 9. अपवित्र 10. अतिथियों की 11. चित्र में बिचार करता 12. स्तुति, प्रशंसा 13. अनुरक्त, लीन 14. बंद कर के 15. रात्रि 16. सभा, दीवान

भूल चूक मुझ ते जहिं होइ। गुर बखशिंद[1] बखश[2] है सोइ।
अगम अगाध गुरु इतिहास। नर बपुरे की बुधि कहां सु ॥ २४ ॥
जथा समुंद्र न सीप उलीचैं। तारे जिम असंख नभि वीचे।
तथा कथा गुर बरनै कौन। कहति सुनति सिखन मुख भौन ॥ २५ ॥
सकल कामना पूरन हारी। सिखी हुइ शरधा उर भारी।
गुर करुना ते चार पदारथ। पाइ कथा ते पुरवहिं[3] सारथ ॥ २६ ॥
सुनहु प्रीत करि श्रोता सारे। कहौं कथा गुर की बिसतारे।
भीमचंद ते आदि पहारी[4]। दिली पठ्यो वकील अगारी[5] ॥ २७ ॥
तिन कहि पठ्यो सभिनि के पास। खरचे दरब काज हुइ रास[6]।
शाहु निकट सूबे[7] सुध सिखी। तऊ जाइ ऐसी कुछ दिखी ॥ २८ ॥
पठहि न सैन विना धन लीने। कहि करि इक द्वै वार पतीने[8]।
भीमचंद सभि संग बिचारा। दैबे हितु धन संचि उचारा ॥ २९ ॥
सभि ते करि इकत्र पठि दीनि। बिनती लिखी अधिक बनि दीन।
जे नहिं करि है शाह सहाइ। तौ हम अलंब[9] लेहिं किस थाइं ॥ ३० ॥
सदा आसरा बढो हमारे। तुम सम सूबे सुखद उदारे।
इत्यादिक लिखि पठी बनाइ। लाख रजतपण[10] जमा कराइ ॥ ३१ ॥
बैठि सभिनि महिं भने प्रसंग। आवहि शाहु सैन हित जंग।
लरहिं गुरु को देहिं निकासे[11]। तुम बैठे पिखि लेहु तमाशे ॥ ३२ ॥
देनो दरब सफल ही जानो। नित को जंग मिटहिं हित ठानो।
इम कहि निज महिं हरख उपावैं। करहिं प्रतीखन[12] दल कबि आवै ॥ ३३ ॥
दिलि महिं पहुंचयो धन जाई। सूबे पास दियो समुदाइ।
करि लालच तिन सगरो लीनि। सेना पठन मनोरथ कीनि ॥ ३४ ॥
दीनावेग मुग़ल अहंकारी। मनसव[13] जिस को पंच हज़ारी।
तिसहि बुलाइ कीनि सनमाना। शस्त्र बसत्र दे काज बखाना[14] ॥ ३५ ॥
काहलूर की दून[15] सिधारो। तहि राजनि को काज सुधारो।
कुछक सैन श्री गुरु हजूर। पाइ रख्यो तिस देश फतूर[16] ॥ ३६ ॥
हज़रत को आयहु परवाना। करहु प्राति को तहिं प्रसथाना।
दूसर पैडेखां उमराइ। तिस को तिम ही निकट बुलाइ ॥ ३७ ॥

1. क्षमा करने वाला है 2. क्षमा कर देना 3. पहले से ही 4. पहाड़ी राजे 5. पहले ही 6. कार्य को सुचारु रूप से सम्पन्न कराने के लिए 7. प्रांताधीश 8. यकीन हो गया है 9. आश्रय 10. रुपये 11. निकाल देंगे 12. प्रतीक्षा 13. अधिकार 14. काम बताया 15. वादी, घाटी 16. गड़बड़, फसाद

तिह सम इह भी पंच हज़ारी। सादर[1] चढिबे हेतु उचारी।
शाहु तरफ ते बखशिश करी। दोनहुं त्यार भए बिधि खरी[2] ॥ ३८ ॥
गुलकां[3] बहु बरूद बरताई[4]। दस हज़ार इम फौज सजाई।
कर्यो कूच दिली पुरि छोरा। मग कहिलूर दून की ओरा ॥ ३९ ॥
दुंदभि बाजति चलहि अगारी[5]। छूटे निशाननि फररे भारी[6]।
द्वै उमराव बीर हंकारी। बिद्या अधिक खतंग प्रहारी[7] ॥ ४० ॥
सने सने पावति मग डेरे। आवति भए अनंदपुरि नेरे।
सुनि करि राजे ह्वै करि त्यार। लैं करि सैना ह्वै असवार ॥ ४१ ॥
केतिक मजल अगारी जाइ। तुरकनि संग मिले हरखाइ[8]।
भीमचंद कहिलूरी राइ। बीर सिंह जसपाल मिलाइ ॥ ४२ ॥
मदनपाल सिरमौरी गयो। दे बहु भेट मेल तबि कियो।
गुर की बात सकल समुझाई। इस प्रकार इत धूम उठाई ॥ ४३ ॥
नहिं चाकर नर बीर न कोई। इत उत ते मिलि भा दल सोई।
लर करि पुरि अनंद छुरवावहु[9]। रहै त अपनी आन मनावहु ॥ ४४ ॥
बरजहु नहिं फतूर[10] इत पावै। हम पर अपनो दल न चढावे।
खेती का नुकसान न करै। अपने नगर बास को धरै ॥ ४५ ॥
इत्यादिक समुझावति ल्याए। रोपर ते चढि आगू धाए।
कीरतपुरि कौ उलंघे[11] फेर। आन अनंदपुरि होयहु नेर[12] ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतरथ रुते **'चमू आवण प्रसंग'** बरननं नाम सपतमो अंशु ॥ ७ ॥

---

1. दल सहित 2. भली प्रकार से 3. गोलियां 4. बांटा गया 5. आगे आगे 6. बड़े बड़े ध्वज और झंडे 7. तीर चलाने की विद्या में बहुत दक्ष थे 8. प्रसन्न होकर 9. स्वतन्त्र करा लो, छीन लो 10. फसाद, गड़बड़ 11. पार किया 12. समीप

अंशु ८
जंग प्रसंग

दोहरा

उलंघे कीरतपुरी ते दुंदनभि ब्रिंद बजाइ[1]।
पहुंची खबर अनंदपुरि चमूं तुरक की आइ ।। १ ।।

पाधड़ी छन्द

सभि सैलपती[2] करिकै पुकार। बहु दयो दरब दिली मझार।
आने चढाइ हय दस हज़ार। उमराइ दोइ हित करन रार[3] ।। २ ।।
सुनि गुरु हुकम दीनो उचार। सभि चढहि खालसा शसत्र धारि।
इह प्रथम जंग तुरकान[4] संग। धरि खर[5] खतंग[6] पूरहु निखंग ।। ३ ।।
ततकाल ढारि ज़ीननि तुरंग[7]। कसि कमर लीनि तूरन[8] तुझंग।
दुंदभि बाज्यो रणजीत गाज[9]। सभिहूंनि जानि संग्राम काज ।। ४ ।।
गुलका बरूद वरताए ब्रिंद[10]। तोड़े धुखाइ[11] बीरनि बिलंद[12]।
चढ़ि चढ़ि तुरंग पर वहिर आइ। जित सुने तुरक तित समुख जाइ ।। ५ ।।
कसि कसि तुफंग गुलकानि मारि। रुकियंति अग्र[13] रिपु रास धारि।
जबि छुटी शलख[14] तुरकान जानि। शसत्रनि सभारि बनि सावधान ।। ६ ।।
इक बारि परे दुंदभि बजाइ। मोरन मनिंद[15] घोरन फंधाइ।
करि हलाहूल कड़की कमान। बहु ऐंचि ऐंचि मुचकंति[16] बान ।। ७ ।।
अस उदेसिंह ते आदि बीग। रण भूम आइ बहु सिंह भीर।
गन तुपक चली इक बारि ऐस। भुजियंति धान बिच भाठ जैस ।। ८ ।।
बरछे भरमाइ[17] करि बारि बारि। धसिअग जथा बालमीक मार[18]।
भटगिरति हयन ते उथल कोइ। गुलकान[19] संग फुटि सीस जोइ ।। ९ ।।

---

1. अत्याधिक नगारे बजाए 2. पहाड़ी राजागण 3. लड़ाई 4. मुसलमानों की सेना के साथ 5. तेज़ 6. तीर 7. घोड़ों पर 8. तुरन्त 9. रणजीत नामक नगारा 10. बहुत अधिक गोलियां और बारूद बांट कर 11. तोड़ों को आग लगाई 12. ऊंचे, बड़े 13. आगे से रोकते हैं 14. गोलियों की बूछाड़ 15. के समान 16. छोड़े जा रहे थे 17. घुमा घुमा कर 18. जैसे बिल में सांप दाखिल होता है 19. गोलियों से

रसावल छन्द

दयासिंह धायो। उदैसिंह आयो।
इनै आदि सिंह। मनो कोप सिंह ॥ १० ॥
चले तीर तीखे। बिखीचै सरीखे[1]।
वडे सेल ठेले। भई रेल पेले ॥ ११ ॥
गुरु त्यार होए। रिपू जानि ढोए।
कराचोल पायो[2]। निखंग सुहायो ॥ १२ ॥
कुदंडं संभारा। कठोरं उदारा।
मंगायो सुनीला[3]। शिगार्यो छबीला ॥ १३ ॥
चढ्यो तातकाला। रिपू पुंज काला।
जिगा सो कलंगी[4]। सुहावै उतंगी[5] ॥ १४ ॥
नगारा बजायो। दुचोवै लगायो।
हयंहीन जेई। चले सिंह तेई ॥ १५ ॥
सु कंधै तुफंगा। महांवेग संगा।
लघू एक नारा[6]। तिसी वार पारा ॥ १६ ॥
लराई मचाई। इतै उत जाई।
कदे[7] वार आवैं। कदे पार जावैं ॥ १७ ॥
सु तामो[8] दिखाए। मनो बाज़ आए।
तथा सिंह धाए। नहीं त्रास पाए ॥ १८ ॥
भयो भेर भारी। परी भूर मारी।
महां अरु लोह माचा। रजं श्रेण राचा ॥ १९ ॥

दोहरा

पंजहु मुकते[9] सिंह जबि अरु आलमसिंह बीर।
सलिता[10] दल तुरकान को अरे सैल[11] सम धीर ॥ २० ॥
तिस नारे के पार ही रोक्यो दल समुदाइ।
गिरे हज़ारहुं प्रान बिन, थिरे[12] त्रास को पाइ ॥ २१ ॥

---

1. सांपों के समान 2. तलवार धारण की 3. नीले रंग वाला घोड़ा 4. शिर के भूषण और कलगी 5. ऊंची 6. नाला 7. कभी 8. लोभ बढ़ाने के लिए बाज़ को मांस दिखाना 9. मुक्त हो चुके 10. नदी के समान 11. पहाड़ के समान 12. स्थिरता

रसावल छन्द

चलैं यौं तुफंगैं। भटं अंग भंगैं।
ह्यं उथलैं। नहीं अंग हलैं ॥ २२ ॥
खरे घाव झलैं। पिछारी न चलैं।
वकैं मार मारा। बडो हेल डारा ॥ २३ ॥
थिरे सिंह झलैं। नहीं पैर हलैं[1]।
तुफंगं चलावैं। तुरंगं फंधावैं ॥ २४ ॥
जिसी कौ तकावैं[2]। तिसी को गिरावैं।
दसं बीस गेरे। थिरे और हेरे ॥ २५ ॥
मरे हेरि बीरं। किते होति भीरं।
घने गेरि घोरे। किते पेट फोरे ॥ २६ ॥
किते अंग तोरे। किते छूछ[3] दौरे।
भए शत्रु बौरे। महां डौर डौरे ॥ २७ ॥
तवं पैंड खाना। हंकारी महांना।
प्रहारै सु बाना। न कोऊ समाना ॥ २८ ॥
तवे देखि जुधा। रिदै कीनि क्रुधा।
तबै अग्र आयो। सु ऊंचे सुनायो ॥ २९ ॥

दोहरा

दीन मजबको जुध इह हम जूझनि को आइ।
गुरु तुमारे वड बली मौ कहु बहुत सुनाइ[4] ॥ ३० ॥

रसावल छन्द

लरौं तांहि संगा। पिखौ मोहि जंगा।
अबै आप आवैं। सु हाथं दिखावैं ॥ ३१ ॥
दिखै मोर हाथा। लरैं बान साथा।
अहै चाह मोरी। लरौं नांहि औरी ॥ ३२ ॥
पिखो तीर बिद्या। करैं बीर भिद्या[5]।
जबै बाक गाए। इते बीच आए ॥ ३३ ॥
अलंकार चारु[6]। दिपै रूप भारु।
सु नीला कुदायो[7]। सबै मैं सुहायो ॥ ३४ ॥

1. हिलते नहीं 2. देखते हैं 3. खाली, रिक्त 4. सुनाते हैं 5. भेद न करते हैं 6. सुन्दर 7. कुदलाया, कूदते हुए चलना

गुरु बाक भाखा। सुनो खान माखा[1]।
महां शत्रु मेरा। विजै जंग हेरा ॥ ३५ ॥
दिखों हाथ तेरे। सहो बान मेरे।
करो वार आई। बिसूरैं पिछाई[2] ॥ ३६ ॥
सुनी पैंडखाना। दिलेरी महांना।
रिदै वीच जांना। नहीं त्रास माना ॥ ३७ ॥
अरै मो अगारी[3]। सहै तीर भारी।
कि जै है पलाई। जवै बान खाई ॥ ३८ ॥
कह्यो ऊच वाकं। किजे वार प्राकं[4]।
हिंदू केर पीरं। अहो बीर धीरं ॥ ३९ ॥
लगै वार मेरा। ह्यं देहि गेरा।
बचेंगे न प्राना। विधौं एक बाना ॥ ४० ॥

दोहरा

मम खतंग बड़ ज़ालमी करदम गरद शिताब[5]।
विना जतन जिम मरदत्रे[6] विनसै फूल गुलाबि ॥ ४१ ॥

पाधड़ी छन्द

सुनि गुरु तब्रहि उतर बखानि। अबल[7] सु विगारे[8] आप आनि।
अवल सु वार करदम बनंति[9]। इहु रीति जंग की भट लखंति ॥ ४२ ॥
सुनि करि पठान चमकयो विलंद[10]। दल दुऊ दिखति हुइ को निकंद[11]।
सभि सिंह लखें हति प्रान खान। गुर संग जुधो, नहिं देहिं जान ॥ ४३ ॥
सभि तुरक भनहिं इह[12] बलि महांन। भट लखहिं सुविद्यावान खान।
जबि तजहि तीर गुर बचों नांहि। अबि फते होहि हम जंग मांहि ॥ ४४ ॥
बखतर दुऊन के अंग संग। दोनहुं प्रहार जानहि खतंग।
बांछति बिसाल दोनहु सुजंग। दैवै बीर बहादुर शत्रु भंग ॥ ४५ ॥
हति बलि चुफेरे फेरि खान। गुर दिशि तकाइ बगराइ बान[13]।
ऐंच्यो कुदंड करि लछ भाल[14]। हुइ समुख त्याग दीनसि कराल ॥ ४६ ॥
बड बेग संग शंक्यो छुटंति। जनु सरप कुली तछक लसंति।
गुरु तेज हाथ बहिकाइ दीनि[15]। बड हुतो सबिद्यक सरब चीनि[16] ॥ ४७ ॥

---

1. क्रुद्ध 2. बाद में पश्चाताप करेगा 3. सामने 4. पहले 5. शीघ्र ही मिट्टी से मिला देने वाला है 6. मलने से ही 7. पहले 8. चुनौती दें 9. करना बनता है 10. बहुत अधिक 11. नष्ट 12. पैंदा खान से अभिप्राय 13. तीर कमान पर रख कर खींचना 14. मस्तक को देख कर 15. कंपित कर दिया 16. विद्यावान् और सब कुछ जानने वाला था

सर तऊ लग्यो नहिं बीच भाल। छुइ कान साथ पुन अग्र चाल।
पिखि गुरु कहति किह निकट सीख। बड तीरमदाज न अपर[1] दीख॥ ४८॥
चुक गयो रहहि पछताव भूर। सभि गयो निफल जेतिक गरूर[2]।
अबि फेर वारि दूसर करेहु। नहिं रहहि माखता[3] हेरि लेहु॥ ४६॥
सुनिकै पठान हुइ लाज लीन। नहिं कहति बात मुख मौन कीनि।
उर मैं बिसूरि[4] करकै बिचार। क्या भयो मोहि गा निफल वार॥ ५०॥
हय को धवाइ गुर भाखि फेर। करि वार खान पुन दुतिय वेर[5]।
प्रभु वार वार तिह को सुनाइं। कन रखहु नांहि करि लेहु दाइ॥ ५१॥
तवि पैंडखान चपि कहति बैन। सनमुख न होति मूहि लाज नैन।
मैं निकटि होइ इम बान त्याग। तुम जियत दिखहु नहिं कितहुं लाग[6]॥ ५२॥
वहु कराभ्यास तिस को धिकार। इस वखत चुक्यो दुइ दल मझार।
हुइ बीर वहादर एक वार। पर कहति अबै तुम बारवार॥ ५३॥
तुमरे वचन को वार दूज। करिबो बन्यो, हहु दीह पूज[7]।
नहिं करहुं नांहि, इह लखहु आइ[8]। सावधान आप हूजहि बनाइ॥ ५४॥
कहि करि कुदंड लीनसि कठोर। भाखा मझार सर काढि घोर।
बागर धसाइ बिच पनच फाग[9]। करि शिशत[10] ऐंचि कर श्रोण लाग॥ ५५॥
बखतर सरीर आछाद हेरि। नहिं नगन अंग जित हनहि फेर।
वहुरां बिसाल शुभ भाल जानि। तक कै महान बल जुति पठान॥ ५६॥
सम सरप छोरि तीखन खंतंग। जिस बेग बहुत तीख्न सुढंग।
खपरा[11] दराज़[12] खर सान लाग। शूक्यो सु जाति जबि खान त्याग॥ ५७॥
लटपटी[13] शाल गुर सिर लपेट। तिह छोर साथ करि तीर भेट।
ऊपर उठाइ गा अग्र दूर। बिसमाइ[14] रहे दल दुहनि सूर॥ ५८॥
डूब्यो पठान बहु लाज माँहि। तुरकान बिखै बड नाम जांहि।
ढिग अग्र लंछ वन शत्रु बीर। मुझ को प्रचार[15] थिरता सधीर॥ ५६॥
सद हैफ[16] करन बिद्या बिसाल। नहिं सर्‌यो कार जबि जंग काल।
अबि वारि तिनहुं कहु बनहि देनि। जिम कियो जंग महिं देनि लेनि॥ ६०॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'जंग प्रसंग'** बरननं नाम अशटमो अंशु॥ ८॥

---

1. अन्य, दूसरा 2. अहंकार 3. क्रोध, अरमान 4. दुःखित होकर 5. बार 6. कहीं नहीं लगा 7. सभी के पूज्य हो 8. यह (तीर) आ रहा है 9. बाणासन पर टिकाया 10. निशाना बांधना 11. तेज़ तीर 12. लम्बा 13. मोहक, सुंदर 14. विस्मय-विमुग्ध 15. चुनौती दे रहा है 16. खेद, अफसोस

अंशु ९

खालसा फते लेन प्रसंग

दोहरा

इस बिधि हतिकै खान सर रह्यो रिदै पछुताइ।
आदिक दीना वेग ते देखति रण बिसमाइ[1] ॥ १ ॥

भुजंग छंद

रह्यो खान ठांढो बड़ी लाज पाए। पिखैं बीर सारे जथा जंग दाए।
दुऊ बीर वंके अरीले बिसाले[2]। दुऊ सैन स्वामी कुदंडं संभाले ॥ २ ॥
दुऊ तेज घोरे करे ओजवारे। दुऊ तीर बिद्या गरूरी करारे[3]।
दुऊ जंग जेता करे जीत आसा। दुऊ जंग को पुंज देखैं तमाशा ॥ ३ ॥
गुरु जी तबै फेर नीला फंदायो[4]। खरो खान के साथ ऊचे अलाया।
हतैं तीर तोही दिजै वार मेरा। कर्यो ओज जेती पिख्यो सरब तेरा ॥ ४ ॥
सुने खान बोल्यो लिजै वारि दोई। जथा मैं करे आप के साथ सोई।
गुरु फेर बोले नहीं दोइ ले हैं। अहै एक नीको कहैं बीर जे हैं ॥ ५ ॥

दोहरा

फिरकतवार[5] सु मुरदमहिं होति हरामै-खोर।
यौंते पलटा हम करैं इक खतंग कहु छोरि ॥ ६ ॥

साबास छंद

इम कहि फेरिय। गुर हय प्रेरिय।
बन सवधानहि। गहि इक बानहि ॥ ७ ॥
चहुंदिशि खानहि। फरि किकानहि[6]।
बखतर बंधिय। गुर सर संधिय[7] ॥ ८ ॥

---

1. विस्मय में पड़ कर 2. बहुत अधिक रण ठानने वाले 3. तीर चलाने में दक्ष होने के कारण अहंकारी 4. नचाया 5. अपनी बारी के बिना वार करना 6. घोड़ा 7. निशाना बनाया

सभि तनु छादिय[1] । कितन दिखादिय[2] ।
जित सर मारहिं । तन न निहारहिं ।। ९ ।।

बखतर संगहि । लिपटहि अंगहि ।
महिंद[3] पठानहि । कित हनि बानहि ।
फिरि फिरि हेरति । हयबर[4] प्रेरति ।। १० ।।

धनु सर जोरिय । करि कर जोरय[5] ।
लछ नहिं टोरिय[6] । इम नहिं छोरिय ।। ११ ।।

फिर बहु देखति । नगन परेखति[7] ।
पिखि जबि नीकहि । श्रोन नजीकहि ।। १२ ।।

नगन सु थोरिया । गुर जबि टोरिय ।
तहिं तकि बानहि । शिसत[8] निशानहिं ।। १३ ।।

खर खपरा[9] धरि । धनु गुन मैं भरि ;
करखति आछय[10] । छोरनि वाछय ।। १४ ।।

सरप समानहि । छुटति पयानहि ।
ढिग थल कानय । लगति सु बानय ।। १५ ।।

भुजंग प्रयात छंद

लग्यो बान कानं नजीकं विसाला । गिर्‌यो भूम में खान कीने उताला[11] ।
गयो भाज घोरा जबै छूछ[12] होवा । पर्‌यो वीर भारो चमू दौन जोवा ।। १६ ।।

गुरू सैफ खैंची बड़ी तातकाला । भए सीस ऊचे खरे कै उताला[13] ।
पिखे भीम रूपं भयो खान भीरा[14] । महा त्रास मान्यो मृतू ते अधीरा ।। १७ ।।

भने दीन बैनं गुरु जी रखीजै । महां तेग तीखी न ग्रीवा कटीजै ।
प्रभू फेर बोले पठाना संभालो । अबै राखबे को लख्यो कौन कालो ।। १८ ।।

करो याद कलमा लखो प्रान अंता । महा बान घावं बचैं ना कदंता[15] ।
इमं बोलते सैफ साफं चलाई । जुदो रुंड ते मुंड कीनो तदाई ।। १९ ।।

जबै मारि लीनो भए शत्रु दीनं । फते खालसे देखि आनंद कीनं ।
बजे दीह बाजे सु धौंसे धुंकारे । अपो आप मैं वीर बंके बकारे ।। २० ।।

---

1. आच्छादित 2. दिखाई नहीं पड़ता 3. बड़ा पठान 4. श्रेष्ठ घोड़े को 5. हाथ की शक्ति से 6. मिलता नहीं 7. देखते हैं 8. निशाना लिया 9. तेज़ तीर 10. अच्छी तरह से खींचा 11. शीघ्र ही 12. खाली, सवार हीन 13. तुरन्त उसके सिर पर जा खड़े हुए 14. भीरू, कायर 15. किसी तरह बच नहीं सकता

किन् खंग खैंचे बडे बाढ वारे[1]। महां जुध जूझे जूझारे करारे[2]।
तुफंगानि कौ मारिकै एक वारी। मिली दीन सैना भिरे भेर भारी ।। २१ ।।
तमांचे कराचोल[3] नेजें पहारे। गिर्यो श्रोन भूमं दब्यो खेह[4] सारे।
धकाधक धीरं हथावथ होए। किनहैं मारि सांग सु बीर परोए ।। २२ ।।
पिख्यो भीम जुधं नृपं भीमचंद। भयो त्रास भारी जि औरै नरिंद[5]।
पलाए पहारी नहीं पाइ जामे। पिखैं सैंकरे वीर कौ जंग धामे[6] ।। २३ ।।
बडो हेल घाला सभै सिंह धाए। मनो बृंद मिरगान पै सिंह आए।
अरे जो मरे, भाज चाले सु बाचे। भयो त्रास भारी महां रोस राचे ।। २४ ।।
फिरैं पास खाने समूहं श्रिगाला। गनं स्वान भखहिं पुकारैं कराला।
बड़ गिरझ, काकं, उड़ें गैन मांही। नची जोगनी सीस बारं खिंडाहीं[7] ।। २५ ।।
परी लोथ पै लोथ देखी घनेरी। कटं हाथ पेरं समूहं बिखेरी।
पठाणी चमूं मोगुलाणी[8] मरी है। रही जीवती जंग देखे डरी है ।। २६ ।।
हुतो दीनबेगं लग्यो घाइ अंगे। पिछारी हट्यो भीम देखो भुजंगे[9]।
लरैं कौन फेरं गए हार दोऊ। बिलौके पलाए थिर्यो है न कोऊ ।। २७ ।।
गयो दीन बेगं जबै जंग त्यागे। बिना धीर जोधा अगो आप भागे।
पिछारी पर्यो खालसा नांहि छोरे। धवाए तुरंगानि[10] को शत्रु ओरे ।। २८ ।।

चौपई

रोपर निकट और पुरि और। खिदराबाद बसै तिस ठौर।
तिस ही दिशि दल गयो पलाई। जाहि खालसा पीठ दबाई ।। २९ ।।
मारति जाति भजावति[11] जाति। लेहिं तुरंग शसत्र भट घात।
वध्यो[12] अधिक मन सिंहनि केरा। कातुर वडो तुरक दल हेरा ।। ३० ।।
लूटि लूटि आयुध गन बाज[13]। अपर[14] सैन को सकल समाज।
मारे पुंज रहे त्रिपताइ। तऊ खालसा मारति जाइ ।। ३१ ।।
पुन सतिगुर ने दूत पठायो। जाति खालसा सकल हटायो।
खिदराबाद तुरक बरि गए। तहां संभाल करति निज भए ।। ३२ ।।
गयो खालसा जबि हट सारो। लै करि हयनि घनो हथ्यारो।
घाइल तुरक संभाले फेरे। लै लै पहुंचे अपने डेरे ।। ३३ ।।
सरब हिरासे[15] बहु बिसमाए[16]। उमरावन हम भले लराए।

---

1. तीक्षण धार वाले 2. कठोर 3. तलवार 4. मिट्टी में 5. अन्य राजे 6. रण-भूमि में 7. सिर के बाल बखेरती हैं 8. मुग़ल सेना 9. योद्धा 10. घोड़ों को दौड़ा कर 11. भगाता चला जा रहा है 12. बढ़ गया 13. घोड़ों के समूह 14. अन्य 15. भयभीत 16. आश्चर्य, चकित हो गए

किसहूं की संभाल नहिं रही। चमू अधिक[1] बहु जीत न लही ॥ ३४ ॥
दीनाबेग सु घाइल पर्यो। आन जराह इलाजै कर्यो।
दिली के मारग कौ परे। सने सने तहिं पहुंचनि करे ॥ ३५ ॥
हटि करि आइ खालसा इते। वाहिगुरु जी की कहि फते[2]।
शत्रु लूट करि पहुच सु धामे। बजे जीत के बडे दमामे ॥ ३६ ॥
मिले गुरु पग सीस निवायो। धन धन सभिहूंनि अलायो।
रावर को बल पाइ वडेरा। हत्यो तुरक दल जंग घनेरा ॥ ३७ ॥
खिदराबाद पुजायहु धुरे[3]। कहै आप के हे प्रभु मुरे।
नतु[4] प्रापति मैदान, सु होटे। मिले तुरकड़े इम मति खोटे ॥ ३८ ॥
लेति रुलाइ, न देति जानि। इस विधि भाजे मूढ अजान।
सभि पहारीए[5] टर करि गए। सैलन बिखै[6] प्रवेशति भए ॥ ३९ ॥
सुनि कर धीरज प्रभु दखाना। सने सने हनीयहि तुरकाना।
ज्यों ज्यों सिंहन होवहि वाधा। त्यों त्यों तुरकनि प्रापति बाधा[7] ॥ ४० ॥
अपने घाइल सिंह उठाए। जो मरि गए सु सुरग सिधाए।
करि इकत्र तिन दीनो दाहू। आवति भए अनंदपुरि माहू ॥ ४१ ॥
कवियनि बिजै कवित बनाए। उतरे प्रभु तबि आनि सुनाए।
अधिक जीत के गीत गवाए। सुनि सुनि सगरे नर हरखाए ॥ ४२ ॥
बैठि गुरु सिंहासन राजे। सरब खालसा देखति गाजे।
मंगल कीन अनेक प्रकारी। देति असीस सकल नर नारी ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरत ग्रंथे चतुरथ रुते **'खालसा फते लेन प्रसंग'** बरननं नाम नौमो अंशु ॥ ९ ॥

---

1. अधिक सेना के होते हुए 2. जीत, विजय 3. तक, पर्यन्त 4. अन्यथा 5. पहाड़ी राजागण 6. पर्वतों में 7. नाश को प्राप्त होंगे

अंशु १०
गुरु महिमा

दोहरा

ले ले पाहुक[1] करद[2] की सिंह कहि जाइं ।
नगर नगर महिं बाद[3] हुइ गुरुसंगति समुदाइ ।। १ ।।

चौपई

ज़ाति पाति नहिं बध्यत जेई[4] । केश काछ[5] नहिं मानहिं तेई ।
भदण हो तिसु बस हमारे । तिस को त्याग न अंगीकारे ।। २ ।।
सिख कदीमी[6] हैं गुर केरे । पग पाहुल[7] की लेति घनेरे ।
करद, केस, कछ, रहित जु न्यारी । सो न करहिं हम अंगीकारी ।। ३ ।।
इस प्रकार जो हठ को करते । जग जूठादिक बरतन धरिते ।
तिन कहु सिंह करहिं अपमाना । न्यारे भए खान अरु पाना[8] ।। ४ ।।
गुरु निकट रहि सिखीअहि सीख । हिंदू तुरक द्वै ते भिन दीख ।
जग समुन्द्र ते सार निकारा । सुधा रहित[9] जिन अंगीकारा ।। ५ ।।
भए सिंह सुर से[10] ततकाला । हलत पलत[11] सुख लह्यो बिसाला ।
केतिक पाहुल[12] खंडे की लहि । सेव गुरु को जाइं सदन महिं ।। ६ ।।
केतिक जीवन मरने मांहि । संगी भए तबहि गुर नाहि[13] ।
नितप्रति वधहि खालसा ऐसे । उपवन महिं तरु सिंचति जैसे ।। ७ ।।
जथा दूज ते दीरघ चंद । दिन प्रति होवहि तथा बिलंद[14] ।
शसत्रनि को विसाहु नहिं करै । आगे अरति तिसे संग लरैं ।। ८ ।।
सहि न सकैं उचिता रिपु केरी । हथ्यारिन से जुट तिस बेरी ।
मारन कै मरनी तिस ठौर । इस बिधि पर्‌यो जगत महिं रौर ।। ९ ।।

---

1. अमृत 2. खंडा 3. झगड़े 4. जो जाति पांति से मुक्त नहीं है 5. कच्छ 6. प्राचीन काल से ही 7. चरणामृत 8. खाना-पीना 9. अमृत की रहत (मर्यादा) ग्रहण की हैं 10. देवताओं के समान 11. लोक-परलोक में 12. अमृत 13. गुरु स्वामी 14. बड़ा ऊँचा

दस के बीस सिंह कित होइं। तहां मरन मारन करि सोइं।
मिलि अनंदपुर को चलि आवै। सुखदानी[1] कहु दरशन पावैं ॥ १० ॥
चहुंदिशि तें हुइ मेल इकत्र। परम पवित्र बचित्र सु मित्र।
जो मरि जावै सुरग सिधावै। हुइ घाइल अनंदपुरि आवै ॥ ११ ॥
साल पत्र[2] सतिगुर तिम देति। इक दुइ दिन महिं बनहि सुचेत।
शसत्र संभार उठे रण करिबे। पीरा नहीं घाव की धरिबे ॥ १२ ॥
कारीगर अनेक बुलवाए। कहि आयुध[3] बहु बिधि बनवाए।
अनिक प्रकारनि तीर अनाए[4]। खर खपरे फौलाद कराए ॥ १३ ॥
सेले[5] गन अध चंद्राकार। तुके[6], मीन मुखे, खर धार।
गल बदामचे[7] आदिक घने। एक मुहर कंचन के सने ॥ १४ ॥
बान हज़ारहुं गुर बनवाए। जिन ते चाहति दुशट खपाए।
पुरि मुलतान आदि ते दूर। दीह कठोर कुदंडहि गुर ॥ १५ ॥
तांहि बनाइ आनि गुर देति। मन भावति बखशिश को लेति।
कित ते तोमर[8] तर तरवारैं। आनै को दरशन अबिचारे[9] ॥ १६ ॥
अधिक दरब ते ले ले जांहि। रीझहिं मौज[10] देति गुर तांहि।
अनिक बिधिनि की बनहिं तुफंग[11]। लघु दीरघ सुन्दर सरवंग ॥ १७ ॥
सतिगुर चढहिं अखेर[12] बहाने। दूर दूर लगि[13] दून पयाने।
जहिं जानति वेमुख को वासा। तहां जाइ प्रभु करनि विनाशा ॥ १८ ॥
सहि न सकहिं गुर की असवारी। निकसहिं दुशट शसत्र गहि भारी।
शक्ति सेले, सांग, सरोही[14]। अरहिं आनि खल मूरख द्रोही ॥ १९ ॥
तिन कहु मरि कूटि गुर आवैं। खिखी सकल की कही करावैं[15]।
नित प्रति चढहि खालसा दूण[16]। दिन दिन वाधा दून चगूण ॥ २० ॥
जो संगति को आवति रोके। सो ततकाल शोक अविलोकै।
ग्राम दु तीनक मारि निवारे। कर्यो थेहु[17] घर ढाहति सारे ॥ २१ ॥
यांते परी धांक जहिं कहां। संगति को न कहै कुछ कहां।
बीच सिंह हुइं आयुध धारी। फते[18] गुरु की गरजि उचारी ॥ २२ ॥
वधे खालसा अनगन ज्यो ज्यो। धूमधाम को घालति त्यों त्यों।
जो तुरकन के बनति बिगारी[19]। हुते दीन रहि नित अनुसारी ॥ २३ ॥

---

1. सुखदायक गुरु 2. घावों को भरने वाला एक पत्ता 3. शस्त्र 4. मंगवाए 5. भाले के समान 6. आरी के समान दांतों वाले 7. बादाम के समान मुख वाले 8. भाले 9. बिना विचार किए अर्थात् सामान्य ढंग से 10. आनंद; कृपा 11. बंदूक 12. शिकार 13. तक 14. विभिन्न प्रकार के शस्त्र 15. सब के खेत नष्ट कर देते 16. घाटी, वादी 17. गिरा कर समतल कर दिए 18. जीत, विजय 19. बलपूर्वक सेवा कराना

सो खंडे की पाहुल लैके[1]। शसत्र आपणे संग सजैकै।
सो पतिशाहन को पतिशाहू। गुर प्रताप ते बदहिं न काहू॥ २४॥
जो बोलहि कटु बाक अलप ही। शसत्र प्रहारहिं शत्रु सु थपही[2]।
खंडे की पाहुल मैं शकति। पुन होवहि शासत्रनि संजुगत[3]॥ २५॥
महां रंक जो दीन सदाई। जोधा बनहिं न मिटहिं कदाई।
जिनकै सौच शनान न कोई। सो विप्रन ते उतम होई॥ २६॥
जिन की कुल मूढनि की महां। अख्यर भेव न जानहिं कहां।
सो पंडति पढि पढि तवि बने। निज समता किस को नहिं गिने॥ २७॥
सतिगुरु श्री गोविन्द सिंह करुना। पाइ भले जुग चारो बरना।
इम गादर[4] ते शेर बनाए। वाइस[5] हंसु चाल सिखराए॥ २८॥
मिहनत करहिं मजूरी पावहिं। सो हय गय चढि पंथ सिधावहिं।
लोक प्रलोक न जानहिं जोऊ। सतिनाम सिमरे तरि सोऊ॥ २९॥
कौन कौन इस विधि वडिआई। कलगीधर की कहहिं बनाई।
आगे जग महिं भयो न कोऊ। इम उपकार करहि जग जोऊ[6]॥ ३०॥
राम चन्द्र आदिक अवतार। करे तिनहुं भी वड उपकार।
विदति अहैं जग नांहि न छाने। सुनि पठि कथा सुमति सभि जानें॥ ३१॥
जथा जोग जे करहिं विचारन। इनहुं सारखे भे[7] उपकारिन।
मूढ रंक जो प्रशतन[8] केरे। जुगलोकनि सुख तिनहुं घनेरे॥ ३२॥
जाहर महाँ जगत महुं सारे। धन धन गुर परम उदारे।
जो महिंमा लखि परे न शरनी[9]। हिंदू जनता न लखि गुर करनी॥ ३३॥
हिंदू धरम को राखनि कीना। राज तेज तुरकनि को छीना।
अस महिंमा को जानै जोइ न। अस क्रितघनी तिनै सम कोई न॥ ३४॥
धन धन सतिगुर सुखदाते। कर्यो खालसा प्रगट बिधाते[10]।
अविनी भार निवारन कारन। रह्यो वैर तुरकनि संग दारुन॥ ३५॥
गिरपति[11] संग व्रिधायहु झेरे। जिस ते आनहिं तुरक घनेरे।
ज्यों ज्यों आवहिं त्यों त्यों घावहिं। इही व्योंत[12] सतिगुरु बनावहिं॥ ३६॥
भीमचंद आदिक सभि राजे। मिल्यो न गुर सम, नरहिं कुकाजे।
गुर माया सो प्रेरन करे। तुरक शरनि पहुंचनि चितधरे॥ ३७॥

---

1. खंडे का अमृत पान कर के 2. पीट कर दबा देते 3. साथ होना 4. गीदड़ 5. काग, कौआ 6. जिसने 7. सरीखे, सामान 8. पीढ़ियों के 9. शरण में नहीं पड़ता 10. परमात्मा ने, गुरु गोबिंद सिंह के लिए भी यह शब्द प्रयुक्त हो सकता है 11. पहाड़ी राजाओं के साथ 12. ढंग, योजना

नित पुकार परजा की सुनैं। मिलि मिलि राजे जतननि गुनै।
दिली चलहिं कहहिं अहिवाल। सुनिकरि सूबा रिसहि बिसाल[1] ॥ ३८ ॥

इक उमराव पैंडखां मारा। दीनबेग घायल करि डारा।
सैना दीरघ मारि पलाई। किम हमरो दल ठहिर सकाई ॥ ३९ ॥

शाहु चढ्यो गा दखण बिखै। इह सूबा[2] सगरी विधि लिखै।
हम भी अपने सचिव पठावहिं। गुर जबरी को सरब सुनावहिं ॥ ४० ॥

रिसहि शाहु सुनि धूम बिसाला। पुन लशकर भेजहि इत जाला।
तवि अनंदपुरि को छुरवाइ। गुर को हतहिं कि देहिं पलाइ ॥ ४१ ॥

तबि ठहिरैगो राज हमारा। इस प्रकार गिरपतिनि[3] बिचारा।
भए त्यार दिली कहु जाने। लई उपाइन मोल महाने ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे चतुरथ रुते 'गुरु महिमा' वरननं नाम दसमो अंशु ॥ १० ॥

1. अधिक नाराज़ होगा 2. प्रांताधीश 3. पहाड़ी राजा लोगों ने

अंशु ११

जंग समाज प्रसंग

दोहरा

इस विधि दुख ते मंत्र[1] को करति मिलति गिरराज ।
तबि हंडूरीए[2] सुनि सकल करनि पुकार कुकाज ।। १ ।।

चौपई

चढि करि आइ मिल्यो तिह काल । भाख्यो मुख ते सभि अहिवाल ।
गुर ते त्रास भयो सभि राजे । लूट कूट करि लीनि कुकाजे ।। २ ।।
एक होइ करि सैन सकेले[3] । तीन लाख गिनती हुइ मेले ।
कहां गुरु ढिग सिंह इतेक[4] । जिस ते रहि मवास गहि टेक[5] ।। ३ ।।
घेरहिं चहुं दिशि ते करि डेरे । नहिं अंतर कुछ जमा घनेरे[6] ।
केतिक दिन महिं वहिर निकारहिं । नांहि त हेल घालि[7] गढ मारहिं ।४ ।।
जे ऐसे हीं कुछ वन जाइ । रहै मवास[8] मार नहिं खाइ ।
तौ हज़रत[9] के पास पधारनि । जथा जोग ह्वै करहु बिचारनि ।। ५ ।।
त्रिपत भए नहिं लरि करि कबिहूं । बिना लरे करि गमनहु अबिहूं ।
ग्राम सैंकरे गूजर बासा । लरिबै बिखै बली बिन त्रासा ।। ६ ।।
तथा ग्राम रंघरि[10] बसि घने । सभि को गुर दल दे दुख हने ।
तिन सभिहिनि को लेहु बुलाई । होइं हज़ारहुं मिलि इक थांई[11] ।। ७ ।।
सैन समेत कटोचि हकारहु[12] । जंमू ते बुलाइ सतिकारहु ।
नूर पुरे को राजा आवहि । मंडसपती,[13] भुटंती[9] धावहि ।। ८ ।।

1. मंत्रणा, सलाह 2. हंडूर का पहाड़ी राजा 3. सेना एकत्र की 4. इतने 5. शरण में आ कर रहना 6. अंदर खाद्य वस्तु बहुत अधिक एकत्रित नहीं थी 7. आक्रमण कर के 8. शारण में 9. मुग़ल बादशाह के लिए प्रयुक्त हुआ है 10. मुसलमानों की एक जाति 11. एक स्थान पर 12. जम्मू से कटोच जाति के राजा को भी बुला लिया 13. मंडी का राजा 14. भूटान का राजा

कुलू कैंठल[1] भूप गुलेरी[2]। आइ दड़ेलन पति चंदेरी।
सिरी नगर ते चमूं बिसाला। नृप बिशहर ते सुभट कराला ॥ ९ ॥
सैन सहित डढवारी[3] आवहि। सभि सो लिखहु कि भूप बुलावहिं।
जो इस समैं न मिलि है आई। सो सभि को दुशमन बन जाई ॥ १० ॥
करि उद्योग प्रथम तूं आप। पुन सभि मिलहिं बिलोकि प्रताप।
इम हंडूरीए[4] मसलत दीनी। भीमचंद चितवति चित दीनी ॥ ११ ॥
सुनि भ्राता कहिं नीकी बाति। अबि लौ हम न लरे भलि भांति।
सभि इक थल मिलि करि जे लरहिं। पुन हम आगे कौन सु अरहि ॥ १२ ॥
अपरनि[5] की गिनती कहु कहां। चिंता परहि शाहु को महां।
तव उदम ते इस बिधि बनै। जो न मिलहि अबि तिह सभि हनैं ॥ १३ ॥
इह डर सभि को लिखहु पठावहु। गुर पर ह्वै मुंहिम, चढि आवहु।
नांहि त सभि को है दुखदाई। लेहि खालसा राज छिनाई ॥ १४ ॥
मिलि कै लरहु कच्यो जे चाहित। नतु क्रिखि[6] लूटहिं ग्रामन दाहति।
जथाशकति खरि करि निज चमूं। तूरन[7] मिलहु आनि करि हमूं ॥ १५ ॥
दोनहुं नृप मसलत को धरिकै। लिखे पत्र सभि सों हित करिकै।
दल आरासत[8] अपनो कीना। जंग समान सभिनि को दीना ॥ १६ ॥
सैलनाथ[9] जेतिक सुनि सारे। भीमचंद नृप बडो हकारे।
जोरि जोरि करि चमूं घनेरी। सभि मउजूद भए तिस बेरी ॥ १७ ॥
कर्यो सिवर[10] दूण जु कहिलूर। देखि देखि नृप होति ग़रूर।
दान मान सकलनि को कर्यो। खान पान आदिक सुख धर्यो ॥ १८ ॥
सुपति जथा सुख राति बिताई। भई प्रात निज सभा लगाई।
भीमचंद बड फरश कराए। सैलनाथ[11] सगरे तबि आए ॥ १९ ॥
खड़ग सिपर[12] सर धनुख कराले। अपने अंग सजाइ बिसाले।
प्रथम हंडूरी[13] अरु जसुवाला[14]। गरब कटोची आइ उताल ॥ २० ॥
नाम घमंड चंद तिस केरा। बैठे सभा बिखै नृप हेरा।
जंमू नाथ आदि सभि आए। भीमचंद सनमानि बिठाए। २१ ॥

1. क्योंथल, हिमालय की एक पुरानी रियासत 2. गुलेर के राजा 3. उढवार जाति के राजपूत 4. हंडूर के राजा ने 5. दूसरों की 6. खेती 7. तुरंत 8. तैयार किया 9. पहाड़ी राजागण 10. शिविर, छावनी 11. पहाड़ी राजागण 12. ढाल 13. हंडूर का राजा 14. जसवाल राजपूत जाति का राजा जो कटोचों से सम्बंधित है

गन राजनि की सभा मझारा। कहिलूरी महिपाल[1] उचारा।
सभि को हित लिहु रिदै बिचारी। प्रगट्यो शत्रु खालसा भारी ।। २२ ।।
शाम[2] दाम अरु भेद उपाइ। गुरु के संग न इहु बनि आइ।
करि शाम तबि कही करावे[3]। खेती वहिर न पाकन पावै ।। २३ ।।
दाम देहि पुन लूटहिं ग्राम। सभि दिशि पाई धूमन धाम।
भेद न बनहि गुरु सिख अहैं। जिस को नाम सिमरते रहैं ।। २४ ।।
इह बिखाद कुछ मोकहु नाही। संसै सभि कै राजनि मांही।
दिन प्रति वर्धहि पाहुलां लेति[4]। आठहु जाम लरहु सन हेत ।। २५ ।।
अबि उपाव सभि ते हुइ आवै। मिलहु लरहु गुरपुरा[5] छिनावैं।
राख्यो चहै मेल सभि राजनि। करहि सुधारनि अपने काजनि ।। २६ ।।
सो अबि चलहि अनंदपुर लरिबे। पुन सुख साथ राज निज करिबे।
जो मिटि रहहि[6] न आछी तांहि। रिपु सभि को, नहिं मेली कांहि ।। २७ ।।
सुनति कटोच हंडूरी कहैं। राजे सकल मिले अबि अहैं।
नहि आछी किस को इह बात। बिगरहिं देश राज दिन रात ।। २८ ।।
होति प्राति के कूच करीजै। घेरा आनंदपुरि करि लीजै।
बसै अपर[7] थल, गुरु निकासहू। जितिक सिंह लरि सकल बिनासहू ।। २९ ।।
कह्यो केसरी चंद सभिनि मैं। कौन मुरैगो भ्रातनि[8] रन मैं।
तन मन धन करि सगले लरैं। धरहिं अग्र पग, पाछ म मुरैं ।। ३० ।।
इत्यादिक कहि सभिहिनि मानी। उठी सभा गे निज निज थानी।
लरन समाज त्यार कबि कर्यो। पैदल असवारन दल जुर्यो ।। ३१ ।।
गुलकां[9] गन बरूद बहु देति। निज निज मिसलनि[10] बने सुचेत।
सगरी राति करी सभि त्यारी। निंद्रा अलप बिलोचन धारी ।। ३२ ।।
भई प्राति आलस को टारा। भीमचंद बजवाइ नगारा।
करि शनान वसत्रनि को पाए। खड़ग सिपर[11] अपणे[12] अंग लाए ।। ३३ ।।
चढ़ गज पर ले राजनि संग। सभि के दुंदभि बजे उतंग[13]।
इक दुइ कोस चले तबि आयो। वहिर निकस करि सिवर[14] लगायो ।। ३४ ।।
मिलि राजे गन पत्र लिखायो। दूत हाथ ततकाल पठायो।
आगे सतिगुर सुनि सुध सारी। करी जुध की सभि बिधि त्यारी ।। ३५ ।।

---

1. कहलूर के राजा 2. मिलाप 3. खेती उजड़ जाएगी 4. अमृतपान कर के 5. गुरु का नगर, अनंदपुर 6. मिलने से रहेगा 7. दूसर स्थान पर 8. भाइयों के युद्ध में से 9. गोलियां 10. स्तर, दर्जा 11. ढाल 12. अपने 13. ऊँचे स्वर में 14. शिविर

बैठे हुते दिवान मझारा[1]। पास खालसा शोभ उदारा।
पहुंच्यो पत्र खुलाइ पठायो। धुनि ऊची ते सभिनि सुनायो ।। ३६ ।।
सुनो गुरु जी ! थान हमारा। जहिं अनंदपुरि बस्यो तुमारा।
श्री गुर तेग बहादर लीनं। हम को कई बेर धन दीनं ।। ३७ ।।
जबि को बास आप ने कर्यो। तबि को दयो न, क्या मन धर्यो।
अबहि आपनो पंथ उपायो। हथ्यारन को हाथ गहायो ।। ३८ ।।
लूट कूट करि दूण[2] उजारी। लरनि मरनि नित धूम उतारी।
अबि लौ मैं कीनसि बहु टारा। देनि रह्यो धन, देश उजारा ।। ३९ ।।
केतिक हमरे सुभट खपाए[3]। कितिक परे घायल दुख पाए।
अबि जे करि रस राख्यो चाहति। बसन अनंदपुरि बिखै उमाहति[4] ।। ४० ।।
दया करहु दीजै सभि दामू। बसहु आप बिगरहि नहिं कामू।
नांहि त क्रुध वध्यो हुइ जुध। हिरदै सुध विचारहु बुधि ।। ४१ ।।
उत तुरकनि सन बैर तुमारा। इत हम साथ वधी बहु रारा[5]।
देनहुं दिशि ते दल उमडाव। सभि जग सुभट तुमहुं पर धावैं ।। ४२ ।।
परहि भीर, नहिं कुछ बनिआवै[6]। घेरे जाहु न निकसनि पावैं।
यांते दीजहि दौलत अबै। आगै पंथ बरज[7] रखि सबै ।। ४३ ।।
तजहु जंग की रीति भयाना। जिस महिं नित व्याध बिधि नाना।
अपने पित समान बन रहीऐ। संगति ते अकोर गन[8] लहीऐ ।। ४४ ।।
हम को दरब बरख[9] प्रति दीजै। हुइ सुखवासी समा बितीजै।
नांहि त छंडहु भूमि हमारी। गमन करहु जहिं इछ तुमारी ।। ४५ ।।
अबि पहुंच्यो मैं निकट तुमारे। चमूं समूह[10] मिले नृप सारे।
छीन सकल कढि दैं[11] हौं बाहर। बिना बिलंब जानी अहि ज़ाहर[12] ।। ४६ ।।
इम राजनि को लिखा सुनायो। सतिगुर रिदै क्रोध बिरधायो[13]।
उंतर लिखिबे सभनि सुनावनि। धुनि ऊची प्रभु कीनि बतावन ।। ४७ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'जंग समाज प्रसंग'** बरननं नाम एकादशमों अंशु ।। ११ ।।

---

1. सभा में 2. घाटी, वादी 3. मार दिए, नष्ट किए 4. उमंग या उत्साह-पूर्वक 5. झगड़ा 6. बनता नहीं 7. रोक दो 8. बहुत अधिक भेंट 9. प्रति वर्ष 10. सैन्य दल 11. निकाल दो 12. प्रकट 13. बढ़ाया

अंशु १२
जंग प्रसंग

दोहरा

श्री कलगीधर गरजिकै मेघ मनिंद बिलंद[1]।
उतर दयो लिखइ करि शोक देनि रिपु ब्रिंद[2] ॥ १ ॥

चौपई

सुनीअहि भीमचंद अभिमानी। सभि राजनि सन देहु बखानी।
हम ते दाम चहहि जे लैवो। खड़ग धार सों करि है दैबो ॥ २ ॥
तोमर तीरनि सांगनि अनी[3]। इन ते दै हौं भेदों अनी[4]।
शलख[5] तुफंगनि बरखा गुलकनि[6]। इन ते परखन करि धन अनगन ॥ ३ ॥
मूढ अजान न तुम सम कोई। चहैं दरब, लिहु सनमुख होई।
बजै लोह सों लोह जुझारे। लेहु परख तबि दाम करारे ॥ ४ ॥
कौन सनेह रह्यो अबि तौसों। करिवै चाहति आनि करो सो।
नतु[7] मति समझहु बनीयहि स्यानो[8]। परहु शरन आवहु बच[9] मानो ॥ ५ ॥
जुग लोकनि के सुख को लहीअहि। शरन खालसे की परि रहीअहि।
हठ हंकार छोरि मन मधे। मिलहु आनि करि ह्वै बुधि सुधे ॥ ६ ॥
गुर घर ते चाहहु सो पावहु। राज समाज भले बिरधावहु[10]।
जे अभिमान अधिक तुव मन मैं। बांछति मेल कर्‌यो चहिं रन मैं ॥ ७ ॥
मुकर मनिंद[11] गुरु घर अहै। रिदै भावना तिम फल लहै।
सेवक बनै अनिक[12] सुख पाए। कर्‌यो द्वेश[13] जे क्रोध उपाए ॥ ८ ॥
तौ मग महिं पग धरहु उताले। नहिं पीवहु जल बैठि सुखाले।
रैन बसनि की ह्वै तुहि आन[14]। हेरहु रण घमसानै आनि ॥ ९ ॥

---

1. बादल के समान ऊंचा स्वर 2. शत्रु समूह को 3. नोक 4. सेना 5. बहुत अधिक बंदूकों के चलाने की क्रिया 6. गोलियाँ 7. अथवा 8. समझदार बनो 9. वचन, आज्ञा 10. बढ़ाओ 11. शीशे के समान 12. अनेक 13. वैर, द्वेष 14. कसम

इम उतर लिखि प्रभु[1] पठायो। निकट गयो नृप, खोलि सुनायहु।
सुन करि तन मन लागसि आग। सहि न सक्यो मनमूड़ कुभाग ॥ १० ॥
सभि राजन को बहुर सुनायो। अबि गुर संग जंग बनि आयो।
सो निस बसि करि तहां बिताई। भई प्राति ते चहति चढ़ाई ॥ ११ ॥
गिरनाथन[2] के बजे नगारे। भीमचंद होयसि तबि त्यारे।
प्रिथक प्रिथक सैना करि राजे। चढ़े अनेक बजावति बाजे ॥ १२ ॥
फररे छुटे निशान अगारी[3]। मनहुं घटा के घन अगवारी[4]।
रणसिङे गन ढोल बजाए। शलख[5] तुफंगनि की चलिवाए ॥ १३ ॥
मूजर जाति हज़ारनि राऊ। नाम कहें जमतुला भाउ[6]।
सो पैदल कै भया अगारी। बरछी, सेले, सांग कटारी ॥ १४ ॥
तोमर[7] तरवारन गहि ढाले। गूजर रंघर[8] ब्रिंद कुचाले।
छेर[9] गवारन अधिक बटोरी। अगे चल्यो अनंदपुरि ओरी ॥ १५ ॥
बाइस धारनि नर ग्रामीन[10]। चले संग जिनकी गिनती न।
कलमलाट[11] पैदल दल बीरं। चमकहिं आयुध पर्यो बिहीरं[12] ॥ १६ ॥

छपय

पुरि तजिकै कहिलूर न्रिपनि कीनसि असवारी।
मुहरे[13] धरे निशान दौरि फररे इकबारी।
भीमचंद असवार खड़ग गात्रै[14] तिन पायं।
डालि ढाल निज कंध भली बिधि सो लटकायं।
करि अग्र उदर जमधर[15] धरी उतसाहित प्रसथान किय।
तबि बजी बंब दुंदभि अनिक लरन हेतु चित चौंप लिय ॥ १७ ॥
तिमहि चल्यो कटोंच चौंप[16] चंचल बहु बाजी[17]।
जिस के तन जल अधिक मनहु फांधति नट बाज़ी[18]।
खडग सिपर[19] कट कसति तुरम तबि त्रन बाजी[20]।
बाजी बाजी बेर लर्यो जब रारहिं बाजी।
इम भूप कांगड़े को बली माथा साथ खतंग भरि।
चप चल्यो लरनि प्रभु पुरख सों दिशि अनंदपुर द्रिशटि धरि ॥ १८ ॥

---

1. गुरु गोविंद सिंह ने 2. पहाड़ी राजा लोगों ने 3. आगे आगे ध्वज और झंडे झूलते हुए चले 4. आगे 5. बंदूकों की बूछाड़ 6. भाऊ जाति का जमतुला नामक राजपूत राजा 7. भाले 8. एक मुसलमान जाति 9. समूह, दल 10. बाईस पहाड़ी राजे और ग्रामीण 11. शोर, कोलाहल 12. अत्याधिक सैन्य दल का प्रस्थान 13. सबसे आगे 14. कृपाण लटकाने की पेटी 15. जमदाढ़, कटार 16. उल्लास 17. घोड़े 18. नट के समान उछल कूद कर रहा है 19. ढाल 20. तुरंत बजी

जसोवारीआ[1] महिप सूरमा मन अहंकारी ।
तरुन बैस तन बिखै महां सुंदर दुतिकारी ।
कस क्रिपान कट संग ढाल धरि रंग जु कारी[2] ।
गहि कमान तबि हाथ ओज ते कस टंकारी ।
ढिग हुतो मसत हाथी महिंद[3] चलति भयो तिस पर चढ्यो ।
जिस नाम केसरी चंद कहि लरन वीर रस उर बढ्यो ॥ १९ ॥
न्रिपत हंडूरी चढ्यो धरे शसत्रनि सभि संगा ।
राजनीत महिं चतुर कहैं सभि बुधि उतंगा ।
भीमचंद के संग कथै बहु जंग प्रसंगा ।
पिखति बाहिनी बडी चली जिम उमडति गंगा ।
बड गज पर भयो आरोह सो, चमू चमू दहि दिशि चली ।
गहि बहु तुफंग सेले सिपर परबत निकसति कलमली[4] ॥ २० ॥
गिणती किह किह करैं अपर राजे चढि चाले ।
कुलू कैठल अरु भुटंत गल जंमू वाले ।
पुन गुलेरीआ चढ्यो और डढवार नरेशं[5] ।
सिरीनगर की चमूं चलि धरि शसत्र अशेशं ।
ब्रड पुरि बुशहिर के भट मिले पैदल ते अवतार गन ।
पुन चढि चंदेरीआ चतुर चित, चौकस चंचल चलति रन ॥ २१ ॥
नूरपुरी[6] संग सैन चढ्यो दुंदभि बड वाज्यो ।
कितिक दड़ोली[7] मिले आपनो दल बल साज्यो ।
मंडसपती[8] बिसाल और चंब्याल सैल गन[9] ।
निज निज बंधे टोल[10] कहां कहीअहि गनना गन ।
मग चलति उडी रज गगन को सूरज तेज अछाद[11] लिय ।
बहु अंध धुंध सभि दिशिन महिं खरभराट[12] सभि गिरनि किय ॥ २२ ॥

दोहरा

इस प्रकार सैना सकल चली संग गिरनाथ ।
परि अनंद सनमुख भई शसत्र धरे सभि हाथ ॥ २३ ॥

---

1. जसवाल जाति का राजपूत 2. काले रंग की 3. बड़ा, महान् 4. कोलाहल 5. विभिन्न जातियों के राजाओं का उल्लेख है 6. नूर पुर के राजा के साथ 7. दड़ोल नामक ग्राम (ज़िला होशियार पुर) के निवासी राजपूत 8. मंडी का राजा 9. चंबा का राजा 10. दल, समुदाय 11. आच्छादित कर दिया 12. घबराहट, व्याकुलता

चौपई

सुध के करनहार तबि आए। बिच दिवान[1] जहिं गुरु सुहाए।
बैठे कहां आप चित शांती। चढे निपत करि आंखै राती ।। २४ ।।
बेशुमार दल गिरनि बटोरा[2]। पहुंचे लखहु अपनी ओरा।
शत्रु मित्र जे अखिल पहारी। अबि मिलिकरि हित आप मझारी ।। २५ ।।
आनंदपुरि छुटकावनि काजू। सभि आए बड कर्‌यो समाजू।
बिच दिवान सतिगुरु बखाना। सुनहु खालसा बनि सवधाना[3] ।। २६ ।।
हुइ है अब्रि घमंड बलवंडा। संघर करहु बिलंद प्रचंडा।
इनके सम को नांहिन आछी। लोक प्रलोक सुखद बडि बाछी ।। २७ ।।
निरभे जंग महिं खडग प्रहारहु। समुख थिरहु,[4] शत्रुनि गन मारहु।
महां सुजसु को प्राप्ति होवहु। लेनि परमपद को मग जोवहु ।। २८ ।।
संमत घने तपहि तपु भारे। बरखा नीत रु उशन सहारे।
संकट अनिक भांति के झाले। सभि जग सुख तेब नहि निराले ।। २९ ।।
तिन को भी दुरलभ पद होइ। करहि जतन जोगी चहि सोइ।
रण महिं म्रित्यु होइ सो पावहु। एक पलक महिं तहां सिधावहु ।। ३० ।।
जो अबि लरहिं मरहिं सहिकामी। सो तूरन[5] ह्वै सुरपुरि गामी।
तहिं के सुख भोगो चित कहैं। आदि अपसरा जेतिक अहैं ।। ३१ ।।
पुन अवनी पर हुइ हैं राजे। सभि सुख भोगहिं, वधै[6] समाजे।
मेरी सिखी बहुर कमाइ। मिलहिं आनि मुझ आनंद पाइ ।। ३२ ।।
जे निशकामी[7] जंग मझारा। मारहिं मरहिं गहे हथ्यारा।
सो मम संग सदा ही रहैं। पद जोगीन जु दुरलभ अहैं ।। ३३ ।।
आगे लखहु जु छत्री भए। रण महिं मरे सुरग सभि गए।
छपी नहिं जग महिं इह[8] कथा। जोधे को प्रापति सुख जथा ।। ३४ ।।
पुन मैं तुमरे संग सहाई। लोक प्रलोक जहा कहिं जाई।
इत्यादिक उपदेशति स्वामी। भयो खालसा संघर कामी[9] ।। ३५ ।।
माझे[10] आदिक देशनि मांही। हुते सिंह घर गमने तांही।
प्रथम हकारि पठे सभि आए। दुनीचंद निज साथहिं ल्याए ।। ३६ ।।
जहिं कहिं रण की सुधि पहुंचाई। चले सिंह आए समुदाई।
बखशिसिंह गुरबखशसिंह पुन। भैरोवाल[11] कलाल[12] सिंह गुन ।। ३७ ।।

1, सभा, दीवान 2. इकट्ठा किया 3. सावधान होकर 4. ठहरो, स्थिर रहो 5. तुरन्त 6. वृद्धि होगी 7. निष्काम भाव से 8. यह 9. युद्ध का इच्छुक 10. माझा प्रदेश के अर्थात् लाहौर और अमृतसर क्षेत्र के 11. गोयंदवाल के समीप एक गांव 12. कलाल जाति के

लए सैंकरे सिंहनि आए। द्यालसिंह सुरसिंघ[1] बसाए।
मटू[2] सेवासिंह मझैल[3]। ए सभि दुनीचंद के गैल ।। ३८ ।।
सकल पंज सै गिनती विखैं। आनि गुरु को दरशन पिखैं।
इसी रीति देशनि समुदाए। सुनि रण करन प्रभू ढिग आए ।। ३९ ।।
भए इकत्र हज़ारों सिंह। गहे शसत्र रिपु म्रिग पर सिंह।
गरजति बोले प्रभु सुनाइ। चहैं आप की एक रज़ाइ[4] ।। ४० ।।
क्या पहारीए हमहु अगारी[4]। करहु हुकम दिली ले मारी।
सभि तुरकाना देहिं खपाइ। लवपुर को ततकाल छुटाइ ।। ४१ ।।
उदे सिंह ते आदिक बीर। सुनि सतिगुरु तिन दीनस धीर।
दुरग करहु बनहु दिढ[6] सुचेत। रोकहु आगा लरिबे हेतु ।। ४२ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते 'जंग प्रसंग' बरननं नाम दवादशमो अंशु ।। १२ ।।

---

1. तरनतारन तहसील का एक गांव 2. जाटों की एक जाति 3. माझा क्षेत्र के 4. इच्छा, आज्ञा 5. हमारे सामने क्या है ? 6. दृढ़, मजबूत

अंशु १३

जंग प्रसंग

दोहरा

इस बिधि गुरु अनंदपुरि सिंहनि कीनि सुचेत ।
शसत्र निकासे कोश ते बखशे संघर हेतु ॥ १ ॥

भुजंग छंद

बड़े बाढ चौरे सु तिगे जु म्यानी[1] । दुधारे पुलादी अनेकै महांनी ।
सरोही हलबी जुनबी दई है[2] । कराचौल[3] खंडे जु केते लई है ॥ २ ॥
सभे लोह की सांग नेजे बिसाले । बिछूए बडे बांक जुंबूए कराले ।
छुरे खोखनी सैफ लांबी बिलंदे[4] । घने सेल भाले प्रकाशे अमंदे[5] ॥ ३ ॥
मलं हीन साफं बने अग चंगे[6] । तमांचे कलादार शत्रुनि भंगे ।
तुफंगे, जंजेलां,[7] जंबूरे धमाके । दए चक्र बंक्र चंमके चलाके[8] ॥ ४ ॥
बड़े मोल के दूर ते आइ ढाले । कठोरं कुदंडं बड ओज वाले ।
भरे बान भाथा अनेकै प्रकारे । धर बाण पैने लगे बीध पारे[9] ॥ ५ ॥
इनो आदि ते आयुधं पंज दीने । खुशी खालसे पै प्रभु भूर कीने ।
दई ब्रिन्द बारूद गोरी घनेरी । 'पहारी सिंहारहु'[10] कह्यो तांहि बेरी ॥ ६ ॥
भए सावधानं तबै सिंह बीरा । रसं बीर राते चले बांधि धीरा ।
बंधे टोल पै टोल सूरान ऐसे[11] । वहे वायु ते मेघ ह्वै पुंज जैसे ॥ ७ ॥
जितो आइबो ब्रिन्द शत्रुनि होई[12] । तहां खालसा जाइ कीनी सु ढोई[13] ।
तुफंगे तड़ाके उठावैं घनेरे । उडीकैं पहारी जि आवैं जि नेरे ॥ ८ ॥

दोहरा

किले दोइ सतिगुरु के गाढे कोट उतंग ।
नाम फतेगड़ लोहगड़ अपर अगमपुरि अंग[14] ॥ ९ ॥

---

1. न बहुत छोटे न बहुत बड़े 2. शस्त्रों के नाम 3. तलवारें 4. कई प्रकार के शस्त्र 5. मंद न पड़ने वाली चमक 6. अच्छे 7. लम्बी नली वाली बंदूक 8. ऐसे चक्र प्रदान किए जो चलाए जाने पर घूमते और चमकते हैं 9. बंध कर पार हो जाने वाले 10. पहाड़ियों को मार दो 11. शूरवीरों के दल इस प्रकार सजाए गए 12. शत्रु दल ने आना था 13. सैन्यदल इकट्ठा किया 14. आंके, नाम रखे

चौपई

शेरसिंह नाहरसिंह दोऊ। काइम करे लोहगड़ सोऊ।
सिंह पंज सै संग सु सूरे। शत्रुनि को हतिबे बलि पूरे॥ १०॥
अगमपुरे दिशि सगल मझेल[1]। गाढे करे शसत्र धरि छैल।
उदेसिंह आदिक जे और। राखहिं तकराई[2] सभि ठौर॥ ११॥
जहां जोर ते परहि लगई। तहां जाउ तूरन[3] करि धाई।
घाल देहु[4] घमसान घनेरा। दिहु शत्रुनि के अंग बिखेरा॥ १२॥
इस प्रकार कहि करि तकराई। अग्र जान ते गुरु हटाई।
सैना सकल निकट ही राखी। लरहु इसी थल रण अभिलाखी॥ १३॥
उत ते भीम चंद हंकारी। दुंदभि ब्रिंद बजे बल भारी।
सभि गिरनाथन[5] साथ निहारा। भयो प्रथम ते बड हंकारा॥ १४॥
इतनो लशकर जे नंग होइ। नित अनुसार रहै सभि कोइ।
इक अनंदपुरि गिनती कहां। लवपुरि[6] जीति लेहुं गड महां॥ १५॥
करौं शाहु को चितु बिसाला। बजति लोह सों लोह कराला।
अबि लरिहै मिलि गिरपति सारे। कहां खालसा अग्र हमारे॥ १६॥
दल कलमलति[7] आइ तबि गयो। नेर अनंदपुरि को हुइ गयो।
खर्यो खालसा जहां प्रतीखति[8]। दुंदभि तुपकन सुनि धुनि ईखत[9]॥ १७॥
करी तुफंगनि की तबि त्यारी। तोड़ै अगनि लाइ इक बारी।
पाइ बरूद मेलि करि गोरी[10]। ठोकि ठोकि गज कीनि कठोरी॥ १८॥
आछे सुलग गए जहिं तोड़े। जड़े कला पर गहि करि मोड़े।
श्री कलग़ीधर जहा सुहाए। सुध हित पहुंचे तूरन[11] धाए॥ १९॥
महाराज सुनीऐ ततकाला। दुंदभि तुपकन नादि उठाला।
बहुते बजहिं श्रवन धुनि परे। राजे आइ निकट ही खरे॥ २०॥
खड़ी खालसा भी सवधाना[12]। खुशी करहु ले फते[13] महाना।
डिग अजीतसिंह बैस नवीन[14]। खड़ग सिपर[15] इखुधी[16] कर लीनि॥ २१॥
पिता गुरु की आइसु[17] चाहति। रिपु सन लरिबे हेतु उमाहति[18]।
उदैसिंह तबि बाक बखाना। महाराज सभि किछ मन जाना॥ २२॥
तऊ बेनती भनौं अगारी। साहिबज़ादा[19] चाहति भारी।
शत्रुनि संग जंग को घालन। सभि सिंहनि दे धीर संभालनि॥ २३॥

1. माझा क्षेत्र के 2. दृढ़ता, मज़बूती 3. तुरंत 4. भेज देते 5. पहाड़ी राजाओं के साथ 6. लाहौर 7. कोलाहल करता हुआ 8. प्रतीक्षा करता हुआ 9. थोड़ी आवाज़ 10. गोली 11. तुरन्त 12. सावधान हो कर 13. विजय 14. अल्प आयु, छोटी उमर 15. ढाल 16. तूणीर 17. आज्ञा 18. उल्लास पूर्ण 19. सुपुत्र, कुंवर

कहहि आप ते लाज बिसाला। कुछ नहिं बोल सकहि इस काला।
हुकम देहु मोकउ इन साथ। गम नहिं रण को धरि पद माथ ॥ २४ ॥
सभि गिरनाथनि[1] के दल आए। चहति बहिर ही जंग मचाए।
सुनि करि गुरु, पुत्र दिशि देखा। लगे शसत्र तन शुभति विशेखा ॥ २५ ॥
मनो कामना जंग करन की। बिद्या सीखी धनुख सरन की।
सो अबि रिपुन हतन को समो। भयो हुकम गुर, कीनसि नमो ॥ २६ ॥
इही काज है सुत छत्रीन। बिम भारथ[2] अभिमनूं कीन।
तिस के सम बय लालस मन की[3]। देख्यो चहति करन बिधि रन की ॥ २७ ॥
इस ते आछी और न बात। छत्री करहिं रिपुनि को घात।
हुकम अनंदति गुर फुरमायो। सुनहु अजीत सिंह ललचायो ॥ २८ ॥
उदेसिंह को लीजहि संग। सनमुख करहु रिपुनि सन[4] जंग।
आगे वधन[5] नहिं बहु दीजै। दुरगि निकट अपने दिड थीजै[6] ॥ २९ ॥
सुनति पिता को हुकम अनंद्यो। पद अरबिंद बंदि कर[7] बंद्यो।
सिंह एक सौ ले कर संग। कहि ततछिन अनवाइ तुरंग[8] ॥ ३० ॥
दादे के सथान चलि गयो। हाथ बंदि कर वंदति भयो।
चार प्रकरमा[9] दे करि फिर्यो। बिनै कीनि हय पर पुन चर्यो ॥ ३१ ॥
उदेसिंह सों बोलति बैन। चल्यो वहिर जहिं सिंहन सैन।
चंचल बाजी[10] चलति फंधावति[11]। खर खपरा धन गन बगरावति[12] ॥ ३२ ॥
बीच खालसे जाइ थिर्यो है। सभिहिन मन उतसाह कर्यो है।
सिंह देखि आनंदति अते। वाहिगुरु जी की कहि फते[13] ॥ ३३ ॥
मार बकारा करि ते चले। आगे होइ लरहिं रिपु मिले।
पिता बाक को तबहि संभाला। करहिं हटावनि कहि ततकाला ॥ ३४ ॥
गुर को कह्यो उलंघहु नांही। चरन जमाइ थिरहु तिस[14] मांही।
दुरग आपने राखि पिछारे। करहि जुध कुद्धत हुइ भारे ॥ ३५ ॥
इत यौं त्यार भए हित लरिबे। भीमचंद उत इम क्रित करिबे।
सिवर[15] करन ठहिराइ पिछारी। ले अनीकनी[16] भया अगारी ॥ ३६ ॥
दुंदभि बजे जुझाऊ[17] ऐसे। डोलनि जुति घन गरजहि जैसे।
डेरा करहिं महां रण लरिके। मारैं सिंह अनंदपुरि बरिकै[18] ॥ ३७ ॥

---

1. पहाड़ी राजाओं के 2. महाभारत का युद्ध 3. आयु और मन की इच्छा 4. सम्मुख 5. बढ़ने 6. दृढ़ हो जाइए 7. हाथ जोड़ कर 8. घोड़ा 9. परिक्रमा, प्रदक्षिणा 10. घोड़ा 11. उछल कूद 12. चिल्ला चढ़ाना 13. जीत, विजय 14. उस स्थान पर 15. शिविर 16. समस्त सेना 17. जूझने के लिए 18. दाखिल होकर

भो राजहु लिहु पूरब जीत। चड़े खड़े करि लिहु रण रीति[1]।
इम कहि सनमुख ही चलि आए। फररे अनिक निशान छुराए[2] ॥ ३८ ॥

शलख[3] तुफंगन तड़फड़ चली। दुहि दिशि चमूं अधिक कलमली[4]।
मार मार कहि बडो बकारा। होनि लग्यो बहु जंग अखारा ॥ ३९ ॥

इत बाज्यो रणजीत नागारा[5]। परि दुचोबैं रण धुंकारा।
गिरनाथन को बायु कुफेरी[6]। भे अपशगन घने तिस बेरी ॥ ४० ॥

जरासंध जनु सैन सकेली। मथुरापुरी आनि करि मेली।
गज सम जोधा बली बिसाला। गोबिंदसिंह अहै जिन काला ॥ ४१ ॥

दोहरा

इक दिशि चमूं तुरंग की इक दिशि पैदल होइ।
पर्‌यो जंग घमसान को मिलै सुभट दिशि दोइ ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'जंग प्रसंग'** बरननं नाम त्रौदशमो अंशु ॥ १३ ॥

---

1. युद्ध का साज बना लो 2. ध्वज और झंडे झूलने लगे 3. एक साथ बंदूकों के चलने की क्रिया 4. शोर मचने लगा, हंगामा होने लगा 5. गुरु गोबिंद सिंह का एक नगारा विशेष जिस का नाम 'रणजीत' था 6. प्रतिकल स्थिति उत्पन्न हो गई

अंशु १४

जंग प्रसंग

दोहरा

इम दुहिंदिशि ते ओरड़े[1] बीर बड़े बलवंड ।
प्रथम तुफंगनि भेड़ करि भयो घुमंड प्रचंड[2] ॥ १ ॥

रसावल छन्द

जसवाल[3] धायो । पदाती[4] लिआयो ।
चली यौं तुफंगै । महां एक संगै ॥ २ ॥
उदैसिंह दैरा । मच्यो भूर रौरा ।
छूटे तीर गोरी । भिरे दौन ओरी ॥ ३ ॥
मनो पौन प्रेरे । भए मेघ नेरे ।
परे ब्रिंद ओरे । क्रिखी सूर[5] फोरे ॥ ४ ॥
महा तेज तते[6] । रस बीर रते[7] ।
चली शूक गोरी । रिदा सीस फोरी ॥ ५ ॥
लगे घाइ घूमे । परे झूमि भूमे ।
किसी टांग टूटी । रिदै धीर छूटी ॥ ६ ॥
किसू घाव छाती । पर्यो भूम घाती[8] ।
कसै को तुफंगा । गजं काटि चंगा ॥ ७ ॥
ठुकैं डालि गोरी । डंभै शत्रु ओरी ।
उठावैं तड़ाके । बड़े बीर बांके ॥ ८ ॥
करें सिंह हेला[9] । पहारी न झेला ।
पदांति[10] गवारे । परे एक बारे ॥ ९ ॥

---

1. उछल कर 2. प्रचंड युद्ध हुआ 3. जसवाल राजपूत राजा 4. पैदल सेना 5. शूरवीरों की खेती 6. गर्म 7. लाल 8. घायल 9. आक्रमण 10. पैदल सेना

दोहरा

इत आलम सिंह दया सिंह मिलि बचित्रसिंह बीर।
उदेसिंह सों तबि कह्यो रहु गुर सुत के तीर॥ १० ॥

पाधड़ी छन्द

हम सभि पदात[1] के समुख जाइ। उत बधी[2] जाइ हतिकै हटाइ।
इह दल तुरंग के टोल[3] देखि। इन संग अरहु दिढ[4] रखहु टेक॥ ११ ॥
नहिं अग्र जानि की करहु घात। गनत जो तुपक तकि शत्रु गात।
गुर पुत्र राखि थिर धीर देहु। नहिं जाहिं अगारी वधहिं[5] केहु॥ १२ ॥
इन नई बैस रन चौंप भूर[6]। प्रभू पुरख पुत्र सूरा गरूर॥ १३ ॥
इक बारि परे ऊपर रिसाइ। गुलकान मींह[7] बरखाइ धाइ।
गन तीर बीर धरि धीर मारि। कड़की कमान जिम उडति मार[8]॥ १४ ॥
मिलि गए बीच गन, सेल ठेलि। हति खड़ग काटि रिपु पेलि पेलि।
गिर गए सुभट गन लोथ पोथ[9]। हय पगन संग तन चौथ थोथ[10]॥ १५ ॥
चलियंति रकत पिलयंति कट[11]। मिलियंति हथवथन[12] दबट।
इम मरे जबहि भाजे गवार। पिखि भीमरूप सिंहन उदार॥ १६ ॥
ठहिरति नहिन जम मनहु आइ। मारति रिसाइ नहिं को उपाइ।
तबि भीमचंद लखि भीम जुध। भी प्रथम हार[13] बोल्यो सुक्रुध॥ १७ ॥

दोहरा

जमतुला भाऊ[14] हुतो गुजरनि गन सरदार।
ताड्यो राती आंख करि[15] तूं नित करति उचार॥ १८ ॥

तोटक छन्द

बजरुड[16] जबै हति ग्राम लयो। तबि को दुख पाइ भनंति भयो।
गुर संग लरौं दल थोर अहै। पलटा हमरो नित लेनि चहैं॥ १९ ॥
समुदाइ सकेलन छेर करौं। तुम संग चलौं, पिखि लेहु लरौं।
कुछ थोर सहाइक आप बने। तबि जानलिजै सभि सिंह हने॥ २० ॥
अबि क्यों नहिं सो सिमरहु मन मैं। मुहरै[17] चल जाहु, थिरो रन मैं।
सभि छेर[18] पलाइन होइ चली। ठहिरै तुझ ते लरि भांति भली॥ २१ ॥

---

1. पैदल सेना के सामने 2. आगे बढ़ने से 3. सैनिक टुकड़ी 4. दृढ़ 5. आगे बढ़ना 6. अत्यधिक उल्लास 7. गोलियों की वर्षा 8. साँप उड़ता है 9. लथ-पथ 10. पांव के नीचे कुचले गए 11. पांवों में से 12. हाथा-पाई वाला युद्ध 13. पहले के समान 14. गूजरों की जाति विशेष 15. आँखें लाल करके 16. तहसील ऊना का एक गाँव 17. सामने 18. अशिक्षित सैन्य दल

कहिलूर पती बच श्रोन सुने[1]। चपि[2] गूजर क्रोधति होइ घने।
सावधान बन्यो धनु बान गहे। बिच[3] पैदल जाइ शिताब[4] लहे ॥ २२ ॥
ललकार बकार बहोरति भा[5]। सर जोरति ऐंचति छोरति भा।
इम पाइ सहाइक छेर वडी। इक बार भुरे तुपकानि छडी[6] ॥ २३ ॥
उत राजन केर तुरंग दलं। अगवार बधे[7] करि दीह[8] दलं।
मुख मारहि मार पुकारति हैं। गुलकानि[9] खतंग प्रहारति हैं ॥ २४ ॥
बड हेल[10] कर्यो कुछ सिंह हटे। करवार निकारति काट सटे।
भट भेड़ लटापट जूट गए। तुपकानि तड़ाफड़ नाद भए ॥ २५ ॥
गुर नंद[11] बिलोकति कोप भयो। धनु ऐंचति तीरनि छोरि दयो।
चलि शंक परे रिपु ब्रिंदनि मैं। बड बीर तुरंग निकंदन[12] मैं ॥ २६ ॥
जहिं लागति पार परे तन ते। जल जाचति[13] है न उभे रन ते।
बहु अंध रु धुंध मचाइ दई। नभ धूल उडी इकसार भई ॥ २७ ॥
पिखि मास ग्रिधां मंडरावति हैं। गन कांक रु कंक[14] भ्रमावति हैं।
बहु कूकर जंबूक[15] डोलती हैं। भखि आमिख[16] दीरघ बोलती है ॥ २८ ॥
सिर के बहु बार खिलारति हैं। गन जोगनि चींक पुकारत हैं।
हरखावति प्रेत सु नार्चात हैं। मिलि भूतहिं श्रोणत राचति हैं ॥ २९ ॥
रण खेत भयंकर भूर भयो। वहु देर लगी नहिं लोथ छयो[17]।
जबि सिंह पलाइन होइ चले। तब सिंह उदे अविलोक भले ॥ ३० ॥
जित राजनके वड टोल खरे। तित संमुख दैंकरि जोर तुरे[18]।
असवार हज़ारहुं संग लिए। गुर नंदन को सभि बीच दिए ॥ ३१ ॥
गुलकाननि बाननि[19] मारि करी। इक बार बडी तबि धूम परी।
जिम धान भुजैं बिच भाठ[20] घने। तिम नाद उठे तुपकान हने ॥ ३२ ॥

नराज छन्द

गुरु गोबिंद सिंह जी उतंग जो सथंडलं[21]।
थिरे तहां बिलोकते जुटे बिलंद[22] द्वै दलं।
तुफंग ते खतंग ते क्रिपान फेर मारिहीं।
मच्यो घमंड दीरघ पुकार दै पुकारहीं ॥ ३३ ॥

---

1. ये वचन कानों से सुने 2. खीज कर 3. मध्य, बीच 4. शीघ्र 5. मोड़ने लगा 6. छोड़ी 7. आगे बढ़े 8. बड़ा, लम्बा 9. गोलियां 10. बड़ा आक्रमण 11. आनंद से 12. संहार, नाश 13. मांगते हैं 14. एक मांसाहारी पक्षी 15. गीदड़ 16. मांस 17. आच्छादित हो गया 18. ज़ोर से दबाव डालते चले 19. गोलियां और तीर 20. भट्टी 21. ऊंचा स्थल, चबूतरा 22. ऊंचे, बड़े

चलैं प्रहार मारिबे सु वेग शूक[1] गोरियां ।
मनिंद[2] मेघ बूंद ही बंदूक डारि छोरियां ।
तड़ाक ते सड़ाक ह्वै पड़ाक भूम गेरते ।
वरूद फेर डालते, सु दूर दूर प्रेरते[3] ।। ३४ ।।
प्रचंड भा घमंड सूर खंड खंड काटते ।
कुदंड बाहु दंड ते सु जोर घोर डारते ।
बिहंड[4] रुंड मुंड ह्वै कितेकु तुंड पंडु ते[5] ।
दिखाइ कंड भाजते सु आयुधान छंडते[6] ।। ३५ ।।
विशाल हेल ठेलते कराल रेल पेलते ।
मनो सु फाग खेलते, दुहेल हेल झेलते[7] ।
पलाइ एक गेल[8] ते शिताब[9] पाइ मेलते ।
मानो चलाइ जेल ते बिहाल एव भेलते[10] ।। ३६ ।।
भए घने पहारिये[11] मचाइ धूम धूम को ।
हुतो सु थोर खलसा न छोरि जंग भूम को ।
रिसाइ श्री बिंद सिंह गुचांप आप लीनिओ ।
निहारि शत्रु सैन को खतंग बीच दीनिओ ।। ३७ ।।
पर्‌यो शुकाट[12] गैन मैं[13] अनंत सेन ओरड़ी[14] ।
मचंति जुध क्रुद्ध को परी न मार थोरड़ी ।
सड़ा सड़ी ततारचे[15] तड़ाभड़ी चलाइकै ।
प्रवश ते अशेश ही विशेश ओज लाइकै ।। ३८ ।।
क्रिपान ऐंचि[16] म्यान ते रिपूनि को प्रहानते ।
रचाइ श्रोण साथ ते नचाइ धारि पान ते[17] ।
उतंग अंग भंग ते कितेक सीस काटिओ ।
लगी सु तुंड कांहि के सिकंध[18] चीर फाटिओ ।। ३९ ।।
रिदा विदीर[19] कांहि को कि जंघ काट डारिओ ।
कितेक तेग साथ ही सु हाथ भूम पारिओ[20] ।

---

1. शू-शू का नाद करती हुई 2. समान 3. भेजते, चलाते 4. काटे जाने पर 5. मुख पीले पड़ जाते 6. शस्त्रों को त्याग कर 7. कठोर आक्रमण का सामना करते हैं 8. एक तरफ से भाग कर 9. शीघ्र 10. इकट्ठे हो जाते हैं 11. पहाड़ी सैनिक 12. शूं-शू की आवाज़ 13 आकाश में 14. उत्साहित हो कर उछली 15. तातार देश का बना तीर 16. खींच कर 17. हाथ पर रख कर 18. कंधा 19. फाड़ दिया 20. भूमि पर पड़े हैं

बजंति धौंस दीरघा सुणाइ सो नफीरियां।
अनेक दुंदभानि पै दुचोब लाग धीरियां॥ ४०॥
*सुबेग सिंह जंबुरी[1] सबेग क्रोध पाइओ[2]।
क्रिपाल सिंह बीर अंबरीक सिंह धाइओ।
बचित्र सिंह सूरमा अनंद सिंह कोप्यो।
गुपाल सिंह दयाल सिंह जंग पाइ रोपयो॥ ४१॥
हमीर सिंह मान सिंह टेक सिंह दौरिकै।
दिवान सिंह शोभ सिंह कौल सिंह रौरकै।
हजार सिंह चैतसिंह संत सिंह सूरमा।
सुजान सिंह काहन सिंह दान सिंह रूरमा[3]॥ ४२॥

रसावल छन्द

उदै सिंह बीर। फते सिंह धीर।
दया सिंह संगी। भुजंगे निसंगी[4]॥ ४३॥
गिनैं नाम केते। गुरु पास जेते।
मझैलं[5] विसाले। भए रोह वाले॥ ४४॥
खचाखच वाहैं। जुदे अंग लाहैं।
उते ढूकि राजे। भजें फेर लाजे॥ ४५॥
करे आनि हले[6]। उथले पथले।
किते घाव झले। नहीं पाव हले॥ ४६॥
क्रिपानै निकारे। करूर करारे[7]।
कटार प्रहारे। दए पेट फारे॥ ४७॥

दोहरा

इस बिधि भयो प्रचंड रण मिली बाहिनी दोइ।
श्रोणत बिथर्यो धरन वहु लोथ पोथना[8] होइ॥ ४८॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते 'जंग प्रसंग' बरननं नाम चतर-दशमों अंशु॥ १४॥

---

1. गांव का नाम 2. अत्याधिक क्रुद्ध होकर 3. सुंदर 4. निःशंक शूरवीर 5. माझा प्रदेश के 6. आक्रमण 7. भयानक और कठोर 8. लाशों के ढेर

*गुरु गोबिंद की सेना के कतिपय सिखों के नाम

अंशु १५

जमतुला भाऊ बध प्रसंग

दोहरा

भीमचंद सैलिंद्र[1] तजि दूरि बचाइन[2] जंग।
खरो बिलोकति जंग को बिचरे बीर निसंग ।। १ ।।

सवैया

लोथ पै लोथ परी हय पोथत[3] श्रोणत ते गल चालि पनारे।
घाव भकाभक बोलति हैं भट एक कराहति हाइ पुकारे।
घाइल घूमति झूमति हैं बहु मार परी एक ह्वै मतवारे।
मारु जुझाऊ को बाजति बाजन इक लरे थिर सूर जुझारे ।। २ ।।

संग हंडूरीए भूप[4] कटोच के साथ कहैं कहिलूर को राजा।
मार परी बिशुमार[5], महां घमसान पर्‌यो, नहिं खालसा भाजा।
भीर परी धरि धीर रहे जंग लरे बहू न सर्‌यो कुछ काजा।
आपनी सैन बिलोकति क्यों नहिं पीछे हटी तजिकै कुल लाजा[6] ।। ३ ।।

गूजर रंघर[7] को सरदार लखी बहु मार खर्‌यो टरि सोऊ।
और दयो तन नांहि किसू जिस ते नहिं जीत भई अब जोऊ।
फेल के फौज मैं आप लरैं न्रिप तौ सवधान बनै सभि कोऊ।
अग्र अरैं तबि धीर धरैं भट मारि करैं अरिकै अरि खोऊ[8] ।। ४ ।।

बोलति बाक कटोच हंडूरीआ, केसरीचंद को लेहु बुलाई।
दाहिन सैन लीए उमडै तित छोर बंदूकनि को समुदाई।
बाम दिशा जमतुल बढै जम तुल बनै बहु सिहन घाई[9]।
बीच थिरे हम फौज की पेलहिं, हेल को घालहि देहिं भजाई ।। ५ ।।

---

1. पहाड़ी राजा 2. बचा कर, रक्षित कर के 3. ढेर लगा है 4. हंडूर के राजा के साथ 5. बेशुमार, अत्यधिक 6. लज्जा 7. मुसलमान राजपूतों की एक जाति 8. वैरी दल को नष्ट करना 9. मारे

सिंह प्रवेश अनंदपुरे महिं बाहर मोरचे देहु लगाई।
घायल होहि उठाइ पठावहु आप समीप ढुको बल लाई।
कौ लगि होहि मवासि[1] इहां लर तूरन[2] ही गुर को निकसाई।
आपस महिं कहि बाक सुने इम केसरीचंद को फेर सुनाई ॥ ६ ॥

बीर लरे दिशि दोइन के बहु वार प्रहारति हार गए।
दूर थिरे तुपकान चलावति पैदल आड को लेति भए[3]।
फेर तफंगन सिंहन के पिखि हाथ लए हथिआर भए।
नेर करैं न डरैं मन दे न हनें भट सैन लिट सु पए[4] ॥ ७ ॥

कबित्त.

इतै सिंह सूरमे गरूर मैं लरति भूर दूर दूर कीने अरि धूरि में मिलाइकै।
श्रोणत में चीर पूर[5] केतिक हजूर गए 'मारि करि चूर चूरि' भाखति सुनाइकै।
बोले प्रभु पूरन 'शहर संग[6] जंग करो तूरन[7] अगारी पग कीजै न बधाइकै।
राखो निज खेत असिकेतु[8] है सहाइ तुम' सुनि सुनि धाइ गए लरैं चित चाइकैं ॥ ८ ॥

प्रमाणका छंद

समूह सिंह मोरचे। बिलोकि जंगमों रचे[9]।
थिरे तिनै मझारिआ। तुफंग को संभारिआ ॥ ९ ॥

कमान बान साधिकै। गुरु गुरु अराधिकै।
सऊर[10] सिंह जेतने। इकत्र होइ तेतने ॥ १० ॥

अजीतसिंह संग ह्वै। फिरंति दाइ[11] जंग ह्वै।
थिरे लरे सधीरया। अभीर पूर बीरया[12] ॥ ११ ॥

निनद ब्रिंद ढोलके[13]। सरौल[14] बीर बोलके।
निशान चोब मारते। निशान चीर चारते[15] ॥ १२ ॥

चलाए ताकि गोरियां। भिरंति शत्रु ओरियां।
न नेर होनि पावईं। तकंति दूर घावईं ॥ १३ ॥

गिरीश भीम चंद ने। प्रचारि बीर ब्रिंद ने।
हकारि पास केसरी। मनिंद[16] ओज केसरी ॥ १४ ॥

---

1. शरण में न आने वाले 2. तुरंत 3. शरण में आकर 4. आगे ही शूरवीरों की सेना लेटी पड़ी है 5. रक्त में सन्ने हैं 6. बुद्धिमानी से 7. तुरन्त 8. अकाल पुरुष, परमात्मा 9. लीन हो गए 10. सवार, घुड़सवार 11. घात, ताक 12. पूर्ण वीर योधे 13. ढोलों के समूह से आवाज़ निकल रही है 14. कोलाहल के साथ 15. फहराना, लहराना 16. समान

भनंति हेल धालिवे। विलोक तूं संभालवे।
कमान बान तानिये। संमूह ले संगानिये[1] ॥ १५ ॥

प्रधान गूजरान को। दिशा दुतीय जान को[2]।
सुचेत सोइ कीजिये। निसंग संग लीजीये ॥ १६ ॥

वटोरि वीर धाइये। सु एक बारि जाइये।
हज़ारहूनि हेल को[3]। मिलाइ देहु पेलको[4] ॥ १७ ॥

पलाइ पुंज खालसा। पुरी बिसाल लालसा।
पुरे अनंद बारिये[5]। सु ओज को सुधारिये ॥ १८ ॥

सु केसरी सुनति भा। चलंति चौंपवंत भा[6]।
जहां कहां प्रचारिकै[7]। सु हेल को उचारिकै ॥ १६ ॥

समूह अग्र तोरिकै। महान जुध लोरिकै।
तुरंग को त्तपाइकै[8]। इतै उतै भजाइकै ॥ २० ॥

रुझुण छंद

जमतुल भाऊ। तिह कहि राऊ।
इत द्रिढ ह्वै कै। परहु रिसै कै ॥ २१ ॥

उत कहिलूरी। रिस उर पूरी।
अरि पर धावै। शसत्रनि घावै ॥ २२ ॥

सभि गिर नाथे। धनु सर हाथे।
चहिं चित हेला। करनि धकेला ॥ २३ ॥

बनि सवधाना। तजहु निशाना।
करि तकराई[9]। बहु बिधि गाई ॥ २४ ॥

फिर फिर फैरा। करि करि फेरा।
सभिहिन प्रेरा। हति इक बेरा ॥ २५ ॥

भट बहु गाजे। पुन पुन बाजे।
धुन गनि ऊचे। अधिक पहूचे ॥ २६ ॥

गिर नर सारे। पुन हुइ त्यारे।
बहुत प्रकारे। बक बक मारे[10] ॥ २७ ॥

---

1. सभी को साथ ले कर 2. जाने के लिए 3. हज़ारों को साथ ले कर आक्रमण करो 4. दबा कर 5. दाखिल करें 6. उत्साहित हो कर 7. चुनौती दे कर 8. उछल कूद कराकर 9. मज़बूती के साथ 10. बोल बोल कर मारे

संखनारी छन्द

उदेसिंह जाना। सु बैनं बखाना।
धने शत्रु आए। सु रौरं मचाए[1] ॥ २८ ॥
धनो हेल पायो। दलं ब्रिंद धायो।
बनो सावधाने। गहो शसत्र पाने[2] ॥ २९ ॥
न पैरं हिलाओ। खरे शत्रु घाओ।
बडे होइ गाढे। कराचोल काढे[3] ॥ ३० ॥
करो मार ऐसे। नहिं जाहिं जैसे।
उदैसिंह धायो। तुरंग भजायो ॥ ३१ ॥
सभै को सुनायो। सुचेता करायो।
संभारी तुफ़ंगैं। भए भीम रंगैं ॥ ३२ ॥

पाधड़ी छंद

गुर पुत्र तबै हुइ कै सुचेत। लै सिंह संग रिपु हतनि हेतु।
वधि अग्र धर्‍यो सर चांप हाथ। खपरे निकासि बड ओज साथ ॥ ३३ ॥
तकि टोल टोल प्रति हतनि कीन। बीधे तुरंग भट भंग दीनि।
उत ते वधाइ आए कराल। हुइ समुख धरे आयुध बिसाल[4] ॥ ३४ ॥
छूटी तुफंग इक वारि ब्रिंद। गुलकां सड़ाक जीधा निकंद[5]।
मिलि गए परसपर घालि हेल। भट जुटे पाइ नहिं धर पिछेल[6] ॥ ३५ ॥
पर गयो एक बारी घमंड[7]। गिर परे बीर हुइ खंड खंड।
नहिं तजी थांउ शसत्रन प्रहार। हेला सु झार[8] पुन ज़ोर धारि ॥ ३६ ॥

चौपई

पंचन महिं साहिबसिंह[9] जोइ। गहि तुफंग को पहुंच्यो सोइ।
खरो जहां जमतुला भाऊ। आवति हेला[10] करति अगाऊ ॥ ३७ ॥
फेरि कवाइद को निज घोरा। तजी तुफंग तांहि की ओरा।
कड़क शूंकती तां पर गई। मनहुं गाज पहुंची सिर पई ॥ ३८ ॥
लगी भाल महिं गिर ततकाला। पर्‍यो भूमि पर अंग न हाला[11]।
सीस भेद मिझ[12] निकसी ऐसे। मखनी जुति[13] हांडी फुट जैसे ॥ ३९ ॥

---

1. बहुत शोर मचा रहे हैं 2. हाथ में 3. तलवारें निकालीं 4 बड़े शस्त्र 5. नष्ट हुए, मारे गए 6. पीछे पांव नहीं रखते 7. घोर युद्ध 8. आक्रमण की शक्ति को क्षीण कर के 9. पांच विशेष प्रिय सिखों में एक का नाम साहिब सिंह था 10. हमला, आक्रमण 11. हिलना 12. मज्जा 13. मक्खन से युक्त

गूजर रंघर छेर हज़ारनि। जिस के संग गहे हथ्यारन।
सभि के शोक बिलोकति होवा। पर्यो नींद दीरघ महिं सोवा ॥ ४० ॥
हाहाकार पुकारति सारे। भयो गजब जमतुला मारे।
मिले सैंकरे तिस थल आए। चाहति तिसकी लोथ उठाए ॥ ४१ ॥
इत आलमसिंह बीर जुझारा। लै करि सिंह हेल को डारा।
ऊचे कह्यो पुकारि सुनीजै। लोथ दुशट की जानि न दीजै ॥ ४२ ॥
मारमार करि हरखति अते। वाहिगुरु जी की कहि फते[1]।
ओरड़[2] परे लोथ पर सारे। सिंह पदाती[3] गहि हथ्यारे ॥ ४३ ॥
उत ते उनहुं ज़ोर बड कीना। लोथ लेनि को हठ धरि लीना।
दुहं दिशि ते मिलि गए हज़ारन। मारन मरन जंग रचि दारुन ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'जमतुला भाऊ बध प्रसंग'** बरननं नाम पंचदशमों अंशु ॥ २५ ॥

1. जीत, विजय 2. झुक गए, छा गए 3 पैदल सेना

अंशु १६

जंग प्रसंग

दोहरा

मानसिंह के पान मंहि हुतो निशान, महान।
वध्यो अग्र तिह लोथ ढिग परन लग्यो घमसान ॥ १ ॥

चौपई

सिंह बहादर फांधति आए। कराचोल[1] कर धरि चमकाए।
तोमर[2] तीरनि तुरत प्रहारे। भाऊ सिंह तहां बहु मारे[3] ॥ २ ॥
सिंहनि अनी घनी तहिं धावति[4]। तुपक तमांचे तकि तकि लावति।
पिखि घमंडचंद आइ कटोचि। ऐंचि ऐंचि धनु बाननि मोचि ॥ ३ ॥
प्रेरे बहु जोधा तिस थान। कह्यो करहु बल, लेहु निशान[5]।
सहित लोथे के तुरत उठावहु। आवहिं वधे मारि उथलावहु ॥ ४ ॥
मानसिंह जोधा धरि धीर। गाड्यो तहां निशान अभीर[6]।
रहित कहित के सहित महित[7] है। सर मारहि जिह निकट लहति है ॥ ५ ॥
छेर हजारहुं ओरड़[8] परी। हाइ हाइ कहि मारति मरी[9]।
घने ढोल ग्रामनि के साथ। सेले सिपर शकति[10] असि हाथ ॥ ६ ॥
बजे ज़ोर ते बहुत जुझाऊ। सुनि सुनि फांदति आइं अगाऊ।
गुर **निशान** पर घालहिं हेला। लेनि लोथ जुति तऊ दुहेला ॥ ७ ॥
जे सऊर निज हयनि बचावहिं। गुलकां[11] लगहि न इत उत धावहिं।
सनमुख होइ न आवहिं सोइ। लखि सर गोरी बरखा होइ ॥ ८ ॥
जो उतसाहति आइ धवावति[12]। तकि गुलकां मारति उत लावति।
यांते ओरड़ आइ पदाती[13]। हेरि खालसे पुंज अराती ॥ ९ ॥
गुर निशान के बन रखवारे। कर्सहि तुफंगन तकि तकि मारे।
परी लोथ नहिं लैबे दीनि। भयो भेड़ भारी भय भीन ॥ १० ॥

---

1. तलवार 2. भाले 3. सिंहों ने जमतुला के बहुत से साथियों को मारा 4. मार दी 5. ध्वज, झंडा 6. वीरतापूर्वक /7. बड़ा शूरवीर 8. उमड़ आई 9. मारते और मरते हैं 10. भाले, ढाल और बरछियां 11. गोलियां 12. दौड़ाते हुए 13. पैदल

सिरखंडी छंद

गरजे पुंज पहाड़ी भड़थू घतिआ[1] ।
कुझ न मुझे पिछाड़ी खड़ग प्रहार ते ।
ढालैं ओडि अगाड़ी संमुख आवदे[2] ।
लहू क्रिपाण उघाड़ी पकड़ि नचांवदे[3] ॥ ११ ॥
इत ते छाली[4] उठे सिंह सुहांवदे ।
गोरी तीरन वुठे[5] छहिबर[6] सी लगी ।
हथावथ हुइ कुठे अगे आंवदे ।
तड़फति धर पर लुठै पड़े करांहदे[7] ॥ १२ ॥
मिलि मिलि हेला घालहिं, छालहिं उछलें ।
मुछैं बंक विसालैं तछं ततछिनैं[8] ।
रछैं गछ उठालैं ढालैं छैल जे ।
कछैं पछ करालैं आमिख छक रहे[9] ॥ १३ ॥
तछामुछ वन अंगी छड्यो क्रुधना ।
बाणे[10] रग सुरंगी श्रोणत सों भरे ।
उछलें छैल छलंगी छालें छोभते ।
कछैं केश भुजंगी जंगी शोभते ॥ १४ ॥
लाइ लाइ वल हारे लोथ न उठीआ[11] ।
अपर लोथ भट भारे मरि कर गन भई ।
मानि सिंह असि धारे रह्यो निशान पै ।
गुर प्रताप ते मारे छैरैं ग्रामकी[12] ॥ १५ ॥
मिलि मिलि हुइ तरवारी लरि लरि हट परै ।
रख्यो खेत गुर भारी सिंहनि भारिकै ।
थिरैयो[13] निशान अगारी नाहिन हालिओ ।
हारी चमूं पहारी पीछे हटि भई ॥ १६ ॥

दोहरा

भई संझ[14] तबि भीखना[15] असतयो सूरज जाइ ।
कहा लगे वरनन करौं भयो जुध जिस भाइ ॥ १७ ॥

---

1. घमसान युद्ध हुआ 2. आते ही 3. नचाते हैं 4. छलांगें लगाते हुए 5. वृष्टि हुई 6. बूछाड़ लग गई 7. कराहते हैं 8. तत्क्षण उन्हें मार देते हैं 9. मज्जा का भक्षण कर रहे हैं 10. वस्त्र, पोशाक 11. उठाई न जा सकी 12. गांव की अशिक्षित सेना 13. स्थिर रहा 14. सायं काल 15. भयानक

चौपई

दुहं दिशि के जोधा मिट गए[1]। तीन जाम लरिकैं त्रिपतए।
श्रमति सुभट सभि हय जुति होइ। मरे हज़ारहुं गिने न कोइ ॥ १८ ॥
सने सने निज निज दिश मुरे। घायल संभालति सभि तुरे[2]।
रचे मोरचे सिंहनि जहां। निज निज मिसल[3] थिरे जहिं कहां ॥ १९ ॥
को को तुपक छुटहि तिस काला। अपनी अपनी करति संभाला।
जिन सिंहनि रण त्यागे प्राना। सुर पुरि गए अरूढि विमाना ॥ २० ॥
घाइल कितिक उठावति ल्याए। केतिक चलि आपन ही आए।
दरशन प्रभू पुरख को कीनसि। सकल खालसा आनंद भीनसि ॥ २१ ॥
सरब प्रसंग जंग को कह्यो। जमतुला खेतहि महिं रह्यो।
लोथ हेतु ओरड़ गन[4] परे। लए निशान मान सिंह खरे ॥ २२ ॥
रावर को प्रताप करि सारे। नेरे ढुके न, जवि बहु मारे।
गए हार हट गए पिछारी[5]। सतिगुर राखी लाज हमारी ॥ २३ ॥
ब्रिकस[6] कह्यो प्रभु कीनसि भला। संगति को जमतुल जम तुला।
देति बिखाद मार सो लीनसि। चहुंदिशि के सिख सुखीआ कीनसि ॥ २४ ॥
कर्‌यो खालसे को सनमाना। करि करि खुशी अनंद निधाना।
केतिक घायल आइ हजूर। केतिक निज डेरनि महिं सूर ॥ २५ ॥
साल पत्र[7] सभि को दिलवायो। घाव बिखाद तुरत बिनसायो।
भोर होत लौ बनहिं सुचेत। हथ्यारन गहि आहव हेतु ॥ २६ ॥
ब्रिंद मसाल ज्वलति गुर आगे। गुर सिख गुर दरशन अनुरागे।
बरती देग तिहावल[8] होए। मन भावति अचि करि सभि कोए ॥ २७ ॥
अभिनंदति गुर नंदन खायो। रण ते शसत्रनि सहित सुहायो।
उदेसिंह तबि तिसहि प्रशंसै। रण महिं गाढे शत्रुनि ध्वंसै ॥ २८ ॥
सिंह सथिरे[9] मोरचे महीआ। तिन हित गई देग जहिं कहीआ[10]।
निज थल ठाढे गाढे रहीअहि। सतिनाम जपु रिपुदिशि लहीअहि ॥ २९ ॥
इम सतिगुर सभि सिंह संभारे। मरे जितिक आछे ससकारे[11]।
परमगती ते कहु प्रापति करे। गुर हित समुख जंग पुन मरे ॥ ३० ॥
इस ते परे लाभ क्या अहै। जो परलोक सुधारन चहै।
दरशन करि करि भोजन खाए। बहुर[12] मोरचे सिंह सिधाए ॥ ३१ ॥

---

1. हट गए 2. चले 3. स्तर, दर्जा 4. सैन्य दल उमड़ पड़े 5. पीछे 6. विकसित होकर, प्रसन्न होकर 7. घाव पूरने वाला पत्ता 8. कड़ाह-प्रसाद बाँटा गया 9 स्थिर रहे 10. जहाँ कहीं थे 11. अच्छी तरह से अंतिम संस्कार किया 12. पुनः, फिर

कसे तुफंगनि आधे खरे। आधे निस अराम को करे।
भयो खेत विकराल बिसाला। कूकति मिले ब्रिंद श्रिगाला॥ ३२॥
वहुते स्वान पुकारति फिरै। सूरनि आमिख भख्यन करै[1]।
भूतनि प्रेतनि पाइ धमार[2]। गावति नाचति मुदति उदार॥ ३३॥
मि़र के बारि खिंडाइ[3] कराले। मिली जोगनी शबद उठाले।
संध्या समै लए गन सारे। बिचरति भद्र रुद्र[4] हुई भारे॥ ३४॥
धुक धुक उठे मसान[5] महाने। बोलति हड़[6] सुनी अती भै भाने।
श्रोणत को करदम रज राचा[7]। कित कित घाइल हाइ उबाचा॥ ३५॥
मरे तुरंगम धरनी परे। पल भखी पल भखनि करे[8]।
जुदे मुंड कहूं रुंड कराले। खड़ग समेत हाथ कटि डाले॥ ३६॥
कहूं चरन कहूं ज़ंघ कटे हैं। कित कटार सन पेट फटे हैं।
घोर दरशना धरनी होइ। देखी जाइ न काइर जोइ॥ ३७॥
सिंह मोरचे थिरे सु जिते। वाहिगुरु जी की कहिं फते[9]।
गरजि गरजि करि दूर सुनावैं। ब्रिजै आपनी सभिनि सुनावैं॥ ३८॥
इस विधि बिती खालसे मांही। मरे सु मरे शोक कछु नांही।
होति भोर धारे उतसाहा। हतहिं रिपुन को संघर मांहा॥ ३९॥
अबि पहारीअनि[10] की बड सैना। कहौं कथा बीती जिम रैना।
गिरपति अरु गिरनर[11] समुदाया। कितिक प्रजा अरु सुभट लराया॥ ४०॥

दोहरा

लाज शोक सभि महिं भयो चिंता रिदै उपाइ।
सुनहु बारता तिनहुं की गन श्रोता वित लाइ॥ ४१॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'जंग प्रसंग'** बरननं नाम खोड़समो अंशु॥ १६॥

---

1. शूरवीरों की मज्जा का भक्षण कर रहे हैं 2. नाच रहे हैं 3. फैला कर, बखेर कर 4. भयानक शिव 5. श्मशान 6. हँसता 7. मिट्टी में रक्त पड़ने से कीचड़ हो गया है 8. मांस खाने वाले मांस खा रहे हैं 9. जीत, विजय 10. पहाड़ी राजाओं की सेना 11. पहाड़ी राजागण और सैनिक

अंशु १७

जंग प्रसंग

दोहरा

भीमचंद बिन अनंद के देखि रह्यो बिसमाइ[1]।
बीर हज़ारहुं पच रहे लोथ नहीं किम ल्याइ ॥ १ ॥

चौपई

अलप खालसा अर्यो लह्यो है। बहुत हमारी दिशा रह्यो है।
पचि पचि रहे हेल को डालति। अनिक प्रकारन के बल घालति ॥ २ ॥
नहिं किसहूं ने सिंह हलाए[2]। गाड निशान थिरे जिस थाएं।
किम इह लरते तहां नरन मैं[3]। इम सोचति गिरपति[4] बहु मन मैं ॥ ३ ॥
हटी चमूं लरिबे पिछवाई। आइ सिवर[5] घाल्यो गिरराई।
मरे परे सो खेत रहे हैं। जो घाइल संभाल लए हैं ॥ ४ ॥
थकति सूरमे सकल तुरंगनि। मुरझाने मुख सिथले[6] अंगनि।
बिन उतसाह शोक मैं केते। सनबंधी हति घाल्यो जेते ॥ ५ ॥
मंत्री अपर जितिक थे स्याने। होति समीप सकल सनमाने।
निज वज़ीर को निकट बिठारा। ज्वलति मसाल खरे गन झारा[7] ॥ ६ ॥
आइ केसरी चंद हंडूरी। भूप कटोच आदि बिधि रूरी।
सभि नरिंद्र बैठे जबि आइ। तिन के जे बजीर समुदाइ ॥ ७ ॥
भीमचंद तबि बाक बखाने। सुनहु श्रोन दे तुम सभि स्याने[8]।
आज परी जिस भांति लराई। कितिक दिवस महिं दल खप जाई ॥ ८ ॥
जोधा मरे हज़ारहुं लरि लरि। लोथ हेतु बहु हेला[9] करि करि।
अर्यो खालसा धीरज धरि धरि। छोरति ज्वालाबमणी[10] भरि भरि ॥ ९ ॥
सुनति कटोच हंडूरी बोला। प्रथम जंग लर सभि ने तोला[11]।
अबि जिम बांछा तिम ही करीअहि। बाध, घाट[12] सभि घात बिचरीअहि ॥ १० ॥

---

1. आश्चर्यपूर्वक 2. अपने स्थान से हटा सके 3. वहाँ नरों अर्थात् सिंहों में 4. पहाड़ी राजा 5. शिविर, छावनी 6. थके हुए 7. महताबी 8. समझदार 9. हमला, आक्रमण कर के 10. तोप, अथवा बंदूक 11. अनुमान लगा लिया है 12. कमी-वेशी, न्यूनता-अधिकता

मंडसपती[1] नरिंद्र बखाना। इह गुरुअनि को सदन महाना।
नहिं समानता किस ते होइ। इन सों मिलिनि नीक ह्वै सोइ।। ११ ।।
करामात साहिब बलवंते। तुरत बनावहिं जथा चहंते।
बिदत महिद[2] श्री नानक गादी। नहिं पूरा उतरहि को बादी।। १२ ।।
सुनि हंडूरीए गिरा उचारी। राज काज की बात निआरी।
इस महिं पिता पूत त्रिगरंते। जो अति प्रिय सो शत्रु बनंते।। १३ ।।
जो तजि राज साध बन जै हैं। तौं अस बाति बिचारन कै हैं।
गुरु शत्रु बन गयो हमारा। कहहु लरन ते किम हुइ टारा।। १४ ।।
सुन जसवार केसरीचंद। बोल्यो सभ महिं गरब बिलंद[3]।
कहां सिंह हैं हमहु अगारी। ठहिर न सकहिं परी जबि मारी।। १५ ।।
कहा भए पूरब अर रहै। दाव लरनि को सैन न लहै।
होइ प्राति के मंडहु जंग। परहु हेल[4] करि सभि इक संग।। १६ ।।
कबि लौ लरहि खालसा जोई। दरब देश को राज न कोई।
तुम समरथ धन राज मझारे। किम अनंद पुरि बसहिं सुखारे।। १७ ।।
भीमचंद सुनि सभ ते कहै। भी जसुवार इसी बिधि अहै।
तऊ देखिये लेहु बिचारी। पैंडखान आयो बल भारी।। १८ ।।
जिम मार्‍यो दल गयो पलाई। दस हज़ार भट हय समुदाई।
हेरि आज को जंग हिरासा[5]। लशकर भयो कितेक बिनाशा।। १९ ।।
कहिलूरी को एक वज़ीर। बोल्यो हाथ बंदि जुति धीर।
अबि गिरपत तुम सभि चढि आए। लरहिं नहिं इहु किम बनि आए।। २० ।।
इसी प्रकार धरम छत्रीन। पूरब सुने, जथा सभि कीनि।
इस अवनी हित लरि मरि गए। जीत पाइ सुख भोगति भए।। २१ ।।
कै प्रभेग सुर पुरि कों पायो। जगत बिखै जोधा जसु छायो।
लरन मरन अरु साके[6] करने। इहो काम राजन के बरने।। २२ ।।
सभि ते सुनि कै न्रिप कहिलूरी। बोल्यो सुन्यो नीत जिम रूरी।
होति प्राति घेरा दिहु डाला। चहुं दिशि उतरहिं सदल[7] न्रिपाला।। २३ ।।
अन आदि नहिं देइ प्रवेशन[8]। सावधान बनिसरब गिरैसुनि[9]।
अनंद पुरे महिं प्रविशाह जबै। निकट लगाइ मोरचे सबै।। २४ ।।

---

1. मंडी रियासत के राजा 2. महान् 3. अधिक गर्व कर के 4. हमला करें 5. डर गया हूँ 6. यशस्वी घटना 7. दल सहित 8. दाखिल न होने दो 9. पहाड़ी राजागण

करहु तंग नित करि करि जंग। बिचरति हतहु तुफंगनि संग।
जित कित ते घेरहु बरिआई[1]। प्रविशन निकसन को नहिं पाई ॥ २५ ॥
इम सलाह आवति मुझ मन मैं। हते न जाहिं सिंह किम रन मैं।
सभिहिनि सुनि कै मसलत ऐसी। मानी गिरईशुनि[2] तबि तैसी ॥ २६ ॥
निज निज सिवर[3] गए सहि चिंता। गुरु न हारहि लरति कदंता[4]।
त्रास मानि आध सवधाना। खरे रहे गहि आयुध पाना ॥ २७ ॥
अरधन परि कीनसि बिसरामू। खान पान नरि धारि अरामू।
सभिनि जामनी डरति ब्रिताई। छोरति रहे तुपक निज थाई ॥ २८ ॥
बीती राति प्राति पुन भई। पूरब दिशि पीअरी[5] पर गई।
सौच शनान दुहन दिशि कीने। बसत्र शसत्र तन धारि सभी ने ॥ २९ ॥
निज निज थान बने सवधाना। दुंदभि बाजे अलप महाना।
संख घने शहिनाइ नफीरन। बडे ढोल उतसाहति बीरन ॥ ३० ॥
चढी चमूं सभि राजन केरी। ह्वै न सकहि आनंदपुर हेरी।
दूरि दूरि लग पसरी[6] घनी। घेरनि को डेरे करि अनी ॥ ३१ ॥
तबि सतिगुर जंजेल[7] चलाई। बाघन[8] तोप तुंग थिर थांई।
गत लमझड़ा[9] सिपाहन धरि धरि। तकि तकि सिवर हती तबि भरि भरि ॥ ३२ ॥
दूरि दूरि लगि मारि हटाए। ले ले ओट थिरे समुदाए।
भयो खालसा त्यार लराई। सहि न सकहि रिपु की बरिआई[10] ॥ ३३ ॥
ठौर ठौर चारहुं दिशि होए। थिरे मोरचनि महिं सभि कोए।
लगी तुफंगैं तड़भड़ छूटन। सिर छाती गन सुभटनि फूटन ॥ ३४ ॥
लै लै आड थिरे तक मारहिं। सुभट तुरंग भूम पर डारहिं।
डारहिं पुन बारूद उताले। गुलका[11] ठोकि ठोकि गज नाले[12] ॥ ३५ ॥
पसर गई चहुदिशनि लराई। दसत रवां करि शिसत लगाई[13]।
बिचरहि हय कै जोध पदाती[14]। डांभहि[15] तोड़ा ततछिन घाती ॥ ३६ ॥
राखहि दूर बरज करि अरी। तोप जंजेलनि[16] मारन करी।
केतिक चड़े सऊर[17] पहारी। उतरे दूर जाइ डर धारी ॥ ३७ ॥
आगे लै लै ढुकहिं पदाती। गुलकां[18] फोरहिं तिन की छाती।
लोट पोट हुइ गिर गिर परै। दूसर नहीं आइबो करे ॥ ३८ ॥

---

1. बलपूर्वक 2. पहाड़ी राजाओं ने 3. शिविर 4. कभी भी 5. पीली 6. फैली हुई 7. बंदूक विशेष 8. एक तोप का नाम 9. लम्बी नाली वाली बंदूकें 10. बल 11. गोलियां 12. के साथ 13. हाथ जमा का निशाना लिय 14. पैदल सेना 15. आग लगाते ही 16. विशेष बंदूक 17. सवार 18. गोलियां

बजदि बंदूक दुतरफी घनी। आगे लै लै लरती अनी।
गिरि करि मरे सौंकरे सूरा। तड़फति घाइल मिलि मिलि धूरा ॥ ३९ ॥
चहुं दिशि मंहि बहु मार मची है। जंहि कंहि श्रोणत धूल रची है।
है है मार मार करि धावैं। मनमुख ह्वै हैं, मुख तुरवावैं ॥ ४० ॥
भयो दुपहिरा मचंति लराई। थिरे मोरचनि भट समुदाई।
ज्वालाबमणी[1] तकि तकि छोरंहि। उर आवति इहु हति हति मोरंहि[2] ॥ ४१ ॥
पसरी सैना राजन केरी। जनु समुंद्र उछल्यो इस बेरी।
चहुं दिशि पस्र्यो जल सम ढरि ढरि। बीच अनंद पुर टापू समसर ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'जंग प्रसंग'** बरननं नाम सपत-दशमो अंशु ॥ १७ ॥

---

1. लम्बी नाली वाली बंदूकें 2. वापिस भगा देते हैं

अंशु १८

जंग प्रसंग

दोहरा

ढरे दुपहिरे खालसे कीनसि बिजीआ पान[1]।
सौच सनान महान करि भए सकल सवधान ।। १ ।।

चौपई

जपुजी आदि पर्ठहि गुरबानी। दीनि बीनि दसतार[2] महानी।
कंघा करि करि जूड़ बनाए। ऊपर बांधति पाग सुहाए ।। २ ।।
शमस[3] सुधारि करति मुछ[4] बंकी। गुर की रहित सहित अकलंकी।
जीन तुरंगम पर सभि डाले। कराचोल[5] गुर तुपक सम्हाले ।। ३ ।।
हुकम पिता को ले तिस काले। त्यार अजीतसिंह सभि नाले[6]।
प्रभु जी[7] बल प्रताप तुम पाऊं। इस प्रकार संग्राम मचाउं ।। ४ ।।
भीमचंद ते आदि पहारी। तिन ते नहिं सुधि जाइ संभारी।
लरिबे स्वाद आज सो पावे। चढि आवनि को मनि पछुतावैं ।। ५ ।।
पुत्र बाक को सुनति अनंदे। शत्रुनि बन को अगनि मनिंदे[8]।
सकल खालसे महिं उतसाही। तुमरे सम रिपु मैं बल नांही ।। ६ ।।
बल करिबे महिं नहिं उतलावहु। वधहु न आगे, जंग मचावहु।
चतर घटी[9] बीते हटि आवहु। सिंहन बरजि संग निज ल्यावहु ।। ७ ।।
इसही बिधि की खेल हमारी। सने सने इन गरब प्रहारी।
तुरकनि संग बिनस करि जाई। बनी खालसा लै ठकुराई[10] ।। ८ ।।
इह कुछ लरति नहीं अबि जोवैं[11]। अनंद राज को कुल ते खोवैं।
इम कहि पुत्र लरन के हेतु। पठ्यो प्रभू करि भले सुचेत ।। ९ ।।

---

1. भाग पी कर 2. पगड़ी 3. दाढ़ी 4. मूछ 5. तलवार 6. साथ 7. पिता जी 8. समान 9. चार घड़ी के बीतने पर 10. राज्याधिकार 11. दिखाई नहीं पड़ते

मुकता जेर[1] निखंग सुहायो। लियो दास ते गुर महिं पायो[2]।
खड़ग प्रथम ही धो गर पर्यो। ऊपर दुपटा ऐंचनि कर्यो[3] ॥ १० ॥
जरे जवाहर ज़ाहर जोति। अंग बिभूखन शोभा होति।
कंचन फूल सिपर[4] कौ जरे। धरि सिकंध पर, शोभ्यो खरे ॥ ११ ॥
कठन कुदंड हाथ महिं लै कै। पिता गुरु को वंदन कै कै।
निकसि बहिर हय को मंगवायो। करि प्रदछना ऊपर आयो ॥ १२ ॥
परी दुचोबैं गरज्यो भारा। ऊंची धुनि रणजीत[5] नगारा।
गुर सुत संग खालसा चढ़्यो। शत्रु हतन पर चाव सु बढ़्यो ॥ १३ ॥
कसि कसि तुपकनि पाइ दुगोरी। निकसे भीमचंद जिस ओरी।
पीछे उदेसिंह सो कह्यो। जाति अजीतसिंह रण चह्यो ॥ १४ ॥
करहु मोरचनि बहु तकराई[6]। असवारनि दल ह्वै समुहाई।
एक तमांचा रण को मारहु। शत्रु सैंकरे हति करि डारहु ॥ १५ ॥
पुन हटि आवहु लैकरि फते[7]। हेरहिं गिरपत निज भट हते।
सुनति उदै सिंह बंदन करी। दयासिंह रहि ढिग तिस घरी ॥ १६ ॥
मुहकमसिंह आदि बड जोधा। आलमसिंह धरे बड क्रोधा।
बीर बचित्र सिंह बड बाहू। मानसिंह गमन्यो रण मांहू ॥ १७ ॥
मटू[8] सेवा सिंह मझैल। दुनीचंद के आयव गैल।
सभि असवार होइ तबि गए। गुर नंदन संग मिलते भए ॥ १८ ॥
क़िसू कमान बान धरि लीनि। तोमर बरछी सांग नवीन।
निकसैं आनंदपुरि को छोरि। गमने सिंह पंच सै घोर[9] ॥ १९ ॥
सुन्यों पहारी बज्यो नगारा। जीन पाइ त्यारी असवारा।
होति मोरचनि जुदी लराई। जान्यों इत सैना कुछ आई ॥ २० ॥
गमने गहे कमान तुफंग। समुख भए द्वै दल इत जंग।
किती थाऊं मच रही लराई। ज्वालाबमनी[10] छुटि समुदाई ॥ २१ ॥
इतै सिंह करि हेला[11] परे। धाइ अचानक तिस दिशि लरे।
मनहुं चेत बहि बाउ बडेरा[12]। सिंहन को दल जलधर प्रेरा ॥ २२ ॥
बरखन गुलकनि[13] करका केरी। परबत लग क्रिखिपाक घनेरी[14]।
एक बार परि करी बिनासन। करकी तुपकनि, बान सरासन[15] ॥ २३ ॥

---

1. मोतियां और सोने से जड़े हुए 2. गले में डाला 3. खांच कर बांधा 4. ढाल 5. गुरु जी का विशेष नगारा जिस का नाम 'रणजीत' था 6. मजबूती, दृढ़ता-पूर्वक 7. जीत, विजय 8. जाटों की एक उपजाति 9. भयानक 10. लम्बी नाली वाली बंदूक 11. हमला, आक्रमण 12. बड़ी 13. गोलियां 14. बहुत अधिक पक्की हुई खेती 15. धनुष

फूटे मुंड तुंड बिकरारे[1]। श्रोणत छूटे मनहुं पनारे।
भीमचंद को दल समुहायो। दुंदभि ढलनि ब्रिंद बजायो ॥ २४ ॥
तजे अजीतसिंह तबि तीर। बीधे बीरनि घने सरीर।
सुभट कि घोरा घोर लगे सर[2]। गिरति प्रिथी पर प्रानन परहरि ॥ २५ ॥
बहु चंचलता करहिं चलावन। भाथा महिं हाथहि करि पावन[3]।
सर निकासि गुन महिं बगरावन[4]। ऐंचि कान सन पान[5] लगावन ॥ २६ ॥
तकि शत्रुनि के अंग लगावन। जान्यो परहि न[6] गन किय घावन।
चंचल बाजी करनि कुदावन। बिच रति रिपु को वार बचावन ॥ २७ ॥

नराज छंद

अजीतसिंह जीत चाहि तीर को प्रहारते।
तुरंग एक संग सिंह सूरमें संहारते।
मरी पहार बाहिनी[7] बिसाल सामुहाइकै।
सु एक बार गोरीआं अनेक ही चलाइकै ॥ २८ ॥
चली सु बेग शूकती[8] लगी तुरंग आइकै।
गिर्यो सु जंग खेत मै सु दोइ घाव खाइकै।
अजीतसिंह छोरि[9], अंग आपने बचाइकै।
खरो चरन् भार फेर बान को चलाइकै ॥ २९ ॥
पहूचिकै सु दास आइ बाज[10] और दीनिओं।
करी शिताब[11] दौरिकै रकाब पाइ लीनिओं।
अरोहि तातकाल ही चलाक को चलाइकै।
प्रहार बान फेर ताकि ताकि शत्रु धाइकै ॥ ३० ॥
समूह सिंह अग्र ह्वै तुफंग संग भगिकै[12]।
रखे टिकाइ थाइ ही वधे[13] न शत्रु जंग कै।
निशान मानसिंह लै दयो सु चीर छोरि कै[14]।
नपाइकै[15] तुरंग को चहंरति हेल दौरिकै ॥ ३१ ॥
पुकार मार मार को परे सु एकबार ही।
बजाइ जंग जीत को निनाद[16] कै उचारही।
करंति रेल पेल को प्रवेश होइ सूरमें।
तुफंग तीर मारि कै मिलाइ बीर धूर मैं ॥ ३२ ॥

---

1. विकराल, भयानक 2. भयंकर तीर लगे 3. डाल कर 4. चिल्ला चढ़ाते हैं 5. हाथ 6. पता नहीं चलता 7. पहाड़ी राजाओं की सेना 8. शूं-शूं की ध्वनि के साथ 9. घोड़े को त्याग कर 10. घोड़ा 11. शीघ्रता 12. मार कर 13 आगे न बढ़ पाए 14. लहरा कर 15. नचा कर 16. शब्द, शोर

क्रिपान खैंचि म्यान ते कड़ा कड़ी मचाइकै।
बिहंड रुंड मुंड तुंड पंडु ते पलाइकै[1]।
प्रचंड ही घमंड पाइ दंड दूत धाइकै।
कटंति कंठ कंध बाहुदंड को रिसाइकै ।। ३३ ।।
बिलोकि बीर खालसा क्रिपान को घमंडकै।
परे सु एकबार ही अनेकहूं बिहंडकै।
प्रचंड ओज कीनि, तुंड मोरि कै रिपूनिओ[2]।
पलाइ कंड[3], देखि बीर धीरजं किसूनयो ।। ३४ ।।
निहारते न मोरि नैन त्रास कै बिसाल तें।
बचे रहे पलाइ जे, अरे सु मेल काल ते।
हुतो सु दूर केसरी बिलोकि सूर भाजिते।
लए समूह सूरमे किले सु सिंह गाजते ।। ३५ ।।
कदंड ऐंचि ऐंचि कै प्रहार बान काल को[4]।
अर्यो सु अग्र आइकै हजार जोध नालको[5]।
जथा प्रवाह जावतो गिरीन ते सथीत ह्वै[6]।
तथा थिरति खालसा चहिंत चीत जीत ह्वै[7] ।। ३६ ।।
रिपूनि काटि सैंकरे सरीर घाइ खाइकै।
मुरे बहोर बीर सिंह श्री फते सु पाइकै[8]।
सने सने हटति घाइलान को संभार कै।
थिरे[9] सथान आपने समूह धरि धारिकै ।। ३७ ।।
तुफंग संग अंग बाहु भंगिकै बिसाल ही।
कई हजार ओरड़े[10] अनेक हेल घाल ही।
खरे करे सुदूर ही प्रहार गोरियांन को[11]।
समीप होइ पाइं ना प्रहारये प्रहानि को[12] ।। ३८ ।।
मच्यो सु जुध क्रुध कै तुफंग संग घाइही।
मरे परे अनेक ही लहू प्रवाह जाइ ही।
सु भूत प्रेत जोगनी श्रिगाल मास खावते।
पुकारे कांक कंकरी[13] कराल ही सुनावते ।। ३९ ।।

---

1. मुख पीला पड़ जाता है और वे भाग जाते हैं 2. वैरियों के मुंह मोड़ दिए 3. पीठ दिखा कर भागना 4. मार देने वाला तीर 5. साथ ले कर 6. रुक जाए 7. चित्त में विजय चाहता है 8. प्राप्त कर के 9. स्थिर रहे 10. ऊपर चढ़ कर आए 11. गोलियां चला कर 12. प्रहार करने के लिए 13. एक मांसाहारी पक्षी

तुरंग अंग भंगते कितेक छूछ[1] डोलिते ।
कटे सरीर हाथ पाइ कोइ दीन बोलते ।
बिहाल ह्वै बिसाल ही कराल बीच खेत के ।
कराहते पुकारते मरंति स्वामि हेतु के ।। ४० ।।
लरंति एव रीत सौं प्रकाश मंद होइओ ।
प्रगोप भारतंड भा[2], भयान संझ सोइओ ।
फिरंति रुद्र रुद्रबेख[3] संग ले गणनिको ।
टिके समूह सूरमे सथान मोरचान को ।। ४१ ।।
फिरे सु आप आप को संभाल घाइलान को ।
बिलोकि भीमचंद बिंद बीर म्रितकान को ।
सचिंत शोक धारतो कहै न कांहु पास ही ।
लरैं जु एव नीत ही न जीत होति आस ही ।। ४२ ।।
करे इकत्र आनिकैं अंबार दीह[4] लागिओ ।
मंगाइ काशटान[5] तातकाल दीन दागिओ ।
बिशाल शोक धारि कै सचिंत रात होइ कै ।
कछूक खान पान कै रह्यो प्रयंक[6] सोइ कै ।। ४३ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे चतुरथ रुते 'जंग प्रसंग' बरननं नाम अशट-दसमो अंशु ।। १८ ।।

1. खाली, समय-हीन 2. सूर्य अस्त हो गया 3. भयानक वंश में 4. बड़े, लम्बे 5. लकड़ियां मंगवा कर 6. पलंग

अंशु १९

जंग प्रसंग

दोहरा

श्री अजीत सिंह जीत ले[1] घायल सकल संभालि।
पिता समीप आवति भए भन्यों जंग अहिवाल ॥ १ ॥

चौपई

उदेसिंह आलमसिंह दोऊ। कुछक घाइ खै के तन सोऊ[2]।
अपर[3] सिंह केतिक मरि गए। सुरपरि बसे भोग सुख लए ॥ २ ॥
पहुंचे गुर सुत संग हजूर। शौनत लिपत भये पट सूर।
आलम सिंह भन्यों अहिवाला। प्रभु जी संघर भयो बिसाला ॥ ३ ॥
श्री अजीत सिंह कर्‌यो घमंड[4]। बान प्रचंड सु तूरन[5] छंडि।
बिचरति शत्रुनि महिं धरि धीरज। हते बहुत करि करि निज बीरज[6] ॥ ४ ॥
लगी तुफंग तुरंगम गिर्‌यो। उतर्‌यो हुइ सुचेत तर खर्‌यो।
पहुंचि दास ने दूसर दीनि। भए अरोहन जुध प्रबीन ॥ ५ ॥
तुम प्रताप बल ते बहु सिंह। घने मारि म्रिग रिपु बन सिंह।
घाइल आज भए बहुतेरे। खड़ग प्रहार प्रहार घनेरे ॥ ६ ॥
ऐसी कटा भई अज हेरति[7]। जिम खाती[8] बड बन को गेरति।
श्रमति सिंह घाइल गन लखीअहि। क्रिपा द्रिशटि इन की दिश पिखीअहि[9] ॥ ७ ॥
साल पत्र[10] सभि को बखशीजै। पीर सरीर दूर करि दीजै।
होति प्रात लगि मेलउ घाऊ। उठहिं लरहिं करि करि चित चाऊ ॥ ८ ॥
रावरि बल आलंब को पाई। गिरनर[11] दिन प्रति देहि खपाई।
सुनि सतिगुर सभि देखनि करे। उदे सिंह दिशि सनमुख खरे ॥ ९ ॥
साल पत्र ले सभि तन लाइव। घाइन ते गुलका[12] निकसाइव।
क्रिपा द्रिशटि ते पीर न होई। मिले घाव सुख लहि सभि कोई ॥ १० ॥

---

1. विजयी होकर 2. कुछ घावों के साथ 3. अन्य 4. घमसान युद्ध किया 5. तुरंत 6. शक्ति लगा लगा कर 7. आज दिखाई पड़ी है 8. काटने वाला 9. देखिए 10. घाव को भरने वाला पत्ता 11. पहाड़ी लोग 12. गोलियां

बरती देग तिहावल घनी[1]। खाइ असन बहु स्वादन सनो।
ले गुर खुशी सकल परि सोए। जितिक मोरचे महिं थिर होए॥ ११॥

सावधान ह्वै जागति रहे। छुटति तुफंग दुहन दिशि लहे।
होति प्राति पुन बजे नगारे। ढोलनि पर डंके गन मारे॥ १२॥

नौबत बजति अनंदपुरि भावति। सूरन के उतसाह बधावति।
भरि भरि फूकन संख बजाए। दुहु दिशि आपन बिखे सुनाए॥ १३॥

डफ शहिनाइ बजे करनाई[2]। डंक घरावल[3] पर ठणकाई।
आसावार रबाबी[4] गावैं। राग रागनि तान बसावैं॥ १४॥

हिंदू धरम को गुरु अलंब। द्वारे मंगल होति कदंब[5]।
परे भोग[6] गुर फते[7] बुलावैं। सौच शनानहि ध्यान लगावैं॥ १५॥

सतिनाम को सिमरन करैं। ब्रिंद खालसा गुरमति धरैं।
आदि सुखमनी पठि पठि बानी। धुनि ऊची ते करहिं बखानी॥ १६॥

करि कंघा गहि केस सुवारैं। चुनि चुनि पाग सीस पर धारैं[8]।
सूधी शमस[9] करति मुछ बंकी। रहति सहित ह्वै महत निशंकी[10]॥ १७॥

रण प्रिय आयुध राखहि पास। सिमरहिं सतिनाम विस्वास[11]।
निसा मोरचनि जिनहुं बिताई। तिन डिग जाइ सु देहि उठाई॥ १८॥

किसू देश ते सुनि सुनि आवैं। मिलैं सिंह इक थल हुइ जावैं।
ले सिक्का बारूद बडेरी[12]। खान हेतु ले रसत[13] घनेरी॥ १९॥

करहिं त्यार सुध[14] दे पहुंचाई। निकसी खालसा पुरि समुदाई।
तिन आगा लेकरि बहु लरैं। मारन करहिं अग्र जो अरैं॥ २०॥

भीमचंद न्रिप ब्रिंद उपाइ। रहे विचारति बस न बसाइ।
चहुं दिशि करहि अधिक तकराई[15]। रहहु सुचेत प्रवेश न जाई॥ २१॥

दुई सै कबहुं तीन से चढैं। देहु तिलावा[16] द्रिढ़ता बधैं।
जबहि श्रमति हुइ शत्रु सिधावैं। तबहि खालसा अंतर आवैं॥ २२॥

---

1. बहुत अधिक कड़ाह प्रसाद बाँटा गया 2. तुरही 3. घड़ियाल पर चोट पड़ी 4. गुरुवाणी के मुसलमान गायक 5. कदम वृक्ष 6. सभा की समाप्ति पर 7 गुरु को प्रणाम करते हुए जयघोष किया 8. अच्छी तरह से सिर पर पगड़ी धारण की 9. दाढ़ी 10. बहुत निडर हैं 11. पूर्ण विश्वास से 12. बहुत अधिक 13. खाद्य सामग्री 14. सूचना 15. मज़बूती, दृढ़ता 16. घूम घूम कर पहरा देने वाली सैनिक टुकड़ी

थके लाइ बल बुधि को राजे। नहीं बिगार सकहिं गुर काजे।
चलैं तुफंग मोरचनि माही। आगे बधन[1] दएं रिपु नांही ॥ २३ ॥
प्रथम थिरे जहिं थान पहारी। तहिं ही रहे मोरचनि धारी।
सीस उकासहि[2] ऊपर जोइ। गुलका[3] ते फोरति हैं सोइ ॥ २४ ॥
यांते रहे दबक तर नीचे। खनहि मोरचा अवनी बीचे।
खान पान ते संकट पावै। नहिं उकसहिं आवहिं नहिं जावैं ॥ २५ ॥
सगरे बासुर दुख को भरें। इतहिं सिंह सभि सुख सन फिरें।
पुरि ते दूर दूर रिपु राखहिं। लरैं जाइ जबि हुइ अभिलाखहिं ॥ २६ ॥
होति मोरचनि विखे लराई। कबि कबि भेड़ परहि समुदाई।
इक दिन परी राति अंध्यारी। नहिं सूझति है भुजा पसारी ॥ २७ ॥
मिले सिंह आपस महिं तबिहूं। मसलत[4] करति भए इम सभिहूं।
आज मोरचनि करीअहि धाई। कटा करहु शत्रु समुदाई ॥ २८ ॥
नहीं तुफंग हाथ मैं लीजै। फेटे शसत्रनि संग लरीजै।
खड़ग, सिपर, गहि, नेज़े, भाले। शकति, सांग, कटार कराले ॥ २९ ॥
परहु अचानक करहु घमंड[5]। खंड खंड करि लरहु प्रचंड।
दयासिंह जी कह्यो सुनाइ। गुर की आइसु[6] भई न काइ ॥ ३० ॥
बिना कहे ते रण घमसान। मिलि करि किम चाहहु बलवान।
आलमसिंह भन्यों सभि संग। प्रभु को आशै[7] करिबै जंग ॥ ३१ ॥
कतल मोरचा करीअहि धाइ। भीमचंद मूरख पछुताइ।
आन परहि गर[8] शत्रु बिसाला। किम बूझन गुर हुइ तिस काला ॥ ३२ ॥
सुख प्रयंक[9] पर हुइ प्रभु थिरे। अबि तिन को न बूझिबे करैं।
दयासिंह गुर के सिख भारे। इन ते आग्य लेहु सुखारे ॥ ३३ ॥
मुहकमसिंह बीर तबि कह्यो। इह आशै नीके मन लह्यो।
दयासिंह जी ! हुकम उचारो। हतहि खालसा रिपुन सुखारो ॥ ३४ ॥
उदेसिंह तबि बाक बखाना। करहु काज गुर को सवधाना।
क्यों न दयासिंह जी कहि ऐसे। जिस ते फते[10] खालसा लैसे ॥ ३५ ॥
मान सिंह होयहु तबि खरे। खड़ग सिपर[11] कर नेजा धरे।
सेवासिंह मझैल[12] निसंग। भयो त्यार करिबे कहु जंग ॥ ३६ ॥

---

1. बढ़ने (नहीं देते) 2. उठाते 3. गोलियां 4. मंत्रणा 5. घमसान युद्ध 6. आज्ञा 7. आशय, इच्छा 8. गले आ पड़े, आक्रमण कर दे 9. पलंग 10. जीत, विजय 11. ढाल 12. माझा क्षेत्र का

आगे खरे होइ सभि रहे। दया सिंह निज मुख बच कहे।
जे सभि की अभिलाखा ऐसे। हतहु पहारी भट गन तैसे॥ ३७॥

मैं भी गमनहुं संग तुमारे। आलम सिंह तबहि हटकारे।
इहां थिरहु हम ही चलि जैहैं। तुमरे बाक फते रण लैहैं॥ ३८॥

इम कहि सुनि करि होयसि त्यारे। खडग सिपर गहि आयुध[1] भारे।
गुरु मनाइ बीर बर बांके। चले ब्रिंद शत्रुनि दिशि ताके॥ ३९॥

जित दिशि भीम चंद भट ब्रिंद। करे मोरचा थिरे बिलंद[2]।
इन महिं घात देखि कहि गए। निसा तिमर[3] महिं प्रापति भए॥ ४०॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'जंग प्रसंग'** बरननं नाम एक ऊन बिसंती अंशु॥ १९॥

1. बस्त्र 2. ऊँचा, बड़ा 3. अंधकार

अंशु २०

मोरचा मारन प्रसंग

दोहरा

भीमचंद को मोरचा सुभट ब्रिद जिस मांहि।
तित दिशि गमन्यो खालसा हित मारन उतसाहि ॥ १ ॥

रसावल छंद

गए सिंह वीरं। धरे चांप तीरं।
कराचौल[1] ढाले। किनू लै संभाले ॥ २ ॥

सु नेजा उभरे। छुरे पै कटारे।
सरोही निकासे। दुधारे प्रकाशे ॥ ३ ॥

महां सावधाना। सम एक ज्वाना।
बली वीर बंके। मुछैले निशंके[2] ॥ ४ ॥

चलाए जुझारे। इकै मेल वारे।
करैं खान पाना। एकै थान वाना[3] ॥ ५ ॥

हटै कौन पाछे। लरैं अग्र बांछे।
समूंह पहारी। तुफंगै प्रहारी ॥ ६ ॥

कछू नाद श्रोतं। लख्यो घात होतं।
कह्यो आप मांही। इतै कौन आही ॥ ७ ॥

बनो रे सुचेत। तजे नींद हेत।
सुन्यों जान लीने। सवाधान कीने ॥ ८ ॥

तबे सिंह गाजे। कहां जाहि भाजै।
अबै होहु ठाढे। लखैं खग बाढे ॥ ९॥

किथौं त्रास धारी। पलीजै पधारी[4]।
न आवौ लराई। चलै जाहु धाई ॥ १० ॥

---

1. तलवार 2. निडर 3. एक स्थान पर ही खाने पीने वाले
4. दौड़ते चले जाओ

चाचरी छंद

कहंते । सुनंते । लराई । मचाई ।। ११ ।।
प्रचारैं । प्रहारैं । क्रिपानैं । महांनैं ।। १२ ।।
निकासी । प्रकाशी । उभारी । प्रहारी ।। १३ ।।
निसंगी । भुजंगी । रिसावैं । चलावैं ।। १४ ।।
सुरंगी । सु चंगी । चमकै । खिमकै[1] ।। १५ ।।
लपकै । दवकै । अतंकैं ! सशंकैं ।। १६ ।।
जुशेले । जठेले । प्रपेले । धकेले ।। १७ ।।
जुझारैं । न्हारैं । बिदारे । करारे ।। १८ ।।
अंधेरा । घनेरा । न हेरे । निबेरे[2] ।। १९ ।।
जुटे है । कुटे है । लटे ना । हटे ना[3] ।। २० ।।

सिरखंडी छंद

जुट गई तरवारी रौर पुकारते।
लोथ लोथ पर डारी ऊपर को तरे।
भुजैं पसारि उभारी मारति ज़ोर।
हटी तुपक तिस वारी नहीं चलावंदे ।। २१ ।।

बरछी सांग परोए फेर निकासीआं।
गुथ हथावथ[4] होए जमधर मारदे।
ऊचे नादति[5] रोए परे पहारीऐ।
बडी नींद इक सोए बहुर न जागदे ।। २२ ।।

मची मार बिकराली तड़फति छित परे।
सुध नहिं किनहुं संभाली मूरख कट गिरे।
नहिं करवाइ[6] निकाली चले पलाइक।
घाली धूम बिसाली मारे मोरचा ।। २३ ।।

भीमचंद, हंडूरी सुध को पाइकै।
सुनि पुकार भट भूरी औचक[7] जागिकै।
सैन राति मैं चूरी सिहन आइकै।
मारहु पहुंचि ज़रूरी जाहु शिताबते[8] ।। २४ ।।

---

1. विद्युत् के समान चमकती हैं 2. समाप्त किए जाते हैं 3. कोई ऊपर और कोई नीचे पड़े हैं 4. हाथापाई की स्थिति 5. पुकारते हैं 6. तलवार 7. अचानक 8. शीघ्र

दोनहुं गिरपति जागे सुभट पठांवदे ।
जाइ बचावहु आगे बिलम न कीजिए ।
सुनीअति आवति भागे तजि करि मोरचा ।
सुनि भट आयुध लागे निकसे सिवर[1] ते ॥ २५ ॥

नांहिन जान्यो जाई केतिक खालसा ।
रहे दूर अरगाई नेरे नहि ढुके[2] ।
मुरचे महि समुदाई कटीआ सो करे[3] ।
केतिक भए पलाई प्रान बचाइकै ॥ २६ ॥

धरधराति रिपु छाती बोल्यो जाइ ना ।
बिथरे[4] लखि करि घाती इकठे होइना ।
काटहि आनि अराती[5] धीरज पाइ ना ।
श्रोणत लोथ पपाती हाइ अलाइ ना ॥ २७ ॥

भट सिहन बहु मारे बहुरो मुरि चले ।
उदेसिंह ललकारे करे अवाहिना[6] ।
कारज सिध तुमारे हटीअहि खालसा ।
अपने थान मझारे आवन सभि लगे ॥ २८ ॥

को घाइल संघारे सिंह संभालि कै ।
आए बीर जुझारे हति गन शत्रु को ।
सतिगुर फते[7] उचारे गरजति खालसा ।
आनंद नगर मझारे आनंद सौ बरे[8] ॥ २९ ॥

झार मताबी जारे बहुरि पहारीआं ।
पुंज मसाल उजारे तिमर नसाइकै[9] ।
आइ मोरचे भारे लगे बिलोकिबे ।
भरे समूह निहारे लोथां डिगीआं[10] ॥ ३० ॥

बचे मरन ते सोऊ गए पलाइकै ।
अवलोकति सभि कोऊ म्रितक डरावणे ।
लाल थान जहिं जोऊ श्रोणत पसरिगा ।
कित इकठे त्वै दोऊ लोथां गुथीआं[11] ॥ ३१ ॥

---

1. शिविर 2. समीप न आए 3. काट दिए 4. विस्तृत, फैले हुए 5. शत्रु 6. बुलाया 7. विजय का घोष 8. दाखिल हुए 9. नष्ट करते हुए 10. शव गिरे 11. शवों के समूह, ढेर

दोहरा

सभि गिर नाथन[1] तबि सुन्यों सिंह परे बलवंड ।
भीमचंद को मोरचा कीनसि खंडि बिहंड ।। ३२ ।।
बच्यो नहीं को सूरमा, सिंह रह्यो नहिं मांहि ।
गति अचरज कुछ करि गए नहिं मन जानी जाहि ।। ३३ ।।

चौपई

आनि तिमर महि सुभट संहारे । औचक[2] परे सकल ही मारे ।
सुनि सभि के मन उपज्यो त्रासा । बिन ही संघर भए बिनासा ।। ३४ ।।
भए सुचेत मिले गन जागे । पुंज तुफंग चलावनि लागे ।
धरहु भरोसा सुपतहु नांही । जे सुपतहु इस बिधि मरि जांही ।। ३५ ।।
सभिनि मोरचे बनि सवधाना । करहिं परसपर ऊच बखाना ।
जागति रहहु तुफंगैं मारहु । इत उत आवति जाति निहारहु ।। ३६ ।।
भीमचंद कै चित घनेरी । किम हुइ बिजै उपाइ न हेरी[3] ।
नित प्रति जोधा मरहिं हज़ारों । इसी रीत हुइ है मम हारो ।। ३७ ।।
लरति बिते दिन मोकहु घने । सिंह मवासी[4] जांहि न हने ।
आइ बहिर ते बीच प्रवेशे । भए प्रथम ते अबहुं विशेशे ।। ३८ ।।
गर अनंद पुरि छोरहिं नांही । बैठे भए रहैं जु सभि सुख पांही ।
खान पान ते तंग न होए । गुलका[5] बहु बरूद लै ढोहे ।। ३९ ।।
सिंह ओट महिं लरित न मरैं । बहिर सुभट सैंकर[6] नित गिरैं ।
रह्यो अनंपुरि कितहुं छुरावनि । इक दिन मेरो बनहि पलावन ।। ४० ।।
होहि नमोशी[7] जित कित मेरी । हटिहौं चमूं मराइ घनेरी ।
इत्यादिक तरकति मन घनो । जागृत रह्यो चित चित सनो ।। ४१ ।।
पछुतावति होई भुनसार[8] । उत सतिगुर जागे जिस बारि ।
सौच शनान कीनि सभि अंग । छकी अफीम सु बिजीआ[9] संग ।। ४२ ।।
गावनि लगे रबाबी वार[10] । उदे सिंह पहुंच्यो तिस बार ।
दया सिंह को ले करि संग । बंदन करति[11] बतायहु जंग ।। ४३ ।।

---

1. पहाड़ी राजाओं ने 2. घायल सिंह वहाँ कोई भी नहीं रहा था 3. कोई उपाय नहीं सूझता था 4. बाग़ी 5. गोलियाँ 6. सैंकड़े 7. बदनामी, अपमान 8. प्रातःकाल 9. भाँग 10. पंजाबी वीर काव्य का एक रूप 11. वंदना करते हैं ।

महाराज आइसु[1] तुम जोई। दया सिंह मुख ते ले सोई।
गयो खालसा मिलि समुदाया। मारि मोरचा कतल कराया॥ ४४॥
भयो रिपुन के शोक बिसाला। गिर गिर के घर घर महिं घाला।
करि सथार[2] तहिं ते चलि आए। सिंह श्रेय के सहित सुहाए[3]॥ ४५॥
सुनि सतिगुरु खुशी बहु कीनी। दया सिंह रण आइसु दीनी।
इह ग्यानी मम सिख है पूरा। क्यों न होइ याको बच रूरा॥ ४६॥
हतहु पहारी मूरख कर कर। परहि पीटबौ इनके घर घर।
मोर खालसा वली बिसाला। गुर द्रोहीन हतै सभि काला॥ ४७॥
इम कहि थिरे सिंहासन स्वामी। भूत भविश्यत अंतरजामी।
वहिर मोरचनि तथा लराई। छुटहि तुफंग समुख समुदाई॥ ४८॥
निज निज मुरचे पर थिर ह्वै वै। हेरति रिपु दें तुपक छुटे कै।
आवति जाते करहिं प्रहारन। को पलाइ ह्वै को संहारनि॥ ४९॥
म्रितक उठाइ उठाइ लिजाते[4]। काशट संचै करति महांते।
चहुं दिशि आनंदपुरि के दाहैं। थान मसानन जहां कहां हैं॥ ५०॥
जित कित धूम उठहि द्रिशटावैं। परे कितिक तिन कूकर खावैं।
ब्रिंद विहंगम गीध वडेरी[5]। काक कंक[6] खै हैं बहुतेरी॥ ५१॥
सभि राजन पिखि चित उपाई। चितवहिं हतिवे हेतु उपाई।
भई प्रभाति दिवस चढि गयो। जाम एक बीतति जबि भयो॥ ५२॥
भीमचंद भा समे रसोई। सेल नाथ पहुंचे सभि कोई।
सभा करन मसलत[7] के कारन। पहुंचे जुति मंत्रनि बिचारन॥ ५३॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे चतरथ रुते **'मोरचा मारन प्रसंग'** वरननं नाम बिसती अंशु॥ २०॥

1. आज्ञा 2. ढेर 3. सुन्दर 4. ले जा रहे थे 5. बड़ी 6. एक माँसाहारी पक्षी 7. मंत्रणा

अंशु २१

केसरी चन्द प्रण करन प्रसंग

दोहरा

सैल नाथ[1] आए सकल प्रथम केसरीचंद।
नृप हंडूर कटोचीआ ग्वालेरी[2] भट व्रिंद ।। १ ।।

चौपई

इत्यादिक सभि मिलि करि आए। भीमचंद सनमान बिठाए।
सभि को ले संग गयो रसोई। बसत्र उतारि थिरे[3] सभि कोई ।। २ ।।
चादर जामा पाग[4] उतारी। एक उपरना[5] कर महिं धारी।
चरन पखारति चौंके बरे[6]। निज निज आसन पर नृप थिरे ।। ३ ।।
आगे सभि के धरि पनवारे। भात परोस्यो भली प्रकारे।
वहुर सलवणं नाना भांति। सूपकार[7] तबि धरि धरि जाति ।। ४ ।।
खान लगे जबि कौर उठाए। कहिलूरी तबि कुछ मुसकाए।
देखि केसरी चंद दिशा को। हास करति भाखति इम ता को ।। ५ ।।
यधी दियो भात कहु खाणे। इस कारन घर छोडि पयाणे।
किधौं अनंदपुर हेतु छुटावनि। लरि गोबिंद सिंह गुरु हटावनि ।। ६ ।।
इत आए? सभि देहु बताई। बिति मास ते दिन अधिकाई।
गाढ़ी गड़ी[8] लोहगड़ नामू। सो भी नहिं छुटी[9] क्या कामू? ।। ७ ।।
सर्‌रो न कुझ[10] गुर कन चढि आए। बीर हज़ारहु मारि खापाए।
क्या मुख ले करि सदन सिधारो। कहि गिरपतनि कहां जग सारो? ।। ८ ।।
कहां बीरता रही तुमारी। मिलि सभि लरे सरी नहिं कारी।
एक गुरू पुन देश बिहीना। चमूं न, किय इक पंथ नवीना ।। ९ ।।

---

1. पहाड़ी राजागण 2. गुलेर रियासत के 3. बैठे 4. पगड़ी 5. दुपट्टा, उत्तरीय 6. दाखिल हुए 7. रसोइया 8. किला 9. मुक्त कराया जा सका 10. कुछ

भयो उपाइ न किस ते कोइ। पचि हारे परबत पति[1] जोई।
शाहु आदि सगरे इम कहैं। कहां सुजसु तुमरो तबि रहै ॥ १० ॥
इस ते आछी लरति न जबै। भरम[2] समेत हुते हम सबै।
राति मोरचा मारि खपायो। सुभट ब्रिंद को नहिं अटकायो ॥ ११ ॥
सभि भातनि की मसलत[3] करें। लशकर घनो मेल करि लरे।
अबि तुम करहु बिचारनि सारे। किमि रहि आवे लाज हमारे ॥ १२ ॥
चमक्यो रिस्यो केसरीचंद। क्या मसलत हम करनि बिलंद[4]।
पिखहूं काल हुइ संघर मेरा। सिंहन करहुं लथेर पथेरा[5] ॥ १३ ॥
कहैं लोहगड़ नाम कठोरा। कागत सिकता[6] सम दियों फोरा।
मसत मतंग महा बल धामू। आवहि पुन हमरे किस कामू ॥ १४ ॥
चहूं दिशिन को तभि कै घेरा। सगरी चमूं करहु संग मेरा।
हुइ सनमुख तोरहि दरवाजा। दुंदभि ढोलनि लै सभि बाजा ॥ १५ ॥
कितिक सिंह है अटकहि आगे। होहिं कतल कर पिखि के भागे।
क्यों आलस को धरि थिर होए। जंग मोर देखहु सभि कोए ॥ १६ ॥
इम बातैं करि भोजन खाते। उठे बहुर रिस ते द्रिग राते[7]।
सभा लगाइ थिरे सभि राजे[8]। निशचै करनि आपनो काजे ॥ १७ ॥
सभिनि सुनावति कहि ग्वालेरी[9]। अबि लौ लरे जीत नहिं हेरी।
पुरि को घेरो सिध न होयो। आवति जाते दाव न जोयो ॥ १८ ॥
लरन समाज अंन बहुतेरा। ते प्रवेश भे केतिक वेरा।
सुनि न्रिप हडूरी तबि कहे। घेरा नहीं नीक विधि रहे ॥ १९ ॥
इकठे करि भट सनमुख चलै। मसत मतंग द्वार को भिलै[10]।
तोमर[11], तुपक, तीर तरवारैं। अरे अग्र तिह ततछिन मारैं ॥ २० ॥
परसहि नहीं चमूं तिस बारी। गमनहि बांधे चुंग[12] अगारी।
हतहु लोहगड कारज भलो। बहुर शहिर दिशि सुख सो चलो ॥ २१ ॥
भाजैं गुरु किधौ मिलि परै। इस प्रकार ते कारज सरै।
मंडसपती[13] सुनति सभि मत को। बोल्यो बाक देखि गरबति को ॥ २२ ॥

1. पहाड़ी राजागण 2. भ्रम बना रहता 3. मंत्रणा 4. बडी, महत्त्वपूर्ण 5. शवों के ढेर लगा दूँगा 6. रेत 7. आंखे लाल हो गई 8. बैठ गए 9. गुलेर नमक रियासत के राजपूत 10. तोड़ देगा 11. भाले 12. घंटे 13. मंडी का राजा

श्री नानक गादी बड भारी। मीर पीर सभि निवैं अगारी।
तुम ते किम होवहि सो हीन। श्री हरि गोवंद संघर कीनि ॥ २३ ॥
शाहु चमूं तउ भिर करि हार्यो। पुन मन ते रिस करि निरवार्यो।
क्यों न बिचारति अपनि लराई। लरति मरति, जै भी कबि पाई ? ॥ २४ ॥
नाहक[1] द्वैश बधाइ बडेरा। सभि इकठे हुइ पायो झेरा।
मिलति अपने काज सवारति। हुइ पूरन, गुर बाक उचारति ॥ २५ ॥
चमूं सकेलि समूह लरावहु। सभि बल लाइ फते तुम पावहु।
इत दिशि ते गुर को निकसावहु। हुइ नचिंत तुम ग्राम बसावहु ॥ २६ ॥
इह सभि झूठ न लेवहु कैसे। अघवंतन[2] सुरपरि नहिं जैसे।
अबि भी मेल करो सुख पावो। श्रेय सहत निज सदन सिधावो ॥ २७ ॥
सुनि मंडिसपति ते अस बानी। रिस्यो केसरोचंद बखानी।
क्या मत देति कातुरन केरी। गुर पखी बुधि लखीअति तेरी ॥ २८ ॥
प्राति होति हेरहु रण मेरा। लिहु सभि को दल संग घनेरा।
रवि असतन ते पूरब[3] जबै। जे नहिं लोहगड़ तोड़ें तबै ॥ २९ ॥
तौ निज पित ते जनम्यों नांही। मुख न दिखावहुं राजनि मांही।
शालगराम अवग्या दोश। लगहि मोहि जे हाट हौं रोस[4] ॥ ३० ॥
लात प्रहारनि करहि जु धेनु। बरजहि बेदन विद्यधैन[5]।
देहि सती को पतिब्रत टारे। गन देवन की निंद उचारे ॥ ३१ ॥
कन्या मारन, दिज[6] संघारनि। करनि संत सों द्रोह अकारन।
चलति लोहगड़ ते मुख फेरे। ए सभि पाप चढ़हिं सिर मेरे ॥ ३२ ॥
कहा खालसा सिंह जु थोरे। देखहु दल बिलंद[7] निज ओरे।
आटे बिखै मलियति लौन। अंतर इतो लखहि नहिं कौन ? ॥ ३३ ॥
इकठे हुइ नहिं करी लराई। दूर दूर सगरी पसराई।
इक थल सिंह मिलहिं तबि लरैं। ऊपर आनि हेल[8] को करैं ॥ ३४ ॥
फते[9] लेति पुन पुरि वरि जावैं। लाइ घात चोरनि जिम धावे।
भीमचंद को रिदै अनंद। साध साध तूं बीर बिलंद ॥ ३५ ॥
अबहि नहिं पुरशारथ करैं। हते रिपुनि जबि कबि तूं लरैं।
पुनि घेरा अबि देहु हटाइ। करहु सकेलन दल समुदाइ ॥ ३६ ॥
आठी लागहि मसलत[10] तोरी। लेहु काल इस गड़ को तोरी।
अबि ही ते दिहु तेज मसाले। मद पिलाइ करि प्राति बिसाले ॥ ३७ ॥

1. व्यर्थ 2. पापी 3. अस्त होने से पूर्व 4. क्रोध 5. विद्या अध्ययन 6. ब्राह्मण 7. बड़े 8. हमला, आक्रमण 9. जीत, विजय 10. मंत्रणा, सलाह

ले सगरौ दल होहु पिछारो। संघारहु जो आइ अगारी।
एक ताण[1] हुइ पहुंचहु सारे। इम लीजहु गड़ तोड़ि सुखारे॥ ३८॥

प्रेर्यो काल समीप मरण को। कीन केसरी चंद परण को।
त्यारी करनि लग्यो कहिलूरी। लखहिं कि होहि लालसा पूरी॥ ३९॥

जहिं कहिं डैरनि महिं नर फेरा। इकठे होहिं त्याग दिहु घोरा।
हेला करहिं बनहिं सुखदाई। लेहु लोहगड़ को छुटवाई[2]॥ ४०॥

पाछे सभि सुखैन हुइ जाई। गुर गोबिंद सिंह देहु पलाई।
सभि महिं प्रगट भई इह मसलत। होति प्राति के लेहिं दुरग हति॥ ४१॥

निज निज सिवर गए सभि राजे। चितवति जाति जंग के काजे।
संघर अंत होइ हैं प्राती[3]। प्रापति जै कि पराजै वाती[4]॥ ४२॥

डेरे गयो केसरीं चंद। पिखि हाथी को गरब बिलंद।
गिर को श्रिंग मनो बल भारी। खरो झूलतो बल बहु धारी॥ ४३॥

तवे पुलादी ढाल बिसाला। लए सकेल अनाइ[5] उताला।
सार बारनी बहुत[6] मंगाई। अपर वसतु जानी समुदाई॥ ४४॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे चतुरथ रुते **'केसरी चंद प्रण करन प्रसंग'** बरननं नाम एक-बिसंती अंशु॥ २१॥

---

1. बल 2. मुक्त 3. प्रातःकाल 4. विजय अथवा पराजय, इन दोनों में से एक बात की प्राप्ति अवश्य हो जाएगी 5. मंगवा लिए 6. 6बहुत अधिक शराब

अंशु २२

दूनी चन्द प्रसंग

दोहरा

लरति चुगिरदे मोरचे उठनि लगे जिस काल ।
ज्वालावमणी[1] खालसे कसि कसि तजी उताल ।। १ ।।

चौपई

तजि तजि मुरचा भाजे ज्यों ज्यों । कसि कसि तुपक प्रहारैं त्यों त्यों ।
लगि लगि गुलका[2] घायल होए । घाव कुथाइ कितिक मरि सोए ।। २ ।।
पहुंचहिं सिह लुटहिं हथ्यारहि । जियति मिलहिं कटीआ[3] करि डारहिं ।
गई गुरु ढिग सुधि[4] तबि सारी । तजि तजि मुरचे जाति प्रहारी ।। ३ ।।
बड़े मोरचे हैं जिस थाना । तहिं तहिं थिरे बने सवधाना ।
घोरा दयो पुरी को छोरि । घाल लोहगड़ ओरहिं ज़ोर ।। ४ ।।
इतने महिं गोप जु हलकारा । गुर ढिग आइ ब्रितंत[5] उचारा ।
प्रभु जी अहै वहिर सुधि जैसी । सुनी पिखी मैं कहि हौं तैसी ।। ५ ।।
राति मोरचा मार्यो जबै । भीम चंद दुख झूर्यो तबै ।
राजे सकल हकारि सकेले[6] । समैं रसोई के जबि मेले ।। ६ ।।
सभि महिं कह्यो मनोरथ आपनि । लशकर होइ बिलंद विखापन[7] ।
सरब सभा महिं गरब बखाना । परण केसरी इस बिधि ठाना ।। ७ ।।
होत प्राति को हाथी पेलौं । दल के सकल सुभटं संग मेलौं ।
द्वार लोहगड़ को तुड़वावौं । नतु राजन महिं मुख न दिखावौं ।। ८ ।।
घेरा देहु छोर पुरि केरा । परहि लोहगड़ जंग बडेरा[8] ।
तुम समरथ चाहहु तिम करहु । कीटी ते कुंचर को दरहु[9] ।। ९ ।।
तऊ बिचारौ गज को आवनि । तिस को चहीयति जतन बनावनि ।
नत[10] द्वारे को मसतक मारहि । गाढे बडे कपाट उखारहि ।। १० ।।

1. लम्बी नाली वाली बंदूकें 2. गोली 3. काट डाले 4. सूचना 5. वृत्तांत 6. इकट्ठे किए 7. अत्यधिक विनष्ट हो रहा है 8. बड़ा 9. दल दो, मार दो 10. नहीं तो, अन्यथा

महां वली है मसत सदाई। द्रिढ़ तरु टकर मारि गिराई।
तिह सम राज बलवंत न और। शाहु आदि जे न्रिपतनि ठौर॥ ११॥
महाराज संध्या अबि होई। करहु जतन निस महिं अस कोई।
जित ते द्वार नहीं गज आवै। लाखहुं सुभट पिछारी धावैं॥ १२॥
सुनि सतिगुर घाटिका[1] लगि मौन। जिन के मन किस को कबि भौन[2]।
चिंतभान सगरे हुइ गए। फील[3] बली बड जानति भए॥ १३॥
गुर करुना बिन अरै न कोई। शसत्र घाव जिसके नहिं होई।
लोहे संग मढ्यो तन जेइ। कहां घाव को जानहि सोइ॥ १४॥
थिरे[4] सिंह गुर के चहुं फेरे। कहैं कहां सगरे मुख हेरे।
चितवहि दीरघ एव्र उपाइ। जिस ते दुरद[5] निवार्यो जाइ॥ १५॥
दुनी चंद इतने महिं आयो। लबोदर तबि थूल दिसायो।
वडे जुगम भुज दंड प्रचंडे। तिम छाती आयुत बर बंडे[6]॥ १६॥
दीरघ वदन शमस बड सेत[7]। कट कसि धोती बन्यो सुचेत।
सुनि करि भोर होइ है हेला[8]। मसत मतंग अग्र दे पेला॥ १७॥
जतन बनावनि सुनिबे कारन। आयो प्रभु को कर्यो निहारन।
दोनहुं जंघ दीरघा भारी। गर[9] शमशेर[10] बिसाली डारी॥ १८॥
गुर संगति महि नित बिचरंता। सदा तिहावल ते त्रिपतंता[11]।
गन सिखन पर हुकम करंता। गुर की कार लेति धनवंता॥ १९॥
साल्हो सुत मसंद[12] को नंदन। जिन को करहिं हजारहुं बंदन।
नित भोगति सुख रह्यो घनेरे। श्री अंम्रितसर वास बडेरे॥ २०॥
आवात को अविलोकि क्रिपाला। मुसकावति बोले तिस काला।
क्या राजन को मसत मतंग। कहां अधिक तिस के बलि अंग॥ २१॥
गुर घर दुनीचंद वड हाथी। इसहि लरावहिंगे तिस साथी।
महां मसत इह गुरु बल पाइ। अरिवे देहिं न, लेहि धाकाइ॥ २२॥
दुरद[13] केसरी कीटी सम है। इह गजराज बनहि तिस जम है।
छिन महु करहि संभालनि[14] बली। धरहि सहाइ खालसा भली[15]॥ २३॥
सतिगुर तें सुनि कै समुदाइ। रहे मोन नहिं बाक अलाइं।
दूनी चंद को बदन परेखा। गति उतसाह[16] सभिहि तबि देखा॥ २४॥

---

1. एक घड़ी तक 2. भय 3. हाथी 4. बैठे 5. दो दाँतों वाला हाथी 6. विशाल और बलवान् 7. सफेद बड़ी दाढ़ी 8. हमला, आक्रमण 9. गले में 10. तलवार 11. सदैव तृप्तिपूर्ण कड़ाह का सेवन करता 12. क्षेत्रीय अधिकारी 13. हाथी 14. संभाल लेगा, नष्ट कर देगा 15. भली भाँति 16. उत्साह नष्ट हो गया

कलगीधर कहि करि इम बचन। जाइ प्रवेशे सुंदर सदन।
अपर सरब उठि उठि करि गए। अपने अपने थल थिर थए।। २५ ।।
दुनीचंद सुनि जनु मरि गयो। कहिबे बाक समरथ न गयो।
हौल[1] उठ्यो दिल धीरज हारी। गमन्यों अपने सिवर[2] मझारी।। २६ ।।
शुशक ओठ पर जिह्वा फेरति। पियरी परी न किस दिशि हेरति।
दीरघ स्वास लेति चित चिंता। इह क्या गुरु कर्यो बिरतंता[3]।। २७ ।।
त्रास बिसाल मरनि को भयो। बिन ही मारे जनु मरि गयो।
चित सोचति चिंता पर गई। अंधेरी निस प्रापति भई।। २८ ।।
चितवहि जतन बचौं किस दाइ। प्राति होति मुझ दें चिरवाइ।
जामनि बिखै कछु बनि आवै। जे श्री नानक प्रान बचावैं।। २९ ।।
चलौ पलाइन ह्वै निज देश। बचिबे जतन न और बिशेश।
सरब सिंह भी हैं दुखवंते। कहों सभिनि जे साथ चलंते।। ३० ।।
पूरब दया सिंह के पास। पहुंच्यो कर्यो ब्रितंत प्रकाश।
कहाँ करी गुर रण की कार[4]। सिख संगति नित प्रति बहु गार।। ३१ ।।
सभिनि संग करि महिद बखेरा[5]। काज बिगारति बडहुं बडेरा।
होति प्राति को ढोवहि हाथी। लाखहुं सुभटनि आयुध साथी।। ३२ ।।
मेरी बाति कहां जे मर्यो। कतल सकल ह्वै हैं इम डर्यो।
अबि सभि मिलि करि मसलत[6] कीजै। प्रिथम प्राति ते संधी कीजै।। ३३ ।।
भीमचन्द ढिग दूत पठीजै। संघर होति शांति बरतीजै।
इम गुर मानहि तों ढिग रहीअहि। नतु नाहक[7] क्यों प्रान गवईअहि।। ३४ ।।
दया सिंह भरम्यो तिस जान्यों। तिह धीरज दे बाक बखान्यों।
गुर सरबग्य भलि सभि करैं। होनहार सोई चित धरैं।। ३५ ।।
तरक न तिन की क्रित महि बनै। रहु अनुसारी आनंद सनै।
हुकम करहि सो मानहुं भलौ। जिम तोरहिं मग तिमही चलो।। ३६ ।।
इम सुनि उठि अपरनि ढिग गयो। इस बिधि ही सों भाखति भयो।
धरमसिंह साहिबसिंह पासी। मुहकमसिंह समीप प्रकाशी।। ३७ ।।
पंचहुं मुकते[8] सिंह जु बीर। भेद करन भाखहि सभि तीर।
आछी बात मुकते मेल करिवावहु। नांहित गुर को त्यागि पलावहु।। ३८ ।।
होति प्रभाति न बाच्यों जाइ। अबि करीयहि बन जाइ उपाइ।
लेनि देनि राजन संग नांही। क्यों नाहक[9] मरीअहि रण मांही।। ३९ ।।

1. भय, डर 2. शिविर 3. वृत्तांत, कथन 4. कार्य 5. बड़ा बखेड़ा 6. मंत्रणा 7. नहीं तो व्यर्थ में 8. मुक्त 9. व्यर्थ

पुन उठि उदेसिंह के डेरे। गमन्यों त्रासति रिदे बडेरे।
चिता अपनी सकल प्रकाशी। कहां सहेरी अपनि बिनाशी[1] ॥ ४० ॥
अबिलौ करि करि ओज बिसाला। बल बुधि छल करि शत्रु न झाला।
साध साध तोकहु सभि भांति। अर्‌यो जहां कहिं, हत अराती[2] ॥ ४१ ॥
आइ भई अबि घात कुफेरी। बचहिं सकल, जे लिहु मति मेरी।
नतु हुइ भोर, परे घमसाना। ढोइं जबहि हाथी मसताना ॥ ४२ ॥
मुहि मारे पूरब बिन आइ[3]। पुन तिम ही सभि सीस बिहाई[4]।
गढ टूटै पुन बचै न कोई। लाखहु सुभट खड़ग रण होई ॥ ४३ ॥
इम बिचार तेरे ढिग मिला। गुरु समुझाइ लेहु अबि भला।
कह्यो जु हमरो मानहि, मिलीऐ। नतु तजि देश आपने चलीऐ ॥ ४४ ॥
कहां इकाकी गुर करि लैंगे। सिख संगति बिन कहां लरैंगे।
यांते मिलि सगरे जे कहो। संधि करहु जीवति बच रहो ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुत **'दूनीचंद प्रसंग'** बरननं नाम दुइ-बिसती अंशु ॥ २२ ॥

1. अपने विनाश के लिए क्यों गले डाल लिया 2. शत्रु 3. बिना मृत्यु आने से पूर्व 4. सभी के सिर पर ऐसी गुजरेगी

अंशु २३

दुनी चन्द भाजन प्रसंग

दोहरा

उदेसिह जान्यों भले कातुर भयो मसंद[1]।
त्रास करति है मरन ते चहति पलायो मंद ॥ १ ॥

चौपई

धीरज देनि हेतु सो बोला। दुनीचंद क्यों उठि मन हौला[2]।
पुशतनि[3] चलि मसंदी आई। गुर घर ते निज परवश[4] पाई ॥ २ ॥
सुख दुख भोगनि इनके साथ। हम तुम को उचितँ धरि माथ।
संग मतंग जि तोही लरावहिं। तउ के हरि बल तोहि बनावहि ॥ ३ ॥
तुझ मराइ करि अपनि पराजैं[5]। किम प्रभु करहिं निबाहहिं लाजै।
तू हाथी को मारहि जबै। अधिक बडाई पैहहि[6] तबै ॥ ४ ॥
अपनौ काज बनावहि आपू। तोहि बधावहिं घनों प्रतापू।
साहिब काम परहि जबि आइ। इक सेवक पर बिच[7] समुदाइ ॥ ५ ॥
लाखन महि जबि एक बुलईअहि। सफल बडाई को तबि पईअहि।
जानहिं सेवक निज को धन। तन मन ते पति[8] करहि प्रसंन ॥ ६ ॥
सुनि कर दुनीचंद पुन कह्यो। हित सभि की तैं क्योंहुं न लह्यो।
भली देहि मोकउ वडिआई। दुरद[9] बली जबि चीर बगाई[10] ॥ ७ ॥
बिन आई मुझ करै प्रहारे। मरिहौं इहां भांग कै भारे।
जसु प्रापति मेरे किस काजा। जबि मारहि दलमल गजराजा ॥ ८ ॥
इन को पिता शांति चित होवा। इन सम उग्र न को गुर जोवा।
जबि निज तन मै बल कुछ लह्यो। नित उतपाति करतिही रह्यो ॥ ९ ॥
शारिमौर[11] के देश लराई। सभि राजन संग बिगर्यो जाई।
रामराइ के हते मसंद[12]। पुन आयो निज पुरी अनंद ॥ १० ॥

---

1. क्षेत्रीय अधिकारी 2. डर, भय 3. कुल परम्परा से 4. पालन-पोषण 5. अपनी पराजय के लिए तुझे थोड़ा लड़ाना है 6. प्राप्त करोगे 7. बीच में से 8. स्वामी 9. हाथी 10 फैंकेगा 11. सिरमौर रियासत 12. क्षेत्रीय अधिकारी

लरनि मरनि मारन तिह कामू । धरहि शांति चित थिरहि न धामू ।
अनिक बार करि चुक्यो लराई । सभि ते करहि हीन बडिआई ॥ ११ ॥

सुनि पुन उदेसिंह समुझायो । धीरज धरन तोहि बनि आयो ।
इम कहिबो सतिगुरु सुजाने । उचित न तोकउ समुझहु स्याने[1] ॥ १२ ॥

निपज्यो[2] साल्होबंस मझारी । शरधा धरहु सदा उर भारी ।
कहि गुरबखश सिंह सुनि श्रोता । दुनीचंद कै हौल उदोता[3] ॥ १३ ॥

उदेसिंह को तजि[4] ततकाला । मुझ ढिग आयहु त्रसति बिसाला ।
बैठ्यो निकट सुनावनि लागा । देखहु हम ने किय गुर जागा[5] ॥ १४ ॥

सगरी संगति चरन झुकाई । सो अबि पेश हमारे आई ।
माझैं[6] के सिख गन मैं ल्यायो । अबि चाहति गज ते तुड़वायो ॥ १५ ॥

हम तुम अहैं नजीकी दोऊ । दुख महिं दुखी सुखी सुख होऊ ।
अपदा[7] परी आनि मुझ भारी । संगी बनिकै लेहु उबारी ॥ १६ ॥

कै मिलि जुध हटावन करो । कै हुइ संग भाज चलि परो ।
इस महि गुर के लछन कोइ न । रहि समीप अविलोके लोइन ॥ १७ ॥

अबि करतारपुरे चलि बरैं । धीरमल को वड गुर करैं ।
संगति सगरी[8] तहा लिजावैं । अनिक अकोरन[9] को अरपावैं ॥ १८ ॥

गुरु करनि तौ हमरे हाथहि । जहिं संगति जुति टेकहिं माथहि ।
तहिं ही चहुं दिशि के सिख आवैं । गुरु जानि करि सीस निवावैं ॥ १९ ॥

धीरमल अगे वहु बारी । पठे सिख तुम सदन मझारी ।
कलगी जिगा[10] बाज पठि दीजै । वड उपकार मोहि पर कीजै ॥ २० ॥

चाहहु दरब मोहि ते जेता । बिना विलंब पठौं अबि तेता ।
तुम घर ते मम बडि बडिआई । बिदतहि जगत[11] आइ समुदाई ॥ २१ ॥

सदा प्रतीखति[12] तुम को सोई । निकसहु चलहु मिलहिं अबि दोई ।
जे न कह्यो मानहि अबि मेरा । सुनीअहि जिम हुइ कशट वडेरा[13] ॥ २२ ॥

निसा विते होवति भुनसारा[14] । ढोवहिं मसत मतंग उदारा ।
लाखहुं सुभट संग लै राजे । तोरहिं तुरत आनि दरवाजे ॥ २३ ॥

---

1. समझदार 2. उत्पन्न हुआ हूं 3. भय बढ़ा 4. छोड़ कर 5. गुरु प्रतिष्ठित किया है 6. माझा प्रदेश से 7. विपत्ति 8. समस्त 9. भेंट, नजराना 10. सिर के भूषण 11. संसार को इसका ज्ञान है 12. प्रतीक्षा करता है 13. अधिक 14. प्रात:काल

जो सनमुख हुइ सो कटि जैहै। दीन भए ते रिपु गहि लैहैं।
करिकै कैद सु देहिं सजाई। बंधि जेल दिली पहुंचाई ॥ २४ ॥
जहिं सहाइता किस की नांही। परहु कैद तहिं ही मरि जांही।
इम बिचार मम साथ गहीजै[1]। निसा तिमर गाढो लखि लीजै ॥ २५ ॥
चलहु पलाइन ह्वै इस बारे। सिख माझे[2] के संग हमारे।
ले करि दाम[3] लटक पिछवारे[4]। चलहिं उतर करि बहुर सुखारे ॥ २६ ॥
घेरा हट्यो न को अटकावै। अस अवसर पुन हाथ न आवै।
इत्यादिक मै सुनि करि जानी। गुर माइआ है महद[5] महानी ॥ २७ ॥
सुन नर जिस ने सभि बिरमाए[6]। ए बपुरा क्या तिस अगुवाए।
को मसंद रहिवे नहिं पावे। गयो लोक परलोक गवावै ॥ २८ ॥
पूजा के गटाक[7] इन खाए। भरम्यो मूरख चहति पलाए।
श्री सतिगुर को नर करि जानै। मरौं न क्यों छलबल को ठानै ॥ २९ ॥
सिख साल्हो का नाम बिगारा। करहि कलंकति कुली उदारा।
मुझ को अपने संग मिलावै। आप गयो पुन और गवावै ॥ ३० ॥
इस ते आछी उपजति कंन्यां। किस को बस वधावति धंन्यां।
गई मसंदन की जर जानी[8]। किम नहिं सफलहि श्री गुरु बानी ॥ ३१ ॥
इम बिचार मैं पुन समुझायो। गुर करतार रूप ह्वै आयो।
सरब कला समरथ बलि भारी। सिरज संहारक स्रिशटी सारी ॥ ३२ ॥
एक बाक ते सभी किछु करे। जगत सुरासुर जिस अनुसरै।
तुझ को मरन देहिं किम नांही। बनहिं सहाइक दुशमन मांही ॥ ३३ ॥
दतनि बिखै जीभ बच रहै। अपर परहि मुख चरबन लहै[9]।
तिम सेवक के सदा सहाइक। राखहिं बिच रिपु गन जे घायक ॥ ३४ ॥
निशचा धरहु जथा गिर कूट। तूं स्यानों[10] कैसे चित छूट ?
अपरन को समुझावनहारो। नहिं डोलहु, बोलहु बुधि भारो ॥ ३५ ॥
इत्यादिक मैं बहु कहि रह्यो। बनहि न संगी जबि तिन लह्यो।
तूशनि[11] हुइ गमन्यो निज डेरे। टिक्यो न जे है चित घनेरे ॥ ३६ ॥
अपनी संगति सकल बुलाई। मारन मरन इहां दुखदाई।
क्यों नाहक[12] निज प्रान गवावो। होति प्राति के सभि बिनसावो ॥ ३७ ॥

1. मेरे साथ चलिए 2. माझा क्षेत्र के 3. रस्सा 4. दुर्ग की पिछली ओर से 5. बड़ी 6. भ्रम में डाल दिए हैं 7. पूजा की अत्यधिक सामग्री 8. क्षेत्रीय अधिकारियों की जड़ चली गई 9. और यदि कुछ मुख में पड़े तो चबाया जाता है 10. समझदार 11. मौन, चुप 12. व्यर्थ

इन के निकट करै रहि कहां। दिवस जामनी संकट महां।
जीवति चलहु अपनि घर मांही। इहां प्रान क्यों हूं बचि नांही॥ ३८॥
अवि पलाइ जे सदन सिधारैं। सुख के संग मिलहिं परिवारैं।
सोढी अपर गुरु करि लैहैं। रामदास की कुल को पै हैं॥ ३९॥
इत्यादिक मूरख सिखराए। भाज चलनि को ब्योंत[1] बनाए।
जहि कहिं ते ले दाम बटोर। अरध रात्रि तम पसर्‌यो घोर॥ ४०॥
टिके गुरु सिख सेवक सारे। जागहिं जित कित नर की रारे[2]।
टांवी[3] तुपक चलै कबि कबै। दिशा दूसरी ते हटि सबै॥ ४१॥
जित दिशि जान्यो नर नहिं रहै। अवसर भागनि को तबि लरै।
द्वारै को निकस्यो नहिं जाई। गहैं सिंह इत उत समुदाई॥ ४२॥
छूछ[4] मोरचा कर्‌यो पहारी। अंतर जहिं मझैल थिर कारी[5]।
तहिं को बरत[6] पाइ लटकावा। अरधिक उतरि गए तर थावा[7]॥ ४३॥
दुनीचंद जिस तन बहु पीना[8]। उतरनि हेतु सु ब्रत गहि[9] लीना।
सने सने तबि उतरति भयो। अरधिक जबै लटकतो गयो॥ ४४॥
महा भार नहिं दाम सहारा। टूटि तड़ाक गयो तिस बारा।
पुन कुछ गह्यो गयो नहिं कर ते। गिर्‌यो तुरत. बहु रहे संभरते[10]॥ ४५॥
एक जांघ के भार गिर्‌यो जबि। लगी चोट सो टूटि गई तबि।
त्रास करति नहिं बोल्यो ऊचे। सुनि खरके जो संगि पहुचे॥ ४६॥
डरत्यों तुरत उठावनि कर्‌यो। गमन्यों शीघ्र सीस बहु धर्‌यो[11]।
मंजे पर उठाइ ले गए। पिछले उतरि मेल सभि किए॥ ४७॥
श्री अमृतसर पंथ पधारे[12]। मिले मझैल[13] जाति डर धारे।
होति पीर बहु चलति उठाए। हाइ हाइ बोलति दुख पाए॥ ४८॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'दुनीचंद भाजन प्रसंग'** बरननं नाम तीन बिसती अंशु॥ २३॥

---

1. योजना 2. लड़ने वाले 3. कहीं कहीं विरला 4. खाली कर गए हैं 5. जहाँ माझा क्षेत्र के सिख हैं 6. रस्सा 7. नीचे वाले स्थान को 8. भारा 9. रस्सा 10. संभलने के बावजूद 11. धारण करके, उठा कर 12. मार्ग को चल दिए 13. माझा क्षेत्र के

अंशु २४

दुनी चंद प्रसंग

दोहरा

भई भोर प्रभु जागिकै सौच शनान शरीर ।
बसत्र शसत्र को पहिर करि बैठे गुनी गहीर[1] ॥ १ ॥

चौपई

मंगल प्रातिकाल के भए । संख शबद धुनि बाजनि किए ।
आसावार भोग कहु पाए । सभि सिंहनि सुनि सीस निवाए ॥ २ ॥
बाज उठ्यो रणजीत नगारा[2] । प्रभु की जीत जनावन वारा[3] ।
इत उत ते चलि करि गन सिंह । दरसहिं सतिगुर गोबिंद सिंह ॥ ३ ॥
खड़ग सिपर जमधर सर तरकश[4] । तोमर[5] तुपक तबर कट कसि कसि ।
बैठहिं आनि निकट समुदाई । शमस[6] मुछारति मूछ उठाई ॥ ४ ॥
उत गिरपतिनि[7] दुंदभि वाए । ढोल समूह डंक ढमकाए ।
रणसिंघे तुररी बजवाए । पटहि नफ़ीरी जे समुदाए ॥ ५ ॥
महा कुलाहल दल महिं होवा । उतसाहित चाहति गज ढोवा ।
सभि पर सतिगुर द्रिशटि चलाई । नहिं मझैल[8] को पर्यो दिखाई ॥ ६ ॥
मटू[9] सेवासिंह जि आदि । नहिं आयो क्या भयो बिखाद ?
इतने कहति सिंह दुइ आए । नमो करति ही बाक सुनाए ॥ ७ ॥
महाराज संग लए मझैल । दुनीचंद भाज्यो, निस गैल ।
चह्यो आप ने रण को प्रेरनि । मसत मतंग संग तिहिं भेरन ॥ ८ ॥
तिस ते त्रास धारि भजि गयो । अपर[10] न कारन कुछ लखि पयो ।
मरिबे को डर धरि उर भागा । मंद मसंद महिद दुरभागा[11] ॥ ९ ॥

---

1. गंभीर गुणों वाले 2. नगारा विशेष जिसका नाम 'रणजीत' था 3. वाला 4. विभिन्न शस्त्र 5. भाला 6. दाढ़ी 7. पहाड़ी राजा गण 8. माझा क्षेत्र के सिख 9. एक जाट जाति 10. दूसरा 11. मंद बुद्धि वाला, महान् दुर्भाग्य वाला क्षेत्रीय अधिकारी

सुनि सतिगुर तवि बाक उचारे। भाग्यो मूढ़ काल डर धारे।
तहिं भी तिस को काल अगारी[1]। मारहि, कहां जाहि डर धारी॥ १० ॥
भाज गयो तिस भाजनि देहु। कहां करहु तिह संग सनेहु।
जो सनमुख हुइ इह ठां रह्यो[2]। तिसको मेल लेहु सुख लह्यो॥ ११ ॥
सभि मझैल[3] रण के डर भागे। इस को फल लागे तिन आगे।
निस दिन जंग गरे तिन परे। रुटीआं हाथ अए[4] जबि लरे॥ १२ ॥
गुर घर ते जिस दुख करि गए। सो दुख तिन के नित गर पए।
इहां धरहिं जिस के सिर हाथा। हाथी कहां लरहि जम साथा॥ १३ ॥
इम दे श्राप गुर चुप रहे। सभि सिं न की दिशि को लहे।
दुनीचंद की सुनीअहि कथा। तिह संग बिती जाइ करि जथा[5]॥ १४ ॥
मंच[6] पाइ सिर लयो उठाइ। टूटी टांग हाइ बिललाइ।
श्री अमृतसर पहुचे जाई। बर्‌यो[7] सदन अपने उतराई॥ १५ ॥
मन महिं कहै—मिलिनि सिख आवैं। भाज्यो सुनिके मोहि लजावैं।
यांते निज सबंधीअनि कह्यो। चोट लगी मैं बहु दुख लह्यो॥ १६ ॥
घर के अंतर मंच डसावहु[8]। मो ढिग बहुत न आवहु जावहु।
भला न भावहि मिलनो मोहीं। अंतर रहहु तूशनी[9] होहिं॥ १७ ॥
इम सुनिकै तिस पौत्रे दोइ। अंदर जाइ पवायो सोइ।
सुनि सभि के बहु अपवादा[10]। गुर तजि भाग्यो जानि त्रिखादा॥ १८ ॥
पुशतनि लौं[11] गुर घर के पारे। भयो ब्रिध म्रितु को डर धारे।
सिख साल्हो का नाम गवायो। गुर आगे रहि बहु सुख पायो॥ १९ ॥
जीवन सदा अपनि इन जाना। अबि प्रभु ते हुइ गयो बिराना[12]।
श्री अमृतसर के सिख आवैं। मिलहि न किह सों मुख न दिखावैं॥ २० ॥
लगी चोट को लेति बहाना। पर्‌यो मंच पर चित महाना।
अपर जि भाजे संग मझैल। सभि को हुइ धिकार तिस गैल[13]॥ २१ ॥
केतिक पशचाताप करते। नहिं संगति महिं मुख दिखरंते।
हम ते बुरी कार हुइ गई। इत की गुर सिखी लघु भई॥ २२ ॥
सभि दिन बीत गयो दुख पावति। तम महि पर्‌यो न बदन दिखावति।
भई जामनी जबहूं आइ। उठ्यो तजनि मल को तिस थांइ॥ २३ ॥
मच तरै जबि पैर उतारा। हुतो तहां पंनग वड कारा[14]।
दबी पुंछ ते बहु फुंकारा। डस्यो तबै कोप्यो उर भारा॥ २४ ॥

---

1. आगे 2. इस स्थान पर 3. माझा क्षेत्र के 4. रोटियां प्राप्त होंगी, खाना मिलेगा 5. जिस प्रकार 6. चारपाई पर 7. दाखिल हुआ 8. बिछाओ 9 चुप, मौन 10. निंदा 11. कुल परम्परा से 12. पराया 13. उस के साथ 14. बड़ा काला सांप

हाइ हाइ करि निकस्यो तबै। देखति भए संबंधी सबै।
दौरे उपचारन को जित कित। कहां होति तिस ते, ततछिन हति[1] ।। २५ ।।
भई प्रभाति दाह करि दीना। गुर ते बेमुख जीवन हीना।
बहुर अधोगति प्रापति होवा। करहि धिकारनि जिन सिख जोवा।। २६ ।।
तहिं बच रहति बिजै को पावति। सकल पंथ दीरघ जसु गावति।
मिरत न टरति बिमुख ह्वै मर्यो। बहु मति मंद नरक मैं पर्यो ।। २७ ।।
दुइ पौत्रे सुनि सुनि अपवादा[2]। नहिं सहारति होति बिखादा[3]।
नाम सरूप सिंह इक केरा। दुतिय अनूप सिंह तिस वेरा।। २८ ।।
कट कसिकै[4] गुर दिशि चलि परे। दोश पितामा को बड धरे।
जो मझेल[5] शरधा धरि मिले। ले करि संग अनंदपुरि चले।। २९ ।।
दुनीचंद की इम भी कथा। कलगीधर की सुनीअहि जथा।
छुटहिं लोहगड़ दिशा तुफंग। ढुके मोरचे निकट निसंग।। ३० ।।
अनी घनी सैलिद्रन केरी[6]। घाल्यो ज़ोर सभिनि तिस बेरी।
आज गढ़ी को लेहुं छुटाइ। पुरि आनंद पुन टिके न काइ।। ३१ ।।
भीमचंद उतसाह बिलंद[7]। लियो हकारि केसरी चंद।
हंडूरी ते आदिक राजे। भए इकत्र लरन के काजे।। ३२ ।।
बैठि एक थल गज मंगवायो। बली बिलंद झूलतो आयो।
पुशट बडो नित मसत रहंता। निकट पिखहि नर ततछिन हंता।। ३३ ।।
तोमर दीरघ हाथ रहंते। इत उत घेरति ताहि चलेंते।
संगल रहहि पैर मैं पायो। मानव ब्रिंदनि अग्र चलायो।। ३४ ।।
दए मसाले गरम घनेरे। जिन ते होयो मसत बडेरे।
आंख लाल दीरघ ते हरति। इत उत तोमर गन[8] ते प्रेरति।। ३५ ।।
सभि गिरपतनि[9] बिलोकनि कीना। रातब[10] दे त्रिपताइ सु लीना।
सार बारनी[11] को मंगवाइ। प्रथम सवा मण दई पिलाइ।। ३६ ।।
तवे पुलादी मसतक सारे। बधे भली भांति बड भारे।
कुछक सुंड नंगी रहि गई। सरब लोह सों छादनि भई।। ३७ ।।
दीरघ लांबी सैफ[12] मंगाई। दुहि दिशि तीखी धार लगाई।
सुंड अंत सों बंधति खरी[13]। खुलहि न, दिढ ऐसी बिधि करी।। ३८ ।।
गोरी फोर सकहि नहिं जैसे। लोहे संग अछाद्यो ऐसे।
नेज़ा खड़ग कटहि तिस कहां। इस प्रकार गाढ़ो करि महां।। ३९ ।।

---

1. तुरंत मर गया 2. निंदा 3. दु:खी 4. कमर बांध कर 5. माझा क्षेत्र के सिख 6. पहाड़ी राजाओं की अत्यधिक सेना 7. ऊंचे अथवा अधिक उत्साह वाला, 8. भालों को धारण किए व्यक्तियों के द्वारा 9. पहाड़ी राजागण 10. चारा, खाद्य पदार्थ 11. बहुत तेज़ शराब 12. तलवार विशेष 13. अच्छी तरह से

सौंडा प्रेरति[1] सैफ सु फेरति। ब्रिद सैंलिद्र[2] अनंदति हेरति।
फुंकारति चिघारति भन्यो। सतिगुर बैठे तहिं लगि सुन्यो ॥ ४० ॥
सभि सिहनि तबि अरज़ गुज़ारी। प्रभु जी कुंचर केर चिघारी।
मत बारणी ते सो लहीयति। तिस उपाइ करिबे अति चहीअति ॥ ४१ ॥
आज लोहगड़ लोहा माचै। करदम श्रोणत रजसो राचे।
पायो ज़ोर सभिनि तहिं जाई। इत ते गए हटक समुदाई ॥ ४२ ॥
तड़भड़ छटहि तुफंग घनेरी। होति मोरचै निकट बडेरी[3]।
मारन मरन होइ संग्रामा। आज शत्रुगन पठि जम धामा ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे चतुरथ रुते **'दूनी चंद प्रसंग' बरननं** नाम चतुरथ बिसंती अंशु ॥ २४ ॥

---

1. सूंड के फेरने से 2. पहाड़ी राजागण 3. बहुत अधिक

अंशु २५

बचित्र सिंह उदे सिंह रण करनि पठन प्रसंग

दोहरा

सुनि सिंहनि ते सतिगुरु सभि दिशि द्रिशटि चलाइ।
करे बिलोकनि ब्रिद ही चहुं दिशि महिं तिस थाइ ।। १ ।।

निसपालक छंद

श्री गुर प्रयंक[1] निस के बिच सदीव हीं । होवहिं सुचेत रखवार बित थीव[2] हीं ।
बिसंत सु पंच गिनती[3] तिनहुं जानिये । जागति रहंति गहि आयुध सु पानिये[4] ।। २ ।।
पासहि रहंति सभि खास हरखाइकै । जामनि मझार करि सेव सुख पाइकै ।
देखनि करे सु प्रभू एक सम बीर हैं । जंगहि निसंग[5] भट भंग हित धीर हैं ।। ३ ।।

नराज छंद

तिनहुं मझार एक है बचित्रसिंह सूरमा । बली बिलंद[6] बाहु दंड शत्रु ते गरुरमा[7] ।
सु राजपूत जाति ते मछैल[8] छैल जानिये? क्रिपान ढाल अंग संग जंग मैं महांनिये ।। ४ ।।

दोहरा

पोशश[9] पट बहु रूप की पहिरति अपने अंग ।
पिखि प्रभु कहिं बहुरुपीआ भयो सु संग्या संग[10] ।। ५ ।।

चंचला छंद

श्री गुरु बिलोक कै बिलंद ओजवान जानि ।
सामहे थिर्यो सु बीर हाथ धारि आयुधान ।
मानि है प्रभु सु बाक, है अनंद धीर मांहि ।
बासतो हजूर नीति भाऊ दीह[11] चीत जांहि ।। ६ ।।

ललितपद छंद

विद्या नेजे मारनि की महिं बुधिवान बड जानै ।
चढि तुरंग[12] कै पैदल ह्वै करि अधिक भ्रमावनि ठानैं ।। ७ ।।

---

1. पलंग, बड़ी चारपाई 2. स्थित रहते थे 3. जिनकी संख्या 25 थी 4. हाथों में शस्त्र धारण किए रहते थे 5. निडर 6. बड़ा बहादुर 7. शत्रु पर भारी है 8. बड़ी बड़ी मूँछों वाला 9. वस्त्र 10. उसका नाम हो गया 11. अत्यधिक प्रेम 12. घोड़ा

नेजा गहे खरे जो सनमुख श्री प्रभु निकट हकारा[1]।
आउ बचित्र सिंह बड जोधा तुव सिर भार उदारा ॥ ८ ॥
उत सैलैंद्रीन[2] को मतंग बड, इत ते केहरि थीजै[3]।
महां दाड नेजा खर[4] दै हैं गज हतिबे को कोजै ॥ ९ ॥
आयुत[5] भाला भाल प्रहारहु मुर है जिस ते हाथी।
नहिं कदाचित सनमुख आवै पीछे मारै साथी ॥ १० ॥
धरि धीरघ दीरघ बल करिकै शंका त्यागि प्रहारो।
त्रास न करहु प्रयास धरहु अस, जसु को पाइं सुखारो ॥ ११ ॥
सुनि बचित्र सिंह भयो प्रफुल्यत[6] तवि दोनहुं कर बंदे[7]।
महाराज की आइसु जैसे तिम हीं करौ निकंदे ॥ १२ ॥
महि महिं[8] इह हाथ क्या बपुरो जो अर सकहि अगारी।
सुन्यो सुरग महिं इक ऐरावत तिस को लैहों मारी ॥ १३ ॥
अपनि खज़ाने विच ते[9] सतिगुर तत्रि नेज़े मंगवाए।
किसी वलाइत भए त्यार सो कीमत अधिक बनाए ॥ १४ ॥
वेण विखै[10] बहु कली पूर करि ऊपर लै लपटाए[11]।
दुहरे होइ बनहि पुन सरली नहिं टूटहिं बल लाए ॥ १५ ॥
परे बंद बहु चामीकर[12] के नग तिन पर जरवाए।
धन दस सपत संहस्रे लाग्यो[13] बाशक सम दरसाए ॥ १६ ॥
श्री प्रभु दोनहुं लए हाथ महिं करखहिं तोलन कीना।
कुचर के मसतक को फोरनि इन तिन महिं ते दीना ॥ १७ ॥
फल फुलाद कीमत बहुते की लोहा बीधन वारो।
ले बचित्रसिंह बंदन कीनसि ततछिन भा बल भारो ॥ १८ ॥
बिद्या अधिक बहुत सिखराई इम गहि करि गज मारो।
सकल भेद को जान्यों तूरन[14] गुर करुना उर धारो ॥ १९ ॥
करी बचित्र सिंह पुन बिनती हार जीत नहिं जानौं।
जित प्रेरहु तित गमनहुं सनमुख बुधि अरु बल सभि ठानौं ॥ २० ॥
मोहि मरन की चित न कोई तुमहि दास की लाजा।
खरो होनि मिस मेरो इक है आप करहु निज काजा ॥ २१ ॥

---

1. बुलाया 2. पहाड़ी राजे 3 बन जाइए 4. तेज, तीक्ष्ण 5. चपटा 6. प्रसन्न 7. हाथ बांधे 8. पृथ्वी में 9. बीच में से 10. बांस के बीच में 11. ऊपर तंदी लपेटी हुई थी 12. सोना 13. 17 हज़ार रुपये लगे थे 14. तुरन्त

दास उचित आइसु[1] को मननि तुम पूरन निरबाहो ।
जग महिं सुरसु प्रलोक महा सुख मन जान्यों इस मांहो ॥ २२ ॥
जिम श्री क्रिशन भीम को बल दे जरासंध मरिवायो ।
रामचंद्र सुग्रीव ओज दे बाली को हतवायो ॥ २३ ॥
तथा क्रिपा करि मुझ ते कारज आप बनावन चाहो ।
दीजहि मादक रहु मत मुहि मत[2], आप दुरद[3] को गाहो ॥ २४ ॥
सुनि प्रसंन कलगीधर ह्वै कै निज अफीम मंगवाई ।
डबा चामीकर[4] को सुंदर जटे रतन समुदाई ॥ २५ ॥
मासे पंच भखति सो पूरब तिस ते दई सवाई ।
दूर वलाइत ते जो आवति अति मादक बडिआई[5] ॥ २६ ॥
निज कर ते कलगीधर दीनी जुग हाथनि पर लीनी ।
सिमरि नाम गुरु को तबि खाई बडि कीमति की चीनी ॥ २७ ॥
पुन बिजीआ[6] घुटवाइ मंगाई सिहन पान कराई ।
पीवति चढ्यो बिसाल अमल[7] तबि, लाली लोचन छाई ॥ २८ ॥
भौहैं चढ़ी कमान मनिंद[8] मूछन पर कर फेरा ।
खड़ग सिपर[9] ते कमर कसी दिढ, बरछा कर महि फेरा ॥ २९ ॥
बखश्यो बल बिलास कलगीधर वध ग्यो मन उतसाहू ।
कुंचर को पपीलका जानति—हतौं तुरत रण मांहू ॥ ३० ॥
वध्यो प्रमोद भयो तबि गदगद पर्यो चरन गुर आगे ।
दे थापी ततकाल उठायो करहु जुध अनुरागे ॥ ३१ ॥
चतुर प्रदछना[10] दे प्रभु केरी सभि सों फते[11] बलाई ।
पिखति खालसा चल्यो अग्र को असु[12] पर द्रिशटि चलाई ॥ ३२ ॥
करि बंदन पग, भयो अरुढनि बरछा हाथ हुलारा[13] ।
दूसर कर महि बाग तुरंग[14] की ले गुर नाम पधारा ॥ ३३ ॥
हुतो दमदमा अधिक उचेरो तिस पर गुरु अरूड़े ।
पिखिनि तमाशा जंग करन को ढोवन[15] गज को कूड़े[16] ॥ ३४ ॥
उदे सिह आलम सिह आदिक सभि प्रभु के ढिग बैसे ।
करहिं क्रिपा जिस बाक बखानैं सनमानति हैं तैसे ॥ ३५ ॥

---

1. आज्ञा 2. मेरी बुद्धि भी मस्त हो जाए 3 हाथी 4. सोना 5. अधिक नशे वाली 6. भांग 7. नशा 8. समान 9. ढाल 10. परिक्रमा 11. सब को सप्रसन्न अवस्था में प्रणाम किया 12. घोड़े पर 13. उछाला 14. घोड़े की लगाम 15. सज्जा 16. झूठा, व्यर्थ

द्रिशटि लोहगढ़ दिशि को प्रेरी हेरि शत्रु समुदाए।
बडे ढोल दुंदभि रणसिंघे नाद बिलास उठाए।। ३६ ।।

गज शिंगार कीयो बहु गाढो लोहे संग अछादा[1]।
इत उत सौंडा[2] फेरनि करतो, यमक सैफ भट बादा[3] ।। ३७ ।।

एक लाख गिनती को जोधा पुन सतवंज हज़ारा[4]।
संग केसरो चंद सु लैके हेला घालनि त्यारा ।। ३८ ।।

सुथरी, धौंस[5] दीरघा, भेरहि, डफ गन ढोल समूंह।
पटहि[6], बांसुरी, बजी नफीरी, भट उमड़े हित हूंह[7] ।। ३९ ।।

मारि मारि कहि रौर पर्‍यो बड तोमर[8] लए हज़ारा।
खड़ग सिपर[9] ले फांदन करिते तड़भड़ तुपक उदारा ।। ४० ।।

तुरंग केसरी चंद फंधायो सभि ते आगू ह्वै कै।
आज लोह गड़ तोड़ौं भिड़िकैं सपथ रिदै सिमरैके[10]। ४१ ।।

आलम सिंह बिलोकति बोल्यो, प्रभु जी इह जसवारी[11]।
महा शत्रु हंकारि बडेरा[12] सभि महि सपथ उचारी ।। ४२ ।।

आज जंग महिं इसहि संहारहि सैलेंद्रनि[13] हति धीरं।
करहु खालसे पर निज करुना इत ते भेजहु धीरं ।। ४३ ।।

अपर कार लरि तारन केरी सो न करहिं रण मांही।
हतहिं केसरी को करि उदम रिपु निरबल हुइ जांही ।। ४४ ।।

श्री कलग़ीधर सुनति बखानी नीकी बात बताई।
जिम बचित्रसिंह गज पर गमन्यों तिम को[14] इस पर जाई ।। ४५ ।।

सिर निकंद[15] करि हम डिग आनहि[16] निरभै खड़ग के साथा।
धरि बिशवाश महत उतसाहित को टेकहि पग माथा ।। ४६ ।।

तीन बचन सुनि उदे सिंह तबि बोल्यो जोरति हाथा।
करहु दास को आइसु श्री प्रभु मैं लरिहौं रिपु साथा ।। ४७ ।।

जग खेत महिं हतन कहां इह, जे अविलोक पलावै।
दुरग सैल मैं जाइ प्रवेशै तहा न प्रान बचावै ।। ४८ ।।

---

1. आच्छादित किया 2. सूंड 3. शूरवीरों के विनाश के लिए 4. एक लाख सत्तावन हज़ार 5. नगाड़े 6. बड़ा ढोल 7. आक्रमण करने के लिए 8. भाले 9. ढाल 10. शपथ उठा कर 11. जसवाल राजपूत 12. बड़ा 13. पहाड़ी राजा 14. कोई 15. काट कर, नष्ट करके 16. लाओ

करौ प्रहार अपर मैं नहिं, पहुंचौं तिसके पासा।
गुर प्रताप ते कराचोल[1] सों देवहुं सीस बिनासा ॥ ४९ ॥
जहि कहिं अरहि लरहि इह मूरख रण की बायु न लागी।
आज लेहि फल सगरे दिन को बेमुख कूड़ कुभागी ॥ ५० ॥
सुनि प्रसंन कलग़ीधर होए बली तुरंग तबेले।
ज़ीन पवाइ अनायहु तूरन[2] कह्यो उदे सिंह ले ले ॥ ५१ ॥
दीरघ खड़ग कोश ते दीनसि खरो पुलाद करारा।
बल ते हते लोह को काटहि मानुख कहां बिचारा ॥ ५२ ॥
बरछा दुती रह्यो सो बखश्यो क्रिपाद्रिशिट सो हेरा।
बल उतसाह बिसाल बध्यो[3] तन गुरु प्रताप घनेरा ॥ ५३ ॥
कट सो बंधि खड़ग, बड ढाला, तोमर हाथ मझारा।
नमों प्रदछन[4] करति भयो जबि मादिक दीनि उदारा[5] ॥ ५४ ॥
निज कर ते हफ़ीम सो दीनि बिजीआ[6] करिकै पाना।
बंक मुछहिरे[7] करि तबि गमन्यों भा असवार किकाना[8] ॥ ५५ ॥
गिर ईशन[9] की चमूं धनी लखि सिंह समूह उठाए।
तुपक तमाचे चाप तीर खर[10] गहि गहि शसत्र सिधाए ॥ ५६ ॥
आज भेड़ ओड़क[11] को परि है गुर प्रताप ते मारैं।
कहा भयो जो अनी[12] घनी तिन, लरि करि मूरख हारैं ॥ ५७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'बचित्र सिंह उदे सिंह रण करनि पटन प्रसंग'** बरननं नाम पंच बसंती अंशु ॥ २५ ॥

---

1. तलवार 2. तुरंत मंगवाए 3. वृद्धि हुई 4. परिक्रमा 5. अत्याधिक मात्रा में प्रदान की 6. भांग 7. मूंछे 8. घोड़ा 9. पहाड़ी राजागण 10. तीक्ष्ण 11. अंतिम 12. सेना

अंशु २६

कुचर प्रसंग

दोहरा

दोनहुं दीरघ सूरमे अपर सिंह समुदाइ।
चले लरन के हेतु को जहिं रणखेत बनाइ॥ १ ॥

चंपकमाला छंद

दीरघ रौरा द्वै दिशि होवा। चाहति हाथी की तबि ढोवा।
सिंह गए घोरे असवारा। लोहगड़ी को द्वार निहारा॥ २ ॥
नाहर सिंह बीर बिसाला। बीच थिरयो[1] लै सिंहनि जाला।
काशट प्रिशटा[2] हाथ संभारे। डालि दुगोरी है करि त्यारे॥ ३ ॥
छोरति बैरी हेरति आए। दै उतसाह बीर बधाए।
श्री प्रभु ह्वै रछ्या करि भारी। नाम सुलीजै जै रण कारी[3]॥ ४ ॥

चंचला छंद

शेर सिंह दूसरो सु जूध नाथ[4] बीच बीर।
त्यार जंग खेत को सु लोह कोट पौर तीर[5]।
सैन सैल नाथ[6] की बिसाल घालि घालि[7]।
मार मार बोलती पुकार भूलि डालि डालि॥ ५ ॥
श्री गुरु बिलोकते उतंग थान पैर थिरति।
जंग मैं उमंग कै तुफंग संग भगयति।
गोरीआं दुओरिया सु छोरिया सरीर फोर।
गोरिया घनेरिया बिखोरिया जि लोथ घोर[8]॥ ६ ॥
मुंड तुंड तूटिगे प्रचंड ही घमंड घालि।
टूट हाय पांइ गे, सु जंघ कंध श्रोण डाल।
नैन. कान. नाक. ओठ, ग्रीव, भाल, सीस लागि।
फोरि देति गोरिया उतार देति कांहु पाग[9]॥ ७ ॥

---

1. स्थित था 2. बंदूक 3. विजय प्राप्त कराने वाला 4. सेना 5. द्वार के पास 6. पहाड़ी राजाओं की सेना 7. आक्रमण करके 8. अत्यधिक शव गिरे 9. पगड़ी

स्वैया

बान सटासट[1] छूट चले गन बीर कटाकट होनि लगे ।
नाद चटापट[2] उठति दीरघ होति हटाहट सूर अगे[3] ।
तीखन भीखन मार मची रज श्रौण रची भट चीर पगे[4] ।
अंगन भंग तुरंग भए किह पेट फटे रणखेत डिगे[5] ॥ ८ ॥
छूछ फिरे हिहनावति हैं हय हाक पुकारति हैं कहि कोऊ ।
भारथ[6] दूसर होति भयो जनु मारि मरे किह ठां[7] भट दोऊ ।
धूल उड़ी अंधकार भयो बड धूम उठ्यो जनु बारद होऊ ।
होइ प्रकाश बरूद धुखै तड़िता समता कहु पावति सोऊ ॥ ९ ॥

रसावल छंद

दए ब्रिंद नेजे । कल्हूरी सु भेजे ।
मतंगे पिछारी । करे जाइ मारी ॥ १० ।
किते होइ दाएं । दिजै चोक जाए ।
किते बाम पासे । थिरो जाइ रासे ॥ ११ ॥
जहा कोट पौरा[8] । चलै तांहि छौरा ।
हटै नांहि जैसे । करौ कार तैसे ॥ १२ ॥
सूनी भूप बानी । करे सावधानी ।
बडो फील[9] प्रेरा । महां मत घेरा ॥ १३ ॥
मनो सैल श्रिंग । चल्यो यौं मतंग ।
फुकारे कराला । महां ओज वाला ॥ १४ ॥
सु नेज़ान प्रेरा[10] । चिंघारै बडेरा ।
घनी कैफ पानी । चल्यो अग्र थानी ॥ १५ ॥
पदाती[11] हज़ारैं । मिले हैं पिछारैं ।
तुरंगै नचाए । भए बाम दाए ॥ १६ ॥

भुजंग प्रयात छंद

चल्यो केसरी चंद लीनी कमाना । गहे बान तीखे गुन संधिताना[13] ।
पहारै चलै सामुहे कोट पौरा । करी हाल हूलं पर्यो भूर शौरा ॥ १७ ॥
भयो भीमचंद किती दूर पाछे । फते कोट कै है—इमं चीत बांछे[14] ।
कटोची हडूरी हुते और राजे । भए बाम दाएं चले जुथ काजे ॥ १८ ॥

---

1. शीघ्रतापूर्वक 2. तुरन्त 3. हटा हटा कर आगे होते हैं 4. भीग गए 5. गिरे हुए थे 6. महाभारत 7. स्थान 8. द्वार 9. हाथी 10. भालों से प्रेरित 11. अधिक 12. पैदल 13. चिल्ला चढ़ा था 14. इस प्रकार चित्त में सोचता था

दुऊ सिंह जोथे गुरु आप भेजे। बरे कोट मैं जाइ लीने सु नेज़े।
जिते सिंह संगी करे ज़ोर आए। तुफंगैं प्रहारैं तड़ाके उठाए ॥ १९ ॥

दोहरा

हुती अगमपुर मोरचा तहां पर्‌यो घमसान।
थिरहिं सिंह छोरहिं नहीं परे पहारी[1] आनि ॥ २० ॥

भुजंग प्रयात छंद

वड़े ओज लाए तुफंगैं प्रहारी। तबे आनि ढूके समूह पहारी।
चली ब्रिंद गोरी मरे बीर केते। तऊ नांहि छोरैं रूपे सिंह जेते ॥ २१ ॥
कराचौल[2] काढे भए हथवथं। मरे सिंह मारे प्रहारी प्रमंथं[3]।
रहे आनि थोरे सु लीने धकाई। लियो मोरचा मल छूछं[4] तकाई ॥ २२ ॥
चले फेर आगे लयो बीच हाथी। जु सेफं भ्रमावै बधी सुंड साथी।
थकाए किती दूर लौ सिंह आए। परे मार गोरीन की बीर घाए ॥ २३ ॥
भए कोट के पौर को सामुहाई। चलै बान गोरी महां धूम पाई।
फिरी जोगनी आनि भूतं सु प्रेतं। भखैं मासहारी महां जंग खेत ॥ २४ ॥
भ्रमैं ग्रिथ बिधं, रजे कंक बंकं[5]। अघावें डकारें, वजैं ब्रिंद डंकं।
सर सांग सेले सरोही दुधारे। लगे अंग भंगे परे बीर मारे ॥ २५ ॥
चल्यो मत हाथी जबै पौर[6] आयो। धकेले सभै सिंह यों ज़ोर पायो।
बरे बीच कोटं लिए ओट ठांढे। तुफंगैं तड़ाके परैं होइ गाढे ॥ २६ ॥
छुटी सैंकरे एक बारी तुफंगै। फूटैं तुंड मुंड लिटें ज्यो मलंगै[7]।
हज़ारों परे मार गोरीन होई। तऊन मिटै हेल घालंति सोई ॥ २७ ॥
पहुंचे जबै पौर लो आनि बैरी। वड़ी मार खै के नहीं तुंड फेरी।
कराचौल[8] काढे चहैं सो प्रवेशे। दियो ढोइ हाथी प्रहारैं विशेशे ॥ २८ ॥
दड़ा दाड़ गैरं तुफंगैं प्रहारैं। क़िले मोरचे में खरे सिंह मारैं।
परी लोथ पै लोथ पौरं अगारी। गए जूझ केते बकैं मार मारी ॥ २९ ॥

ललितपद छन्द

तबि बचित्र सिंह रिदै बिचार्‌यो—इह अवसर अबि मेरा।
हतों मतंग अंग मैं बरछा करिकै ओज घनेरा ॥ ३० ॥
हय अरूढि करि ठांडों अंतर उदे सिंह के पासा।
मादक चढ्‌यो मसत अति होवा सभि सों बाक प्रकाशा ॥ ३१ ॥

---

1. पहाड़ी लोगों ने आक्रमण किया 2. तलवार 3. अच्छी तरह से मारा 4. खाली 5. वक्र चोंच वाले मांसाहारी पक्षी शोर करते हैं 6. द्वार पर 7. मस्त 8. तलवार

खोलि कपाट देहु मुझ आगे देखहु जंग मतंगा।
अपर सभिनि कै तुम दिढ झालौ[1] शलख[2] तुफंगनि संगा ॥ ३२ ॥
उदे सिंह के बांटे आयो हते केसरी चंदा।
ऐसी करहु मार मिलि सिंहु धर पर धर ह्वै ब्रिद्रा ॥ ३३ ॥
इम कहि करि कपाट खुलिवाए हय की बाग इठाई।
समुख मतंग आवतो पिखि करि गमन्यों केहरि न्याई ॥ ३४ ॥
चरबति ओठन लाल बिलौचनि फरकति मूंछ उठाई।
भ्रिकुटी चढ़ी कुटिल, मुख लाली, शमश[3] महा छबि छाई ॥ ३५ ॥
मनहुं क्रोध ते शेर सटा उठि भीखन दरशन होवा।
तोमर[4] धरि कै हाथ उभार्‍यो हाथी मसतक जोवा[5] ॥ ३६ ॥
पग को बल रकाव पर करिकै उछल्यो आसन छोरा।
सभि सरीर कौ ओज संभारिकै हय फांद्‌यो गज ओरा। ३७ ॥
सैफ बचाइ चलाइ सु बरछा तवा पुलादी फोरा।
बर्‌यो[6] जाइ गज मसतक मैं जबि पुन कर जुग करि ज़ोरा ॥ ३८ ॥
कर्‌यो धसावनि प्रविश्यो ऐसे उपमां कहौ बनाई।
क्रौंच सैल[7] महिं जिम शिवनंदन[8] मारि धसाई ॥ ३९ ॥
वाशक किधौं वेग फण दीरघ बिनता सुत[9] के त्रासा।
देखि रंध्र गिर बिखैं प्रवेशा नहिं पुन बदन निकासा ॥ ४० ॥
बनहुं इन्द्र करि क्रोध बिलंदै[10] लीनि रुद्र ते सूलं।
गिर को हत्यो बधन के हित करि अस उपमा अनुकूल ॥ ४१ ॥
पुन तोमर कौ दोनहुं कर सो बल से बहु झकझोरा।
खैंचि निकास्यो श्रोणत लिपट्यो कीनसि अपनी ओरा ॥ ४२ ॥
बरछा लगति चिंघार्‌यो दीरघ कुंचर सीस निवायो।
जनु गुरसिख को बंदन छान्यों मैं भूल्यो इत आयो ॥ ४३ ॥
निकस्यो तोमर[11] मसतक ते जबि हटि पाछै मुख मोरा।
पुन बचित्र सिंह चोभति नेज़ा रिस्यो दुरद[12] तबि घोरा ॥ ४४ ॥
बहिति रुध्रर की धार बडेरी, झटति सुंड फिर फेरी।
जे तोमर को चोकति[13] नेरै तिन कौ मारति गेरी[14] ॥ ४५ ॥

---

1. संभालो 2. बूछाड़ 3. दाढ़ी 4. भाला 5. देखा 6. प्रविष्ट हो गया 7. क्रौंच पहाड़ में 8. शिव के पुत्र 9. गरुड़ 10. अत्यधिक 11. भाला 12. हाथी 13. चुभाते थे 14. मार कर गिरा रहा था

भयो बिबस बहु मरे पहारी सैंफ प्रहारती हाथी।
चिघारति अरु फेरति बल ते कतल करै निज साथी ॥ ४६ ॥

भयो सथार[1] सैंफ ते काटति पर्‍यो रौर तबि भारा।
सहति सिंह कुछ सतिगुर हेरे भयो अनंद उदारा ॥ ४७ ॥

प्ररति घने मोरिबे गज कौ जहि देखति निज नेरे।
रिस ते सुंड फेरतो मारति सैंफ साथ गन गेरे[2] ॥ ४८ ॥

रह्यो खालसा मारन ते कित, इक मतंग ही मारे।
जित दिशि दौर परति है काटति भाजति जाति अगारे ॥ ४९ ॥

पैरन सों दौर करि गन मारे सैंफ संग बहु काटे।
जतन हटावनि कौ करि हारे हट्यो न केतिक डाटै ॥ ५० ॥

तवि वचित्र सिंह पेलति पाछे तोमर अनी प्रहारै।
त्यों त्यों वेग जाति करि आगे घने पहारी मारै ॥ ५१ ॥

पर्‍यो अपूठो, घर के मारति जसुवारन[3] को हाथी।
अबि लौ कहिवत[4] अहैं गिरनि महिं मिलि मिलि बोलति साथी ॥ ५२ ॥

हते हज़ारहुं गिर नर कुंचर गुर की बिजै करंता।
लोचन लाल चिघार पुकार सुंड प्रचंड भ्रमंता ॥ ५३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे चतुरथ रुते **'कुंचर प्रसंग'** वरननं नाम खशट बिसंती अंशु ॥ २६ ॥

---

1. ढेर लग गए 2. गिरा दिए 3. जसपाल राजपूतों का हाथी
4. लोकोक्ति ही बन गई है

अंशु २७

गज और केसरी चंद वध प्रसंग

दोहरा

जसुवारी न्रिपकेसरी निज कुंचर अविलोका।
सैन खपावति फिरति है रिदै धारि बहु शोक ॥ १ ॥

रसावल छंद

पदांती खपाए[1]। जिते संग लाए।
रहे शेख[2] जोई। भजे तीर सोई ॥ २ ॥
इकै ओर हाथी। बिनासे जु साथी।
दुती ओर सिंहं। जथा भीम सिंहं ॥ ३ ॥
चमूं पुंच घाई। नहीं धीर पाई।
रह्यो दुरग लैबे। बन्यो जीव दैबे ॥ ४ ॥
गुरु सैन थोरी। बडो घालि ज़ोरी।
हमै साथ लछा। बिलोकैं प्रतछा[3] ॥ ५ ॥
नहीं जाइ जानी। भई पुंज हानी।
थिरे न पदांती। रिदै धीर हाती ॥ ६ ॥
तुरंगानि सैना। अबै जुध ऐना[4]।
लरौं संग लैके। चढ़ौं कोट धंके ॥ ७ ॥
रिदै यौं बिचारी। समूंह हकारी।
वधे टोल[5] केते। निरभै बीर जेते ॥ ८ ॥
मिले हेल घाला। छुटी बौनिज्वाला[6]।
तड़ा ताड़ माची। कराली सु नाची ॥ ९ ॥
बकैं मार मारं। तुरंगा सावरं।
गजं घेर लीना। सबै अग्र कीना ॥ १० ॥

---

1. पैदल सेना नष्ट कर दी 2. शेष, बाकी 3. प्रत्यक्ष 4. अभी युद्ध भूमि में ही है 5. दल 6. बन्दूक

जसौवारि देखा। उदे सिंह रेखा[1]।
पर्यो काम मेरा। ढुक्यो शत्रु नेरा ॥ ११ ॥

खुल्ह्यो कोट द्वारा। चमू को निहारा।
भयो नेर आई। तुफंगैं चलाई ॥ १२ ॥

सिरखंडी छंद

उदे सिंह तबि धायो बरछा हाथ लै।
मोर मनिंद नचायो बाग उठाई करि[2]।
ललकारति रण आयो बाहर निकसि कै।
जथा शेर गरजायो देखि मतंग गण ॥ १३ ॥

बिचरति गन मतवाला बारन[3] चाढ रही।
श्रोणत बहित बिशाला घावन भेदियो।
इत उत फिरहि बिहाला दरड़ति[4] लोथ गन।
फेरति सुंड कराला काटति सुभट दल ॥ १४ ॥

अम्रित धुनि छंद

थल थल दल खलभल पर्यो लोथ उलथ पलथ।
जसुवारी को फिरति है हाथी हथ प्रमथ[5]।
हथ प्रमथथ कित न पथथ थित जहिं जुथथ[6]।
थल थल गुथथ[7], थिरात न सथथ थर थर गुथथ।
थंभति न किथथ थिर थिर चिथथ वपु उपलथथ।
थिसल[8] चलथथ धुर्य नमथथ धकतपरं थलथल ॥ १५ ॥

दोहरा

कहिं लगि बरनौ करी[9] ने करी मार इकसार।
मरे हज़ारों सूरमा खेत भयो बिकरार ॥ १६ ॥

ललितपद छंद

उदेसिंह तब्रि चमूं चीर सभि कीनसि वेग बिलंद[10]।
दबटति काटनि डाटति भट बहु सिमरि गुरु सुखकंदं ॥ १७ ॥

---

1. अपनी शुभ रेखा समझी, उत्तम भाग्य समझा 2. पंख 3. शराब 4. कुचलना 5. अच्छी तरह से कुचलता हुआ 6. सैन्य दल खड़े हों 7. कुचलते जाना 8. फिसल कर 9. हाथी 10. तीव्र गति

जहां केसरीचंद खरोवा बान कमान संधाने[1]।
भौंह अमैंठति ऐंचति बलकरि सिंहन कौ हतिहाने[2] ॥ १८ ॥
तहा पहुंच ललकार्यो थिर रहु[3] सिंह अनिक तैं मारे।
सभि को पलटा छिन महुं लैहौं कहां छोभ तूं धारे ॥ १९ ॥
पिख्यो अचानक निकट आइगो तीछन भीछन बाना।
उदे सिंह के सनमुख छोर्यो शूंक्यो[4] सरप समाना ॥ २० ॥
लग्यो ख्रुगीन बिखैं न सर्यो कुछ[5], तेगा[6] तबहि निकारा।
दड़बड़ाइ घोड़े कहु आयहु निकट हांइ करि झारा ॥ २१ ॥
कुंडल सहित शुभति मुख मंडल सिर को काटि उतारा।
धरि पर धर[7] ततकाल पर्यो गिर, महा शत्रु को मारा ॥ २२ ॥
सिमरि बाक गुर को उर तिस छिन नेज़े सीस परोवा।
ले हटि चल्यो गयो गढ़ि अंतर हाहाकार सु होवा ॥ २३ ॥
मनहु अंध भे सकल पहारी पीछे मर्यो बिलोका।
बान कमान सहित धर पर धर, बध्यो[8] सभिनि मैं शोका ॥ २४ ॥
निकसि खालसा लोहगड़ी ते हेला मारि उतारा[9]।
मुहकम सिंह पहूंच्यो छिन महिं खड़ग दुरद[10] कै झारा ॥ २५ ॥
कटी सुंड बावर हुइ भाग्यो ओर सतुद्रव जाई।
हटे पहारी हारी धीरज, सिंहनि मार मचाई ॥ २६ ॥
हिंमत सिंह साहिब सिंह पहुंच, अरे जु काटे जोधा।
मनहुं शेर निरभै बिचरंते रकत नेत्र करि क्रोधा ॥ २७ ॥
नाहर सिंह अरु शेर सिंह जुग तरवारैं चमकाई।
चलहि तुफंग हज़ारहुं रिपु की सतिगुर भए सहाई ॥ २८ ॥
निरभै खालसा शत्रुनि दल महि घायल लेति उठाई।
बधहि अग्र रुध[11] करहि पहारी, फतें जंग ते पाई ॥ २९ ॥
भयो खेत दारुण बहि श्रोणत जहिं लोथैं समुदाई[12]।
काक ग्रिझ आमिख[13] भखि कंकन[14] ब्रिंद जोगनी आई ॥ ३० ॥
कलगीधर बिकसति कहि बातनि बैठहिं पिखहि तमाशा।
गज सों भिड़नि. केसरी मारनि इह सिंहन की आशा ॥ ३१ ॥

---

1. चिल्ला चढ़ा कर 2. मारने के लिए 3. ठहर जाओ 4. फुंकारा 5. उससे कुछ काम न बना 6. बड़ी दोधारी कृपाग 7. पृथ्वी पर धड़ 8. बढ़ा, वृद्धि हुई 9. हमला कर दिया, आक्रमण कर दिया 10. हाथी 11. रोकते हैं 12. शव-समूह 13. मज्जा 14. एक मांसाहारी पक्षी

कहकह हसी कालका कड़की श्रोणत पान कराली[1]।
लाखहुं छुटे तुफंग तड़ाके सूरनि के मुख लाली ॥ ३२ ॥
घायल भए रुधर पट लपटे, फूले मनहुं पलासा।
इक घूमति जनु मादिक खाइओ, भए समूह बिनाशा ॥ ३३ ॥
टूटे चरन, फूटी किस छाती, को कट ते कटि धारा।
कान कटे, किह पान[2] कटे, किह पेट फटे, कट फारा ॥ ३४ ॥
नैन फूटि को अंध भयो भट, जंघ कांहु की फूटी।
केचित श्रोणत निचुरति बिचरति किसकी मुंडीआ[3] टूटी ॥ ३५ ॥
परे करे 'हैं' को जल जाचति, को कातुर डर भागा।
चीर फटे, किह बांहु फटी, किह सिर नांगे बिन पागा[4] ॥ ३६ ॥
पटहे[5] दुंदभि, ढोल फटे गन गुलकां[6] लगि लगि फूटे।
गिरे तुरंगम, भंग भए गन, को सऊर महिं छूटे[7] ॥ ३७ ॥
गिरी तुफंग खड़ग परे गन सेले बान कमाना।
कातुर नर उर बिदरति[8] हेरति, अस माचा घमसाना ॥ ३८ ॥
वीरन के मन हौस[9] रही नहिं मिलि मिलि शसत्र प्रहारे।
वागे लाल फाग जनु खेलति गाइं मनहुं 'किय मारे' ॥ ३९ ॥
हाथ तुफंग गहीं पिचकारी, मूठ गुलालन सेले।
निकसी मिझ[10] अंबीर धरयो जनु, प्रेम करे बहु मेले ॥ ४० ॥
थकत भए भट पौढे केतिक लोथ पोथ पर कोए।
भूम निहाली लाल डसी[11] जनु प्रीत करे करि सोए ॥ ४१ ॥
औंधे, त्रियक[12] परे को सूधे भले धूल अरु लोहू।
कूकर जंबुक बोलति डोलति खाइ अघावन होहू[13] ॥ ४२ ॥
सूरनि परखति हूरनि बिचरति पिखि पिखि वरहिं उताला[14]।
खंजन लोचन अंजन अंजति करहिं शिंगार बिसाला ॥ ४३ ॥
मंजत मुख रंजत निज बर को हास बिलासन संगा।
महिंदी करनि अरुन करि चरनन, तरुनि हरन मन अंगा ॥ ४४ ॥
सुंदर छबि मंदर ससि बदनी, कंचन गौरी रंगा।
तुरत, बिमान चढावहिं बीरनि करहिं सपरशन अंगा ॥ ४५ ॥

---

1. भयानक कालिका रक्त पान करती है 2. हाथ 3. शीश 4. पगड़ी 5. बड़े ढोल 6. गोलियाँ 7. मुक्त होकर घूम रहे हैं 8. फटते हैं 9. अरमान अभिलाषा 10. मज्ज 11. बिधी हुई है 12. टेढ़े 13. तृप्त हो रहे थे 14. शीघ्र

दारुन[1] कर्‍यो निहारन रन को भीम चंद मति मंदे।
सातों सुधां भूल गी ततछिन बाज्यो लोह बिलंदे[2] ॥ ४६ ॥
पिखि हंडूरीआ सहि न सकै बज बान कमान चढाई।
सनमुख भयो जंग के आवति छोरे सन समुदाइ ॥ ४७ ॥
कंचन ज़ीन कीनि तहिं परखनि साहिब सिंह सु जोधा।
तुरा पवाइ तुपक तकि मारी हेरति रिपु को क्रोधा ॥ ४८ ॥
हुइ घाइल ततकाल गयो हटि उर इंकार बिनाशा।
पिखि गुलेरीए[3] त्यागी धीरज ह्वै न प्रान की आसा ॥ ४९ ॥
रह्यो कटोची बहु पछुतावति, मंडसपति[4] कर मौनं।
जंमूपति आदिक बिसमाए—भयो काज इह कौन ॥ ५० ॥
सैना जित कित मरी परी गन, जीवति भई बिहाला।
कहां भयो, इह किनहिं सहारे, लोथ लोथ[5] पर जाला ॥ ५१ ॥
घाइल होए होइ हज़ारहु परे सिवर[6] महिं जाई।
मारन दुरग भरोसा धरि के प्रान दए रन आई ॥ ५२ ॥
मीए राव ब्रिंद जे राण सिंहन घने खपाए।
लरति बित्यो दिन, हटि पुरि गमने जबि सूरज असताए[7] ॥ ५३ ॥
जाइ सिवर महिं करी संभारन, शून भयो जनु जाना।
कितिक संबंधी दास मुसाहिब जम घर कीनि पयाना ॥ ५४ ॥
सागर शौक परे तबि सगरे बाइस धारनि केरे[8]।
सिमरि सिमरि गुन बहु पछुताए लोचन असूंअनि गेरे ॥ ५५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे रुते 'गज और केसरी चंद बध प्रसंग' बरननं नाम सपत बिसंती अंशु ॥ २७ ॥

---

1. कठोर, निर्दय 2. बड़ा, ऊँचा 3. गुलेर रियासत का राजा 4. मंडी का राजा 5. शव पर शव 6. शिविर 7. अस्त हुआ 8. बाईस धाराओं के

अंशु २८

भीम चन्द प्रसंग

दोहरा

सिंह संभारे खालसे मरे सु दीने दाह।
घाइल की सेवा बिखै लागे तवहि जराह ॥ १ ॥

ललितपद छंद

उदेसिंह वड वीर वहादुर सीस केसरी चंद।
नेज़े महिं परोइ ले गमन्यो रिदै अनंद बिलंद[1] ॥ २ ॥
तज्यो दमदमा सतिगुर उतरे देख्यो जुध तमाशा।
सुंदर मंदिर आन थिरे तबि सिख सेवक चहुं पासा ॥ ३ ॥
उदेसिंह इतने महिं पहुंच्यो सतिगुर फते बुलाई[2]।
पलंघ पास रिपु को सिर गेर्यो हेरति भे समुदाई ॥ ४ ॥
काक पंख[3] अर बानन कुंडल बहुत मोल के मोती।
भाल बिसाल, बिलोचत मुंद्रित, मूछ शमश[4] दुति होती ॥ ५ ॥
पनही सहित चरन सतिगुर ने राखे धरन टिकाई।
बैठे हुते प्रयंक रुचिर[5] पर जुगम जंघ लटकाई ॥ ६ ॥
पर्यो पिख्यो सिर, पनही जुति पग ठुकरायहु, बच भाखा[6]।
महां दुशट इहु सिंहनि शत्रु भले जुधि महिं राखा[7] ॥ ७ ॥
उचित मारिबे मार्यो अरि को इम सभ दुशट निबेरो।
उदे सिंह कर जोरि बखाना 'आप प्रताप उचेरो' ॥ ८ ॥
इतने महिं बचित्र सिंह पहुंच्यो गुर पद बंदन ठानी।
फते बुलाइ वाहिगुरु जी[8] की हुते जि सिख तिस थानी ॥ ९ ॥
साहिब सिंह हिमत सिंह आयो मुहक्कम सिंह सुजाना।
इन ते आदि आइ किय दरशन करि उर अनंद महाना ॥ १० ॥

---

1. अत्यधिक आनंदपूर्वक 2. प्रणाम किया 3. बालों के पट्टे 4. दाढ़ी 5. सुखदायक पलंग पर 6. वचन उच्चारण किया 7. भाव—मार लिया 8. परमात्मा का नाम लेते हुए गुरुदेव को प्रणाम किया

गज की बात कही तबि सगरी 'इम दल रिपुनि खपायो।
दुती[1] दिशा ते हुतै खालसा गज़ब तिनहु पर आयो॥ ११॥

प्रभु जी सुनहुं गिरीशनि सैना जित कित परी सथारा[2]।
मनहुं ब्रिंद खाती मिलि इक थल कानन को कट डारा॥ १२॥

बध्यो[3] त्रास कातुर बहु भाजे, अर्‌यो मार करि दीना।
गिरपति उर उतसाह हार करि जनु दंतनि त्रिण लीना[4]॥ १३॥

इत्यादिक सभि सिंह सुनावति आनंद को उपजंते।
क्रिपा द्रिशटि को देखे सतिगुर सभि पर खुशी करंते॥ १४॥

जिन जिन के तन धाइ लग्यो तबि साल पत्र[5] तिन दीना।
सभि के तन की पीर हरी प्रभू श्रम ते भए विहीना॥ १५॥

दुरग बिखै जो हुते घाव जुति सभि के पास पठायो।
गुर करुना ते संकट नाश्यो सभि कै सुख उपजायो॥ १६॥

प्राति होति लौ घाव मिले सभि क्रिपा आपनी कीनी!
जो रण बिखै मरे तबि लरिकै मनो कामना दीनी॥ १७॥

निशकामी को मुकति दई तबि बंधन सकल बिनाशे।
सहि कामी को सुरग भोग दे अनिक विधिनि सुख रासा॥१८॥

उत गिरपतिनि[6] सुनहु जिम बीती सिवर[7] समुह प्रवेशे।
पाइ पराजै मर्‌यो केसरी उपज्यो शोक विशेशे॥ १९॥

भीम चंद निज डेरे बैठ्यो महां बिसूरत[8] मानी।
लरे महां कुछ काज सर्‌यो नहिं, भ्रात सैन गन हानी॥ २०॥

बाई धारन के नर आए प्रजा सहज गन जोधा।
जमतुला भाऊ लरि करि मर्‌यो जुध महिं क्रोधा॥ २१॥

आज गिरीशनि सभि की मसलत[9] मर्‌यो केसरी चंद।
गिरपति महिं नहिं तिसके समसर जोधा जुध बिलंद[10]॥ २२॥

घाइल भयो हंडूरी आयो मरिबे ठाकुर राखा।
अबि गुबिंद सिंह के संग लरिकै कहां बिजै[11] अभिलाखा॥ २३॥

---

1. दूसरी ओर से 2. बिछी पड़ी है, गिरी पड़ी है 3. वृद्धि हुई 4. हार मानने का प्रतीक 5. एक पत्ता विशेष जिस के लगाने से घाव ठीक हो जाते हैं 6. पहाड़ी राजागण 7. शिविर 8. दुःख 9. मंत्रणा 10. महान् 11. विजय, जीत

इम बिसूरतो शोकति[1] बैठ्यो आयो निकट कटोची।
उर हकार सिपर खग कट सों देख्यो भूपति मोची[2] ॥ २४ ॥
जमूंपति, मंडसपति[3] बोलति अरु गुलेरीआ[4] आयो।
इत्यादिक राजे अरु राणे मेल भयो समुदायो ॥ २५ ॥
कैंठल कुलू भुटंती[5] सगरे मिलिकै शोक उपायो।
अग्रणीय जसुवारी हति भा, लर्‌यो महां बल लायो ॥ २६ ॥
समुख बिलोकि सिंह इक आवति खपरा[6] अरि तक मारा।
लग्यो न तिस के खड़ग चलायो सिर ततकाल उतारा ॥ २७ ॥
रहे बिलोकति सगरे जोधा कछू जतन नहिं होवा।
सिर परोइ नेज़े महिं गमन्यों, धर धर धरि पर सोवा ॥ २८ ॥
भीम चंद द्रिग ते जल चाला सुनति हितू को हाला।
हेरि अपर सभि असूआं गेरति बरध्यो[7] शोक बिसाला ॥ २९ ॥
नीचे मुख्र करि सोचति हैं चित, लाज सभिनि पर छाई।
मौन रहे करि मरे संबंधी बहुर पराजै पाई ॥ ३० ॥
सभि की दिशि अविलोकि कटोची उर हंकारति भाखा।
रण की गति द्वै बिजै पराजै विदत अहै सभि लाखा[8] ॥ ३१ ॥
मरे सुभट को शोक जि करनो तौ क्यों करहु चढाई।
क्यों रण घालो गोबिंद सिंह सो जिसकी घांक महाई[9] ॥ ३२ ॥
होति प्राति के देखहु संघर मैं करिहौं सभि आगे।
तजौं न सिंहनि को मैं ज़ीवति, जे नहिं जैं हैं भागे ॥ ३३ ॥
मारन मरण काज रण मांही, शोक न हति सुहाई।
जो उतसाह धरहि सो जीतहि, भीरु डर भजि जाई ॥ ३४ ॥
उचित न तुम को शोक करनि अबि बैरी सिर पर ठांढे[10]।
बचे जु मरिहों रोदति करते, जै उतसाह कि बाढे ॥ ३५ ॥
भीमचंद धीरज कुछ कीनी सुंजसु सभिनि कौ हाना[11]।
मरे केसरी ते हटि जै हैं, इह भी नीक न माना ॥ ३६ ॥
जंग समुंद्र जहाज चढें हम तूं केवट करि पारी।
नांहि त बीच डूबते लखीअति बन सहाइ बल भारी ॥ ३७ ॥

---

1. दुःखी और पीड़ित 2. विचार मग्न था 3. मंडी का राजा 4. गुलेर रियासत का राजा 5. रियासतों के नाम 6. तीर 7. बढ़ा 8. सभी जानते हैं 9. महान् 10. बढ़ने से 11. नष्ट हो गया है

मीए[1] अरु राणे बहु मारे अधिक बहादर जोई।
किस भरोस मैं उर उतसाहूं तुझ बिन अपर न कोई ॥ ३८ ॥
बाई धार शोक हुइ बासा[2], नहिं अनंदपुरि छूटा।
निफल भयो उदम सभि केरा हिरदै धीरज टूटा ॥ ३९ ॥
कौन बदन ले निज पुरि जै हैं श्री गुरु रह्यो मवासा[3]।
धन बिनस्यो, संबंधी म्रितु भे, रही न कारज आसा ॥ ४० ॥
बिदतहि सगरे देश ब्रितंता[4] जंग पराजै पाई।
यांते लरन मरन ही आछि अपर[5] न बनहि उपाई ॥ ४१ ॥
मंडसपति[6] मन बिखै विचारै—समझहि नहिं अग्यानी।
जे अवि कहौं, शोक ते रिसि है भली न मानहिं मानी[7] ॥ ४२ ॥
मिले रहैं अर हेरैं क्रित इन, किम हारे गुर पूरा।
शाहजहां सो जिनहुं पितामा लरति रह्यो बडसूरा ॥ ४३ ॥
श्री नानक नव खंडन माही सिख करि जसु विसतारा।
तिन गादी पर बिदत थिर्यो इहु गुर गोविंद सिंह भारा ॥ ४४ ॥
रण प्रिय, रण को भैरव[8] करता, अनिक बार अरि मारे।
अवि लौ इन के सनमुख ह्वै करि नहिं खर[9] तीर प्रहारे ॥ ४५ ॥
इत्यादिक चित समुझि मौन करि बैठि रह्यो बिच भ्राता।
अपर सकल रण कर्यो न चाहहिं भयो समूहन[10] घाता ॥ ४६ ॥
इक घमंड चंद बीर कटोची रही हौंस[11] रण केरी।
भीमचंद उर धीरज धरि करि उठे सरब तिसु बेरी ॥ ४७ ॥
डेरे महिं जहिं कहिं गन घाइल परे पीर को पावैं।
केतिक रुदति संबंधी मरिगे मिलि मिलि शोक उपावैं ॥ ४८ ॥
गई गिरनि महि सुध 'गन मरिगे'[12] धर्यो पीटना भारी।
केश उखारति रुदति जहां कहिं ऊची धुनि ते नारी ॥ ४९ ॥
जसुवारी[13] के सुधि जबि पहुंची गन रानी मिलि रोवैं।
हाहाकार जहां कहिं उचरैं द्रिग जल ते पट धोवौं ॥ ५० ॥

---

1. कांगड़ा के राजपूतों को मियां कहा जाता है 2. बाईस धाराओं के राजागण में शोक की लहर व्याप्त हो गई 3. स्वतन्त्र, मुक्त, बाग़ी 4. वृत्तान्त 5. दूसरा 6. मंडी के राजा 7. मेरी बात नहीं मानेंगे 8. भयानक 9. तीक्ष्ण 10. सामने 11. हवस, चाहना 12. समूह ही नष्ट हो गए 13. जसवारियों को (जब सूचना मिली)

कहिं लौ कहौं शोक वधि गिर गन रोदति बाइस धारा ।
भीमचंद को कहैं मंदमति देति हज़ारहुं गारा[1] ।। ५१ ।।
इम मसलत[2] करि 'लरैं प्राति पुन करि घमंडचंद आगे' ।
खान पान कुछ करिकै सुपते श्रम ते नाहिन जागे ।। ५२ ।।
पहुंची सुधि सतिगुरु निकट इहु करे सिंह सवधाना ।
वहिर लोहगड़ ते करि मुरचे हतहु शत्रु बिधि नाना ।। ५३ ।।
आलम सिंह आदि वड जोधा करी अधिक तकराई[3] ।
दूर दूर करि मुरचे बंदी जहिं बैठै समुदाई[4] ।। ५४ ।।
सालपत्र[5] ते घाइल सुंख लहिमिले घाव ततकाला ।
सतिनाम को सिमरनि करिते जो नित रखहि सुखाला ।। ५५ ।।
इम दुइ दिशि ते खान पान करि जामनि जबहि बिताई ।
कुछक गरब सिहन के उपज्यों हते शत्रु समुदाई ।। ५६ ।।
सो न सह्यो गुर अवगुन मन को, जागे दुहिं दिशि जोधा ।
संख नगारे वजे घने तत्रि लरन हेतु वधि क्रोधा ।। ५७ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'भीमचंद प्रसंग'** बरननं नाम अशट विंसती अंशु ।। २८ ।।

---

1. गालियाँ 2. मंत्रणा 3. मज़बूती 4. समूह 5. घाव भरने के लिए एक पत्ता विशेष

अंशु २६
जंग प्रसंग

दोहरा

संघर को उतसाह उर जोधा बने सुचेत ।
सौच शनाने सकल तन त्यारी बन रन हेतु ।। १ ।।

भुजंगप्रयात छंद

गुरु सिंह भेजे उदे सिंह आदा[1] । बजे दुंदभी धौंस ते दीह[2] नादा ।
करी कोट के अग्र मैं ओट गाढी । पदाती[3] सबे सिंह ह्वै चौंप वाढी ।। २ ।।
उतै ज़ीन पाए पहारीन सैना । भए त्यार सारे चले जुध ऐना ।
कटोची बडो ओतसाहं धरंता । कराचोल[4] पायो गरे ओजवंता ।। ३ ।।
कसी ढाल कंधे बडी मोल केरी । भरे तीर भाखा पिखे ताहि बैरी ।
लियो चाप भारी बडो डील जांही । वली दीह वारो चल्यो जंग मांही ।। ४ ।।
मिल्यो भीम चंद दई धीर बोला । पिखो जुध मेरो करौ नाहि हौला[5] ।
रहो पीठ पै ढीठ ह्वै सैन प्रेरो । पलावै नहीं ज्यों तथा घेर फेरो ।। ५ ।।
इम भाखि के चांप आपं[6] टंकारा । सरो संधिकै चौंप संगे प्रहारा ।
लए टोल जोधान के बोलि ऐसे । करौ आज काजं जसं पाइ जैसे ।। ६ ।।
पराजै भई[7], मैल लागी महानी । पखारौं भले बीर कै ओल पानी[8] ।
हटौं न पिछारी, चलौं सामुहाई[9] । रहैं जौन आगे महा द्रब पाई ।। ७ ।।
मरै जंग मैं देव लोकैं पधारैं । रहैं[10], कीरति ले भले शत्रु मारै ।
करे त्यार तोड़े समूह धुखाह । बरूदं सु गोरो पलीते मिलाए ।। ८ ।।
गजं संग ठोकी धरी कंध चाले । गुरु की गड़ी को गए आलवाले[11] ।
पदाती[12] सऊरं मिले संग जोधा । पराजै भई ते रिदै धारि क्रोधा ।। ९ ।।
इते सिंह सारे बरे मोरचा में । तुफंगैं कसी डारि गोरी सु तां मैं ।
धुखे पुंज तोड़े नली आछ होई[13] । जड़े हैं कला पै लियो मोड़ सोई ।। १० ।।

---

1. आदि 2. दीर्घ 3. पैदल 4. तलवार 5. चिंता न करो 6. अपनी 7. पराजय हुई 8. शूरवीरों के बल रूपी पानी से उन को धोएंगे 9. सामने 10. बच रहे, तो 11. घेरा डाले 12. पैदल 13. तोड़ों को आग लगने के पश्चात् गुल निकल आया

पलीते जमाए सिरंपोश खोले। रवांदसत[1] कीनी तजे उग्र ओले[2]।
करी शिसत[3] आगे जहां शत्रु आवैं। डंभे तातकालं तड़ाके उठावैं ॥ ११ ॥
तुफंगैं चली आवते सामुहाई[4]। करे वेग गोरी महां शूंक[5] पाई।
आजानं सुजानं तजै जौन कौना। लगी एक चाहै हतै प्रान तौना[6] ॥ १२ ॥
हलाहाल बोले कर्‌यो हल धाई[7]। मनो सैल हुं पै घटा ढूकि आई।
पलीते छटा ज्वाला माला उठाले। चले पुंज गोरी कि औरे[8] कराले ॥ १३ ॥
उठी धूम धारा चमूं ओर होई। भयो अंध धुंध डरे भाज कोई।
तड़ाके मनहुं गाज ह्वै बार वारी[9]। गिरैं ब्रिछ जोधा मची मार भारी ॥ १४ ॥
उभै ओर ते ज्वालवौना[10] प्रहारैं। शिताबी[11] कसैं, हाथ पै टेकि मारैं।
लगैं अंग मैं तोड़ फोड़ बिहंडे। गिड़ै दाड[12] भू मैं फुटे तुंड मुंडैं ॥ १५ ॥
हुते मोरचे अग्र वंधे जिथांई[13]। घनो लोह बाज्यो तहां घूम पाई।
भयो ढोइ[14] भारो, जुटे बीर बंके। लगे ढोल धौसानि पै ब्रिंद डंके ॥ १६ ॥

ललितपद छंद

ललकारे भट पुंज कटोची कित कातुर हुइ त्रासे।
कहां सिंह थोड़े अबि रहिगे पहिले जंग बिनासे ॥ १७ ॥
हेल[15] घालि अबि लेहु मोरचा दिहु निकाल बल पायो।
दुगन दरब को मनसब[16] करिहैं ब्रनहु सूर जसु छायो ॥ १८ ॥
कह्यो घमंड चंद भट गन सो अग्र आप ही चाला।
खपरा तीखन भीखन लीनसि चांप कठोर बिसाला ॥ १९ ॥
ऐंचि ऐंचि सिंहन के सनमुख छोरहि बान महांने।
सुभट बली के कर ते चलि चलि बीधति पार पराने ॥ २० ॥
लगे कितिक सिंहन के जबिहुं आलम सिंह बिलोके।
हेला घालि धकेलति बल ते रहे न क्यों हूं रोके ॥ २१ ॥
ज़ोर मोरचे पर बहु दै कै सिंह निकासनि कीने।
को मरि गए, भए को घाइल, किनहुं ओट गढ लीने ॥ २२ ॥
सहि न सक्यो आलम सिंह जोधा कसि बंदूक संभारी।
चंचल तुरा नचावति गवन्यो तकहि दाव मति भारी ॥ २३ ॥

---

1. चला दी 2. आश्रय वाले मोरचों को त्याग कर 3. निशाना बाँधा 4. सामने आते ही 5. शूं-शूं की ध्वनि उत्पन्न की 6. उस के 7. हंगामा हो रहा था कि चल कर आक्रमण किया जाए 8. ओले 9. बार बार 10. बंदूकें 11. शीघ्र 12. धम का नाद करता हुआ 13. जहाँ 14. टक्कर, युद्ध 15. आक्रमण 16. पदवी

इत उत हय को फेरि नेर किय पिखि कटोच लल्कारा।
मूढ खरौ रहु लेहु अबै फल, मैं सिंहन को मारा ॥ २४ ॥
करति कुवाइद[1] फेर्‌यो घोड़ा तकि शत्रु तन मारी।
धुखति पलीता उठ्‌यो तड़ाका गोरी शूंकि[2] सिधारी ॥ २५ ॥
लखि घमंड चंद तुपक तकी मुहि चंचल कीन तुरंगा।
बच्यो आप जम मुख ते मानो गुलका[3] लगी न अंगा ॥ २६ ॥
हय की ग्रीव लगी दड़ गिर गा उतरि कटोचि संभारा।
भयो पदाती[4] तऊ चोप गहि धरि धनु महिं सर मारा ॥ २७ ॥
भीम चंद अविलोक्यो हय म्रितु भयो आप कुछ आगे।
सभि बीरनि को प्रेरनि कीना पहुंच्यो देर न लागे ॥ २८ ॥
अर्‌यो नरिंद घमंड चंद रण हूजहि सकल सहाई।
किसहुं दिलासा[5] किसहूं रिस करि आगे धरि समुदाई ॥ २९ ॥
इत ते उमडि खालसा सनमुख तजे तीर अरु गोरी।
हेले पर हेला[6] बड घाल्यो रुपे कोप दुइ ओरी ॥ ३० ॥
पर्‌यो ज़ोर पुन सिंहन केरा लागे फिरन पहारी।
तबि ललकार कटोची बैठ्‌यो ले कुछ ओट अगारी ॥ ३१ ॥
तरकश ते सर काढि बखेरे, उठौं न हट हों पाछे।
तबि गुलेरीआ आदि सैलपति[7] अर्‌यो देखि करि आछे ॥ ३२ ॥
लै लै सुभट परे सिंहन पर भार मची इक सारा[8]।
गिरहिं मरहिं दड़ परहि धरा पर, घाइल करति पुकारा ॥ ३३ ॥
दीरघ बल घाल्यो सिंहन पर ठहिर न सकहिं जुझारे।
तज्यो मोरचा बरे[9] लोहगड़, को थिर द्वार अगारे ॥ ३४ ॥
सरबबहुर निकट करि हेला घालण, रुप्यो घमंडै चंद।
बान सड़ासड़ छोरति सनमुख ढुके आनि भट ब्रिंद ॥ ३५ ॥
सरब गिरीश्वर भीम चंद जुति ओरड़ि[10] गढ पर आए।
सेले, तोमर, तीरन, तुपका मारि मारि बरखाए ॥ ३६ ॥
करे सिंह घाइल बहु तबिही थिरे लोहगड़ मांही।
निकसन देति न वहिर कटोची सुभट हज़ारहुं पाही ॥ ३७ ॥

---

1. उछल कूद करवा कर 2. फुंकराती हुई 3. गोली 4. पैदल 5. स्नेह के साथ 6. हमले पर हमला 7. पहाड़ी राजागण 8. एक समान 9. दाखिल हुए 10. उमड़ और उछल कर आ गए

जहिं जहिं मरे परे नहिं दीखहिं कूकर जंबुक खाए ।
हड़ हड़ हसैं मसान जुध थल धुखि धुखि उठि समुदाए ॥ ३८ ॥
कहौं कहां लगि बड घमसाना भयो जुध तवि घोरा ।
घालि घमंइ[1] घमंड चंद बहु, लजति मुखि नहि मोरा ॥ ३९ ॥
भूत प्रेत नाचति अरु गावति मन भावति रन हेरा ।
काक कंक[2] की कूकैं कूकी सुनीअति भीम बडेरा[3] ॥ ४० ॥
ग्रिध ब्रिध मंडरावति पुंजें श्रोणत बहि बहु चाला ।
फटे निशानन के पट फररे[4] रहि गए बांस बिसाला ॥ ४१ ॥
त्रिपत भए जोधा तबि लरि लरि करि करि ओज बडेरा[5] ।
मरे हज़ारहु घाइल ह्वै के, थक्यो बोल बहु टेरा[6] ॥ ४२ ॥
परे शसत्र गन बिखरे जहिं कहिं तोमर तीर तुफंगा ।
खड़ग, सिपर[7], जमधर बहु खंजर कितिक म्रितक तन संगा ॥ ४३ ॥
मरे तुरंग परे जुति ज़ीननि तर ऊपर[8] गन लोथां[9] ।
कितिक सऊर मरे असू छूछे दौरति पग ते पोथा[10] ॥ ४४ ॥
सगरे बासुर मची लराई भा तबि संध्या काला ।
उठन लग्यो जबि न्रिपत कटौची छुटी तुफंग कराला ॥ ४५ ॥
बच्यो मरण ते घाइल ह्वै करि पुन ततकाल पलायो ।
सने सने तबि हटे पहारी थकति लोह बरखायो ॥ ४६ ॥
भीमचंद मुरझावति मूरख हटि पहुंच्यो निज डेरे ।
संग घमंड चंद ले घाइल चिंता धरति घनेरे ॥ ४७ ॥
सगल चमूं जीवति जो बच रहि थकत होइ करि आए ।
घायल केतिक नीठ नीठ करि[11] पहुंचे दुख बिकुलाए ॥ ४८ ॥
श्रोणत संग रंग महिं रंगे तन पर जम्यो बिसाला ।
परे कराहैं मार मची बहु करि पग टूटै कराला ॥ ४९ ॥

इत सभि सिंहनि करे संभालनि घाइल मंचन पाए[12] ।
मरे जितिक सुर लोग पधारे दाह करे इक थाएं ॥ ५० ॥
पौर[13] लोहगड़ बजहि नगारा सतिगुर फते बुलावै[14] ।
जिन के मोह न शोक कहां हुइ, सिखी सदा कमावैं ॥ ५१ ॥

---

1. घमसान युद्ध करके 2. एक मांसाहारी पक्षी 3. बहुत भयानक 4. कपड़े लहराते हैं 5. बड़ा बड़ा 6. बुला बुला कर 7. ढाल 8. ऊपर नीचे 9. शव 10. शव-समूह 11. कठिनाई से 12. चारपाइयों पर डाला 13. द्वार पर 14. विजय का जयघोश करते

श्री कलगीधर के डिग गमने केतिन दरशन कीना ।
अपर लोहगढ़ महिं दिढ बीसहि गुर पग महिं चित दीना ।। ५२ ।।
जुध बारता सरब सुनाई आज कटोची रोहा[1] ।
पुंज हेल घाल्यो दुहि दिशि ते बज्यो लोह सों लोहा ।। ५३ ।।
रह्यो प्रवल जबि उठनि लग्यो तहिं गुलका[2] लगी कथिाईं[3] ।
जोधा पुंज संग ले गमन्यो गए मूढ पछुताई ।। ५४ ।।
प्रभुजी घाइल सिंह भए वहु, सालपत्र[4] पठवावौ ।
क्रिपा करहुं तन पीरा हरीअहि होइ सहाइ बचावौ ।। ५५ ।।
जथा जोग सभि को दे धीरज सतिगुर निकट बिठाए ।
हित घाइल अरु सभि सिंहन हित वसतु समूह पठाए[5] ।। ५६ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे चतुरथ रते **'जंग प्रसंग'** बरननं नाम एकऊन त्रिसंती अंशु ।। २९ ।।

---

1. क्रुद्ध हुआ 2. गोली 3. कहीं 4. एक विशेष पत्ता जिससे घाव ठीक होते हैं 5. प्रत्येक प्रकार की वस्तुएं भेज दीं

अंशु ३०

खाल्सा जीत प्रसंग

दोहरा

निस महिं मिले गिरीश सभि जहिं कटोच महिपाल ।
भीम चंद भी तहिं गयो राजे राणे जाल[1] ।। १ ।।

चौपाई

पंमा आदि वज़ीर अनेक । मिले सिआणे[2] सुमति विवेक ।
सभा बिसाल समूह लगाई । झार मसालां बहु ज्वलताई ।। २ ।।
भीम चंद मतिमंद गुमानी । सभिनि सुनावति गिरा बखानी ।
अनिक प्रकारन ते लर रहे । नहीं मनोरथ क्योंहू लहे ।। ३ ।।
दिवस मास ते अधिक बिताए । लरति रहे गन सुभट खपाए ।
राजनीति के चतुर उपाइ । सकल बिचारहु चित को लाइ ।। ४ ।।
बढो बहादर केसरि चंद । भाऊ जमतुला सु बिलंद[3] ।
दोनहुं जोधा मरे जुझारे । मीएं अरु राणे[4] गन मारें ।। ५ ।।
कहिं लौ गिनीअहि सभि तुम जानो । सर्‍यो न कारज मरे महानो ।
शाम, दाम, अरु भेद न भयो । दंड उपाइ चतुरथो कियो ।। ६ ।।
इह तैं ते पाछं बनि आवति । सो हम प्रथम कीनि मन भावति ।
कुछ थोरो नहिं भयो बिचारो । पसर्‍यो शोक देश गिर सारो ।। ७ ।।
प्रथम करनि जो चहीयति तीन । सो अबि करहु बिचार प्रबीन ।
दंड उपाइ त्याग करि अबै । शाम[5] आदि को करीअहि सबै ।। ८ ।।
इतो जुध करि क्रुध विरुधे । चहुं दिशि ते आनंद पुरि रुधे ।
गुर गोबिंद सिंह को नहिं चिंता । आनि मिलहि सिख बहुर बिअंता[6] ।। ९ ।।
नहिन चमूं की चाहि बिसाला । बिना हकारे आवति जाला[7] ।
बहुर दरब की कमी न कबिहूं । चहुं दिशि ते आनहिं सिख सभिहूं ।। १० ।।

---

1. समूह 2. समझदार 3. महान्, बड़ा 4. पहाड़ी राजा और सरदार 5. सुलह, समझौता 6. अनंत 7. समूह, बहुत अधिक जन-समूह

रही लराई लखहु घनेरी। नहिं कायल[1] होयसि किस बेरी।
नित उतसाह अधिक बिरधावा[2]। क्रिम अनंदपुरि चहौं छुटावा ॥ ११ ॥
पातिशाह की लाखहु अनी[3]। जित कित ते मिलि आवहि घनी।
भीम बिसाला तोप संबूहा। घेरि चहूं दिशि घालहिं हूहा[4] ॥ १२ ॥
तिन के संग भि लरति न हारै। अनिक सिंह रण करि मरि मारै।
अंन आदि जे ह्वै न प्रवेशन। दिढ घेरा घालहि अविशेशन[5] ॥ १३ ॥
कई मास महि काइल होइ। तौ अनंदपुरि त्यागै सोइ।
बिना शाहु की सैन घनेरी। नहिं सरि होइ, भले मैं हेरी ॥ १४ ॥
अबि तो हटनि जंग ते जोग। मरे ब्रिंद ही घायल लोग[6]।
श्रमत सपूरन सैन बिसाला। लरत्यो बीत गए चिरकाला ॥ १५ ॥
हडूंरी अरु चंदु घमंड। घाइल परे बीर बरबड[7]।
कौन अग्रणी हुइ अबि लरै। तऊ लख, कारज नहिं सरै ॥ १६ ॥
ग्वालेरी[8] अरु मंडसपती[9]। करि बिचार बोले वड मती।
नाहक जोधा लरि मरवाए। खरच्यो दरब न्रिपन समुदाए ॥ १७ ॥
भयो ब्यरथ को काज न सर्‍यो। तैसे चंद केसरी मर्‍यो।
हटनो उचित बिचारी नीके। इसमैं भलो अहै सभि ही के ॥ १८ ॥
बिनां लरन ते अपर[10] उपाइ। करैं सरब, लें पुरी छुटाइ।
पापी पंमे तबहि उचारी। करहु न चिंता रिदै मझारी ॥ १९ ॥
एक जतन मैं करिहौं ऐसे। छोरिं अनंद पुरि सतिगुर जैसे।
अबि सभि गमनहु निज निज देश[11]। करि अराम को तजहु कलेश ॥ २० ॥
होति प्राति के करीअहु कूच। सभिनि संभालहु जाइ पहूंचि।
इम ही मति घमंड चंद माना। चढि झंपान[12] सु तबहि पयाना ॥ २१ ॥
घाइल अपर सकल निस मांही। आदि हंडूरी टिकहिं सु नांही।
ले ले निज समाज को चलै। धरी मौन मुख ते, नहिं मिले ॥ २२ ॥
जामनि महि गमने दुख लहे। बिखम पंथ गिर गन के अहे।
सावधान जे हुती पदाती[13]। अरु असवार जि हुए न हाती ॥ २३ ॥
सो सभि भीमचंद ने राखे। चलौं प्राति मैं इम अभिलाखे।
खान पान करि केतिक सोइए। को थिर रहे सुचेती होए ॥ २४ ॥

---

1. दु:खी, तंग 2. बढ़ता है 3. सेना 4. हमला, आक्रमण 5. विशेष रूप 6. घोड़ों और व्यक्तियों के समूह नष्ट हो गये 7. बलवान् 8. गुलेर रियासत का स्वामी 9. मंडी का स्वामी 10. दूसरा 11. स्थान, रियासत 12. पालकी, सुखपाल 13. पैदल

तिम ही सिंह लोहगड मांही। केतिक सुपते केतिक नांही।
ज्वालाबमणी[1] रहे चलावति। दूर दूर लौ शत्रु तकावति।। २५ ।।
जबिहूं दोइ घरी निस रही। कूच करन की चित महिं चही।
ज़ीन तुरंगम पर तबि डाले। जे कुंचर तिन हौदा घाले।। २६ ।।
तूशन[2] ही सभि कीनसि त्यारी। तंबू सहति कनात उखारी।
लाद दियो, सो प्रथम पयाने। आप त्यार हुइ थिर्यो सथाने।। २७ ।।
त्रसति तफंगैं सभि कसवाई। खरो रह्यो अरणेदैं ताईं[3]।
सगरी वसतु संभालि चलाइ। आप चढ्यो धौंसा वजवाई।। २८ ।।
तबि सुधि भई लोहगड आइ। चले पहाड़ी लाज गवाइ।
ततछिन ज़ीन हयनि पर डाले। भए अरढनि तुपक संभाले।। २९ ।।
उदेसिंह ते आदिक जोधा। साहिबसिंह हिमतसिंह क्रोधा।
मुहकमसिंह ध्वायो घोरा[4]। आलमसिंह चल्यो रिपु ओरा[5]।। ३० ।।
प्रथम सैंकरे ही मिलि गए। ज्वालावमणी[6] दागति भए।
बहुर हज़ारहुं ह्वै गे सिंह। जनु गज दल पर दौरे सिंह।। ३१ ।।
मिलत्यों ऐसी मारि मचाई। चलणि दुहेला[7] भयो तिथांई[8]।
भीमचंद पर घाली भीर। छूटी गुलका[9] तोमर तीर।। ३२ ।।
ढाह लीए केतिक तबि घोरे। तजहिं तिसहि जो द्वै करि जोरे।
नांहि त खड़ग प्रहारनि लागे। मच्यो जुध भे आरुन बागे[10]।। ३३ ।।
श्री कलग़ीधर सुनि सुधि सारी। हतैं सिंह भज चले पहारी।
तबि सतिगुर निज पते पठाए। भाजे पीठ न परीअहि धाए।। ३४ ।।
आछे आछे सिख पठाए। जाइ तिनहु मगरे समुझाए।
क्यों नाहक[11] घालहु घमसाना। हटहु प्रभू अस हुकम बखाना।। ३५ ।।
नांहि त भीमचंद के घर लौ। लूटनि मारनि बनहि सु दर लौ[12]।
अबि आगे जानौं नहिं बनैं। भागे को नाहिन रिपु हनैं।। ३६ ।।
वाहिगुरु जी की कहि फते[13]। गरज धुनि ऊँची ते अते[14]।
कितिक तुरंग लूट करि ल्याए। आयुध छीने शत्रु पलाए।। ३७ ।।
हटि आए बड बजति नगारे। पुन सुखेन ही शत्रु सिधारे।
जहिं कहिं पुरि ग्रामन महिं रौरा। पीटन रुदन होति सभि ठौरा।। ३८ ।।

---

1. बंदूक 2. चुप-चाप 3. प्रात:काल तक 4. घोड़े को दौड़ा कर 5. शत्रु की ओर चल दिए 6. बंदूक 7. कठिन 8. वहाँ पर 9. गोली 10. वस्त्र लाल हो गए 11. व्यर्थ 12. द्वार (घर) तक 13. परमात्मा के नाम का जयघोष किया 14. अत्यधिक

भीमचंद सुनि सुनि पछुतावति । चितवति चिंता बहु दुख पावति ।
पहुंच्यो तबि अपनी रजधानी । हौरा[1] भयो बहुत अभिमानी ।। ३९ ।।
इत गुर निकट खालसा आयो । फते पाइकरि बहु हरखायो ।
शसत्रनि सहित सु दरशन देखा । क्रिपा द्रिशटि गुर करी विशेखा ।। ४० ।।
पद अरबिदन पर सिर धरि धरि । थिर्यो[2] खालसा बदन करि करि ।
सभि दिशि देखति प्रभू उचारा । जबि जानहि रिपु को भज हारा ।। ४१ ।।
तबि तिन गैल न पैर कदाई[3] । इही नीति शुभ नरन बताई ।
शसत्र गहे रिपु सनमुख होइ । तिस को प्रिशटी[4] देय न कोइ ।। ४२ ।।
धरम जुध को नित अनुरागा । भले नरनि के मग को लागो ।
सिखी धरहु सिदक[5] नहिं हारहु । सतिनाम जप जनम सुधारहु ।। ४३ ।।
करिहै राज खालसा मेरा । सभिहिनि पर ह्वै बली बडेरा[6] ।
श्री असिकेत कालका माई । हुई है तुमरे सदा सहाई ।। ४४ ।।
इम कहि करि शुभ बचन बिलासा । फते लई करि शत्रु विनाशा ।
घायल सभि होए सवधाना[7] । साल पत्र[8] दे सुख को ठाना ।। ४५ ।।
जुध खालसे को इह पढै । किधौं सुनाइ सुने सुख बढै ।
गुर को सिदक[9] रिदै महिं पावे । जनम मरन की कुमति मिटावे ।। ४६ ।।

पाधड़ी छंद

सतिगुर बिसाल गोबिंद सिंह । तिन सुजसु पढहि कै सुनहिं सिंह ।
बिनती भनंति संतोख सिंह । म्रिग पाप हनन को मनहुं सिंह ।। ४७ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे चतरथ रुते 'खालसा जीत प्रसंग' बरननं नाम त्रिसंती अंशु ।। ३० ।।

---

1. हल्का हो गया, अभिमान नष्ट हो गया 2. स्थिर हुआ 3. कभी भी 4. पीठ 5. विश्वास, निष्ठा 6. वड़ा 7. सावधान हो गए 8. घाव भरने के विशेष पत्ते 9. विश्वास, निष्ठा

अंशु ३१

सिखन प्रसंग

दोहरा

जहिं कहिं दिशि पसर्‌यो सुजसु सिंध मेखला भूमि[1]।
भयो पंथ शुभ खालसा घाली सैलनि[2] धूम ॥ १ ॥

ललितपद छंद

मिलि करि राजे बाइ धारन[3] प्रजा सहित सभि जोधा।
तीन लाख गिनती महिं इक थल सतिगुर पर करि क्रोधा ॥ २ ॥
करी ढूक अर करी ढोइ[4] करि हेला मिलि मिलि घाला।
अलप ख़ालसा आनंदपुरि महिं झाल झाल दर ठाला[5] ॥ ३ ॥
मरद गरद महि मिले ज़रद मुख हरद[6] रंग ह्वै भागे।
दुरद[7] दरे तन घाव दरद भा थिरे न सिंहन आगे ॥ ४ ॥
जित कित कहति मंद गिरपति[8] अति मत इति चित की होई।
सतिगुर संग जंग करि मूरख क्यों न बिसूरहि[9] सोई ॥ ५ ॥
इक तौ श्री नानक की गादी खंड दीप जिन जीते।
करामात साहिब जग बिदते पीर मीर धरि भीते[10] ॥ ६ ॥
दुतीए बिदत कालका दरशन पंथ रचन बर पायो।
हिंदू धरम जग राखन कारनि प्रभु अवतार सुहायो ॥ ७ ॥
करहिं बाक जग रचन संघारनि[11] इम समरथ जिन केरी।
बरतहिं तऊ मानवी लीला मूरख लखहिं कुफेरी ॥ ८ ॥
तुरकन संग बिरोध जिनहु कहु नहिं समझें मति मंदे।
शरन गहति सुख लहति चहति चित दे द्वै लोक अनंदे ॥ ९ ॥

---

1. समुद्रों और समस्त पृथ्वी पर 2. पर्वतों में 3. बाईस पर्वत मालाओं के 4. हाथी को आगे करके 5. रोका 6. हल्दी के समान पीले 7. हाथी 8. पहाड़ी राजागण 9. क्यों दु:खी न हों 10. डरते हैं, भयभीत हैं 11. संघर, युद्ध

कहां करहिं जे भाल भाग नहिं जुग लोकन दुख पावैं।
इहां राज महिं दुंद[1] परहि नित मरि करि नरक सिधावैं ॥ १० ॥
धंन गरु चहुं बरन रंक जे दे अम्रित किय जोधे।
जगत बिखै जसु जुति सुख भोगैं हित प्रलोक उर बोधे[2] ॥ ११ ॥
भीम चंद दुखद पाइ बडरा[3] निज परधान पठाए।
हय गज बहुत मोल के लै करि तुरकन हित समुदाए ॥ १२ ॥
कंचन रजत घरे जिन हौदा तिमही जीन बनाए।
वसतु अनूठी[4] अपर सकेली धन गन संग पठाए ॥ १३ ॥
सीरंद[5] को सूबा बल भारी खां वज़ीर जिस नामू।
तिस ढिग रिशवत पठी बिनै करि हम कौ लखहु गुलामु ॥ १४ ॥
गुर गोबिंद सिंह बली भयो बहु दिन प्रति सिंह वधाए[6]।
तूं नजीक मो लरै एक दिन जत्रि हम लेहि हराए ॥ १५ ॥
अबि तो सुगम जतन इह जानहु हम संग होइ लरीजै।
चहुं दिशि ते रोकहिं बल दे करि अनंद पुरि छुटवीजै[7] ॥ १६ ॥
आगं शाहु चमूं कुछ आई द्वै उमराव पठाए।
पैंडखान को घाति कीनि रण, दीनाबेग पलाए ॥ १७ ॥
उदम करहु हमहु लखि अपने अबि जे बनहु सहाई।
दल गन को सकेल चलि आवहु करहि काज सहिसाई[8] ॥ १८ ॥
इक तो हम पर हुइ उपकारा दुतीए शत्रु तुमारा।
क्यों निचिंत तुम, जानहु नाहिन बिगरइ कारज भारा ॥ १९ ॥
इत्यादिक कहि पठ्यो सिरंद को दिली तथा पठाए।
वड परधान पठ्यो दिशि दछन अवरंगा[9] जिस थांए ॥ २० ॥
दीन होइ बहु बिनती भनि भनि लिखि लिखि आप गुलामू।
गुर ते वेमुख भई दशा अस बिगरे जित कित कामू ॥ २१ ॥
दीन बने तुरकन के चेरा देति सुता के डोरे[10]।
धरम खोइ अपजसु को प्रापति मरहि नरक पार घोर ॥ २२ ॥

---

1. द्वन्द्व, युद्ध 2. ज्ञानवान् बना दिए हैं 3. बहुत अधिक 4. अद्भुत 5. सरहिंद, जहां उस समय प्रांत का अधिकारी निवास करता था 6. वृद्धि की है 7. मुक्त कराई जाए 8. अधिक 9. औरंगज़ेब बादशाह 10. पुत्रियों का विवाह मुगल बादशाहों के साथ किए

जहिं कहिं गए वकील सुनावति जनु लूटे किन मारे।
करि पुकार सभिनि के आगे हम को गुरु प्रहारे॥ २३॥
वडी मजल[1] को करति गए तबि शाह समीप पुकारे।
घाली धूम गुबिंद सिंह सैलनि वसदे राज उजारे[2]॥ २४॥
दिली के सूबे लिखि भेजा इत गुर करति लगाई।
अर वज़ीरखां निज नर पठि करि शाहु समीप सुनाई॥ २५॥
बहुत लिखे अविरंग[3] सुने जबि, रिस करि हुकम बखाना।
सीरंद[4] ते गन सैना ले करि उत को[5] करहि पयाना॥ २६॥
आनंदपुरि छुटवाइ गुरु ते भीमचंद को दीजै।
आगे बहुर जंग नहिं करि है बल ते बरजनि कीजै॥ २७॥
उत तौ भए ब्रितंत[6] इसी विधि कथा सुनहु गुर केरी।
सुजसु कवित करति बहु कवि गन बखशति मौज बडेरी[7]॥ २८॥
कौतक होति अनंद पुरि सुंदर सुनि सुनि संगति आवै।
दरव हज़ारहुं अरपहि शसत्रनि मनो कामना पावैं॥ २९॥
लरति जु बिगर्‌यो सरब सुधार्‌यो बाग तड़ाग नवीने।
चामीकर[8] के सुंदर मंदिर अंतर बाहर कीने॥ ३०॥
बसहिं गरीब-निवाज[9] तिनहुं महिं निस दिन आनंद पावैं।
कंचन थंभ चित्र जिह नाना तने बितान[10] सुहावैं॥ ३१॥
बगर[11] बजारनि दीरघ शोभा मोर शोर समुदाया।
पावस आन प्रविरती[12] नभ छित घन की घट घुमडाया॥ ३२॥
राइवेल चंवेली चंपा चंचरीक[13] रुचि चारु[14]।
गुनी पुरख सुनि सुनि जसु गुर के आइ रहे गुरद्वारु॥ ३३॥
हुकम कर्‌यो आयुध गन होवे दै धन गन घरवाओ[15]।
तोप तुपक जंबूर रहिकले[16] बहु जंजैल[17] बनाओ॥ ३४॥
बुगदे[18], खंजर, सैफ, दुधारै, तोमर, चक्र, खंतंगा।
चाप, तमाचे, सांग, सु बरछी, कराचोल[19] खर अंगा॥ ३५॥
लगे अनिक कारीगर घरने प्रथम तोप इक ढारी[20]।
जनु जम को मुख, मित्र शत्रु की छोडे गरजन भारी॥ ३६॥

---

1. मंज़िल 2. बस रहे राज्यों को उजाड़ दिया 3. औरंगज़ेब 4. सरहिंद 5. उस ओर 6. वृत्तांत 7. बड़ी 8. सोना 9. कृपालु 10. तंबू 11. आंगन 12. प्रवृत्त हुई, शुरू हुई 13. भ्रमर 14. सुंदर, अच्छी 15. भिजवाओ 16. छोटी तोप 17. भारी और लम्बी बंदूक 18. छुरा 19. तलवार 20. ढाली, बनाई

प्रभु हित बान बिलंद[1] बने बहु बर बीरन के घाती।
एक मुहर को हेम[2] लगहि तिस मुखी पुलादि संगाती ॥ ३७ ॥
इत्यादिक आयुध नित बनते परखति गुरु रखावैं।
केतिक बखशति हैं करि सिंहन सदा जंग मन भावैं ॥ ३८ ॥
कथा सुनहुं इक हुतो मुसदी[3] आसासिंह सु नामू।
गुर घर की बहु कार चलावैं टोंबू[4] लिखहि तमामू ॥ ३९ ॥
तिस ढिग रंक सिख इक जाचति कन्या ब्याहनि जोगा।
दरब पंच सै ते हुइ कारज मुझ चित चिंता रोगा ॥ ४० ॥
तुझ ते हुइ उपकार करहु इहु सुनि सुनि अरु लखि दीना।
आसा सिंह दया उर करिकै तिह टौंबू लिख दीना ॥ ४१ ॥
सो ले गयो जहां पर भेजा लए पंच सै जाई।
हुतो रंक तिन ब्याह कर्‌यो तबि कन्या सदन उठाई ॥ ४२ ॥
बिते मास खट सो सिख आयो गुर दरशन को कीना।
टोंबू[4] धर्‌यो आप ने भेज्यो, मैं पंज सै[5] तिस दीना ॥ ४३ ॥
प्रभु तबि कह्यो न हम ने भेजा किन इह लिख्यो पठायो।
आसा सिंह के हाथ मुहर है जबि ऐसे लखि पायो[6] ॥ ४४ ॥
कुछ रिस धरि गुर कह्यो कहे बिन इह क्यों लिख्यो पठायो।
दियो आप ही दरब पंज सै कैसे खोट कमायो[7] ॥ ४५ ॥
इम गुर ते सुनि आसा सिंह ढिग किह सिख खबर बताई।
डरति मार ते भाज गयो तबि निज घर बिखै तदाई[8] ॥ ४६ ॥
केतिक दिन महि तिन अरज़ी लिखि सतिगुर निकट पठाई।
लिखे दोहिरे बिच[9] बनाइ करि सो मैं देहुं सुनाई ॥ ४७ ॥

कलमोवाच[10]

दोहरा

मुख कारा मेरो करैं करति न पर उपकार।
तिस को मैं फिर करौंगी पलटा इहु दरबार[11] ॥ ४८ ॥
फट छाती दो टुक भई, रुदन करति लिखि जाति।
परस्वारथ उपकार बिन मोहि न उपजति शांति ॥ ४९ ॥

---

1. वड़े 2. सोना 3. मुंशी, लेखक 4. हुंडी, पत्र आदि 5. पाँच सौ रुपये 6. यह समझा, इसका ज्ञान हुआ 7. अनुचित कार्य किया 8. तभी 9. में 10. लेखनी कहती है 11. दरबार में मैं फिर उस का मुख काला करूंगी

चौपई

ऐसे कलम कहति सभि साथि। स पकराई गुर मुहि हाथ।
गुर की आन[1] जबहि सिख कीनी। सही न मै, चिठी लखि दीनी ॥ ५० ॥
सरब लछमी जगत तुमारी। भुंचति है इह स्रिशटी सारी।
इत्यादिक लिखि बिनै पठाई। सुनति प्रसंन भए गोसाई[2] ॥ ५१ ॥
तिह बुलाइ पुन पाग बंधाइ। दई प्रथम सम कार तदाई[3]।
इस प्रकार इक हुती लिखारी। सैणा जिस को नाम उचारी ॥ ५२ ॥
कुछक खता[4] तिस ते जबि होई। भाज गयो पुन आइ न सोई[5]।
सुंदर बरन लिखै चित आयो। श्री गुर तिस को बोलि पंठायो ॥ ५३ ॥
निज संबंध अनि को मिलि गयो। आयो नहीं त्रास उर भयो।
नहिं आवन के हेतु बहाना। लिखि करि दोहा पठ्यो बखाना ॥ ५४ ॥

दोहरा

जबि ते प्रभु ते बीछुरे कीयो क्रिशि को ठाट[6]।
ब्रिखभनि[7] संगति हम करि भए जाट के जाट ॥ ५५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'सिखन प्रसंग'** बरननं नाम एक त्रिसंती अंशु ॥ ३१ ॥

---

1. गुरु की शपथ 2. गुरु गोबिंद सिंह 3. तभी 4. ग़लती 5. उसकी अथवा सूचना 6. खेती करनी शुरू कर दी 7. बैलों, पशुओं की

अंशु ३२

दुसहिरा उतसव प्रसंग

दोहरा

पावस बीती अनंद सों सरद प्रबिरती आई[1]।
पितरनि पछ[2] ते नौरते[3] चंडी जगत मनाइ ॥ १ ॥

ललितपद् छंद

हुकम कीनि श्री सतिगुर पूरे शस्त्र निकासे सारै।
मैल निविरतहिं[4] मारवारिये[5] पूजहिं बहुर सुधारे ॥ २ ॥
खास खजाने लगे निकासनि जाती खडगनि नाना।
तेगे आयुत, खड़ग दुधारे, तोमर, सैफ, क्रिपाना ॥ ३ ॥
दुबिधि सरोही[6], नीम सीखचे[7], मिसरी द्वै गुजराती।
इलमानी[8] रु हलबी[9] मगरबि[10] किरच[11] जुनबीजाती[12] ॥ ४ ॥
जमधर लघु बिसाल पउलादी, खंजर चक्र महांना।
बिछूए बांक[13] छुरे बहु बिधि के, पेश कबज़ शुभ नाना ॥ ५ ॥
तीर[14] अनिक विधि खपरे सेले गनवदामचे तुके।
सेल नरांच सुनावक तीखन कर दहि तन रिपु ढूके[15] ॥ ६ ॥
तुपक तमाचे गन बिलाइती सांगै[16] शकति निकासे।
ब्रिंद शस्त्र सतिगुरु खज़ाने कहि लौ कवी प्रकाशे ॥ ७ ॥
मारवारिये मान्जनि[17] लागे चरन दाब कर फेरे[18]।
इतने महि प्रभु बाहिर निकसे सभि आयुध दिशि हेरे ॥ ८ ॥

---

1. आ पहुँची 2. श्रद्धों के पक्ष के पश्चात् 3. नवरात्र 4. नष्ट करें, उतारें 5. मारवाड़ क्षेत्र के सिकलीगर 6. तलवार 7. सिलाख़ के समान पतली और छोटी तलवार 8. यमन देश की बनी तलवारें 9. हलब नगर की बनी तलवारें 10. फारस, ईरान की बनी तलवारें 11. सीधी तलवार 12. जनब नगर की बनी तलवारें 13. टेढ़े 14. तीरों के प्रकार 15. पहुंचे 16. बरछियां 17. साफ करने लगे 18. हाथ फेर कर साफ किए

कह्यो बिअदवी[1] शसत्रनि केरी तैं क्यों चरन लगायो।
अति प्रिय खड़ग अकाल पुरख को निज धुज बिखै सुहायो ॥ ९ ॥
आदि शकति श्री चंडी रूप इह पूजन जोग सदीवा।
सरब सुरासुर नर क्यों बपुरो जिस के वसि महि थीवा[2] ॥ १० ॥
सादर सेव मञ्जिवे[3] करीयहि इह कहि अग्र सिखाए।
बैठे बहुर खालसा आयो श्री मुख दरशन पाए ॥ ११ ॥
केतिक चिर महि इक सिख बोल्यो मारवारिया जोई।
पुंज खड़ग सिर पर धरि बैठ्यो कार न करता सोई ॥ १२ ॥
सुनि बिकसे प्रभु गए बिलोकनि देख्यो तिसी प्रकारा।
इह क्या कर्यो न सेवा ठानति बैठे समा गुजारा ॥ १३ ॥
महाराज रावर की आइसु अदब करनि इम होवै।
सेवा मांइन की हुइ तैसे जथा प्रथम मल खोवैं ॥ १४ ॥
बिगसि[4] प्रभ कहि तुम कौ बखश्यो, शसत्रन के नित दासा।
करहु प्रेम ते सेवा आयुध, तौ सभि सुख हुइ पासा ॥ १५ ॥
राम सिंह तिह नाम हुतो सुनि गुर को बंदन ठानी।
माञ्‌न[5] करनि लग्यो सुध शसत्रनि, पुन सुख लह्यो महांनी ॥ १६ ॥
ऊचे थल टिकाइ सभि आयुध पूजा सौज[6] मंगाई।
लगे नुराते[7] सगरे पूजन चंडि कालका माई ॥ १७ ॥
चंडि चरित्र पाठ नित होवै सहिसक्रित अरु भाखा।
धप दीप चंदन कौ चरचति फूलमाल बहु राखा ॥ १८ ॥
अमर फेरि केतिक चिद श्री प्रभु पूजा पाठ करते।
करहिं सतुति जिह जोति बिदति जग, नाम आधक सिमरंते ॥ १९ ॥

अनंग शेखर छंद

नमो अनंत कारणी[8] प्रयोखणी संहारणी,
भवा[9] बिसाल, तारणी, भयं हरी, अखंडका।
सबुधि जुध क्रुधता बिरुध बध उधत्ता[10],
अरुध रिधि सिधि दा[11], प्रवुध शुध मंडका।

---

1. अपमान, तिरस्कार 2. होना 3. सफाई के लिए 4. विकसित होकर, प्रसन्न हो कर 5. साफ़ करने लगा 6. सामग्री, सामान 7. नवरात्र 8. करने वाली 9. कल्याण कारी 10. वैरियों का विनाश करने के लिये तत्पर रहने वाली 11. देने वाली

सजोर घोर लोचना, जपंति सोच मोचना[1],
सुचैत चित रोचना[2], रिपूनि की घमंडका[3]।
निसुभ सुभ खंडका, असुर दल दंडका,
बिहंड[4] चंड मुंडका, प्रचंड तुंड[5] चंडिका ॥ २० ॥
द्रिडंति दीह[6] दाड़का, बिलंद दैत दाहका,
निकंद कैटभानकी, अमंद तेज ज्वालका ।
प्रपाण[7] श्रोण बीरजा, बिसाल बाहु बीरजा,
मझार जंग धीरजा, बिश्वभरी[8] कपालका ।
नखान पुंज तीखना, सक्रोध लाल ईछना,
दिखाइ रूप भीछना सु भछ शत्रु बालका ।
सुदास प्रीत पालका, सवेग दैत घालका,
गरे मैं मुंड मालका, प्रणाम पाद कालका ॥ २१ ॥

दोहरा

इत्यादिक जे नाम हैं सपत सहंस्रै लख[9]।
सिमरति उचरति खालसा श्री सतिगुर प्रतछ ॥ २२ ॥

अनंग शेखर छंद

इसी प्रकार नौरते प्रपूजते सु आयुधान,
चंदनादि फूलमाला धूप को जगावते ।
उतंग संख पूरते सु मंगलं अरंभते,
बिशाल सौज होमते, सो धूम को उठावते ।
नमो नमो भनंत है, सु ब्रह्मकोच[10],
पाठ के पठंत है सुनत कोई, जै बिजै सु गावते ।
उछाह मोद कीनिओ, प्रसादि बंट दीनिओ,
समूह फान लीनिओ, सु खाइ चीत भावते ॥ २३ ॥
दुसैहिरा[11] के द्योस मैं तिहावला[12] बिसाल,
कीनि नौम पातिशाह के सथान अग्र जाइकै ।
बिनै वखानि हाथ जोरि बदना सु कीनिओ,
प्रदछना सु दीनि परसाद को ब्रताइकै[13]।

---

1. नाशक 2. प्रसन्न करने वाली 3. गर्व से दबाने वाली 4. नष्ट करने वाली 5. मुख 6. बड़ी 7. पीने वाला 8. संसार को पालने वाली 9. एक लाख सात हज़ार 10. शरीर रक्षा के निमित्त पाठ विशेष 11. विजयदशमी 12. कड़ाह प्रसाद 13. बाँट कर

निकेत फेर आइकै, तुरंग को मंगाइकै,
मतंग संग पूजि पूजि, मोद को वधाइकै।
अहार फेर खाइकै अराम थोर[1] पाइकै,
अफीम सों मिलाइकै सु दास भंग ल्याइकै ।। २४ ।।
शनान कीन सौच ते सुधारि केस पास को,
सजाइ सीस पाग को उतंग ज़ेव जार के[2]।
जराव ज़ेवरानि को सरीर चीर सोहते,
क्रिपान पाइ गातरे[3] निखंग अंग धारिके।
कमान बान पान मैं दिवान मैं कछूक वैठि.
बाहरे चलनि को तुरंग सो हकारेके।
अरूढ़ि के गावन कीनि, दुंदभानि चोब दीनि,
बोलते नकीब[4] भाट कीरती उचारिके ।। २५ ।।
विलोकि बैनतेय[5] को कुवाइदां[6] तुफंग की,
तुरंग पै करंति को कमान बन मारिते।
धवाइकै[7] भ्रमाइ सेल मेलते बगल कोइ,
एव आयुधान को प्रहारिकै दिखारिते।
किदार जे फलानके[8] लुटाइ दीन के तने,
बहोर[9] ब्रिद बाहुरे अनंद भूर धारते।
गुरु फते उचारिते,[10] सुरूप को निहारते,
सुभाग को बिचारते बिलंद ही प्रकारते ।।२६ ।।

ललितपद छंद

सकटनालका[11] सुतरनालका[12] गुरु संग घुड़नालैं[13]।
तोप, जमूर, जंजैलन, लमछड़ लए तुफगन जाले[14]।
हुकम गुरु को ले तिस छिन महिं जे पदाति[15] असवारा।
शलख[16] छोरनी शुरू करि तबि भयो अंध धुधकारा ।। २७ ।।
मनहुं ब्रिंद ही गाज[17] गाज करि गिर पर गिर गन जानी।
धुखे पलीते शबद उठ्यो बड सुनीअहि कछु न कानी।

---

1. थोड़ा 2. शोभा का प्रकाश करके 3. कृपान लटकाने की पेटी 4. चारण 5. गरुड़ व्यूह 6. क्वायद, शिक्षा 7. आगे बढ़ कर 8. फलों के खेत 9. पुनः फिर 10. गुरु की जीत का जयघोष करते 11. छकड़ों पर लदी तोपें 12. ऊँटों पर लदी तोपें 13. घोड़ों पर लदी तोपें 14. बंदूकों के प्रकार 15. पैदल 16. गोलियाँ की बूछाड़ 17. बिजली

केतिक चिर लौ सतिगुर ठहिरे शलख ब्रिंद करिवाई।
पुन पुरि गमने रमनी बीथनि दरसैं लोग लुगाई[1] ।। २८ ।।
उतरे आनि प्रभू धीर सुंदर चित्र बचित्राति हेमू[2]।
सिख संगति दरसहि मनमुदतिहिं पाइ जोग अरु छेमू।
नौबत, दुंदभि, संख, नफीरी, पटहि, ढोल, करनाई।
बजहि म्रिदंग, रबाब सतारनि, गावहिं पाइ वधाई ।। २९ ।।
गुनी कवी करि सुजसु कवितन आनि अनेक सुनावैं।
रीझैं मौज देति मन भावति ले करि उर हरखावैं।
उतसव भयो सभिनि सुखदाइक खान पान करि सोए।
जुग लगि राज थिरहु सतिगुर को कहि असीस सभि कोए ।। ३० ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे चतुरथ रुते **'दुसहिरा उत्सव प्रसंग'** बरननं नाम दुइ त्रिंसती अंशु ।। ३२ ।।

---

1. नर-नारियाँ 2. सोने के

अंशु ३३

श्री राम कुइर प्रसंग

दोहरा

श्री गुर गोबिंद सिंह जी बली तरुन तन बैस ।
दिन प्रति ब्रिधति[1] खालसा दूज चंद नभ जैस ।। १ ।।

चौपई

प्रथम पाठ करि जपुजी केरा । अपर पढी गुरबानी फेरा ।
पुन सुखमनी पाठ को करिते । सहिजे सुभइक श्री गुर फिरते ।। २ ।।
सादर तबि ही निकट बिठाए । आप पठति बानी चित लाए ।
चहति श्रेय बैराग उपाई । पठति पठति इह तुक[2] मुख आई ।। ३ ।।

"तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ।।
तैसा अंम्रित तैसी बिख खाटी" ।। ४ ।।

इसको अरथ बिचार्यो माई । पुनहि पुत्र संग गिरा अलाई ।
हे सुत सभि थल ग्यातावान । हाथ बद्र सम[3] बिदत जहान ।। ५ ।।
ऊच रु नीच रंक कै राजा । साध असाध लखहु सभि पाजा ।
इन तुकहन मैं जो भिप्राइ[4] । हरख शोक रहिनो इक भाइ ।। ६ ।।
इस प्रकार को संत बिसाला । मोकउ दिखरावहु किस काला ।
दुंदन[5] महि जिस ब्रिती समान । मान अमान, असुख सुख जान ।। ७ ।।
हरत शोक नहिं कबि उपजंता । सदा एकरस को निबहंता ।
जिसकी ऐस[6] अवसथा होइ । बडे साहिबन बरनी जोइ[7] ।। ८ ।।
उजल अरु बडभागा माता । कह्यो दिखावहु तिह सख्याता[8] ।
रुचिर मनोरथ जननी केरा । सुनि बोले सतिगुर तिस बेरा ।। ९ ।।

---

1. वृद्धि 2. पंक्ति 3. हस्तामलकवत्, हाथ पर धरे आँवला के समान 4. अभिप्राय 5. द्वंद्वात्मक भावनाओं के युगलों में 6. इस प्रकार की 7. जिसका बड़े गुरु साहिबों ने वर्णन किया है 8. साक्षात्

अस पुरशोतम संत सुचाली। पिखहु निसंसै होवति काली।
दरशन करिकै अचहु अहारा। करहु प्रतीखन भाव उदारा ॥ १० ॥
ऐसनि कहु रचि करि करतारा। लखहि सफल सिरजन जग सारा।
शंख, सारदा, बेद, बिरंच[1]। करि नसकहिं जिह महिमा रंच ॥ ११ ॥
समदरसी इकरस मन शांति। महां पुरख पूरन अदिदाति।
मनहुं कामना पूरन होवहु। निहसंसै दरशन कौ जोवहु ॥ १२ ॥
इम कहि सतिगुर बाहिर आए। जे सभि सिखन कौ सुखदाए।
माता भई प्रसंन महाना। देखहु संत सु ब्रिती समाना ॥ १३ ॥
उतकंठा जिस के उर एवी। जगत ईश की जननी देवी।
प्रथम मिल्यो श्री नानक संग। भाई बूढा सुमति उतंग[2] ॥ १४ ॥
ग्यान अवसथा बिखै अरूढा। प्रापति भयो परम पद गूढा।
खट पतिशाही लगि जग रह्यो। सतिगुर चलित ब्रिंद को लह्यो ॥ १५ ॥
जिस के बाक मिटैं नहिं किस ते। उतम अपर कहो को तिस ते।
तिस की कुल को भूखन भयो। नाम सु राम कुइर जो थियो[3] ॥ १६ ॥
जनु दीपक ते दीप जगायो। ग्यान अवस्था महि दिपतायो[4]।
सिख्य मुख्य सतिगुर घर केरे। जिन की समता अपर न हेरे ॥ १७ ॥
हुतो समै तिस अंम्रितसर जी। लख्यो ब्रितांत सरब गुर घर जी।
दसवें पातशाह मन केरा। माता हित सु मनोरथ मेरा ॥ १८ ॥
दरस अवश्य करनि कहु काली। उर महि इछा कीनि बिसाली[5]।
गई निसा परि करित त्यारी। निज संगति सो गिरा उचारी[6] ॥ १९ ॥
भए प्रभाति अनंदपुरि जाना। मुझ पशचाती करहु पयाना।
मैं एकांकी शीघ्र सिधाऊं। दरशन श्री सतिगुर को पाऊं ॥ २० ॥
तुम ते पहुंच्यो जाइ सु जावति। शीघ सिधावहु आवहु तावत।
इम कहि रैन बिखै परि सोए। भई प्रभाति जागिबो होए ॥ २१ ॥
करि इशनान पाठ जप कीना। पुन गुर दरशन कौ मन दीना।
भयो तुरंगन पर आरूढ[7]। चल्यो बेग जिस आशै गूड[8] ॥ २२ ॥
कह्यो सभिनि सो आवहु मिले। मुख अनंदपुर दिशि करि चले।
तूरन[9] तोरि तुरंगनि तबै। गमने मारग तजि करि सबै ॥ २३ ॥

---

1. ब्रह्मा 2. श्रेष्ठ बुद्धि वाला 3. हुआ 4. प्रदीप्त किया 5. अत्यधिक 6. वचन किया 7. सवार 8. महत्त्व एवं रहस्यपूर्ण 9. तुरंत

शीघ्र साथ मग चलते चलते। भा मध्यान भानु कुछ ढलते।
कोस पचीसक पहुंचे जाइ। पैंडो दूर रह्यो पुरि थाइं॥ २४॥
इत श्री गुजरी पुन महानी। उठी प्राति करि मजन पानी[1]।
जपुजी आदि पाठ करि बानी। बैठी पुन प्रतीखन[2] ठानी॥ २५॥
पुत्र वाक पर निशचा लीए। भोजन जल अचिबो नहिं कीए।
उतकंठति बैठी बडभागन। दूरब[3] संत पिखिनि अनुरागन॥ २६॥
बीते जबहि बाम जुग बैसे। सुत ढिग पठ्यो दास को ऐसे।
कर्‌यो प्रतीखन कहे तुहारे। नहि आयो नहिं अच्यो अहारे॥ २७॥
अबि मध्यान काल भी बीता। रहि ग्यो मोर मनोरथ रीता[4]।
आइ अनंदपुरि आज कि नांही। निपुन जि संत ग्यान के मांही॥ २८॥
अबि जिम कहहु करहिं तिस रीति। सुनि बोले सतिगुर मुद चीति।
धन मनोरथ अहै तुमारा। करी प्रतीखन धंन[5] उदारा॥ २९॥
उपजावहु[6] अहार रसवारे। मधुर सलवण अनेक प्रकारे।
करिवावहु सभि विधि की त्यारी। सकल परोसहु थाल मझारी॥ ३०॥
जबि सभिहु विधि इह करि लैहो। तातकाल ही दरशन पैहो।
नहीं बिलम अबि आवनि मांहि। त्यारी करहु भाव धरि तांहि॥ ३१॥
जिस प्रकार श्री गुर फुरमायो। सुनति दास ने जाइ सुनायो।
परम प्रसंन जननि मन भयो। करिओ त्यार सु आइसु[7] दयो॥ ३२॥
बहु तूरन[8] करि बहु नर लाए। बिंजन नाना भांति कराए।
खटरस जुगत स्वादि मन भावा। अपन हजूर थाल महिं पावा॥ ३३॥
सरब प्रकारनि करिकै त्यारी। करहि प्रतीखन भाउ सु भारी।
जबि मध्यान चल्यो मग आवति। बडवा को प्रेरति उतलावत[9]॥ ३४॥
इत अनंदपुरि को बिरतांत। जान्यों रामकुइर मन शांति।
पहुंच्यो जाइ न अजमत[10] बिना। बिना पहुंचे मिथ्या हुइ जना[11]॥ ३५॥
त्यों ही करनि सभिनि बन आइ। ज्यों सतिगुर की होइ रजाइ।
अस मन जानि छिनक महिं आवा। सतिगुर के पग सीस निवावा॥ ३६॥
बारि बारि अभिबंदन करिही। परम प्रेम ते रूप निहरिही।
कुशल बूझि गुर सादर भाखा। अचहु अहार महित[12] अभिलाखा॥ ३७॥

---

1. स्नान आदि करके 2. प्रतीक्षा में 3. अन्न ग्रहण करने से पूर्व 4. खाली. अपूर्ण 5. धन्य 6. तैयार करो 7. आज्ञा 8. बहुत शीघ्र 9. उत्सुक होना 10. महानता (के बिना) 11. हो जाएगा 12. महान्, बड़ी

दास एक करि दीनों संग। गए मात के महिल उतंग[1]।
कर्यो हुतो तबि थाल सु त्यारी। राम कुइर पहुंच्यो सिख भारी ॥ ३८ ॥
माता के पाइन पर प्रयो। पूरन जांहि मनोरथ कर्यो।
सुंदर आसन तहा डसावा[2]। तिस पर सादर भाखि बिठावा ॥ ३९ ॥
आगै थार मात धरि दीनसि। अपने हाथ बीजना[3] लीनसि।
मंद मंद करि पंख झुलावा। धरे भाव भोजन अचवावा[4] ॥ ४० ॥
महा पुरख पूरन मन जाने। दरश करति भाउ रिद ठाने।
बूझनि लगी मात सति भाए। आज कहां ते चलि करि आए ॥ ४१ ॥
रामकुइर अच भोजन सोई। बोल्यो हाथ जोरि करि दोई।
तहां रखे राखे गुर जहां। जहां पठावहि जावहि तहां ॥ ४२ ॥
पुतली के अधीन क्या अहैं। नर के बस बरती नित रहै[5]।
जथा कराइ तथा सो करिही। तिम सतिगुर के हम अनुसरही ॥ ४३ ॥
हम सुछंद कुछ करि सकि नाही। सदा चलहिं गुर आग्या मांही।
इम कहि नमहि मात को करिकै। गुर ढिग आयो उर मुद[6] धरिकै ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे चतुरथ रुते '**श्री राम कुइर प्रसंग**' बरननं नाम तेतीसमों अंशु ॥ ३३ ॥

---

1. ऊँचे 2. बिछवाया 3. पंखा 4. उठाया 5. पुतली नचाने वाले के हाथ में उसका कार्य व्यापार निश्चित होता है 6. आनंद

अंशु ३४

श्री राम कुइर साखी प्रसंग

दोहरा

बैठ्यो श्री सतिगुर निकट राम कुइर शुभ संत ।
सिखी की लछमी महां जिन के दिपत अनंत[1] ।। १ ।।

चौपाई

श्री गुर कुशल प्रशन करि सारे । क्रिपा द्रिशटि ते बहु सतिकारे ।
गुरसिखी के तुम आधारे । पाइ सुमग नर अनिक उधारे ।। २ ।।
गुरसिखी सागर बिनु पारी[2] । शरधा को निश्चा बर बारी[3] ।
सत्यनाम सिमरनी निरंतर । निस दिन उठहिं तरंग सु अंतर[4] ।। ३ ।।
हउमैं सुरत बिसारन करनी[5] । इह पावनता जिस महिं बरनी ।
परमेशुर को क्रित भल भावै । सदा अगाधपनो दरसावै ।। ४ ।।
श्री नानक अर दसम सरूप । दिढ बेला[6] देवै लखहु अनूप ।
सम दम दया धरम सुच शांती । रहति राखनी गुरमति भांती ।। ५ ।।
छिमा, सौचता, मुदिता, प्रीत । इस नद नदी मिलहि जिस नीत ।
सिख संत जल जंतु अपारा । मीन आदि जे अहैं उदारा ।। ६ ।।
नरक तपत जिन कउ कबि नाही । दुख सुख महिं जो तजि न सकाहीं ।
अस गुर सिखी जलध सकासा[7] । बंस तुमारी चंद प्रकासा[8] ।। ७ ।।

दोहरा

बुढा भयो महातमा छुयो बिकार न लेश ।
सदा एक रस महिं रह्यो अपरन हते कलेश ।। ८ ।।

---

1. अनंत शोभा है 2. पार के बिना, अपार 3. श्रेष्ठ जल 4. सतिनाम का निरन्तर जाप मानो उस जल में तरंगें उठ रही हैं 5. अंहकार की भावना को भुला देना 6. दृढ़ अथवा स्थायी जंगल है 7. समुद्र के पास 8. यहाँ गुरु-सिखी का रूपकात्मक विश्लेषण हुआ है

चौपई

रामकुइर सुनि बंस वडाई। मसतक टेक्यो ग्रीव निवाई।
मनहुं लाज को भार उदारा। सह्यो न जाइ, थिर्‌यो बल भारा ॥ ९ ॥

इम करिकै सनमान घनेरा। दीनसि शुभ मंदिर महि डेरा।
दिवस चार महिं संगति सारी। प्रापति भई श्रमति हुइ भारी ॥ १० ॥

सतिगुर दरसहिं धरहिं उपाइन। सीस निवावहिं कोमल पाइन।
सनेसने[1] डेरा करि दीनसि। श्रम मारग निरविरती[2] कीनसि ॥ ११ ॥

रैन सैन करि चैन समेते। जागे अम्रित समैं भए ते।
सतुद्रव सुंदर सीतल नीर। सौच शनानहि सरब सरीर ॥ १२ ॥

जपुजी आदि पठति गुरबानी। सतिनाम सिमरहिं अघ हानी[3]।
सने सने चलि पुरि महिं आए। रामकुइर के संग सुहाए ॥ १३ ॥

तिम सतिगुर करि सौच शनान। आइ विराजे सभा सथान।
सकल सिख तैसे चलि आए। दरसहिं सतिगुर सीस निवाए ॥ १४ ॥

राम कुइर लै संगत सारी। जाइ नमो गुर चरन अगारी।
जथा क्रम सु बैठे गुर पास। दरशन दरसहिं मोद प्रकाशि[4] ॥ १५ ॥

तबि अरदासी[5] ओर निहार्‌यो। महाराज गुर बाक उचार्‌यो।
आग्या कोशप[6] निकट पठावहु। एक हज़ार आनहुं रजतपण ल्यावहु ॥ १६ ॥

सभि को पंचाम्रित करिवाइ। हुइ तयार आनहुं सहिसाइ।
सुनि कै गयो क्रित सभि करिकै[7]। ल्यावति भयो शीघ्रता धरिकै ॥ १७ ॥

पुनहिं सिख सगरे बुलवाए। सुनि सुनि आनि मिलहि इक थाए।
श्री सतिगुर के पग करि बंदन। बैठें दरसति ह्वै अभिनंदन ॥ १८ ॥

राम कुइर संगति जुति जहां। पूरन सभा भई सुख महां।
पातिशाह दसवें गुर सोहैं। बिगसावति मुख कमल मनो हैं ॥ १९ ॥

क्रिपा सने बर बोलति बोल। कुंडल डोल कपोलनि लोल।
देखि देखि सिख जीवति मानों। मिटहि पाप दुख दोख महानो ॥ २० ॥

पिख्यो तिहावल[8] की दिशि फेर। आग्या देति भए तिस वेर।
लूट लेहु सभि करहु अहारा। कहति उठे सतिगुर दरबारा ॥२१ ॥

---

1. धीरे धीरे 2. निवृत्त-कर दिया, समाप्त कर दिया 3. पाप नाश करने वाला 4. आनंद प्रकट करते हुए 5. प्रार्थी, आज्ञा पाकर उस का पालन करने वाला 6. कोशाधिकारी 7. कड़ाह प्रसाद का काम 8. कड़ाह प्रसाद

महिलनि बिखै बिराजे जाइ। पाछे उठे सिंह सहिसाइ[1]।
करहिं शीघ्रता लूट मचाई। ले ले जाहिं तहां समुदाई॥ २२॥
जितो जितो जिस जिस ने लीनसि। डेरे जाइ सु खैवो कीनसि।
दुइ त्रै चहुं को जितिक अहारे। इक इक ले गमन्यों बल भारे॥ २३॥
लूटति अधिकै रौर मचावा। दूर दूर लौ बहु सुनि पावा।
राम कुइर पिखि कै गुर तौर[2]। अंतरमुखी भयो तिस ठौर॥ २४॥
ब्रिती संकोची कूरम न्याई। बैठ्यो अचल समाधि लगाई।
नहिं लूटन की दिशा निहार्यो। श्री गुर को कुछ ख्याल बिचार्यो॥ २५॥
राम कुइर की संगति जोई। अपने गुर की गात को जोइ।
रोकि रिखीकनि बैठे रहे। उठे न हाले[3], बाक न कहे॥ २६॥
ज्यों के त्यों टिक रहे बिचारे। अपर[4] सिख ले गमने सारे।
बीत गयो पुन केतिक काला। राम कुइर तन भई संभाला॥ २७॥
खोलि बिलोचन निज सिख हेरे। उठि गमन्यों प्रापति भा डेरे।
प्रचुरि[5] प्रसंग सकल महि भयो। नहीं तिहावल[6] लूटन कियो॥ २८॥
संगति सहित धीर को धारे। रहे सथित नहिं हाथ निकारे।
श्री गुजरी सुनि श्रोण मझारी। दुख सुख महिं सम बिती बिचारी॥ २९॥
कंचन माटी सम है जिन के। अलप बाति[7] इह क्या है तिनके।
धन्य धन्य माता जी कहैं। इह ब्रिति बडभागन ते लहैं॥ ३०॥
परमेशुर की मूरति सोई। हरख शोक बिनसे जिन दोई।
महिमा महां मानि मन मांही। अपन समीपनि साथ सराही[8]॥ ३१॥
बीत गयो दिन निस इस भांती। सौच शनानहिं पुनहि प्रभाती।
बैठे सतिगुर लाइ दिवान[9]। बंदहिं चरन कमल सिख आनि॥ ३२॥
राम कुइर सहि संगति आवा। करि पग नमो बैठि हरखावा[10]।
सतिगुर दरशन प्रेम महाने। दिवस जामनी जिन को ध्याने॥ ३३॥
सभि घटि घटि की ग्यातावारे[11]। पिखि संगति कौ बाक उचारे।
क्यों कराहु[12] तुम लीनहूं नांही। रही रिदे महिं स्वादन चाही[13]॥ ३४॥
सम चित राम कुइर दिशि देख। तुम क्यों कीनसि दंभ विशेख।
इक तो हमरी आग्या भई। दूतीइ बांछति बिधि निरमई[14]॥ ३५॥

---

1. शीघ्र, तुरंत 2. ढंग, स्वभाव 3. न हिले 4. दूसरे 5. प्रसिद्ध हो गया 6. कड़ाह प्रसाद 7. मामूली बात है 8. सराहना करते हैं 9. सभा 10. प्रसन्न होकर 11. जानने वाले 12. कड़ाह प्रसाद 13. इच्छा, चाह 14. दूसरे कड़ाह मन को रुचने वाला पदार्थ था

तउ तुमहुं ने दंभ कमावा। जिस ते मन को नहिंन थिरावा[1]।
याते तुमरे मेज़ मझारी। हुइ पखंड को बासा भारी॥ ३६॥
जिस कलजुग ते डर उर चीन। राम कुइर नहिं लूटनि कीनि।
सभि लोकन को जो कलि काल। प्रविशहि पौरन मारगि चाल[2]॥ ३७॥
सो इनकै पहुंचे इस भाइ। फांधहि कोटन को प्रविशाइ[3]।
किम बचाउ नहिं बनहि तुमारे। कलजुग बरतै[4] इसी प्रकारे॥ ३८॥
राम कुइर सुनिकै गुरबानी। हाथ जोरि करि बिनै बखानी।
हमरे घर कलि काल प्रतापू। हुइ प्रविशन इहु बखशहु आपू॥ ३९॥
परालबध को ओरक होही[5]। तन को त्यागन ह्वै जबि मोही।
कितिक काल तिस के पशचाती। सभि जग महिं बिथरहि बख्याती[6]॥ ४०॥
मम सुत के जबि सुत उपजाइ। तबि तुम वाक फुरहु सति भाइ।
'एवमसत' पुन गुरु बखानी। निज सिख की बानी कहु मानी॥ ४१॥
राम कुइर के भा जबि पोता। तबि इन के घर कली उदोता[7]।
करे कुकरम जगत महिं जानिय। बहुर बंस बिनस्यो पहिचानिय॥ ४२॥
नहिं तबि राम कुइर ने कह्यो। नहिं गुर ते बखशावनि चह्यो।
इस प्रकार नहिं अरज़ गुज़ारी। जिन की मति सतिगुर अनुसारी॥ ४३॥
इस प्रकार सतिगुर सु बिलास। करति अनंद पुरे सु प्रकाश।
सुनि सुनि आवहिं सिख अनेक। सेवहिं दरसहि लहैं बिबेक[8]॥ ४४॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'श्री राम कुइर साखी प्रसंग'** बरननं नाम चौतीसमों अंशु॥ ३४॥

---

1. स्थिर हुआ है 2. द्वारों में से चल कर अदर प्रवेश करता है 3. दाखिल हो कर 4. व्यवहार करेगा 5 अंतत: अवश्य होती है 6. विशेष रूप में 7. उत्पन्न हुआ 8. ज्ञान

अंशु ३५

श्री राम कुइर प्रसंग

दोहरा

अपर बारता कुछ कहौं राम कुइर की फेर।
सो सतिगुर की कथा कहु जानति जिम चखि हेर[1] ॥ १ ॥

चौपई

श्री गुर गोबिंद सिंह सुजाना। जग तारन सिखयन अघ हाना[2]।
तिन के निकट रहे सुख मानी। दरशन दरसहिं सुभ मति ग्यानी ॥ २ ॥
गुर भाणा जिन के मन भावैं। आठहुं जाम एक लिवलावैं।
गुर पग पंकज प्रेम अपारा। रिदै निरंतर रहि इकसारा[3] ॥ ३ ॥
तऊ गुरु जी करि निज माइआ। राम कुइर कहु मन भरमाइआ।
इस महि कुछ शंका नहिं कीजै। पूरब केतिक भे लखि लीजै ॥ ४ ॥
माया प्रबल भ्रमावन करै। अस नहिं को, तिस छिन रहि थिरै[4]।
सतिगुर दे निज हाथ बचावैं। सो उबरै[5] मन नहिं डुलावैं ॥ ५ ॥
काग भसुंड खगेश[6] जु अहैं। प्रभु समीपी जो नित रहैं।
बहुर बशिशटादिक ब्रह्म ग्यानी। इनकै भयो मोह जग जानी ॥ ६ ॥
तऊ सभिनि ते महिद[7] महाना। जिनके नहिं लेश अग्याना।
तिम इन के मन मोह उपावा। सुनहु कथा सो अघ बन दावा ॥ ७ ॥
इम श्री राम कुइर गुर सिख्य। तिस की कहौं कथा कुछ लिख्य।
श्री गोबिंदसिंह गुरु बर दसम। जिन के दिपत तेज की रिशम[8] ॥ ८ ॥
कठन कुदंड प्रचंड अगारी। धर्यो हुतो आगे इक बारी।
राम कुइर ने देखनि कीनसि। सतिगुर बल ते अधिकै चीनस ॥ ९ ॥
अति बलवान सरीर बिसाला। पुनहु धनुख की बिद्या वाला।
तिस ते भी नहिं ऐंच्यों जाई। इनको तन नहिं डील बडाई[9] ॥ १० ॥

---

1. आँखों के द्वारा देख कर 2. पाप नाशक 3. एक समान 4. स्थिर रहे 5. उधार होगा 6. गरुड़ 7. महान्, श्रेष्ठ 8. किरण 9. बड़े आकार वाला

अपनि ओज ऐंचन के लाइक। चहीयहि अस धनु ते तजि सायक[1]।
अरजन आदि प्रथम जे भए। तिन के धनु ऐसे सुनि लए।। ११ ।।
धर्‍यो कुदंड प्रचंड अगारी। क्या कारन—इम करति बिचारी।
तिस के मन की सतिगुर जानी। चहित दास को संसै हानी[2]।। १२ ।।
कह्यो कि त्यारी वहिर करावहु। गज बाजी चढ़िवे सजवावहु।
इम कहि राम कुइर संग लीनसि। सायक धनुख लीन जो पीनस।। १३ ।।
मंद मंद पग पंकज साथ। आइ वहिर ठाढे गुर नाथ।
करति प्रतीखन गज सज आवहि। कह्यो कि तबि लौ तीर चलावहिं।। १४ ।।
तिसी धनुश को ले जग नाइक[3]। संध्यो पनच[4] बिखै खर सायक।
मुशट हाथ सों गहि बहु गाढी। बूटी हरी दूर इक ठांढी।। १५ ।।
तिह उदेश करि ऐंचन कीनसि। सर भलका[5] लगि पूर सु लीनसि।
ऐंचे महां चाप चिररानो। तजै तीर उठि शबद भयानो।। १६ ।।
हत्यो निशानो गयो अगारी। धरनी धरयो सु पंख निहारी[6]।
बहुर[7] बाण ले अपर चलाइव। सहिज सुभाइक सभिनि दिखाइव।। १७ ।।
गज तयार ह्वै अयो न जावद[8]। तीर चलाइ दिखावति तावद[9]।
देखि देखि बिसमैं[10] हुइ रहै। बपू अलप, बल किम इन लहे।। १८ ।।
राम कुइर ने जानी बाति। रिदै बिसूरति[11] भा बहु भांति।
बिस्व[12] रचन पालन संहार। अति शकती धरि गुरु उदार।। १९ ।।
जिह सम जग महि अवर न बीआ[13]। तिस महि किम शंका करनीआ।
इंद्र आदि जिस आइसु[14] माही। चहैं सु करैं, मुरै किम नाहीं।। २० ।।
इतने महि हाथी शुभ आइव। चल्यो अचल[15] तिम शोभ सुहाइव।
झालरदार झूल झमकंता। जरी सडोर प्रकाश करंता।। २१ ।।
घंटन को ठनकार उठंता। गज गाहन सो अधिक सुभंता।
सिर पर सिरी[16] सु चामीकर[17] की। मनहुं काम[18] कारीगर कर की।। २२ ।।
दुति की हद हौदा बन रह्यो। आयो निकट गुरु ने लह्यो।
राम कुइर की गहि करि बाहूं। भे अति पास चढनि कहु ताहूं।। २३ ।।

---

1. तीर छोड़ना 2. संशय को समाप्त करना 3. जगत् के स्वामी, गुरु गोविंद सिंह 4. चिल्ला 5. फलक तक, मुखी तक 6. तीर के पंख दिखाई पड़ते हैं 7. पुन: 8. जब तक 9. तब तक 10. हैरान 11. दु:खी 12. विश्व, जगत् 13. दूसरा 14. आज्ञा 15. पर्वत के समान बड़ा 16. कलगी 17. सोने की 18. कामदेव

तबहि महावत गज बैठाइव। चढन हेतु गुर चरन उठाइव।
कर धरि राम कुइर के कंध। दीनसि भार दीनि गन बंधु[1] ॥ २४ ॥
लाखहुं मण को धरि करि भारे। बुढे अंस[2] बिना को धारे।
अपर जि होति जाति मिलि माटी। उर संदेह तिस कीनसि काटी ॥ २५ ॥
थिवै पैर[3] चलिवे जवि लागा। वैठे गुरु जाइ तवि आगा।
कह्यो कि आउ खवासी मांहि[4]। चढहु संग श्रीमुख कह्यो तांहि ॥ २६ ॥
हाथ जोरि बिनती तवि ठानी। जगत चराचर के तुम स्वामी।
सम वैठवि के उचित न मोही। महां अवग्या[5] मुझ ते होही ॥ २७ ॥
सुनि मुसकाने बाक बखाना। आउ आउ बैठहु इस थाना।
कहि बहु बारि अरूढनि कीना। चले पंथ गुर कहति प्रबीना ॥ २८ ॥
सिखी के सथंभ गिर जैसे। माया बायू पाय करि ऐसे।
शरधा थिरता ते चलि परैं। तऊ अपर क्या गिनती करैं ॥ २९ ॥
लाज भार ते नम्री होवा। राम कुइर नहिं ऊचो जोवा।
सुनहु नाथ! तव परवल माया। ब्रह्मादिक जिसने भरमाइआ ॥ ३० ॥
भए गुपाल आप जवि आछे। हरि ले गयो गोप सिसु[6] पाछै।
अपर लिए रचि. नाहिन जाने। तबि श्री क्रिशन रूप हरि माने ॥ ३१ ॥
अस माया ते आप बचावहु। राखहु निशचा नहिं डुलावहु।
ब्रह्मादिक भरमे जवि ऐसे। हम जैसनि की गिनती कैसे ॥ ३२ ॥
रावर ने निज बिरद संभारा। उर बिकार मम दूर बिदारा[7]।
भई जथा भाखी इहु तथा। अग्र कहौं किछ इन की कथा ॥ ३३ ॥
इक दिन बैठे लग्यो दिवान[8]। राम कुइर गुरु निकट सुजान।
चहुं दिशि थिर्‌यो खालसा तबै। दरशन लेति अनंदति सबै ॥ ३४ ॥
ब्रिध[9] बंस पर खुशी महांनी। करहिं सदा गुर सभिमन जानी।
जबि कबि संगति चलि करि आवे। दरशन करि अकोर अरपावै[10] ॥ ३५ ॥
तबि कलग़ीधर दें उपदेश। पहिरतु काछ रखहु सिर केश।
खंडे की पाहुल[11] अबि लीजै। रहित सहत हुइ शास्त्र रखिजै ॥ ३६ ॥
केतिक सिंह बिचारित रहैं। ब्रिध बंस को गुर नहिं कहैं।
सिर पर केश नहिं रखवाए। पहिरहिं चीरा, नहिं हटाए ॥ ३७ ॥

---

1. दीनों के बंधु ने 2. बाबा बुड्ढा की संतान के बिना 3. लड़खड़ाते पांवों के साथ 4. हाथी की अम्मारी में 5. गुस्ताखी 6. ग्वाल बालक 7. नष्ट कर दिया 8. सिखों की धार्मिक सभा 9. बाबा बुड्ढा की प्राचीन कुल परम्परा 10. भेंट अर्पित करते हैं 11. दो धारी कृपाण से तैयार किया अमृत

बूझनि समों जानि करि तबै। बोले सिंह बंदि कर सबै।
प्रभु जी[1] ! गुर घर के परधान। श्री मुख महिमा करहु बखान।। ३८ ।।
खुशी बिसाल आप की होवै। इह भी सरब रीति को जोवैं।
राम कुइर जी सिख विशेश। क्यों नहिं धारति हैं सिर केश।। ३९ ।।
इह सभि के मन संसै रहै। सकल खालसा उतर चहै।
दया सिंधु सुनिकै सभि बैन। राम कुइर की दिशि करि नैन ।। ४० ।।
बिकसति[2] श्री मुखबाक बखाने। उचित केश रखिबे सिख जाने।
इस के सिर पर भी बड केस। नित अंतर को वधहिं विशेश ।। ४१ ।।
अपरनि[3] के सिर ऊपर बाहिर। सभि के सकल बिलोकति ज़ाहर[4]।
इस के अंतर वधहिं हमेश। जाहिं तरे को दीरघ केश ।। ४२ ।।
किम बिन केश रहि इह सिख। कबहुक रखहिं सिंह भविख्य[5]।
भरम्यो जबि ते लजति रहै। तिस के उर की श्री गुर लहैं ।। ४३ ।।
तिस कारन ते भुज गहि पानी[6]। सभिनि बिखै मुख मधुर बखानी।
मोहि सरूप अहै सो तेरो। तेरो अहैं जु जानो मेरो ।। ४४ ।।
तोहि मोहि महिं भेद न कोऊ। एक रूप के तन है दोऊ।
हरि हरि जन द्वै इक हैं जैसे। श्री गुर गुरसिख लखीअहि तैसे ।। ४५ ।।
भेद लखति हैं जे इन मांही। परम रहस सु जानै नांही।
तुम सिखनि के हहु सिर मौर[7]। समता पहुंचि न सकिहै और ।। ४६ ।।
सदा एक रस ग्यानानंद। तुरीआ महिं थिरता जगवंद।
इस प्रकार कहि बहु बडिआई। सकल खालसे विखै सुनाई ।। ४७ ।।

इति गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते '**श्री राम कुइर प्रसंग**' बसननं नाम पैंतीसमों अंशु ।। ३५ ।।

---

1. गुरु गोविंद सिंह जी 2. प्रसन्न होकर 3. औरों के सिर पर 4. प्रकट 5. भविष्य में 6. हाथ से पकड़ कर 7. प्रमुख

अंशु ३६

सिख प्रसंग

दोहरा

राम कुइर की कथा मैं बरनी कुछक वनाइ।
अपर[1] गुरु इतिहास को सभि श्रोतानि सुनाइ ।। १ ।।

चौपई

इक सिख की साखी सुनि लेहु। जथा सिदक महिं तांहि सनेहु।
जोगा सिंह हुतो तिस नामू। रहै कितिक चिर सतिगुर धामू ।। २ ।।
देश पिशावर[2] तन की वासी। सेवा करहि बहुत गुर पासी।
दरशन करहि सिदक[3] को ठानहि। प्रभु रिझावनि[4] करहि महानहि ।। ३ ।।
केतिक वरख बीत जबि गए। तिसके मात पिता तहिं अए।
दरशन करिकै अरपि अकोर[5]। बोले जुगल हाथ करि जोरि ।। ४ ।।
महाराज इस को अबि ब्याहू। रह्यो समैं वहु रावरि पाहू[6]।
आइसु[7] देहु ब्याह करिवावे। बसहि धाम कुछ, पुन इत आवे ।। ५ ।।
श्री प्रभु सुनिकै सिख सन भाखा। जोगा सिंह कहां अभिलाखा।
हाथ जोरि तिन तबहि उचारी। मो प्रण रावर के अनुसारी ।। ६ ।।
जिम आइसु दिहु मैं तिम करिहौं। अपर न कान किस की धरिहौं।
क्रिपा सिंधु[8] करि क्रिपा उचारी। अबि तूं जाहु निकेत मझारी ।। ७ ।।
अपनो ब्याहु करावनि करौ। पहुंचहु हम आग्या सिर धरौ।
मान वाक तिन संग सिधारा। तरुनी तरुन हुती तिस बारा ।। ८ ।।
रच्यो ब्याह तिस को ततकाला। —मिलौं रैन महिं— चहै ब्रिसाला[9]।
महिद मदन[10] ते पीड़ति होवा। जाइ ससुर घर कीनसि ढोवा[11] ।। ९ ।

1. दूसरा, अन्य 2. सीमांत प्रदेश (पाकिस्तान) की राजधानी 3. श्रद्धा, निष्ठा 4. मन परचाना, प्रसन्न करना 5. भेंट 6. पास 7. आज्ञा 8. कृपा के समुद्र गुरु गोविंद सिंह 9. अत्यधिक इच्छा करता 10. बहुत अधिक काम-पीड़ित हुआ 11. बारात लेकर पहुंच गए

श्री प्रभु इक रन तांहि पिछारी । भंज्यो ऐसे वाक उचारी ।
इक दो फेरे तिय सों फिरे । तब मम हुकम देहु तिह करे ।। १० ।।
सो भी संग तहां चलि गयो । समा जामनी को तबि भयो ।
तिय सौं फेरा जवि इक फिर्यो । गुर को हुकम दिखावनि कर्यो ।। ११ ।।
पैर उठावहु पठि करि इसै ? श्री प्रभु लिख्यो एव तिस बिखै ।
जबि तूं हेरहिं हुकम हमारो । दिन कैं निस हुइ इतहि पधारो ।। १२ ।।
अपर काज को पग न उठावहु । देखति सभि तजि इत को आवहु ।
पढति अचंभै अति छिन भयो । नहिं फेरे हित पग अग[1] दयो ।। १३ ।।
सभि लोगन अरु पित के साथ । करी जनावनि गुर की गाथ ।
मो ते हुकम न मेट्यो जाई । नहिं फेरे मैं फिरों कदाई[2] ।। १४ ।।
पिता आदि सभिहिन समुझायो । कारज करि पुन गमनहुं धायो ।
ऐसी बाति न जग महिं भई । फेरे फिरति बहुर अटकई[3] ।। १५ ।।
सभि महिं होवहि हास हमारा । तोहि न लगहि इहां कुछ बारा[4] ।
सिख अरु सती समान पछानो । नैक मुरे मन धरम सुहानो ।। १६ ।।
इहु पटका लिहु फेरे देहु । मुझ सों बाक न कछु करेहु ।
इमकहिकर गुर दिशा पग डाला । पीडति मन को मदन बिसाला[5] ।। १७ ।।
तऊ न सिख सिदक[6] को हारा । तातकाल प्रभु ओर पधारा ।
पंथ उलंघति द्वावे देशा[7] । उतलावति[8] ही आइ प्रवेशा ।। १८ ।।
उर हंकार होइ कुछ आवा । बड उतम मैं करम कमावा ।
अपर कौन इस विधि करि सकै । प्रथम मिलनि त्रिय तजि गुर तकै[9] ।। १९ ।।
हुतो सुध उर भयो विकारा । श्री प्रभु सो नहिं सके सहारा ।
निज माया तबि प्रेरन करी । जिसते सिख की शुभ मति हरी ।। २० ।।
देश दुआबे पुरि हुशीआर[10] । रह्यो जामनी डेरो डारि ।
जहिं संध्या को बैठ्यो सोइ । सनमुख वेस्या तहां खड़ोइ ।। २१ ।।
अपने सदन चढी तिन देखी । मदन ब्रिती उर बढी विशेखी ।
खोडस बरसंनि की तन रूरा । सुंदर बदन चंदु जनु पूरा[11] ।। २२ ।।
द्रिग म्रिग से, स्रिंगार महिं सोहति । अतर लग्यों, बोलति मन मोहति ।
बेनी सरपन सी सटकारी[12] । चंपक बरनी, चंचल प्यारी ।। २३ ।।

---

1. आगे बढ़ाया 2. कदापि 3. रुक जाना 4. देर होना 5. अत्यधिक काम भावना 6. विश्वास 7. जलंधर और होशियारपुर ज़िला का क्षेत्र 8 अत्यधिक शीघ्रता से 9. गुरु की ओर देखे 10. पंजाब का एक प्रसिद्ध नगर 11. पूर्ण चंद्रमा के समान 12. लटक रही थी

कहौं कहा लगि सुंदरताई। सिह पिखति मन रह्यो लुभाई।
मिलौं जामनी महिं इह संग। करौं केल मद हरौं अनंग ॥ २४ ॥
परी राति बीती इक जाम। नीठ नीठ तन पीड़ति काम।
भयो त्यार ले धन को चल्यो। चित चाहति अति तिह सों मिल्यो ॥ २५ ॥
सिख की दशा गुरु तबि जानि। —भरम्यो करै धरम की हानि।
जे अबि हम न बचावहिं जाइ। अपर आनि को करै सहाइ ॥ २६ ॥
धरम नसे[1], सिखी नहिं रहे। सिखी बिना नरक को लहै।
औचक[2] जबि बिकार को होइ। उचिति बचाविन गुर को सोइ ॥ २७ ॥
इम बिचार करि श्री जगनाथा[3]। कंचन आसा गहि करि हाथा।
जामा बहु पालन को पाइ। वेसवाद्वार खडोए जाइ ॥ २८ ॥
जोगा सिंह देखि हटि रह्यो। न्रिप को चोबदार उर लह्यो।
इस को स्वामी अंतर होइ। मो संग मिलहि नहिं किम सोइ ॥ २९ ॥
चल्यो जाइ जबि इह निज डेरें। मिलौं आइ वेस्वा सौं फेरे—।
इम बिचार निज हय के पासा। थिर्‌यो जाइ[4] त्रिय[5] मिलावै आसा ॥ ३० ॥
पीड़ति मदन न निंद्रा आवे। त्रिय मिलिनि संकल्प उठावे।
बीते जाम बहुर चलि गयो। चौबदार सो हेरति भयो ॥ ३१ ॥
मन मुरझाइ दुखी हुइ मुर्‌यो। —अबि लौ नहिं महिपाल निकर्‌यो—।
गयो बिसूरति हय के तीर[6]। त्यों त्यों लगहि काम के तीर ॥ ३२ ॥
इह निकसै जबि भूप बिलंद[7]। मिलौ त्रिया सों, दहे अनंग[8]।
आज राति मैं केल मचावौं। मन भावति कै हिंय लपटावौं— ॥ ३३ ॥
एक जाम जबि राति रही है। जागति बैठे घाति लही है।
धन ले करि त्रिय द्वारे गयो। चौबदार थिर हेरति भयो ॥ ३४ ॥
बहु दुख पाइ हट्यो मुरझायो। —को नृप इस पर बहु बिरमायो[9]।
नहिं निकस्यो त्रै पहिर बिताए। अबि इह चार घरी ठहिराए ॥ ३५ ॥
निकस जाइगो अपने सदन। तबि मैं मिलौं हरौं मद मदन[10]।
निज डेरे पुन बैठ्यो जाइ। रही राति जबि गई बिहाइ ॥ ३६ ॥
अरणोदै[11] को समो पहूचा। बहु मनमथ ते मिलिबौ रूचा[12]।
तबि भी चौबदार सो खर्‌यो। हटि करि आइ तिमर तबि टर्‌यो ॥ ३७ ॥

---

1. नष्ट हो जाए 2. अचानक 3. भाव—गुरु गोविंद सिंह 4. जाकर खड़ा हो गया 5. स्त्री 6. दु:खी होकर अपने घोड़े के पास गया 7. बड़ा, श्रेष्ठ 8. काम भावना को शांत करूँ 9. मोहित होना 10. काम-भावना का मद 11. सूर्य चढ़ने का समय 12. चाहा

तम समेत[1] सिख को अग्याना। नास्यो, भयो प्रगास सु ग्याना।
बारि बारि मन अधिक धिकारा। बीत्यो हुतो ग़ज़ब[2] इह भारा ॥ ३८ ॥

जे करि चौबदार नहिं होता। इस मिस खात नरक महिं ग़ोता।
मैं सिखी इस भांति कमाई। गुर ढिग सेवति रह्यो सदाई ॥ ३९ ॥

आइसु लेइ ब्याहु को गयो। तहि गुर हुकम बिलोकति भयो।
खोड़स बरखनि की बर बाला। बेद लोक मत धरम बिसाला ॥ ४० ॥

अस त्रिय संग प्रथम को मेल। जो निशपाप मदन को केल।
सिख सिदक[3] राखिबे हेतु। चल्यो तुरत सभि तज्यो निकेत ॥ ४१ ॥

हम पछताइ ज़ीन हय पाइ। चढि अनंदपुरि की दिशि धाइ।
मारग लंघि सतद्रव तर्‌यो। आनि गुरु के पुरि महिं बर्‌यो[4] ॥ ४२ ॥

हय लंघाइ करि तूरन[5] गयो। जगत नाथ तबि देखति भयो।
समुख होइ करि बंदन ठानी। सतिगुर सिख कौ पिखि कहि बानी ॥ ४३ ॥

जोगा सिंह सदन ते आयो। पिखहु महा उर सिदक कमायो।
इम कहि करि बिगसे मद मंद। बारि बारि पुन भनैं मुकंद ॥ ४४ ॥

हसत बहुत अरु कहैं सु बैन। क्रिपा रसीले करि करि नैन।
हसहिं बिलास करहि बहुतेरे। निकट सिंह गन गुर के हेरे ॥ ४५ ॥

हाथ जोरि कीनसि अरदास[6]। श्री प्रभु रावर केर बिलास।
जानहु आप न हम कुछ जाना। हसन हेतु क्या करहु बखाना ॥ ४६ ॥

तबि गुर कह्यो बूझ लिहु इस को। ब्रिथा[7] आपनी कहि सभि किस को।
जिम बीती गति इस के साथ। जिम राज्यो प्रभु दे करि हाथ ॥ ४७ ॥

जोगा सिंह लखी गति सोए। —मम हित चौबदार गुर होए—।
समुझि बारता चरनी धर्‌यो। धन प्रभू दे हाथ उपर्‌यो ॥ ४८ ॥

आप समान न अपर[8] क्रिपाला। सदा दास के बनि रखवाला।
तजहु जिठाई[9] सिख के कारन। ज्यों ज्यों करिहो दास उधारनि ॥ ४९ ॥

नई न करहु सदा बनि आया। नामदेव को छापर छाया।
धने के बछुरे गन चारे। हित कबीर के बन बनजारे ॥ ५० ॥

तिम ही मम हित में चुबदारा। सेवक राख्यो बिरद संभारा।
मेरी कह्यो कहां छबि दै है। आप सुनावहु सभि सुनि लै है ॥ ५१ ॥

1. अंधकार के साथ ही 2. अनर्थ 3. विश्वास, निष्ठा 4. दाखिल हुआ 5. तुरन्त 6. विनय, प्रार्थना 7. वार्ता, गाथा 8. दूसरा 9. बड़ाई

जोगा सिंह ते सुनि करि ब्रिंद[1]। कहे खालसा कहो मुकंद।
तबि कलग़ीधर सकल सुनाई। तजि फेरे मम आइसु पाई।। ५२।।
पुरि हुशीआर[2] आइ करि डेरा। बिरम्यो[3] बारबधू[4] पुन हेरा।
जे मैं नहिं बचावों तहां। आग्याकारी गुर सिख महां।। ५३।।
बिगरै धरम, नरक महिं जै है। मुझ गुर करे कहां फल पै है।
या सम सिख आइसु[5] अनुसारी। जे करि भूल जाइ इक बारी।। ५४।।
तौ गुर तिसको लेति बचाइ। किसू बिपद महिं जे पर जाइ।
इस के सम सिख, गुर सम मोहि। क्यों न ऊच पद प्रापति होहि।। ५५।।
इम कहिं क्रिपा द्रिशटि ते हेरा। ग्यानवान सिख करि तिस बेरा।
घर को पठ्यो[6], गयो ततकाला। करहु ग्रिहसत की रीति बिसाला।। ५६।।
कितिक समैं बसि आयो फेर। रह्यो समीपो दरशन हेरि।
अंत समैं ऊचो पदि पायो। चरन कमल गुर केर समायो।। ५७।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'सिख प्रसंग'** बरननं नाम खशट त्रिसती अंशु।। ३६।।

---

1. जन समूह, सभी उपस्थित लोग 2. पंजाब का एक प्रसिद्ध नगर 3. मोहित हो गया 4. वेश्या 5. आज्ञा 6. भेज दिया

अंशु ३७

अनंदपुर तजन प्रसंग

दोहरा

इस प्रकार श्री सतिगुरु केतिक द्यस बिताइ ।
करे पराजै गिरपती बिजै सुजसु बहु पाइ ॥ १ ॥

कबित

देशन बिदेश मैं विशेश जसु फैल रह्यो, गुरु के मनिंद[1] नहीं सूरमा जहान में ।
सैलन को बल सारो, तीन लछ सैक जोरि, घाल्यो जोर घोर, नहिं आवति बखान मैं ।
केते मारि लीनि भट, घाइल बिसाल कीनि, हारे हीन हैव कै गए आपने सथान मैं ।
प्रभु जी दीवान मैं, कमान बान पान[2] मैं, बिराजैं गुनग्यान मैं कि दान सनमान मैं ॥ २ ॥
जहां कहां फैल्यो जसु चांदनी बितान मानो, सभि पर छायो जैसे छत्र सेत[3] सीस पर ।
हीरा सों प्रकाश रह्यो, सुधा सम चाहै शंभु, चौर सम झूलै समुदाइ अवनीश[4] पर ।
बीच सति संगति ते हसन की पंगत ज्यों फूल रही, मालती सु देश बीच घर घर ।
सिंह जहिं सुनहि, बिरमाइर हैं[5] मन सबै जैसे ह्वै चकोरगन, लोभैं रजनीश पर ॥३॥
सुनति गिरीश कै गिरीशन[6] के नर गन सहि न सकति मनमूढ जर बर जाति[7] ।
शोक फैल्यो सैलन महिं[8] सूरमे मरे हैं बहु, संकट पर्यो है सभि देश भे बिशेश घात ।
भीमचंद मंद दुख पाइकै पठाए नर जेतिक नरिंद परबत के बिलंद[9] पाति[10] ।
घायलन घाव मिले घोर जे घमड चंद, आयो सो हंडूरीआ हंकार रजपूत जाति ॥४॥

ललितपद छंद

बीर सिंह जसपाली आनुज[11] पुन मंडसपति[12] आयो ।
सिवर[13] करे कहिलूर दून[14] महिं बहु सनमान करायो । ५ ॥
अगले द्योस सभा करि इकठे लै लै निज परधाना ।
खड़ग, सिपर, तरकश, धनु धरि करि चमूं सुभट संग बाना[15] ॥ ६ ॥

---

1. समान 2. हाथ में 3. सफेद 4. धरती के राजाओं पर 5. मोहित हो रहे हैं 6. पहाड़ी राजा लोग 7. जल बल आते हैं 8. पहाड़ों में 9 बड़े महान् 10. पत्र 11. छोटा भाई 12. मंडी का राजा 13. शिविर 14. घाटी, वादी 15. वाण अथवा वेशभूषा

फरश बिसालहि गिलम[1] गलीचे हेम छरीधर आगे।
बैठ्यो भीमचंद सनमानति कहै मधुरता पागे ॥ ७ ॥
रह्यो अनंदपुरि सल्य सु छाती करकति बहु दुख दानी।
नहिं जामनी लोचन निंद्रा रुचै न भोजन पानी ॥ ८ ॥
मरे संबंधी काज सर्‌यो नहिं धन बहु खरच हंगामे[2]।
चमूं हती आधी नहिं रहि गई सभि पहुंचे जमधामें ॥ ९ ॥
बोल्यो तबि घमंडचंद सभि मैं पंमा तोहि प्रधाना।
चलनि लगे जबि आनंदपुरि ते तिन तबि कीनि बखाना ॥ १० ॥
जतन अनंदपुरि को छुटवावनि[3] मैं जानति हौं आछे —।
अबि क्यों मोन सभा महिं बैठ्यो करहि कहां मति पाछे ॥ ११ ॥
कहहि मंत्र सभि सुनहु बिचारहु उचित होइ कर लीजैं।
ज्यों क्यों करि सतिगुरु निकारहु सभि की आस पुरीजैं[4] ॥ १२ ॥
बिना लरन ते निकसै जैसे सो उपाइ है नीका[5]।
जंग करै ते सरै न कारज परै सुजसु नित फीका ॥ १३ ॥
जिती चमूं तुम अग्र बटोरी[6] तिती न अबि किम होवै।
कातुर भए न मुख उत करते म्रितक हजारहु सोवैं ॥ १४ ॥
सुनि पंमे सभि बिखै बखानी गुरु धरम दिढ धारी।
हिंदुनि बिखै धेनु कै दिज बर इस ते परे न भारी ॥ १५ ॥
देहिं गऊ की आन[7] अनंदपुरि त्यागहु इत को बासा।
अपर[8] थान महिं थिर ह्वै रहीऐ मिटे बाद को त्रासा ॥ १६ ॥
केतिक सुनि करि कहैं न नीकी, महां दीनता धारी।
राजे होइ रंकता ठानहु निरबल निरधन कारी ॥ १७ ॥
आगे जसु को चंद चड़ायहु[9] मार खाइ हटि आए।
अबि पंमे की मति कौ लैके लेहु परमपद पाए ॥ १८ ॥
केतिक कहैं भली इहु ठानहु मिटे मरन को त्रासा।
हटहि जंग नित परति बखेरा सुभटनि केर बिनाशा ॥ १९ ॥
हीन भए ते क्या घटि जै है मिटै उपाधि[10] सदा की।
पंमे शुभ मति करि बिचारन रहै न कारजु बाकी ॥ २० ॥

---

1. ऊनी कालीन 2. युद्ध में 3. मुक्त स्वतंत्र कराने के 4. पूरी की जाए 5. ठीक, उचित 6. एकत्रित की 7. कसम, सौगंध 8. दूसरे, अन्य 9. मुहावरा है व्यंग्य के रूप में—यश का चंद्रमा चढ़ाना 10. दु:ख

भीमचंद ते आदि गिरेश्वर कह्यो आज निस मांही।
करि हेरहु जे सिध हुइ कारज आनंदपुरि छुटि जांही ॥ २१ ॥
सभि जहान जानहिं जसु करि है पुरि ते गुरु निकासा।
धेनु आनि[1] को को को जानहि लखहिं कि पायो त्रासा ॥ २२ ॥
इम मसलत करि उठे सकल ही पंमे उदम लीना।
सुंदर रची चून की धेनू[2] चार चरन तिह कीना ॥ २३ ॥
कान, बिखान[3], पुंछ और प्रिशटी सगरे अंग बनाए।
तिमर समेत राति जबि होई सीस उठाइ सिधाए ॥ २४ ॥
आनि अनंदपुरि द्वार हुतो जहिं गोमै लिप सथाना[4]।
खरी करी[5] बिधि खरी तहां तबि डोरी गर बंधाना[6] ॥ २५ ॥
पूर्यो चौंक धरे कुछ अछत[7] केसर चंदन माला।
अरचन करिकै सभि बिधि पंमा कूर कुचाला ॥ २६ ॥
लिख्यो पत्र पर आन[8] गऊ की त्याग अनंदपुरि जावहु।
राजन को अरमान[9] रहै जग विकट बसहु सुख पावहु ॥ २७ ॥
एक बार तजि कितिक समो महि बहुर बसहुं पुरि आई।
इम लिखि करि कागद ढिग रखि करि वनि तसकर डरपाई ॥ २८ ॥
गए अपनि घर रात अंधेरी, हेर्यो किनहुं न जाना।
सुपति रहे नर घर घर अपने भई प्राति तम हाना[10] ॥ २९ ॥
गए द्वार जबि कर्यो बिलोकनि इह क्या किस ने कीना।
इक दोइ त्रै चौथे पिखि पंचम बिकसे कछू न चीना ॥ ३० ॥
श्री कलग़ीधर निकट गए तबि दौरति जाइ बताई।
प्रभु जी ! पुरि के पौर अग्र की किन इह बनत बनाई ॥ ३१ ॥
कागद धर्यो न हम लर छूव्यो, चहहु जि लिहु मंगवाई।
धेनु चून की लिप धरी धरि कछू न जान्यो जाई ॥ ३२ ॥
सुनि प्रभु दास पठ्यो पुरि पौरहि[11] जाइ तबहि ले आवा।
कागद तबहि पढ़ावनि कीना जबि लिखिओ सुनि पावा ॥ ३३ ॥
आन[12] गऊ की सहि न सकहिं प्रभु ततछिन कीनस त्यारी।
कूच करन को बज्यो दमामा सभि के श्रुत धुनि डारी ॥ ३४ ॥

---

1. शपथ 2. आटे की गाय बनाई 3. सींग 4. गोबर से लिपा स्थान 5. खड़ी कर दो 6. गले में रस्सी बाँध दी 7. चावल 8. शपथ 9. राजा लोगों का मान रह जाए 10. अंधकार नष्ट हो गया 11. नगर के द्वार पर 12. शपथ

गज बाजनि पर ज़ीन पवाए कर्‌यो त्यार सरवंसा[1] ।
उदेसिंह अरु आदि दया सिंह मिले ब्रिंद जिम हंसा ॥ ३५ ॥
चरन सरोजन पर करि बंदन हाथ बंद करि भाखा ।
प्रभु जी ! किम त्यारी करिवाई कहां चलन अभिलाखा ॥ ३६ ॥
काची मति के कुमत पहारी[2] तिनहुं प्रपंच पसारा ।
अपजस जग मै लजिति खिझिए तुम को चहति निकारा ॥ ३७ ॥
पाप पुन, दुख सुख इहु दुंद जु, हरख सोग नहिं दोऊ ।
गुरु पुरख को तिह थल[3] बासा जहां न पहुंचे कोऊ ॥ ३८ ॥
इम शत्रु की सपथ दए ते उचित न कितहूं जाना ।
दोखी तुमरे पाप मती नित पै हैं फल हुइं हाना ॥ ३९ ॥
सपथ दोश तुम लगहि न कोऊ नहिं तजीअहि पुरि धामा ।
पीछे प्रबल होइ रिपु परि है लाखहुं संघर कामा[4] ॥ ४० ॥
सुनि कलगीधर सभि सन भाख्यो कहो जथारथ बाती[5] ।
तऊ विचारहु लाखहु शत्रु हारि परे सभि भांती ॥ ४१ ॥
तजै शसत्र खग तोप तुपक सर भए दीन घिघिआए ।
अपर उपाइ बन्यों नहिं कोऊ बल को तजि समुदाए ॥ ४२ ॥
होइ रंक सम दई सपथ गो, हैफ[6] जु राज समाजा ।
मम जैसे छत्री ना मानहिं तौ भी नीक न काजा ॥ ४३ ॥
बल ते चह्यो अनंदपुरि लैवे चल्यो न बस किसी भांति ।
अबि निरबलता धरि अभिलाखे सभि सैलप बलि शांति[7] ॥ ४४ ॥
जे हम[8] धेनु सपथ नहिं मानै आन कौन तबि माने ।
दयासिंह ! चित समुझि विचारहु रिपु जीवति हति जाने[9] ॥ ४५ ॥
राजन को जीवन अबि धिग है शसत्र गहि न धिग होइ ।
हमरो तो आनंदपुरि घर है इस महिं अपर न कोई ॥ ४६ ॥
चिंता करहु न, धरम धरहु निज, सभि किछु तुमरे हाथा ।
जग महि अपजसु राजन केरा, मरे नरक दुख साथा ॥ ४७ ॥
कहि इत्यादिक बहु समुझाए बहुर न सिंहन भाखा ।
कारण करण सरब महिं समरथ करहु जथा अभिलाखा ॥ ४८ ॥

---

1. सर्वस्व 2. पहाड़ी राजागण 3. तीनों स्थानों पर 4. युद्ध में काम अएंगे, अर्थात् मारे जाएंगे 5. यथार्थ बात कही 6. खेद की बात है 7. सभी पहाड़ी राजाओं का बल नष्ट हो गया है 8. यदि हम 9. जीवित अवस्था में ही मर गए

सकल समाज साथ ले सतिगुर सैना सिंहन केरी।
भए त्यार आनंदपुरि छोरनि हय अरुढि तिस बेरी ।। ४९ ।।
निकसि चलो, जबि बज्यो दमामा आगे भए गुसाई[1] ?
अपर किसू के नहिं मन भावै घर त्यागनि समुदाई ।। ५० ।।
इतने लरे मरे संग शसत्रनि, बल करि पुरि को राखा।
अबि सुखेन ही तजि करि गमने कहां गुरु अभिलाखा ।। ५१ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'अनंदपुर तजन प्रसंग'** बरननं नाम सपत त्रिसती अंशु ।। ३७ ।।

---

3. गुरु गोबिंद सिंह से अभिप्राय

अंशु ३८

जंग प्रसंग

दोहरा

करयो कूच सतिगुर चले संग खालसा वीर।
त्रिजै नाद रणजीत को सुनति अधीरज भीरु ॥ १ ॥

पाधड़ी छंद

तबि कह्यो खालसे जोरि हाथ। न्रिप दई आन[1] पुरित्याग नाथ।
पलटा सु लेहु अपना जरूर। लुट ग्राम पाइ उजरै कहिलूर ॥ २ ॥
सुख संग अबै किम बसन देंहि। करिहैं उजार ग्रामानि थेह।
सुनि करि सु बाक सतिगुर बखान। लिहु मार लूट करी अहि निदान[2] ॥ ३ ॥
जा लरन आइ हनीऐ तुफ़ंग। तबि गयो खालसा करनि जंग।
निरमोह नाम जिह ठा सथाना। उतरे सुप्रिथी पर[3] गुर सुजान ॥ ४ ॥
जबि लुट्यो देश गिरपतिनि केर। शत्रुनि सैन पहुंची बडेर[4]।
भेजे समूह नृप भीमचंद। जिह संग हंडुरी भूप चन्द ॥ ५ ॥
सगरे गिरीश मन अधिक चाव। नहिं दुरग कोट मावासे थाव[5]।
इहु भई बहुत आछी लखेह। गुर अनंदपुरा तजि दीनि ग्रेह ॥ ६ ॥
नहिं परति ज़ोर, ह्वै जतन नाहि। लरि करि सु मरें भट अनिक तांहि।
मिलि मिलि गिरीश इम अनंद पाइ। पैदल तुरंग दीनसि पठाइ ॥ ७ ॥
जेतीक सैन बाईस धार[6]। दुदंभि बजाइ हथ्यार धारि।
चलि मनो ओरड़ी[7] गंग धार। अनगन तुफ़ंग खर खड़ग धारि ॥ ८ ॥
गन बजे ढोल पटहे[8] निशान। भेरिनि भुंकार तुररी निशान।
उत पाइ खालसे लूट मार। सभि लए पदारथ करि उजार ॥ ९ ॥
कहिलूर दूण महिं धूम धाम। इम परो मार भजि तजति धाम।
जो अरहि बेग ही मार लेति। छूटे तुफंग बड जंग खेत ॥ १० ॥

---

1. शपथ 2. अंततः 3. बिना किसी गढ़ के आश्रय के बिना 4. अत्यधिक मात्रा में 5. आश्रय लेने का स्थान 6. बाईस विभिन्न रियासतों की 7. उछल पड़ी 8. नगारा, बड़ा ढोल

घोरनि नचाइ मोरनि मनिंद[1]। कोरनि बनाइ[2] सूरनि बिलंद[3]।
तोरन रिपून फोरन सु अंग। ओरन उभै[4] सु छोरनि तुफंग ॥ ११ ॥
तबि हुइ मुकाबले दल दुऊन। प्रेरे समीर जिम जलद ऊन[5]।
करका समूह गोरी गिरंती। बारूद अगनि तड़िता दिपंति[6] ॥ १२ ॥
इक बारि छुटी शलखां कराल[7]। तड़भड़ सु नाद सुनते बिसाल।
दिशि दुहन मार माची विशेश। छणकंति गजन रण कै अशेश ॥ १३ ॥
भरि मुशट बरुद डालति उताल[8]। गुलका[9] सु डालि ठोकति बिसाल।
भरि तुरत पलीते पर जमाइ। तोड़ा उभारि कल पै टिकाइ ॥ १४ ॥
करि दसतरवां[10] रिपु तन तकाइ। डांभैं शिताब नहिं कर डुलाइ।
जबि लगहि जाइ नहिं देर कोइ। गिर परहि भूम निज प्रान खोइ ॥ १५ ॥
असवार धवाइ हय को शिताब। छोरति तुफंग कर करति दाब।
रिपु को गिराइ कसि लेति फेर। पुन करति नेर ततकाल गेरि ॥ १६ ॥

रुणझुणा छंद

चलहिं तुफंगा। गुलकन संगा।
लगि लगि अंगा। करि करि भंगा ॥ १७ ॥
मुरछति होए। धर पर सोए।
मनहुं निहाली। बरन सु लाली[11] ॥ १८ ॥
गिर बहु लोहू। बहुबल होहू।
मुख मुरझाने। हति हुइ प्राने ॥ १९ ॥
रुपि रुपी आगे। नहिं डरि भागे।
चरन जमाए। नहिन हिलाए ॥ २० ॥
तकि तकि गोरी। अरि दिशि छोरी।
उर सिर फोरी। कर पग तोरी ॥ २१ ॥
थल थल रोके। दल खल ढोके।
खलभल होवा। अति भै जोवा ॥ २२ ॥
रन महिं मारे। सुभट करारे।
बड़ बरिआरे। टरति न टारे ॥ २३ ॥
झटपट जुटे। कट कटि कुटे।
लप पट हुटे[12]। मुख लगि टुटे ॥ २४ ॥

---

1. समान 2. पंक्तिबद्ध होकर 3. महान्, बड़े 4. दोनों ओर से 5. झुक कर 6. बिजली चमकती है 7. भयानक बूछाड़ 8. शीघ्र 9. गोलियां 10. हाथ स्थिर करके निशाना बाँधना 11. धरती लाल रंग की हो गई 12. द्वंद्व युद्ध में लीन हो गए

सटपट धाए। रकत भिगाए।
खड़ग नचाए। तन रिपु लाए।। २५ ।।

साबास छंद

गहति कमानहि। धनु खर बानहि।
करि बल तानहि। तकत निशानहिं।। २६ ।।
रिपु गन हानहिं। लगति किकानहि[1]।
तजहि सु प्रानहि। तजति न थानहि।। २७ ।।
हुइ हथ वथहि। खिलति पलथहि[2]।
गहि गहि मथहि। बहु बल सथहि।। २८ ।।
मिलि ललकारति। सिपर संभारति।
खड़ग प्रहारति। कटि कटि डारति।। २९ ।।
तुपक कड़ाकहि। हतहिं सु ताकहि।
मिलि भट प्रेरति। कित कित टेरति।। ३० ।।
हय बर फेरति। रिपु हति गेरति।
सुभट निवेरति। रिस द्रिग हेरति[3]।। ३१ ।।

दोहरा

अधिक व्रिधि[4] को क्रुधकरि जुव मध बहु रुधि[5]।
जनु दूजो भारथ भयो लरति बीर बुधि सुध।। ३२ ।।

ललितपद छंद

उदे सिंह अरु धरम सिंह भट साहिब सिंह संभारे।
मुहकम सिंह टेक सिंह मिलिकै ईशर सिंह प्रहारे।। ३३ ।।
आलम सिंह तजहि सर खर गन दया सिंह गुर तीरं।
साहिब चंद बीर रसमाता गिनै न रिपु को बीरं।। ३४ ।।
बखश सिंह बखशीश सिंह द्वै फतेसिंह[6] असुफेरा।
इत्यादिक सभि सिंह भनै को क्रुधति रिदै घनेरा।। ३५ ।।
उत ते भूपचंद हंडूरी बीर सिंह जसपाला।
भीमचंद प्रेरे सभि राजे दे दे धीर बिसाली[7]।। ३६ ।।
राणे गन मीएं[8] जिन संग्या मिल हजारहुं आए।
सैना सकल गिरीशनि केरी बहुर प्रजा समुदाए।। ३७ ।।

---

1. घोड़ों को 2. द्वंद्व युद्ध की विधियाँ 3. क्रुद्ध आँखों से देखते हैं 4. बहुत अधिक 5. लीन हो गए 6. गुरु जी के योद्धाओं के नाम 7. अधिक धैर्य दे कर 8. मियाँ कहलाने वाले राजपूत

कोप कटोची अरु चंब्याली कुलू कैंठल वाले[1]।
मिल गुलेरीआ गूजर रंघड़[2] जित कित आइ बिसाले ।। ३८ ।।
गिनौं गिरीशन केतिक संग्या बाइस धार आए[3]।
बाजति ढोल बोलि ललकारे टोल टोल[4] हुइ धाए ।। ३९ ।।
जुदी जुदी निज मिसल[5] बंधि करि समुख खालसे होए।
बज्यो लोह सों लोह करारा केतिक धर मरि सोए ।। ४० ।।
लोथन[6] ते पूरन थल होवा केतिक परे कराहैं।
केतिक जल जाचति दुख आरति बजी बंदूक महां है ।। ४१ ।।
क्रुधति भयो खालसा अतिशै आन[7] दई निकसाए।
कपटी, दुशट, अनिशटी[8], कंटक मारि मारि उथलाए ।। ४२ ।।
क्रिपा सिंधु काली तबि कड़की श्रोणत पान करंती[9]।
हड़ हड़ हसति दंत ते चरबति हाडनि मास भखंती ।। ४३ ।।
फिरी जोगनी वाल खिलारति पी पी रकत डकारे।
नाचति मिलि धमाल[10] को घालति खुशी करैं परवारे ।। ४४ ।।
धुखि धुखि उठे मसाण पुकारे, भूत प्रेत आनंदे।
ताली बजहि भवाली लेते[11] काली माल बनंदे ।। ४५ ।।
ग्रिध ब्रिध डाकन डकराई काक कंक[12] की कूकैं।
स्याल पुकारसि, स्वान खाति पल ब्रिंद ब्रिंद हुइ ढूकैं ।। ४६ ।।
कितिक कटे कर महित[13] खड़ग के करे रुंड सिर काटे।
पग जानू ते काट काट करि सुभट गिरनि के डांटे ।। ४७ ।।
फूटे मूंड लगी गन गुलका ज्यों हांडी पटकंती ।।
तुंड वढे[14] किह फूटे लोचन, पुंज पुकार करंती ।। ४८ ।।
तोमर, सेल, सैंहथी, सांगन खैंचे खड़ग मयानों[15]।
अधिक क्रोध ते पग न फिरैं[16] इक कटि कटि परैं निदानों ।। ४९ ।।
भयो भयंकर संघर भारो छूछे[17] तुरंग फिरंते।
आयुध ते संकीरनु बनु भा[18] लोथन पोथ करंते ।। ५० ।।

---

1. पहाड़ी रियासतों के नाम 2. मुसलमान राजपूतों की एक जाति 3. बाईस विभिन्न रियासतों के राजा 4. दल बना बना कर 5. गुटबंदी करके 6. शव 7. शपथ 8. अहित करने वाले 9. रक्तपान करती है 10. नाच करती हैं 11. चक्कर काटते हैं 12. एक मांस भक्षी पक्षी 13. बड़ी 14. काटे गए 15. शस्त्रों के नाम 16. पाँव जमा कर लड़ते हैं 17. खाली, सवार रहित 18. शवों और शस्त्रों से वन ढका गया

कहीं कहां लगि जुटे झटापट सटपट भट कट डाटे ।
लट पट ह्वै कै मिटे न अटके नहिं सटकैं[1] तन फाटे ।। ५१ ।।

लरति लरति रवि असत गयो जबि हटे पहारी काचे ।
लोथ[2] संभारि मिल्यो दल सिंहनि आइ पिखे गुर साचे ।। ५२ ।।

आयुध छीन हज़ारहुं आने अपर[3] वसतु गन लूटे ।
मारि उजारे ग्राम दूण के अरे अग्र सो कूटे ।। ५३ ।।

ले करि फते खालसा आयो डेरे बिथरि[4] लगाए ।
मनहु केहरी मिले दूण महिं सतिगुर फते बुलाए ।। ५४ ।।

त्रासति भए पहारी दीरघ दूर जाइ थल हेरा ।
परम दुखी हुई श्रम अति लरते घालि दीनि तबि डेरा ।। ५५ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'जंग प्रसंग'** बरननं नाम अशट त्रिसती अंशु ।। ३८ ।।

---

1. वहां से पीछे नहीं हटे 2. शव 3. दूसरी 4. विस्तृत करके, फैला कर

अंशु ३६

डेरा करन प्रसंग

दोहरा

उचे थल पर सतिगुरु डेरा दियो लगाइ।
थिरयो[1] खालसा जाइ करि फते जंग ते पाइ ।। १ ।।

चौपई

कलग़ीधर के पग सिर धरि धरि। परम प्रेम ते दरशन करि करि।
थिर्‌यो[2] खालसा श्रम परहर्‌यो। किनहुं शनान सुचेता कर्‌यो ।। २ ।।
घाइल साल पत्र[3] को पाइ। निज घावन पर तत छिन लाइ।
मिटी पीर मिलि मास गयो है। लरिबे को सावधान भयो है ।। ३ ।।
जो मरि गए सु दीने दाग़[4]। बसे सूरग ह्वै कै बडभाग[5]।
वरती देग[6] सरब को जबै। खान पान करि त्रिपते तबै ।। ४ ।।
केतिक सिंह अगाऊ ह्वै कै। जागति रहे सुचेता[7] कै कै।
नमसकारनी[8] त्यागति रहै। जिनको सुनि सुनि नृप डर लहैं ।। ५ ।।
उत राजन बहु संकट पाए। मरे संबंधी जिन समुदाए।
कितिक रुदति हैं डेरे माहि। भ्रात पुत्र पित मरिगे जांहि ।। ६ ।।
किन भोजन खाए नहिं खाए। अधिक शोक जिन बिखै समाए।
प्रजा कि सैना जित कित होवै। जिनके सनवधी रण सोवै ।। ७ ।।
निजा भयंकर तिन को होई। तड़फहिं रण थल घाइल कोई।
नहिं उठावने पाए सोइ। लरति भयो तम, मिटिगे दोइ[9] ।। ८ ।।
परे बिसूरीत[10] हैं बिच डेरे। खान पान के जाहिं न नेरे।
केतिक करहिं प्रबोधन काहूं। —यही रीति होवहि रण माहूं ।। ९ ।।

---

1. स्थिर हुआ 2. स्थिर हुआ 3. घाव भरने वाला एक विशेष पत्ता 4. जला दिए 5. भाग्यशाली 6. जब भोजन सब में बांटा गया 7. सावधानी के लिए 8. बंदूकें 9. दोनों अपने अपने स्थानों को चल दिए 10. दुःखी

भीमचंद को गारि निकारहिं। इह गिर राजन जरां उखरहि[1]।
गुर सन रचि ब्रिरोध मरिवाए। अचलनि[2] को नर रहिन न पाए ॥ १० ॥
सरब लराइ आप रहि पाछे। बिधवा गिर त्रीयनि को बांछे[3]।
गुर कै कमती[4] होइ न कोई। चहुं दिशि ते गन सिख हुइं सोई ॥ ११ ॥
लै लै पाहुल[5] जंग मचावैं। नहिं दरमांहा[6] गुर ते पावें।
कहां रीस प्रभु की इह करै। नाहक करि बिरोध लरि परै ॥ १२ ॥
प्रजा सैन को कियसि बिनासा। उपज्यो बंस बंस महिं बांसा[7]।
इम रोवति अरु करति ब्रिलापा। जागति रहे धरे डर आपा ॥ १३ ॥
को को खान पान करि सोवा। अपर सकल हूं संकट जोवा।
रजनी करी बितीत दुखारै। बैठे जागति भई सकारै[8] ॥ १४ ॥
सौच शनान खालसे ठानी। ऊची धुनि ते पठि गुरबानी।
जथा बिपन महिं मुनि समुदाया। बेद घोख को[9] पठति उठाया ॥ १५ ॥
आसावार रबाबी[10] गावैं। मधुर म्रिदंग रबाब बजावैं।
राग रागनी सुंदर नाना सुर सर बिखम ऊच लघु जाना ॥ १६ ॥
परमेशुर की सिफत बिसाला। सुख लोक द्वै सुनहिं रसाला।
सतिगुर ठानी सौच शनाना। बैठे इक आसन करि ध्याना ॥ १७ ॥
भई प्रभाति खालसा आइ। बैठि दिवान[11] महान लगाइ।
ब्रिती टिकाइ रंग इक राते। श्री गुर चरन प्रेम महिं माते ॥ १८ ॥
दिवस चढ्यो गुर नयन उघारे। शसत्र सु बसत्र बिभूखनि धारे।
खड़ग सिपर सिंहन तन लाए। गहे तुपक कट कसी सुहाए ॥ १९ ॥
प्रभु जी ! आइसु[12] देहु चढनि की। दुशटन को करि मार कढनि की[13]।
मारे काल[14] बिहोशी धरे। लोथैं[15] परे घने रण मरे ॥ २० ॥
आज निवेरहिंगे भलि भांति। भाजहिं फूटति सिर अरु छाती।
वड घमसान खालसे घाला। दुरजन को दिन बित्यो दुखाला ॥ २१ ॥
सुनि सतिगुर तबि धीरज दीनि। संहर महां प्रथम जो कीनि।
श्रमति होहिं भट सकल तुरंग। आज असूदे[16] बनि के अंग ॥ २२ ॥

---

1. जड़ें उखाड़ रहा है 2. पहाड़िए 3. पहाड़ी स्त्रियों को विधवा चाहते हैं 4. कमी, त्रुटि 5. अमृतपान करके 6. वेतन 7. बांसों में जिस प्रकार अग्नि स्वयं निकल पड़ती है 8. प्रात: काल 9. ध्वनि उठाते हैं 10. मुसलमान गायक 11. सिखों की सभा 12. आज्ञा 13. मारकर निकालना 14. कल, गत दिवस 15. शव 16. सुखी, आराम करें

बहुर जंग की कीजहि त्यारी। मरदहु फेर शत्रु नृप भारी।
इम कहि करि सभि सिंह टिकाए। डेरे थिरै[1] महां सुख पाए॥ २३॥
भीमचंद उत जागति भयो। अपनि न्रिपन को दल पिखि लयो।
सहिम बिसाल होइ सभि रहे। लरित सकल दिन संकट लहे॥ २४॥
जे उबरे सो दुखी विसाले। मरे जंग नहि लोथ उठाले।
घाइल परे सैंकरे ऐसे। केतिक बचे, मरण हुइ जैसे॥ २५॥
करे संभारनि धीरज दीने। केतिक को धन बखशनि कीने।
सिरे पाउ केतिक पहिराए। बैठ्यो महां दिवान[2] लगाए॥ २६॥
पठि नर सगरे नृपत हकारे[3]। उठि उठि करि आगे सतिकारे।
मिलि मसलत[4] करि कशट सुनाए। आनंदपुरि को तजि गुर आए॥ २७॥
हुते वहिर भीम सिंह सु थोरे। भयो जंग सुभटनि किय ज़ोरे।
दल बिसाल हम सगरो ढोवा। तऊ खालसा रुप्यो खलोवा॥ २८॥
मरे सैंकरे घाइल होहि। नहिं पलाइन, लरहिं गु क्रोहि[5]।
भई बिहाल बाहनी सारी। लूटि कूटि करि दूण[6] उजारी॥ २९॥
टरहिं जुध ते नाहिन लखीअति। आज न चढे कहां बिधि पिखीअति।
शाहु निकटी परधान पठायो। तिसको लिख्यो प्रथम इम आयो॥ ३०॥
सीरंद[7] को सूबा[8] चढि आवै। हमरी करै सहाइ सु धावै।
हुकम शाहु को तबि हुइ गयो। अबि लौ आवन सो नहि भयो॥ ३१॥
पठहिं प्रधान आज को औरे। मिलहि जाइ सीरंद की ठौर।
जैसी कैसी सुधि ले आवै। कै वज़ीर खां जाइ चढावै॥ ३२॥
भीम चंद ते सुनि करि कान। भूप चंद तबि कीन बखान।
बिना शाहु की सैन घनेरी। गुरु न हारे, मैं भल हेरी[9]॥ ३३॥
वहिर दुरग ते नांहि न ओटा[10]। भयो न संघर कल कुछ खोटा।
दल पर करी घनी फटवाहि[11]। मरे ब्रिंद गन परे कराहि॥ ३४॥
तुम प्रथमै नहि जंग मचावहु। परे रहो सनमुख द्रिशटावहु।
सूबा[12] जबि सिरंद[13] को आवै। तिह सों मिलि पुन गुरु हरावैं॥ ३५॥

---

1. डेरे में स्थिर हुए 2. सभा 3. बुलाए 4. सलाह, समंत्रणा 5. क्रुद्ध होकर लड़ते रहे 6. घाटी, वादी 7. सरहिंद 8. प्रांताधीश 9. भली भांति विचार कर लिया है 10. आश्रय 11. शस्त्रों की मार 12. प्रांताधीश 13. सरहिंद

नाहक सुभट हज़ारहु मरे। किस प्रकार कुछ काज न सरे।
करि मसलत[1] इम गिरपति सारे। सचिव पठायो बिना अवारे[2] ॥ ३६ ॥
किम विलंब आवन महिं होई। फिरे न शाहु हुकम किय जोई।
सभि ले भेद पठावहु सुधि को। आनहुं चमूं करो बड बुधि को ॥ ३७ ॥
वसतु अजाइब भेट[3] पठाई। मंत्री गयो बिलंब बिहाई।
निज सुभटनि को कमर कसाइ। ठांढे करे अग्र समुदाइ ॥ ३८ ॥
त्रासति रिदै न धीरज धरै। —औचक[4] आइ सिंह नहिं परै।
सरब प्रकार करै तकराई[5]। रखे तुरंगन ज़ीन पवाई[6] ॥ ३९ ॥
सनमुख डेरे दोइ दलों के। पिखहिं परसपर ऊच थलों के।
तंबू शमियाने गन ताने। खरे निशान चीर फहिराने ॥ ४० ॥
दुंदभि ढोलनि पटहिं[7] बजावैं। नौबत आपस बिखै सुनावैं।
वध्यो विरोध अधिक दल दोऊ। चहति जुध क्रुध्रति चित सोऊ ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'डेरा करन प्रसंग'** बरननं नाम एक ऊन चतवारिंसती अंशु ॥ ३९ ॥

---

1. सलाह, मंत्रणा 2. बिना देर किए 3. भेंट 4. अचानक 5. मज़बूती 6. डलवाई 7. नगारा, बड़ा ढोल

अंशु ४०

तोप प्रसंग

दोहरा

ढर्‍यो दुपहिरा सतिगुरु करिकै उठे अराम ।
बिजीआ[1] मरच इलाइची सरदाई सु बदाम ।। १ ।।

चौपई

छत्रधार मावा[2] वड कर्‍यो । लयो दास ते निज कर धर्‍यो ।
बहु मादिक जुति बिजीआ पीआ । दुतिय कटोरा पुन भरि लीआ ।। २ ।।
मावे संग पान करि लियो । सौच हेत पुन उठिबौ कियो ।
पुन शनान करि निरमल नीर । पहिरे सुंदर चीर सरीर ।। ३ ।।
ऊचे थल सुभ फरश करायो । रुचिर बिसाल प्रयंक डसायो[3] ।
तिस पर थिरे जाइ[4] गोसाई । ऊपर शमियाना दुति पाई ।। ४ ।।
मो चक[5] केस पास[6] तिस काला । कंघा करिबे लगे क्रिपाला ।
सुठ[7] सुं वधी दसतारु । ऊपर जिगा[8] दिपति दुति चारु ।। ५ ।।
जबर[9] जवाहर जागति जोती । कलग़ी तुंग अधिक छबि होती ।
सूरज मुखी लीए कर खर्‍यो । ऊपर चमर चलाचल[10] दुर्‍यो ।। ६ ।।
थल थल बिखै सुचेता करिकै । केसन को जुति अदब सुधरिकै ।
बंधि बंधि करि सिर पर पाग । आए सिंह सभा शुभ लाग ।। ७ ।।
करि करि दरशन सिर ते नमैं । थिर्‍यो[11] खालसा सभि तिह समैं ।
ताउ देति मूछनि पर दोई । कर ते शमस[12] सुधारति कोई ।। ८ ।।
भीमचंद ते आदि पहारी । गुरु सभा सभि तिनहुं निहारी ।
दूरबीन को लाइ सु तबै । गुर जुति पिख्यो खालसा सबै ।। ९ ।।
एक तुरक तिनके ढिग खर्‍यो । जमादार बहु नर को कर्‍यो ।
सभि गिरपतिनि साथ तिन कह्यो । गुर को हतनि सुगम हम लह्यो ।। १० ।।

---

1. भांग 2. अफीम की गोली 3. बिछवाया 4. आकर बैठे 5. काले 6. जूड़ा 7. श्रेष्ठ, उत्तम 8. सिर का भूषण 9. बहुत अधिक 10. चंचल 11. स्थिर हुए 12. दाढ़ी

इस थल ते मैं तोप चलावहुं । बैठे सहित प्रत्यंक[1] उडावहुं ।
इलम मोहि को अहै बिसाला । तक मारों इत खरो सुखाला ॥ ११ ॥
बधौं शिसत सतिगुर की ओरा । भर्‌यो ज़ोर ते पहुंचहि गोरा ।
नित की कलहा सकल मिटावौं । सभि राजनि को सुख उपजावौं ॥ १२ ॥
पावौं दरब इनाम घनेरो । इलम बिलोकि लेहिं सभि मेरो ।
गुर बिन बहुर लरहि को नांही । आप आप को सभि मिट जाहीं ॥ १३ ॥
सभि गिरपती सुनति हरखाए । इह तौ कारज सुगम बनाए ।
भीमचंद तिह संग उचारा । मुझ ते धन लिहु पंज हजारा ॥ १४ ॥
एक ग्राम पुन देहुं इनाम । नित गुज़रान होहि तुझ धाम ।
भूपचंद हंडूरी कहैं । गुरु हते सगरे सुख लहैं ॥ १५ ॥
सभि गिरपति दै है सिरपाऊ । होति तरीफ जगत सभि थांऊ ।
अबि तो भई अबेर[2] बित्यो दिन । आनहु तोप करहु थिर थल मन[3] ॥ १६ ॥
इसी समैं बैठेंगे काली । तुंग सथंडल[4] पर मुद नाली[5] ।
राखहु तोप त्यार थिर करिकै । गोरा अरु बरूद संग भरिकै ॥ १७ ॥
प्रथम अवाज़ करहु नहि कोई । सुनिकै सनमुख थिरै न कोई ।
राखहु जोरि निशाने संग । औचक[6] छोरि करहु गुर भंग ॥ १८ ॥
फते सुगम पै हैं गिर राजे । पूरन होहिं सरब के काजे ।
इम गिनत्यो[7] संध्या हुइ गई । सरव सभा उठि निज थल गई ॥ १९ ॥
निस महिं जतन करति खल रहे । आनी तोप बिसाल जु अहे ।
खरी करी[8] बिधि खरी सथान । ब्रिंद नरन मिलि कैं करि तान[9] ॥ २० ॥
श्री कलग़ीधर थल थिर कै । चौंकी सौदर[10] की सुनि करिकै ।
उठि कै प्रभु सिवर[11] को आए । खान पान कीने मन भाए ॥ २१ ॥
सरब खासे अच्यो अहारा । निसा परी ते सुपति सुखारा ।
सुपने भी नहिं केहरी त्रासा । तथा निरभै, रिपु चहित बिनाशा ॥ २२ ॥
जाम जामनी ते गुरबानी । इक मन ह्वै को बदन बखानी ।
जथा बिप्र बर बेद पछंते । हित परलोक होनि सुखबंते ॥ २३ ॥
करहिं शनान नीर निरमल मैं । होति शबद की धुनि सभि दल मैं ।
गाइं रबाबी[12] असावार । जिस थल श्री सतिगुर दरबार ॥ २४ ॥

---

1. पलंग 2. कुसमय 3. जिस स्थान पर उचित समझो 4. ऊंचे स्थल अथवा चबूतरे पर 5. प्रसन्नता सहित 6. अचानक 7. विचार करते करते 8. खड़ी कर दी 9. पूरी शक्ति लगाकर 10. संध्या का पाठ 11. शिविर 12. मुसलमान गायक

करहिं अवाज़ नकीब[1] उचारन। भाट कवित पढहिं जसु कारन।
बजहिं म्रिदंग रबाब सतार। राग रागनी मंगल चारु॥ २५॥
भयो तिहावल[2] तबि समुदाइ। होति प्राति दीनसि बरताइ[3]।
बसत्र शसत्र गुर धारन करे। आनि खालसा चहुं दिशि थिरे[4]॥ २६॥
होति बारतालाप अनेक। सुनहिं कहहिं प्रभु जलधि बिबेक।
त्यार सिंह भे चढ़िबे हेतु। गहे शसत्र बन भले सुचेत॥ २७॥
पिखि सतिगुर सभि बरजन करे। सुनहुं खालसा! धीरज धरे।
सने सने[5] मारन इन बने। जग महिं दोखी तुमरे घने॥ २८॥
थिरे रहो अबि अपने डेरे। दुशटन काल होनि दिहु नेरे।
तिस दिन भी गुर सिंह टिकाए। नहिं लरन के हेतु पठाए॥ २९॥
देग दई बरताई[6] सभिनि को। त्रिपति भए तबि खाइ असन[7] को।
कर्यो दुपहिरे बिखै आराम। पौढ़े[8] प्रभु प्रयंक अभिराम॥ ३०॥
त्रिती पहिर महिं जागति भए। तिम ही दोनहु मादिक लए।
सौच शनान ठानि बिधि संगि। गमने श्री गुर थान उतंग॥ ३१॥
तहां फरश परयंक[9] डसाए[10]। बैठे जाइ भयी मन भाए।
सुधि सुनिकै ततछिन इक आयो। सकल भेत्र तिन भाखि सुनायो॥ ३२॥
प्रभु जी इहा न बैठन करीऐ। तुरन[11] ही थल अनंत सिधरीऐ।
एक दुशट ले पंच हज़ार। तोप विसाल रखी करि त्यार॥ ३३॥
शिसत बनावति महिं रह्यो। रावरि हतन हेतु चित चह्यो।
दगा[12] सभिनि इम रच्यो बनाइ। औचक[13] गोरा हतें टिकाइ॥ ३४॥
सुनि प्रभु कह्यो त्रास अबि धरिहैं। त्यागहिं निज थल चलि परि हैं।
उचित न हम को ऐसी बाति। दुशमन सों रण ह्वै दिन राति॥ ३५॥
कहां कहां हम दुरते[14] फिरहिं। देखहिं दुरजन आनंद धरहिं।
बैठि लखहु करतार तमाशे। हुइ है दोखी केर बिनाशे॥ ३६॥
कंघा करनि लगे गुर थिरे। पुन दसतार बंधबो करे।
कलगी जिगा[15] सुधारि बनाए। सिर पर सेवक चमर ढुलाए॥ ३७॥
दुशट पलीता तोपहिं दागे। इक सिख खरो हुतो गुर आगे।
तिस के लग्यो आनि करि गोरा। बडे वेग ते शूंकत घोरा[16]॥ ३८॥

1. चारण 2. कड़ाह प्रसाद 3. बाँट दिया 4. खड़े हो गए 5. धीरे धीरे 6. भोजन बाँट दिया 7. खाद्य पदार्थ 8. लेट गए 9. पलंग 10. लिछवाए 11. तुरन्त 12. धोखा 13. अचानक 14. छिपते 15. सिर का भूषण 16. शूं-शूं की ध्वनि करता हुआ

दरशन करति प्रान तजि गयो[1]। तबि सतिगुर निज कर धनु लयो।
तरगस ते काढ्यो सर तीछन। खपुरा आयुत[2] संध्यो भीछन॥ ३९॥
खैंचि कान लौ तुरत चलायो। अहि सम शुंकति[3] वेग सिधायो।
दुती हतन को तोप कसंता। शिसत बांध करि गुरु तकंता॥ ४०॥
तबि ही लग्यो भाल महिं जाई। गिर्‌यो सभिनि महिं गिरदी खाई[4]।
दूसरा खपरा और निकारा। धनु मैं जोर्‌यो तुरत प्रहारा॥ ४१॥
भ्राता हुतो तुरक को और। लग्यो रिदै गिरिगा तिस ठौर।
जबि दोनहुं तूरन[5] मरि गए। देखति लोक त्रास धरि धए॥ ४२॥
सूनी तोप खरी इक रही। अपर समीप रह्यो को नहीं।
भीमचन्द के ढिग सभि राजे। करहिं बात इहु बन्यों सु काजे॥ ४३॥
लगै तोप को गोरा जबै। मरै गुरु भाजहिं सिख सभे।
इतने महिं नर धावति भए। सर लगि तुरक मरे कहि दए॥ ४४॥
इक गोरा इन प्रथम चलायो। तबि ही बान आनि लगि धायो।
दुतियो लग्यो भ्रात तिस मर्‌यो। पिखि भाजे सभि उर डर धर्‌यो॥ ४५॥
कितिक समों गिरईशन[6] टारे। बहुर तोप ढिग जाइ निहारे।
बिसमे मतिहारी सभिहूंनि। परखे बान गुरु के तून[7]॥ ४६॥
आइ कोस लगि वेग सु बाना। हत्यो वहु नर भाल निशाना।
तबि दोनहुं की कबर खटाई[8]। तिस ही थल सो दीए दबाई॥ ४७॥
स्याही टिबी नाम सु थान। चिन्ह तहा अबि लगि है जान।
दोनहु कबरां परी दिखावति। जिन देखे सो आनि बतावति॥ ४८॥
इत सतिगुरु सो सिख सिसकारा[9]। सो भी चिन्ह अबि लगों निहारा।
जहिं प्रभ बैठे सो भी थान। बिदति अहै सिख पिखहु सुजान॥ ४९॥

दोहरा

निसा भई प्रभु सिवर[10] महिं आनि बिराजे थान।
खान पान करिकै भले पौढै[11] गुर भगवान॥ ५०॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते '**तोप प्रसंग**' बरननं चालीसमो अंशु॥ ४०॥

---

1. त्याग गया 2. चपटे मुख वाला तीर 3. फुंकारता हुआ 4. चक्कर खा कर 5. तुरन्त 6. पहाड़ी राजागण 7. तूणीर 8. खुदवाई 9. अंतिम संस्कार किया 10. शिविर 11. लेटे

अंशु ४१

वजीद खान प्रसंग

दोहरा

इस प्रकार केतिक दिवस बसे बसति[1] निरमोह ।
कवि कवि चढिकै खालसा रिपु मुकावले होहि ।। १ ।।

चौपई

शाहु हुकम सीरंद[2] मैं आयो । तवि वज़ीरखां सभि सुनि पायो ।
गिरन[3] विखै गुर धूम उठारी । तहिं तुम जाहु लेहु दल भारी ।। २ ।।
मिलहि गुरु तवि मेलनि करो । नांहि त सनमुख ह्वै करि लरो ।
सुनि सिरंद को सूबा[4] तवै । त्यारी करी चढनि की सवै ।। ३ ।।
दूर दूर ते चमूं सकेलि । गज वाजनि पर ज़ीननि मेलि ।
लाखहु सुभट जोर करि चढ्यो । दुंदभि बज्या बीर रस बढ्यो ।। ४ ।।
चले निशान सैंकरे आगे । बादत बजन सैंकरे लागे ।
मनहु समुंद्र उमड करि चाला । पैदल पसरे जहिं जल जाला[5] ।। ५ ।।
नक्र[6] मतंग, मछ बड घोरे । वड़वा अगनि शसत्र चहुं ओरे ।
तुंमल[7] बडे तरंग उठते । बाद नाद[8] बड ज्यो गरजते ।। ६ ।।
करति मजल पर मजल सिधाए । रोपड़ विखै तबहि चलि आए ।
खबर गई गिरपति के पासी । कलग़ीधर भी सुनि दल रासी[9] ।। ७ ।।
रण बड की त्यारी बहु कीनि । गुलका[10] अरु बरूद सो लीनि ।
उत ते सगल गिरीशुर आए । इत ते तुरक अगन रिपु धाए ।। ८ ।।
भयो भेड़ गाडो सग्रामू । केतिक गिनीअहिं बीरन नामू ।
भीमचंद सुनि सैन विलंद[11] । भूप चंद हंडूरि अनंद ।। ९ ।।
अबि गुर कहा जाइ थिर रहै । दुरग न कोट मवासा[12] लहै ।
चहु दिशि ते घेरहिं गहि लैहैं । नांहि त बीच कटा करि दै हैं ।। १० ।।

---

1. बसती 2. सरहिंद 3. पहाड़ों में 4. प्रांताधीश 5. फैला हुआ है 6. मगर 7. सैन्य दल 8. वाद्य-यंत्रों की ध्वनि 9. दल-राशि, दलों के समूह 10. गोलियां 11. बड़ी 12. आश्रय

दीरघ लशकर तुरकनि केरा। चहंहि हकारहिं अपर घनेरा।
इत दिशि ते ओरड़ि[1] हम परैं। उत ते शाहु चमूं बड लरैं॥ ११॥
इक शत भट दे कर तिस नाल[2]। अपर सचिव भेज्यो ततकाल।
आछे मग को लशकर ल्यावहु। सूबे साथ सलाम अलावहु॥ १२॥
सकल बारता दिहु समझाइ। पुरि ते बहिर गुर इक थाइ।
गहिन सुखेन ताहि को जानहुं। लरिबे जतन बडो नहिं ठानहुं॥ १३॥
इत ते हम आवहिं दल मेलि। उत ते आप घालीअहि हेलि[3]।
दे जाफत[4] को दरब पठायो। तूरन[5] सचिव तुरक पहि आयो॥ १४॥
घात अनेक बतावति ल्याइ। दल मुकाबले भा समुदाइ।
इक दिशि तुरक घालि घमसाना। दिशि दूसर दल अचल महाना॥ १५॥
बाजनि लगी बंदूक बडेरी। रुप्यो खालसा करे दिलेरी।
दुहि दिशि ते लशकर बड आयो। तऊ न त्रास कछू मन भायो॥ १६॥
म्रिग झुंडन महिं केहर मते। निभै तथा रसबीर सु रते।
संगति दीपमाल[6] के मेले। हित दरशन के भई सकेले॥ १७॥
तिन महु हुते जु आयुधधारी। सुनि गुर संग होहि रण भारी।
दरशन परसति पावन होए। हाथ जोरि सो अग्र खरोए॥ १८॥
श्री प्रभु पिखि करिकै संग्रामू। गमनैं बहुर अपणे धामू।
तुरकन लशकर आवति सुन्यों। कलगीधर प्रसंन ह्वै भन्यों॥ १९॥
शसत्र धरन को धरम इही हैं। रिपुनि हतनि तिन और नहीं है।
गुर घर ते सभि किछु वर पावहु। जसु जीवति, म्रितु सुर पुरि[7] जावहु॥ २०॥
मैं बाली दुहुं लोकन मांही। हनहु रिपुनि को भिटीअहि नांही।
सो भट अरहिं अगारी होइ। करी मोरचे बंदी सोइ॥ २१॥
सतिगुर कह्यो अग्र नहि जावहु। ज्वालावमणी[8] थिरे चलावहु।
दुशमन नहीं टिकन हुइ सकही। अग बधहि हति तुपन तकिही॥ २२॥
दूर दूर लगि सभि चहुं ओरे। करे मोरचे संघर घोरे।
भरि भरि राबे[9] मारति ऐसे। बाछड़ करिका परती जैसे॥ २३॥
गिरहिं तुरंगम अरु असवार। रुपे सरमे परे सुमार[10]।
दोनहु दिशा ओरड़े आवैं। जनु घन घटा चढ़ी गरजावैं॥ २४॥

---

1. उछल कर 2. साथ 3. हमला, आक्रमण 4. आतिथ्य के लिए 5. तुरंत 6. दीपावली 7. स्वर्गपुरी 8. लम्बी नाली वालीं बंदूकें 9. बंदूकों की बूछाड़ 10. वेशुमार मार पड़ रही है

पड़हिं तुफंगन के कड़कार। हेल घालि अरि परे जुगार।
निरभे होइ ढिग ढूकैं ज्यों ज्यों। गुलका के प्रहार हुइ त्यों त्यों ।। २५ ।।
श्री गुर चाप कठोर संभारे। खपरे तीछन भीछण मारे।
बींधति सुभट पवंगम गात[1]। इक द्वै त्रै चतुरथ पर जाति ।। २६ ।।
दडि दडि पड़ति परे तड़फड़त। लड़ि लड़ि भिड़ति कड़ाकड़ छड़ति[2]।
सड़सड़[3] गुलका चलि चलि पड़ति। लगि लगि भट गन कर पग तोड़ति ।। २७ ।।
तुरकनि के लशकर पर सतिगुर। सरि परहारति बीधति अरि उर।
गिरहिं इकत्र लगहिं इक बान। परहिं पार करि करि बहु हानि ।। २८ ।।
जथा चंन्द्रभा को परवारा। जथा खेत के चहुं दिशि बारा।
जिम कर के कंकन चहुं फेरे। तिम सतिगुर को पायो घेरे ।। २९ ।।
थिरे मोरचे सिंह सु गाढ़े। शलखैं[4] छोरति हुइ हुइ ठांढे।
मारि मारि करि मोरहिं अरी। नेर न होनि देति, ब्रत धरी ।। ३० ।।
जिन के मन जम को भि न त्रासा। रुप्यो खालसा शत्रु बिनाशा।
चहुं दिशि ते सतिगुर ते दूर। राखे दूशमन जे बड क्रूर[5] ।। ३१ ।।

नराज छंद

गुरु सपूत पूत चीत[6] श्री अजीत सिंह जी।
कुदंड ले प्रचंड छंडि बान धीर सिंह जी[7]।
सड़ासड़ी प्रहारिकै बिहंड तुंड फोड़िके।
करै जु हेल आवते शिताब दीनि मोड़िके ।। ३२ ।।
निखंग ते खतंग एक संग ही निकारिकै।
धराधरे समूह फेर लेति हैं सभारिकै।
सुबैठि बीर आसनं सरासनं सुधारिकै[8]।
सु तानि बान कान लौ अनेक शत्रु मारिकै ।। ३३ ।।
उडति जाति बेग ते प्रवेश ह्वै लरंति ही[9]।
तुरंग अंग मंगिकै सु पार ह्वो परंत ही।
सरीर बीध बीर के न नीर फेर जाचिते।
अंतक ते सशंक कै निसंग जंग माचते[10] ।। ३४ ।।
वजीरखान सैन को दलेर ह्वै परेरतो।
कहा थिरति त्रास ते, समूह क्या निबेरतो।

---

1. घोड़ों के शरीर 2. कड़ कड़ करते हुए गोलियां छोड़ते हैं 3. शीघ्र अति शीघ्र 4. गोलियों की बूछाड़ 5. कठोर 6. पवित्र चित्त वाला 7. सिंह के समान धैर्यवान् 8. भली भाँति 9. लगते ही 10. जो निर्भय हो कर युद्ध भूमि में लड़ रहे हैं

मरे जु हेल घालते, बचे समीप ढुकियो।
गुरु गहंन कीजियै, उठे न क्यों हूं रुकियो ॥ ३५ ॥

क्रिपान खैंचि म्यान ते पवेश बीच हूजियो।
प्रहार सांग सैहथीन, नेज चोक दीजियो।
तुफंग एक संग त्यागि[1] सिंह मार लीजियो।
अकेल फेर क्या करै[2], न त्रास चित कीजियो ॥ ३६ ॥

सुने वजीद खान ते सु एक तान होइकै।
अगाइ पाइ रोपते सु कोप त्रास खोइकै[3]।
विसाल हेल घालिओ चलाइ आयुधान को।
पुकार मारि मारि हाथ धारिकै निशान को ॥ ३७ ॥

छुटी तुफंग एक संग चारि ओर ओरड़े।
समीप ढूक ढूकते, न धीर धारि घोरड़े[4]।
पदांति कै सऊर हाल हूल भूर भेलते[5]।
धकेल सेल ठेलते, सकेलि गैल पेलते ॥ ३८ ॥

पर्यो सु ज़ोर खालसे गुरु संभालि बान को।
चलाइ दीनि सैंकरे करे सु बीर हान को।
धावाइ अग्र आवते निशंक तीर खावते।
गिरे सु जंग खेत मैं कहूं न जान पावते[6] ॥ ३९ ॥

गुरु गोबिन्द सिंह जी बिलंद कोप[7] धारिओ।
प्रहार ब्रिंद बान को समूह बीर मारिओ।
परे तुरंग सैंकरे सऊर हेठ ऊपरे।
बिसाल श्रोण चालिओ[8] बह्यो प्रवाह भू परे ॥ ४० ॥

भई सु लोथ पोथना[9] बंदूक ब्रिंद बाजिआ।
सु हेल झालि[10] खालसा न एक पैर भाजिआ।
हज़ारहूं प्रहारकै थिरे सु मोरचान मैं।
प्रहारिये प्रबुध हारि ना रहे गुमान मैं[11] ॥ ४१ ॥

---

1. एक बार ही गोली चला कर 2. अकेले गुरु जी का क्या कर पाएँगे 3. निर्भय हो कर 4. उमड़ कर 5. पैदल और सवार जान की बाज़ी लगा कर आक्रमण करते हैं 6. कोई भी उन का अनुमान नहीं लगा सकता 7. बहुत अधिक क्रुद्ध हो कर 8. बहने लगा 9. लाश पर लाश पड़ रही थी 10. आक्रमण को सहार कर 11. अहंकार वश

मच्यो घमंड[1] दारुणा कहा लगे सुनाइऐ।
रहे लगाइ ओज मूढा ना कछू बसाइये[2]।
प्रवाज सार सार संग[3] डेढ जाम बीतिये।
हज़ारहू खपाइ बीर भा हकार रीतिये[4] ॥ ४२ ॥
अथ्यो सिधाइ भारतंड बारनी दिशान को[5]।
प्रकाश मंद होति भा अंधे मों भयानको।
मिटे सु आप आप को हटे प्रबीर हूटिकै[6]।
गुरु बिसाल सूरमा रह्यो मवास जूटिकै[7] ॥ ४३ ॥

दोहरा

डेरा कीनसि दल सकल श्रमति अंग लरि जंग।
खान पान कै करन हित उतरे बीर सुसंग ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रते 'वजीद खान प्रसंग' बरननं नाम एक चतवारिंसती अंशु ॥ ४१ ॥

---

1. युद्ध, घमसान जंग 2. बस न चला 3. लोहे पर लोहा बजता रहा 4. अहंकार से शून्य हो कर 5. पश्चिम दिशा को 6. बहादुर वीर अपनी अपनी ओर हट गए 7. अपने धारण किए हुए स्थान पर डटे रहे

अंशु ४२

बिसाली राव मिलनि प्रसंग

दोहरा

भयो खेत दारुन महां, लोथ संकीरण जाल[1]।
कूकैं जंबुक आनिकै कूकर कूकि बिसाल ।। १ ।।

चौपई

निज गण के गण ले करि संग। बिचरै रुद्र रुद्र करि अंग[2]।
ब्रिंद जोगनी पीवति श्रोण। बोल भयंकर सुनियति श्रोण ।। २ ।।
परे हज़ारहु हय हथ्यार। नहिं घायल की करी संभार।
तिस छिन जीवति भी मरि गए। बन के जीव मास भखि लए ।। ३ ।।
परी मार तुरकनि[3] पर गाढी। महां सोग जुति पीस बाढी।
रह्यो वजीद खान चित चितवति। इह मम लशकर पर क्या बितवति[4] ।। ४ ।।
जानी गई न कुछ बुधि मन ते—। झूर्‍यो[5] पाइ पराजै रन ते।
—सिंह अलप ही हते न गए। रहे मवासी[6] बड बल किये ।। ५ ।।
कोट दुरग को ओट न कोई। बीच मदान मोरचे होई।
मरे हजारहुं बीर तुरंग। नहीं संभारहिं घाइल जंग ।। ६ ।।
इत्यादिक पछुतावति रह्यो। गुरप्रताप नहिं मूरख लह्यो।
भीमचंद कहिलूरी गयो। भूपचंद हंडूरी लह्यो ।। ७ ।।
मिले जाइ झुकि करी सलामू। भाख्यो गुर अहिवाल तमामू।
महां सूरमा अति धनु धारी। हम नित करति रहे रण भारी ।। ८ ।।
काढि अनंदपुरि बाहर ल्याए। अबि गहि लैहैं जनि न पाए।
हज़रत के समीप पहुंचावै। तबि नचिंत ह्वै दिवस बितावै ।। ९ ।।
कह्यो वजीदखान नृप संग। भयो आज भी दीरघ जंग।
तुम तन दे करि लरहि न कोई। अपनी चमूं मैं सगरी ढोई ।। १० ।।

1. शव आपस में मिले जुले पड़े थे 2. अपने शरीरों को भयानक बनाकर 3. मुसलमान सेना पर 4. क्या गुज़री है 5. दुःखी हुए 6. स्वतंत्र

मरे सैंकरे सुभट तुरंग। परे हज़ारहु घायल अंग।
बैठि मोरचनि मार मचाई। हम मदान सनमुख बहु घाई॥ ११॥
नहीं प्राति को पावहि जंग। संभारहि म्रितु घायल अंग।
परसौं देहिं जोर बहु लरै। घेरि चुगिरदे गहिबो करै॥ १२॥
बोल्यो भूपचंद हंडूरी। रावरि कही बारता रूरी।
तुम मालिक हमरे अबि आए। सरब सुधारहु काज सुहाए॥ १३॥
पुन वज़ीदखां बूझनि करे। गुर बिरोध किह कारन परे।
बहुर न मेल तुमारो होवा। चिर ते लरहिं अबहि लगि जोवा॥ १४॥
सुनिकै भीमचंद बच भाखा[1]। कहहि कहां, हम गुर अभिलाखा।
सभि इक समैं मिले तिन जाई[2]। पिखनि कहति देवी बिदताई॥ १५॥
थिरे समीप[3] जबहि समुदाया। देखति हम को एव अलाया।
सिख बनहु ले पाहुल[4] मेरी। केस काछ रखि रहति बढेरी[5]॥ १६॥
हजरत के संग मोर बिरुधा। इकठे होइ करे बहु जुधा।
तेगबहादर पिता हमारा। चवगते[6] नाहक[7] गहि मारा॥ १७॥
सो पलटा तिस ते हम लेनो। देशनि लूटि उजार सु देनो।
लवपुनि को पूरब लरि लैहैं। सो सभि राज तुमहिं को देहैं॥ १८॥
इत्यादिक हम को बहु कह्यो। सुनिकै इहु कुसूत चित लह्यो।
खैरख्वाह हम हज़रत केरे। इह तिन सोचहि जंग बडेरे॥ १९॥
कहि बहु रह्यो न तबि हम मानी। चलि आए अपनी रजधानी।
इहु कारन है लरिबे केरा। अपर[8] नहीं गुर के संग झेरा[9]॥ २०॥
अबि आए तुम भली सु होई। जिम उचरहु हम करिहैं सोई।
हज़रत के गुलाम हम जानो। करनि बिरोध नहीं हम मानो॥ २१॥
अबि के लरहु लाइ बल सारो। चहुं ओर ते करहि प्रहारो।
फते करहिंगे गन को गहि कै। हुइ है सुजसु, कहै जग लहिकै॥ २२॥
एव परसपर मसलत[10] धरिकै। उठे सलाम तुरक को करिकै।
डेरे जाइ सु सुपते राति। उठे बहुर जबि होई प्राति॥ २३॥
सतद्रव पार सु पुरी बिसाली। तहां राव इक सुमति बिसाली[11]।
सुनि करि गुर संग अधिक बखेरा। भीमचंद बड ठान्यो बैरा॥ २४॥

---

1. वचन 2. गुरु जी को जा मिले 3. पास खड़े रहे 4. अमृत पान करो 5. बड़ी महत्त्वपूर्ण 6. बाबर वंशी औरंगज़ेब ने 7. व्यर्थ में 8. अन्य 9. झगड़ा 10. मंत्रणा 11. बड़ा बुद्धिमान

प्रथम लर्‌यो हार्‌यो मतिमंद। दियो मराइ केसरी चंद।
जम तुला भाऊ मरिवायो। अपर हजारहुं भट गिरवायो।। २५।।
मूरख को बसि चल्यो न कोई। बहुरो करी कुमति बड जोई।
शसतर धरन धरम को त्यागा। निरबल दीन रंग मग लागा[1]।। २६।।
राजा अपर कौन इम करै। धरम छोरि लजा परहरै।
तसकर समसर[2] पठि करि पंमा। आनंदपुरि को दवार कुकंमा[3]।। २७।।
आन[4] धेनु की दीनी जाइ। नहिं राजनि ते लज्या पाइ।
गुरु बीर बर लीनि सु मान। तज्यो अनंदपुरि धीर निधान।। २८।।
धरम धुरंधर जिम करि गए। अपर कौन मानहिं इम दए।
बहुर न टर्‌यो मूढ मनि मंदा। करे अवाहन तुरक बिलंदा[5]।। २९।।
बैठे बहिर दुरग नहि कोट। हित लरिबे कुछ करी न ओट।
निज परधान संग कहि सुनि करि। हम चढि आनहि निज पुरि सतिगुर।। ३०।।
साहिब करामात संग बैर। इनके बंस होइ नहिं खैर।
दुख पावहिगे परि हैं नरक। करहिं कुकरम होइ हैं गरक।। ३१।।
त्यारी करति अरूढयो राव। दरशन परसन को उर चाव।
जितिक सैन अपनी ले साथ। आनि मिल्यो जहिं बैठे नाथ।। ३२।।
पद अरबिंदन पर सिर धर्‌यो। बहु विधि बिनती बाक उचर्‌यो।
प्रभु जी! चलहु संग अबि मेरे। रिदै जानि करि अपने चेरे।। ३३।।
निज पावन करि करीअहि पावन। निज ते होइ सदन मम पावन।
नगर बिसाली अपने जानहु। रहहु निकेति बास को ठानहु।। ३४।।
सिंध मेखला अवनी सारी। महाराज! प्रभु अहे तुमारी।
भीमचंद आदिक गन राजे। मूढमति[6] सभि करहि कुकाजे।। ३५।।
इनके होइ गए मुख कारे। उतरे नहिं कलंक, पखारे।
दिन प्रति अधिक स्यामता[7] लागै। सकल कलंकति कुल किय आगै।। ३६।।
अनिक उपावनि ते नहिं जै है। इस दिन को ही नित पछुतै हैं।
जमना, गंगा, गया, बनारस। तहां न मिटहि इनहुं मुख कारस।। ३७।।
जाई हिमाचल बदरीनाथ। तहिं भी मिटहि न, रहि मुख साथ।
तीरथ जितिक समुंद्रादिक हैं। बिमल न कहूं, सदा इन धिक हैं[8]।। ३८।।
हिंदु धरम की धुजा भए हो[9]। पर उपकार क्रिपाल किए हो।
सरब शिरोमणि दीपक दीप। तुमरी समसर को अवनीप।। ३९।।

---

1. निर्धनों के मार्ग पर पड़ गया है 2. गुप्त रूप से, चोरों के समान 3. गाय रखने का बुरा कार्य किया 4. शपथ 5. बड़ा 6. मूर्ख 7. कालुष्य 8. कहीं भी उज्ज्वल नहीं होंगे, इन्हें धिक्कार ही रहेगी 9. सबसे अधिक प्रकाशमान

रामचंद जैसें तुम बाना। हो अतिरथी सु क्रिशन समाना।
जिम गिरवर पर जुति[1] परवारा। जरासंध दल ले परवारा[2] ॥ ४० ॥
लखनि बिखै आवति बिधि सोए। क्रिशन चंद के तन तुम होए।
पर लीला को बनि अनुसारी। करहु क्रिपा श्री प्रभु उपकारी ॥ ४१ ॥
नांहि त लाखहुं दल बहु भारे। मरहिं छिनक महिं बाक उचारे।
नहिं प्रताप इह लखहिं तुहारो। परहिं नरक महिं लहिं दुख भारो ॥ ४२ ॥
अपनो नगर जान करि धामू। रचन जंग ते करहु अरामू।
इत्यादिक सुनि करि तिस बैन। कर्यो बिलोकन करुना नैन ॥ ४३ ॥
पूरब जनम तप्यो तप जबै। सति संगति भी कीनसि तबै।
तिस को फल तोकहु हुइ आयो। चाहति बंधन अपनि गवायो ॥ ४४ ॥
उपजी सुमति आन इस समैं। निरभै होइ गुर घर को निमैं[3]।
सभि के संग हमार बखेरा। बिन बिचार आयो इस बेरा ॥ ४५ ॥
है जे करि इम भाउ तुमारे। गमनहिं नगर बिसालि मझारे।
तूँ चलि प्रथम अपनि घर मांही। हतिवे रिपु हम मिटहि सु नांही ॥ ४६ ॥
करहि हजारहुं केरि सिंहारनि। आवहिंगे रचिके रण दारुन।
तुरकनि अरु गिरपतिनि[4] गुमान। करों हान घालहु घमसान ॥ ४७ ॥
राज तेज इन कुल ते खोवौ। कुमति कुकरमी पापी जोवौ।
पंथ खालसा हम रचि दीन। सनै सनै[5] सभि लै है छीन ॥ ४८ ॥
क्रिपा कालका की बहु अहै। अवलोकति शत्रुनि को दहै[6]।
चढहु राव[7] हम आइ पिछेरे। घालहिं तोहि नगर महिं डेरे ॥ ४९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'बिसाली राव मिलनी** प्रसंग' बरननं नाम दइ चंतवारिंसती अंशु ॥ ४२ ॥

1. युक्त, सहित 2. घेरा डाला 3. झुका है 4. पहाड़ी राजागण 5. धीरे-धीरे 6. जला देगी, नष्ट कर देगी 7. राजन्! तुम जाओ

अंशु ४३

जंग प्रसंग

दोहरा

बहुर विसाली राव कहि रण तुम करे विसाल ।
बिना लरे ही चढि चलहु अपनि समाज संभालि ॥ १ ॥

चौपई

भीम चंद आदिक गन राजे । इनहुं करे बड पापनि काजे ।
तिसी पाप ते इह खपि जै है । नहीं कुशल के सहित थिरै हैं[1] ॥ २ ॥
तुरक आप ही गमनहिं पाछे । क्यों प्रभु जंग आप अबि बांछे ।
सुनि करि श्री गोबिंद सिंह धीर । कह्यो चलहु ले संग बहीर[2] ॥ ३ ॥
हम इस तुरक संग करि जंग । भूप गुमान करहि सभि भंग ।
रुंड मुंड रन बिखै बिखेरौं । तोल लराई[3] सभि बिधि हेरौं ॥ ४ ॥
नांहित बादी तुरक महानैं । बिना लरे मिटिगे—मन जानैं ।
कहि बहु रह्यो राव तिस बारी । प्रभु की कही बात उर धारी ॥ ५ ॥
लए बिहीर संग को चाला । नगर बिसाली धीर बिसाला ।
लै पहुंच्यो जबि तट दरीआउ । कुछ बिहीर को पार लंघाउ ॥ ६ ॥
बजवायहु रणजीत नगारा[4] । सकल खालसा होयसि त्यारा ।
पाइ दुगुलका ज्वालाबमणी[5] । करी त्यार शत्रुनि मद शमणी[6] ॥ ७ ॥
सतिगुर खचर तीरनि केरी । रखी संग सो लादि घनेरी ।
उदेसिंह आलम सिंह बीर । दया सिंह मुहकम सिंह धीर ॥ ८ ॥
इनके जुति असवार हज़ार । करे अजीत सिंह के लार[7] ।
साहिब चंद महां बलि जोधा । रिपु मारनि को बरधसि क्रोधा[8] ॥ ९ ॥
तिस के संग हज़ार करे हैं । नमसकारनी हाथ धरे हैं ।
रहै अजीत सिंह हम आगे । दुशमन गंजहि[9] जंग सु जागे ॥ १० ॥

---

1. रहेंगे 2. समस्त सेना 3. सर्वत्र सामान भाव से लड़ाई होगी 4. गुरु गोविन्द सिंह का एक बड़ा नगारा 5. बंदूक में दो गोलियां डालीं 6. शमन करने वाली, नाश करने वाली 7. साथ 8. क्रोध में वृद्धि हुई 9. वैरी दलों का समूह

साहिब चंद पिछारी रहै। हतहि दुशट जबि आवति लहैं।
अपर खालसा संग हमारे। सने सने गमनहि परवारे ॥ ११ ॥
इम जबि कूच गुरु को जाना। चहुँ दिशि उमड शत्रु महाना।
भूम आकाश एक हुइ गयो। अंध धुंध एक सम तबि भयो ॥ १२ ॥
उडी धूल तबि सूरज छायो। उमडे चलिकै जलनिधि धायो[1]।
दुंदभि ढोल पटहि[2] शरनाई। चहुं दिशि बाज उठे समुदाई ॥ १३ ॥
इक ही बार तड़ाभड़ होई। भरजे धान भाठ जिभ कोई।
इक ही वार खालसै कीनि। दुइदुइ करे प्रान ते हीन ॥ १४ ॥
लगहि दुगाड़ा[3] फोड़ सरीर। दडदड पड़हिं धारा पर बीर।
तोड़ा मोडि कला पर जडै। डंभैं पलीते तबि छुटि पड़ैं ॥ १५ ॥
घाल्यो घेरा तुरक पहारी। बाम दाहिने अग्र पिछारी।
श्री अजीत सिंह संधे बाना। हतहिं रिपुनि तनु करि करि ताना[4] ॥ १६ ॥
उदे सिंह ते आदिक सिंह। बिचरे रण जिव म्रिग पर सिंह।
आगै लरति भयो करि जोर। घालि घनो घमसानै घोर[5] ॥ १७ ॥
रिपुनि थकावति चलति अगारी। दरड़ति जाते[6] गिरे सुमारि।
बाम दाहिने श्री प्रभु आप। दुशटन हनहिं ऐंचि द्रिड़ चांप ॥ १८ ॥
बाम हाथ ते कबहुं चलावैं। कबहूं दहिने रिपुनि तकावैं।
जित दिशि देखै दुशटनि जोर। तिस कर गहिकै छोरहिं घोर ॥ १९ ॥
शूकै[7] खपरे सरप - समाना। इक दुई त्वै चहुं वेधति बाना।
शूको निकसहि पार परंता। हय भट ब्रिक्षन को उथलंता[8] ॥ २० ॥
पीछे साहिब चंद जुझारा। बान प्रहारति करहि सुमारा।
जिसके लगहि न जाचहि पानी। गिरै तुरंग हुइ प्राननि हानी ॥ २१ ॥
पिखि सिरंद सूबा[9] अभिमानी। बिसम्यो खां वजीद मति हानी।
जंग भयंकुर वड घमसाना। प्रथम न देख्यो अस किस थाना ॥ २२ ॥
सगरो लशकर प्रेरन कर्यो। लरहु अग्र ह्वै क्यों मन भर्यो।
दगी तोप सतिगुर के दल ते। मारति तुरकनि को दलमलते ॥ २३ ॥
ढूकहिं हेल घाल जुति जोर[10]। गुलका[11] लगति देती मुख तोरी।
गूजर रंघर[12] आदि गवारे। पैदल ढूकी अनि हज़ारे ॥ २४ ॥

---

1. मानो समुद्र उछल आया है 2. बड़े ढोल 3. दो गोलियाँ इकट्ठी ही लगें 4. पूरी शक्ति के साथ 5. घोर युद्ध में 6. पाँव के नीचे रौंदते जाते हैं 7. शूं-शूं की ध्वनि करते हुए 8. उथल पुथल कर देता 9. सरहिंद का सूबा (प्रांताधीश) 10. बलवान आक्रमण करके आ पहुँचे 11. गोलियां 12. एक मुसलमान राजपूत की जाति

भीमचंद प्रेरी निज सैना। मरि मरि गिरहिं निहारहिं नैना।
भूपचंद हंडूरी क्रोधा। लै लै साथ आपने जोधा ॥ २५ ॥
वधिके चहिं पहुंच्यो दल नेरे। गुलका बान खाइ तिस बेरे[1]।
ठटक रहहि नहिं चरन उठावहि। तहिं थिर होइ रौर को पावहि ॥ २६ ॥
जथा शेर के तीर होवै। तथा भयंकुर सिंहन जोवै।
रण के पिखति बीरता हाली[2]। नहिं पिखीअति किस धीर बिसाली ॥ २७ ॥
सने सने गमने गुर जावें। अरहि जु अग्र धकेलति धावें।
चहुं ओर रौरा बहु माचे। निकट न होहि सकहिं गुर साचे ॥ २८ ॥
गुलका सर वरहिं इकसार। अस को वीर रहे थ्रित धारि।
घेर्यो जाइ गुरु चहु ओरे। अस उपमा होवति तिस ठौरे ॥ २९ ॥
गुरु दल चंद प्रकाश बिलंदे[3]। चले जाहिं रिपु तारनि ब्रिंदे[4]।
सिंहन दल जिभ मंदर परबत। मथन समै सुरअसुर सु जित कित[5] ॥ ३० ॥
रोक रहे सो रुकति न कैसे। बिच गोबिंद सिंह श्री पति जैसे।
हति रावन जिम लंका नगरी। तिम सैना सिंहन की सगरी ॥ ३१ ॥
दुशमन दल चहुं दिशि को घेरा। सो समुंद्र है चहु दिशि फेरा।
रामचंद सम सतिगुर शोभा। लछमन श्री अजीत सिंह शोभा ॥ ३२ ॥
जरासंध की सैन चुफेरे। क्रिशन हली[6] जिम लीनसि घेरे।
जादवदल जुति जिम चलि जावैं। श्री गोबिंद सिंह तिम छबि पावैं ॥ ३३ ॥
तुरकनि लशकर गिर पति केरा। जनु उमडे घन पायहु घेरा।
गोबिंद सिंह सूरज को रोकै। किरनै बान धसैं जुति ढोकैं[7] ॥ ३४ ॥
चंद सहाइक जिम चलि आवै। तिम अजीत सिंह उपमा पावै।
उडगनि के सम सिंह घनेरे। नभ महिं चले जाहिं तिम हेरे ॥ ३५ ॥
सिमटी तड़िता जनु इक थाइं। चहुं दिशि मेघ घिरे समुदाइ।
नभ महि चलहि जाहिं तिस बेरे। तिम घेरे महि गुरु सु हेरे ॥ ३६ ॥
देख्यो सहर अतिशै माचे[8]। उर अनंद राचे गुर साचे।
सूरनि के मुख उधरति लाली। हतहिं रिपुन धरि धीर बिसाली ॥ ३७ ॥
जोगनि गन मारति किलकारी। नाचति प्रेत बचावति तारी।
भरि भरि खपर श्रोणत केरे। पी पी लेति डकार बडेरे ॥ ३८ ॥

---

1. समय, बेला 2. हिल जाती, डांवाडोल होना 3. महान, अधिक 4. समूह 5. कहीं कहीं 6. बलभद्र, श्री कृष्ण का भाई 7. तीर की बागड़ 8. बहुत अधिक प्रसन्न हुए

ग्रिध बिध आमिख कउ खाइ। जंबुक मन महिं रहै अघाइ।
दारुण खेत बिदारण जोए[1]। गमने सुरग बिदा रण होए॥ ३९॥
सूर बरे हूरन मुख रूरे। तऊ न जाति महा रिस पूरे[2]।
लोथ संकीरण[3] बन सभि होवा। बिथर्‌यो श्रोणत जहि कहि जोवा॥ ४०॥
कहौं कहां लगि रण घमसाना। परे दुशट लायहु बड ताना।
कुछ बसि चल्यो न दुशनन हारे। पहुंचे सतद्रव केर किनारे॥ ४१॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'जंग प्रसंग'** वरननं नाम तीन चतवारिंसती अंशु॥ ४३॥

---

1. जो रण-भूमि में नष्ट हुए हैं 2. अति क्रुद्ध वीर फिर भी स्वर्ग को जाने को तैयार नहीं होते 3. लाशों से भर गया

अंशु ४४

साहिब चंद बध प्रसंग

दोहरा

सतद्रव सलिता[1] के निकट पर्‌यों जंगको जोर।
बरखा शसत्रन की पैर गोरा गोरी घोर[2] ॥ १ ॥

रसावल छंद

रिसे वीर जूटे। रिदे सीस फूटे।
तुफंगै तड़ाकैं। सु गोरी सड़ाकैं ॥ २ ॥
चलैं तीर तीखे। बिखीचै सरीखे[3]।
करे पुंज हेला। महां रौर मेला ॥ ३ ॥
हला हल[4] माची। लहू धूल राची।
भई लोथ पोथे[5]। बिना प्रान थोथे ॥ ४ ॥
सु नैना उघारे। परे सूर मारे।
तवै भीमचंद। बिलोकै सु ब्रिंद ॥ ५ ॥
वडी सैन जानी। नहिं नीयरानी[6]।
हिले सिंह नांही। रहे धीर मांही ॥ ६ ॥
बुल्यो भूप चंद। सुनो होशवंद[7]।
चमूँ शाह भारी। हमो न हकारी ॥ ७ ॥
दूरे कोट नांही। मदानं कि माही।
रहैं गो करारा[8]। गुरु जे न हारा ॥ ८ ॥
कहौं फेर कैसे। तजै धीर वैंसे[9]।
अबै जे न मारा। गह्यो कै न भारा ॥ ९ ॥

1. नदी 2. भयानक गोले और गोलियां चलीं 3. सांपों के समान 4. शोर, हंगामा 5. लाशों के ढेर लग गए 6. समीप नहीं आने पाती 7. सूझवान्, बुद्धिमान् 8. दृढ़ रहा 9. विपरीत स्थिति में

पुन कौन मारै। किसु ते न हारै।
महां धीर धारै। हमू को प्रहारै ।। १० ।।

दोहरा

गमनौं सूबे निकट अबि करे चमूँ को ज़ोर।
गुर गोबिद सिंह घेरिये गहि लीजै इस ठौर ।। ११ ।।

ललितपद छंद

बहुरो घाति हाथ नहिं आवै हुइ मवास[1] किस थाना।
शाहु हुकम भी पकरनि केरा नाहिं त करि दिहु हाना ।। १२ ।।
होइ न ऐसी पार उतर करि घनी मचावै मारा।
आगा घेरि हेल को घालहु पकर लेहु इस बारा ।। १३ ।।
गमन्यों तबि वजीद खां पासी सगरी बात सुनाई।
करी प्रचारन[2] चमूं घनी तबि चहुं दिशि ते उमडाई ।। १४ ।।
आप वजीद खान भी सरक्यो[3] ढुके नरेश पहारी।
गूजर रंघर[4] तुरक गिनहि को, करहिं धकेल अगारी ।। १५ ।।
महां धूम माची तिस थल महिं ढुके आनि तबि नेरे।
साहिब चंद जूथपति[5] गुर को, क्रुधिति जुध बडेरे ।। १६ ।।
सिपर[6] क्रिपान खैंचि करि म्यानो अर्‌यो अग्र वड जोधा।
संग सैंकरे और सूरमा आवति दल को रोधा[7] ।। १७ ।।
धस्यो कटक महिं, झटक काटतो चले भड़ग भट अंग।
खंड खंड करि रुंड मुंड गन तुंड पंडु भे रंग[8] ।। १८ ।।
भयो प्रचंड घमंड घनेरा परे कितिक कर काटे।
खंडन करि भुजदंड किनहुं के मारि मारि करि साटै[9] ।। १९ ।।
झटपट कटे न सटके सटपट कट ते कटि कटि गेरे।
पग काटे, किह जंघ कटी, जुग जानु काटि निबेरे ।। २० ।।
उरु कटे, फाटी किस छाती, त्रिशटि खड़ग किन खाए।
रिपु को वार सिपर परलै फै मारि मारि उथलाए[10] ।। २१ ।।

---

1. आश्रय 2. चुनौती दी 3. चला 4. मुसलमान राजपूतों की एक जाति 5. सेनापति 6. ढाल 7. रोका 8. मुख पीले पड़ गए 9. मार कर फेंक दिए 10. उथल पुथल कर डाले

कराचोल[1] श्रोणत सों लिपटैं चमकति ह्वै है लालं।
लहिलहाति जनु जम की जीहा[2] चरिबै पान गुलालं ॥ २२ ॥
परे कराहै घाव महां हैं दरड़े[3] उठि न सकंते।
यौं बीरन घाल्यो घमसाना घूमति घाव लगंते ॥ २३ ॥
रकत बह्यो, पट रंग चढ्यो सभि, धरे लाल जनु बागे[4]।
मनहुं अधूम अगनिहे दीखति गिरे लरति हुइ आगे ॥ २४ ॥
साहिब चंद अधिक उतसाहा रिपु दल आवति देखा।
सनमुख होइ खड़ग परहारहि तुरक बिलोकि बिशेखा ॥ २५ ॥
पुन पहाडीए ओरड[5] आए घिर्यो बीर बर जोधा।
खाइ घाव तन रुप्यो महा भट पल पल बाढ़यो क्रोधा ॥ २६ ॥
बहुतनि घेर क्रिपान प्रहारे, कटे अंग भी मारै।
जबि लौ गिर्यो न अवनि ऊपर तबि लौ खडग प्रहारै ॥ २७ ॥
रुप्यो चहूं दिशि कहिं लग काटहि बहु बीरन मिलि मार्यो।
चंदमुखी हूरन लै ततछिन बर बिमान महिं डार्यो ॥ २८ ॥
दौरि सुभट इक गुर तट पहुंच्यो सुध सुनाइ तिनि सारी।
साहिबचंद घिर्यो अरि गन महिं बहु करवार प्रहारी ॥ २९ ॥
जीवति रह्यो ते जाइ निकासहु मर्यो लोथ तिह लीजै।
नहिं चल्यो बस सिंहन केरा सैना वडी लखीजे[6] ॥ ३० ॥
सुनि सतिगुर नर सों कहि भेजा कहु अजीतसिंह तांइ[7]।
सलिता तट लगि तकरे[8] रहीअहि रिपु रखि दूर हटाई ॥ ३१ ॥
हम करि जोर लोथ कहु आनहिं, संसै करौ न कोई।
उदे सिंह आदिक भट सगरे हतहु तुरक रिपु जोई ॥ ३२ ॥
इम कलगीधर कहि उर क्रोधे ले बचित्र सिंह संगा।
अपर[9] सिंह भी गमने गुर सिउं कसी दुगुलक तुफंगा[10] ॥ ३३ ॥
लोथ परी गन[11] तुरकन दल महिं ढिग हुइ बान चलाए।
तुपकनि शलख छुटी इक बारी हते गिरे समुदाए ॥ ३४ ॥
घाल्यो हेल प्रभू तिस थल परि लशकर भै बिरधायो[12]।
जथा केहरी सनमुख आवहि तिम प्रभु को दरसायो ॥ ३५ ॥
तीरनि बीधे बहु बहु बीरन धीरज शत्रुनि तोरा।
खरे रहनि की शकति न होई ततछिन ही मुख मोरा[13] ॥ ३६ ॥

---

1. कृपाण 2. जिह्वा 3. मसल दिए गए 4. वस्त्र विशेष 5. उमड़ कर आ गए 6. दिखाई पड़ रही थी 7. को 8. दृढ़, मज़बूत 9. अन्य 10. दोनाली बंदूकें 11. शवों के समूह पड़े थे 12. सेना में भय बढ़ गया 13. तुरन्त मुख मोड़ लिया

मारि मारि करि सिंह पुकारे ब्रिंद तुरक संहारे ।
जीवति जे पिखि म्रितक घनेरे भागनि को पग धारे ।। ३७ ।।
ओरड़[1] पर्‌यो खालसा तिन को गुर कहि तिनहि हटाए ।
चमके खड़ग ब्रिंद ही हाथनि पहुंचति निकट चलाए ।। ३८ ।।
तुरक पहारी भए पलाइन वहुचे तहिं लगि जाई ।
साहिब चंद मर्‌यो जहिं मारति ततछिन लोथ[2] उठाई ।। ३९ ।।
पिखि वजीदखां भाज्यो लशकर गार निकारत फेरे ।
कहां भयो थिर रह्यो न कैसे क्‌यों न अलप रिपु हेरे ।। ४० ।।

रसावल छंद

लई लोथ चाले । नदी तीर जाले ।
मच्यो जुध भारो । मिले हैं पहारी ।। ४१ ।।
वजीदं पछाना । दलं फेरि आना ।
सबे आइ राजे । बडी लाज लाजे ।। ४२ ।।
नहीं लोथ राखी । धिकं आप भाखी ।
चपै[3] चौप हीना । नहीं धीर लीना ।। ४३ ।।
खरे सिंह हेरे । सु गोरीनि गेरें ।
मनो मेघ वुठे । सु ओरान वुठै[4] ।। ४४ ।।
क्रिखी[5] से पहारी । गिरे ते अगारी ।
महां सार बाजा । तबै क्‌वै न भाजा ।। ४५ ।।
हथावथ होए[6] । लरैं बीर दोए ।
फिरें छूछ[7] घोरे । जरी जीन बोरे ।। ४६ ।।
कहूं बाज मारे । कहूं स्वार डारे ।
कहूं घाइ घाले । भजंते बिहाले ।। ४७ ।।
कहूं मारि नेजे । जमंधाम भेजे ।
किनै सांग मारी । भई फोरि[8] पारी ।। ४८ ।।
कराचोल[9] कोई । हते कीनि दोई ।
किसू के तमाचे । हते धूल राचे ।। ४९ ।।
गुरु केर तीर । बिध ब्रिंद बीर ।
परे प्रान खोए । बडी नींद सोए ।। ५० ।।

---

1. अंत में 2. शव 3. खीजना 4. ओलों की वर्षा हुई 5. खेती 6. द्वंद्व युद्ध हुआ 7. खाली 8. फोड़ कर (पार हो गई) 9. तलवार

चली पुंज गोरी । भरे दौन औरी[1] ।
कटारं प्रहारा । किनू पेट फारा ॥ ५१ ॥
बजै राग मारू । लरते जुझारू ।
महां फाग खेलैं । मिलैं पै धकेलैं ॥ ५२ ॥

सिरखंडी छंद

कहि कही कड़कति काली अभिख भखणा[2] ।
धूड़ उतंग बिसाली[3] सूरज छपि गयो ।
चमूं भई बिकराली मुख पर खेह[4] ते ।
लोहू[5] कपट कराली आंतरे[6] गिरपरी ॥ ५३ ॥
कूकां जंबूक कूकी, स्वान पुकारते ।
ग्रिझां उड उडि ढूकी, काकनि[7], कंक सौ ।
गुलका चलि चलि शूंकी[8] उर सिर फोड़ती ।
जीवण आशा चूकी भड़थू घतणा[9] ॥ ५४ ॥
जिरहि संजोवां टूटी गर ते गिर परी ।
लरत्यौ चमूं निखूटी हूटी ओज ते ।
छाती अखीयां[10] फूटी लगी लगौ गोरीआं ।
बहुती बाछड़ सूटी[11] कसि कस तुपक को ॥ ५५ ॥
कहिं लगि कथौं लराई भारथ जनु भयो ।
मिटे न भट, वरिआई कटि कटि काटिते ।
लोथनि[12] अविनी छाई जो रछ खेत की ।
घाइल ह्वै समुदाई भागे केतिने ॥ ५६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रथे चतुरथ रते 'साहिब चंद बध' प्रसंग बरननं नाम चारचतवारिंसती अंशु ॥ ४४ ॥

---

1. दोनों ओर से 2. भक्षण करना 3. विशाल, बहुत अधिक 4. मिट्टी 5. रक्त 6. अंतड़ियां 7. एक मांसाहारी पक्षी 8. शूं-शूं की ध्वनि करती है 9. घमसान युद्ध करना 10. आंखें 11. फेंकी 12. लाशों से

अंशु ४५
बिसालो प्रसंग

दोहरा

अंध धुंध बहु धूम ते चढी धूल असमान।
धूम परी बहु बीर की, मानी सभि ने आनि ॥ १ ॥

नवलामक छंद

तड़भड़ तुपकन। तजि तजि अरि हनि।
खडगनि हति हति। मरति सु जित कित ॥ २ ॥
सतुद्रव तट पर। अटिक सुभट बर[1]।
रुपि रुपि लरि करि। मिटति न प्रण धरि ॥ ३ ॥
गुरसुत सर खर[2]। करखति[3] धनुधरि।
बल बड[4] भरि भरि। तजत तरत धरि ॥ ४ ॥
सरपन समसर। फुंकरति अरि पर।
त्रिधित्रिधि गिरधर। रकत सु भरिभरि ॥ ५ ॥
भट परि महि महि[5]। पुन सर गहि गहि।
रिपु तन लहि लहि। थित रहु कहि कहि ॥ ६ ॥
रिस उर करि करि। धर धरि धर धरि[6]।
अरि अरि अरि हरि[7]। शूकति सर खर ॥ ७ ॥

चंचला छंद

श्री गुबिंद सिंह जी अनंद मैं बिलंद होइ।
सिंह पुंज संग बाक बोलते प्रकोप जोइ।
मारीए तुफंग को जु अग्र आनि कीनि ढोइ।
पंथ को छुटाइ लेहु कोर लेहु मार सोइ ॥ ८ ॥

---

1. श्रेष्ठ 2. तीक्ष्ण तीर 3. खींचना 4. अधिक, बड़ा 5. पृथ्वी में 6. धरती पर धड़ ही धड़ पड़े जा रहे हैं 7. शत्रु को मारते हैं

राखियो नदी उरारि[1] शूर शत्रु जे समूह।
पारि है उलंघनो हटाइ बैरियानि हूह[2]।
पाछ राखि आपने निवारिये तुफंग मारि।
श्री गुर उचारि, श्रोण शुय सिंह कोप धारि ॥ ९ ॥

आदि जे अजीत सिंह आयुधान मारि मारि।
शीघ्र ही पहूंचि कै गए तहां प्रहेल डार[3]।
जान नांहि दीजीए हनीजीए उचारि ऊच।
वान मारि तीछना जि भीछना लगंति मूच[4] ॥ १० ॥

ललितपद छंद

पिखि अजीत सिंह गमने आगे उदे सिंह रिस धारी।
आलमसिंह दयासिंह पहुंच्यो मुहकम सिंह अगारी ॥ ११ ॥
बखशश सिंह बखशीश सिंह जुग ईशर सिंह सु क्रोधा।
शेरसिंह देवा सिंह उमड्यो वर बचित्र सिंह जोधा ॥ १२ ॥

नाहर सिंह गरजा सिंह गरज्यो अजब सिंह ततकाला।
गयो अजाइब सिंह तहां को संत सिंह रिपु काला ॥ १३ ॥
अनिक सिंह भगवान सिंह तहिं महां सिंह हय प्रेरा।
धरम सिंह साहिब सिंह धाए राम सिंह रस हेरा[5] ॥ १४ ॥

कहिं लगि गिनौं सुभट वर गुर के गए हटावनि आगे।
चमूं मलेछन रोकति उत ते सिंह सु बरजन लागे ॥ १५ ॥
दोनहुं के भट भेड़[6] भयंकर शसत्र पुंज बरखाए।
हथावंथ[7] ह्वै कै गुथ जुथे मथहिं मारि उलाटाए ॥ १६ ॥
हली[8] चमूं अविलोकि वजीदे जथेदार पठि औरं।
तित को जाइ तुरंगम प्रेरति रोक लिए तिस ठौरं ॥ १७ ॥
खपरे तीछन भीछन सतिगुर ऐंचि ऐंचि गन मारे।
हय समेत रण खेत रह्यो सो सगी कितिक संहारे ॥ १८ ॥
उत ते श्री अजीत सिंह मोरे आगा बिन रिपु कीनो।
जो पहुंचहि रोकन तित दिशि को, होइ सु प्रान बिहीनो ॥ १९ ॥
लूझ रहे बहु जूझ परे गन, तहीं न ठहिरन दीनो।
सने सने[9] सलिता जल पारहि लरति पयानो कीनो ॥ २० ॥

1. इस ओर 2. शत्रु ने आक्रमण करके 3. हमला करके 4. लगाते ही गिर पड़े 5. गुरु जी के युद्ध वीर सिंह 6. लड़ाई 7. हाथापाई 8. हिली जुली 9. धीरे धीरे

रिस को धरिधरि बल को करि करि रोकनि फिर फिर चाहैं।
पहुंचे नहिं अनेक जतन ते मरिमरि गिरे तहां हैं॥ २१॥
ठहिर न देति सरनि की बरखा तीनचार बिध जाई।
बिन मारे को छूछ[1] न चालहि हय भट मरि समुदाई॥ २२॥
आगे गुर सुत, मध गुरु थित, पाछै सिंह जुझारे।
करे कदन[2] शत्रु अनगन ही लोथ लोथ पर डारे[3]॥ २३॥
शसत्रनि बल ते दूर रखे रिपु सलिता तरी सुखैना।
पार गुरु जुति सिंहनि सभि दल, उरे[4] मलेछी सैना॥ २४॥
सलिता बिखै प्रवेशन चाहति परै तीर अरु गोरी।
मरे कितिक बहि गए वीच ही धिरहिं उरारहिं ओरी॥ २५॥
रिस को करति दंत को चरबति वस नहि कछू बसावै।
गरजहि तोप टोल कहु मारहि खरे होनि नहिं पावै॥ २६॥
भीमचंद आदिक सभि राजे मिले वजीद पठाना।
अवि तौ पार परे दिढ[5] ह्वै करि, हतहि तुपक अरु बाना॥ २७॥
नाहक[6] सैन नहीं हनवावहु गुरु सूरमा भारी।
हम को कहति हुते क्या होयो अबि तुम लेहु निहारी॥ २८॥
चमूं अलप है चाकर नांहिन, लाखहुं संग लडंता।
गहिबे महिं[7] तड़िता नहिं आवहि, तिम गुर बीर दिखंता॥ २९॥
करहु संभालन घाइल म्रितक घाल्यो दूर सु डेरा।
हमरे देश नहीं गुर थिर अबि नदी तीर परहेरा॥ ३०॥
बिसम्यो तबि वजीदखां बोल्यो अचरज कीन गयो है।
जल प्रवाह सम रुक्यो न किमहूं मारति पार भयो है॥ ३१॥
पुंज सुभट को खेत पर्यो पिखि पुरी न चित की बांछे[8]।
पकर्यो गयो न भयो संहारनि, बिजै लेति गुर गाछे[9]॥ ३२॥
रिदै बिसूरति मूरख मिलिकै महिमा ते अनजाने।
तजि सलिता तट दूर पिछे हट डेरा पाइ सथाने॥ ३३॥
गुर की तोप न गोरा पहुंचहि—कोसके तजि करि आए।
करि तकराई[10] अनिक बिधिनि की थिर सुचेति समुदाए॥ ३४॥
जाग्रत रहे—न आइ परै गुर—कसि तुफंग धरि हाथैं।
मरहि अनिक को करहि संभारन ? परे मिले रज साथैं॥ ३५॥

---

1. खाली, सवारहीन घोड़ा 2. वध, विनाश 3. लाश पर लाश पड़ी थी 4. इस ओर 5. दृढ़, मजबूत 6. व्यर्थ 7. पकड़ने में 8. इच्छाएं 9. चले गए 10. मज़बूती से

भीमचंद कर बंदि बिनै कहि दे बहु दरब उतंगा[1]।
अपर अजाइब वसतू दे करि इक शिंगार मतंगा ॥ ३६ ॥
आनि बचायहु भए सहाइक नतु गुर देश निकारै।
अबि बसिबो हुइ सैल बिखै हम गुरु भयो जबि पारै ॥ ३७ ॥
इत्यादिक कहि रुखसद[2] कीनसि पुरि सिरंद[3] अबि जावौ।
हम हज़रत के नित गुलाम हैं भीर परे तबि आवौ ॥ ३८ ॥
होति प्राति के हम निज घर महिं जै हैं, मिटि लराई।
सकल सैलपति[4] सूबै[5] सन मिलि पहुंचे निज निज थांई ॥ ३९ ॥
रुदन पीटबो शोक महाना गिर गन घर घर होवा।
किस को सुत, पित, भ्राता, पति हति अपनि संबंधनि जोवा ॥ ४० ॥
भीमचंद को गारि निकारहि प्रजा सुभट मरिवाए ;
साहिब करामाति संग भिरिकै क्या लीनसि दुख पाए ॥ ४१ ॥
श्री गुर महाराज तट पर ले[6] सुख सों करि बिसरामा।
घाइल सकल संभारनि कीने अरे कीनि रण कामा ॥ ४२ ॥
म्रितक सिंह सभि दाइ कराए पहुंचाए सुरलोका।
सालपत्र[7] घायल पर लाए पीर मिटी, नहिं शोका ॥ ४३ ॥
डेरा करि अराम भट सगरे खान पान सभि कीना।
सुपति जथा सुख राति बिताई भई प्राति तम छीना ॥ ४४ ॥
राव बिसाली को तबि आयहु चरन सरोजन बंदे।
करहि वारता संघर केरी होवति रिदै अनंदे ॥ ४५ ॥
धन गुरु पूरन प्रभु! करता समसर आन न कोई।
भीमचंद हंकार निकंदा[8] तुरकनि की पत खोई ॥ ४६ ॥
पार सथान खेत रण मांही संकीरन नर घोरा[9]।
जित कित मरे परे द्रिशटावैं, कूकैं जंबुक घोरा ॥ ४७ ॥
ग्रिथ फिरैं तहिं भई हज़ारहु, स्वान पुकारति ब्रिंदा।
कई दिवस लौ खाइ अघावहि थुर्‌यो[10] न पर्‌यो बिलंदा[11] ॥ ४८ ॥
मुझ को जान आपनो चेरा, नगर चलहु द्रिग हेरो।
चरन सरोजन पाइ निकेतहिं[12] पावन कीजहि मेरो ॥ ४९ ॥

---

1. बहुत अधिक 2. विदा किए 3. सरहिंद 4. पहाड़ी राजागण 5. प्रांताधीश 6. दूसरी ओर 7. घावों को भरने वाला विशेष पत्ता 8. अहंकार नष्ट हो गया 9. बहुत से सैनिक बिखरे पड़े हैं 10. कम न हुआ 11. बड़ा 12. घर में

वसतु दास की घर ते आदिक सभि अपनी प्रभ जानो ।
चहहु सु बरतहु करुना करिकै मन भावति सुख ठानो ।। ५० ।।
इस प्रकार बहु प्रेम पेखि करि सतिगुर भए क्रिपाला ।
ज़ीन पवाइ करायो दुंदभि दीरघ नाद उठाला ।। ५१ ।।
कर्यो कूच प्रभु राव संग ले बातहिं करति पयानै ।
देखि सरूप त्रिपत नहिं होवति, रहे बिराज महाने ।। ५२ ।।
आनि उतारे अनिक भाउ करि सेवा महिं मन लायो ।
बांछति वसतु प्रेम ते दे करि रिदै अधिक हरखायो ।। ५३ ।।
श्री अजीतसिंह सरब खालसा राव भा को हेरे ।
श्री प्रभु निकट प्रशंशा ठानति प्रेमी भाग बडेरे[1] ।। ५४ ।।
सरब भांति करि सभिहूं सुख भा बांछति वसतु पुचाई ।
खान पान करि अधिक अनंदे गुर ते खुशी कराई ।। ५५ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'बिसाली प्रसंग'** बरननं नाम पंच चतवारिंसती अंशु ।। ४५ ।।

---

1. वड़े श्रेष्ठ

अंशु ४६

अखेर प्रसंग

दोहरा

बसे बिसाली नगर महिं गुरु गरीब निवाज ।
आइ राव वंदन करै सेवै जितिक समाज ।। १ ।।

चौपई

बैठे निकट वाक गुरु सुने । भाग आपने दीरघ गुने ।
सगल खालसे लगहि दिवान[1] । श्री अजीतसिंह थित हुइ आनि ।। २ ।।
बोल्यो राव सैलपति[2] अंधे । रावरि साथ बैर बड बंधे ।
लोक प्रलोक खोइ जिन लीनो । महां कुकाज आपनो कीनो ।। ३ ।।
अपजसु जंग महिं बहु बिसतारा । बारि अनेक लरति रणहारा ।
सुनहि श्रोण मन जो करतूत । कहै गिरेशनि ब्रिखै कुपूत ।। ४ ।।
बारि बारि तुरकानि अगारी[3] । निम्री होति देति धन भारी[4] ।
हार्‌यो धरम हिंदूअनि केरा । बनहि दीन बोलति—मै चेरा—।। ५ ।।
आन कानि जे राखति राजा । इम करहि जु कीनि कुकाजा ।
धिक धिक बार बारि इस कहै । सतिगुर संग ब्रिरोधी लहैं ।। ६ ।।
राज तेज शसत्रनि बल त्यागा । महा रंकता के मग लागा ।
तसकर समसर करिकै पंमां । चून धेनु[5] ले गयो कुकमा[6] ।। ७ ।।
करी कुक्रित आन[7] को दीन । बंचक[8] बनि प्रपंच अस कीन ।
महां पराजय को इह[9] लछण । हसहि धिकारहिं सकल ब्रिचछन ।। ८ ।।
तुम को धन्य सुजसु बिसतारा । मान आन बड धरम दिखारा ।
रावरि बिना कौन अब्रि करै । रिपु के कहै आन को धरै ।। ९ ।।

---

1. सभा 2. पहाड़ी राजा लोग 3. आगे 4. उन्हें नम्रता ग्रहण करनी पड़ता और बहुत सा धन आदि देना पड़ता 5. आटे की गाय 6. कुकर्म करने के लिए 7. शपथ 8. ठग 9. यह

अपनो नगर बिसाल बसंता[1]। निकसे सभि किछु त्यागि तुरंता।
सुनि करि दया सिंह तबि कह्यो। कर्‌यो कुकरम सभिनि हूं लह्यो ॥ १० ॥
बडे पुरख कूरे[2] करि मारति। तावत अधिक छिमा करि डारति।
महा दुशट सुख सों नहि बसै। पंथ खालसा सिर पर लसै[3] ॥ ११ ॥
जेकरि शरण परति सो आइ। राज तेज परताप अधिकाइ।
लोक प्रलोक सुखी नित रहति। सकल जगत महिं जसु को लहति ॥ १२ ॥
बोले कलगीधर मुसकावति। इह निरभाग[4] नहीं कुछ पावत।
पंथ खालसा हम उपजायो। राज तेज नित वधहिं[5] सवायो ॥ १३ ॥
सकल सैलपति[6] को दुखदाई। त्रसति होइ परि है शरनाई।
छीनहि देश कि लैहै दंड। जेकरि लरहिं होइ खंड खंड ॥ १४ ॥
केतिक बरखन महि इक सिख्य। परहि सभिनि पर, कथा भविख्य।
तुरकन सहित सैलपति सारे। को को बचहि, जाहिं तब मारे ॥ १५ ॥
देश उजारहि धूम उठावहि। लूट कूट करि सभिनि त्रसावहि।
अबि तौ हम ने खेल पसारी। सीखहि पंथ करण रण भारी ॥ १६ ॥
शरण परहि नित होहिं उबारण[7]। नांहि त सहित बंस हुइ मारण।
एक सहस कोस जिन राज। चक्रवरति को सिर पर ताज ॥ १७ ॥
हम तिस की जर करहिं उखारण। राज तेज बिनसै बड दारुन।
सैलपति गिनती किस बिखै। अबि ते पंथ लरन ही सिखै ॥ १८ ॥
इम सुनि राव हरख चित भयो। बैठि कितिक चिर घर उठि गयो।
रिदै सराहति गुर वड तेज। को इनके सम महा मजेज[8] ॥ १९ ॥
चावर चून पहित घ्रित आछै?। पहुंचावति जेतिक हुइ बांछे।
त्रिण काशट की सगरी सेवा। करति प्रसंन हेतु गुरदेवा ॥ २० ॥
दुइ त्रै बासुर जबहि बिताए। पुन रणजीत नगारा वाए[9]।
करि अखेर[10] को बहिर बहाना। भए अरूढनि गुर भगवाना ॥ २१ ॥
उतरि उरार[11] नदी ते अए। बिचरति बन केतिक म्रिग घाए।
तुरक पराजे पाइ बिसाला। पशचाताप करति पुरि चाला[12] ॥ २२ ॥
सुभट हजारहुं करि मरिवावन। नहिं गुर गह्यो गयो को घावन[13]।
चमूं मारि नद प्रारि उतरिगा। एक संबंधी तुरक सु मरिगा ॥ २३ ॥

---

1. बसता है 2. झूठे 3. शुभायमान होगा 4. भाग्यहीन 5. वृद्धि होनी 6. पहाड़ी राजा 7. बच पाएंगे 8. श्रेष्ठ स्वभाव वाला 9. बजाया 10. आखेट, शिकार 11. इस पार 12. चल दिए थे 13. मारने के लिए

इम पछुतावति गयो सिरंद[1]। पाइ नमोशी[2] शोक बिलंद[3]।
भीमचंद के भट समुदाई। उतरे कित कित हित तकराई[4] ॥ २४ ॥

सुनि सतिगुर को बजति नगारा। त्रासति तुरत करति भे त्यारा।
गयो खालसा जित सो जोए[5]। दोनहुं दल मुकाबले होए ॥ २५ ॥

चली तुफंगै गुलका[6] संगा। करे प्रहारी अंगन भंगा।
श्री प्रभु नहिं तिस की दिशि गए। कितिक सिंह पहुंचे रन भए ॥ २६ ॥

हय धवाइ करि ताकति मारैं। दड़ गिर परहिं न बहुर संभारैं।
केतिक चिर लो अरे प्रहारी। उमडे सिंह बीर बलि भारी ॥ २७ ॥

हेला घालि[7] परे इक बारे। ऊच पुकारति मारहु मारे।
बीच प्रवेशे तिन के जाइ। दीरघ तोमर हते रिसाइ ॥ २८ ॥

खड़ग निकासि बिनाशनि करे। भजे गिरनि नर डर उर धरे।
तिन महुं केतिक मारि गिराए। अपर प्रान प्रिय करति पलाए ॥ २९ ॥

लूट कूट लीनसि तिन डेरा। हय आयुध आदिक जो हेरा।
केतिक ग्राम मार करि फिरे। आइ मिले गुर दरशन करे ॥ ३० ॥

मिल्यो खालसा बहु गरजावै। वाहिगुरु[8] की फते बुलावै[9]।
करति अखेर[10] प्रभू हटि आए। सलिता उतरि सिवर[11] दरसाए ॥ ३१ ॥

तजे तुरंगम किय बिसरामू। डरे सकल ही गिर के ग्रामू।
ले ले भाजर दूर सिधाए। बसे अनत थल बाम कि दाए ॥ ३२ ॥

बिगर्यो दरब मामला जबै। भीमचंद को चित दुखि तबै।
बस न बसाइ बिसूरति[12] भारी। गूर बिरोध ते अधिक बिगारी ॥ ३३ ॥

इत सतिगुर नित करति बिलासा। चढे अखेर निहारी तमाशा।
संगति दरशन को तहिं जावे। सुनि सुनि सिंह देश ते आवैं ॥ ३४ ॥

दरब वसतु गन हय हथ्यार। लागहिं अकोरनि[13] के अबार।
अधिक तिहावल[14] नितप्रति होवे। ब्रिंद इकत्र दरस को जोवैं ॥ ३५ ॥

चढहिं प्रभू हय वहिर सिधावहिं। हित अखेर सलिता लंघि आवहिं।
बाजति बड रणजीत दमामा[15]। सुनि खलभल[16] हुइ शत्रुनि धामा ॥ ३६ ॥

---

1. सरहिंद 2. अपमान, लज्जा 3. अत्यधिक 4. मज़बूती 5. जिस ओर देखे 6. गोलियां 7. आक्रमण, हमला 8. परमात्मा 9. जयघोष करते हुए 10. शिकार 11. शिविर 12. संताप 13. भेंटों के 14. कड़ाह प्रसाद 15. गुरु जी का नगारा विशेष 16. खलबली मच जाती

दूर दर लगि[1] जाहिं अखेर[2]। सुनि को आइ सकै न अगेर[3]।
इत उत तरत कहूं रिपु दुरैं। जबि सतिगुर डेरे कहु मुरैं॥ ३७ ॥
तबि निचित हुइ थिर निज थान। देश सैल के त्रास महान।
औचक[4] सिंह आइ नहिं परैं। लूट कूट हति करि फिर फिरैं॥ ३८ ॥
याते निसदिन बनि सवधान। कशट प्रजा राजा बहु मानि।
पछुतावति मूरख मति मंद। चहति रिदै हुइ सधि अनंद॥ ३९ ॥
गुर को बिगर्‌यो काज न राई। बनहिं सिंह देशनि समुदाई।
दिन प्रति भेट संगता[5] ल्यावैं। आदि विलाइत के नर आवैं॥ ४० ॥
हमरी चमूं खपी लरि सारी। खरच हगामे[6] पर धन भारी।
आदि केसरीचंद अछेरे। सचिव संबंधी मरे घनेरे॥ ४१ ॥
अपजसु जग महिं भयो बिसाला। इत्यादिक झूरहिं गिरपाला[7]।
लरन हेतु उद्‌योग न करैं। रण को सिमरि सिमरि डरि धरैं॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते **'अखेर प्रसंग'** बरननं नाम खशट चतवारिंसती अंशु ॥ ४६ ॥

---

1. तक 2. शिकार 3. आगे 4. अचानक 5. सिख समूह 6. युद्ध पर 7. पहाड़ी राजा

अंशु ४७

गुर विस्राम प्रसंग

दोहरा

वारपार[1] दरीआउ के सतिगुर करैं अखेर।
चढैं जबै छित बिचरते ऊच नीच थल हेरि ॥ १ ॥

चौपई

एक दिवस चढि गुरु पयाने। पुरि भंभौर बसहि जिस थाने।
संग खालसे को दल भारी। बजति जाति रणजीत अगारी[2] ॥ २ ॥
तहिं के राव सुनी धुनि जबै। हरखति होइ अरूढ्यो तबै।
निज परधान लए कुछ संग। देनि हेतु करि ल्याए तुरंग ॥ ३ ॥
निकसि नगर ते बाहरि आयो। जित धुनि सुनी तितै को धायो।
प्रथम सचिव को निकट पठाइ। आप गयो तूरन[3] तबि धाइ ॥ ४ ॥
देखति उतरि तुरंग ते आयो। चरन सरोजन को लपटायो।
श्री प्रभु क्रिपा करी इत आए। मोहि आपनो लीन बनाए ॥ ५ ॥
मैं अति मंद न महिमा जानी। नहीं शरन पकरी सुख खानी।
चलहु नगर करि पावन पावन[4]। सगरे मंदिर करीअहि पावन ॥ ६ ॥
इत्यादिक जबि कीनि ब्रिनंती। ढरे क्रिपा तजि औरे गिनती[5]।
जे करि तुव उर भाउ बिसाले। चल बिलोकहिंगे ग्रिह चाले ॥ ७ ॥
देकरि भेट[6] अगारी होवा। सने सने चलि मारग जोवा।
निज पुरि महि प्रभु आनि उतारे। सेवा कीनी अनिक प्रकारे ॥ ८ ॥
भख्य, भोज, लेहज अरु चोसा। करि तयार बडि थार परोसा।
चौकी चारु बिसाल दसाइ। तिस पर सुजनी बिसद बिछाइ[7] ॥ ९ ॥

---

1. दोनों ओर 2. आगे आगे रणजीत नगारा बज रहा था 3. तुरन्त 4. चरणों से पवित्र कीजिए 5. और विचारों को त्याग कर 6. भेंट दे कर 7. विशेष सुंदर वस्त्र बिछाया

ता पर बिनती भाखि बिठाए। दूसर चौंकी अग्र टिकाए।
तिस पर थार परोसि धर्‌यो है। हाथ जोरि ढिग आप खर्‌यो है ।। १० ।।
दास अनेक सेव पर लाए। ले करि बिजना[1] आप झुलाए।
सभि सिंहन कौ पुन बरतायो। स्वादल भोजन करहि अचायो ।। ११ ।।
सीतल पानी पान कराइ। गुर ते खुशी लई वहु भाइ।
सुंदर मंदिर सौध[2] उचेरा[3]। तहां प्रयंक डसाइ[4] बडेरा[5] ।। १२ ।।
म्रिदुल[6] बिसद बर छादि बिछोना। सेज बंद बंधे, बिच[7] भौना।
हित अराम गुर को ले गयो। पौढि रहे[8] प्रभु सुख को लह्यो ।। १३ ।।
सकल हयनि को त्रिण अरु दाना। कर्‌यो त्रिपत जुति सेव महाना।
सुपति जथा सुख राति बिताई। जागे प्रभु प्रभाति हुइ आई ।। १४ ।।
सौच शनान ठानि करि आछे। बहुर अरूढनि को चित बांछे।
हाथ जोरि करि बोल्यो राऊ। इत ही रहीअहि सहिज सुभाऊ ।। १५ ।।
अपनो नगर सगर ही जानहु। सुंदर मंदिर महिं सुख ठानहु।
डेरा जेतिक रह्यो पिछारी। वसन[9] हेति इत लेहु हकारी ।। १६ ।।
थिरहु इहा मुझ करहु निहाल। बन्यो अचानक ही अस काल।
इत्यादिक बहु बिनती करि करि। भाउ रिदे महिं दीरघ धरि धरि ।। १७ ।।
निज पुरि महि गुर लए टिकाइ। सेवा करति धरति चित चाइ।
द्वै असवार चढाइ पठाए। जाइ बिसाली राव सुनाए ।। १८ ।।
तिस पुर डेरा राव रखायो। निज ब्रिहीर[10] भी तहां बुलायो।
बहुत बिनै करि कहि गुर राखे। आवन दीए न, आवन कांखे[11] ।। १९ ।।
राव बिसाली को सुनि तबै। संग ब्रिहीर लीनि जो सबै।
चढि करि आप साथ ही गयो। पुरी ब्रिभौर सु प्रापति भयो ।। २० ।।
भयो इकत्र सकल गुर डेरा। मिल्यो जाइ चरणांबुज हेरा।
हाथ बंदि करि बिनै बखानी। माहाराज तुमारी रजधानी ।। २१ ।।
नहीं बिसाली महि किम रहे। मो महिं दोश कि रावर लहै।
दरशन करति न मैं त्रिपतायो। सेव करन ते मन न हटायो ।। २२ ।।
किस कारन ते इत थिर रहे ?। मुसकावति कलगीधर कहे।
औचक[12] राव मिल्यो बन बिचरति। बिनती करति भयो धरी हित चित ।। २३ ।।

---

1. पंखा 2. सफेद 3. ऊंचा 4. बिछवाया 5. बड़ा 6. कोमल 7. बीच में 8. लेट गए 9. बसने के लिए 10. सैन्य दल 11. आने की इच्छा रखते थे 12. अचानक

आनि आपने सदन उतारे। बहुर चढन कीनसि त्यारे।
अधिक भाओं ते राखि टिकाए। तो पर खुशी अहै अधिकाए ।। २४ ।।
सुख सों भोगहु राज समाजा। करहु तिहावल[1] अरहि जु काजा।
करि अरदास धरहु मम ध्याना। होहि मनोरथ पूर महाना ।। २५ ।।
शत्रु जोर जे तुम पर करै। हेतु सहाए खालसा चरै।
करि दीजहि सुधि सुन तिह धावै। अनक रिपुनि दे हाथ बचावै ।। २६ ।।
इम धीरज दे राव पठायहु। पद अरबिंदन सीस निवायहु।
सभि सिंहन को फते बुलाई[2]। गयो आपने घर हरखाई ।। २७ ।।
सतिगुर तहां बसे सुख पाए। इक दिन बैठे सहिज सुभाए।
ऊचे थल पर थरे निहारे। देश महां रमनीक बिचारे ।। २८ ।।
निकट खालसा गन पुरी राऊ। हेरि हेरि बोले चित चाऊ।
सुन्दर सल सैल के लायक[3]। मनहु हिमाले की दुति दायक ।। २९ ।।
किधौं कैलाश रुद्र को थाना। उपजावति उर अनंद महाना।
पंडपुत्र[4] इत फिर करि बन मैं। तपत सथल को लखि करि मन मैं ।। ३० ।।
कितिक समा बसि इहां बिताए। गिर तरु वरु पिखि के हरखाए।
पूरब सतिजुग महिं विधि आयो। थि्रयो इहां दीरघ तपतायो ।। ३१ ।।
नाम कलेसर[5] ब्रहमे धर्‌यो। उत इत बिचारति आनंद कर्‌यो।
यांते पावन इह असथाना। परम मुनी तप तपे महाना ।। ३२ ।।
फल मूलनि ते सुख को पाए। गिरवर शोभा पिखि बिरमाए[6]।
अधिक तपे तप मन को रोकि। मरि पहुंचे कमलासन लोक ।। ३३ ।।
इत्यादिक सुनकै गुर बचना। करहिं निहारनि गिरवर रचना।
प्रभु जी ! उचरति हो तुम जैसे। पिखीयति तरुवरु गिरवर तैसे ।। ३४ ।।
मन को मौद उपावन हारे। क्यों नहिं बिरमहि आई निहारे।
इस प्रकार प्रभु सैल सराहा। बसे तहां मन आनंद पाहा ।। ३५ ।।
म्रिगीआ[7] करते बिचरैं कबै। सिंह अरूढहिं संगी सबै।
कबहूं गुर नंदन चढि जावैं। सैल करहिं जेतकि मन भावे ।। ३६ ।।
ऊच नीच थल बिखम कि सम हैं। वहु रमणीक सुगम दुरगम हैं।
चलति बेग ते निरमल वाहै[8]। बिना धूल बनगम अवगाहै[9] ।। ३७ ।।

---

1. कड़ाह प्रसाद 2. सिखों द्वारा परस्पर मिलते अथवा विदा होते समय किया जयघोष 3. यह सुन्दर पहाड़ सैर करने योग्य है 4. पांडु के पुत्र युधिष्ठिर आदि 5. एक पर्वत माला का नाम 6. मोहित हो गए 7. शिकार 8. नदी नाले 9. फिरते हैं

कुसमत बन की प्रभा बिलोकै। सघने अधिक सुगन्धी रोकै।
जहिं लगि इच्छहिं बिचरति आवैं। इस प्रकार निस द्योस बितावैं ॥ ३८ ॥
देश बिदेशन बिदत महान। सतिगुर बसे जाइ तिस थान।
सुनि सुनि करि सिख संगति सारी। आवहिं दरशन इच्छा धारी ॥ ३९ ॥
पूरब दछन पशचम केरे। लै लै करि उपहार घनेरे।
परे बिहीर[1] चले बहु आवै। गुरबाणी पठि गुरु गुरु ध्यावैं ॥ ४० ॥
केतिक संगति शसत्रनि कारी। बन सुचेत आवति बल भारी।
दुशमन की दबाइं जे अरैं। बली पिखैं नेर न करैं ॥ ४१ ॥
केतिक बिन आयुध गन मिलैं। गुरु आसरे बल करि चलैं।
कार[2] गुरु की इकठी धरैं। आवहिं आप त ल्यावन करैं ॥ ४२ ॥
इस प्रकार सतिगुरु बिसरामे। अचल सथान सैल अभिरामे।
सकल खालसा सुख को पाइ। रग को सिमरहि दिवस बिताइ ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे चतुरथ रुते 'गुर बिस्राम प्रसंग' वरननं नाम सपत चतमासिती अंशु ॥ ४७ ॥

1. दलों के दल इकट्ठे हो कर आते हैं 2. सेवा

अंशु ४८

कलमोट मारन प्रसंग

दोहरा

कहैं खालसा गुरु जी बिन रण दिवस बितीत।
सुख सों शत्रू सुपति हुइ, आछी लगहि न रीति ॥ १ ॥

चौपई

बिकसे[1] श्री मुख ते फुरमायो। घनो जंग तुमरे गर पायो।
अवनी पूरन शत्रु तुमारे। सने सने[2] हरि बनहु सुखारे ॥ २ ॥
जो इछहु अबि भी हुइ रहै। खंटक दुशट हतन निरबहै[3]।
बैठे हुते गुरु शुभ थान। तबि लौ संगति पहुंची आनि ॥ ३ ॥
करि करि नमो दरस अविलोका। करि पुकार हमैं बहु शोका।
वसतु अजाइब रावरि हेतु। करि बटोरनि ब्रिंद निकेत ॥ ४ ॥
अवति लीए ग्राम कलमोटा। बसैं गवार करम जिन खोटा।
रावर की बहु दई दुहाई। नहिं माने छीने समुदाई ॥ ५ ॥
गूजर रधर[4] फुंज मिले हैं। आवति मारग रोक खले हैं।
वसतु आप की लायक जेई। लई खसोट, बरे गढ़ तेई[5] ॥ ६ ॥
सुनि सतिगुरु कै कोप बिसाला। फरके अधर बिलोचन लाला।
संगति को धीरज तब दीन। तुमरी अरपी हम ने लीनि ॥ ७ ॥
चिंता करहु न उर पछुतावहु। बैठहु मनहु कामना पावहु।
आलमसिंह जोरि कर कहा। कंटक दुशट तहां के महां[6] ॥ ८ ॥
तजि अनंदपुरि जबि चलि आए। केतिक सिंह उते को धाए।
रोक्यो चहति रुके नहिं कोइ। छल करि घेरि लिये बिच[7] दोइ ॥ ९ ॥

1. प्रसन्न चित्त 2. धीरे धीरे 3. निर्वाह होगा, समय व्यतीत होगा 4. एक मुसलमान राजपूत जाति 5. लूट ली और गढ़ के अंदर दाखिल हो गए 6. महान्, अधिक 7. बीच में

तिन के सीस काट करि गेरे। नहीं त्रास मानहिं किस केरे।
अस दुशटनि कौ ह्वै न सज़ाइ। करहिं बिगार रहै गरबाइ ॥ १० ॥
गुर घर सों बहु रच्यो बिरुधा। चहियति हते क्रुध करि जुधा।
सुनि प्रभु को रिस भई घनेरी। जलत अगनि अहुती जनु गेरी ॥ ११ ॥
आलम सिंह के संग उचारी। चहति खालसा करियहि त्यारी।
जंग समाज तबहि बरतायो[1]। जामनि बिती भोर हुइ आयो ॥ १२ ॥
हुकम करयो प्रभु बजहि नगारा। सकल खालसा चढहिं शिकारा।
परे तुरंगनि पर बर ज़ीन। पूरब प्रभु अरूढनि कीन ॥ १३ ॥
परी दुचोब[2] खालसा चढ्यो। शसत्रनि सहित बीर रस बढयो।
क्रुधति प्रभु कर्यो प्रसथाना। थरहर प्रिथवी कंप महाना ॥ १४ ॥

स्वैया

बायु समान सु बेग को धारि चले गुर मारग मैं सहिसाई[3]।
दुदंभि नाद सुन्यो जहिं लौ सभि कंप उंठी गन लोक लुकाई।
कौन पै कोप कर्यो प्रभु धावति, कौन की म्रितु अबै नियराई[4] ?
को नहिं चाहति आप को जीवन कीनि बिगार नहीं सुना पाई ॥ १५ ॥
जाति सु मारग छोरि तुफंगन धांक परी गिर देश मझारी।
श्री गुर गोबिंद सिंह कुप्यो, मति हीन ! कहो किन कीन बिगारी।
भाजति एक महा उर त्रासति एक दुरै नहिं देहिं दिखारी।
तेज धरैं बल भूर भरैं इम जाति भली प्रभु की असवारी ॥ १६ ॥
बाजति दीह[5] निशान पयानति छोरि निशान को चीर दयो[6]।
यौं फररे फहिरावति हैं जनु पौन लगे घन जाति धयो।
तूरन[7] आइ उलंघि नदी कहु पैंड बडो बलमोट लयो।
औचक[8] ही पहुंचे तिन पै गिर पै चढि देखनि दुरग कियो ॥ १७ ॥
यों उमड्यो दल गोबिंद सिंह को वार न पार सु मारन धायो।
आइसु[9] दीनि प्रभू रिस कीनि लिजे सभि छीन बथू समुदायो[10]।
श्रौन बिखै सुनि सिंह रिसे मन धाइ परे गन रौर उठायो।
घेर लीओ कलमोट को कोट, चली बहु चोटनि ओट को[11] पायो ॥ १८ ॥

1. युद्ध की सामग्री बांट दी 2. नगारे पर चोट पड़ी 3. शीघ्रता से 4. समीप आ गई है 5. दीर्घ, बड़े 6. ध्वज का कपड़ा खोल दिया 7. तुरन्त 8. अचानक 9. आज्ञा 10. वस्तुओं के समूह 11. आश्रय लेकर बच निकले

धामनि जाइ प्रवेश भए, बहु त्रास दए खल भाज गए।
केतिक हाथ तुफंगनि लै कसि मारति सिंहन ताकि लए।
ऊच अवासन होइ मवास[1] चलाइ बंदूकनि घाइ घए।
तौ अविलोकि क्रिपानन खैंचि के शत्रु गवार सु मारि दिए॥ १९॥

होनि लगे कटीआ पुरि मैं ठहिरहिं नहिं पैर महां डरपाए।
केतिक सामुहि होइ मरे रण, केतिक कातुर होइ पलाए।
मार परी दुरजान के ऊपर घाइल ह्वै धरि पै तरफाए।
को कर जोरि निहोरति है, मुख मरति हैं न घने रिपु धाए॥ २०॥

केतिक मारि तुफंगनि अंगन रंग सुरंग करे ततकाला।
केचित के तन मारि क्रिपाननि गेर लियो करि घाव कराला।
धाम उतंगन को तजिकै भजिकै सभि कोट को ओट संभाला।
वाहर जेतिक ज़ाहर[2] थे सभि मार लियो बडि आहर नाला॥ २१॥

लूट लीए, अरु कूट दिए, अरि फूट गए सिर, छूटसि प्राना।
ग्राम के धारन सिंह बरे, तिन त्रियनि दे करि त्रास महाना।
बोहर दूर निकार दई सिर पीटति हैं किस जाइ सथाना।
द्योस बित्यो दिन नाथ अथ्यो[3] तम पुंज भयो भयदायक नाना॥ २२॥

घोरि उलूक सु बोलि उठे गन जंबूक आनि पुकार करी।
कूकर कूकति मास अघावति रौर पर्‌यो बहु तांहि धरी।
दुरग मवास[4] गवारनि कीनि तुफंगन की तिन मार धरी।
सिंह बरे बिच धामन के[5] चहिं नेर कर्‌यो हति लेहिं अरी॥ २३॥

श्री गुरु गोबिंद सिंह थिरे जहिं, सिंह गए कर जोरि बखानै।
आइसु आप उचारहु श्री प्रभु, हेल को घालि अबै रिपु हानैं।
कोट महिं कूद करहिं कटिया नहिं छोरहिंगे इक भी जुति प्रानहिं[6]।
सिंह रहे रूप, ढूक चलि ढिग आपके बाक की देर पछानैं॥ २४॥

श्री प्रभु धीरज दीन प्रबीन करे रिपु दीन बरे गढ जाई[7]।
राति मैं कोप न बाद करो थिरता गहि[8] बैठि रहै समुदाई।
होति प्रभाति फते[9] करियो सभिहूं दिहु नासि, न जाहिं पलाई।
मूढनि संगति छीन लई तिस को पलटा हम लें अबि पाई॥ २५॥

---

1. आश्रय, शरण 2. प्रकट, सामने 3. दिनकर अस्त हो गया 4. आश्रय, शरण 5. सिंह घमसान युद्ध में दाखिल हुए 6. जीवित नहीं रहने देगे 7. गढ़ में जा दाखिल हुए हैं 8. स्थिरता ग्रहण की 9. विजय

आलम सिंह उदे सिंह आदिक फेर कह्यो प्रभु सों कर जोरे।
रात ही महिं रिपु घातनि देहु[1] निपात करैं छिन मैं सभि टोरे[2]।
भाज न जाहिं, कि आइ सहाइक, को करि घाति न जावहिं छोरे।
है इत्यादिक बिघन घने अबि हेल को घालनि देहु सु ज़ोरे[3] ॥ २६ ॥
श्री कलगीधर सिंहनि को कहिं धीरज, नांहि करो सहिसाई[4]।
चारहुं ओरनि घेरन घेरि सजोरहि राखहु की तकराई[5]।
काल पुज्यो इन, जाति नहीं कित, को इक घाति सु हाथ न आई।
होति प्रभाति करो सभि घाति, रहो सवधान इही भलि आई ॥ २७ ॥
अइसु मानि सुजान गुरु भट ग्राम के धाम अराम कर्‌यो।
चारहूं ओरनि घेर रख्यो गढ तीर तुफंगन हाथ धर्‌यो।
अंतर ते गुलकां गन मारति जाति है बाद न कोई मर्‌यो।
राखति दे कर आप प्रभु बिन घाव सबै दल पुंज थिर्‌यो[6] ॥ २८ ॥
कंटक संकट पाइ घनो गढ बीच घिरे डरपावति हैं।
जीवन की नहिं आस धरैं, लुट धाम गए पछुतावति हैं।
कीन कुकाज महां गुर को तिस को फल सो दिखरावति हैं।
तीर चलावति बाद सु जावति त्यों गुलका[7] बरखावति हैं ॥ २९ ॥
मंच त्रिछाइ प्रभू किय पौढनि[8] एक तरवर केतर होए।
सिंह पचीसक पास थिरे गहि आयुध को सवधान खरोए।
और सभे भट घेर रहे गढ, एक सुचेत खरे, इक सोए।
या बिधि जामनि कीन बितावनि चार घटी अरनोदय[9] जोए ॥ ३० ॥
संखन महिं भरि फूक बजावति बाज उठ्यो रणजीत नगारा[10]।
वाहिगुरु जी की सु फते[11] कहिं होति भयो उतसाह उदारा।
पुंज तुफंगनि केर तड़ाकन अंतर छोरति हैं डर धारा।
होए सुचेत शनान करैं किन केस सुधार बंधि दसतारा[12] ॥ ३१ ॥
तम मोहि कि पूखण पूखण[13] पेखि कह्यो भव भूखण ह्वै सवधाना।
गढि पै अबि हेल करो[14] मिलि कै चढि ऊपर बीर बरो रिपु हाना।
करि कारज लेहु सबेर अबेर[15] निबेरहु जंग परै घमसाना।
सुनिकै सभि सिंह फिरे चहुं ओरनि घालनि ज़ोर सु शोर महाना ॥ ३२ ॥

---

1. मारने दो 2. ढूंढ कर 3. बलपूर्वक आक्रमण करने की अनुमति दीजिए 4. शीघ्रता न करो 5. शक्तिपूर्वक अपनी मज़बूती बनाए रखो 6. स्थिर है 7. गोलियां 8. लेटे, आराम किया 9. सूर्य के उदय होने तक 10. गुरु गोविंदसिंह का नगारा विशेष 11. परमात्मा का जयघोष करके 12. पगड़ी 13. सूर्य 14. आक्रमण करो 15. विलंब किए बिना

ढोइ करी ढिग ढूक गए चहुं ओरनि ते ललकार परे।
पास गए, नहिं त्रास भए, गढ भीतन लौ अबि जाइ अरे।
हाथ कही गहि ढाहनि लाग्यो[1], रौर को शोर बिसाल करे।
फेर फिरे अलवाल[2] परे बल भूर धरे चहिं भीत चरे ॥ ३३ ॥
यौं चहूं ओर परी जबि धूम मिले गढ भीत कै संग सुजाई।
अंतर ज़ोर निरंतर को करि, हार परे तुपकान चलाई।
जानत भे चढि हैं गढ पै नहिं प्रान बचैं, कतलाम कराई।
होइ अधीरज बीरज[3] को तजि त्रास धरे सो परे घिघिआई ॥ ३४ ॥
चीर गवारनि फेरनि कीनि[4] भनैं बिनति गुर की सु दुहाई।
प्रान बचैं, इह दान करो प्रभु आन न बांछति हैं वथु[5] काई।
भूल गए बखशो हमको नहि जीवति फेर करैं खुटिआई[6]।
आप दइआ निधि सूर शिरोमणि कौन चहै तुमरी समताई ॥ ३५ ॥
दीन भए बिनती जबि कीनि क्रिपाल सुनी करुना हुइ आई।
जीवति त्याग निकार लए सभि आयुध छीन, कही पकराई[7]।
धाम सभै गढ भीत तबै ढहिवाई दिये[8] तिन ते बल लाई।
थान समान मदान कियो तहि, मानहु नांहि बसे इस थांई[9] ॥ ३६ ॥

दोहरा

लूट कूट कलमोट को पलटा तिन ते लीन।
सूर शिरोमणि दसम गुर सभि जग महिं जसु कीन ॥ ३७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे चतुरथ रुते **'कलमोट मारन प्रसंग'** बरननं नाम अशट चतवारिंसती अंशु ॥ ४८ ॥

---

1. गिराने के लिए हाथ में कसी धारण कर ली 2. दुर्ग के चारों ओर बना खाई 3. वीर्य, बल 4. पराजित होने पर सफेद कपड़ा लहराया 5. वस्तु 6. बुराई . खोदने के लिए कुदाल पकड़ा दिए 8 गिरवा दिए 9. इस स्थान पर

अंशु ४९

श्री गुर आनन्दपुर आगमन प्रसंग

दोहरा

करयो थेह[1] कलमोट को दई सजाइ बिसाल[2]।
तिस दिन ते संगति सदा सुखी रही सभि काल ॥ १ ॥

चौपई

कित ते आइ किसू मग जावैं। बाक कठोर भि नहीं अलावे।
गुर को त्रास धरहिं उर भारी। देखि लेहु कलमोट उजारी ॥ २ ॥
राजे निज निज पुरि महिं थिरे। कुछ विरोध को जिकर न करे।
दरब खरच होयसि बहुतेरा। दयो तुरक अर भटनि घनेरा ॥ ३ ॥
जंग समाज अपर जे नाना। तिन पर होयहु खरच महाना।
सनबंधी अरु सुभट संहारे। उजर्यो देश उपद्रव भारे ॥ ४ ॥
सभि ही रीति भयो नुकसान। बध्यो[3] शोक अरु दुखी महान।
आप आपने पुरि थिर रहे। गुर की बात न कैसे कहैं ॥ ५ ॥
जबि सतिगुर मारी कलमोट। किसहुं न चितव्यो गुर संग खोट।
इक मुकाम कीनसि तिन थान। बैठे श्री प्रभु लाइ दिवान[4] ॥ ६ ॥
दया सिंह आदिक ढिग थिरे। सकल खालसा बिनती करे।
निकसे जीव अनंदपुरि छोरि। गमने प्रिथवी पर की ओर[5] ॥ ७ ॥
श्री मुखबाक एव फुरमायो। सभि सिंहन को श्रोन सुनायो[6]।
हमरो सदंन अनंदपुरि मांही। इसको किम छोरहिं कबि नाहीं ॥ ८ ॥
सो अबि बाक संभालनि करो। चलन चाहि उर पुरि निज धरो।
सरब गिरेशुर[7] लरि पच हारे। आप आपने नगर सिधारे ॥ ९ ॥
रण उद्योग त्याग सभि दीना। जनु उत्साह छीन किन लीना।
अबि हटि कहां बिभौर सिधारो ? श्री अनंदपुरि अपनि संभारो ॥ १० ॥

---

1. समतल कर दिया 2. विशाल, अत्यधिक 3. बढ़ा, वृद्धि हुई 4. सभा 5. दूसरे के राज्य को 6. कानों में यह बात डाली 7. पहाड़ी राजागण

सकल खालसे ते सुनि बानी। जानी मन की चाहि महानी।
देनि अनंद अनंदपुरि केरा। मानी बात प्रभू इस बेरा ॥ ११ ॥
पाछल डेरा कहि अनवायो। सुति सुधि श्रौन शीघ्र ही आयो।
सकल बिहीर[1] मिल्यो इक थांए[2]। सुपत जथा सुख राति बिताए ॥ १२ ॥

दिवस आगले कीनसि त्यारी। भयो दमामा जिस धुनि भारी।
ज़ीन पवंगम[3] पर सभि पाए। आयुध आदि तुफ़ुंग उठाए ॥ १३ ॥
कमरकसा[4] करि हुइ सवधाना। सकल खाल्सा बीर महाना।
खड़ग निखंग अंग संग लाइ। चांप आप प्रभु हाथ उठाइ ॥ १४ ॥

दल बिदार[5] सुंदर बड घोरा। चंचल महा भर्यो तन ज़ोरा।
हुई अरूढ़ि मारग प्रसथाने। दुंदभि बजते शबद महाने ॥ १५ ॥
चल्यो खालसा प्रभू पिछारी। मिलहिं भेट दे प्रभू अगारी।
बिनै करैं हम प्रजा तुमारी। अपने जानि करहु रखवारी ॥ १६ ॥

तिन को दे धीरज चलि परैं। कितिक दौरि दौरि नर दुरैं[6]।
सकैं न सनमुख हुइ डर लाजैं। कोतिक दुशट सुनति धुनि भाजैं ॥ १७ ॥
जे बेमुख हुइ ग्राम पछोनैं[7]। लूटैं कूटहिं अग्र पयानैं।
श्री अनंदपुरि को चलि आए। पिता सथान प्रथम दरसाए ॥ १८ ॥

उतरि जोरि कर बंदन कीनि। बहुर प्रकरमा[8] फिर करि दीनि।
हाथ जोरि अरदास कराइ। मधुर प्रशादि बहुत बरताइ[9] ॥ १९ ॥
बहुरो सदन आपने गए। पुरि महिं नाना मंगल भए।
निज निज थान खालसा थिर्यो[10]। हयनि लगावनि गन को कर्यो ॥ २० ॥

प्रथम बसे नर सभि चलि आए। धरि उपहार पगनि लपटाए।
सभिहिन मिलि मिलि बिनै बखानी। सुनि प्रभु धीरज दई महानी ॥ २१ ॥
प्रथक प्रथक की कुशल पूछि तबि। हरखति करे नगर के जन सबि।
हुकम कर्यो पुरि के नर जेई। उजरि गये आनहुं सभि तेई ॥ २२ ॥
अपर बानीए आदि जि आवहिं। बसहि सदन तिनके बनवावहिं।
बांछति वसतू लें गुरधर ते। बसहिं आनिकरि[11] पुरि अबि नर ते ॥ २३ ॥
इम कहि सकल हकारनि करे। अधिक बसावन बांछा धरे।
जहि कहिं ते कहि जन अनवाए[12]। सनमानहिं पुरि अनंद बसाए ॥ २४ ॥

---

1. सभी सैन्य दल 2. स्थान पर 3. घोड़ों पर 4. कमर बांध कर 5. नष्ट करने वाला 6. छुप गए, दूर हो गए 7. उनके गांवों को ढूंढते हैं 8. परिक्रमा 9. बांटा 10. स्थिर हुआ 11. आकर 12. मँगवाए

आवनि लगे सैंकरे लोक । प्रभु दे धन बनवाए ओक[1] ।
दुए छातन के किसकी तीन । सुन्दर सदन सुहावन कीनि ॥ २५ ॥
लगे अनिक कारीगर आनि । रचहि हवेली पौर महान ।
नाना रीति निकेतन पंगति । हरखति आनि वसी गन संगति ॥ २६ ॥
बिप्र बसे खट करमी आइ । ब्रिद्याधैन[2] अधिक धरमाइ[3] ।
सील संतोखी दया सुभाऊ । गुर के नगर बसे समुदाऊ ॥ २७ ॥
खत्री केतिक आनि रहे हैं । जिन गुर शरधा भाउ लहे है ।
वैश बनज के करता आए । करी दुकान बज़ार सुहाए ॥ २८ ॥
होनि लग्यो बिवाहार बडेरे[4] । देश बिदेशनि ल्याइ घनेरे ।
मिहनति अधिक नगर महिं पाएं । क्रित के करनहार गन आए ॥ २९ ॥
सकल जाति शूदर की रही । करहि मजूरी धन गन लही ।
गुनी पुरख आछी क्रित करी । कदरशिनास[5] जानि गुर भरी ॥ ३० ॥
पुरि महिं बसे चली सभि कार । को करि[6] ले पहुंचति दरबार ।
धन इनाम को पावन करैं । आछी करन चातुरी धरैं ॥ ३१ ॥
कारीगर सों प्रभू उचारा । रुचिर दुकान बनाई वज़ारा ?
चारु प्रतोली[7] रचीऐ जित कित । बसहिं सुखी नर गन धरि हित चित ॥३२॥
सुनिकै हुकम रच्यो सभि सुंदर । जहिं कहिं रुचिर पौर के मंदिर ।
जनु बिशकरमा आनि बनाए । पंकति सदन बजार सुहाए ॥ ३३ ॥
सुंदर गरी करी इकसारी । बिचरति हरखति चित नर नारी ।
चहुं दिशि महिं उपबन लगवाए । तरुवरु सरब जाति के लाए ॥ ३४ ॥
नाना वरन लगी फलवारी । बिकसति प्रिथक प्रिथक रचि क्यारी ।
बीच सथंडल[8] करे चुकौन । निकट निकट तरुवर बड जौन ॥ ३५ ॥
आडू, दाड़म[9], कदली खरे । सेउ, रसाल[10], जि स्वादल खरे ।
तुरश मधुर फल जिन को ब्रिद । इक लघु ह्वै इक होति बिलंद[11] ॥ ३६ ॥
आदि अंगूर लता लगवाई । जहिं कहिं पंकति खरी सुहाई ।
बोलति गन बिहंग बहु जाती । कोकिल कीर मोर बहु भांती ॥ ३७ ॥
पारावत[12] चकवन के नादि । जिन के सुने होइ अहिलादि ।
थोरे दिवसनि रचना घनी । प्रभू क्रिपा ते सुंदर बनी ॥ ३८ ॥

---

1. घर 2. विद्या अध्ययन 3. धर्म में विश्वास करने वाले 4. बड़े व्यापार होने लगे 5. गुणों को समझने वाला 6. कोई वस्तुएं बाहर से ही बना कर 7. सुन्दर चपटा मार्ग 8. चबूतरे 9. अनार 10. आम 11. बड़े 12. कबूतर

पुंज कवी गुर ढिग पुन आए। करहिं कबितनि अधिक रिझाए।
मौज दरब की पाइं बडेरी[1]। कीरति जहिं कहि बिथारि[2] घनेरी ॥ ३९ ॥
जे जे वसे अनंदपुरि आइ। सरब भांति ते सुख बहु पाइ।
पुंज खालसा उतर्‌यो रहै। सेवहि गुर सु रस को लहै ॥ ४० ॥
गुरमति धरि धरि हुइ उर ग्यानी। राखहिं रहति पठहिं गुरबानी।
पाहुल[3] आनि पुंज सिख लेवैं। रीति जगत दुरमति तजि देवैं ॥ ४१ ॥
लगहि दिवान बिराजैं बीच। दरसहिं आनि ऊच अरु नीच।
अरपहिं अंनिक अकोरनि[4] ल्याइ। हय हथ्यार दरब समुदाइ ॥ ४२ ॥
वसत्र विभूखनि बहु मुल केरे। देश बिदेशनि के नर हेरे।
आनि अनंदपुरि करि बिसरामू। बिरमावहिं हेरति अभिरामू ॥ ४३ ॥

इति श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रिथे चतुरथ रुत **'श्री गुर आनंदपुर आगमन प्रसंग** बरनन नाम एक ऊन पंचासत अंशू ॥४९॥

---

1. अधिक 2. विस्तृत कर रहे हैं 3. अमृत पान करने के लिए आते 4. भेंट

अंशु ५०

नारद जी मिलन प्रसंग

दोहरा

सकल सैल पति थिर रहे निज रजधानी जाइ ।
आन मानि सतिगुरु की उर हंकार बिलाइ ॥ १ ॥

चौपई

जहां कहां हुइ तूशनि थिरे[1] । भीमचंद नर पठवनि करे ।
प्रभु जी ! भूल्यो मैं बखशीजै । निज बखशिंद बिरद लखि लीजै ॥ २ ॥
हम ने अपनो सगल बिगारा । भयो बिरोध निताप्रति भारा ।
अबि मैं शरण पर्‍यो बल हारी[2] । गौरव महिमा जानि तिहारी ॥ ३ ॥
गन राजे उपदेशति मोही । जिस ते रावरि सो रण होही ।
कहे अपर के बिगरति रह्यो । अबि मैं शरनि, महातम लह्यो ॥ ४ ॥
इत्यादिक लिखि बिनै बडेरी[3] । गुर ढिग पठी छिमहु मति मेरी ।
तबि सतिगुर कागद पठवायो । दयासिंह सुनि बाक अलायो ॥ ५ ॥
अबि तौ भयो निम्र तजि गरबा । खोई दरब अरु जसु जग सरबा ।
शरनि पर्‍यो चाहति हुइ हित मैं[4] । लिख्यो महातम मै कुछ चित मैं ॥ ६ ॥
उचित संधि जे जानहुं तांही । लिहु मिलाइ श्री प्रभु पग पांही ।
भीमचंद जे मानी आन । अपर जि गिरपति केतिक मान ॥ ७ ॥
बेमुख होइ मार बहु खाई । शरन परे उर महिं पछुताई ।
मेलहु आप उचित है बाती । जो अधीन इम बडो अराती[5] ॥ ८ ॥
सुनि कलगीधर बाक बखाना । प्रथम कुकरम तिनहुं ही ठाना ।
अबि जे मिलहि नहीं अपमानै । तजै बिरोध गुरनि को मानै ॥ ९ ॥

---

1. चुप होकर बैठ गए 2. बल को हार कर 3. बड़ी 4. यह अब उसके हित में है 5. बड़ा वैरी

हम हुइं तथा जथा सो होइ। मिलहि मिलावहिं अंतर खोइ[1]।
रिस बसि ह्वैकै लरिबे चाहा। तिम ही मिले मेल रण मांहा ॥ १० ॥
दयो हुकम नामा लिखवाइ। म्रिदुल बाक हित के जिस भाइ।
दूत गयो लेकरि ढिग जबै। खोलि पठाइ, जनि हित सबै ॥ ११ ॥
हरखति ह्वै करि कोप मिटायो। पुन पंमा परधान पटायो।
मेल कर्‌यो तातनि के साथ। भयो शुध मन पुन गिरनाथ[2] ॥ १२ ॥
आवाजाई सचिवनि केरी। करति रह्यो दे भेट वडेरी[3]।
अपर हंडूरी आदिक सारे। मंत्री पठहिं परहिं जबि कारे ॥१३ ॥
किस गिरपति कै भाव बिसाला। केचित करहिं अलप हितवाला[4]।
इस विधि रस होयो गिर राजन। करहिं सुधारनि अपने काजनि ॥ १४ ॥
कबि कबि सतिगुर चढहिं अखेर[5]। बिचरहिं कानन इत उत हेरि।
संग खालसा ह्वै समुदाइ। तीर गोरीआ[6] वहरि चलाइ ॥ १५ ॥
नित शसत्रनि को ह्वै अभ्यास। परचहिं रहहिं प्रभू के पास।
राणे राइ मिले समुदाइ। जो सैलन के बिखै बसाइं ॥ १६ ॥
सभिहिनि आन प्रभू की मानी। मानै जे न, मिटे रजधानी।
अनिक अकोरनि[7] को अरपंते। वसतु अजाइब हेरि पठंते ॥ १७ ॥
आछे फलगन तोरि बटोरि[8]। डाली[9] पठहिं गुरु की ओरि।
को सूखम चावर पहुंचावै। को बहु मोले बसत्र पठावै ॥ १८ ॥
जिस बिलोकि प्रभु करै अनंद। ऐसी वसतु पठाइं बिलंद[10]।
इक दिन गुरु दिवान मझारी। नारद साध रूप निज धारी ॥ १९ ॥
सुंदर पंख बिहंगम केरे। धरी उपाइन आनि अगेरे।
बंदन ठानि दरस करि बैसा। देखि न त्रिपतिहि बहु छुधि जैसा ॥ २० ॥
तबि सतिगुर सादर बैठायो। मुसकावति श्री बदन अलायो।
पंख आनिबै हेतु कसाला[11]। क्यों रिखिदेव ! आप तुम झाला ?॥ २१ ॥
तुमरो दरशन हैं बहु पावन। करहु क्रिपा जबि करहु दिखावन।
पर उपकार हेत धर फिरो। सुर मुनिजन को पावन करो ॥ २२ ॥
सुनि मुनि नारद परम बिशारद। उतर हेतु बखानी सारद[12]।
श्री असकेतु पुत्र प्रिय परम। धर्‌यो रूप गुर राखनि धरम ॥ २३ ॥

---

1. अंतर नष्ट करके 2. पहाड़ी राजा का 3. बड़ी 4. कम हित वाला भाव रखते हैं 5. शिकार 6. गोलियां 7. भेंट 8. इकट्ठे करके 9. भेंट 10. उत्तम, श्रेष्ठ 11. कष्ट किया है 12. वाणी उचारी

तीन ताप खापनि शुभ दरशन। आइ सुरग ते हरखति परसन।
रिकत पाण नहिं आवति आछे। यांते भेट ल्याइबो बांछे॥ २४
वहुर बिचार्यो जो हुइ प्यारी। ऐसी वसतु लेउं कर धारी।
करनि जंग अभ्यास बडेरा[2]। रिदे बिचारनि करि मैं हेरा॥ २५॥

यांते शसत्रनि की वहु चाहू। ब्रिद्या चांप अधिक सभि माहू।
यांते तुमरे सरनि करनि कौ। मै आने शुभ बीन परिनि को॥ २६॥
अपने बान संग लगवाओ। बहुर चांप मैं संधि चलाओ।
हेरहु बेग होइ है ऐसे। उडि करि जाइं ब्रिहंगम जैसे॥ २७॥

जेतिक होति रहे अवतारा। पहुंचि सभिनि को दरस निहारा।
रामचंद श्री क्रिशन निहारे[3]। सुंदर नर सरीर बहु धारे॥ २८॥
छबि रावर को रूप छबीला। करते रहहु मानवी लीला।
देखति ही मन होति सनेहू। सरब जोग प्रापति फल एहू॥ २९॥

कहौं कहां रावर की शोभा। दुशमन भी देखति मन लोभा।
खड़ग निखंग अंग के संगा। शोभति कलग़ी सीस उतंगा[4]॥ ३०॥
तुम दरशन ते महित अनंदं। मुख मंडल दुति दिपहि बिलंदं।
सुंदर अपर बिलोकनि केरी। नहिं बाछा रहि तुम को हेरी॥ ३१॥

सूर शिरोमनि पंथ चलायो। रच्यो सभिनि को जुध सिखायो।
जिस महिं अति प्रसंनता मोही। पिखि पिखि दारुण मन महिं होही॥ ३२॥
धन गुरु गुर गादी धन। जिनकी समता करहि न अंन[5]।
रूप महिद महीयान तुमारा। नेति नेति जिस वेद उचारा॥ ३३॥

सरब सुरासुर शारद शेख। अंत न पाइ सकहिं अविरेख।
निज ब्रह्मांड रूप तुम धारा। पग पताल जो धरै पसारा॥ ३४॥
सागर उदर[6], नसा नद नारो[7]। लोचन सूरज चंद अदारो।
ब्रह्मलोक प्रभु सीसु बनायो। जहिं कहिं एको रूप सुहायो॥ ३५॥

इत्यादिक जबि नारद कह्यो। बरजति गुरु तुम सभि किछ लह्यो।
अहो देवरिखि नित सरबग्य। सभी ते दीरघ अहो तनग्य॥ ३६॥
इस बिधि कहि करि आपस माही। भए अनंदति मिलि करि तांही।
करो परसपर नमो सिधारा[8]। ब्रह्मलोक को मुनी पधारा॥ ३७॥
देखति सभि के अंतरध्याना। सिध समान खालसे जाना।
पाछे पूछनि कीनो सबै। भेव बतायो सतिगुरु तबै॥ ३८॥

---

1. खाली हाथ 2. बड़ा 3. देखे 4. ऊँची कलग़ी सिर पर सुशोभित है
5. अन्य, दूसरा 6. समुद्र पेट के समान है 7. नाड़ियां नदी नाले हैं 8. चला गया

कमलासन को नदन[1] नारद। अहै देवरिखि परम बिशारद।
इम कहि पंख आप कर लए। एक सिंह सों इम कहि दए॥ ३९॥
ले गमनहु कारीगर तीर[2]। बैठि निकट लगवावहु तीर।
इन को त्यागि दूर नहिं जावहु। देखति द्रिगन बान बनवावहु॥ ४०॥
सुनि प्रभु ते ले करि तबि गयो। निकट बैठि बनवावति भयो।
दीरघ पंख सु दीरघ बाना। करे त्यार सो रुचिर महाना॥ ४१॥
आछे सर बनाइ ले आयो। श्री प्रभु को दे सीस निवायो।
आप हाथ महिं धरि करि हेरे। सरब थूल खपरे सु बखेरे[3]॥ ४२॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे चतुरथ रुते **'नारद जी मिलन प्रसंग'** बरननं नाम पंच समो अंशु ॥ ५०॥

1. ब्रह्मा का पुत्र 2. पास, समीप 3. बड़े

अंशु ५१

श्री सति गुरु कथा प्रसंग

दोहरा

थिर्‌यो[1] खालसा पास गन हुकम कर्‌यो महांराज ।
दूर दूर लगि खरे रहु बान खोजिबे काज ॥ १ ॥

चौपई

सुनि करि सिंह धाइ करि गए । खरे सैंकरे होवति भए ।
पूरब दिशि श्री मुख को करिके । चांप कठोर आप कर धरिकै ॥ २ ॥
खैंच्यो बान संधिक बल ते । सकल बिलोकति हैं तिस चलिते ।
कह्‌यो गुरु देखहु नभ जै है[2] । राखहु द्रिशटि तरे उतरै है ? ॥ ३ ॥
छोर्‌यो जबे, महां धुनि होई । गरजि सुनी सभि, गमन्यो सोई ।
रहे देखते द्रिगन लगाई । गयो उतंग न पैर दिखाइ ॥ ४ ॥
बहुर दूसरो त्यागनि कीन । तीसर चांप ऐंचि तबि दीन ।
तिम ही चौथो दियो चलाइ । बहुर पंचमों गाजति जाइ ॥ ५ ॥
सभ सों कहि कहि त्यागन करैं । ऊपर दूर द्रिशटि नहिं परैं ।
देखति रहै खरे सभि होइ । आवहिं तीर प्रतीखहिं सोइ ॥ ६ ॥
बील्यो जाम रह तहिं ठांढे । हटि नहिं आए, अचरज बाढे ।
पुन सभि सतिगुरु निकट पहूचे । प्रभु जी ! देखि रहे हम ऊचे ॥ ७ ॥
गए गगन महिं फिरे न फेरे । दूरि दूरि थिरु हुइ तिह हेरे ।
तरे धरा पर सों नहिं आए । जे आवति दिखीअहि समुदाए ॥ ८ ॥
गुरजति पुन को मेघ समाना । सो हम सुनति रहे थिर काना ।
गए दूर पुन सुनी न सोई । सभि की मति बिसमत[3] पिखि होई ॥ ९ ॥
सुनि प्रभु कह्यो न ऊपर को है[4] । गगन पुलाड़[5] पर्‌यो सभि ओहै ।
थिर ह्‌वैबे को थान न कोई । गहे न किनहुं न कित गे सोइ ॥ १० ॥

---

1. खड़ा रहा 2. आकाश में जाता है 3. हैरान हो गई 4. ऊपर कोई स्थान नहीं है 5. खाली पड़ा है

नीके देखि खोजना करीअहि। आन अजाइब ल्याउ, न टरीअहि।
कहां गए कै देहु बताइ। बान बिकीमत[1] दए चलाइ ॥ ११ ॥
श्रीमुख ते सुनिकै सिख कहैं। हम नहिं भेव तिनों को लहैं।
कुदरत के मालिक गुर पूरे। कौन लखहि चालित्र सु रूरे ॥ १२ ॥
जानहु आप सरब की गती। पकरे किधौं थिरे जित किती।
देखति रहे गगन दिशि सारे। पिखी चलते पुन नहीं निहारे ॥ १३ ॥
रहे प्रतीखति[2] जाम बितायो। तिन आगमन नहीं लखि पायो।
श्री मुख मुसकावति मंद मंद। कहति भए, तुम सुमति बिलंद[3] ॥ १४ ॥
सगरे करीअहि भले विचारन। सर आगमन न भा किसु कारन ?
गए गहे कै कितहुं सिधारे ? जिसते आवति नहीं निहारै ॥ १५ ॥
तबि कर जोरि खालसा कहे। रावर सकल सथल गति लहैं।
दासन को सरगती[4] बखाने। जिम कित अटकै-प्रभू सु जानौं ॥ १६ ॥
लालस लखी खालसे केरी। श्रीमुख उचरति भे तिस बेरी।
इह तुम को द्रिशटांत दिखायो। दाशटंत[5] अबि सुनहु सुहायो ॥ १७ ॥
पर हुमाउ[6] संग लाग्यो कान। हम धनु जोरि तज्यो बर बान।
सो खग अपणे देश मझारा। ले गमन्यों सर, तैर न डारा ॥ १८ ॥
तिम गुरबानी के संग लागा। पठति सुनति जो करि अनुरागा।
सो बानी पाठक लै जाइ। देश गुरु को रिदा सुहाइ ॥ १६ ॥
निज संगी तहिं करहि पुचावन। जहा बहुर नहिं आवन जावन।
श्री सतिगुर सन देति मिलाइ। बडि अनंद महिं रहैं समाइ ॥ २० ॥
पंखी गुरु, सु पंख शब्द गन। सिर सर संग लगे जिस के मन।
जनम मरन जुग राग रु द्वेश। हरख सोग को जहां न लेश ॥ २१ ॥
गुर पंखी को बासा तहां। इक रस अनंद उदधि नित जहां।
जहि परिणाम न होती कदाई[7]। तहि सिख सर को देति पुचाई ॥ २२ ॥
तथा अपर द्रिशटांत सुनीजै। जिस को जानि नाम रस पीजै।
नाम पंख, नामी सु बिहग। जो जग्यासी लाग्यो संग ॥ २३ ॥
प्रान अंत लगि त्याग्यो नांही। लाग्यो रह्यो नाम रस मांही।
पंख नाम ले सर जग्यासी। जाइ मिलावति श्री प्रभु पासी ॥ २४ ॥

---

1. बहुमूल्य 2. प्रतीक्षा करते करते 3. ऊँची मत वाले हो 4. तारों का गति 5. जिस पर दृष्टांत घटाया जाए 6. एक पक्षी विशेष 7. कभी

जहिं नामी को देश सुहावन। तहां करहि बिन बिलम पुचावन।
यांते रटहु सदा गुरबानी। जगत उधारान परख निशानी ॥ २५ ॥
ऊठत बैठति थित कै चाले[1]। पठहु शबद नित रहहु सुखाले।
बहुर न होइ जगत महिं फेरा। करहि उबारनि गुरु बडेरा[2] ॥ २६ ॥
तिमही सतिनाम सिमरीजै। इक भी स्वास न बिरथा[3] लीजै।
मन जिह्वा के संग मिलाइ। राखहि निस दिन महि सुखदाइ ॥ २७ ॥
तिस के अंत समा जब्रि आवै। नामी हित सहाइता धावै।
पुन पाप के बंधन के सारे। श्री करतार तुरत निरवारे ॥ २८ ॥
निकट आपने जन करि राखे। जिस पद को जोगी अभिलाखे।
अनिक जतन ते साधहि जोग। होहि सपूरन, तन बिन रोग ॥ २९ ॥
ब्रह्मद्वार महिं ब्रिती[4] टिकावैं। जुगत जोग[5] के रस को पावै।
सो अबि कलीकाल महि नांही। याते रमहु नामरस मांही ॥ ३० ॥
रहित वहिर तन की सभि धरै। जिस गुरभन्यो न तिस ते टरै।
अंतर ब्रिती नाम लिव लावे? गुर मूरति को रिदै बसावै ॥ ३१ ॥
पारब्रह्म पूरन करतारा। परमेशुर जगदीश उदारा।
दीन बंधु प्रिय सिखन केरा। प्रभु हरि व्यापक जहि कहिं हेरा ॥ ३२ ॥
अचुत[6] महां पुरख, गुणखानी। क्रिपाल, परम सुख दानी।
निरभउ, निरंकार,[7] निरकाल। निरगुन सरगुन रूप विसाल ॥ ३३ ॥
प्रभु संभू,[8] निरभउ, सभि स्वामी। मधुसूदन नित अंतरजामी।
जगजीवन, जग रचन ब्रिधाता। नाराइण, नरपति, जगदाता ॥ ३४ ॥
दुशटन गंजन, जन मन रंजन। करतापुरख, अनंत, अभंजन।
सतिरूप, जोतिन की जोति। जहिं सत्ता ते जगत उदोति ॥ ३५ ॥
परमातम, नरहरि, अबिनाशी। रूप न रंग न घटि घटि वासी।
पुरशोतम, पावन, दुखहारी। महिद[9] मनोहर, आनंदकारी ॥ ३६ ॥
पदमावत, माधव गोबिंद। वाहिगुरु, सतिगुरु, मुकंद।
खल दल हरता, गरब प्रहारी। राम, क्रिशन, गोबिन्द, मुरारी ॥ ३७ ॥
गन जनारदन, बिंखक सैना[10]। कलमल हरता, पंकज नैना।
जोगेश्वर के ध्यान बसैया। श्याम रूप, आनूप सुहैया[11] ॥ ३८ ॥

---

1. उठते, बैठते, चलते, ठहरते अर्थात् प्रत्येक अवस्था में 2. बड़ा 3. व्यर्थ 4. वृत्ति 5. योग युक्ति 6. अच्युत 7. निराकार 8. स्वयंभू 9. महान् 10. शेष नाग जिस की शय्या है 11. सुशोभित है

खड़गकेतु असकेतु निरजन। भगतनि प्रिय भव भ्यान प्रभंजन।
महांकाल बड उग्र सरूपं। शाहनशाह भूप गन भूपं॥ ३९॥
इत्यादिक जिह नाम अपारा। करि बिसतार न पईअति पारा।
सिमरन करनि लेनि रस रसना। सदा सुखेन परहि जम बसना॥ ४०॥
जे क्रित करहि मानु सो आछे। तिस महि रहु हरखति सुख बांछे।
तनु हंता को त्यागन करीअहि। प्रभू रजाइ हरख अनुसरीअहि॥ ४१॥
तीनहू साधन कैवल[2] केरे। सतिगुर दए बताइ बडेरे[3]।
भाणा[4] माननि, हंता त्यागनि। सतिनाम सिमरनि लिवलागनि॥ ४२॥
इही परमपद को पहुंचावैं। क्रिपा जिनहु पर सो चलि जावैं।
वहिर क्रिपा शसत्रनि अभ्यासा। पापी दुशटन करन विनाशा॥ ४३॥
सतिगुर करी परम बखशीश। जग के सुख मिलिवो जगदीश।
बडे भाग जागहिं जिन केरे। चलैं सु मारग इसी अछेरे॥ ४४॥
जिम अरजन संग भाखी गीता। करम फलन ते रहहु अतीता।
धरम धरनि आयुध को करीयहि। आपनो साखी रूप बिचरीयहि॥ ४५॥
तथा खालसे प्रति उपदेश। सतिनाम को भजन हमेश।
वहिर करम रण करन महाने। करहु सदा सभि बिधि सुख ठाने॥ ४६॥
करे शुध, मन की तजि मैल[5]। गमने संत भगत जिस गैल।
सकल खालसे को गुर दयो। जिनके भाग बडे तिन लह्यो॥ ४७॥
कवि संतोख सिंह गुर की कथा। कीन बनावनि गम मति जथा।
चतुरथ रुत पूरी करि तथा। लीनो सार जथा घ्रित मथा॥ ४८॥
दस पतिशाहन के शुभ चरन। धर करि ध्यान बिघन किय हरन[6]।
अभिलाखा निज पूरन करी। दुशटन की मति कछु नहिं अरी[7]॥ ४९॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे चतुरथ रुते 'श्री सतिगुरु कथा' बिचरताया भाखयां कवि संतोखसिंह जथा मति बरननं नाम एक पंचासति अंशु॥ ५१॥

चउथी रुत संपूरण होई

---

1. भयानक संसार को नष्ट करने वाला 2. मुक्ति 3. बड़े अधिक 4. प्रभु की इच्छा के अनुसार जीवन व्यतीत करना 5. मैल त्याग कर 6. भगा दिए, नष्ट कर दिए 7. अड़ी नहीं, रुकावट पैदा नहीं की

अथ पंचम रुत कथनं

१ओं सतिगुर प्रसादि ।

१ओं श्री वाहिगुरु जी की फतह ।

अंशु १

साहिब देवी को डोरा आवन प्रसंग

1. संत मंगल

दोहरा

ग्यानी ध्यानि सकल जन सिमरैं नाम बिअंत[1] ।
जिन जान्यो बुधि स्वछ ते परे पार भव[2] संत ।। १ ।।
अस परमातम संत गन सदा सचिदानंद ।
करहु ग्रंथ पूरन सरब बंदों द्वै करि बंदि[3] ।। २ ।।

2. कवि-संकेत मर्यादा का मंगल

स्वैया

जिह पार न पावति है चतुरानन आन पंचानन ग्यान गती ।
खट आनन भ्रात गजानन[4] गावति वाधि[5] सदा कमती न रती ।
उचरंति हज़ार ही आनन[6] ते तिस ते कहु दीरघ काहि मती ?
कर वेणवती[7] शुभ देहु मती बिघनानि हती[8] भजि सारसुती ।। ३ ।।

3. इश्ट गुरु (दसों गुरु साहिबान का) मंगल

कबित्त

बेद बेदि[9] निराकार जांको कहै खेद विन सोऊ ह्वै आकारि गुरु नानक अनंद मै ।
अंगद, अमरदास, रामदास, अरजन, श्री हरिगुबिंद भए सोऊ सुखकंद मै ।
गुरु हरिराइ हरि क्रिशन परम जोति तेग के बहादर बिशारद मुकंद मै[10] ।
श्री गुबिंद सिंह लौ पदारबिंद सभिनि के बंदों ब्रिंद दुंद हरि[11] दुंद हाथ बंद मै[12] ।। ४ ।।

---

1. अंत रहित, जिसका अंत न हो 2. भवसागर, संसार 3. दोनों हाथ जोड़कर 4. कार्त्तिकेय का भाई गणेश 5. अधिकता 6. शेषनाग 7. बीणा 8. विघ्नों को नाश करने वाली 9. विचार करके 10. मुक्ति प्रदान करोने में चतुर 11. द्वंद्व समह को नष्ट करने वाले 12. दोनों हाथ जोड़कर

दोहरा

श्री कलगीधर की कथा श्रोतन को सुखदाइ ।
रुति रचि करि अवि पंचमी नीके सभिनि सुनाइ ॥ ५ ॥

चौपई

इस प्रकार दसमे पतिशाहू । रच्यो पंथ दे रण उतसाहू ।
देश बिदेशनि संगति आवै । अनिक प्रकार अकोरनि[1] ल्यावे ॥ ६ ॥
गुर की संगत सुनि करि सारे । नहि बिखाद को देति निहारे[2] ।
जबि की मार लई कलमोट । तबि ते ग्राम वड़े कै छोट ॥ ७ ॥
गुर संगति सो द्वैख न करते । जहि चित चाहति तहां उतरिते ।
सगरे त्रास पाइ हटि रहे । कोमल बाक बिलोकति कहै[3] ॥ ८ ॥
जोधा महां प्रभू बलि भारा । गुरु मरैला[4] करैं उचारा ।
को समरथ तिह संगति छेरे[5] । जो छेरे निज जीय निबेरे[6] ॥ ९ ॥
इत्यादिक कहि ग्राम बिसाले । त्रास धरहिं प्रभु ते सभि काले ।
पशचम दिश ते संगत आई । दरशन करन अधिक धन ल्याइ ॥ १० ॥
आनि अनंदपुरि घाल्यो डेरा । निसा बिताई सूरज हेरा ।
सौच शनान ठानि करि सारे । दरशन करिबे हेतु उचारे ॥ ११ ॥
सभा सथान गुरु चलि आए । शसत्र बसत्र जुति अधिक सुहाए ।
लग्यो दिवान[7] खालसे केरा । आयुध धरि धरि दरशन हेरा ॥ १२ ॥
गयो मेवडा[8] संगति पास । दरशन करहु चलहु जिस प्यास ।
सुनि करि भए त्यार हरखाए । चले भेट ले करि समुदाए ॥ १३ ॥
संगत महि इक खत्री आयो । कन्या गुर अरपनि हित ल्यायो ।
रावा गोत बसहि रवतास । डोरे महि बिठाइ तनुजासु ॥ १४ ॥
सभा सथान क्रिपाल सुहाए । सकल आइ तहि दरशन पाए ।
अरपि अरपि करि अनिक अकोर[9] । पद अरबिंद बंदि कर जोरि ॥ १५ ॥
रावा खत्री सिख कर बंदि[10] । ठांढो आगे भयो मुकंद ।
हे प्रभु ! मैं हो शरणि तुहारी । गह्यो आसरा रावरि भारी ॥ १६ ॥
निज कन्या में ले करि आयो । गुर दासी करिबे ललचाग्यो ।
चिरंकाल को मैं उर धारा । इही मनोरथ फरहि उदारा ॥ १७ ॥

---

1. भेंट 2. दिखाई नहीं पड़ता 3. संगति को देख कर कोमल वाक्य कहते हैं 4. निर्दय लोगों को मार देने वाला 5. छेड़खानी करे 6. अपने जीवन का अंत करवाएगा 7. सभा 8. संदेश-वाहक, सेवक 9. भेंट 10. वंदना

सेवहि सेव आप की सदा। करहि क्रितारथ कुल को तदा[1]।
मनहु कामना पुरहु गुसाईं। बांछति सिख आप ते पाई ।। १८ ।।
इम बिनती सुनिकै सिख केरी। श्रीमुख तें बोले तिस वेरी।
जत्रि की हम देवी बिदताई। दरशन कर्यो कालका माई ।। १९ ।।
तबि को ग्रिहसत करन हम छोरा। ब्रह्मचरज महिं नित मन जोरा।
यांते बनै नहिं इह बात। छप्यो ब्रितांत न, सभि बख्यात[2] ।। २० ।।
इह सुनि सिख कै बहु दुचिताई[3]। कठन बनी बिधि किम बनिआई।
नीचे मुख करि थिर्यो अगारी। जोरे हाथ कशट उर भारी ।। २१ ।।
कितिक समे लौ कीन बिचारा। पुन बिनती के सहित उचारा।
प्रभु जी! सुनीअहि, बहु बिप्रीत। मुझ को भई, देति दुख चीत ।। २२ ।।
जबि ते मैं उर मैं इम धरी। कन्या गुर को अरपन करी।
तबि की माता सम सभि केरी। मन सु भावना कीनि बडेरी[4] ।। २३ ।।
जिसी देश महि मोहि अवासा[5]। सभिनि बिखै इम भई प्रकाशा[6]।
केतिक बरस भए मुख कहिते। ल्यावन हेत रहे नित चहिते ।। २४ ।।
अबि मम घर मैं रहै कुमारी। को करि सकहि न अंगीकारी।
माता के सम राखहि भाऊ। बंदन ठानहिं होति अगाऊ ।। २५ ।।
जबि को नाम तुमारो लयो। तबि को ही सभि महिं बिदतयो।
जे मम घर महि थिरहि[7] कुमारी। सभि को हुइ कलेश तबि भारी ।। २६ ।।
यांते आप क्रिपा उर धरीअहि। अंगीकार सुता मम करीअहि।
तज्यो ग्रिहसत तौ भी रहि पास। सेव करन की जिह उर आस ।। २७ ।।
भाउ रिदे का परखहु, स्वामी[8]। घटि घटि के तुम अंतरजामी।
मम मन अरु कन्या मन केर। देखहु प्रेम प्रवाह बडेर[9] ।। २८ ।।
करुना करहु सेव निज लावहु। सभि संगति को चित हरखावहु।
तिसी देश के सिख परवारे। पहुंचे[10] इही कामना धारे ।। २९ ।।
गुन गावति रावर के आइ। शरधा भाउ धरति अधिकाए।
इम कर जोरि कही बहु बिनती। सुनि सतिगुर तजि करि सभि गिनती ।। ३० ।।
संगति करी बिलोकन ठांढी। पुरहिं आस इन मन रुचि बाढी[11]।
श्रीमुख ते मुसकाइ बखाना। पुरह कामना सकल सथाना[12] ।। ३१ ।।

---

1. तभी 2. सब को इस का ज्ञान है 3. दुविधा की अवस्था 4. बड़ी 5. रहता हूँ 6. सभी पर यह बात प्रकट हो चुकी है 7. रहे 8. गुरु गोविन्द सिंह 9. बड़ा, अधिक 10. यहाँ आए हैं 11. बड़ी 12. सभी स्थानों पर

रहै कुआरो डोरा नामू[1]। करहि सेव बासहु हम धामू।
संगति सहित सिख सो रावा[2]। सुन्यों बाक जबि श्री मुख गावा ।। ३२ ।।
हरखति भए मनहुं निधि पाई। तवि कन्या गुर सदन पुचाई।
गुजरी मात रहे घर जाहिं। करी विठावन ले करि तांहि ।। ३३ ।।
साहिब देवि नाम जिस केरा। मसतक टेकि सास के पैरा।
नंम्रि होइकै बैठी पास। गुजरी आशिख[3] करी प्रकाश ।। ३४ ।।
संगति रही पांच दिन और। बिदा होई पहुंची निज ठौर।
पीछे साहिबदेवी रही। रिदै प्रतग्या कीनसि अही ।। ३५ ।।
दरशन करहि त भोजन पावै। नतु[4] निसबासुर छुधिति त्रितावै।
प्रेम विलोकि नेम जिन कीना। श्री कलगीधर सभि बिधि चीना ।। ३६ ।।
तिसी हेत करिकै इक बार। दरशन देति सु करुनाधारि।
किस कारन ते जे नहिं होइ। तिस दिन खाइ अहार न सोइ ।। ३७ ।।
इही नेम करि समा वितायो। इक दिन श्री प्रभु दरश दिखायो।
हाथ जोरि करि मसतक टेका। क्या मनसा ? कहिं जलव ाबबेका[5] ।।३८।।
नम्रि सलाज तरे करि नैन। बिनति सहित कहति मुख बैन।
प्रभु जी ! इक सुत की अभिलाखै। अपर बाशना[6] कोई न राखै ।। ३९ ।।
क्रिपा आप की ते मैं पाऊं। इसत्री जनम अपन सुफलाऊं।
जथा अहैं मम सपतनि केरे। चहौं तथा मन आपन हेरे ।। ४० ।।
सुनि करि श्रीमुख ते फुरमायो। भलो मनोरथ रिदे उठायो।
कहां मनोरथ इक सुत केरे। पुत्र खालसा होयसि तेरे ।। ४१ ।।
लाखहुं को इहु गणत न आवै। जग मैं थिर नित[7], जनम सु पावै।
सकल सिंह अपने सुत जानो। सुजसु प्रताप बधाइ महानो ।। ४२ ।।
पुत्र खालसा तेरो भयो। गोद पाइ तुझ हम ने दयो।
महिद[8] प्रताप समेत निहारहु। सदा अनंद बिलंदै[9] धारहु ।। ४३ ।।
सुनि श्रीमुख ते भई अनंदि। मान्यों बाक हाथ कर बंदि।
मसतक टेकति निज घर गई। संतति जानि हरख निज भई ।। ४४ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे पंचम रुते **'सहिब देवी को डोरा आवन प्रसंग'** वरननं नाम प्रथमे अंशु ।। 1 ।।

---

1. उसका नाम 'कँवारा डोला' रखा गया 2. रावा गोत का खत्री सिख 3. आशीर्वाद 4. नहीं तो, अन्यथा 5. अभिप्राय गुरु गोविंद सिंह 6. इच्छा, अभिलाषा 7. सदीवी 8. महान् 9. श्रेष्ठ, उत्तम

अंशु २

दासन प्रसंग

दोहरा

इक सिख प्रेमी गुरु पग सेव करै दिन रैन ।
पखा[1] गहि करि बाउ को झलति देखति नैन ।। १ ।।

चौपई

नाम जगा सिंह तिस को कहें । चरन पखारहि कर महि गहे ।
चांपी करहि[2] प्रेम उर धरिकै । पनही झारहि धरहि सुधरिकै ।। २ ।।
अपर जि खिजमतदार निहारै । तिस के संग ईरखा धारैं ।
कटक वाक बहु बार कहंते । जबि गुर ते कित दूर लहंते ।। ३ ।।
निकट रहिन गुर को नहिं सहैं । मनसू शरीक आपनो लहैं ।
जगा सिंह कुछ मन नहिं धरै । प्रेम अधिक ते सेवा करै ।। ४ ।।
बहुता नहिं बोलै किह साथ । एक पराइन सेवा नाथ[3] ।
कमल बिलोचन को विकसावै । सतिगुर सूरज दरशन पावै ।। ५ ।।
जबि देखै श्री मुख ससि ओरा । लोचन करै चकोरन जोरा ।
उर की प्रीति गुरु भी जानैं । यथा भगति को विशनु पछानै ।। ६ ।।
इक दिन श्री प्रभु पौढति भए[4] । दासनि लख्यो सुपति ह्वै गए ।
जगा सिंह को निठुर बखानैं । जबि कबि सेव अग्र हुइ ठानैं ।। ७ ।।
सेवक अपर जि करहिं निकासनि[5] । आगै तूं होवति सभि दासनि ।
तेरे सम केतिक बनि आगे । छोरि टहिल[6] को निज घर भागे ।। ८ ।।
अबि तेरी बारी दिखि कैसे । गुर की सेव कमावहिं जैसे ।
सुनिकै जगा सिंह नहिं भाखा । प्रेम धरे सेवा अभिलाखा ।। ९ ।।
श्री गुरु जागति तूशनि सुने[7] । बिना भावनां ते सो गिनें ।
राति बिताइ उठे लखि प्राति । श्रीगुर सिमरन करि सो बात ।। १० ।।

---

1. पंखा 2. पांव दबाता था 3. गुरु गोबिंद सिंह 4. लेटे हुए थे 5. निकाल देना 6. सेवा 7. चुप करके सुन रहे थे

बैठि दिवान[1] मझार हकारा। जगा सिंह के संग उचारा।
तो कहु निसा बिखै गन दास। कहति हुते क्या? करहु प्रकाश ।।११।।
गिरा कठोर सुनाइ परति। कौन तोहि सन मतसर[2] धरति?
सुनिकै हाथ जोरि तिन आखा[3]। प्रभु जी! मुझ को किह नहिं भाखा ।।१२।।
क्यों मतसर किन[4] करनी अहै। मम उर चाह क्रिपा तव लहै।
इस महिं मांझ किसे की नांहिन। अपर रिदे मम को कबि चाह न ।। १३ ।।
जगा सिंह के सुनि बच सारे। सगरे खिजमतदार हकारे।
निकटि बिठाइ दिवान मझारी। मगवाइव बासन भरि बारी[5] ।। १४ ।।
इक पथरी इकदयो पतासा। आइसु दीनसि दास जि पासा[6]।
इन दोइन को जल महिं धरियहि। एक जाम ले इनहुं निहरियहि ।। १५ ।।
बासन महिं दोनहुं तबि पाए। अपर ख्याल महिं पुन बिरमाए[7]।
एक पहिर बीत्यो तबि चह्यो। दासन साथ बाक अस कह्यो ।। १६ ।।
पथरी अपर पतासा जोऊ। नीर निकासि आनी ऐ दोऊ।
पाणी बिखै पान[8] जबि डारा। पाहन को ततकाल निकारा ।। १७ ।।
ढर्‍यो[9] पतासा[10] पानी होवा। तिसु अकार को नांहिन जोवा।
इम द्रिश्टांति दिखाइ सभिनि को। बिदति करन को कह्‍यो बचन को ।। १८ ।।
कोमल मधुर पतासा जोइ। मिलि जल संग एक रस होइ।
हुतो कठोर जु पार बिरस। तिस के अंतर नीर न परस ।। १९ ।।
तिम जानों इहु दास हमारे। सुनहुं खालसा करि निरधारे।
सदा समीप हमारे रहे। एक नहीं गुन मनमैं लहै ।। २० ।।
दूर देश ते सिख चल आवति। शरधालू धरि भाउ[11] समावति।
साकत दादर जल महि बासा। गुर गुन कमल सार नहिं तासा ।। २१ ।।
अवगुन जे सिबाल[12] के ग्राही। ग्यान अनंद सम गंध न पाहीं।
शरधालू अलि निकट न रहे। खोजि खोजि गुर कमल जि लहैं ।। २२ ।।
तातकाल रस ले सुख पावैं। सार ग्रहीन असार लखावैं।
साकत बाइस[13], संत मगल। संग रहे भी अपुनी चाल ।। २३ ।।
चीचड़ जोक लगैं थन मांही। रुधर पान, पै गुन लखिं नांहीं[14]।
इत्यादिक कहि अनिक प्रकारा। ताड़न करे दास तिस बारा ।। २४ ।।

---

1. सभा 2. द्वेष 3. कहा 4. किस ने 5. जल 6. समीप बैठे दास को 7. लीन हो गए 8. हाथ 9. घुल गया 10. बतासा 11. भाव, भावना 12. काई 13. कौआ 14. दूध के गुणों को ग्रहण नहीं करती

सिख शरधालू बिसाल[1] कि नाल[2]। करति मूढ मति मतसर जाल।
जे कर हमने पुन पहिचाने ? तुम को देई सजाइ महाने ।। २५ ।।
जगा सिंह को निकट बिठाइ। सनमान्यो कोमल बच गाइ।
हाथ जोरि करि तबि सभि दास। करि बंदन पग पंकज पास ।। २६ ।।
बखशावन औगुन सभि करैं। गुर को बाक रिदे महि धरैं।
इस प्रकार सिख्या दिखराई। अंतरजामी गुर गोसाईं ।। २७ ।।
भीमचंद कपटी मतिमंद। लरति मरति दुख पाइ बिलंद[4]।
बहिर मेल की बात बनाई। अंतरगती बिरोध उठाई ।। २८ ।।
निज मंत्रिन को निकट बिठाइ। मसलत कीनी मिलि समुदाइ।
अबि तो शांति बखेरा[5] भयो। तऊ पंथ देखउ बिरधयो ।। २९ ।।
लड़न गुरु संग बनहि न कोई। सुभट हज़ारहुं मारति सोई।
दिन प्रति होवहि खरच बिसाला। राखहु संधि गुरु के नाला ।। ३० ।।
जबहि दाव कुछ लगहि हमारे। आनंदपुरि ते देहिं निकारे।
शाम उपाइ[6] प्रिथम इह कहैं। जे न बनैं तौ दूजे गहैं ।। ३१ ।।
राजनीति करनी बनि आवै। संधि करे कारज हुइ जावै।
गुर ढिग रहै वकील हमारो। लेति भेत सभि करि निरधारो ।। ३२ ।।
इक तौ सिंह करैं नुकसान। बरजति रहैं होहि तिस थान।
चतुर सुमति महिं जो मिलि जाइ। अस नर भेजहिं मतो पकाइ ।। ३३ ।।
अपने सचिवन मांहि ते बीन। पंमा माचड[7] लख्यो प्रबीन।
तिस को सभि गाथा समुझाई। सतिगुर निकट रहहु तहिं जाई ।। ३४ ।।
दाव घात सभि मति महिं धरो। हम पै लिखि लिखि पठवन करो।
जबि जानहिंगे सरिहैं कार। तबि ही पुरि ते दहिं निकार ।। ३५ ।।
इत्यादिक बहु कपट सिखायो। कुछ अकोर[8] दै चहति पठायो।
सुंदर चंचल बली तुरंग। डारि ज़ीन ज़रि कसि के संग ।। ३६ ।।
जुग बंदूक अजाइब आई। सो भी सतिगुर हेत पठाई।
हाथ बंदि बिनती बहु करिके। महा सुमति ते रहु ढिग गुर के ।। ३७ ।।
बहु सिख्या को दीनि, पठायो। चढि पंमा प्रभु की दिश आयो।
उतर् यो आनि अनंदपुरि माही। पूरब सुध पठि द्वारे ताही ।। ३८ ।।
प्रभु सुनिकैं करिवायहु डेरा। हित सेवा नर पठि तिस बेरा।
राजनीति जगमहिं थिर जैसे। कलगीधर बरतैं सभि तैसे ।। ३९ ।।

---

1. विशाल 2. साथ 3. द्वेष 4. अधिक 5. विवाद, झगड़ा 6. मित्र भाव 7. हठी 8. भेंट

रहिन हेत ढिग सदा तुमारे। भेज्यो भीमचन्द हित धारे।
हित रावर के पठी उपायन। परसन चरन कमल सम पायन[1] ।। ४० ।।
निज आगवन हेतु सभि भनियो। गुर परवार सभा जुति सुनियो।
उतर पर्‌यो सो निसा बिताई। प्राति भई बहुरो दिखराई ।। ४१ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे पंचम रुते **'दासन प्रसंग'** बरननं नाम दुतीओ अंशु ।। २ ।।

1. प्राप्त करूं

अंशु ३

पम्मे को प्रसंग

दोहरा

सतिगुर सभा लगाइ करि ब्रिंद खालसा आइ।
सोढी वेदी ब्रिंद ढिग शोभति जिउं सुर राइ ॥ १ ॥

चौपई

पंमा माचड़ निकट हकारा। लए अकोरन[1] आवनि धारा।
खरो तुरंग खरो करि आगे। तुपक धरी द्वै देखनि लागे ॥ २ ॥
करि जोरति ठानति भा नमो। बैठ्यो निकट सछल तिह समो।
भीमचंद नृप कीनसि बिनती। करी संधि तुम सो तजि गिनती[2] ॥ ३ ॥
जानति भा चित हहु गुरसाचे। प्रीति करन महि जिस चित राचे।
सभा बिखै सुनि करि अस बैन। कह्यो प्रभु तिस दिशि करि नैन ॥ ४ ॥

श्री मुखवाक

पंमा वज़ीर। आखर बिपीर[3]। बामन का बोल। समझ बिन सोल।
राजपूत की जात। न मीत साधू न ताति भाति[4] ॥

चौपई

तरकति गुर के बाक सुने जबि। हेत हटावनि पंमा कहि तबि।
सुनहु प्रभु ! को करहि कुकरनी। फिर पछुताइ परे जो शरनी ॥ ५ ॥
तिस को त्यागनि नहिं बनि आवै। एव आप सम गुरु अलावै।
अपर सिख सोढी गन पास। सुनि दुइदिश ते करति प्रकाश ॥ ६ ॥
महाराज ! इसही बिधि अहै। जिस प्रकार रावर अबि कहैं।
तऊ देखीअहि आप बिचार। नित ही करन जंग बल धारि ॥ ७ ॥
मारन मरन होति समुदाई। यांते भली न नीत लराई[5]।
करनी संधि अहै अबि नीकी। इम इछा है सभि के जीकी ॥ ८ ॥

---

1. भेंट 2. अन्य सभी प्रकार के विचारों को छोड़ कर 3. पीर रहित अर्थात् अमर्यादित अवस्था में निकलेगा 4. माता-पिता 5. नित्य प्रति की

जुध बिसाल भए बहुतेरे। लरति हज़ारों सुभट निबेरे।
इम सुनि कै सभिते गुन खानी। करति सुनावनि बोले बानी ॥ ९ ॥

श्री मुखवाक

अधिक भला रजपूति कुल जिन्हां जमना शतरु[1]।
पालनहारिआं मारिकै पूति मीत सिर कतर[2] ॥ १० ॥
भला न होइ पहाड़ीआ समुझि बिसाही[3] लेय।
आइ भीड़ साधू बनें दगा बाप को देय ॥ ११ ॥
घरि मैं अंन दुध भात बहु शरधा देवन माझ।
करों मीत तबि परबती[4] समे काम के बाझ[5] ॥ १२ ॥
बात करै अति मोहि की अंतर दुविधा पूर[6]।
लैणे सिउ खाणे भला[7] बिपता दिखि रहिं दूर ॥ १३ ॥

चौपई

सुनो सभा सभि एव पहारी। करहि दगा निज बाप संगारी।
हमरे संग कहा सुध होइ। कटु तुंबी कवि मधुर न जोइ ॥ १४ ॥
स्वान पूछ कबि होइ न सूधी। जो नलकी मसि राखहि रुधी[8]।
जिस किम को जिस सहिज सुभाइ। कबहुं न बिनसै करै उपाइ ॥ १५ ॥
हम क्या कहैं सकल तुम जानो। पर इह बात भली नहिं मानो।
सुनि गुर ते सभिहिनि तबि कह्यो। अबि तो मेल अछेरो लह्यो ॥ १६ ॥
साहिब पुन तूशनि[9] करि रहे। सभि की मति लख क्योहु न कहे[10]।
पंमा रहन लग्यो गुर पास। अनिक बिधिनि की बुधि प्रकाश ॥ १७ ॥
नित हज़ूर को दरशन करै। सकल भेद को निज मति धरै।
सुमतिवंत बहु चतुर सिआना। मिलि मिलि सभिनि संग हित ठाना ॥ १८ ॥
गुर भी लगे विसाहु[11] करन को। बोलहिं तिह सों, हेत धरन को।
गुर भी ढिग बिने भनै बहु बिधि की। मन महिं खोट कपट करि सुध की ॥ १९ ॥
भीमचंद ढिग लिखै पाठावै। निति ब्रितांत बरतनि जिम आवै।
अबि मरे बस मैं गुर होए। बोलैं मधुर सु आदर जोए ॥ २० ॥
अनिक बात मैं कहौं करावौं। केतिक कै कारज सुधरावौं।
पढि पढि भीमचंद हरखावै। आछी भई जु गुर बसि आवै ॥ २१ ॥

---

1. जो जनक के भी वैरी हो जाते हैं 2. काट देते हैं 3. विश्वास 4. पहाड़िया व्यक्ति 5. बांझ 6. भरे पूरे हैं 7. लेने और खाने के समय भले रहते हैं 8. रोक कर रखो 9. चुप 10. कुछ न कहा 11. विश्वास

सिखनि के सम बनि करि पंमा। बिनती करहिं सुधारहि कंमा।
जिम प्रभु हरखति तिम ही कहै। तिम ही कार करन चित चहै।। २२ ।।
इक दिन लिखि भेजी सुध ऐसे। गुर के हय कोतल बल हैसे।
तसकर पठहु लेहु कढवाइ। सरब भेत को दियो जनाइ।। २३ ।।
गिरपति भीमचंद सुध पाए। भेव जनायो चोर पठाए।
निसा अंधेरी महिं सो लागे। ले करि गमने मूढ अभागे।। २४ ।।
भूपति को दीने तबि जाइ। देखति चपक रह्यो हरिखाइ।
पुन पंमा गुर केर खज़ाना। करहि द्रिशटि महिं धरि जिस थाना।। २५ ।।
जितिक शुमार[1] सरब ही लहै। तसकर करम साधु बनि रहै।
गुर अंतरजामी सभि जानैं। तऊ न मुखि ते बिदत बखानैं।। २६ ।।
अपर खालसा सोढी आदि। सभि सों पंमा करि संबादि।
लिये रिझाइ लखै हित साचा। कनक कलस जिम बिच बिख राखा।। २७ ।।
जिम कर बिसद बरन को धारी[2]। ध्यान पराइन रहि इक सारी[3]।
अंतर महा मनोरथ खोटा। तिम पंमा गुर ढिग मति मोटा[4]।। २८ ।।
सकल कारदारनि[5] को हेरै। जमा[6] पछानहि अलप बडेरै[7]।
दरब आमदन बरख जितेक। अरु जो खरचहिं जलधि बिवेक।। २९ ।।
जमा अनादि आदि की जेती। सिता[8] सनेह[9] घ्रित की केती।
गुलका[10] अर बारूद जि त्यारी। सदा समीप जि आयुधधारी।। ३० ।।
चाकर हिंदू तुरक कितेक। गुर सिखी ते सिंह जितेक।
गुरु गरीब निवाज समाजा। ले सभि भेत लिखे निज राजा।। ३१ ।।
एक बार लिखि खबर पठाई। तुरकाने की फौज चढ़ाई[11]।
गुरु संग हुइ जंग सुनायो। अपनी दिश ते नेह जनायो[12]।। ३२ ।।
भीमचंद ढिग लिख्यो पठाई। कलगीधर सों तुरक लड़ाई।
हित सहाइ के सैन मंगाइ। अनंदपुरै के ढिग उतराइ।। ३३ ।।
कर्‌यो दिखावा कपट प्रबीन। रण महिं करहिं गुरु बल हीन।
समैं काम के टरहिं नलरहिं। कलगीधर को हौरा करहिं।। ३४ ।।
नहिं मूरख मति महिमा जानहि। छल इत्यादिक अनिक बिधि ठानहि।
तुरक सैन टरिकै हटि गई। गिरपति दल को रुखसद[13] दई।। ३५ ।।

---

1. गिनती 2. उज्ज्वल रंग को धारण करता है 3. एक समान 4. बुद्धि का खोटा 5. सेवकों अथवा कर्मचारियों को 6. आय 7. अधिक 8. खांड 9. तेल 10. गोलियां 11. आक्रमण कराया 12. प्रकट किया 13. विदा किया

अपनो आपा सरहि जनावनि । हम हैं दास आप के पावन ।
सिखीधर सम नम्री होइ[1] । जथा पारधी[2] रीती सोइ ।। ३६ ।।
एक दिवस कहिकै वहु बारी । चढहि वहिर की मसलत[3] धारी ।
करहु अखेर फिरहु बन हेरहु । जहां कोल[4] पाढ़े[5] म्रिग शेरहु ।। ३७ ।।
श्री कलगीधर कीनि चढ़ाई[6] । संग खालसा भट समुदाई ।
बन महिं बिचरति इत उति हेरे । इम ले गमन्यों दूर बडेरे[7] ।। ३८ ।।
लिखि करि पठ्यो अए इत साहिब । गिरपति भेजहु अपन मुसाहिब ।
भीमचंद भट बीन बीन करि । हुते समीपी पठे शीघ्र धरि ।। ३९ ।।
इत ते गुर पहुंचे जबि दूर । आनि मिले ततकाल हजूर ।
नमो ठानि सनमान करंते । करनि अखेर सुथल दिखरंते ।। ४० ।।
पहुंचे वड अरंन[8] महिं जाए । तहिं ते निकसि शेरि दुइ आए ।
रजपूतन कर जोरि उचारे । खरे आप प्रभु करहु निहारे ।। ४१ ।।
कराचोल[9] सों जंग हमारा । इन ते मरहिं कि लैहैं मारा ।
वल दिखाइ चहिं प्रभु रिझाए । द्वै रजपूति समुख हुइ धाए ।। ४२ ।।
शेरनि को सहि[10] सिपर[11] अगारे । अपने खडग ओज करि मारे ।
घात करे गिर भूमि परे । पिखि गुर उर प्रसंनता ढरे ।। ४३ ।।
वखश्यो सिरेपाउ अरु धन को । उतरे वहिर देखि शुभ बन को ।
महां प्रशाद[12] त्यार करिवाए । अच्यो प्रभू अरु भट समुदाए ।। ४४ ।।
राजपूति बंदन करि गए । श्री प्रभु चढि करि पुरि महिं अए ।
उतरि तुरंग ते किय बिसरामू । संकट मिटहिं लिये जिनि नामू ।। ४५ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे पंचम रुते **'पंमे को प्रसंग'** बरननं नाम त्रितीओ अंशु ।। ३ ।।

---

1. सिखों के समान विनम्र 2. शिकारी 3. सलाह की 4. शूकर 5. मृग विशेष 6. शिकार के लिए प्रस्थान किया 7. बहुत दूर 8. जंगल में 9. तलवार 10. सहार कर 11. ढाल 12. मांस का भोजन

अंशु ४

रुवालसर जावन प्रसंग

दोहरा

इस प्रकार पंमा रहै, कपट रखै चित मांहि।
सिख सम बाहर प्रेम को करहि जनावन पाहि[1] ।। १ ।।

चौपई

लगहि दिवान[2] गुरु के पास। बैठहि आनि सनेह प्रकास।
अनिक प्रसंगनि बात चलावहि। श्री प्रभु को बहु विधि समुझावहि ।। २ ।।
राजनि को निज पास हकारउ। करहु मिलावनि बात उचारउ।
किंवा आप अखेर सिधारहु। चार पांच दिन वहिर गुजारहु ।। ३ ।।
तहां मेल राजनि को होइ। नितप्रति चित अभिलाखो जोइ।
बिना मिले ते मिटै न अंतर। द्वेश विनासहु आप निरंतर ।। ४ ।।
मिलहु, अखेर चलहु इक साथ। सभिनि कामना पुरवहु नाथ।
तुमरे पद अरबिंद से प्रेम। सभि गिरपत तुमते चहिं छेम ।। ५ ।।
इतने मैं रुवालसर मेला। आवति भा नर पुंज सकेला।
तबि पंमा लखि अवसर भलो। कहैं गुरु जी मेले चलो ।। ६ ।।
तुमरो जबि सुनि हैं आगवनू। सगल सैलपति त्यागैं भवनू।
मिस मेले क सभि चलि आवहिं। रावरि पद सरोज लपटावहिं ।। ७ ।।
सिखी धरहि आप की सारे। निज गुर करहिं भावना धारे।
अनिक अकोरनि[3] को अरपावैं। रावर की कीरति बिरधावैं[4] ।। ८ ।।
इह मसलत[5] सुनि सिंह अनंदे। कहैं प्रभु! तहि नर हुइ ब्रिंदे।
तीरथ की महिमा कहि भारी। गिरवर[6] तरते बारि मझारी ।। ९ ।।
अचरज हेरनि को चहिं सारे। तरुवरु दल सम गिरवर तारे[7]।
श्री गुजरी सुनि करि चलि आई। चलहु पुत्र सो देहु दिखाई ।। १० ।।

---

1. पास रह कर 2. सभा 3. भेंट 4. बढ़ाएंगे 5. सलाह 6. पत्थर 7. तैरते हैं

सुनति रहे कवि के बिसमाए[1]। अरु तीरथ महिमा अधिकाए।
ब्रिध बय मेरी बहुर न आसा। करहिं शनान दान तट तासा॥ ११॥
पुन उठि जद[2] मंदर महिं गए। तहीं जीतो सुंदरी सुनि लए।
हाथ जोरि तिनभी तबि कह्यो। प्रभु जी! तीरथ हम नहिं लह्यो[3]॥ १२॥
क्रिपा करहु इक बार दिखावहु। जहि गिर तरहिं शनान करावहु।
बहुर अजीत सिंह जी भाखा। हमरे चित महिं बी अभिलाखा॥ १३॥
छल पंमे को सभि गुर जानैं। जिम राजनि संग मेल बखानैं।
तऊ सरब चाहति परवारा। मिल्यो खालसा चलन उचारा॥ १४॥
सभि को संमति लख करि स्वामी। छानी[4] बात न कछु बखानी।
कहि कर तबि त्यारी करीवाई। सभा सरब महि थिरे गुसाई॥ १५॥
एक हुतो हय को घुरवार[5]। नाम मदन सिंह जाति चमार।
तिस महिं शकति हुती, सभि जानी[6]। सभिनि सुनावन बोल्यो बानी॥ १६॥

बचन

करेगा सु भरैगा। गुरु का की करैगा[7]।
सेवक ते काज सरैगा। दुशमन दोखी मरैगा॥ १७॥

चौपई

सभा बिखै सिंहन जबि सुन्यों। रिस उर धरि सभिहिनि तबि भन्यों।
इह क्या बोलति बाउ दुआई[8]। नीठ नीठ मसलत[9] ठहिराई॥ १८॥
बिघन करन को करहि जनावन। तीरथ चहैं शनान हटावन।
सुनिकै मदनसिंह मुसकायो। धरि तूशन[10] को कुछ न अलायो॥ १९॥
तबि सतिगुर कहि सभिनि सुनायो। सेवक हय को साच अलायो।
जिस असु पर चढते गुरदेवा। द्वादश मास करी इन सेवा॥ २०॥
जो निशकाम होइ करि उर को। सेवहि भले तुरंग सतिगुर को।
तथा गुरु की सेवा धेनू। सो शकती को करि हैं लेनू॥ २१॥
भूत भीविख्यत केर ब्रितांत। तिसके रिदे होइ बख्यात।
सभि किछ जानि लीन इन रिदे। सेवक संग बखान्यों तदे॥ २२॥

बचन साहिब जी का

घोड़े दी[11] सेवा करि। होवेगी सो जर[12] गुरु का घर।
राखा साचा सतिगुर सिखा[13]! चिंता ना कर। चुप का समा सर[14]॥ १॥

---

1. हैरान होकर 2. जब 3. देखा 4. गुप्त, अव्यक्त 5. घोड़ों की देखभाल करने वाला, साइस 6. उसने भविष्य की स्थिति का अनुमान लगा लिया 7. गुरु को क्या हानि पहुंचा सकता है 8. अटपटी बातें 9. सलाह 10. चुप 11. की 12. सहन कर 13. हे सिख! 14. समय अच्छा है

चौपई

तबि सतिगुर त्यारी करिवाई। सभिनि तुरगन ज़ीन सजाई।
कंचन साज संग शिगारे। कोतल पंच गुरु के प्यारे॥ २३॥
निखल खालसा लालस करे। भए सनधबध मुद धरे।
डेरे चले तीन गुर महिला। गुजरी चढी पालकी पहिली॥ २४॥
आनंदपुरि ते चढति सिधारे। साहिबज़ादे ले संग चारे।
सिख संगत को वार न पारे[1]। चढ्यो खालसा गुरु पिछारे[2]॥ २५॥
मारग बिखम गिरनि को जोऊ। सने सने उलंघति सभि कोऊ।
इस बिधि कलगीधर आगवनू[3]। पहुंची सुधि सभि गिरपति भवनू॥ २६॥
सुनि करि चढे सकल ततकाला। सिरी नगरीए[4] अरु चंबिआला[5]।
चढि नदूनीऐ[6] नृप बधिआले। अपर मंडैल[7] चमूं ले नाले[8]॥ २७॥
हुतो कामगड़ीआ[9] जु सिधारा। नाम घमंड चंद भट भारा।
भीमचंद गिरनाथ कलूरं। भूप चंद चढि चल्यो हंडूर॥ २८॥
बीर सिंह जसपालि पधारा। चढे बसैहरी आनद धारा।
कुलू कैठल ते चलि आए। इत्यादिक गिरपति चढि धाए॥ २९॥
लरे बिसाल जि श्री गुर साथा। देखे बडे जंग महिं हाथा।
तिस कलगीधर हेरन हेति। बढ जोधा अति रथी सुचेत॥ ३०॥
धरि धरि उर दीरघ अभिलाखा। गए अखिल सैलनि मग नाखा[10]।
तीरथ थल रुवालसर आयो। प्रथम प्रभू डेरा तहिं पायो॥ ३१॥
तिन पाछे राजे सभि आए। हेरि हेरि थल जित चित भाए।
सभिहिनि सिवर कर्यो[11] हरिखाए। खान पान करि सुपति सुधाए॥ ३२॥
अगलो[12] भई जबहि भुनसारा। सौच शनान सकल तन धारा।
श्री गुर ढिगु सभि के नर आए। गिरपति चाहति दरशन पाए॥ ३३॥
पंमा फिरैं बीच इत उत मैं। चहै प्रभाव दिखावनि चित मैं।
तबि साहिब इम हुकम बखाना। करहु मखमली फरश महाना॥ ३४॥
सभा शिंगार सुधारो सारो। थिरैं आनि जहिं मनुज हज़ारो।
सुनि दासनि ततकाल सुधारू। तन्यो बितान चौकनो चारू॥ ३५॥
मुकता झालर ज़री परोए। रेशम डोरे कसिबो होए।
ब्रिंद दरब लागे बनवायो। रवि प्रकाश ते बहु चमकायो॥ ३६॥

---

1. बहुत अधिक संख्या में 2. पीछे पीछे 3. आगमन 4. सिरी (श्री) नगर वाला 5. चम्बे वाला 6. नादोन वाला 7. मंडी वाला 8. साथ 9. कामगढ़ का राजा 10. पर्वतों के मार्गों से गुज़र कर 11. शिविर 12. आने वाला दिन

फरश बिसाल दूर लग कीना। आइ खालसा प्रथम असीना।
सगरे सनधवध भट भारे। शोभति जिम केहरि बलि भारे ॥ ३७ ॥
श्री कलगीधर बसत्र सजाए। जामा बहु सूखम छबि पाए।
पुशट हेम की जर्डात सु हीरे। सुंदर कोर करी बर चीरे ॥ ३८ ॥
पाइ पुलादी गर शमशेर। सायुध भए दिपहिं सम शेर।
सरि सुंदर दसतार[1] सजाई। दमकति रतन जिगा[2] छबि पाई ॥ ३९ ॥
झूलति कलगी मोद बढावति। मुकता स्वछनि गुच सुहावति।
तरगस जटति गरे गहि पायो। खर[3] तीरनि सो भर्यो सुहायो ॥ ४० ॥
चांप कठोर हाथ महिं लीनि। गोशे[4] जुग कंचन के कीनि।
डस्यो[5] प्रयंक फरश पर चारु। सेजबंद गुंफे दिश चारू[6] ॥ ४१ ॥
बिसद[7] बिछौना सुंदर सोहति। मिदुल अधिक मन हरता जोहति।
तिस पर थिरे आन गुनखानी[8]। हेरि उठ सभि हित सनमानी ॥ ४२ ॥
चमर चारु ढुरतो चहुं फेरे। मनहुं हंस झुक मुकता हेरे।
डरति न गहै फेर उड जाही। जनु सुर गन महि भ्रमाही[9] ॥ ४३ ॥
इस प्रकार सभि सभा लगाइ। जनु सुर गन महिं थिर सुरराइ।
किधों कुबेर महां छबि पावै। रामचंद कै सभा सुहावै ॥ ४४ ॥
जिम जादव महि गोबिंद[10] चंद[11]। तिम सिंहन मांहि गोबिंद सिंह।
कंचन लशट[12] धरे थिर आगे। सभि गुर रूप पिखहिं अनुरागे ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे पंचम रुते '**रुवालसर जावन प्रसंग**' बरननं नाम चतुरथे अंशु ॥ ४ ॥

---

1. पगड़ी 2. सिर का भूषण 3. तीक्ष्ण 4. धनुष के कोने 5. बिछा हुआ 6. **चारों** ओर 7. सफेद 8. अभिप्राय गुरु जी 9. झूल रहा है 10. कृष्ण 11. चंद्रमा के **समान** 12. चोबदार

अंशु ५

राजन मेल प्रसंग

दोहरा

सैलपती मिलि करि सकल चमूं संग समुदाइ ।
श्री कलगीधर के निकट आए उर हरखाइ ॥ १ ॥

चौपई

निज निज भेट अगारी धरे । पद अरबिंद बंदना करे ।
कंचन ज़ीन तुरंग शिंगारे । खरे करे सतिगुरु अगारे ॥ २ ॥
धनुख तुपक अरु सिपर क्रिपान । देश बिदेशनि मोल महांन ।
खड़ग सिपर सभि अंग लगाए । बैठे निकट प्रभु समुदाए ॥ ३ ॥
हेरि हेरि सुंदर गुर सूरति । मानहुं दिपहि काम की मूरति ।
कै समेट सुंदरता सारी । धर्यो सरीर आनि दुति भारी ॥ ४ ॥
आदि सूरता गुन समुदाए । इक थल मैं बिधि रचे टिकाए ।
मनहुं रूप निज धर्यो सरूपा । इस प्रकार प्रभु दिपहिं अनूपा ॥ ५ ॥
तिस छिन जिन जिन देखनि कोने । इक सम सभि के मन हरि लीने ।
चिरकाल के चाहति चित मैं । दरशन कर्यो भए सभि हित मैं ॥ ६ ॥
कुशल प्रशन प्रभु सभि को बूझे । उतर दयो अनंद अरूझे[1] ।
अपर बारता बहुत चलाई । बचन सुनान को बहु ललचाई ॥ ७ ॥
भीमचंद ते आदिक राजे । भूपचंद बहु संग समाजे ।
छोटे बड़े सैलपति हेरे । सुनि सुनि बाक अनंद बडेरे[2] ॥ ८ ॥
जिनहु प्रिथम ही दरशन पायो । सो कर जोरति बाक अलायो ।
श्री सतिगुर के गुन जिम सुने । कहति हुते जिम सुंदर घने ॥ ९ ॥
तिसी रीति के आज निहारे । दरशन सफले जनम हमारे ।
राजपूत अरु सभि गिरपाल[3] । कहैं सकल हम भए निहाल ॥ १० ॥

---

1. आनंद में लीन 2. बहुत अधिक आनद 3. पहाड़ी राजागण

श्री नानक को तखति सुहायो। तीन लोक पति तन धरि आयो।
वहुत समै लग बैठे रहे। उठि गमने कोइ न चित चहे ॥ ११ ॥
देखनि के लालच अनुरागे। बाक सुननि हित बातनि लागे।
बार बार गुर को जसु कहै। हम रावर के सिख ही अहैं ॥ १२ ॥
करु ना करति रहहु लखि दास। तुम दरशन ते नहिं जम पास।
अपने जानि सिमरते रहो। पूरब दोशु नहीं अबि लहो ॥ १३ ॥
हम हैं अलप बिगारन हारे। तुम समरथ हो बखशनहारे[1]।
इत्यादिक कहि बिनै घनेरी। नीठ नीठ उठि करि तिस बेरी ॥ १४ ॥
करि करि नमो जनाइ सनेहू। गमने डेरनि ब्रिखै अछेहु[2]।
पुन सगरे राजन की रानी। दरशन को चित चहति महानी ॥ १५ ॥
बूझि बूझि राजन के संगा। आई देखनि धरे उमंगा।
प्रिथक प्रिथक निज धरी उपाइन। परसे आनि कमल सम पाइन ॥ १६ ॥
पूरन चंद बदन की ओरा। सभि रानी द्रिग कीन चकोरा।
गुरसरूप सूरज सम भासे। कमल बिलोचन सभिनि बिकासे ॥ १७ ॥
एक बार तन की सुधि भूली। पिखि सरूप रानिनि झूली[3]।
कहैं परसपर हे अलि[4]! जान। सुंदर क्रिशन सुन्यो हम कानि ॥ १८ ॥
जिन कउ पिखि ब्रिरमहिं[5] नर नारी। बीच पुरारन कथा उचारी।
सो इन सम ह्वैगो कै नांहिन। काम कहां सम तन भा दाहनि[6] ॥ १९ ॥
लाज जहाज नयन अनियारे[7]। खंजन कंजन कौन बिचारे।
धेन त्रीआ वडभागी सोई। इन सों हसि बोलति है जोई ॥ २० ॥
सुनति रही हम सदही श्रोन। गुर सम रूप नहीं कित लोन[8]।
रही सिहावति हेरनि कारन[9]। बडे भाग किय आज निहारनि ॥ २१ ॥
गुर सरूप वड जाल फसी हैं। म्रिगी समान नहीं निकसी हैं।
इक टक देखि, न पलक मिलावहिं। हे सखि! कहा दरस पुन पावहिं ॥ २२ ॥
भई बिवस ठहिरी चिर काल। तिन महिं हुती जि बिरधा बाल।
सभि रानिनि के मन की जानि। उठी गुरु पग बंदन ठानि ॥ २३ ॥
नीठ नीठ उठि गवनी सारी। बधी लाज सुकचते नारी।
जबि सभि गई बथति गुन गन को[10]। चली हारि करि जनु निज मन को ॥ २४ ॥

---

1. कृपालु 2. समस्त 3. मौज में आकर झूलने लगीं 4. सखी 5. प्रसन्न होना 6. उसका शरीर तो जला हुआ है 7. तीखे, नोकदार 8. सुंदर 9. दर्शन करने के लिए लालायित 10. गुणों के समूहों को

सैलपति चंब्याल कुमारी[1]। नहिं ब्याही सो हुती कुमारी।
हुती चित्रनी चित्र सरूपा। कविता करती गुननि अनूपा ॥ २५ ॥
सुनति हुती गुर रची सु बानी। छंद सवैये आदि महानी।
पाढ पढि हरखति रिदे घनेरी। रस शिंगार अधिक जहिं हेरी ॥ २६ ॥
मन महिं ऐसे चित्रवति रही। बानी रसवति गुर बहु कही।
नई, बरीक, करी रस घनो। रौद्र, शिंगार, विदति करि मनौ ॥ २७ ॥
अधिक सनेह संग सो पढे। दरस करन की बांछा बढे।
पित सों पूछि लिखी तिन पाती। निज अधीनता करि बहु भांती ॥ २८ ॥
श्री सतिगुर की बहुत बढाई। लिखि करि दासी हाथ पठाई।
आनि दई सभि कहि करि गाथा। बाची तबहि खोलि जगनाथा[2] ॥ २९ ॥

बचन

सारा, पउणा, दूजा[3] गउणा ? नर नारी थे दोनो भउणा[4]।
कुछ खाथा[5], कुछ लैके सउणा[6]। उतर देहु गुरु जी कउणा[7] ? ॥ ३० ॥

दोहरा

इम पाती पढि दीनो देखिकै सतिगुर चतुर बिसाल।
कागद पर उतर लिख्यो पठि दीनो ततकाल ॥ ३१ ॥
जाणो 'सारा' देव देहि, 'पउणा' माणस देहि।
दुविधा दूजी करी गवन, नर-नारी लगि हूए खेह ॥ ३२ ॥
उभै लोक 'भउंदा फिरै', कुछ खाधा खरच ज माल।
प्रलै भाई सउणा हुआ, उतर तुमरा बाल[8] ॥ ३३ ॥

चौपई

सो दासी ले ततछिन आई। राजसुता गहि पढि हरखाई।
दरशन प्यास प्रथम ही लागी। उतर पढि दूनी मन जागी ॥ ३४ ॥
निज पित संग बूझि करि आई। पहुंचि गुरु तट ग्रीव निवाई।
हाथ जोंरि जबि बदन ठानि। हुती कमान प्रभू के पान ॥ ३५ ॥
राज सुता की प्रिशटी पर धरि। थापी धनुख साथ तिस दे करि।
बहुर हाथ महिं लीनि उठाई। हित बूझनि तिन गिरा अलाई ॥ ३६ ॥
मम प्रिशटी पर अपनो हाथ। क्यों न धर्यो अबि हे गुरनाथ।
अधिक भावना तुम मैं मेरी। जानहुं क्यों न आपनी चेरी ॥ ३७ ॥

---

1. चंबा के राजा की पुत्री 2. अभिप्राय गुरु गोबिंद सिंह 3. दूसरा 4. घूमना है 5. खाया 6. सोना 7. कौन 8. बालिका

तबि सतिगुर सभि हेत सुनायो। प्रथम तुरकनी को तन पायो।
बेगम भई नुरंगे केरी। देहि अपावन हुती बडेरी[1] ॥ ३८ ॥
जमना घाट जहां बिसरांता। तहां परब दिन भई सनाता[2]।
सो तजि देहि हिंदु तन पायो। परब शनान तांहि फलदायो[3] ॥ ३९ ॥
अबि लौ सुधि नहिं तूं होई। हुती तुरकनी समुझी सोई[4]।
यां ते हम अबि हाथ न छुहायो। धनुख आपनो तुव तन लायो ॥ ४० ॥
हम महिं करी भावना जोइ। इस को फल ह्वैं सुनीऐ सोइ।
जंगल देश दमदमा थानु। तहिं डला बैराड़ महानु ॥ ४१ ॥
इहि तन तजहिं थोर दिन माही। तिसी देश महिं जनमहिं जाही।
सिख हमारो डला नाइ। तिस को बनहि कबीला[5] जाइ ॥ ४२ ॥
सिख सिखनी तहिं समुदाइ। सेवा करहैं तूं चित लाइ।
तबि तेरो हम करहिं उधार। दरशन देहिं आइ तुव द्वार ॥ ४३ ॥
इम बखशीश[6] करी गुर जबै। बिसमै[7] भई बहुर सुनि तबै।
बार बार बंदन कहु करै। लखि त्रिलोक पति शरधा धरै ॥ ४४ ॥
कितिक काल दरशन को पाइ। गई रिदे गुरु रूप बसाइ।
बरत नेम संजम मैं रही। अपनो ब्याहु कर्‌यो नहिं ॥ ४५ ॥
गुरु गुरु सिमरति केतिक दिन मैं। तनकौ त्यागि मरी ततछिन मैं।
देश मालवे जनमी जाइ। डले संगु ब्याह करिवाइ ॥ ४६ ॥
गुर जो कह्यो सकल ही भयो। प्रभु जी सिवर[8] तहां ही कियो।
परबत बासी जे नर नारी। दरशन करहिं भावना धारी ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रुते **'राजन मेल प्रसंग'** बरननं नाम पंचमों अंशु ॥ ५ ॥

1. बड़ी 2. स्नान किया था 3. फलीभूत हुआ है 4. यही हम ने समझा था 5. पत्नी 6. कृपा 7. विस्मय-विमुग्ध 8. शिविर

अंशु ६

रवालसर प्रसंग

दोहरा

सकल सैलपति मेल करि तीरथ मेले मांहि ।
दान महांन शनान तन बहुत ठानि चित लाहि[1] ॥ १ ॥

चौपई

कंचन ज़ीन तुरंग शिगारे । किनहुं मतंग दिये मुल भारे ।
बसत्र शसत्र अरु दरब बिसाला । नृपनि दान दे बहु तिस काला ॥ २ ॥
करि करि मेला बासुर तीन । मुदति भए नारी नर पीन[2] ।
रुखसद[3] हेत गुरु ढिग आए । सभि को सिरोपाउ पहिराए ॥ ३ ॥
करि करि नमो निकेत सिधारे । मग महिं गुर को सुजस उचारे ।
निज निज नगर पहुंचे जाई । पुरी कामना पिखि सुखदाई ॥ ४ ॥
कलगीधर तहिं रहै पिछारी । मजन ठानहिं तीरथ वारी[4] ।
वहिर अखेर[5] करहिं बन मांही । सैलनि सैल करहिं अवगाही ॥ ५ ॥
जाति अनेक तरोवरु ठांढे । दल फल संकल[6] छाया गाढे ।
चढि करि दूर सुचेता[7] करिही । नए सथल सैलन पर फिरिही ॥ ६ ॥
इक दिन दूर गए जगस्वामी[8] । सेल बिलोकति ऊरध गामी ।
मालवीह परबत को नामू । शिखर चले तिस लखि अभिरामू ॥ ७ ॥
सरब संग ते बरजि हटाए । थिरे रहो नतु सिवर सिधाए[9] ।
पंच सिंह निज साथ मिलाइ । तिनके नाम सुनहु हरखाइ ॥ ८ ॥
दया सिंह पूरन ब्रह्म ग्यानी । उदे सिंह जोधा बल खानी ।
आलम सिंह चरन सों चाले । मुहकमसिंह मिलाइ सु नाले[10] ॥ ९ ॥
साहिब सिंह तुफंग संभारे । पचंहु गमने गुरु पिछारे[11] ।
दासनि को दे तुरंग हटाए । तूरन[12] पाइन साथ सिधाए ॥ १० ॥

---

1. लाभ 2. बहुत अधिक 3. विदा 4. तीर्थ स्थान के जल में 5. शिकार 6. पत्तों और फलों से पूर्ण 7. मल-त्याग 8. अभिप्राय गुरु गोबिंद सिंह 9. नहीं तो शिविर में चले जाओ 10. साथ 11. पीछे पीछे 12. तुरन्त

तुंग सथल चढिकै गुर खरे। चारो दिशा बिलोकन करे।
तहिं इक बिचरति हुतो गंधीला[1] । कर्यो निहारन रूप छबीला ॥ ११ ॥
शीघ्र करति चरननि पर पर्यो। हाथ जोरि सनमुखि पुन खर्यो।
देखति कलगीधर कहिं बानी। कहां जानि तैं बंदन ठानी ॥ १२ ॥
को हैं ? कहां वास ? सचु भाखो । आइ कहां ? कति गमन भिलाखो[2] ?
सुनि करि भन्यों बाक मुसकाइ । क्यों न पछानति हो सुखदाई ॥ १३ ॥
श्री सतिगुर ! सुनीए मम गाथा। प्रथम ब्रितांत कहौं तुम साथा।
मैं रेवा का नंदन प्यारो। जग रेवाल नाम मुझ डारो ॥ १४ ॥
इम माता भाख्यो उपदेशू ।—हे सुत तप को तपहु विशेशू ।
जगत बिखे जेती वडिआई[3] । जिन किनि तप को तप करि पाई ॥ १५ ॥
तप ते कछु दुलभ जग नाहीं। अति ते अति शकती तपु मांही।
बिशनु आदि जे बडहुं वडेरे। तप महिं प्रीति करति नित हेरे ॥ १६ ॥
महां देव को नेम सदीवा। निस बासुर तप महिं थिर थीवा[4] ।
कमलासन जबि उतपति भयो। बैठ्यो कमल कमल निपजयो ॥ १७ ॥
तबि अकाशवाणी समझायो। तप बिन बल नहिं किनहूं पायो।
शकति बिसाल चहैं जे पाई। तपु करीयहि चिर लग समुदाई ॥ १८ ॥
सुनि तपु अतिशै ब्रह्मा कीन। जग सिरजन की शकती लीनि।
सुर नर महिं ए तीन वडेरे[5]। तपु को तपहिं महातम हेरे ॥ १९ ॥
अपरन की गिनती कहु कहां। यांते पुत्र ! करहु तप महां।
सुनि जननी ते अस उपदेशु। तप को तापति रह्यो विशेशु ॥ २० ॥
थिर हुइ उतरखंड सुथाए। तप करते जुग तीन बिताए।
तबि कमलासन चलि करि आयो। आगे थिर हुइ[6] दरस दिखायो ॥ २१ ॥
बिबध बिधिनि मैं उसतति कीनि। चरन कमल पर सिर धरि दीनि।
हुइ प्रसन बिधि[7] बाक बखाना।—अहो नाग नंदन ! सुनि काना ॥ २२ ॥
तप तैं साधन कीन घनेरे। बर चाहो जिभ ह्वै उर तेरे।
सुनि ब्रह्मा ते जुग कर जोरे[8]। जाच्यो जथा मनोरथ मोरे ॥ २३ ॥
अधिक बिभूति राजसी पाऊं। निज बर दीजे राज कमाऊं।
इम ही होइ—बिरंच उचारा। बिश्वकरमा ततकाल हकारा ॥ २४ ॥
मंडप नगर करावनि करियो। अबि मंडी जहि नाम उचरियो।
तिस को मोहि बनायो राजा। अधिक ब्रिधायो राज समाजा ॥ २५ ॥

---

1. एक जंगली जाति (गंधील) का कोई व्यक्ति 2. कहां जाने की अभिलाषा हैं 3. वड़ाई 4. होता है 5. बड़े महान् 6. खड़े होकर 7. ब्रह्मा 8. दोनों हाथ जोड़ कर

जीते देश बिदेश बिसाले। कर्यो राज मैं बहु बल नाले[1]।
त्रेशठ जुग बीते इस रीति। भोगति अनंद रिपुनि कहु जति ॥ २६ ॥
तबि जछन सों रण मम परियो। हते हजारहुं सनमुख लरियो।
बज्यो लोह सों लोह करारा। मच्यो महां संग्राम अखारा ॥ २७ ॥
जछन लछनि घाल्यो हेला[2]। कर्यो धकेलन रेल रु पेला।
बहुतनि मिलि मुझ को बध कीनो। राज सकल मेरो तब छीनो ॥ २८ ॥
जहिं पूरब मैं तप बहु तापा। बिधि बर ते तीरथ इह थापा।
लघु गिरवर तरुवरु दल समसर। तरति फिरति हेरति सभी जल पर ॥२९॥
निहकलंक अवतार न जावति[3]। बास करौं मैं इस थल तावति[4]।
करुनां करि अबि तुम चलि आए। अपनो दरशन रुचिर दिखाए ॥ ३० ॥
नर अवतार आप तुमि अहो। सकल शकति धरि रिपुगन दहो।
मैं अबि धर्यो आप की शरनी। चहौं निखल बिपता निज हरनी ॥ ३१ ॥
क्रिपा करहु प्रभु बनौ सहाइ। दास जानि करि लेहु बचाइ।
जितिक सुरासुर जग समुदाए। तुम निज आग्या बिखै चलाए ॥ ३२ ॥
जो नहिं मानै सो तुम मारा। सभि पर हुकम आप को भारा।
जछन को बल ते समुझावो। बधिओ बेर बिसाल मिटावो ॥ ३३ ॥
इम रुआल[5] की बिनती सुनिकै। शरनि पर्यो अपनी मन गुनिकै।
श्री कलग़ीधर धनुख संभारा। तान्यों पान तान ते भारा[6] ॥३४॥
गही जेह जबि कान लगाई। चांप नाद बड भयो तदाई।
तिन ते गन परबत अरड़ाए[7]। भए हलाचल शबद उठाए ॥ ३५ ॥
सभि ते तबि आवाज़ इम आई। राख लेहु हम तुम शरनाई।
इतने बिखै पुरख इक आयो। सतिगुर के सनमुख द्रिशटायो ॥ ३६ ॥
तन महिं रोम जटा सम जांही। म्रिग को चरम ओढि करि तांही।
लाल बिलचन अंग बडेरे[8]। मुख पर शमस[9] आइ तिस वेरे[10] ॥ ३७ ॥
समुख खरो हुइ वंदन ठांनी। हाथ जोरि बोल्यो इम बानी।
प्रभु जी अबि नहिं समा तुमारा। इत आवन को लेहु बिचारा ॥ ३८ ॥
अबि तुम गमनहु आपन डेरे। चिरंकाल पुन करीअहि फेरे[11]।
जबि फैलैगो पंथ बिसाला। रच्यो खालसा जो शुभ चाला ॥ ३९ ॥

---

1. सहित 2. आक्रमण 3. जब तक अवतरित नहीं होता 4. तब से 5. रेवा के पुत्र की 6. अत्यधिक बल से 7. गरजने लगे 8. बड़े 9. दाढ़ी 10. उसी समय उतर रही थी 11. पुनः इधर आना

तबि तुम जछन के हुइ नेरे। करने भले आनि करि डेरे।
मेरो सरदधार जछ नामू। नागन संग सदा संग्रामू ।। ४० ।।
करति रहे जछ मारन मरनो। बिजै पराजै हुइ नित लरनो।
करहु न पख आप किस केरे। सभि के सांझे सदा बडेरे[1] ।। ४१ ।।
जबि तुम ऐहो धाम हमारे। डेरा करहहु लै दल भारे।
दस हज़ार दल हम तबि दै हैं। पंथ तुमारे बिखे मिलै हैं ।। ४२ ।।
सगरे कारज भले सुधारैं। शत्रु पंथ के सभि निरवारैं।
लखहु भविखत एवं ब्रितंत। हमरे हो अलंब भगवंति ।। ४३ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रुते 'रवालसर प्रसंग' बरानं नाम खशटमो अंशु ।। ६ ।।

---

1. बड़े, महान्

अंशु ७

रिवाल प्रसंग

दोहरा

गन जछन को जूथपति जवहि कह्यो इस भांति।
श्री कलगीधर सुनि सकल बोले बच बख्यात ।। १ ।।

चौपई

महां बीर रस बिख भिगोवा। छिमा करन आशै जिस जोवा।
अधिक प्रताप संग भरपूरा। बिजै सहित बोले बच रूरा ।। २ ।।
जग महिं तुरकन सैना अनगन। सपतहुं अंग[1] सहित अति दुरजन।
जिन ते कहुं मवासि[2] न रह्यो। सभि ते दंड ओज ते लह्यो ।। ३ ।।
दीन दास तिन के बनि राऊ। हुकम करहिं इन पर मन भाऊ।
जग महिं भयो अशत्रु प्रतापू। हुते शत्रु कीने सभि खापू ।। ४ ।।
तिन तुरकनि अन गन को मारौं। इक सर संग भसम करि डारौं।
सायुध एक रहन नहिं पावै। छुट्यो बान एक साथ खपावैं ।। ५ ।।
तऊ सभा हम कलू बिचारा। बहुर देहि मानुख को धारा।
रहन भलो इन के अनुसारी। नहिं चहीयत मिरजाद बिगारी[3] ।। ६ ।।
सने सने[4] सभिहूंनि खपावैं। तुरक लगारबंद नहिं पावैं[5]।
सुनि रेवाल गुरु की बानी। भरी बीर रस आप बखानी ।। ७ ।।
अनीकनी[6] ले संग करोर। पहुचौं आइ आप की ओर।
सैन भयानक बनहिं भुजंगी। सुनहुं पिता जी हुइ इकरंगी ।। ८ ।।
जबहि समा पहुंचैगो आई। शत्रनि सन तबि करौं लराई।
जीतौं गंध्रब देश बिसाला। लरैं खालसा मिलि तिस काला ।। ९ ।।
गरदश[6] करौं तुरक संहार। नहिं रहिन पावै तिस बार।
बरख पंचास चानणा करौं। सागर लग प्रताप जिस धरौं ।। १० ।।

---

1. सात प्रकार के राज्य अंगों से युक्त, यथा कोश, सेना, दुर्ग आदि 2. स्वतंत्र 3. बिगाड़ना 4. शनैः-शनैः, धीरे धीरे 5. तुरक अपना नगारा नहीं बजा पाएँगे, अर्थात् उनसे राज्य छीन लिया जाएगा 6. सेना 7. परिवर्तन

जो कपीश गंध्रव[1] की संतति। ज़िमी दबाइ लेयगी संतति।
धरहि मलेछ भाव जो तन मैं। सभिनि पलाइ देय हौं रन मैं ॥ ११ ।
पंथ खालसा राखि दिखावौं। तेज बिलंद[2] जगत बिदतावौं।
करौं ब्याह ले मदना नारी। पुत्र उपावौं द्वै बल भारी ॥ १२ ॥
जबि वहि राज साज पर ऐहैं। तबि सरीर आपन तजि दैहैं।
मुझ पीछे बड होइ लराई। खंडन करैं प्रजा समुदाई[3] ॥ १३ ॥
इक सुत को हुइ राज विशेशू। देश कामगड लगौं अशेशू।
दिली तीरथ वडो प्रयागू। जहिं लग पूरब केर विभागू ॥ १४ ॥
सभी को रज करै मम नंद। सुजस प्रताप वधाइ बिलंद।
सिंध महा नद बहति झनाऊ[4]। रावी सतुद्रव लगो प्रभाऊ ॥ १५ ॥
दुतीए नंदन को हुइ राज। वधहि विभूति बिसाल समाज।
पुरि कशमीर सु पशचम दिश को। सभि महिं राज होइ है तिस को ॥१६॥
वरन आलमी करै उचारा। इम कहि गुर के संग सिधारा।
सरदधार बिनती कहि ऐसी। हे प्रभू! मुझ को आग्या कैसी ? ॥ १७ ॥
महाराज धनपत अलिकेश[5]। तिस प्रति कही अहि कुछ संदेश।
तिस को पठ्यो आप ढिग आयो। जिम भाख्यो मैं आनि सुनायो ॥ १८ ॥
तुम जिन कहौ सुनावनि करहूं। सकल जछ रावरि अनुसरहुं।
नतु[6] मैं गमनों संग तुमारे। चलि अनंदपुरि करहुं उचारे ॥ १९ ॥
सुनिकै श्री मुख बचन उचारे। सरदधार! अबि हटहु पिछारे।
कहहु कुवेर संग संदेश। करि अनंदपुरि जंग विशेश ॥ २० ॥
पुन चमकौर करहि घमसाना। बहुर मुकतिसर करि अरि हाना।
हिंदू धरम सथापनि करिकै। बहु तूरकनि के प्रान निकारि कै ॥ २१ ॥
पथ तुरक को अधिक विरोध। करौं खपावन नीको सोधि।
अवरंग जो मुहंमदी भारी[7]। तिस बिनाशिकै भली प्रकारी ॥ २२ ॥
पुन हम दखण को चढि जै हैं। तहां पहुंच परलोक सिधै हैं।
पुन रिवाल संग कह्यो गुसाई[8]। अबि बिरोध तुम देहु मिटाई ॥ २३ ॥
चिरंकाल करि चुके लराई। दिश दोनहुं तिम ही बनि आई।
समा पाइ निज लीजै राजू। भोगहु ऐशवरज राज समाजू ॥ २४ ॥

---

1. अभिप्राय अंग्रेज जाति 2. बड़ा 3. सारी प्रजा को बांट देंगे 4. चनाब नदी 5. कुबेर 6. नहीं तो 7. औरंगजेब जो बड़ा कठोर मुसलमान है 8. अभिप्राय गुरु गोबिंद सिंह

नाहक[1] रण रचि फसहु कलेशू । दिशि द्रोनहूं तजि द्वेश अशेशू ।
इम ही सरदधार समुझायो । कहि रिवाल तिह संगि मिलायो ॥ २५ ॥
कहो कुबेर संग समुझाइ । नागन साथ विरोध मिटाइ ।
हमरै कहे संधि करि लीजै । नाहक संघर नांहि करीजै ॥ २६ ॥
सुनि रिवाल पुन उचरनि कीन । मै तुमरो बच सिर धरि लीन ।
प्रथम वखेरा मैं नहिं करौं । जछ हंकारे ते नहिं टरौं ॥ २७ ॥
श्री मुख कह्यो हमारो बैन । दिढ कुबेर मानहिं चित चैन ।
जिम तूं कही हमारी मानैं । तुझ ते दसगुन[2] सो मनमानैं ॥ २८ ॥
इम कहि देनो संग मिलाए । तबि रिवाल उर वहु हरिखाए ।
हाथ जोरि करि गाथ सुनाई । इक संमत अपदा तुम पाई ॥ २९ ॥
अनिक विघन के उठहिं कलेशू । बिपता तुम को परहि विशेशू ।
तबि मै मिलौं आइ इक बारी । तिस के कारन करौं उचारी ॥ ३० ॥
गाइत्री सभि वेदन माता । तिस के रिदे कोप उपहाता[3] ।
मेरे कर्‌यो गुरु अपमाना । अंगीकार करन नहिं ठाना ॥ ३१ ॥
नहीं पंथ मैं दिय उपदेशू । मोहि बिसार्‌यो रिदै अशेशू ।
सरब म्रियाद सथापन कीनि । हिंदु धरम धरि रख्यो प्रबीन ॥ ३२ ॥
एक मोहि कउ रिदै बिसारा—। यांते रिस करि स्राप उचारा ।
भोगहु बिपता समत एकू । इह कारन है जलधि विबेकू ॥ ३३ ॥
पाहुल[4] दई पंथ उपजाए । आप लई पाहुल हरिखाए ।
मेरे बिना कीनि सभि कारा । यौं विचार करि कोप उचारा ॥ ३४ ॥
यांते तुम सुचेत नित रहीयहि । स्राप गायत्री को उर लहीयहि ।
समे समे में पहुंचि मिलैहौं । तुमरे बाक सुनौं, उचरै हों ॥ ३५ ॥
इस प्रकार करिकै संवादा । दनो हटे रिदे अहिलादा ।
पद अरविंद वंदना करिकै । गए आपने थान सिधरिकै ॥ ३६ ॥
सरदधार जछ अलकापुरी[5] । मिलि कुबेर को सभि सुध करी ।
सतिगुर के संदेश सुनाए । सुनि धनपति[6] मन महिं हरखाए ॥ ३७ ॥
वैर भाव नागन संग छोरा । मिले मेल हित करि जुग ओरा ।
इस प्रकार तहिं भयो प्रसंग । सतिगुर पंच सिंह लै संग ॥ ३८ ॥
परवत पर ते उतरति भए । सिवर[7] आपने आवन कए ।
चारहुं साहिबज़ादे हरखे । मेला हेरति तीरथ परखे ॥ ३९ ॥

---

1. व्यर्थ 2. कुबेर के लिए प्रयुक्त हुआ है 3. उत्पन्न हुआ है 4. अमृत 5. कुबेर की नगरी 6. कुबेर 7. शिविर

माता गुजरी कीनि शनान। कीनसि कंचन को बहु दान।
वसत्र बिभूखन जीतो आदि। दे करि गुर महिला अहिलाद ।। ४० ।।
सरब अनंद बिलंद[1] करंते। सतिगुर महिमा उर परखते।
केतिक दिवस थिर्यो तहिं डेरा। देश गिरिन को फिरि फिरि हेरा ।। ४१ ।।
पुन सतिगुर करि कूच पधारे। सकल खालसा होयहु त्यारे।
वाजि उठ्यो रणजीत नगारा। गिरवर के मग प्रभ पधारा ।। ४२ ।।
चढि पालकी गुजरी चली। सने सने[2] गिर मग बिधि भली।
तीनहुं गुर महिला चढि डोरे। गमन कीन आनंदपुरि ओरे ।। ४३ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते **'रिवाल प्रसंग'** बरननं नाम सपतमों अंशु ।। ७ ।।

1. अधिक 2. शनैः-शनैः

अंशु ८

मंडी प्रसंग

दोहरा

मंडीपति महिपाल को सुध कीनि किन आइ ।
अबि लौ गुर डेरा तहां चमूं संग समुदाइ ॥ १ ॥

चौपई

सुनि करि अपने रिदे बिचारी । गुर आनौं इस पंथ मझारी ।
मिलौं जाइ तहिं निज सग ल्याऊं । निज पुरि महिं डेरा उतराऊं ॥ २ ॥
सेवा करौं प्रीत को धरि कै । दीन दुनी सुख पै हौं करिकै[1] ।
श्री मुखि ते जिम बाक बखानै । होइ सु निशचे सभि जग जानैं ॥ ३ ॥
करि इत्यादि कामना चढ्यो । गुरु मिलिनि को आनंद वढ्यो ।
ले करि संग चमूं निज केरी । केतिक दूर गयो तिस वेरी ॥ ४ ॥
आवति गुरु अगारी चले । हरखति होइ पंथ मों मिले ।
उतरि तुरगम ते ढिग गइऊ । चरन सरोज वंदना कइऊ ॥ ५ ॥
हाथ जोरि पुन बिनती भनी । मैं जबि रावर की सुधि सुनी[2] ।
इस मग ल्यावन हेत सिधारा । तुम पूरब ही इत पग धारा ॥ ६ ॥
घटि घटि सभि के जाननि हारे । जन सिखनि के काज सुधारे ।
मम पुरि महिं पावन करि पावन । पावन करे मरब ही थावनि[3] ॥ ७ ॥
श्री प्रभु कह्यो इसी मग आए । तव पुरि महिं उतरहिं अबि जाए ।
चढहुं तुरंगम पर चलि आगे । हम आवहिं तुझ पाखे लागे[4] ॥ ८ ॥
सुनि गिरपति[5] कहि चलौ पिछारी । हूजै प्रभु जी ! आप अगारी ।
रावर को डेरा करिवावौं । पुन मैं अपने सदन सिधावौं ॥ ९ ॥
इम कहि संग तुरंगम कीन । चलति पंथ कहि सुनति[6] प्रबीन ।
दिवस ढर्यो चालति मग जबै । सरिता तीर पहूंचे तबै ॥ १० ॥

---

1. सेवा कर के 2. सूचना मिली 3. स्थानों को 4. पीछे लग कर 5. पहाड़ी राजा 6. कहते सुनते जाते हैं

उतरे तट पर लैवे अमल[1]। धरे धरा पग जुग पग कमल।
दास आइ शुभ फरश विछावा। तवि सुखा[2] ततकाल बनावा ॥ ११ ॥
उतर्यो गिरपति चमूं समेत। श्री प्रभु निकट होइ सहि चेत[3]।
थान थान तट सिंह थिरे हैं। भंग[4] अफीमां खान करे हैं ॥ १२ ॥
दोनहुं मादिक गुर छकि लीने[5]। सौच शनान सभिनि तन कीने।
श्री प्रभु तवि दसतार[6] सजाई। ऊपर बंधि जिगा[7] दमकाई ॥ १३ ॥
झुपझूलति कलगी बर तुंग। लगे जवाहर जगमग रंग।
आइ खालसा लग्यो दिवात[8]। हेरति सरिता सुंदर पान ॥ १४ ॥
मंडीपति वैठ्यो प्रभु पास। तिस छिन बोले बाक प्रकाश।
मंद मंद चलि नीर गंभीर। सुँदर शोभति है जुग तीर ॥ १५ ॥
इक घट ले जल पर धरि आवहु। हतहु निशाना तुपक चलावहु।
हुकम खालसै पर इम भयो। एक सिंह घट ले तवि गयो ॥ १६ ॥
जित ते जल आवत तहिं धरिओ। सूधो घटा नीर पर तरिओ।
सकल सिंह लै ज्वालाबमणी[9]। छोरी गन गोरी अरिदमणी[10] ॥ १७ ॥
रहे चलाइ सिंह बहुतेरे। इक न लगी घट को तिस वेरे।
छोरि छोरि उर महिं बिसमाए। इह क्या भयो न जानी जाए ॥ १८ ॥
तबि सतिगुर कर तुपक उठाई। दे गिरपति को गिरा अलाई।
तूं प्रहार गोरी इस मांही। हतिबे बिना लछ[11] रहि नाहीं ॥ १९ ॥
हाथ बंदि गुर पग करि नमो। मंडीपति ले करि तिह समो।
प्रथम प्रहारी घट उलटयो। सूधे ते मूधा[12] करि दयो ॥ २० ॥
भए प्रसंन बिलोकि गुसाईं[13]। मंडीपति सों गिरा अलाई।
रिदे कामना जो तुव होई। जाचि लेहु हम पुरवहिं सोई ॥ २१ ॥
हत्यो निशाना हेरि प्रसंन। गोरी मारि सक्यो नहि अन।
सुनि गिरपति कर जोरि बताई। श्री प्रभु मुझ को चाह न काई ॥ २२ ॥
दूध पूति धन धाम घनेरे। क्रिपा आप की ते घर मेरे।
कहां जाचना करौं गुसाईं। प्रथम करी पूरन समुदाई ॥ २३ ॥
सुनि पुन भन्यो प्रभु कछु मांग। पूरन होइ देर नहिं लाग।
रिस प्रसंन नहि निफल हमारी। यांते दयो चहैं, उरधारी ॥ २४ ॥

---

1. नशा, मादक पदार्थ 2. भांग 3. सचेत 4. भांग 5. खा लिए 6. पगड़ी 7. सिर का आभूषण 8. सभा 9. बंदूकें 10. शत्रु का विनाश करने वाली 11. निशाना 12. सीधे के स्थान पर उलटा कर दिया 13. अभिप्राय गुरु गोबिंद सिंह

तबि मंडी पति हरख उचारा। बहु पुशतनि लग राज हमारा।
रहै इसी विधि जाचन करौं। इह इछा इक उर महिं धरौं ॥ २५ ॥
उपजहि[1] पंथ समूह तुमारे। करहि राज छीनहिं न्रिप सारे।
सुनि सतिगुर ततकाल उचारा। जो छीनहिंगो राज तुमारा ॥ २६ ॥
इस घट सम मूधा[2] घर होवै। जो छीनहि इत आइ न जोवै[3]।
सुनि भूपति कीनसि पग नमो। चढि तुरंग चाले तिह समो ॥ २७ ॥
सलिता[4] उलंघति मंडी आए। उतर्यो सिवर[5] आनि समुदाए।
सरब रीति की न्रिप किय सेवा। करे रिझावन श्री गुरदेवा ॥ २८ ॥
केतिक दिन प्रभु तहां टिकाए। सेवहि भूपति करि बहु भाए।
इक दिन हित अखेर[6] ले गयो। संग आप हुइ बन बिचर्यो ॥ २९ ॥
गढ़ कमलाह[7] निकट चलि गए। महां मवासी[8] थल दिखरए।
तिस के निकट सिवर करि दयो। इक गढ गुरु तहां रचि लयो ॥ ३० ॥
बैठें, बचन भयो गुर केरो। इस थल पंथ आइ जबि मेरो।
तबि कमलाह मवासी लै है। राज आपना इहां टिकै है ॥ ३१ ॥
सुनि मंडी पति कथा बखानी। सभि ने रह्यो मवास महांनी।
प्रथम सिकंदर इस थल आयो। चित महिं चाहति इसै छुटायो[9] ॥ ३२ ॥
करि बहु जतन गयो सो हारा। तिस ढिग अफलातून[10] उचारा।
जिस के सम बुधि किस की नांही। अदभुति मति अति थी तिस पाही ॥ ३३ ॥
तिस ने परबत की नस जानी[11]। टंक दई[12] तबि निखुट्यो[13] पानी।
अंतर न्रिप जप सुरपति केरा। भयो प्रसंन आइ तिस बेरा ॥ ३४ ॥
इक पथरी घन जुति करि दीन। सो संपट[14] महिं पावन कीन।
पैसा भर घन केर अकारा। जबि खैलहि तबि करि बिसतारा ॥ ३५ ॥
इस गिर सम हुइ करि बरसावै। अधिक नीर कीनसि मन भावै।
जब संपुट महिं पथरी धरै। लघ हुइ संपुट महिं घन, बरे ॥ ३६ ॥
जबि चाहहि तबि लेहि निकारी। बरखावै बरखा बर बारी।
हेरि संकदर एव मवास। त्याग दई गढ लैबे आस ॥ ३७ ॥
गयो अपर थल रह्यो मवास। अपर कौन लैबे करि आस।
सतिगुर कह्यो समा अस होइ। आनि खालसा तोरहि सोइ ॥ ३८ ॥

---

1. उत्पन्न हो 2. उलटा 3. दिखाई नहीं पड़ेगा 4. सीता 5. शिविर 6. शिकार 7. मंडी राज्य में स्थित एक दुर्ग का नाम 8. आश्रय देने वाले 9. छीनना चाहता था 10. यूनान का एक दर्शन वेत्ता 11. नाड़ी समझी, वास्तविक स्थिति को समझा 12. काट दी 13. समाप्त हो गया 14. डिब्बा

इम कहि बसे दुरग रचि तहां। नाक गुबिंदगढ तिस को कहा।
केतिक दिन प्रभु तहां गुज़ारे। वहुर प्रभू ह्वै करि असुवारे ॥ ३९ ॥
श्री अनंदपुर को चलि आए। संग खालसा चढि समुदाए।
कवी कहैं जो गुर बर दीनो। सो हम ने अविलोकन कीनो ॥ ४० ॥
जिस भूपति सिंह[1] मंडी लीनि। ततकाल तिस को फल दीन।
पित सुत दोनो म्रितु को पाइ। तिन को सदन दियो उलटाइ ॥ ४१ ॥
मूधा घरि[2] हम आंखन देखा। अपर सिंह न्रिप[3] थिर्यो विशेखा।
गुर को वाक निफल किम जाइ। गढ कमलाह खालसे पाइ ॥ ४२ ॥
गुर वच सफल जनावन कारन। इह प्रसंग भी कर्यो उचारन।
सुनि श्रोता रस पूरन कथा। भई जथा पावन कहि तथा ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे पंचम रुते 'मंडी प्रसंग' बरननं नाम अशटमों अंशु ॥ ८ ॥

1. जिस सिख राजा ने 2. उल्टा घर 3. दूसरा सिख

अंशु ६

दान देण प्रसंग

दोहरा

क्रम क्रम पंथ उलंघि करि श्री अनंदपुर आइ।
क्र्यो वास श्री सतिगुरु संगति आवै जाइ ॥ १ ॥

चौपई

अनिक अकोरनि[1] को अरपावै। मनौं कामना प्रभु ते पावै।
देश नितप्रति निखुटति नांही। मिलहिं सिख गन खालस मांही ॥ २ ॥
खंडे की पाहुल[2] को धारहिं। शसत्रनि को अभ्यास विचारहिं।
गुरबाणी कहु पड़हिं पड़ावहिं। गुर जस को नित सुनहिं सुनावहिं ॥ ३ ॥
सथिर केसगड पहि इक दिन मंहि। प्रेम सुरस निमगन थे मन मंहि।
संगत प्रति अस हुकम बखाना। नंदलाल जुति सुमति सुजाना ॥ ४ ॥
जो बूझनि चाहहि कुछ बात। सो इह कहहि भले बख्याति[3]।
ब्रिंद लिखारी[4] करे इकत्र। नित बाणी कउ लिखहिं पवित्र ॥ ५ ॥
जे पतिशाही चार लिखारी। कवी सकेले जिन मति भारी।
करहिं कबित सुनावहिं गुर को। उपजावहिं बहु आनंद उर को ॥ ६ ॥
प्रथम गुरु देवी बिदताई। पुन पाहुल[5] दे लई गुसाईं।
केस रखवनि कीन सभिनि को। कछ पहिराइ धर्यो शसत्रनि को ॥ ७ ॥
संगति चारहुं बरननि केरी। गुर ते मुख मोरे तिस बेरी।
बेमुख ह्वै है बाल बनावैं। नहिं दरस करिबे कहु आवैं ॥ ८ ॥
अबि सतिगुर उर शिरर[6] भयो है। करम अजोग विसाल कयो हैं।
सम के गरे जंजु उतराए[7]। झारन पर डारे पहिराए ॥ ९ ॥
सुनि इक दिन तबि गुरु उचारा। गुर की संगत झार उदारा[8]।
इस विधि के सिख संगति होए। बंधे जाति श्रिखला जोए[9] ॥ १० ॥

---

1. भेंटें 2. दोधारी कृपाण से तैयार किया गया अमृत 3. विशेष व्याख्या से बताएगा 4. लेखक, लिपिक 5. अमृत 6. हठ 7. यज्ञोपवीत उतरवा दिए 8. झगड़ों के समान अत्यधिक होगी 9. जातियों के बंधनों की श्रृंखला में

इक दिन कलगीधर किय दान । लोहा मांह सनेह[1] महान ।
सौ सौ मण[2] इह वसतू तीन । हुकम प्रभू ने इस बिधि कीन ॥ ११ ॥
बांट देहु उतम दिन गन को । गए दास ले मानि बचन को ।
वहिर दयो जबि, ले दिज जांहि । कहिं अरदासी[3] तबि गुर पाहि ॥ १२ ॥
दिजबर लेति नहीं, दे रहे । साचे पातशाहु बच कहै ।
क्यों नहिं लेति ? कहै को कहां[4] ? उर भै धरि अरदासी महां ॥ १३ ॥
सुनति अरज कर जोरि उचारी । तुम ही जानो गती तुमारी ।
साचे साहिब ! अवर न जानै । अंतरजामी नांहि न छानै ॥ १४ ॥
साहिब सिंह बैठ्यो तबि पासी । जान्यो डर्यौ कहै अरदासी ।
तिस ने कहियो सू दिजन उचारी । अत्रि गुर रहे नहिं अधिकारी ॥ १५ ॥
खत्री ह्वै करि लाहि जनेऊ । इम ही कहिं सोढी कुल जेऊ ।
भए गुरु कै बावर[5] अबै । इत्यादिक बोलति हैं सबै ॥ १६ ॥
सुनि कलगीधर वाक उचारे । करहु मांहु के भले सारे ।
कड़े अंगूठी मणके माला । लिहु करवाइ लोह ते जाला ॥ १७ ॥
श्यामसिंह सुनि करि ले गयो । तूरन[6] सकल करावति भयो ।
समां जबै बढिवे रहिरास । लग्यो दिवान[7] गुर के पास ॥ १८ ॥
तबि ले करि पहुंच्यो करिवाइ । धरि दिवान महिं गुर अगवाइ ।
देखि सभिनि को प्रभु तिस बारी । द्वै तुक को निज़ बदन उचारी ॥ १९ ॥

श्री मुख वाक

"दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ[8] ।
तूं जाणोई[9] समसै दे लैसहिं जिद कवाउ"[10] ॥ १ ॥

चौपई

इम पढिकै गुर हुकम उचारा । ब्रिच दिवान के बंटहु सारा ।
उठि तबि श्यामसिंह वरताए[11] । दोइ कड़े इक छाप सुहाए ॥ २० ॥
दोइ चक्र जंजीरी दीन । एक करद पंच भले लीन ।
सकल खालसे अंगीकारे । खुशी होइ उर गुरु उचारे ॥ २१ ॥

दोहरा

खालस गुर, गुर खालसा हुइ है महिद[12] महान ।
ताण निताणे नरन को होइ निथांवे थान[13] ॥ २२ ॥

---

1. तेल 2. मन 3. प्रार्थना करने वाला सेवक 4. क्या कहते हैं 5. पागल 6. तुरंत 7. सभा 8. प्रसार 9. तुम सब कुछ जानते हो 10. एक ही वाक्य से 11. बांटने लगा 12. महत्त्वपूर्ण 13. आश्रयहीनों का आश्रय बना

चौपई

जग के ब्रह्मण है प्रति ग्राही[1]। लेहिं कुदान बिचारैं नांही।
तिन गुर छोड़ा, सो गुर छोडे। गौड़ां ते हुइ गौड सु रोडे[2]॥ २३॥
सकल सनौडी भए पहूड़ी[3]। जो गुर निंदा करि हैं कूडी[4]।
होए कानकूबज सभि माथर। करहिं उठावन सिख इन साथर[5]॥ २४॥
देखि कोप गुर के उर बाढो। भा कर जोरि परोहत ठांढो।
बखशहु महाराज हम खरे। तिसहि देखि कहिं करुना ढरे॥ २५॥

वचन

सारसुत खालसे की जुगत[6]। रहो काहू भेश। खालसे के दरवेश।
तुमरा ह्वै बंस। संभल पुर बंस। ब्रिशन जसकुल तुमारी।
परजा की रखवारी। निहकलंक होवै। कुल सथान सोहै[7]॥ १॥

चौपई

सभा विखै सोढी जे अहैं। सो करि जोरि वेनती कहैं।
हमको बखशहु रिस निरवारा[8]। तब श्री मुख ते तिनहुं उचारा॥ २६॥

वचन

मेरी गुरिधाई[9]। जिनके मन भाई। वधहु[10] कुल तांहि का।
मम पंथ के नाहि का। मानति मुझ समान। वसीअहु मम धामी॥ २॥

चौपई

खत्री स्राप सुन्यों समुझाए। धरि करि त्रास गुरु ढिग आए।
हाथ जोरि सनमुख हुइ खरे। कहैं आनि हम शरणी परे॥ २७॥
पिखि तिन श्री मुख ते बच कह्यो। मेरो पंथ दयानिधि लह्यो।
तिस के रहो अधीन हमेशू। तो सुख पावहु सकल विशेशू॥ २८॥
रचहि बिरोध दुखी ह्वै सोइ। पुन पछुतावहि शरनी होइ।
सभि जग कार अनेक प्रकारी। लई खालसे सकल संभारी॥ २९॥

वचन

अंबीरी। वज़ीरी। फकीरी। ततबीरी[11]। ज़ुहीरी[12]।
अकलगीरी[13]। दान की दहीरी[14]। बंदूक तरगस गीरी[15]॥ ३॥

---

1. दान लेने वाले 2. गौड़ ब्राह्मणों के स्थानपर वे रोड़े बन गए 3. पूहड़, मूर्ख 4. झूठी 5. सेवक 6. युक्त रहेंगे 7. यहाँ कल्कि अवतार सम्बंधी भविष्य वाक्य है 8. निवारण करके 9. गुरु गद्दी 10. वृद्धि होगी 11. युक्ति 12. सहायता का बल 13. दानाई, बुद्धिमत्ता 14. दाता होना 15. शस्त्र धारण करना

चौपई

राज़ मंत्र की दात बडाई। उदेसिंह मोहर सिंह पाई।
धना सिंह मानसिंह जान। दानसिंह चड़तसिंह प्रमान ॥ ३० ॥
जिमीदारए गोत बिसाल। बखश्यो राज बनें महिपाला।
इम कहिते उठि मंदर बरे[1]। आइ अजीतो[2] हेनि करे ॥ ३१ ॥
हाथ जोरि पद पंकज लागी। भई दीन बोली वडभागी।
पातशाहु ! बेटे क्या करि हैं। सिख सरदारी ले बल धरि हैं ॥ ३२ ॥
हेरि अजीतो दिश मुसकाए। कह्यो भविखति गति समुझाए।
तुम सच्चा घरि अचल[3] संभालो। जहां कलेश नहिं किस कालो ॥ ३३ ॥
तोहि कुटंब भाग महिं भारी। दई अरश[4] की बर सरदारी।
जिस थल बनि है बास हमारा। तहां बास तुव जुति परवारा ॥ ३४ ॥
जेतिक पंथ खालसा भारी। सो सभि तुमरे आग्याकारी।
नित मानहि बंदन को ठानहि। गुर उपकार अपन पर जानहि ॥ ३५ ॥
अवनी पर जस करहि बिसाला। गुर को पुत्र खालसा जाला।
वडी घाल घाली[5] वथु[6] पाई। नित महिमा महि महिं बहु छाई ॥ ३६ ॥
इम कहि करि थिर भए गुसाईं[7]। लोचन मुंदि समाधि लगाई।
सवि, चेतन, आनंद, मझारी। निज सरूप महिं ब्रिति थिर धारी ॥ ३७ ॥
देखि कंत को मुख सभि भांति। भई अजीतो सीतल छाती।
मान्यों वचन जथा फुरमायो। हाथ ज़ोरि करि सीस निवायो ॥ ३८ ॥
गई आपने थान मझारी। नहिं किस के ढिग बहुर उचारी।
पति आशै लखि रिदै छपायो। रहि अनुसार तथा मन भायो ॥ ३९ ॥
इम सतिगुर के चरित्र बिसाले। सुनि श्रोता हति कलमल काजे[8]।
कवि संतोख सिंह करि बंदन। वंनन करौ चरन अरबिंदनि ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे पंचम रुते 'दान देण प्रसंग' बरननं नाम नौमें अंशु ॥ ९ ॥

1. दाखिल हुए 2. गुरु पत्नी 3. ब्रह्म लोक 4. सत्य खंड, ब्रह्मलोक 5. महान् साधना की 6. वस्तु 7. गुरु गोबिंद सिंह 8. कलियुग के पाप

अंशु १०

सिखन उपदेश प्रसंग

दोहरा

एक बार श्री सतिगुरु बैठे अपने भाइ[1] ।
कथा भई तहिं पांडवनि पंडत भारत आइ ।। १ ।।
तहि पांछे चरचा भई पर्यो न आवै कोइ[2] ।
क्या जानै क्या होइ तहि है वा नांही होइ ।। २ ।।
तवि बोले नंद लाल जी करनी कमल जमाल[3] ।
सिख सिदक गुरमुखि बडे तिन को भलो हवाल ।। ३ ।।
सेनापति कविता कहै गुर दरशन ते पार[4] ।
करे भली वा बुरी नित सतिगुर लेइ सवार ।। ४ ।।
उदेराइ[5] कवि इउं कहैं जैसी काहूं घाल ।
तैसा फल द्रुम होइगा जैसा बीज बिसाल ।। ५ ।।
रावल[6] बोले जीव को इशुर अंस निहार ।
नहिं दंड अपनी सुरति बिचरै लोभ पसार[7] ।। ६ ।।
अलू[8] बोलै देहि जइह पंच तंत छुटि जाही ।
बुध प्रान तक अहि जड चेतन आपे आहि ।। ७ ।।
मधू[9] बोलै जो सही चेतन परम सरूप ।
ना मारै मरता नहीं दूजा को न अनूप ।। ८ ।।
अगनि अगनि जिम सीत सीत घ्रित घ्रित पानी वार ।
भरमहार देखहु कवित दूजा कहां विचार ।। ९ ।।
चंदा[10] चंद चकोर ज्यों बाल माइ की रीति ।
त्यों गति ईश्वर जीव की जाणै प्रानी मीत ।। १० ।।

---

1. अपनी मौज में 2. मरा हुआ पुनः नहीं लौटता 3. जिनका कर्म रूपी कमल विकसित है 4. उसी समय 5. कवि का नाम 6. गुरु जी का एक दरबारी कवि 7. जो लोभ के विस्तृत संसार में विचरण करता है 8. कवि का नाम 9. एक कवि का नाम 10. कवि का नाम

वलू[1] विशनु फकीर की बोली सुनै न कोइ ।
त्यों ईश्वर अरु जीव की दुबिधा जीअ मैं होइ ॥ ११ ॥

लखा[2] लख मण बोझ जिह सोई मरता भार ।
हसते हलके लोगु सभि, पाप पुन इऊं धारि ॥ १२ ॥

ईश्वर[3] कहि साधहु सुनिहुं तीन काल इह नांहि ।
जो दीसै सो अगता नहि संसै यां मांहि ॥ १३ ॥

सुखीआ[4] सुपनै एक नर कलपै रूप अनेक ।
तैसे ईश्वर चित ते उपजै, निपज बिबेक ॥ १४ ॥

धरम सिंह[5] निज धरम है अपनो इशट प्रधान ।
आन धरम सकले निफल, यां मैं वेद प्रमान ॥ १५ ॥

त्याग मूल है धिआन सिह[6] बिखै भोग ते दूर ।
धयान धरै इह परम धन सतिगुर पद की धूर ॥ १६ ॥

माला सतिगुर जाप की माला सिंह[7] की जान ।
जाते को अभिआस है चतुर वरग को सान[8] ॥ १७ ॥

अनहद साधन जोग को समत ध्यान इक आंक[9] ।
सुनि संबाद इह सभिनि को सतिगुर उचरे बाक ॥ १८ ॥

तीन पुरख पर बेद बाक चौथे नहि अधिकार ।
मुकति मुमुखू विखयै की पामर चौथे धार ॥ १९ ॥

निज सरूप को समुझि कै मुकती छुटकाआन ।
मैंको, को संसार इह, मुमुखू खोजनि धान[10] ॥ २० ॥

विखई विधि सभि बेद करि त्यागे सकल निखेध ।
विखै भोग वांछा अधिक समझति सुनि करि भेद ॥ २१ ॥

विखै भोग नहि तजि सकै[11] विध करतो अलसाइ ।
नहि उपासना काम बिनु पामरु धूम विहाइ ॥ २२ ॥

लगै जाहि को भावना सूझी मरना आज ।
ग्यान समझ आपा लख्यो भेट्यो गुरु समाज ॥ २३ ।
जैसी जैसी वाशना तैसा चित तरंगु ।
जांते सकले सुखी ह्वै विखै ब्रह्मको रंगु ॥ २४ ॥

---

1. कवि का नाम 2. कवि का नाम 3. कवि का नाम 4. कवि का नाम 5. दरवारी कत्रि का नाम 6. ध्यान सिंह नामक कवि 7. एक दरबारी कवि 8. संयुक्त 9. निश्चित सिद्धान्त 10. अपने मूल स्थान को ढूंढता है 11. छोड़ नहीं सकता

पूरन गुरते पूरनो पुरन घटे न अंगु ।
मुकत जुगति बपुरी कहां ऐसा गूडा रंगु ।। २५ ।।

पवन तत सभि भिन जबि मरना कहिते मूढ़ ।
फिर संजोगी सुपन जिम गडी वाशना गूढ़ ।। २६ ।।

वाशन खै[1] मन नाश ह्वै नित अभ्यास विचार ।
इस ते कटीए जनम मरन अपर उपावन सार ।। २७ ।।

सभिउ पाव शम, दम, चरज, जोग, जग्य, तप, दान ।
सति संगत बिनु बिफल ह्वै बांझ सुवन सम मान । २८ ।।

सवैया

कंत[2] के कारन ब्याह रच्यो नर ब्रिंद को साजि जनेत मंगाई ।
देव को पूजन, बंध सु बंधन[3] और बुधि पंडत लीन बुलाई ।
शोक तजे शुभ भामनि गावति मंगल गीत सु वादिन छाई ।
तैसे ही साधन आतम कारन, नाहि लख्यो तिह कौन सहाई[4] ।। २९ ।।

दोहरा

भलो जनम भल कुल नगर भलो गुणी सो कव ।
समुझि आप जगजाल बच एकमेक लखि रब[5] ।। ३० ।।

ब्रह्मग्यान चरचा सदा होति निकटि गुरद्‌यालु ।
सुनैं सिख द्रिढ़ ध्यान जुति भव भय मिटहि समाल[6] ।। ३१ ।।

चौपई

इक दिन गुर समीप सुखदाई । गुणी पुरख चरचा सु चलाई ।
साचे पातशाहु इक संसा । दे उतर को करहु विध्वंसा[7] ।। ३२ ।।

इक नर मूरति भलो बनाइ । पूजति है नीके चित लाइ ।
इक ध्यावति है मुख मन मांही । द्वै महिं भलो कौन, को नांही ।। ३३ ।।

सुनि बोले तबि साहिब साचे । प्रेम बिना लिखी अति हैं काचे ।
मन का चउका सतका भाइ । मूरत नकली, असली नाइ[8] ।। ३४ ।।

करनी करम पूरब परतीत । धरति ध्यान जम की हति भीत[9] ।
प्रभु को सिमरन है सुख सार । क्या मूरति महिं लखहु असार ।। ३५ ।।

---

1. नष्ट होती है 2. कांत 3. गाना बांधना 4. उस का कौन सहायक हो सकता है 5. परमात्मा 6 स्मरण करने पर 7. नष्ट करो 8. नाम जाप ही वास्तविक कर्म है 9. भय का निवारण करो

स्वैया

ध्यान धरै जिह कारन साधक सो जग्यासहि[1] मोख पछानो।
कामना पुंज बिनाश करो हिय, सो तुम साधिक अमल सिरानो[2]।
मूरति सूरति बंध धरी जिन मूढ़न की परतीत बखानो[3]।
मेरो सुई[4] जन सिख सुशील है ध्यान अकाल के बीच समानो ॥ ३६ ॥

दोहरा

अधिक ध्यान हरिनाम नित, बाणी बिनै सुशील।
शसत्र सूरा दयावान तां सम और न शील ॥ ३७ ॥

एक समालै[5] नाम को एक करंता ध्यान।
एक करंता सिला पूज तीनो भगति पछानु ॥ ३८ ॥

नाम जपति है हरि भगत, ध्यान धरै सुख ग्यान।
सिला पूजते तामसी तीनो भगत सुजानि ॥ ३९ ॥

हमरो मति है भजन को ध्यान जुगत रहिरास[6]।
करनी गुर नानक करी वरती गुर कुल भास ॥ ४० ॥

कलजुग धरम हरि नाम अति जाहि भेजे भव पार।
सो करनी भरनी रहित सिखन करी समाज ॥ ४१ ॥

सकल मुलक को मेलीए दलि कै तुरकन पीर।
हमरो आवन भूम पर समझो सिख तनबीर ॥ ४२ ॥

बाणा केस, मुंडा तुरक[7], काछ हमारा बिरद।
तंबा[8] फारा बांग हन तुरक न छोरो गिरद[9] ॥ ४३ ॥

सूर खाइसो खालसा सूर मरदनी सिख[10]।
गुर का सिख सु मानीऐ सदा समालै भिख[11] ॥ ४४ ॥

---

1. जिज्ञासु 2. उसके लिए कर्म करने की आवश्यकता नहीं रही है 3. उनकी गणना मूर्खों में करो 4. वही 5. स्मरण करता है 6. गुप्त ढंग से आध्यात्मिक साधना करे 7. मुंडे हुए व्यक्ति को मुसलमान समझो 8. तहमत, लुंगी 9. उनके पास मत जाओ 10. जो शूकर को मार लेता है वह सिख है 11. सिख धर्म का भेख धारण करे

काल बुरा, अर बुरा सीत, बुरी रांड की प्रीत।
बुरी बडाई आपनी, बुरी अमानी[1] रीति ॥ ४५ ॥

बुरा करज, अति बुरी प्रीत, सभि सों भेद न देय।
या बिधि बरते जगत मैं इशट घटी[2] नहिं लेय ॥ ४६ ॥

बैद न कीजै मित्रता, बैरी करे न बैद।
जोतिश बहुता सुनै नहिं पूछि न ग्रैह की कैद[3] ॥ ४७ ॥

काइर सलाही भारजा[4] कारज फोका[5] होइ।
पूछे बिन कारज बुरा, बुरा पुछै नहिं गोइ[6] ॥ ४८ ॥

थोरा खाइ घर मैं सुखी लोभ तिआगे जोइ।
धन को, मन को, सुपन को अपनो करै न गोइ ॥ ४९ ॥

सलल सेवीऐ प्राति उठि, सीत मांझ तप आग।
जगै भूख भुगती भखै अंम्रित घर का साग ॥ ५० ॥

परशसतर, पद घोड़ का, पर नारी, पर गेह।
परधन, पर मन, देश पर इस को कहां सनेह ॥ ५१ ॥

धरनी, धेनु, सुवरन, असु[7], नारी, मंदर, पाठ।
इही दान सभि दान सिर अन सभिनि ते साठ[8] ॥ ५२ ॥

नाम जपत सभि पाठ ते अंन दान सभि दान।
सभि जूनी ते अधिक नर, कह्यो सिख सुग्यान[9] ॥ ५३ ॥

मेघ सरब को आसरा सभि को राखी छत्र[10]।
घर की राखी नारि ज्यों, अंत रख्य हरि मित्र ॥ ५४ ॥

बुरा मरण जीवन बुरा करणी बिन किहिं काम।
शसत्र हीन छत्री बुरा, अणपड़ दिज बेरान[11] ॥ ५५ ॥

विप्र शसत्रधारी बुरा, बुरा बिप्र मम सिंह।
वैश पढ़ा सभि ते बुरा छत्री देवी सिंह ॥ ५६ ॥

शूद्र पढ़े बेद वाक्य, त्यागी धारै नारि।
सिख जु, त्याग सिदक[12] को क्या तिन को इतबार[13] ॥ ५७ ॥

---

1. अस्वीकृत 2. कमी, त्रुटि 3. ग्रह का बंधन 4. स्त्री सलाहकार हो 5. व्यर्थ, निष्फल 6. पूछने पर अपनी सलाह न दें 7. घोड़ा 8. साठ गुना 9. सिख ज्ञानियों और देवताओं से भी श्रेष्ठ है 10. छत्रपति, राजा 11. व्यर्थ 12. निष्ठा, आस्था 13. विश्वास

मंत्र तंत्र का बुरा संग प्रेत सेवनी नारि।
बुरा वाल बुरा पीता रहीए आप संभार ।। ५८ ।।
बहुता खाणा, बात[1] बहु, बहुता अमल[2] सु त्याग।
मेरा हुइ सु मानि सच रहिनी रहि नित लाग ।। ५९ ।।
इस प्रकार प्रभु सतिगुरु सिखन दे उपदेश।
सुनहि आनि संगति मिलै दरसति हर्तहि कलेश ।। ६० ।।
ले पाहुल[3] गुर पास ते नवें सिंह धरि केस।
पहिरहि कछ आयुध धरैं सिमरैं नाम हमेश[4] ।। ६१ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते **'सिखन उपदेश प्रसंग'** बरननं नाम दशमों अंशु ।। १० ।।

1. बहुत बोलना 2. नशा 3. अमृत 4. सदा

अंशु ११
सिखन प्रसंग

दोहरा

एक सिख सतिगुरु को पूरब ते चलि आइ।
लाल सिंह तिस नाम है करि दरशन को चाइ ॥ १ ॥

चौपई

जथा शकति करि अरपि अकोर[1]। बंदन करी हाथ जुग जोरि।
बैठ्यो सभा मांहि गुर आगै। हुती सिपर[2] सिंह देखनि लागे ॥ २ ॥
गहि गहि हाथन बिखै सराहैं। आछी आछी सभिनि कहा है।
द्रिशटि चलाइ प्रभू तबि देखी। कह्यो समान अहै अवरेखी[3] ॥ ३ ॥
जो शुभ है तिस लग करि गोरी। पार न पैर फोरि करि मोरी।
इस महिं गुलका होवहि पार। कहां सराहै सिपर उदार ॥ ४ ॥
सुनिकै लाल सिंह नहिं जरी। पग्वति बोल्यो बच तिस धरी।
मोर सिपर को चरम कठन। गोरी कहां सकहि इस भान[4] ॥ ५ ॥
लगहि तड़क कै गिरहि सु पाछे। यांते बहु धन ते लई आछे।
सुनि कलगीधर पुन समझाइ। इह गोरी है बुरी बलाइ ॥ ६ ॥
तहां निवारन करिहै कौन। जहां लगति फोरति थल तौन[5]।
इस आगे नहिं किस की अटक। लागी चहै न पुन किम हटक ॥ ७ ॥
लाल सिंह बहुतिनि महिं चपि करि[6]। कहति भयो पुन चित महिं हठ धरि।
ज्वालाबमणी[7] क्यों न मंगावहु। परखि लेहु अबि कहि चलिवावहु ॥ ८ ॥
मोर सिपर को भिदै न गोरी। लगिकै गिरै, न करि है मोरी[8]।
लख्यो गुरु, सिख ने हट धारा। सोदर समा[9] भाखिकै टारा ॥ ९ ॥

---

1. भेंट 2. ढाल 3. सामान्य सी प्रतीत होती है 4. तोड़ सके 5. वही 6. खीज कर 7. बंदूक 8. सूराख 9. सायंकाल के समय के पाठ 'सोदर'

प्रात होति हम परखनि करैं। तुपक हतहिं हेरहिं किम अरै।
इम हुइ जिकर धरी पुन मौन। सुनि रहिरास[1] गए सभि भौन ॥ १० ॥
लाल सिंह डेरे महिं जाइ। समझ रिदे महिं बहु पछुताइ।
मूरखपनो कौन मैं लयो। गुर के सनमुख बोलति गयो ॥ ११ ॥
प्राति होत हति हैं जब गोरी। सिपर फोंरि करि डारैं मोरी[2]।
लयो विगार आपनो काजा। करतारपुरख[3] रखै मम लाजा ॥ १२ ॥
ल्याइ तिहावल[4] करि बहु गिनती[5]। मुख ते सिंहनि सों कहि विनती।
पंच सिंह को देउ अहारा। प्राति मोहि राखहु सचिआरा ॥ १३ ॥
खरे होइ अरदास[6] कराइ। सतिगुर रखै सिख वडिआई[7]।
निस महिं करि क्रित चोरी गुर ते। प्रभु अराधहि निशचा उर ते ॥ १४ ॥
प्राति भए गुर सभा लगाइ। ले करि सिपर गयो तिस थांइ।
तबि सतिगुर तहिं तुपक मंगाई। सिपर निशाना धार अगवाई ॥ १५ ॥
आलमसिंह संग प्रभु कह्यो। हतहु तुफंग निशानहुं लह्यो।
हुकम साथ उठि तुपक चलाई। गोरी नहिं लगी विच जाई ॥ १६ ॥
कसि बरूद सों[8] फेर प्रहारी। नांहिन लागी सिपर मझारी।
बिसम रह्यो—अबि क्या इहु भयो। निकट निशाना बच करि गयो ॥ १७ ॥
त्रिती बार तबि करिकै त्यारी। ताकि शिसत[9] को भले प्रहारी।
सों नहिं लगी हेरि प्रभु रिसे। तुपक गही अपने कर बिसे[10] ॥ १८ ॥
रिदे विचार्यो सतिगुर जबै। लालसिंह की क्रित लखि तबै।
सतिसंगत महिं कर्यो कराहू[11]। थिर अरदास[12] कराइसि ताहू ॥ १९ ॥
यांते लगति नहिं बिच[13] गोरी। लीन हिमाइत[14] मुझ ते चोरी।
रिस करि हाथ बदूक संभारी। लाल सिंह के साथ उचारी ॥ २० ॥
लिहु करि अबै हिमाइत और। देखि सिपर फोरौं इस ठौर।
रिस जुति सुनी लखी—अबि मारैं। नहिं बचहि गुलका[15] हुइ पारैं ॥ २१ ॥
दौर सिंह पाइन पर पर्यो। छिमहु नाथ में सठ[16] हठ धर्यो।
फोर देहु तुम अवनी सारी। सिपर बापुरी कहां अगारी ॥ २२ ॥
पिखि गुर भन्यो भयो दिढ अते[17]। रातोरात[18] करे गुरमते।
लए तिहावल[19] फिर्यो छकावति[20]। बहु सुखां सुखि[21] सिपर बचावति ॥ २३ ॥

---

1. सायंकाल का पाठ 2. सूराख बना देगी 3. परमात्मा 4. कड़ाह प्रसाद 5. वहुत सोच विचार कर 6. प्रार्थना 7. बड़ाई 8. बारूद भर कर 9. निशाना 10. हाथ में 11. कड़ाह प्रसाद 12. प्रार्थना 13. बीच में 14. सहायता 15. गोली 16. दुष्ट, शठ 17. अत्यधिक 18. रात्रि में ही 19. कड़ाह प्रसाद 20. खिलाना 21. मंतव्य की सिद्धि निमित्त

जेतिक जोर और लिहु लाइ। फोरौं सिपर न बचहि कदाइ[1]।
सुनि करि लाल सिंह कर जोरे। मेरी कहिन भयो प्रभु औरे॥ २४॥
रावरि कर ते छुटहि तुफंगा। अचल सुमेरु तुरत करि भंगा।
अबि ओरक[2] नहिं करहु गुसाईं। सेवक लाज रखनि बनि आई॥ २५॥
सुनिकै बिकस[3] परे गुरनाथ। कह्यो उठाइ सिपर लिहु हाथ।
चहियहि शसत्रनि केरि भरोसा। हतीयहि शत्रु जुध सरोसा[4]॥ २६॥
आयुध आछो ही चहि पास। जिस ते आप बचहि रिपु नाश।
सिपर उठाइ सिंह करि नमो। बैठे सकल सभा तिहि समो॥ २७॥
जंगल बिखै[5] कपूरा जाट। केतिक ग्रामन को पति राठ।
इक सौ इक हज़ार धन दैके। चंचल बली तुरंगम लैकै॥ २८॥
सो हजुर महिं दयो पुचाई। देख्यो बहु बल सों चपलाई[6]।
आपने चढिबे हेत बंधायो। दल शिंगार तिस नाम बतायो॥ २९॥
टहिल करावन हेत तबेले। बंध्यो सेवति दास सूहेले।
इक दिन सतिगुर चढे अखेर[7]। बन महिं बिचरे जित कित हेरि॥ ३०॥
फिरि करि अलि आए जिस काला। दखण नगर उजैन विसाला।
तहि ते कितिक साध चलि आए। सिख संगति मिलिकै समुदाए॥ ३१॥
दरशन करन कामना धारे। तिसही छिन सतिगुर निहारे।
म्रिग खग भार कितिक लै आए। चखी[8] बाज देति विगसाए॥ ३२॥
संगति महिं इक शाह[9] कुमारा। ग्रिहसती हुतो सहित सुत दारा।
रहित बैसनो जिस की अहै। मदरा मास तरकतो रहै[10]॥ ३३॥
जाति बाणीआ, गुर जबि देखै। कलप्यो रिदे क्रिआ अवरेखै।
इह कैसे गुर जिन हित आए? कोस हज़ारहुं मग उलंघाए॥ ३४॥
क्रिआ जिनहुं की महां कुढाली। हिंसा करति दया उर खाली।
पंछी हति करि बाज़ अचावैं। बन महिं बिचरति म्रिग गन घावैं॥ ३५॥
मन महिं गिनती गनै अनेक[11]। सभि जानी गुर जलधि बिबेक।
तबि सभि महिं गुर बाक सुनायो। प्रिथम चोर इन खग तन पायो॥ ३६॥
तबहि बाज राजे की देहि। इक दिन तसकर पकर्यो एह।
दुशट दमन तबि नाम हमारा। करति हुते तप विविध प्रकारा॥ ३७॥
वसतु चुराई ते नटि गयो[12]। राजे बहु बिधि बूझनि कयो।
नहिं मानी तबि सपथ दिवाई। कूरी[13] आन हमारी खाई॥ ३८॥

---

1. कभी भी 2. अंत 3. प्रसन्न हो गए 4. रोषयुक्त 5. मालवा क्षेत्र में 6. चंचल 7. शिकार 8. बाज़ को प्रातःकाल खिलाई जाने वाली मांस की टुकड़ी 9. सेठ 10. त्याग रखा था 11. अनेक प्रकार से विचार करता 12. मुनकर हो गया 13. झूठी

हुतो भूप सो सिख हमारा। नित प्रति करतो भाउ उदारा।
सपथ हमारी सुनिकै राऊ। करी प्रतीत राखि उर भाऊ॥ ३९॥
लाखहुं बरस वति करि गए। दोनहुं जनम धरति अबि भए।
झूठी सपथ करी को पाप। पग तन धरि के भोग्यते आप॥ ४०।
यांते सिख संगत सभि सुनीए। साची झूठी सपथ न भनीएं।
ए खग भोगति नरक उदार। बहुरो इस को हति उधार॥ ४१॥
अबि हम ने फल पाप भुगायो। अपर कलेशन ते छुटवायो।
कूरी सपथ करहि नर जोइ। जनम हज़ारहुं धरि करि सोइ॥ ४२॥
जनम करोरहुं भोगै नरक। सदा क्लेशनि मँहि रहि गरक।
सपथ खाइ सो सिख न मेरा। तसकर ह्वै लहि कशट बडेरा[1]॥ ४३॥

दोहरा

सपथ न करि गुर साच पर झूठा टिकै न पाइ।
साचा जोनी पर भुगै कूरे[2] कैसा थाइ॥ ४४॥
वदला देवै पाप का, मंदा करहु न कोइ।
हुइ है भागी पाप को जे गुर जामन होइ॥ ४५॥
करहु न गुर की सपथ कबि कैसहुं बनहि जरूर।
कबि साची भी नहिं करो नरक परै नर कूर॥ ४६॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते **'सिखन प्रसंग'** बरननं नाम इकादशमो अंशु॥ ११॥

---

1. बड़ा 2. झूठा

अंशु १२

सिखन प्रसंग

दोहरा

कहनि हुते गुर बारता तबि प्रसादि को थार।
सूपकार[1] ल्यायो तहां अनिक प्रकार अहार ॥ १ ॥

चौपई

सुत बनीए को सिख तहिं खरो। पिखि तांब रिदे मनोरथ करो।
नहिं गुर ढिग ते देहिं अहारा। अमिख[2] आदिक जाहि मझारा ॥ २ ॥
तिह मन की सतिगुर पछानी। सूपकार के संग बखानी।
सुध चौंके महिं भोजन जहां। इस सिख को अचावावहु तहां ॥ ३ ॥
सुनि बनीए के चित भई शांती। रिदे प्रतीत आइ भलिभांती।
भोजन अच्यो जाइ करि जबै। बीत्यो दिवस भई निस तबै ॥ ४ ॥
सुपति बिचारति गिनती नाना[3]। तरकति[4] गुर की क्रिया महाना।
प्रिथम पिता मेरो चलि आयो। किस प्रकार को गुरु बनायो ॥ ५ ॥
जीव घात आमिख को खावै। दया आदि गुन नहीं कमावै।
जैसे शासत्र बिखै उचारी। त्यागनि मद, हिंसा, पर नारी ॥ ६ ॥
जूप आदि के नेर न जावै। साध धरम ऐसे बनि आवै।
सो गुर बिखै न पयति कोई। संत करम ते बिप्रै सोई ॥ ७ ॥
दरब पंच सै मैं अबि आना। किस अरपौं मैं जोग न जाना।
रीति गुरु की गुर महिं नांही। हिंसा निरदयता जिन मांही ॥ ८ ॥
गमनौं होइ प्राति जिस बेरी। सिखी लेहुं बैशनो केरी।
मद आमिख को बरजन तहां। भली बारता पयति जहां ॥ ९ ॥
दए रजतपण[5] सौ मम बाप। इन को गुर करि सिख भा आप।
दरब पंच सै लै इह मोर। इक हज़ार मैं देतो और ॥ १० ॥

---

1. रसांइया 2. मांस 3. कई प्रकार का विचार करता हुआ 4. त्यागना
5. रुपये

कहां करौं पर गुरु न पायो। क्रिया धरम शुभ जांहि कमायो।
इत्यादिक ठानति दुचिताई। सरब सरबरी[1] तबहि बिताई ॥ ११ ॥
भई प्रभाति गुर ढिग गयो। मसतक टेकति पग पर भयो।
बैठ्यो समुख और समुदाई। द्वै बोतल प्रभु तबि मंगवाई ॥ १२ ॥
श्री मुख तै इम बाक अलायो। हरिगुपाल को भले सुनायो।
सभि सिखहु सुनीअहि चित लाई। मन के स्वाद जितिक समुदाई[2] ॥ १३ ॥
थिरे निकट सुनि बोले सोई। स्वाद सकल जिह्वा के होई।
स्वाद करम के कैचित कहैं। कैचित कहैं जीव के अहैं ॥ १४ ॥
भाखे को सुभाव को होइ। को कहि धरम[3] देहि को जोइ।
हरि गुपाल बनीआं सिख कहैं। स्वाद सिदक[4] जीवहि को अहै ॥ १५ ॥
तिस ते सुनि गुर कहि तिस बेरा। पिता बिश्वभर दास सु तेरा।
सुनि सिखा सिख सिदकी सोई। कहु तिस संग मिलिनि जबि होइ ॥ १६ ॥

दोहरा

श्री गुर हुकम जु भाव[5] का दयो सु तेरे पास।
तिस को लीनो हम अबै करहु न कैसे आस ॥ १७ ॥

चौपई

हरिगुपाल सुनि कान बखाना। प्रभु जी ! मैं कुछ समझ न जाना।
मैं भी सिख हौं रावर केरा। समुझावनि कीजै पुन फेरा ॥ १८ ॥
सुनि करि श्री मुख ते मुसकाए। तरक करति बोले समुझाए।
हमरी सिखी तैं कबि पाई। दास बैशनो का तुम भाई ॥ १९ ॥
क्रियावान[6] को खोजनि करिए। तिस उपदेश रिदे निज धरीए।
जो हमने अबि दीन सुने[7] हा। समझै तेरी पित ह्वै जेहा[8] ॥ २० ॥
हरिगुपाल बनीआ ततकाला। पद अरबिंदनि पर धरि भाला[9]।
श्री सतिगुर साचे पतिशाहू। रखहु रखहु निज चरननि माहूं ॥ २१ ॥
नहिं छोरहु मूरख मन मेरा। महिमा मैं न लखी तिस बेरा।
पीठ ठोकि करि सतिगुर कह्यो। हमरे हमरे हरख द्वैख नहिं रह्यो ॥ २२ ॥
अबि तुं बखश्यो उठ पग छोरि। सुनि बैठ्यो लखि अपनी खोर[10]।
पुन अनंदपुरि बसयो महीना। दरशन करति रह्यो सुख लीना ॥ २३ ॥
चलन लग्यो प्रसादि गुर दयो। आप खाउ घर दिहु जो लह्यो।
बखश्यो सरबलोह को कड़ा। तोले चार तोल को घड़ा ॥ २४ ॥

1. रात्रि 2. जितने ही हैं 3. शरीर का धर्म 4. निष्ठा, पूर्ण विश्वास 5. प्रेम पूर्ण वाक्य 6. कर्मकांडी 7, संदेश 8. जैसा 9. मस्तक 10. खोट, कमी

रिदे कामना जवि कवि होइ। इस को पूजहु पुरवहि सोइ।
लै बखशिश को सीस निवांइ। दरब पंजसै दयो चड़ाइ ।। २५ ।।
रुखसद[1] हुइ गुर ते चलि परियो। मारग मैं बिचार चित करियो।
खट सै[2] धन गुर को हम दयो। बखशिश लोह कड़ा हम लयो ।। २६ ।।
भाइ[3] लेन को कह्यो सुनेहा[4]। गमनति बनीआ सोचति एहा[5]।
पहुंच्यो जहां ग्राम चमकौर। चल्यो जात आगे तिस छोर ।। २७ ।।
ध्यान सिंह माजरीआ राही। मिल्यो बिलोकति बूझति तांही।
कित ते आयो सिखा कौन। कित को जात, कौन पुरि भौन ? ।। २८ ।।
समै अहार करन को जानि। अहै त्यार करि लीजै खान।
पुन जित बांछहु तहा पयानहु। अपन बारता सकल बखानहु ।। २९ ।।
हरि गुपाल सुनि बाक अलायो। गुर को सिख दरस हित आयो।
दखण महिं उजैनपुरि वासी। इती दूर ते आयो पासी[6] ।। ३० ।।
करि दरशन में दई अकोर[7]। बंदे गुरु चरन कर जोरि।
तऊ न खुशी भयो मन मेरो। क्रिया बिखै गुर आछ न हेरो ।। ३१ ।।
रुखसद[8] विखै नहिं कुछ दयो। सुनति ध्यान सिंह बूझति भयो।
कहहु कहां बच कह्यो गुसाई[9]। तुम को दयो सु देहु बताई ।। ३२ ।।
हरि गुपाल तबि कह्यो प्रसंग। ध्यान सिंह गुर सिख के संग।
प्रथम बाप मेरो सिख होयो। सौ धन दे करि दरशन जोयो ।। ३३ ।।
दयो पंचसै मैं अबि आनि। रह्यो मास लग दरशन ठानि।
मोर पिता ने दे उपदेश। इती दूर भेज्यो परदेश ।। ३४ ।।
सै दरब गुरु ने लीन। बचन भाउ[10] का इक अबि दीन।
गिनति गटी[11] इत्यादि बतावति। चल्यो जात घर को पछुतावति ।। ३५ ।।
सुनिकै ध्यानसिंह उर जाना। गुर शरधा ते हीन महाना।
सुनि सिख ! तूं हैं मम भाई। घर को चलि अहार लिहु खाई ।। ३६ ।।
मत पछुताव करहु मन मांही। इम कहि ले गमन्यो संग तांही।
आछी थांइ[12] बिठाइस जबै। सिख सिखणी[13] दोनहुं तबै ।। ३७ ।।
सेवा करी अहार अचायो। कहि करि अपने पर ठहिरायो।
सुपत जथा सुख राति बिताई[14]। भई प्रात चलिबो चित भाई ।। ३८ ।।

---

1. विदा 2. छः सौ 3. प्रेम 4. संदेश 5. यही 6. गुरु के पास 7. भेंट 8. विदा 9. गुरु जी ने 10. प्रेम का 11. विचार-योजना चिंता 12. स्थान 13. सिख की पत्नी 14. व्यतीत की

ध्यानि सिह भाख्यो तिस वेरी। सुनि सिख! जै मरज़ी[1] तेरी।
गुर को बचन हमै दे जाइ। खट सै धन अपनी लिहु पाइ॥ ३९॥

दोहरा

सिख सिख का सत वणज, सिख सिख का भाउ[2]।
दगा सिख मम ना करै पानी अन भुगाउ[3]॥ ४०॥
जे प्रतीत गुरवाक पर तो तूं घर ले जाइ।
जे भुखा[4] तूं दाम का लीजै अपनी पाइ॥ ४१॥

चौपई

वनीआ सिख बोल्यो हरखावति। धन की मन प्रतीत मुहि भावति।
वचन गुर के भावति नांही। देहु दरब लीजहि निज पाही[5]॥ ४२॥
सुनि कै ध्यान सिह ललचायो। जहि कहि ते धन ज्यों क्यों ल्यायो।
सदन विभूखन तरनी बाला[6]। गिरवी[7] सगरे धरि ततकाला॥ ४३॥
आन्यों खट सै[8] दरब बटोरि। हरि गुपाल को दे कर जोरि[9]।
पंच रजतपण दए सवाइ[10]। धन को ब्याज[11] लेहु सुख पाइ॥ ४४॥
वनीए ले धन मन हरिखायो। नहिं जानति जड सकल गवायो।
ध्यान सिह हार्यो उर जानै[12]। अपन आप को चतुर पछानै॥ ४५॥
कहां वचन मूरख ने लयो। सभि किछ वेचि दरब मुहि दयो।
गयो हुतो ज्यों पूरब मेरो[13]। इस ने सभि किछ कोन निबेरो॥ ४६॥
अबि मैं जीति लई सभि बाज़ी—। इक निस बस्यो और ह्वै राज़ी[14]।
भई प्राति ते पंथ पधारा। जानति ध्यान सिह को हारा॥ ४७॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते **'सिखन प्रसंग'** बरननं नाम दवादशमो अंशु॥ १२॥

---

1. इच्छा 2. प्रेम 3 खिलाए 4. भूखा, लोभी 5. अपने पास 6. पत्नी और पुत्री के 7. रहन रखे 8. छ: सौ 9. हाथ बांध कर, सत्कार सहित 10. पांच रुपये और अधिक दिए 11. सूद 12. वह ध्यान सिह को अपने हृदय में हारा हुआ समझने लगा 13. पहले व्यर्थ में गया हुआ धन 14. प्रसन्न होकर

अंशु १३

बिशंभर दास प्रसंग

दोहरा

पथ चल्यो तबि बानीआ हरिगुपाल जिस नाइ ।
गुर ते लयो कराह[1] कछु बंधि गांठ महिं जाइ ।। १ ।।
इक दिन खोल्यो देखि कै जो कराहु सो मास[2] ।
देखति ही लजा करी धरी बधि गठ तास ।। २ ।।
पिता आपणे पर खिझ्यो—भलो बतायो देव ।
मास खाइ विनसै धरम क्या कीना सत सेव ।। ३ ।।

चौपई

निज पुरि के मग गमन्यों गयो । एक नगर बड आवति भयो ।
तहां देखि कीनसि बिउहार । मुकता पंना[3] परखि उदार ।। ४ ।।
करि खरीद पुन आगे चाला । पुन पुरि पाली[4] आइ बिसाला ।
तिस महिं वेच दियो सो रतन । पायो लाभ महां करि जतन ।। ५ ।।
जमा कीन धन तीन हज़ारा । निज घरि पहुंच्यो करि ब्रिउहारा ।
पित सिऊं मिल्यो जाइ सुख पायो । दरस्यो मैं सतिगुरु बतायो ।। ६ ।।
सरब दरब कर गरब दिखायो । कर्‌यो बणज मैं मग महिं ल्यायो ।
निज सुत पिख्यो बिश्वंभरदास । बूझ्यो सभि ब्रितंत तिस पास ।। ७ ।।
किम सतिगुर ते ले पतियारा[5] ? कहां मेल भा कहां उचारा[6] ?
हरि गुपाल तबि खोल्यो पाले[7] । दयो पिता के हाथ संभाले ।। ८ ।।
ले जुति भाउ[8] बिश्वभर दासु । धरि सिर द्रिग पर हरख महां सु ।
स्वछ कराह[9] निहारनि कीना । सभि कुटंब को बंटि सु दीना ।। ९ ।।

---

1. कड़ाह प्रसाद 2. कड़ाह प्रसाद के स्थान पर मांस दिखाई पड़ा 3. मोती और हीरे 4. पाली नगर जो उज्जैन से दो तीन सौ मील उत्तर की ओर पड़ता है 5. परीक्षा 6. क्या वचन दिए 7. पल्ला 8. श्रद्धा सहित 9. कड़ाह प्रसाद

जवि वंट्यो अर खायो सबै । हरिगुपाल बिसमायो तबै ।
कह्यो अचंभा पित के संग । जिम गुर को अर पंथ प्रसंग ।। १० ।।
मग महिं पिख्यो मास ढिग जोइ । अबहिं कराहु पिख्यो मैं सोइ ।
वेच्यो गुर को वाक सुनायो । अधिक बटोरि दरब को ल्यायो ।। ११ ।।

दोहरा

पिता धुन्यो सिर यौं कह्यो सुत गुर पूरन साच ।
तो को भेजा लाभ हित तूं ले आयो काच ।। १२ ।।
भली न कीनी पित कह्यो देख्यो परचा[1] नयन ।
हिया मलिन परतीत नहिं, क्या करि हैं गुर बयन[2] ।। १३ ।।

चौपई

सुनि कुकरम तिह मात दुखारी । सुत क्यो भा गुर बच बिवहारी[3] ।
क्यों न प्रतीत भई उर तेरे । पूरन पुरख पिता तव हेरे ।। १४ ।।
हरि गुपाल सुनि मात पिता ते । भए छुभित चित बहु रिस राते ।
कहति भयो मैं खुशी न होयो । क्रिया बिखै गुर आछ न जोयो[4] ।। १५ ।।
वाक भाउ[5] को वेच्यो यां ते । खाट मैं दरब लियो सिख तांते ।
आवति रतन विहाझे खरे । पुन इक पुरि मैं वेचन करे ।। १६ ।।
तीन हज़ार नफे[6] जुति पाए । इम धन ते धन लियो वधाए[7] ।
त्वैं संहस्र ते सभि किछ सरे । कारज कौन बाक सो करे ।। १७ ।।
धन विन नर जिम सर जल हीन । पर बिन पंछी ह्वै दुख खीन ।
धन समेत नर विशनु समाना । चहैं सु करै प्रतख[8] प्रमाना ।। १८ ।।
सुनि कै भनति विश्वभरदास । हे सुत ! कूरो[9] धन ह्वै नाश ।
कहां दरब को उर हंकार । जिस को बिनसति लगै न बार[10] ।। १९ ।।
साचा सतिगुर, पूरन मेरा । तैं दुरास[11] धरि उर मैं हेरा ।
बुधि उतावली[12] है बहु तेरी । मति निंदा करि श्री प्रभु केरी ।। २० ।।
जे करि तूं मेरे संग चलैं । सरल रिदा करि गुर संग मिलैं ।
तौ बिश्राम पाइ तन तेरा । चार दिवस जीवन जग केरा ।। २१ ।।

---

1. परिचय, चमत्कार 2. वचन 3. गुरु वचनों को बेचने वाला 4. अच्छा रूप नहीं देखा 5. प्रेम का वाक्य 6. लाभ 7. बढ़ा लिया 8. प्रत्यक्ष 9. झूठा 10. देर नहीं लगती 11. दुराशा 12. बिना सोचे समझे शीघ्रता से कोई काम करने की प्रवृत्ति

धन को देखि कहां तूं भूला। खोयो सकल ब्याज[1] सन मूला।
इत्यादिक कहि कहि समुझायो। हरि गुपाल क्यों हुं न मन ल्यायो ।। २२ ।।
गुर शरधा हरि भाउ बिहीना। उपदेश न ठहिरावन कीना।
करि मौन पित जानी मन महिं। परहिं आपदा केतिक दिन महिं ।। २३ ।।
निज पतनी जुति बहु बिलखावे। कछू पुत्र पर वस न बसावे।
लग्यो बणज को हरि गोपाल। दिन प्रति होयहु दरव बिसाल ।। २४ ।।
दस हज़ार कर बणज कमाए। गरब्यो दीरघ उर हरखाए।
फूल गयो मूरख अभिमानी। गति ईश्वर की नांहिन जानी ।। २५ ।।
पुन धन छीन[2] होनि को लागा। तबि गुर दिश को मन अनुरागा।
पर्‌यो पिता के पग पर जाई। राखि राखि चलि गुर शरनाई[3] ।। २६ ।।
सभि कुटंब इकठो हुइ गयो। गुर दरशन हित चलिबो कियो।
क्रम क्रम पंथ उलंघन को करि। आए ध्यान सिंह माजरीए घर ।। २७ ।।
सहित कुटंब बिश्वंभर दास। मिल्यो भाउ धरि प्रेम प्रकाश।
सिवर[4] कराइ अहार अचाइव। पुन चरचा सतिगुरनि चलाइव ।। २८ ।।
ध्यान सिंह ! सुनीअहि चित लाई। हितकारी तूं मम गुरभाई।
सुत ते बचन भाइ का लीन। बिदत सदन पहुंच्यो तबि कीनि ।। २९ ।।
अबि मेरी कहु क्या हुइ गति ? सुत बिन शरधा जिस लघुमती[5]।
अबि तुव हाथ अहै निसतारा। करहु दीन पर बहु उपकारा ।। ३० ।।
सतिगुर जिम प्रसंन हुइ जावैं। सो उपाव तुझ ते बनि आवैं।
सुनति ध्यान सिंह तबहि बखाना। मैं भी तुम संग करौं पयाना ।। ३१ ।।
इम कहि सुपति बिती[6] जबि राती। भए त्यार गमने मग प्राती[7]।
चलि अनंदपुरि पहुंचे आइ। जहिं सोहै[8] गोबिंद सिंह राइ ।। ३२ ।।
सगरे धाइ परे गुर चरन। प्रभु बखशिंद[9] राखी अहि शरन।
अविलोकति कलग़ीधर हसे। महां क्रिपालू क्रिपा द्रिग रसे ।। ३३ ।।
कुशल प्रशन करि बैठे पास। अपर बात नहिं कीनि प्रकाश।
डेरा करि उतरे पुरि मांहि। नित दरशन बांछति चित चाहि ।। ३४ ।।
भोजन करति देग ते लैकै। बासुर तीन बितावन कैकै।
पुत्र समेत बिश्वंभर दास। आयो पछुतावति गुर पास ।। ३५ ।।

---

1. सूद 2. कम होने लगा 3. शरण में 4. शिविर, ठिकाना 5. छोटी बुद्धि, अर्थात् बुद्धिहीन 6. व्यतीत हुई 7. प्रात:काल 8. सुशोभित हैं 9. कृपालु

आगै खरो भयो कर बंदि। बखशहु क्रिपा ठानि बखशिद।
हे प्रभु पूरन ! बीरज भला[1]। ब्रिछ डाल सूधा नहिं चला ॥ ३६ ॥
हम मूरख खोटे मन कामी। क्रितघण किरपण लूण हरामी।
नाम गुलाम न करहिं गुलामी। तऊ क्रिपाल आप हहु सुआमी ॥ ३७ ॥
बिरद गरीब निवाज[2] तुमारा। नाम पतित पावन सुख सारा।
अधम उधारण सदा सुभाऊ। पिखहु दास को दोश न काऊ ॥ ३८ ॥
ब्रिछ डाल[3] सूधा अबि करीयहि। मो पर करुना द्रिशटि निहरीयहि।
सुनि श्री मुख पंकज बिकसाए[4]। पूरब वित्यो प्रसंग बताए ॥ ३६ ॥
श्री नानक सिघन संग मिलि करि। पहुंचे तोर पितामा के घर।
नानू नाम पिखे गुर आए। अनिक रीति करि सेव रिझाए ॥ ४० ॥
चलिबै त्यार भए जिह समे। पूछे कुछ संसै पग नमे[5]।
हस करि श्री नानक कहि बात। जबि तूं औरहि धरिहैं गात ॥ ४१ ॥
दसमा जामा होइ हमारा। तबि तुम बूझहु करहिं उचारा।
सो तूं इह तन प्रापति भयो। दसम सरीर इही हम भयो ॥ ४२ ॥
वचन दरब सो धर्यो अमान[6]। चहो सो प्यारे पूछ पछान।
तुम नानू सो हम गुर तेरे। प्रिथम मिलनि ते मेल बडेरे[7] ॥ ४३ ॥
मिलिवे भाणा[8] हुतो हमारा। नहिं दोश तव पुत्र मझारा।
सुनति विश्वंभर दास अचंभा। हाथ बंदि करि कहति अदंभा[9] ॥ ४४ ॥
ध्यान सिंह गत वणज सुचाला। भई संपदा सकल बिसाला।
बचन सिदक[10] को सुत मम दीना। अबि चाहति हौं सो मम लीना ॥ ४५ ॥
गुरु कह्यो हम दीनो तोहि। बिना तोट जिस ते धन होहि।
पावहु खरच्र करहु मन भाया। दिन प्रति सभि किछु वधैं सवाया[11] ॥ ४६ ॥
तऊ जानि जहिं नेत विसाले[12]। गरज गरज घन बहु जल डाले।
तूं प्रेमी इक सम ही जाना। तुव सुत शरधा हीन महाना ॥ ४७ ॥
सेव भावना तुव महिं जैसे। सतिगुर करहिं प्राति उठि तैसे।
इम कहि श्री गुर मंदर गए। खान पान करि निसा बिताए ॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते **'बिशंभर दास प्रसंग'** बरननं नाम त्रयोदशमों अंशु ॥ १३ ॥

---

1. मेरे पुत्र का बीज तो अच्छा था 2. गरीबों की देख रेख करने वाला 3. वृक्ष की शाखा 4. विकसित हुए, अपना मुख कुछ उचरने के लिए खोला 5. चरणों पर नमस्कार करके 6. तब से वचन रूप द्रव्य अमानत पड़ा है 7. बड़ा 8. भावना 9. दंभ रहित 10. श्रद्धा, निष्ठा 11. अधिक से अधिक बढ़ेगा 12. नियति प्रबल हो

अंशु १४

अरदास भेद प्रसंग

दोहरा

सतिगुर आए सभा महिं सिखनि श्रेय करंति।
सिख वणीआं तबि नमो करि थिर्यो निकटि भगवंत ।। १ ।।

चौपई

श्री मुख ते गुर म्रिदुल बखाने। कहु सिख इछा क्या ठाने।
हम पग को निरमिल सिख अहैं। दिश दखन महिं इक तूं रहैं।। २ ।।
दखण बिखै सिख हहिं थोरे। तुम समसर तहिं कोइ न औरे।
तबि कर जोरि बिश्वंभर दास। गुरु पास इम कर्यो प्रकाश ।। ३ ।।
प्रभु जी! दारिद भा घर मोरे। सकल पदारथ हति भए थोरे।
पूरब करहु संपदा भारी। पीछे पूछौं ममता टारी[1] ।। ४ ।।
सुनि करि श्री सतिगुर मुसकाए। वधहि[2] संपदा तथा बताए।
दरशन करि घर जैहो जबिहूं। करहु कराहु प्रशाद[3] सु तबिहूं।। ५ ।।
ऊपर छाद बसत्र को दीजै। पाठ अनंद तीन करि लीजै।
प्रथम पढहु जप बैठहु पास। सतिगुर हित दिहु पंच गिरास ।। ६ ।।
पंच सिख को करहु अचावन। तन मन ते ह्वै कै थित पावन[4]।
रहति अरदास[5] भेव जो जानै। क्या करि है तबि मंत्र महानै ।। ७ ।।

दोहरा

रहित अरदास जि जानीऐ क्या करि है तबि मंत।
जप प्रयोग अर सिधता सिख अरदास सिधि संत ।। ८ ।।
सिख वणज गुर धरम को सतिगुर देवो लाभ।
बोलि बुलावै संगती दे कराह की सांभ[6] ।। ९ ।।

---

1. ममता को दूर करने की बात 2. वृद्धि होगी 3. कड़ाह प्रसाद 4. स्थिर और पवित्र हो कर 5. प्रार्थना 6. कड़ाह प्रसाद का भाग प्रदान करे

सुनि बोल्यो सिख गुरु जी देश हमारा कठन।
सभि अरदास को भेव कहु ज्यों सिखनि सुख सदन ।। १० ।।
सतिगुर बोले सिख सुनि करो कड़ाह प्रशाद।
हुइ न आइ जे सिख ते गुड़ दाणा[1] फल आदि ।। ११ ।।
सुच पवित्र सभि दिवस मैं सत साध मुख जाप।
नाम प्रताप ते काज सरि सुण अरदास को लाप[2] ।। १२ ।।
धरमबीज आखंड व्रिधि सफल पूर इह तीन[3]।
कशट हरै, बेली फलै, गुर पूजक सिस सीन[4] ।। १३ ।।
अवहि कहौं अरदास मैं जिम श्रीमुख कहि दीन।
छंद बंद कुछ गिनत नहिं, सपति प्रथम की चीन ।। १४ ।।
आठै भोजै पीन[5]। भुग बसत्रनि महिं गुर सेस दीन[6] ।। १५ ।।
खुलावै बालक तुशट पुशट दसमी करि अरदास।
तीन गरभ परसूत की दरशन गुर घर गास[7] ।। १६ ।।
बैठनि मैं, परसादि मैं, पहिरन मैं, हुइ रोग।
खेलन मैं जीव मेलि करि, सथिर मैं[8], कहो अरोग ।। १७ ।।
पड़ते रसना चेत गुर, पाहुल[9] गुर घर मेल।
भई चतुर दस प्रथम की करि अरदास सुहेल[10] ।। १८ ।।

श्रीमुख वाक

पंद्रवीं। शसत्रधार सेल[11]। बागी[12] पीठ सिंह अचल मेल ।। १९ ।।
सोल्हवीं। म्रिग दुशट मेल[13]। हुइ शसत्र पेल ।। २० ।।
सतारवीं। तव प्रसादि। दुख दूर सुख आदि ।। २१ ।।
अठारवी। आगिआ का संजोग। वधैं[14] कायाँ घटै रोग ।। २२ ।।
उनीसवीं। मिले मंत[15]। सतिगुर महंत ।। २३ ।।
बीसवीं। होइ काज पूरे। सतिगुर हजूर ।। २४ ।।
इकीसवीं। गुर मेली दारी[16]। पाइए सुख प्रगासी ।। २५ ।।

1. दाना, अन्न 2. अरदास का कथन सुनो 3. धर्म भाव से रति के उपरान्त, बिना किसी कष्ट के गर्भ का विकास और सफलतापूर्वक उसकी सम्पन्नता —ये तीन प्रार्थनाएं हैं 4. शिशु की उत्पत्ति और उसके सुचारू विकास सम्बन्धी प्राथनाएं 5. स्तनों से अभिप्राय 6. गुरु ग्रंथ से उतरा हुआ वस्त्र 7. ग्यारहवीं प्रार्थना 8. सोते समय 9. अमृत पान करने के लिए 10 सुखदायक 11. नेजा, भाला, 12. घोड़ा 13. शेर आदि 14. वृद्धि हो 15. मंत्रणा 16. उत्तम पत्नी की प्राप्ति के लिए प्रार्थना

बाइसवीं । राखा मेरा सिदक[1] । पूरी गुर भगति ।। २६ ।।
तेईसवीं । चोरी का धंधा । गुरु राखे घर धंधा ।। २७ ।।
चौबीसवीं । राजा का मिलाप । सहाई गुर आप ।। २८ ।।
पंचीसवीं । सतिगुर पावै मेघ । दूर भिख बेमुख गही निमेख ।। २९ ।।
छबीसवीं । धरम का डंड । तनखी बखशीआ[2] दूखनि बिहंड ।। ३० ।।
सताईसवीं । मारग की भूल । बखशा गुरु चलूल ।। ३१ ।।
अठाईसवीं । चूक सभि जाइ । पितरनि सुख भाइ ।। ३२ ।।
उनतीसवीं । मन शेर बस । सतिगुर बखश ।। ३३ ।।

दोहरा

भूख प्यास सगरी टरी सतिगुर पूरी पाइ ।
तीस कही अरदास गुर सुनै सिख चित लाइ ।। ३४ ।।
सुनै सिख चरनी लगा गुरु कहै हुलसाइ[3] ।
जोड़ी अचल बर नारकी कहौं सिख समुझाइ ।। ३५ ।।
हीला नसि है[4], बहाल बनि है, अन पंथ पच जाइ ।
दुशट खपै, साया भगै, परै शहीदी धाइ[5] ।। ३६ ।।
चौती सोवै सुखाधीश इह अरदास करि लेहि ।
पैंती गुर पसारा करै वधै पसू की वेहि[6] ।। ३७ ।।
छती अरदास हुइ भावना अंत्र भाव फल देश[7] ।
सैती वेल बाग फलै अफल सफल वहिशेश[8] ।। ३८ ।।
अठतीसवीं । मनमुख उठै सनमुख झुकै नवें ग्रेहि आरंभ ।
प्रवेश उणताली अचल बास सिह वसत असंभ[9] ।। ३९ ।।
चालीसवीं । खेती पर । माता को अमान[10] ।
वाधै का असान ।। ४० ।।
इकताली । कूआ अखंड । गुर पूरन ब्रह्मंड ।। ४१ ।।
बिआली । वंडे रिधि ब्रिध । सतिगुर सभि सिध ।। ४२ ।।
तेताली । सतिगुर टेक राख । दिखावै सिदक[11] साख ।। ४३ ।।
चौताली । गुपति काम । अंतरजामी सफल जान ।। ४४ ।।
पैंताली । बाहर ईत ऊत धावै । जाहर प्रदेस जावै ।। ४५ ।।

---

1. निष्ठा, आस्था 2. अपने पर संगति से दंड की याचना करे 3. आनंदित होकर 4. दुःख नष्ट हो जाएगा 5. शहीदी सेनाएं सहायता के लिए आ जाएंगी 6. वृद्धि हो 7. अंतर देश, अंतःकरण 8. विशेष 9. बहुत अधिक 10. बीज अमानत रखा है 11. श्रद्धा, आस्था

छिआलवीं । घर फूट मैं । घर सभि विहाल ।
भगत प्रतिपाल ॥ ४६ ॥
सैंताली । खज़ाने आकरख[1] टेक । राखा तूंहीं एक ॥ ४७ ॥
अठताली । रोगु जुरै । सतिगुर शांत ।
सिख को अनागत[2] ॥ ४८ ॥
उणंजा । मिले विछुडे को । आवै गुर जालम ।
जानै सभि आलम ॥ ४९ ॥
पचास । शादी की । खुला गुर दरबार ।
इछा विहार[3] ॥ ५० ॥
इक पचास । बाज जंग । गुर बखशी असंग ॥ ५१ ॥
बवंजा । गुर दीना गणेश । सुफला काम मानै आदेश ॥ ५२ ॥
त्रिवंजा । चित थमण मैं । दरीआउ खभ प्रवाहु ।
मन असाहु[4] ॥ ५३ ॥
चुरंजा । असुनी कुमार । हिरदा सुख सार ॥ ५४ ॥
पचवंजा । विआह की क्रित मैं । आरंभ तव क्रिपाल ।
सिख को निहाल ॥ ५५ ॥
छिपंजा । बंधन में । अंधा हूआ विरोध ।
सिख को, सोध ॥ ५६ ॥
सतवंजा । मोहनी मैं । देखति खुशाल ।
सिख कारज संभाल ॥ ५७ ॥
अठवंजा । कीरतन की । गुरों का उचार ।
नाम फल सुण हों उधार ॥ ५८ ॥
उणहठ । बिधन हटावन मैं । शहीद सिंह उमंड ।
बिरोधी रुकै विहंड ॥ ५९ ॥
साठमीं । साध मिलिनि मैं । मन ह्वै अधीन ।
साध मिलै फल पीन[5] ॥ ६० ॥

दोहरा

साठ अरदासा मंगली[6] दीन विशंभर सिख ।
तोहि भाव जैसो फल्यो ऐसा सिख न दिख ॥ ६१ ॥

---

1. खोलते अथवा निकालते समय 2. न आने पाए 3. विवाह की आज्ञा 4. हमारा 5. बड़ा 6. कल्याणकारी

इकाहठमी । मन साल[1] होइ मेर । तुम राखो जग झेरु[2] ।। ६२ ।।
बाहठी । गुर पग बिस्राम । ठहिरे मन धिआन ।। ६३ ।।
तेहठी । तरण की तरणाइ । सतिगुर सहाइ ।। ६४ ।।
चोसठी । चाकर धारणै । मन मैंण । पूरा दिन रैंण ।। ६५ ।।
पैंसठी । अमान सचाइ । सतिगुर सहाइ ।। ६६ ।।
छेसठी । अमल सुखदाइ । तन सुख छाइ ।। ६७ ।।
सताहठी । मेठर[3] । गुरु करे सेठर[4] ।। ६८ ।।
अठाहठी । मोदीखने मैं । मुलक मालक । सुख का तालक ।। ६९ ।।
उणहत्री । दिवान[5] मैं । सिदक सावत[6] । भाव आगत[7] ।। ७० ।।
सत्री । धिआनमै । अगनि पूर । वपु मेरा पूर ।। ७१ ।।
इकत्री । लड़ाई मैं । सुख साठ । दिन रात आठ दिन मैं ।। ७२ ।।
बहत्री । पालकी पाल । सिख सदा सुखाल ।। ७३ ।।
तिहत्री । पाप पेल । तरक तेल, पीडन महिं ।। ७४ ।।
चुहत्री । वरन का आगम । अतुल जल रागम[8] ।। ७५ ।।
पछत्री । सिर मुकट की लाज । बिरद तब साज[9] ।। ७६ ।।
छिहत्री ।

दोहरा

सिख सखा, सुत सिख मम, सिख हमारा ध्यान ।
सेवै सिख निज रूप को सिख सुखां की खान ।। ७७ ।।
सुनो विशभर कौडी आनित गुरु हित पांच ।
धन होवे बखशा सकल सुख संपति रति रांच[10] ।। ७८ ।।
मेरी सिख्या जानिकै नर नारी हिय चेति ।
बाणी गुर सुरकी रहति, रहिनी रहो सुचेत ।। ७९ ।।
जाम नहाईए नाम धिआईए घर की कीजै कार ।
थोड़ा बोल, साचा रोल, इक मन, संकट हार ।। ८० ।।
मन का मारन सुगम है तन को बांधो आदि ।
सुध बिहारी काम[11] गुर दोख छोडीए बाद[12] ।। ८१ ।।

---

1. सीधा रहे 2. सांसारिक बखेड़ों से रक्षा करो 3. गरीब 5. श्रेष्ठ, अमीर 5. सभा 6. विश्वास कायम रहे 7. आदर 8. खेतियों में 9. बानक 10. अनुरक्त रहेगा 11. काम, कर्म 12. विवाद, झगड़ा

माल लाल अरु साल में खाल चाल वाचाल[1]।
सिदक[2] गुरु का ऐन ढिगु इही सिख का स्वाल ॥ ८२ ॥
ऐंडा[3] बैनडा[4] कन्या बुरा मनाइ।
वेमुख इन सभि ते बचहु फूल सपदा आइ ॥ ८३ ॥
नारी की मानै नहिं बाल न करना मीत।
डोलै नहिं मन जुध महि निरदुख करनी रीति ॥ ८४ ॥
सिख कीआ तबि हरि गुपाल चरन पाहुली[5] देय।
सतिगुर पूरन वाक सुनि सिख कहैं गा श्रेय[6] ॥ ८५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते **'अरदास भेद प्रसंग'** बरननं नाम चतुर-दशमो अंशु ॥ १४ ॥

---

1. निर्धनता की अवस्था में भी 2. आस्था 3. अहंकारी 4. दुःख देने वाला 5. अमृत पान कराया 6. कल्याण को प्राप्त करेगा

अंशु १५

रहित सिखो प्रसंग

दोहरा

हरि गुपाल सिख होइ करि पिता बिशंभरदास।
हाथ जोरि बूझन लग्यो श्री सतिगुर के पास ॥ १ ॥
जे नहि सिख बहाल हुइ, हुवै न सिदकी मेल।
कैसे पाहुल चरन[1] की सिख बतावहु खेल ? ॥ २ ॥
सतिगुर बोलि सुनाइओ सुनहु बिशभर रीति।
बच विश्वासी होवना मो पद राखहु प्रीति ॥ ३ ॥
दस अवतार गुर एक सम ज्यों जानैं जो मेर।
इक दशमो गुर ग्रंथ जी बाणी सतिगुर हेरि ॥ ४ ॥
धोइ रुमाल गुर ग्रंथ को पाहुल लेवै दोइ[2]।
सिदक समालै करि कडाह[3] बांटे अथिती लेइ ॥ ५ ॥
नाम धरै सतिगुर कहे तुक गिआरवें मान[4]।
पत[5] सिरे अखर धरे पुन पुन धरे सुजान ॥ ६ ॥
आस गुरु की मंत्र सिख काज संसारी कीन।
बोल गरीबी सिख करि कन्यां देइ मसकीन[6] ॥ ७ ॥
जग छोडे खडे[7] चरन पाहुल सिखां सार[8]।
पाहुल खंडे होइ जिस चरनन की नहिं धार ॥ ८ ॥
चरन पाहुलो खंड दे, सिख का नाता मान।
जहां न होवै तहिं करहु वै तो अपनी शान ॥ ९ ॥

---

1. ऐसी अवस्था में वह चरणांमृत किस प्रकार प्राप्त कर पाएगा 2. उस अमृत सदृश जल को जो स्वयं ले और दूसरों को दे 3. कड़ाह प्रसाद 4. ग्यारहवें गुरु, अर्थात् गुरु ग्रंथ की किसी पंक्ति के प्रथम अक्षर के आधार पर नामकरण करे 5. पृष्ठ 6. नम्रतापूर्वक 7. दोधारी कृपाण से तैयार किया अमृत 8. श्रेष्ठ

अधर दसन महि भेद नहिं भेद न पित अर सुवन[1] ।
त्यों सिख्या की एकता पाहुल भेद न तवन ॥ १० ॥
बडे लघु को भेद नहिं सिख्या लेवे सिख ।
जात को दूर धार ऐसे सिख सुलभ[2] ॥ ११ ॥
देवे लेवै प्रीत करि, कावैं करज दुवाइ ।
सिखी पद जो दग़ा करि ठौर न कतहूं पाइ ॥ १२ ॥
प्रीत नाम की, नाम जप नाम रमैं विच प्राण[3] ।
नाम उपदेसैं नाम सुख सखा साचला नाम ॥ १३ ॥
जीवन जाका धरम हित चलना गुर की रीति ।
भोजन जाका देह हित, रहे वैरानी मीत ॥ १४ ॥
ज्यों राही परदेश जाइ नित मारग की आस ।
तिऊं आतम हित आचरै रहीए चित उदास ॥ १५ ॥
सुनो सखा ! चित लाइकै चलन केरी प्रीत ।
मोहि तोहि सबि चलैंगे, चलन न कोई रीत ॥ १६ ॥
इह वैराग हित कहिन है नहि आवन नहिं जाइ ।
अपनी वाशन[4] आप महि सम सुपने मिलि जाइ ॥ १७ ॥
आदि अंत जिउ नींद महि आतम जानो भाइ ।
इही जोग की रीति है मैं तुहिं कही बनाइ ॥ १८ ॥
पंच अरदासा जोग की सोह हंसा हेत ।
कुंडली प्राण अपान को सतिगुर राखै चेत ॥ १९ ॥
अनहद उठै झुणकार जबि सतिगुर नाम चितार ।
गुह्य ध्यान गुर ग्यान मैं चौथी लीजै धार ॥ २० ॥
चार पदारथ हाथ गुर पंजवीं इह अरदास[5] ।
पूरन पूरी पाइगो छेवीं छदम[6] प्रकाश ॥ २१ ॥
सतवीं शरनी आइ पर सतिगुर पूरी पाइ ।
अठवीं माला फेरिए सास सास गुर ध्याइ ॥ २२ ॥
नावी नित गुर सेवने नरक निवारनि जोगु ।
दसमी दगध न होइये शांति मैं होगु ॥ २३ ॥
सिखा भरम न कीजीए बुधि राखीए ठौर ।
राखा सतिगुर सिख का ज्यों अचार हित और ॥ २४ ॥

1. पुत्र 2. सुलक्षणों वाले 3. प्राणों में नाम समा जाए 4. वासना 5. प्रार्थना 6. माया के छल कपट

बाली बिहाए गुर ढिग, तोरे गुरु निबाह।
बचन मान हित पद्रवीं दीना सतिगुर राह ॥ २५ ॥

मान देइ[1], कुल की रहैं, बनैं संबंधी संत।
व्रिंत निवे, थित शुध ग्रिह, इही खूब कल कंत[2] ॥ २६ ॥

तेवीं तरगस गुरु का चौवी कटारी सिध।
पचवीं पत सिउं गुरु थिर छवी गुर ढिग व्रिध[3] ॥ २७ ॥

इक सौ इक अरदास करि, सौ बरसां के दोख।
गुरु गवावे सिख के, पावै गुर पद मोख ॥ २८ ॥

सो अरदासीआ[4] जोग है तांके पूजै पाइ।
सिख सुखी सो होइगा सौ अरदास कराइ ॥ २९ ॥

सतिगुर हित दसवंध[5] देइ सिखी जुगत रहाइ।
न्हान दान सतिनाम महिं बरते बैस बिताइ ॥ ३० ॥

पर नारी धन छोडिकै निशचा गुर पद शरनि।
बाणी सतिगुर की पढ़ै काटै जनमा मरन ॥ ३१ ॥

चौपई

भदन नाम[6] सिख नहिं करै। मूए बंधु नहिं रोदन धरै।
बुरे करम ते आप बचाइ[7]। सभि कुटंभ शुभ मारग पाइ ॥ ३२ ॥
फल न वेचीए अन बपार[8]। व्रिण, अर चाम निवार।
करज न देई नीच चंडाल। वेशवा नारी रिन नहिं साल ॥ ३३ ॥
काहूं सिउ झगरा नहिं मांडो। रहत आपनी मूल न छांडो।
दुरजन सेती प्रीति न करो। हिरदे रोस काम परहरो ॥ ३४ ॥
चहुं मारग[9] महिं बेठे नांहि। टूटा बासन मंजी[10] लाहि[11]।
उरध स्वास, धोइ आधा पाइ[12]। दांतनि सो नख देति रिताई[13] ॥ ३५ ॥
खावति बेर हसै बकवाद। भोजन पीछे पेट जु थाप[14]।
रोवै हसै न कबि गुर आगे। लखमी नाश दरिद्री पागे[15] ॥ ३६ ॥

---

1. संसार में मान प्राप्त करवाओ 2. परमात्मा की सुंदरता है 3. बड़ाई 4. प्रार्थी 5. आय का दसवां भाग 6. जिस का नाम 'भदन' है 7. फल, अन्न आदि का व्यापार न करे 8. उत्तम 9. चौक, जहां से चार रास्ते निकलते हों 10. चारपाई 11. त्याग दो 12. आधे पैर धोना 13. दांतों से नाखुन काटने 14. पेट पर हाथ मारना 15. निर्धनता बढ़ेगी

मग मैं सयन, राह मैं भोज[1]। मल मूत्र नहिं मग मैं रोज[2]।
जांइ बिप्र को पाइ न छुवै। अन भुगत की निंद न भुवै[3] ॥ ३७ ॥
रहै इकांत वैठि कर ध्याना। हिरदै गनै न चिवति नाना।
पांवर[4], नारी पर की बुरी। राजदूत की मैत्री छुरी ॥ ३८ ॥
सकल राति जागति नहिं रहै। मैथुन बहुत बार नहिं गहै।
सिथल दूत अनभयासी सिख। काचा सूका त्यागे आमिख[5] ॥ ३९ ॥
पर की रमती नारी छोरि। जे अपन इंद्री है ठौर।
दंभ नासतकी मतसर[6] तजे। असूआ[7], निंदा, चित न भजे ॥ ४० ॥
खग तरुवरु जगवास निहारे। रैन दिना नित तत्त्व विचारै।
हिय विराग लखि जगत असारा[8]। देह प्राण गुण आतम न्यारा ॥ ४१ ॥
सुनि करि शसत्रन गरब गवावै। काहूं वसत सैं नेहु न लावै।
धीरज सों विवहार[9] घटावै। सहिज सहिज सभा सों छुटकावै ॥ ४२ ॥
दीसे कुधी[10] सुमति का बोधक। प्राण अपान की गति का सोधक।
बडी बेर भेजन नहिं खाइ। मान बडाई अपन न गाइ ॥ ४३ ॥
कुसत कुभोज स्वनारी शोभा। इन को तजै न धरि उर लोभा।
खल की, मल[11] की, नटकी पंगत[12]। पुत्र पढावै साधू संगति ॥ ४४ ॥
देव भवन महि चिर नहिं रहै। करनी[13] भेद न किहसों कहै।
ममता नित सभिनि को हेरै। न्याइ समै कुछ पछ[14] न टेरै ॥ ४५ ॥
भोगन की कीरति नहिं कीजै। खान पान महिं थित मन भीजे[15]।
सुधाहार, बिहार जु सूधा। करति रहै सिख घर धन रुधा[16] ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रथे पंचम रुते **'रहित सिखी प्रसंग'** बरननं नाम पंचदशमो अंशु ॥ १५ ॥

---

1. मार्ग में चलते समय खाना 2. रेज़, गिराना, फेंकना 3. करे 4. आचरणहीन व्यक्ति 5. मांस 6. ईर्ष्या 7. दोषारोपण करना 8. सारहीन 9. सांसारिक उत्तरदायित्व 10. कुबुद्धि 11. पहलवान 12. संगति 13. साधना 14. पक्ष 15. मन को प्रभु में स्थिर रखे 16. भरा रहे

अंशु १६

ध्यान सिंह को वरदान प्रसंग

दोहरा

ध्यान सिंह गुर शबद पर दीना सभि घरि वेचि।
पास ही बैठा पूछिआ कहु सिखा तूं चेत ॥ १ ॥
ध्यान सिंह गुर शबद सुनि बोला वचन रसाल।
मेरी सिखी द्रिड भई सतिगुर होइ क्रिपाल ॥ २ ॥
जां दिन सौदा हम किया सुनीए श्री प्रभु दयाल।
हरि गुपाल बेचति भयो मो को कियो निहाल ॥ ३ ॥

चौपई

सपति दिवस पीछे मैं गयो। खेत विखै हल जोरति भयो।
काढ्यो वाहति जवि सीआर। धन प्रापति मुझ कई हज़ार ॥ ४ ॥
हिरदे हरख्यो लीन खज़ाना। गुर महिमा पर मन ठहिराना।
घरि मैं आइ कराह[1] गुर दीना। भोजन सिख अतिथनि कीना ॥ ५ ॥
गुर दसौंध[2] गुर के घरि आना। गुर सनमुख धन कीन बिडाना।
तुमरी वसतु कहो सो करौ। खरचौं के किहदां धन धरौं ॥ ६ ॥
सौदा सतिगुर ते इह आयो। गुर दसौंध मैं आनि चढ़ायो।
मसतक टेकि गये मैं तबै। उचित करम मैं धन दिय सबै ॥ ७ ॥
भलो भयो इह सिख है सनमुख। शरनी तुमरी आयो गुरमुख।
सुनि सतिगुर श्री मुख ते कह्यो। ध्यान सिंह ! सिख सिदकी[3] लह्यो ॥ ८ ॥

दोहरा

चूक मूक[4] सिख, रूक दुख, बिशनु थान[5] तुहि लीन।
गिरा परा सहमुख खरा ना टूटा न हीन ॥ ९ ॥

---

1. कड़ाह प्रसाद की भेंट गुरु को अर्पित की 2. दसवां भाग 3. निष्ठावान 4. समाप्त हो गई है 5. बैकुंठ

सहज धारीआ आदि सिख गुर नानक की छाप।
खंडे पाहुल[1] हतन को तुरकनि सिंहनि थाप॥ १०॥

चौपई

सिदकी[2] सिख हद तूं मेरा। मो चरनन महिं प्रेम घनेरा।
मुसकावति मुखि बहुत उचारा। ध्यान सिंह तूं सिख हमारा॥ ११॥
जो चित इछा जाचहु प्यारे। सिदक वचन का प्रेम उदारे।
कलगीधर ते सुनि करि काना। हाथ जोरि करि सिख बखाना॥ १२॥
श्री प्रभु बहु चिंता मन मेरे। अबि तुम बखशहु अपने अगेरे।
अबहि सिख मुरझावति[3] ऐसे। पीछे सिदक होइ द्रिड कैसे? १३॥
इस हित जाचौं आप अगारे। दिह सिखनि को सिदक उदारे।
हस करि श्री मुख तबे बखाना। ध्यान सिंह सुनि आगल भाना[4]॥ १४॥
सिंध लसन मुकता अरू हीरा। कभी ठौर महिं मोल गहीरा।
त्यों पाछे सिख सिदकी मेरे। लाखहुं होवहिं वर्घहिं वधेरे॥ १५॥

दोहरा

हमरी तन की सूर गति असत राति हुइ जाइ।
घूक उठति जग महि लसति तिउं सिंहीं मम आइ॥ १६॥
सिदक दीआ विभुता[5] दई विद्या दीनी पूर।
रटति सिंह मम तेज वध्धि[6] बैठति मत हो मूर[7]॥ १७॥
सूर हूर[8] सभि कूर[9] तजि दुर दुर भू बन मांहि।
राज बाज गज साज सभि सिदक दीआ मम पाहि[10]॥ १८॥

चौपई

इस प्रकार कहि करि जग स्वामी। मंदर गमने अंतरजामी।
खान पान करि निसा गुजारी। आइ प्राति पुन सभा मझारी॥ १९॥
बैठे करिकै सैचि शनाना। आइ खालसा लग्यो दिवाना[11]।
माघ मास तबि सीत महाने। नर नारी बहु प्राति शनाने॥ २०॥
तबि सिखनि कर जोरि उचारा। माघ मास अरु कातिक सारा।
नर नारी गन प्राती जागहिं। सीत नीर सो मजन लागहिं॥ २१॥

---

1. दोधारी तलवार से तैयार किया अमृत 2. निष्ठावान् 3. विचलित हो जाते हैं 4. आगे भविष्य में होने वाले भाव 5. विभूति 6. बढ़ेगा 7. मूर्ख 8. तुच्छ, कायर 9. झूठे 10. मेरे पास से 11. सभा लगी

अपर मास के दिवसनि माही। जिस किस वेले लोकं नहाहीं।
सतिगुर पातिशाह इन बात। किम होवति बरनहु बख्यात ॥ २२ ॥
सुनि सिखनि के संसै बैन। श्री मुख ते बोले सुख ऐन।
सुनि भाई सभि जगत तमाशा। क्या इस की गति करहिं प्रकाशा ॥ २३ ॥

छंद

मतलब की क्या प्रीत चिर नहिं ठहिरदी[1]।
दूध देति जा धेनु देवता मिहर दी[2]।
पूजा देवे देव तो प्रीत है सहिर दी।
पुत्र जणंदी[3] नारि घर भीतर भांवदी[4]।
दान देव जजमान दिज गल कहि भांवदी।
मालक देवै खान ता चाकर चांदनी[5]।
हो मखटू[6] होवै पुरख नारि दिल मादनी[7]।
देखा देखी रीत सभिहिनि मन भांवदी।
सिखो! सच्ची सतिगुर प्रीत सदाही भावंदी।
भाई मेरा सिख सुनो सनि काम दी[8]।
नित जणु फल दान हेति सिदक[9] गुरधाम दी।
पहिर रात इशनाम सदा हीं भांवदी।
अश्वभेध गोभेध घटी घट जांवदी[10]।
तीजी[11] अगनहोत्र सटोम जोत मावदी।
स्वरन चांदी दूध तांबा देइ सामदी।
रिसम देख जल दान पाप हन जामदी।
होइ पवितर कायां न्हार दुपहिर जो।
तीजैं[12] मलेछ शनान चतरथे कहिर जो।
रात राखसी न्हाइ अरध[13] हुइ पातकी।
हिंसा सभि की पाप जत जाल न शातकी।
इही नेम की रीति नाइ भजि नाम को।
हुआ जगत ते पार सचु व्रत राम को।
होर[14] कपट की रीति जा आल जंजाल की।

1. स्थिर नहीं रहती 2. कृपा की 3. जन्म देने वाली 4. अच्छी लगती है 5. चांदनी के समान प्रकाशमान अथवा विकसित रहता है 6. काम न करने वाला व्यक्ति 7. उदासीन 8. की 9. निष्ठा के लिए 10. उत्तरोत्तर उस का प्रभाव और महत्त्व कम होता जाता है 11. तीसरी 12. तीसरे पहर में 13. आधी रात को 14. अन्य

अरघे[1] कूंडी जालनि नाम संभाल की।
सतिगुर होइ दिआल ब्रित[2] रहि सचु की।
सचा जगु बिउहार तजै सभि कचु की।
भाई जग तरना है सुगम तमाशा विशभ का[3]।
रहै क्रिपा महिं ध्यान, दास नहिं सिसन का[4]।
एहा[5] जगत वरतनी अलग वरतणा।
इही[6] जगत का मेल पर का दिल परचणा[7]।
जिउ चौपड़, शतरंज, गंजका,[8] रामचौक[9]।
लाभ नाहि कुछ रंच तिउं ही इह मन के शौक ॥ १ ॥

प्रेम बिना सभि फोके[10] काम। प्रेम करै सिमरै सति नाम।
मेल सकल को प्रेम महानो। प्रेम बिना सभि केरि निदानो[11] ॥ २४ ॥

स्वैया

जा तन प्रेम प्रवाह वहै सुख सो नर पावन बेद उचारै।
कंचन कसप[12] प्रेम बिना खय नरहरि सुत हित के वपु धारे।
सिध अठारहि जांहि अधीन हैं सहस्र भुजा[13] दिज सून[14] बिडारे।
बेद उचारतिं विश्वा पुत्र[15] ही प्रेम बिना सुरलोक सिधारे ॥ २५ ॥

पुलकति गात अनाहद बात सु भूल न आन कहु चेतहु प्रानी।
तेरेही भीतर आपज माखन[16] सैलके अंतर पावक[17] भानी।
एक ही भासति शांति को राखति त्यों तुहि अंतर चेतन मानी[18]।
जां लगु नेह की पाल टुटी नहिं, सति सरूप सनेहि समानी[19] ॥ २६ ॥

दोहरा

सति रूप परमातमा सभि घटि रह्यो बिआप[20]।
जिन जाना तांको अनंद और न जानति आप ॥ २७ ॥
सति, सूंनि, चेतन, अमल, स्वै प्रकाश, अबिनाशि।
आतम राम स्वछंद नित जानति पूरन आस ॥ २८ ॥

---

1. नाम मंत्र को पढ़ कर 2. कृत्ति 3. परमातमा का 4. इंद्रियों का 5. यही 6. यही 7. जी बहलाना 8. ताश 9. विशेष प्रकार का खेल 10. व्यर्थ 11. अंत होता है 12. हिरण्यकशिपु 13. सहस्त्रबाहु 14. जमदग्नि के पुत्र 15. रावन 16. दूध के अन्दर मक्खन 17. पत्थरों में अग्नि का प्रकाश 18. चैतन्य समाया हुआ है 19. समाहित होना 20. व्याप्त

ससे[1] स्त्रिग जिउं फगु दिखहि बंध्या सुत का भास।
गगन सुमन, बारु सिगध त्यो झूठा आभास ।। २९ ।।
सुनहु बिशभरदास सिख ! पूरहि आसा जान ?
जनम मरन तुहि मिटहिगो अशट जनम धरि आन ।। ३० ।।
तवि पूछ्यो सिख सोचके कहीए जामा मोर[2]।
सिखी मागौं गुरु ढिगु रहौं दास नित तोर ।। ३१ ।।
सतिनाम सिमरौ सदा सतिगुर कह्यो सुनाइ।
श्री नानक अंगद गुरु अमरदास सुख पांइ ।। ३२ ।।
राम दास अरजन गुरु हरिगुबिंद हरि राइ।
श्री सतिगुर हरि क्रिशन जुति तेग बहादर राइ ।। ३३ ।।
तिस को सुत दसवौं गुरु पंथ खालसा कीन।
अपर भविख्यत बारता प्रभु बताइ सु दीनि ।। ३४ ।।
दया सिंह ते आदि सिख दिज वर केशो दास।
धरहिं पथ महिं जनम पुन करि हैं राज प्रकाश ।। ३५ ।।

चौपई

जे जे गुर ढिग घालहिं घाला[3]। ते सभि जनम धरहि तिस काला।
अवितरिहै तवि भगत अठारा। छीनैं राज सभिनि ते सारा ।। ३६ ।।
आइ मौन केतिक दिन वधैं। पूरब देश अधिक ही सधैं।
तेज कितिक सिंहनि पर छावै। अरहिं पंथ सो पुन घटि जावै ।। ३७ ।।
परबत मैं प्रवेश हुइ जाइ। लेहि खालसा दरब दवाइ।
जे अबि हमरे शत्रु पहारी। सैलानि ते जर देहि उखारी[4] ।। ३८ ।।
कांगड़ेश[5] भूपति को नंद। करैं निकासन सिंह बिलंद[6]।
सो गंगा बिच[7] त्यागै प्रान। शिव को सेवक दानि महान ।। ३९ ।।
पुन सिंहन मैं सो जनमें है। कांशी राज करै बिदते है।
कहि कवि श्रोता सुनहु अशेखा। मरयो गंग पर हमहुं परेखा[8] ।। ४० ।।

दोहरा

नाम ताहिं अनरुध ससी[9] अबि त्यागी तिन देह।
होहि भविखत मैं जनम कांशी जै करि लेहि ।। ४१ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे **'ध्यान सिंह को वरदान'** प्रसंग बरननं नाम खोडसमो अंशु ।। १६ ।।

---

1. खरगोश 2. मेरा आगामी जन्म बताइए 3. सेवा साधन करते हैं 4. इनकी जड़ उखाड़ देना 5. कांगड़ा के राजा का 6, बड़े 7. में, बीच 8. हमने स्वयं देखा है 9. अनरुध चंद

अंशु १७

श्राध बिधि निरनो प्रसंग

दोहरा

राज करैगा खालसा रहै मवास[1] न कोइ।
करे नौकरी मोहि[2] जो जीवा पावै सोइ॥ १॥

चौपई

तुरक डोगरे गिलजे[3] व्रिंद। सभि चाकर हुई पंथ बिलंद[4]।
जंबुक[5] नगर भूप ह्वै भले। राज करिहगे सिंहनि मिले॥ २॥
तीन हज़ार कोस के अंदर। फिरैं खालसा पावै दुंदर[6]।
किस हूं देश दाम ले भेट। काहूं ल्यावहि राज समेट॥ ३॥
सुनहु बिशभर दास सुजान। एव बिचारहु अनंद महान।
पहुंचहु निज घर तूं मम सिख। होवैगी सुधि[7] भूत भविख॥ ४॥
कारज सकल सपूरन होवैं। दूख अरु दारिद घर ते खोवैं।
इत्यादिक कहि सतिगुर पूरे। उठै सभा ते दे बर रूरे॥ ५॥
सरब आपने डेरे गए। मोहि संग इम भाखति भए।
सुनि गुरबखश सिंह इह[8] बात। रात बितीतहि हुइ जबि प्राति॥ ६॥
गमनहु सिख उजैनी पास। आनहु संग बिशभर दास।
साहिब सिंह आदि सुनि श्रोते। मंदर महि गुर प्रविशन होते॥ ७॥
सुनि करि मैं बंदन करि मुरियो। निज थल खान पान को करियो।
सुपत जथा सुख राति बिताई। जाग जति प्रभाति हुइ आइ॥ ८॥
चार घटी जबि दिनहूं चरियों। सिख उजैनी ल्यावन करियो।
सभि त्रिय ले अरु सुत को साथ। पहुंच्यो जहिं बैठे गुर नाथ॥ ९॥

---

1. आकी, स्वतंत्र 2. मेरी 3. पठानों की एक जाति 4. महान्
5. जम्मू 6. शोर, कोलाहल 7. बोध, ज्ञान (हो जाएगा) 8. यह

भेट रजतपण शाहजहानी[1]। धरे हज़ार, बंदनां ठानी।
सुत जुति ले गुर खुशी घनेरी। रुखसद[2] होनि लग्यो 'तिस वेरी॥ १० ॥
तिस की जुवती अंतर गई। गुर महिला को दरसति भई।
दरब उपाइन धरि करि आगी। शनधा जुति पद पंकज लागी॥ ११ ॥
चलनि समैं सतिगुर ढिगु आई। नाम मदन वत्ती हरखाई।
चरनि कमल पर निज सिर धर्‍यो। अश्रनि को जल ऊपर पर्‍यो॥ १२ ॥
सतिगुर रहे हटाइ पिछेरे। तउ धर्‍यो सिर होइ अगेरे।
पग पर अंश्रु पिखि हस कह्यो। क्यों तुव चिंता महिं वह्यो॥ १३ ॥
गुर घर देति लेति नहिं जोवै। तुव सुत दास हमारो होवै।
अपर जनम महिं इम बन जाइ। अबि दीनो तुहि निशचै पाइ॥ १४ ॥
साबत होवा[3] भले पचान। गोरख[4] जानै के तूं जान।
सुनति मदनवंती तबि कह्यो। मोह न होइ इही[5] मैं चह्यो॥ १५ ॥
गुरु कहै—हुशनाक[6] ऊदारी। तूं गुरबखश सिंह दी नारी[7]।
पुन पछुतावति सुत को रहे। अगले जनम बिखै नहिं लहैं॥ १६ ॥
जामा जानहुं त्रीमतु केरा[8] केरा। अहैं सुभाव पुरख को तेरा।
सुनति मदनवंती हरिखानी। समुझि वारता मुख मुसकानी॥ १७ ॥
हुती मोदनी दूसरि दारा। पहुंचि निकट पग पर सिर धारा।
तबि सतिगुर तुशन[9] हुइ रहे। सिर को धुन्यों बाक नहिं कहे॥ १८ ॥
युति परिवार बिसंभर दास। रुखसद[10] ह्वै करि सतिगुर पास।
मसतक टेकति कीन पयाना। दखण दिश उजैन पुरि जाना॥ १९ ॥
सतिगुर हसे तिनहुं के पाछे। मैं ढिग खरी खुशी पिखि आछे।
बूझनि करसि भयो तिस बेरा। कहां हुकम है रावर केरा ?॥ २० ॥
सुनि कलगीधर बाक उचारा। नाम मदनवंती जो दारा।
जबि गुर बखशसिंह तन तेरा[11]। तुव सिखणी[12] होवे तिस बेरा॥ २१ ॥
हुइ दोनो ढिग राज बिसाला। तहिंल करहु जहा लग ज्वाला।
जग महिं जीवण हुइ तुव थोरा। सिध मनोरथ बनि है तोरा॥ २२ ॥
सुनहुं नींगरा[13], गयो हकारनि। तहां लुभायो करी निहारनि।
मोकहु नहिं बखशी गुर सह। कर्‍यो मनोरथ देखति देह॥ २३ ॥

---

1. शाहजहानी रुपये भेंट किए 2. विदा 3. दृढ़ रहेगा 4. परमात्मा 5. यही 6. सूझवान 7. की पत्नी है 8. स्त्री 9. चुप, मौन 10. विदा 11. तुम्हारा दूसरा जन्म होगा 12. सिख की पत्नी 13. बच्चा

भूंग्यो कहां ब्रितांकति ऐसे[1]। अब्रि हम ने बखशी तुहि तैसे।
दुती सिखणी[2] रज जुति ओही। हमरे चरन संग सो छोही॥ २४॥
यांते हम नहिं आदर दीना। बाक न कछू उचारनि कीना।
मुसली वेस्या[3] बनि है सोइ। नेत प्रमेशुर की इम होइ॥ २५॥
हमरो सिदक[4] भाव करि आइ। इसकी फल पैहै वडिआई[5]।
केशो दास जबै तन धरे। रण सिंह[6] नाम राज वड करे॥ २६॥
अंगीकार करैगो सोइ। मरि करि पुन हिंदवाणी[7] होइ।
राजपूतणी जनमैं फेर। अब्रि बखशी केशो को हेरि॥ २७॥
इस प्रकार कहि करि गुर स्वामी। भूत भविखति अंतरजामी।
पुन मुझ को वरज्यो बस करहु। अपर न बूझहु तूशानि[8] धरहु॥ २८॥
और ख्याल को वेला भयो। इम सतिगुर ते मैं सुनि लयो।
धरि मोन नहिं कछु उचारा। केतिक चिर थिर सभा मझारा॥ २९॥
उठि करि पुन मंदर को गए। तिस दिन वहिर न आवति भए।
रहे आपने सदन मझारा। मन भावति सो अच्यो जिस अहारा॥ ३०॥
कहि कवि हम सो पिख्यो ब्रितांत। सुन्यो गुरबखशसिंह जिस भांत।
सदा कुइर भई तिस की नारी। सो हम ने निज नयन निहारी॥ ३१॥
भई दूसरी वेस्या तबै। ब्याही रण सिंह जानी सबै।
गुर के वाक सुफल हुइ गए। सो त्रिय हेरी तन धरि लए॥ ३२॥
इक दिन करिवावनि हित श्राधा। करे इकठे पंडित पांधा।
धरम शांति को भयो समाजा। करति अनेक मिले नर काजा॥ ३३॥
सतिगुर दीनसि दान महाना। सिहजा[9] चारू बिछोने नाना।
ज़ेवर ब्रिंद दए मरदाने। जरे जवाहर जवर ज़नाने॥ ३४॥
कंचन ज़ीन तुरंग शिंगारे। उतम धेनु समाज सवारे।
दिज धरमग्य बिसाल उचारी। पंडत जे जानति बिधि सारी॥ ३५॥
बैठे बहुत गुरु के पास। करति परसपर बाद[10] प्रकाश।
नंद राम पंडत बुधिवंता। सभि मैं कह्यो श्राप बिरंतता॥ ३६॥

---

1. इस प्रकार 2. दूसरी सिख पत्नी 3. मुसलमान वेश्या 4. निष्ठा, आस्था 5. वड़ाई 6. रणजीत सिंह 7. हिंदू स्त्री 8. मौन 9. सेज, शय्या 10. चर्चा

पित्रनि को नहिं पहुंचति कवै। जिम जग विखै करति नर सवै।
नंदराम के बाक सुने जबि। श्री मुख ते सभि बिखै कह्यो तबि ॥ ३७ ॥
मिलिकै धरम शासत्रनि आदि। निरनै कारन कर्यो संबाद।
गुर आइसु[1] ते बोलति भए। शासत्रनि के प्रमान बहु दए ॥ ३८ ॥
तबि मल मास[2] निखेधै कयो। शुध पछ कौ निश्चै भयो।
तबै सिख ढिग सुनते रहे। पुन[3] सभि दिज सों सतिगुर कहे ॥ ३९ ॥
जिम निरवाद भयो संबाद। करहु बिदित आछी बिधि आदि।
जिस ते पित्रन को पहुंचति। सो अबि निरनै करहु मतंत ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते **'श्राध बिधि निरनो प्रसंग'** बरननं नाम सपतदशमों अंशु ॥ १७ ॥

1. आज्ञा 2. तिथियां पूरी करने के लिए बढ़ाया गया महीना 3. पुन:, फिर

अंशु १७

श्री जीतो जी प्रसंग

दोहरा

श्री मुख ते जबि इम कह्यो सुनति बिप्र ।
बोले इक मत होइ के गुर समीप ते छिप्र[1] ।। १ ।।

चौपई

बिप्र निमंत्रणि निस को करे। श्राध बिधी दोपहिरे ढरे।
उचित बिप्र को निज घर आनैं। जो प्रतिग्राही, ले न कुदानैं[2] ।। २ ।।
मूरति छाया दान न लेहि। अग हीन कुल हीन न जोइ।
महां दान को होइ न ग्राही। तुला दान पर त्रिय नहिं चाही ।। ३ ।।
पातक सूतक तुला न दान। त्यागहि जुवती भोगी आन[3]।
चोर न छलीआ दूत न होइ। छत्री करम न धारहि जोइ ।। ४ ।।
तकरी धरैं न कुद्रव[4] भोगी। ग्रहनी दान को लइ न रोगी।
अज, गज, तुरंत दान ले नांही। अंत अवस्था दान न चाही ।। ५ ।।
गनक[5] न वेद न शस्त्र धारी। सुच बिहीन रहि जन्जु[6] उतारी।
सकल अंन भुगता ते हीना। करम भ्रिशटि ब्रहमग्यान न चीना ।। ६ ।।
बहुत पान[7] ग्रहणी नहिं होइ। लाग ब्याह को लेय म जोइ।
करिकैं जाप मोल ते देय न। रंडा[8] मुंडा[9] मुंडति जे न ।। ७ ।।
जटल[10] श्राध को होइ न त्यागी। सन्यासी अनपढति बिरागी।
छत्री वैंस शूद्र की नारी। बकबादी होइ न बिभचारी ।। ८ ।।
धरमधुजी न अमल[11] को खावैं। नीलो रकत[12] न वसत्र हंढावे।
पुरि को पांधा प्रोहित होइ न। नीच मलेछ दान ले जोइ न ।। ९ ।।

---

1. पुन:, फिर 2. शीघ्र कुदान, घटिया दान 3. पर-नारी गामी ब्राह्मण 4. मांस, शराब आदि 5. ज्योतिषी 6 जनेऊ 7. बहुत विवाह भी न किए हों 8. विधुर 9. लड़का 10. जटाधारी 11 नशे, मादक पदार्थ 12. लाल रंग के

खेती करै न गाडी बाहे। इत्यादिक दोश न जिस मांहे।
उचित श्राध के दिजबर सोइ। इन दोशनि ते न्योते[1] जोइ ॥ १० ॥
तिन को पित्र जाति है खाली। दे करि श्राध आपदा घाली।
सकल सभा सुनि जबि इम लह्यो। श्री मुख ते कलगीधर कह्यो ॥ ११ ॥
सुनहु सकल नर जु शासत्र बिधि है। सो बहु दूर, होति नहिं सिधि है।
बिरला ही प्रापत को अहै। प्रापति नहिं कहां को लहै ॥ १२ ॥
तीरथ पर शराध करिवावै। किधौं अथित के मुख महिं पावै।
इन द्वै बिधि ह्वै पितर उधारा। करैं श्राध इम अंगीकारा ॥ १३ ॥
पंडत ब्रिद बहुर गुर बूझे। सूतक ग्रहण बिधी जिन सूझे ?
शासत्रनि बिखै लिखे किम कहो ? निरनै कर्‍यो मुनीगन लहो ॥ १४ ॥
पंडत हिमाद्री[2] देवराज तहिं। सुनि सतिगुर ते आशै को लहि।
एक मास की कथा पुराण। धरम शासत्र की करि बखान ॥ १५ ॥
मैं भी सुणी बिसर[3] अबि गई। यांते नहिं कौं जिम भई।
अरु कहिबे को अरथ न कोई। गुरु कथा सुनीए जिम होई ॥ १६ ॥
श्रोता साहिबसिंह ते आदि। बोले कथा सुनति अहिलाद।
भाई जी ! तुम को सभि ग्याता। जेतिक निरना उर बख्याता ॥ १७ ॥
गुर ढिग को निरना जु बिसाल। कहहु अलप भी तुम इस काल।
नतु[4] गुर सिख सुनहिंगे कहां। जे करि तुम अबि नाहिन कहा ॥ १८ ॥
सुनि कै रामकुवर तबि कह्यो। श्री गुर मुख ते जिम सुनि लह्यो।
दिज के दस दिन सूतक होइ। छत्री के द्वांदश[5] लखि सोइ ॥ १९ ॥
दिवस पंच दश बैश पछान। सदन शूद्र के तीस बखान।
दूध धेनु को दस दिन जोइ। महिखी को द्वादश लखि सोइ ॥ २० ॥
श्राध न जग करहु तिह संगा। जो खावे रोगी हुइ अंगा।
सूतक ते पातक सभि मिटै। पातक ते सूतक नहिं हटै ॥ २१ ॥
सूतक पातक सदन रहेय[6]। तबि लौ दान देय नहिं लेय।
जौ लेवै बंदर तन पावै। दान देय सो नरक सिधावे ॥ २२ ॥

---

1. आमंत्रण 2. हिमाचल का 3. भूल गई है 4. नहीं तो 5. बारह दिन 6. घर में रहेगा

दोंहरा

ग्रहण जु ख्याही[1] अशटका[2] रोगी देवै त्याग ।
अंत दान क्रिआ म्रितक की करै सूतकी राग[3] ।। २३ ।।
तीरथ जावै श्राध विधि अर जो करै न दान ।
राखश हुइ चंडाल घर भोगै दीआ आन[4] ।। २४ ।।
ग्रहण आदि गंगा सलल पुत्र जनम जबि होइ ।
व्याह समै नंदी[5] करे दोख संक दे धोइ ।। २५ ।।
अपदा बिपद बिदेश महिं अणसुन दोख न होइ ।
शुधि करम बिप्र न करै सकल दोश ले सोइ ।। २६ ।।
लोभी विप्र जु पातकी लोभी साक रु सिख ।
भोगे नरक पिशाचु हुइ इही वेद कहिं रिखि[6] ।। २७ ।।
मेरो सिख सभि जाति का पंद्रा दिन की मान ।
पित्र दिवस पछ एक करि से मम निकटी जान ।। २८ ।।
भला बहुत अणपढ जु नर वा ग्यानी निरलोभ ।
पड़िआ पापी नारकी जो लोभी बहु खोभ[7] ।। २९ ।।
इत्यादिक निरनै भयो धरम शासत्रन मांहि ।
निज सिखनि पहि गुर कही सभिहूं बैठं पाहि ।। ३० ।।
कहि करि मंदर मों गए थिरे सेज पर जाइ ।
तबि गुर महिला दीरघा[8] जीतो जिस का नाइ ।। ३१ ।।

चौपई

पहुंची श्री कलगीधर पास । जिस के रिंदे श्रेय की आस ।
एक वार पद बंदन करी । भनति बिनै कर जोंरि हुइ खरी ।। ३२ ।।
कमल बिलोचन ते गुर हेरी । हुइ प्रसंन बोले तिस बेरी ।
घर वाल्यो मन मता[9] तुहारा । किस बिध को है ? करो उचारा ।। ३३ ।।
कहिबे उचति होइ कछु कहो । जथा कामना तैसे लहो ।
सुनि अधीन हुइ जीतो तबे । मन को माता भनति भी सब ।। ३४ ।।
जग गुर ! मैं हौं तुमरे ग्रेह । हम भी अहैं मानुखी देह ।
कहां भयो जे त्रीमत जामा[10] । बीती बैस आप के धामा ।। ३५ ।।

---

1. मरने वाले दिन का 2. योगिणी 3. लोभ, लालच 4. दूसरे का 5. श्राद्ध विशेष 6. ऋषि 7 क्रोधी व्यक्ति 8. बड़ी पत्नी 9. मंतव्य 10. स्त्री रूप है

प्रापति नहिं सतिसंग विशेशहु । तुम ही गुर सभि को उपदेशहु ।
निज प्रिय सिखनि जिम समुझावहि । तिम मोकउ उपदेश द्रिड़ावहु ।। ३६ ।।
नित ही चित की चाह बखानी । मन थिरता लहि जिम निज थानी ।
श्री सतिगुर सुन पतनी बात । बोले जोग रीति बख्यात ।। ३७ ।।

दोहरा

मन ते सभि साधन बने मन लग सभि उपदेश ।
मनूआ पलटे ग्यान हुइ मन लागे रति शेश[1] ।। ३८ ।।
मुख रुधै लखि स्वास को व्रित[2] अंतर मुख देइ ।
इहै रीति करना दुरति मनूआ म्रिग सुख लेइ ।। ३९ ।।
नैन लगे बैननि लगे स्रवन शबद के मध ।
उप्रत[3] मनूआ विखै ते ब्रहमनंद सुख सुध ।। ४० ।।
जिहवा तालू मध दे नैन लगावै नाक ।
पहिला ऐसे सेवीऐ सतिगुर पद मन भाक[4] ।। ४१ ।।
नाभि ठहिरावै स्वास जव व्रिति थंमावै अति ।
बाही बासना रोकीए तीन मास लगु संत ।। ४२ ।।
चौथ मास धित पाइकै नाम वसतु जो देखि ।
सोई अंग आपन लखै इही[5] जुगीशर पेखि ।। ४३ ।।
तीबर बाशना दूर करि जिउ जल मकरी धाइ ।
ऐसी साधो साधना मनूआ चित बिलाइ[6] ।। ४४ ।।
पंच भूत, भू, बारि, हरि[7], बायू, गगन सथूल ।
गंध, रस, रूप, सपरस, धुनि सूखम क्रम इह मूल ।। ४५ ।।
प्रान, अपान, समान त्रै पुन बिआन, उद्यान ।
उर, पायू, रिद[8], संघ[9] लखि नाड़ी पंच सथान ।। ४६ ।।
नाग, कछूओ, क्रिकली, देव दत, धनजीत ।
उदगार, नेत्र, छिक, जंभण, मूए कपाली रीत[10] ।। ४७ ।।
भिन भिन सभ बांट करि तत्वनि धातू बांट ।
अंतहकरन सु भिन करि शेख आतता साट[11] ।। ४८ ।।

---

1. विशेष रूप में मन हरि प्रेम में अनुरक्त होता है 2. वृत्ति 3. विरक्त होना 4. अभिप्राय—श्रद्धा 5. यही 6. नष्ट हो जाएं 7. अग्नि 8. नाभि 9. कंठ 10. मृत्यु पर और कपालक्रिया की रीति से निकलते हैं 11. छांट लो, भिन्न कर लो

इह[1] ग्यान इह जोग है इही भगति का काज ।
जग दान तीरथ तपनि जां बिध मन को साज ॥ ४९ ॥

चौपई

दिन कँ निस महिं अलप अहारी । दम[2] को साधै मनहिं सुधारी ।
मिथिआ तन धन सुत अरु दारा । मिथिआ जगु को ब्रिंद पसारा ॥ ५० ॥
प्रापति जोगु बनै अभ्यासी । बिन अभ्यास परै जम फासी ।
राज जोग इह तोहि बतायो । करि साधन जे चित ललचायो ॥ ५१ ॥
सुनि सतिगुर के बच गति जोगु । श्री जीतो जी लागी जोग ।
बंदन करि बैठी इक थान । साधन लागी स्वास महान ॥ ५२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते 'श्री जीतो जी प्रसंग' बरननं नाम अशटदसमो अंशु ॥ १८ ॥

अंशु १९
श्री अजीतो जी प्रलोक प्रसंग

दोहरा

अलप अहारन होइ करि बैठहि आसन धारि।
द्रिशटि ठहिरावै नासका मन ते बाशन डार[1] ॥ १ ॥

चौपई

खशट महीने साधयो जबै। सिधां प्रापति होई सबै।
साधति द्वादश मास बिताए। अंत्रजामता उर बिदताए ॥ २ ॥
भूत भविखत की सभि बात। भई रिदे महिं सभि वख्यात।
गुर की गति जबिहूं मन जानी। जंग बीच हुइ संतति हानी ॥ ३ ॥
अपर बारता सभि बिदताई। इक दिन पुनि सतिगुर ढिग आई।
सकल कला समरथ गुर पूरन। थपहु उथपहु रावर तूरन ॥ ४ ॥
खाली भरो भरे करि खाली। थापहु नासहु चहहु उताली[2]।
जग महिं बंस राखिबो करीयहि। पुरहु आस इह आप बिचरीयहि ॥ ५ ॥
श्री जीतो ते सुनि मुसकाए। भूत भविखत तुव लखि पाए।
संतति के हित जोग कमायो ? कै परलोक भलो उर भायो ॥ ६ ॥
मोह आदि से सकल बिकारा। इन ते चहीयहि बनिबो न्यारा।
तैं बिप्रीत सगल इह धारी। क्यों नहिं लखी अरश[3] सिरदारी ॥ ७ ॥
सुत समेत जो पद अबिनाशी। तहिं को बनो सदा तुम बासी।
नस्वर जगत देखि क्यों भूली। जोग धरे आनंद ब्रिति झूली[4] ॥ ८ ॥
ब्रह्मातम कहु ग्यान उपंना। सफल जनम होयसि तूं धना।
उचित नहिं इत्यादिक कहिबो। तन ते भिन आप को लहिबो ॥ ९ ॥
सुनि जीतो कर जोरि उचारी। मैं सदीव रावरि अनुसारी।
देखि जगत दिश कीनसि अरजी[5]। बरतहु जथा आप की मरजी ॥ १० ॥

---

1. वासना को दूर करके 2. शीघ्र ही 3. स्वर्ग लोक की 4. वृत्ति आनंद मग्न हो रही है 5. प्रार्थना

मुझ को खुशी करो तन छोरौ। महिद बिधन[1] गन पिख्यो न लोरौं।
पीछे रच जथा मन भाया। अस अपदा मैं पिखि न सकाया ॥ ११ ॥
तबि गुर कह्यो तोहि चित जैसे। करहु आप भावति शुभ तैसे।
चार दिवस जीवन जग मांही। निज निज वारी सभि चलि जांहि ॥ १२ ॥
आगै पाछै चलनि जरूर। दुख कै सुखी नेर कै दूर।
राउ रंक सभि एक समाना। उपजनहारे बिनस निदाना[2] ॥ १३ ॥
सुनति कंत[3] ते बंदन ठानी। दरशन कर्‌यो सथिर ह्वै थानी।
पति मूरति को रिदे बसाई। करि बहु नमो अपनि घर आई[4] ॥ १४ ॥
करि शनान पावन तन ह्वै कै। कुश को आसन डासनि कै कै।
दासी आदि अपर बहु नारी। करति जि सेवा रखति जुआरी ॥ १५ ॥
केतिक पास रहति तिन साथ। निज चलिबे की कहिकरि गाथ।
जो जिन जाच्यो सो तिन दीयो। मन भावति सभिहूं बर लीयो ॥ १६ ॥
आसन करि बैठी ततकाला। साध्यो पूरब योग बिसाला।
तिस अभ्यास बल ते खिचि स्वास। दसम द्वार महिं करि तिह बास ॥ १७ ॥
पाइ जोर ब्रह्मरंध्र फोरा। गमनी गुर पुरि तन को छोरा।
देखति दासी दौरति गई। माता गुजरी कउ सुधि दई ॥ १८ ॥
सुनति अचंभै हुइ करि आई। देखि नुखा[6] गति को बिखलाई।
पुन सुनि सुनि सुंदरी ते आदि। मिली आइ किय रोदनि नाद ॥ १९ ॥
तबि सतिगुर पठि दास हटाई। करहु दाहु इहु सुरग सिधाई।
सुनि आइस त्यारी करिवाइ। करि शनान पट[7] नव पहिराइ ॥२० ॥
साहिबजादे[8] चारहुं साथ। करे बिबान उठाइसि हाथ।
आदि खालसा लोक घनेरे। गमने संग बहिर तिस बेरे ॥ २१ ॥
नाम अगमपुरा जिस थाना। तहिंलौ पहुंचे गुरु बखाना।
गावति शबद रबाबी[9] आगे। सिमरै नाम सिख वडभागै ॥ २२ ॥
गन चंदन की चिखा बनाई। सुत ने गहि करि अगनि लगाइ।
तिल जव घ्रित पाए समुदाए। करी प्रकरमा फिरि चहु घाए[10] ॥ २३ ॥
अवलोकी जबि अधिक जरी। पुत्र कपाल क्रिआ तबि करी।
सतुद्रव निकट गए चलि फेर। कर्‌यो शनान सभिनि तिस बेर ॥ २४ ॥
बिधि सों दियो तिलांजुलि तबे। आए गुरु सिमरति पुरि सबै।
श्री कलगीधर के ढिगु बैसे। चल्यो प्रसंग तज्यो तन जैसे ॥ २५ ॥

---

1. बड़े विघ्न 2. अंत में 3. कांत, पति 4. अपने स्थान को चली गई 6. बहू 7. वस्त्र 8. गुरु पुत्र 9. मुसलमान गायक 10. चारों ओर फिर कर

इक तहिं परसराम बैरागी। सुनिकै जोगु बात अनुरागी।
ब्रह्मरंधर को फोरि सिधारी। बिसमन[1] बूझन हेत उचारी॥ २६॥

जिम बडभागन को उपदेशा। क्रिपा करहु मुझ कहीअहि तैसा।
थोरे दिवसन मैं सिख होवा। बिदति देहि त्यागन महिं जोवा॥ २७॥

पर्‌यो आनि मैं शरनि तुमारी। उपदेशो लखि करि अधिकारी।
भयो दीन कलगीधर जाना। तिसहि बिधि को जोग बखाना॥ २८॥

सभि बिधि ते समुझावन करियो। जथा जोगु तिन साधन धरियो।
सतिगति को प्रापति सो भयो। जोग साध रवि भेदति गयो[2]॥ २९॥

भाखति रामकुइर कथ भाई। सुनहु खालसा हित चित लाई।
मैं भी सो बिधि बूझन कीनी। परसराम सों जो कहि दीनी॥ ३०॥

सुनि करि कलगीधर मुसकाए। मो संग कह्यो अधिक अपनाए[3]।
ब्रह्म आतमा सचिदानंद। ग्यान भयो सुख भोग बिलंद[4]॥ ३१॥

कह्यो शबद मै जो ततसार। सो तुव प्रापति अहै उदार।
अंतकाल जबि होवहि तोरा। ताहि समै दरशन हुइ मोरा॥ ३२॥

मोहि चरन को सिख मुखि अहैं। मम समीपता सद ही लहैं।
निस दिन मन सतिगुर महिं लायो। नहिं बिकार छुहनि को पायो॥ ३३॥

इत्यादिक मुझ सों तबि कह्यो। गुरु क्रिपाल अपन पर लह्यो।
हाथ बंदि मैं बंदन कीनि। पद अरबिंदनि सिर धरि दीन॥ ३४॥

सुनियहि साहिब सिंह लिखारी। इह साखी गुर आप उचारी।
मोकहु दीनी किरपा करिकै। तूं लिखि सिखनि हेत सुधारिकै॥ ३५॥

सभि सुखदाइक गुर की कथा। श्रोता जिम बछति दे तथा।
अद्‌भुत लीला करति गुसाईं। देखि देखि जग रहि बिसमाई[5]॥ ३६॥

सकल कला समरथ बलि भारी। बरतहि मानुख तन अनुसारी।
भूत भविखत अंतरजामी। पुरवहिं सकल कामना स्वामी॥ ३७॥

बैठि सभा महिं दरशन देति। सिख संगत चितबांछति लेति।
गनी कवीशुर पंडित घने। बरनहिं गुर गाथा, अन सुने[6]॥ ३८॥

कीरति के कल[7] करहिं कवित। आनि सुनाई बचित्र पवित।
बखशहि[8] कंचन जीन तुरंग। जेवर जरे जवाहर संग॥ ३९॥

---

1. आश्चर्ययुक्त होकर 2. सूर्यमंडल को भेद कर ब्रह्मलोक को गया 3. अपना दास जान कर 4. बड़ा, महान् 5. आश्चर्य में पड़ा रहता 6. दूसरे लोग सुनते हैं 7. कीर्ति के सुंदर 8. प्रदान करते

दरब ब्रिंद मुक्ता बर हीरे। पशम रेशमी सूखम चीरे।
गुनी इकाकी घर ते आवैं। सैन सेवकनि सहित सिधावैं ।। ४० ।।
सिंधु मेखला अवनी सारी। कीरति पसरी ससि उजिआरी।
अति उदारता बरनहिं जहिं कहि। महद[1] बीरता, सम नहिं महिं महिं ।। ४१ ।।

इति श्री गुरप्रताप सूरज ग्रिथे पंचम रते 'श्री अजीतो जी प्रलोक' प्रसंग बरनन्नं नाम एक उनबिसती अंशु ।। १६ ।।

1. महान्

अंशु २०

नृप विक्रम प्रसंग

दोहरा

इक दिन कलगीधर निकट सिख सिखणी[1] ब्रिंद ।
श्री जीतो तन तजन को करति प्रशंश बिलंद[2] ॥ १ ॥

चौपई

गुर पतनी जग माता देवी । ब्रह्मरंध्र तजि देह अभेवी[3] ।
सभि ते सुनि कै बचनि क्रिपाला । श्रीमुख ते बोले तिस काला ॥ २ ॥

दोहरा

धन नारी धन भजन है धन कलजुग जुगईश ।
महां बिकारी जगु तरे भजन तराए कीस[4] ॥ ३ ॥
नारी दइआ अनंत है जां जगु भीतर भाखि ।
खट शास्त्र पढ किया करै, नाम जपति मन राखि ॥ ४ ॥
इस पर इक इतिहासि है दया त्रिया जिम कीनि ।
संगति सुनीअहि बारता जिम फल प्रापति पीन[5] ॥ ५ ॥

चौपई

एक पारधी[6] बन मंहि गयो । खग म्रिग को संहारति भयो ।
चिरीआ हती फसावति जारी । अपर बिहंगम केतिक भारी ॥ ६ ॥
पंछी मिलि इत उत समुदाइआ । नादति बहुत बिलाप सुनाया ।
बन मैं व्याकुल पिखे बिहंग । बधक सोचति रिदे बिलंद ॥ ७ ॥
मन सो कहो दइआ उर धरै । बन मंहि तपसी तपु को करैं ।
महिपालक भी राज तजति है । बन मंहि तपु करि ईश भजति है ॥ ८ ॥
हम नर तन होए अस पापी । बन मांहि भी हम आइ जदापी[7] ।
हतैं जीव गन महां संतापी । भलो करम नंहि कीन कदापी ॥ ९ ॥

---

1. सिख स्त्री 2. बहुत अधिक प्रशंसा 3. अभिन्न हो गई 4. बंदरों को 5. बड़ा, उत्तम 6. शिकारी 7. जब भी

जहां आइ नर जनम सुधारै। तहा पहुंचि हम जीवनि मारै।
धिक हम जनम कर्म धिक ब्रिद। जिस ते हिंसा करति बिलंद[1] ॥ १० ॥
हट्यो तबै उर बिखै बिचारी। बिक्रमजीत अबै उपकारी।
तिस ढिग चलि करि जनम सुधारौ। सहौं दंड अघ भार उतारौं ॥ ११ ॥
इम बिचारि तिस पुरि को चाला। आगे आवति हुतो भुवाला[2]।
चढ्यो तुरंग संग जिह सैना। समुख पारधी देख्यो नैना ॥ १२ ॥
पापी जानि लीन पकराइ। बंधि पंच दिन दई सजाइ।
इक दासी ने भारति देखा। मन महिं उपजी दया विशेखा ॥ १३ ॥
पुरख बेख[3] धरि आप बंधायो। ततछिन फंधक को छुरवायो।
बीत गयो जबि एक महीना। याद नरेशुर ने उर कीना ॥ १४ ॥
शाहु बनक की हुती जु दासी। ततछिन गमनी भूपति पासी।
धन कुछ दे मुकराइ[4] सिपाही। ठाढी भई जाइ नृप पाही ॥ १५ ॥
देखि चिन्ह राजा भ्रम गयो। सभा बिखै कहि बूझति भयो।
नारी किधौ पुरख तू अहैं? क्यो तूं पाप करति बहु रहैं ॥ १६ ॥
सुनि बोली—हे भूपति पापी। मैं फंधक पापी संतापी।
महां पाप तेरे मैं देखो। मो मन अचरज भयो विशेखो ॥ १७ ॥
तुव घर को भोजन अर बारी। खावति ही पलट्यो तन नारी।
पुरख देहि करि दीजै मोही। नतु[5] मैं मरौ अग्र अबि तोही ॥ १८ ॥
सुनि महीप मन ह्वै बिसमाना[6]। महिद[7] शोक महिं भा गलताना।
करौं जतन मैं, नहिं तजि प्राना। बहु चिंता करि बहुर बखाना ॥ १९ ॥
इम दे धीरज राति गुजारी। उठ्यो प्राति कीनसि तबि त्यारी।
चढि तुरंग परु बन महिं गयो। इत उत देखति बिचरति भयो ॥ २० ॥
तहां पारधी बैठ्यो सोइ। तप हित बेस तापसी होइ।
महिपति ने अविलोक असीना[8]। जानि तपी पद बंदन कीना ॥ २१ ॥
होइ अनिछति[9] सो थिर रह्यो। महीपति सों कुछ कह्यो न लह्यो।
बड महातमा तपसी जाना। मोह न क्रोह न लोभ न माना ॥ २२ ॥
सादर तिह चढाइ करि ल्यायो। निज गादी पर आनि बिठायो।
सभि सचिवन के संग बखाना। इहि मम गुर है तपी महाना ॥ २३ ॥
हटिकै मैं न आइ हौं जावद। इस आग्या महिं रहीओ तावद।
निज निज थल पर सभिनि टिकाइ। कहि करि गमन्यो बिक्रम राइ ॥ २४ ॥

---

1. अधिक 2. राजा 3. भेख 4. मुनकर करा दिया 5. नहीं तो 6. आश्चर्य में पड़ गया 7. बहुत अधिक 8. बैठा हुआ देखकर 9. इच्छा रहित हो कर

कानन महिं तप करनै लागा। त्रीमति[3] करौं पुरख क्रित पागा[2]।
तपसी फंधक बैठ्यो राजा। सभि सेवति भे राज समाजा ॥ २५ ॥
गन मंत्री निज निकट बुलाए। सभि सों मन को मतो बताए।
गही जु दासी सों मंगवाई। राज करन पर तुरत बिठाई ॥ २६ ॥
आप गयो बन तिसी सथाना। लाग्यो तपु को तपनि महाना।
सचिव सकल मिलि दासी पास। हाथ जोरि कीनसि अरदास ॥ २७ ॥
गुर सथान बैठि करि राज। तुव अनुसारी सरब समाज।
आग्या कहो करैं हम सोई। बसि-बरती तुव हैं सभि कोई ॥ २८ ॥
सुनि दासी ने हुकम बखाना। पकरहु जहिं श्री बिशनु महाना।
सचिव सेन न्रिप के नर जेई। खोजन जाहिं सकल मिलि तेई ॥ २९ ॥
बिन पकरे नहिं हटि करि आवौं। देश बिदेशन मैं फिर पावौ।
सुनति हुकम को जहिं तहिं धाए। अनिक उपाव करैं बल लाए ॥ ३० ॥
सगरो नग्र भयो बैरान। खोजहिं जित कित बिशनु सुजान।
करति जतन को पुशकर[3] आए। एक गुफा देखी तिस थाएं ॥ ३१ ॥
खोजति अंतर जाइ प्रवेशे। तहिं पायो इक सिध विशेशे।
नमो करी निज काज सुनायो। हार परे हम बिशनु न पायो ॥ ३२ ॥
प्रान दान दिहु करहु बतावनि। महां पुरख तुम सुख उपजावन।
सुनिकै सिंध सभि बिधि मन मानी। हठ करि रहे प्रान हुइ हानी ॥ ३३ ॥
दइआ करी सिध ले सभि संग। चढे जाइ गिरनार उतंगु।
तिस महिं सिध्र रहैं समुदाया। ऊचे चढे बिलोकि निकाया[4] ॥ ३४ ॥
इक जगराज सिध तहिं पूरा। मिले जाइ करि तिस जस रूरा।
सकल प्रसंग सुनावन कीन। जिस विधि राज त्रिआ ने लीन ॥ ३५ ॥
बन्यो चहैं नर, हुकम बखाना। पकरहु आनहिं बिशनु सुजाना।
इस करि लोक हजारहुं फिरै। नहीं बिशनु को क्तहुं धरै ॥ ३६ ॥
सुनि जगराज सिध बर दीना। तुमरो नृप नर हुइ लिहु चीना।
पुन मंत्री कहि बिशनु जि चाहै। तौ हम कहा कहैं तिस पाहै ॥ ३७ ॥
इम सुनि सिध साथ तबि होए। बिक्रम निकटि गए सभि कोए।
तिस को ले करि संग सिधारे। सगले पहुंचे पुरी मझारे ॥ ३८ ॥
दासी त्रिया पुरख करि दयो। सरब राज पर विक्रम कियो।
बहुर मछिंदर गोरखनाथ। आवति भए मेल करि साथ ॥ ३९ ॥

---

1. स्त्री 2. लीन हो गया 3. पुष्कर, एक प्रसिद्ध हिंदू तीथ जो अजमेर के पास है 4. समूह

मिलि करि राजा राज बिठायो। सो दासी मंत्री ठहिरायो।
कह्यो मनुख देहि है विशनुं। तुरत दया को फल दिय तिस नूं[1] ॥ ४० ॥
जुग को धरम इही दिखरायो। गुरु पारधी[2] नृप ठहिरायो।
सगरे पाप कटे तिस केरे। यांते सिखहु सुनौ भलेरे ॥ ४१ ॥
नाम प्रताप भले पिखि लयो। राजा गुरु पारधी भयो।
दासी देहि पुरख ह्वै गयो। बहुर न्रिपति मंत्री ठहिरयो ॥ ४२ ॥
भयो दया को फल ततकाला। करी कहां ते कहां[3] बिसाला।
महिपालक परमारथ कीना। गन सिधनि कौ दरशन लीना ॥ ४३ ॥
अंत समै तन त्यागि सिधारे। बसे बिशनु पुरि महिं पुन सारे।
इस कलजुग को धन बखाना। फल सभि जुग ते देति महांना ॥ ४४ ॥

दोहरा

धन इह कलजुग जुग खरा करनी थोरी होइ।
और जुगनि ते अति भलो पार उतारे सोइ ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रुते '**नृप बिक्रम प्रसंग**' बरननं नाम बिसती अंशु ॥ २० ॥

1. उसको 2. शिकारी 3. क्या से क्या नहीं कर सकता

अंशु २१

कंचन इकत्र करन प्रसंग

दोहरा

छुटी मसंदन ते सकल संगति देश बिदेश।
अधिक भई सिखी जगत शरधा सहित विशेश ॥ १ ॥

चौपई

आप कार संगति लै आवै। भांति भांति की भेट चढ़ावै।
अन गन धन भूखन अरपंते। बहुत मोल के बसत्र सुभंते[1] ॥ २ ॥
जरी बादला[2] के बड थान। ल्याइं रेशमी रंगु महान।
अनिक रीति के मसरु[3] आवैं। पशमबंर कशमीरी ल्यावैं ॥ ३ ॥
खीनखाब के थान घनेरे। सूखम अंबर मोल बडेरे[4]।
जिस जिस देश वसत शुभ होइ। करहिं प्रेम सिख आनहि सोइ ॥ ४ ॥
युति मरियादा पूजा करैं। अरपि अरपि करि उर मुद भरैं।
वासी वासी के इक थाइं। सहित तिहावल[5] देग बनाई ॥ ५ ॥
निज निज डेरे भजन करंते। सिख्यान सों सिख प्रेम धरंते।
मिलि मिलि उपजति अधिक अनंद। जिम भ्राता संगु भ्राता ब्रिंद ॥ ६ ॥
भया खालसा शसत्रनि धारी। पूजा मेले पर हुइ भारी।
इक दिनि सिंह सुमति को धारी। बैठि परसपर गिरा उचारी ॥ ७ ॥
सतिगुर को दरशन अति सोहति। देखनि करे सभिनि मनमोहति।
एक बनहि कंचन को मंदर। ज़ेब[6] जवाहर बाहर अंदर ॥ ८ ॥
दर पर मुकता झालर होइ। रचहिं चतर कारीगर जोइ।
श्री सतिगुर बहु मोले चीर। एक रंग के खरैं सरीर ॥ ९ ॥
दमकहिं हीरे आदि जराऊ। पहिरि बिभूखन को समदाऊ।
जिगा[7] सु कलगी सिर पर धारैं। गर महिं श्री क्रिपाण को डारहिं ॥ १० ॥

---

1. सुशोभित होते हैं 2. कपड़ों की जातियां 3. एक रेशमी कपड़े का नाम 4. बहुत अधिक मूल्य वाले 5. कड़ाह प्रसाद 6. साज सज्जा, चमक दमक 7. सिर का भूषण

तरकश जरे जवाहर जाल। बनी चुगिरदे मुकता माल।
तिस को धरहिं, धनुख लें हाथ। अस शोभा युत हुइं गुर नाथ॥ ११ ॥
कंचन सदन बिराजहिं फेरे। इस प्रकार हम दरशन हेरें।
सुंदर शोभा होइ बिसाला। नहि त्रिपतहिं हम पिखि तिस काला ॥ १२ ॥
मिले सिंह अस मसलति[1] करहिं। सतिगुर प्रेम रिदे बहु धरहिं।
श्री गोबिंदसिंह सभि के स्वामी। लखी बात इह अंतरजामी॥ १३ ॥
शरधा पूरनि हित निज दास। लयो बुलाइ लिखारी पास।
श्री मुखि ते अस आग्या करी। हरी मोहि संगत सुख भरी॥ १४ ॥
लिखहु हुकम नामे सभि देश। ल्यावहिं सुइना कार अशेश[2]।
हेम बंगला[3] गुरु बनावहिं। यांते सभि ही कंचन ल्यावहिं॥ १५ ॥
सुनति लिखारी लिखि समुदाए। देश बिदेशन बिखै पठाए।
हुइ इक बीसु रजतपण[4] तोला। अस कुंदन आनहि बहु मोला॥ १६ ॥
अस नहिं होइ तां लीजै मोल। आनहु जहिं कहिं ते लिहु तोल।
नेरे दूर हुकम लिखि पठ्यो। खोल्यो कागद सिखनि पड़्यो॥ १७ ॥
लै लै कंचन को चलि आए। कुंदन की शुभि जिनस लिआए।
श्री कलगीधर कह्यो लिखीजै। जगनाथ पर हुकम पठीजै॥ १८ ॥
पुरशोतम पर लिख्यो पठायो। हुकम मेवड़ा[5] ले करि धायो।
हुते जु पांडे तिह परधाना। कागद दिये तिनहौं के पाना[6]॥ १९ ॥
पढि सुनि हुकम सकल बिसमाए। जगंनाथ पर कौन पठाए।
हम तो किसको जानहिं नांही। ऐसो कउन भयो जग मांही॥ २० ॥
रह्यो मेवड़ो निस बिसरामू। लखहि करहिंगे सतिगुर कामू।
तिन को लिख्यो बिरथ न जावै। पुरशोतम गुर कार दिवावै॥ २१ ॥
तहिं को जो राजा धरमातम। लखहि सु ठाकर बडो महातम।
भई जामनी एकल थिरियो। जगनाथ तबि शबद उचरियो॥ २२ ॥
अपर न सुनहिं, सरब पर सोए। भूपति सुनहि कह्यो प्रभु जोए।
भौ महिपालक! मम अवतार। लीनहु सतिगुर को तन धारि॥ २३ ॥
राखनि हिंदुपने की लाज। अपर अनेक सुधारनि काज।
दिली महिं तुरकेश[7] निकेतु। राज तेज तिन खोवनि हेतु॥ २४ ॥
सभि पर हुकम गुरु को भयो। कुंदन देश बिदेशन लयो।
सो मेरो ही हुकम पछान। उर संदेह न आनहु आन॥ २५ ॥

---

1. मंत्रणा 2. अभिप्राय—सदैव 3. भवन 4. 21 रुपये प्रति तोला 5. संदेश ले जाने वाला 6. हाथ में 7. तुरक बादशाह

हमरी दिश ते दिहु सौ तोला। कुंदन जिनस होइ बहु मोला।
अहै मेवरा[1] पुरी मझारे। तिस को निकट हकारि सकारे ॥ २६ ॥
सादर दीजहि हमरी दिश ते। बिरथा हुकम फिरहि नहिं जिस ते।
सुनि महिपालक निसा बिताई। होत प्राति के लियो बुलाई ॥ २७ ॥
सौ तोला कुंदन मंगवाइस। पारखु ढिग नीको परखाइसि।
दियो तोल करि ले सो आयो। सतिगुर निकट आनि अरपायो ॥ २८ ॥
भई बारता तिह ठां[2] जैसे। हेम लेनि की बरनी तैसे।
सुनि कलगीधर बहु बिकसाए[3]। परशोतम की महिमा गाए ॥ २९ ॥
दुहूं लोग की सभि वडिआई[4]। श्री सतिगुर के सीस टिकाई।
देश बिदेशनि हुकम पठाए। सुनि सुनि जिन मान्यो हरखाए ॥ ३० ॥
कुंदन मोल लीन परखाए। भेज्यो सतिगुर ढिग सुख पाए।
मनो कामना पूरन भई। पाप ताप सगरे बिनसाई ॥ ३१ ॥
मीआं दौला बिच[5] गुजरात। महां फकीर धीर बिख्यात।
आरबला वपु[6] बिती बिसाला। सरब सिधि धरता सभि कला ॥ ३२ ॥
जबि गुजरात हुकम गुर गयो। सिख लोकनि ते तिन सुनि लयो।
बहुत बिसूरत[7] उर के मांही। हम पर हुकम लिख्यो गुर नाही ॥ ३३ ॥
तन मन ते मैं हां सिख गुर को। नहिं अपर आशा मम उर को।
वहुत बिचारति उर पछुतायो। सौ तोला कुंदन शुभ ल्यायो ॥ ३४ ॥
श्री सतिगुरु हदूर पठायो। बिनती लिखी न मैं चित आयो।
निस बासुर मैं सिमरौं नाम। सदन जु तुम को सदा गुलाम ॥ ३५ ॥
सेवा समै मोहि चित करीऐ। अपनो दासन दास बिचरीऐ।
तिस को कुंदन ले पठि अरजी[8]। भए प्रसंन अधिक उर गुर जी ॥ ३६ ॥
दौला शाहु सु मौला प्यारो। पर उपकार सदा उर धारो।
सभि जीवन के हित को करता। देखि दुखीनि दया दिल धरता ॥ ३७ ॥
रहैं निमानो[9] अहैं महानो। लह्यो टिकानो आनंद थानो।
इम श्री मुखि ते महिमा गाई। निज भगतनि को दे वडिआई[10] ॥ ३८ ॥
जहां जहां प्रभु हुकम पठायो। सरब थान ते कुंदन आयो।
पूरन होयो एक खजाना। गिणती जिस की जाइ न जाना ॥ ३९ ॥
इह माइआ को कीन चलित्रा। निज संगत को कियो पवित्रा।
जबि ते कोश विखै धरिवायसि[11]। पुन गुर उर चेता नहिं आयसि ॥ ४० ॥

---

1. संदेशवाहक 2. उस स्थान पर 3. आनंदित हुए 4. बड़ाई 5. में, बीच में 6. शरीर 7. दु:खी, उदास 8. प्रार्थना पत्र 9. मान-हीन, मान-रहित 10. बड़ाई 11. रखवाया

कोश बिखै कोशप[1] धरि लीन। नहिं किछ कीन न किस को दीन।
भई इकतर लखमी भारी। नहिं तिस ते कुछ काज सुधारी ॥ ४१ ॥
अचरज लीला सतिगुर करै। नहिं किस के मन जानी परै।
श्री हरि राइ बाक जो भयो। श्री नानक जहाज फट गयो ॥ ४२ ॥
पंथ खालसा उपजनि कियो। सो जहाज साबत करि दियो।
टूटे फूटे बहु फट गए[2]। तेज पंथ को पिखि इक भए ॥ ४३ ॥
यौं सतिगुर सभि काज सवारे। महां बिघन ते दास उधारे।
गुरमति सिखी बहु बिसतारे। कवि संतोखसिंह ह्वै बलिहारे ॥ ४४ ॥

दोहरा

कलगीधर सतिगुरु की बाति बात मै बात।
जो साधो सिध हेति तिस निशकलंक[3] जिम धात ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रुते '**कंचन इकत्र करन प्रसंग**' बरननं नाम इक बिंसती अंशु ॥ २१ ॥

1. कोषाध्यक्ष 2. टूट गए 3. पारा

अंशु २२

सतद्रव में द्रव धरन प्रसंग

दोहरा

सिख संगति को बरस महिं केतिक छठवैं मास ।
आवहिं अरपहिं पाइं फल होति बिसाल प्रकाश ।। १ ।।

चौपई

धन अनगनत चल्यो नित आवहि । कुछ गिनती किस को नहिं पावहि ।
इक दिन बैठे गुरु क्रिपाला । लीला अचरज करहिं बिसाला ।। २ ।।
दासनि सें इम हुकम बखाना । सकल निकासहु तोशेखाना[1] ।
आनि आनि करि धरहु अगारी । बहु लगु जाहु न करहु अवारी[2] ।। ३ ।।
सुनि आग्या को करति निकासे । जरी बाफता मलमल खासे ।
तास बादला चमकति घने । खीनखाब जर बूटे सने[3] ।। ४ ।।
भार उठावति ले ले आवहिं । श्री सतिगुर के अग्र टिकावहिं ।
बसत्रनि जाति अनेक प्रकारो । सभि देशनि ते ल्याइ हजारों ।। ५ ।।
सो सगरे बाहर निकसाए । जुदे जुदे करि गुरु दिखाए ।
अनिक जाति के सुंदर घने । चहुं दिशि ते आए जरि सने ।। ६ ।।
जिन के देखति होति हुलास । मनहुं देति करि अधिक प्रकाश ।
कारीगर चतरनि के करे । सभि दिखाइ करि आगे धरे ।। ७ ।।
बहुर जौनपुर[4] आदिक जेते । अनिक उपाइन पठवति तेते ।
अतर फुलेल बिसाल तहां को । कहि करि सो निकसाइ महां को ।। ८ ।।
जबहि ब्रिंद को धर्‌यो अगारी । दासन प्रति सतिगुरु उचारी ।
अतर फुलेलन थान भिगोवहु । तास बादला आदिक जोवहु ।। ९ ।।
बडे बडे पुरि ते बहु आए । कहि करि अतर फुलेल भिगाए ।
दास समीपी बिसमत जोवति[5] । क्या लीला सतिगुर की होवति ।। १० ।।

---

1. खजाना, सामान आदि रखने का सुरक्षित कक्ष 2. देर, विलंब 3. विभिन्न प्रकार के कपड़े 4. एक नगर जो उत्तर प्रदेश में गोमती नदी के किनारे बसा हुआ है 5. आश्चर्य में पड़े देख रहे थे

कहि सभिहिंनि को आग लगाई। जरि बरि भसम भई तिस थाई[1]।
अतर समेत फुकाए थान। जो प्रापत हुइ मोल महान ॥ ११ ॥
तिन ते निकस्यो रजत[2] घनेरा। इकठो करिवाय तिस बेरा।
बंधि पोट दे गंढ सभिनि को। हुकम मनि दासनि धरि तिन को ॥ १२ ॥
वहिर धराइ उठे गोसांई। नहिं कोश महिं सौंप धराई।
इम चरित्र करि सदन मझारे। बदन प्रफुलति वहिर पधारे ॥ १३ ॥
सतुद्रव नदी किनारे गए। दासन साथ हुकम अस कए।
एक हाथ पर जिहठां[3] पानी। तहां प्रयंक[4] डसायहु आनी[5] ॥ १४ ॥

तिस पर बैठे गुर महाराज। जोति बदन पर रही बिराज।
बहुत सिख तिस थान लगाए। जल महिं एक गरत खनवाए ॥ १५ ॥
बहुर हुकम बहुतनि को दीना। सिख दासनि सो मातनि कीना।
कंचन महा रजतपण होऊ। कोश बिखै ते आनहु सोऊ ॥ १६ ॥
सिख सैंकरे लगे हजारे। कंचन पोट बंधि सिर धारे।
जो चहुं दिश ते कहि मंगवायो। अपर हुतो सो सकल अनायो ॥ १७ ॥
महा रजतपण सिर धरि ल्यावहि। गरत गुर आगै तहिं पावहिं।
धरि सलिता लग होयहु लारा[6]। इक आवति इक जात सिधारा ॥ १८ ॥

तोरे आन रजतपण केरे। बहुत अशरफी ले ले गेरे।
रजत हेम को जितो खजाना। सिख हजारों सिर धरि आना ॥ १९ ॥
बहुर हुकम सतिगुर बखाना। ल्यावहु अबहि जवाहर खाना।
ल्यावन लागे मुकता हीरे। गेरे सलिता जल महिं तीरे ॥ २० ॥
कंचन चांदी के बहु बासन। हेम जराऊ ल्याइ सु दासनि।
डारति हैं सभि गरत मझारे। लोप होहि नहिं परहिं निहारे ॥ २१ ॥
जेतिक सिख संगत तहिं पास। करहिं कार जिम हुकम प्रकाश।
पुनहि सिलहखाना[7] मंगवाइव। बहुत मोल को शसत्र सुहाइव ॥ २२ ॥
कंचन मुशट जराव जवाहर। खंडे[8] खडग दुधारे जाहर।
मुकता हीरे जरे जि संग। इस प्रकार के अनिक निखंग ॥ २३ ॥
ब्रिंद सरासन कीमत महां। सभि उठाइ करि ल्याए तहां।
तबि इक सिख ने पनच[9] उतारा। कट[10] लपेट करि ढांप्यो सारा ॥ २४ ॥

---

1. उस स्थान पर 2. चांदी 3. जिस स्थान पर 4. पलंग 5. ले जाकर 6. पंक्ति बन गई सोना लाने वालों की 7. शस्त्रगृह 8. दोधारी कृपाण 9. चिल्ला 10. कटि, कमर

कीन दुरावन भले बनाइ। ब्रिद सरासर डारे आइ।
अंतरजामी ने सो जाना। निकट सिख्य भा तबहु बखाना ।। २५ ।।
कट सों कहा लपेटन करियो ? सुनति बाक को सो उर डरियो।
हाथ जोरि करि कीनसि बिनती। सुनहु प्रभु ! मैं ठानी गिनती[1] ।। २६ ।।
मम कमान को पनच पुराना। शत्रुनि संग लरहिं जिस थाना।
इह जे टूट जाइ जिस बारी। तबहि चढावहुं इह गुन धारी ।। २७ ।।
रहिति पंथ की नीति लराई। चहुं दिश बिखै शत्रु समुदाई।
बोले सोढी कुल अवितंश[2]। इहु पूजा की है सभि अंश ।। २८ ।।
बिख समान सभि सिखन को है। हीन बीरता करती जो है।
दोनों लोकनि करति बिगार। लेन हार को पुंन निवार ।। २९ ।।
जपु तपु ऐंचि लेति इस भाइ। पोलतील[3] ते जल जिम जाइ।
इत्यादिक को करहु बिबेक। औगुन इस महिं लखहु अनेक ।। ३० ।।
सुनति सिख सो थरहर कांपा। चरन पर्‌यो बखशाबन[4] आपा।
प्रभू लग्यो अबि रावरि शरनी। माफ अवग्या इह मम करनी ।। ३१ ।।
नाम गरीबनिवाज[5] तुमारा। अधम उधारन बिरद तुमारा।
सुनि श्री मुख ते हुकम बखान। त्यागहु पनच[6] धरहु इस थान ।। ३२ ।।
वसतू अपर कोश महिं जेती। पहुंचहु तूरन[7] आनहु तेती।
कोशपती के संग उचारनि। सभि सथान ते हेरि संभारनि ।। ३३ ।।
सभि निकासि सिहन कर देहु[8]। खरे न होवहि ल्याइं अछेहु।
गुर घर को बड तोशेखाना[9]। किस ते होइ सकहि परमाना ।। ३४ ।।
सतिगुर सिख हजारहुं ढोवै। महा अनूठी वसतू जोवै।
तूरन दौरि दौरि करि आनहि। कंचन आयुध रजत महांनहिं ।। ३५ ।।
जबर जवाहर जोति जगे ते। जजमहिं गेरति आनि तुरेते[10]।
ऐसे कौन हुकम को होरहि[11]। गुरु तजहि तिस संग्रहि लोरहि ।। ३६ ।।
अनगन सिख अनगनती वारी। अनगन धन आनति जल डारी।
गुरु हुकम ते दौरति जांही। आइं शीघ्र तहिं बिलमति[12] नांही ।। ३७ ।।
संध्या लग[13] ढोवन गन करियो। नीठ नीठ करिते तबि भरियो।
जबि सभि आइ चुक्यो असबाब[14]। सभि दिन धरते रहे शिताब[15] ।। ३८ ।।

---

1. विचार किया 2. शिरोमणि 3. खोखली पतली नली 4. क्षमा की याचना करने लगा 5. गरीबों को पालने वाला, रक्षा प्रदान करने वाला 6. चिल्ला 7. तुरन्त 8. सिखों के हाथ देकर भेजो 9. धन और वस्तुओं का आगार 10. तुरन्त लाकर 11. इन्कार करें 12. विलंब 13. तक 14. समान 15. शीघ्र

सभि को श्री मुख ते फुरमायो। अबि तो सरब पदारथ आयो।
सभि संगति अबि डेरे चलो। बिसरामहु तन ते श्रम दलो[1] ॥ ३९ ॥
इम कहि गमने गुर गोसाईं। सिंह समूह संग सुख पाई।
सुंदर सदन बिराजे आइ। सभि सिख पहुंचे निज निज थाइं ॥ ४० ॥
जबि गुर प्राति हुकम को दयो। परबत पती दूत[2] सुनि लयो।
लिखि करि सुध ततकाल पठाई। गाढ्यो धन सलिता जल थाईं ॥ ४१ ॥
सुनिकै श्रोन मूढ ललचाने। भए तिमर आए तिस थाने।
गयो देखि तिन थांइ[3] बताई। इह ठां[4] धर्‍यो कोश समुदाई ॥ ४२ ॥
सुभट सनध बध[5] करि ठांढे। पुरि दिश करे लरन हित गाढे।
लगे सैंकरे खोजनि तहां। नहिं जानैं मूरख हैं कहां ॥ ४३ ॥
सभि जामनि लौ खोजति रहे। नदी बीच जहिं जहिं जिन कहे।
इस थल बैठे गुर दिन तारे। तिन आगै सगरो धन डारे ॥ ४४ ॥
जारि मसालैं खोजति रहे। खनहिं म्रितका जल महिं लहे।
होत प्राति सों उठि करि गए। रिदे बिसूरति[6] जनु लुट लए ॥ ४५ ॥
चढ्यो दिवस सिख देखनि आए। बहुत सथान गरत खनवाए।
खोज सैंकरे मनुखनि केरा। इत उति बिचरे सो सभि हेरा ॥ ४६ ॥
इम अविलोकि गए गुर पासी। सतुद्रव तट की बात प्रकाशी।
खनी थाउं[7] तहिं दूर घनेरी। घनी पेड़[8] लोकनि की हेरी ॥ ४७ ॥
सुनि श्री मुख ते बाक बखाना। हा पहारीए नर अनजाना।
सभि माइआ असबाब जु रासी। हम सौंप्ये सतुद्रव के पासी ॥ ४८ ॥
धरीध्रोहर हम सभि संभारि। रहि चिरकालहि इसी मझार।
पंथ हमारो प्रगटहि भारो। प्रिथी राज ले करहि उदारो ॥ ४९ ॥
सिंह पुरख जनमहि बलि भारी। महा तेजसी रिपुनि प्रहारी।
तिस के हित हम ने इह राखी। सो आवै इस को अभिलाखी ॥ ५० ॥
लेहि अमानत अपनी आइ। पहुंचहि समा सकल बन जाइ।
नहिं अपर के इह कर आवै। जे करि जतन अनेक बनावै ॥ ५१ ॥
जितनो धन गुर सलिता डारा। गुर सिखन किछु गिन्यो बिचारा।
नौ करोड़ नगदी ठहिरायो। वसतु मोल कछु नहिं न लखायो ॥ ५२ ॥

---

1. नष्ट करो 2. पहाड़ी राजाओं के दूत ने सुन लिया 3. स्थान 4. इस स्थान पर 5. सशस्त्र 6. दु:खी, उदास 7. स्थान 8. पद-चिह्न

कंचन की कछु गिनती नांही। महा जवाहर मोल न तांही।
गुर घर जहिं लखमी तहिं रहे। तिस की गिनती कहु को कहे ॥ ५३ ॥

इह सतिगुर के रुचिर बिलासा। पठनि सुननि को करौं प्रकाशा।
सदा बिअंत अंत जिस नाही। संख्या करन कौन तिन चाही ॥ ५४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे पंचम रुते **'सतद्रव में द्रव धरन प्रसंग'** बरननं नाम द्वेबिसता अंशु ॥ २२ ॥

अंशु २३

दरवेश प्रसंग

दोहरा

इक बिर[1] देश बिदेश ते गन संगति चलि आइ ।
परी रही आनंदपुर करि दरशन की चाहि ।। १ ।।

चौपई

करी मेवरे[2] सुधि सतिगुर को । संगति दरस मनोरथ उर को ।
घनी बटोरन ह्वै चलि आई । बीते केतिल दिवस इथाई[3] ।। २ ।।
सुनि कलगीधर गिरा उचारी । करहु प्रात को सभि किछ त्यारी ।
बैठे सभा सथान पिछारी । कहि दीजहि जहिं कहि नर नारी ।। ३ ।।
सुनति हुकम इम निसा बिताई । उठे प्राति सेवक समुदाई ।
अनिक बरन[4] के करे बिछौने । हेम प्रयंक डसायहु लौने[5] ।। ४ ।।
आसतारन[6] के सहित सुहावति । सेजबंद सुंदर छबि पावति ।
कट सों कसि निखंग शमशेर । धनु करि गहे बने समशेर ।। ५ ।।
आनि बिराजे सभा सथान । सिंह पुंज को लग्यो दिवान[7] ।
सतिगुर की सुध संगति पाई । हुम हुमाइ[8] दरशन कउ आई ।। ६ ।।
अनिक अकोरनि[9] कहु अरपती । बंदति पद अरबिंद पुजंती[10] ।
बडी भीर होई गुर तीर । रुति गरमी की स्वेद[11] सरीर ।। ७ ।।
सिखनि दिश ते हुइ अरदास[12] । कलगीधर पुरवहिं उर आस ।
चहुं दिश मनुज हजारहुं खरे । ज़रीदोज़[13] बर बिजना फिरे ।। ८ ।।
चामर चारू चलाचल ढोरहिं । प्रेमी जन के मन गुर चोरहिं ।
करति खुशी सिखनि पर भूरी । जिस ते सकल कामना पूरी ।। ९ ।।

---

1. एक बार 2. संदेश वाहक ने 3. इस स्थान पर 4. रंग के 5. सोने का सुंदर पलंग बिछवाया 6. बिछाने का कपड़ा आदि 7. सभा 8. बहुत उत्साह पूर्वक इकट्ठी होकर आ गई 9. भेंट 10. पूजा करती 11. पसीना 12. प्रार्थना 13. ज़री से काढ़ा हुआ

तिस छिन इक फकीर मंदारी[1]। आदहु वल ते भीर बझारी।
बिसद ब्रिंद ले फूलनि मंजुल। भरि करि दोनहुं कर को अंजुल ॥ १० ॥
पहुंच्यो श्री सतिगुरु हजूरि। चलहि स्वेद जिह कांया भूर[2]।
नगन अंग ते दौरति आयो। बडी भीर चीरति निकसायो ॥ ११ ॥
फूल गुलाब चंवेली केरे। धरी भेट सतिगुरु अगेरे[3]।
बंदन करि जबि ठांढो होयो। स्वेद सने कलगीधर जोयो ॥ १२ ॥

श्री मुख ते बोले अविलोकि। सांईवाले साहिब लोक।
इतो कशट किउं तन को दीनो। ल्यावन फूल जतन बहु कीनो ॥ १३ ॥
दरशन तुम सभि संतन केरा। भेट अहै सो हम ने हेरा।
इक ज्ञान्यो तबि भेद न कोई। दुविधा जिस उर मानहिं दोई[4] ॥ १४ ॥

रिदे अनंद फकीर मंदारी। हित उतर के चतुर उचारी।
दसत[5] जु चाली रुह सु स्याह[6]। दसत सु आमद[7] वेपरवाह ॥ १५ ॥
अवाज खाली जहान विपीर। बदन सुन काफर ववज़ीर[8]।
गुर कहिं रुह खलासी दीदहि[9]। बाजी बगैर सांई मुरीदहि[10] ॥ १६ ॥

खुदा बंदा वगैर हवाइ[11]। खुदाइ चशम[12] सो वेपरवाहि।
बदन[13] फुरमान खुलासी[14] जहान। बंदगीदार[15] दरगहि परवान ॥ १७ ॥
सुनि करि होयो खुशी विशेश। बोल्यो प्रभु सिउं पुन दरवेश।
जारत[16] मके की मैं मानी। रोज बिऐब[17] आप शुभ जानी ॥ १८ ॥

दीदम चशम[18] खुदाइ अलाहि। खूब दिदार[19] सु वे परवाह।
एक बात हैगी गुनखान। तूं साचो गुर पीर जहान ॥ १९ ॥
बंदा बदन कदम दर चूनहि[20]। तूं खुदाइ वरतहिं बहु गूनहि[21]।
एक दिवस मै दरि दरिआउ। देहि खैर हित दीनसि पाउ ॥ २० ॥

गुसल कुनद[22] मैं डुबक लगाई। एक पुरख तबि दीन दिखाई।
लेकरि दूर गयो मुझ सोई। मम मन भरम खाब सम होई ॥ २१ ॥
तहां पहुंचि इक देखी दारा[23]। जिस के तन महिं जीव हज़ारां।
मंदर[24] अंदर सो ले गई। मम सनमान करति बहु भई ॥ २२ ॥

---

1. मदार सम्प्रदाय का 2. बहुत अधिक 3. आगे, सम्मुख 4. द्वैत 5. हाथ 6. काली 7. आमदन 8. बिना सहायक के 9. देखो 10. परमात्मा का सेवक 11. लालच 12. आंख 13. मुख 14. मुक्त 15. भक्ति करने वाला 16. यात्रा 17. दोष रहित 18. आंखों से दर्शन किया है 19. दर्शन 20. द्वार की धूलि 21. बहुत रूपों में 22. करने के लिए 23. स्त्री 24. घर

पूजा करि अकोर[1] मुझ दीनि। पुन इक पुरख बिलोकन कीनि।
बहु बाहू बहु बदन सुहेले[2]। नाग लपेटे मनहुं सपेले[3] ॥ २३ ॥
मोहि संग बोल्यो सुखसाई[4]। मुझ ते कछू न जान्यो जाई।
कह्यो तबै मैं नहीं पछानो। को तूं कैसे करति बखानो ॥ २४ ॥
सुनि करि कह्यो संदेसा रूरा। दसमे पातशाहु गुर पूरा।
तिन ढिगु पहुंचहु करहु बतावन। नउ करोर अरु लाख पचावनि ॥ २५ ॥
दरब तुमारो अबि को धरियो। मोहि भारजा के ढिग परियो।
दस करोर अर सतर लाखा। दुति भारजा[5] के ढिग राखा ॥ २६ ॥
प्रथम देहि को धर्‌यो तुमारो। किउ करि तिसकी बात उचारो।
उनी सवा करोर भयो सभि। वाधे सहित[6] लीजीऐ सो अबि ॥ २७ ॥
कै सभि धन को लीजै देश। चहहु तुसीं जहिं लेहु अशेश[7]।
देनदार मैं रावरि एहो। जहिं जबि चाहो तहिं तब लेहो ॥ २८ ॥
हस करि श्री प्रभ गिरा अलाई। भला फकीर भला सुनि साई।
जान लीन हम सरब संदेसा। समुझयो पाछल प्रथम अशेशा ॥ २९ ॥
सुनि फकीर हुइ दीन बखानै। ज़ाहर करहु जथा हम जानै।
तहां न भेद पछान्यो कोई। इहां आप भाखी रखि गोई[8] ॥ ३० ॥
तहां खाब सम कछू न जाना। कुछ मेरो बस चल्यो न स्याना[9]।
तुम अबि करुना करि समुझावो। कहां बात ए सकल बतावो ॥ ३१ ॥
बिनै सुनति सतिगुरु उचारी। पुरख उदधि, सतुद्रव सो नारी।
दूजी गोदावरी सु दारा। तिनहुं सुनेह[10] तोहि उचारा ॥ ३२ ॥
सो लेखा हम समझहिं सारा। दरब इकत्र जु धर्‌यो उदारा।
सिख पुत्रां को लै हम देहैं। जबहि पंथ जग महिं बिरधै हैं[11] ॥ ३३ ॥
राज करन की लाइक होवहि। अवनी ते दुशटन को खोवहि।
तिन महिं एक सिख ह्वै भारा। तिस हथीं लेखा हुइ सारा ॥ ३४ ॥
सो लेवे निज माता[12] सहति। समुझहिंगे, लेखा है महित[13]।
इसी हेत द्वै बार उचारा। भला भला जी जान्यो सारा ॥ ३५ ॥
हैगा सचु फकीरहि सांई[14]। सभि हम समुझयो जथा बताई।
सुनति फकीर झुक्यो करि नमो। बूझनि हेन कह्यो तिह समो ॥ ३६ ॥

---

1. भेंट 2. सुंदर 3. सपेरे ने 4. सुखदायक स्वामी 5. दूसरी पत्नी 6. वृद्धि सहित 7. समस्त 8. गुप्त 9. समझ की 10. संदेश 11. बढ़ाएंगे 12. अभिप्राय धरती 13. बड़ा 14. महात्मा

मो कहु लाभ कहा कछु होवा। दरशन रावर को बर जोवा।
श्री कलगीधर तबि मुसकाए। पंथ बिखे तुम उपजहु आए॥ ३७॥
तुम भी तपु को फल हुइ जेता। भोगहु भोग हरख करि तेता।
करो राज के ले करि धरनी। जिस प्रकार की कीनसि करनी॥ ३८॥
क्रिपाद्रिशटि को जानि फकीर। पुन बोल्यो जुति बिनै गहीर।
भउजल ते प्रभु हमहि बचावो। भोग रोग महि नाहिन पावो॥ ३९॥
सचु हक[1] सो मांहि मिलावो। जिस ते आवागवण मिटावो।
सुनि श्री मुख ते मालक बोले। साई जी! प्रभु पूरा तोले॥ ४०॥

दोहरा

भाणा[2] है इस रीति को किस बिधि मिटै न कोइ।
हुकमै अंदरि सभि को बाहर हुकम न कोइ॥ ४१॥
तल त्रीमत[3] ऊपर मरद[4] दोनो के दर जोइ।
फैसल दीदम चशम सभि[5] साबत रहै न कोइ॥ ४२॥
सुनि कलगीधर के बचन खुशी भयो मन मांहि।
जित इछा तित को गयो गुर दरशन को चाहि॥ ४३॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रुते **'दरवेश प्रसंग'** बरननं नाम त्रैबिसता अंशु॥ २३॥

---

1. वास्तविक सत्य, परमात्मा 2. इच्छा, मर्जी 3. स्त्री, भाव माया 4. पुरुष, भाव परमात्मा 5. यह सारा निर्णय मैंने अपनी आंखों से देखा है

अंशु २४

कवियनि प्रसंग

दोहरा

सुपते निस महिं सतिगुरु मन भावति करि खान।
अंम्रित वेला[1] महिं उठे कीनो सौच शनान॥ १॥

चौपई

बसत्र शसत्र को पहिरनि करि कै। सुंदर अंग बिभूखन धरिकै।
सभा बिखै कलगीधर आए। चामीकरि प्रयंक[2] जिस थाएं॥ २॥
आसतरन[3] मखमल को कसियो। जरी सहित गुंफन युति कसियो।
तिस पर थिरे बिसाल क्रिपाला। आइ खालसा गन तिस काला॥ ३॥
नमो करति अरु बैठति हेरे। लग्यो दिवान[4] आनि तिस बेरे।
हेमलशटका धारन करे। आगे चौबदार तहिं खरे॥ ४॥
श्री मुख ते तबि हुकम बखाना। गुनी कवीशुर पंडति नाना।
सभिहिनि को हकारि ले आवहु। जहिं जहिं डेरे तहां सिधावहु॥ ५॥
सुनिकै सभि ततकाल बुलाए। तिन के दे हौं नाम बताए।
केश[5] दास पुत्र कुवरेश। द्रोण परव जिन कीन अशेश॥ ६॥
गुणीआ, सखीआ, बलभ आयो। ध्यान सिंह गुरदरशन पायो।
इत्यादिक पहुंचे कुछ और। बंदति भे सोढी सिरमौर[6]॥ ७॥
सादर बैठे सभा मझारी। सभि प्रति श्री प्रभु गिरा उचारी।
तुम सगले बुधिवंति बिसाले। करहु बिचारन विदया जाले॥ ८॥
कहिं ते सुपना पावहि प्रानी? किम निसपति मैं शाम निशानी?
किम गोडे[7] पर पाग रखंते? किम चीते पाछे[8] थुकियंते?॥ ९॥

---

1. प्रात:काल 2. स्वर्णक पलंग 3. बिछाने का कपड़ा 4. सभा 5. दरबारी कवियों की सूची 6. सोढी कुल चूड़ामणि 7. घुटने पर 8. पिशाब करने के पश्चात्

चून पकावन जबि हों लागे। तोरि पिछे किम जोरति आगे ?
रुख[1] बिगैर किउ बोलन करि है ? धनु टंकार करें किउं नर हैं ? ॥ १० ॥
कहहु तमाकू किउ नहि छूहं ? कथा द्वादशी किम नहिं कहैं ?
इम श्री सतिगुर ते सभि सुनै। कवि कुवरेश प्रथम ही भने ॥ ११ ॥

दोहरा

खाइ सकल रस अन ते दपटे नारी भाव[2]।
घुम नींद पीछैं पचे जीव कला छुटदाव[3] ॥ १२ ॥
फुरे सुपन सभि जंतु को साच झूठ मन बूझि।
इतनी जानी ग्यान ते, तां पर तुमरी सुझ ॥ १३ ॥
बलभ[4] कालश पाप फल गोतम पतनी प्रीत।
ससि उठाइ रिखि न्हाण को कामी बाशव मीत[5] ॥ १४ ॥
गुनीआ[6] जानू जानवी शुध ठौर वर ईश।
मीत पाग शरनागती गोडे[7] लाख सुख सीस ॥ १५ ॥
सुखीआ[8] तंतर मंत्र के नाश करन के हेत।
थूक कीए हतिहोति है जांते कीना चेत ॥ १६ ॥
गुरदास[9] दास पग सतिगुरु अहं मिटे तुम शरन।
तवन क्रिपा बिन अहंमती बोलत प्रीती हरन ॥ १७ ॥
सैनापति[10] कहिता इही प्रथम बरकती जान।
गनपति आदि मनाईए आदि तवन की कान[11] ॥ १८ ॥
सुखा सिंह[12] टंकार की शत्रनि दयो वंगार[13]।
है बल बिद्या कै आवै मम ढिगु सार ॥ १९ ॥
कलूआ[14] तुरकनि राज जबि रह्यो भूप पर छाइ।
झूठ पान जप मंत फल हिंदू के छप जाइ ॥ २० ॥
सकल पाप जे भूम के हरि पैराए फिर्यादि।
कल माँहि तुमरी महि हनन हरि कहि श्रुत कथ बाद ॥ २१ ॥
नानक जा तुम द्याल हुइ सकल दोख मिट जाइ।
संकर बिदर, दरिद्र बिप्र, अजमिल, कूबज, भिलाइ[15] ॥ २२ ॥

---

1. मुख 2. नाड़ियों के भाव दब जाते हैं 3. दबाओ से छूट जाती है 4. कवि का नाम 5. इन्द्र का मित्र बन कर 6. कवि का नाम 7. घुटने 8. कवि का नाम 9. कवि का नाम 10. कवि का नाम 11. निकाला जाता है 12. कवि का नाम 13. चुनौती 14. कवि का नाम 15. भीलनी

चुप हुए सभि गुर कहैं लड़के गुरबखश सिंह।
तूं क्यो बोलति नहिं अब. कहिन होग मम सिंह ॥ २३ ॥
तबि मैं बोल्यो समुझि कै मन परचा तुम चरन।
जंती को क्या बस सही ? करता तुमरी शरन ॥ २४ ॥
आठ पहिर की चेशटा बैठी समरप्यो ध्यान।
नथ हमारी कथ करि तुमरे हमरा ग्यान ॥ २५ ॥
सुनि साहिब सिंह ! सुनि हसे तबि हउ कहि कर जोरि।
सभि को उतर आप ही कहीए संगत तोर ॥ २६ ॥
बोले प्रभु तबि द्याल हुइ जनम जोनि भ्रम जीव।
निंद्रा वशि एकांत चित लखै भ्रमै सुपनीव[1] ॥ २७ ॥
तारा गुर पतनी भुगी चंद कालखा देखि।
परनारी परसन अघी लोक दिखायो लेख[2] ॥ २८ ॥
राम लखन म्रिगीया[3] गए विछुरे दोनो भ्रात।
निस गोडे[4] पगड़ी धरी मित्र कहानी बात ॥ २९ ॥
भिआन मिले परचा पगड़ धरी वर दीना तबि एह[5]।
गोडे पर दसतार[6] धरि पावहि निरदुख देहि ॥ ३० ॥
भूत जाति भू पर जिते मूत्र दोख मिटि जाइ।
थूक दिए सुधि काइ हुइ पीछे सही बनाइ[7] ॥ ३१ ॥
पाप ग्रसै जबि आनि कै त्रिसकारै बिधि आन।
बिना बुलाए बोलीए जां विधि भली न मानि ॥ ३२ ॥
आदि अंति रोटी ग्रिही देव पित्र हित देनि।
वेद उकति ते धरमवानि एक पिछाड़ी[8] लेनि ॥ ३३ ॥
सगुन होहि सभि सूरमे देव दाहिने होहि।
रन शत्रुनि को सामने करे टंकारी क्रोहि[9] ॥ ३४ ॥

चौपई

अजमेर शाह की कन्या होई। पित आइसु को ले करि सोई।
चहिति कंत को करनि निहारै[10]। खोजनि करहि न निशचै धारै ॥ ३५ ॥
तप बिसाल को तापति जोइ। तेज सहित, मम पति ह्वै सोइ।
खोजति रही बिप्र इक हेरा। जिन तन ताप्यो बहुत बडेरा[11] ॥ ३६ ॥

---

1. स्वप्न में 2. भाग्य का लेख 3. शिकार 4. घुटने पर 5. यह 6. पगड़ी 7. हाथ पैर धो ले 8. बाद में 9. क्रोध 10. देखकर पति करना चाहती थी 11. बहुत अधिक

बेद मंत्र हसतामल जांही। द्रिड़ तपु रहै उंछब्रित[1] मांही।
राहक क्रिखी[2] बाढ ले जावे। बीन बीन दाने तहिं ल्यावे ॥ ३७ ॥
खाइ नृबाहिन करहि सरीर। बेद खडंगन थित चित धीर।
तिस बिलोकि अजमेर कुमारी। तप बिसाल की निधि जन भारी ॥ ३८ ॥
बुधि बल ते करि बिबिध उपाइआ। तिसी बिप्र सो ब्याह कराइआ।
दिज बर के उर अति दुचिताई। मैथुन करे धरम बिनसाई[3] ॥ ३९ ॥
भाज्यो जाइ न किसहूं गंमता देश। इनहुं गंमता थान अशेश[4]।
रह्यो बिचारति बस न बसायो। पकरि मलेछनि सदन सुवायो ॥ ४० ॥
द्वार किवार असंजति करे। निसा बिखै बासो करि थिरे[5]।
इस बिधि दिज बेबसि भा जबै। बेद मंत्र को पठि करि तबै ॥ ४१ ॥
कोट लोह को चहुंदिशि रच्यो। तिस अंतर थिर ह्वै करि बच्यो।
तबि अजमेर सुता अविलोका। लोह दुरग ते चहुं दिश रोका ॥ ४२ ॥
कुछ नहि जतन चल्यो बिति राती। खोलि किवार दए पिखि प्राती ॥ ४३ ॥
बहुर जामनी प्रापति जबै। घरि महिं रोकि दयो दिज तबै।
थिर अंतर सुपतनि के काल। पठहि मंत्र अय कोट बिसाल ॥ ४४ ॥
बिन चिंता सुपतहि सुख पावै। भई भोर बाहर निकसावै।
केतिक बासर इस बिधि कीन। नर नारी सभिहूं सुनि लीन ॥ ४५ ॥
तबि अजमेर शाह को पास। मंत्र शकति दिज करत प्रकाश।
कह्यो मलेछनि सभि समुझाइ। इस को जानो सुगम उपाइ ॥ ४६ ॥
तनक तमाकु इस पिलावहु। सभि हिंदुनि के मंत्र नसावहु[6]।
किसू मंत्र की शकति न रहै। तनक तमाकू हिंदु जि छुहै ॥ ४७ ॥
अस मसलत करिकै समुदाइ। सभा बिखै दिज लीन बुलाइ।
सभिनि मलेछनि आदर कीना। निकट बिठाइ तपोधन लीना ॥ ४८ ॥
कंचन को हुका बनवायो। दिज दिखाइ गुड संग मिलायो।
अपर बिप्र के हाथ गहाइ। तिस के आगे धर्यो बनाइ ॥ ४९ ॥
रिखि पिखि कै सभि संग उचारा। मै न करहुं इह अंगीकारा।
भलो कि बुरो नहिं सुध कोइ। नहिं सपरशौं दोश जि होइ ॥ ५० ॥
सुनि करि जे मलेछ बुधिवंते। हित निरदोश करन उचरंते।
सकल सभा को क्यों न निहारे। मिलि पीवति हैं स्वादति सारे ॥ ५१ ॥

---

1. खेतों में से अन्न उठा कर अपना निर्वाह करता था 2. खेती 3. नष्ट हो जाएगा 4. सभी स्थानों पर 5. उधर ठहर कर 6. नष्ट कर दो

इस महिं दोश कहां अवलोका। कंचन पावन को बन होका[1]।
गुड सन मिल्यो, बिप्र ले आयो। इत्यादिक कहि कै बिरमायो[2] ॥ ५२ ॥
कहे सभिनि के कीनसी पान[3]। भई जामनी दिन जु बिहान।
घर अजमेर सुता के गयो। तथा मंत्र पटि करि थिर भयो ॥ ५३ ॥
बन्यो न कोट मंत्र नहिं फुर्‌यो। बिप्र बिबसि ह्वै करि पुन थिर्‌यो।
मिली अजमेर सुता निज अंग। मैथुन कर्‌यो तिसी के संग ॥ ५४ ॥
जगत जूठ महिं दोश बडेरा[4]। कर्‌यो बतावनि प्रभु तिस बेरा।
धरम हिंदु को मंत्र समता। करम बिनाशनि के बड हेता[5] ॥ ५५ ॥
चोबदार कलजुग को जगमैं। सौच आदि गुन नाशक लगिमैं[6]।
अधिक अपावन करि बेहारो। कविनि सभा महि गुरु उचारो ॥ ५६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे पंचम रुते **'कवियनि प्रसंग'** बरननं नाम चतुर बिंसती अंशु ॥ २४ ॥

---

1. हुक्का 2. उसे रोक दिया 3. सेवन किया 4. बड़ा 5. कारण 6. साथ लगने से, स्पर्श करने मात्र से

अंशु २५

कलजुग प्रसंग

दोहरा

उतर अपर जि रहि गए सतिगुर सभिनि बताइ।
सुनि जिन कउ रिदे महिं निशचै ततछिन आइ ॥ १ ॥

तां रिखि शुभ गोपद सुवन[1] दीना श्राप बनाइ।
मरन काल नभ शब्द हुइ गोकरनी[2] तजि जाइ ॥ २ ॥

सकल पाप जे भूम महिं बसें आइ पद[3] मांझ।
श्रोता बकता को लगै कबै न पूज करांझ ॥ ३ ॥ ३ ॥

अनध्याइ बिद्या घुखैं[4] सो बादी जग मांहि।
दारिद, आरबल नाश हुइ, आपद इहु उहु आहि[5] ॥ ४ ॥

रज नारी त्यागन बनै तजै रांड का भोग।
बिन ब्याही अनरुचि त्रिया त्यागै कुल अरु रोग[6] ॥ ५ ॥

सौच शेख[7] जल असुच हुइ, निगुरे कर अपवित।
स्वान, सुपच जूठा, अलप, घटि बंधा, जल असित[8] ॥ ६ ॥

ऐसे वेद पुरान सुच संकर मलिन न जोग[9]।
श्रोता सुनि नारक पसू हान, कुलीनी जोग ॥ ७ ॥

पंथ रच्यो मैं धरम हित पूजा दान न खाइ।
लोभ बंध[10] मानति नहिं शूकर जोनी पाइ ॥ ८ ॥

दिवस रैन गुर चरन भजि, कुल की करि है कार।
पाप बिडारै सिख मम साखी सुनि उपकार ॥ ९ ॥

---

1. तम्बाकू 2. धरती पर किया शुभ कर्म 3. तम्बाकू में आ कर बसेंगे 4. वर्जित दिन को जो विद्या का अध्ययन करे 5. इस लोक में तथा परलोक में 6. बीमार 7. शेष बचा हुआ 8. मैला अथवा गंदा पानी 9. संकर जातियों के पढ़ने के योग्य नहीं 10. लोभ के वशीभूत

खंडे की पाहुल[1] जिनहु सो शसत्रनि को धारि।
करैं जीवका आपनी परालबध अनुसार ॥ १० ॥
रण महिं स्वामी धरम को, पीठ न रिपु को देहि।
सनमुख हुइ शस्त्रनि हतहि, सुरपुरि कै जस लेहि ॥ ११ ॥
तजि धीरज रण ते भजहि[2] जग महि ले अपवाद।
मरे पाप फल भोगिहै पाइ न कित अहिलाद ॥ १२ ॥
जात बरण की कान[3] तजि मिलहि खालसे संग।
गुरवाणी सों प्रेम करि मन रप गूढा[4] रंगू ॥ १३ ॥
हमरो है उपदेश अस जो धारहि सुख पाइ।
बधहि खालसा जगत महिं सभि अवनी पर छाइ ॥ १४ ॥
बधै[5] पंथ, पर धरम नहि या बिधि कलि का धरम।
वरतहि सकल जहान महिं विरला जानै मरम ॥ १५ ॥
करता हुकम हुइओ हमै तबि कलि[6] जोरे हाथ।
राज तुमारो बेर हम[7] हमै पंथ के साथ ॥ १६ ॥
जगनाथ दी ठउर मुहि द्वारका महि रनछोर[8]।
काशी बिस्वानाथ मैं कुर[9] महिं धरमनिवोर[10] ॥ १७ ॥
तैसे तुम ममु राखीयो सकल करौंगा काज।
सकल लोक महिं जानीयों मोर तुमारो राज ॥ १८ ॥
तबि हमि ऐसे कह्यो तिह—तुम को करनी सिध[11] ?
बोला—करनी नांहि को करौं नाम की ब्रिध[12] ॥ १९ ॥
कलहि करावौं बाप सुत नारि पुरख को जुध।
भैन भाइ को छोडिकै पालै ग्रेहन सुध[13] ॥ २० ॥
सुत नारी सुसुरां भजै सासू भजै जमात।
दास भजै भूपति जुवति विप्रन उपजै शांति ॥ २१ ॥
शूद्र नेंवदा जेंवदे[14] बिप्रहिं दैं धिधकार।
उपकारी सूझे नहीं बहुते बधैं बिकार ॥ २२ ॥
पुत्र जनैं नारी भली, कन्यां जननी दूर[15]।
सुत समुझावे बाप को, नुहि[16] कहि सासू कूर[17] ॥ २३ ॥

---

1. दोधारी कृपाण से तैयार किया अमृत 2. भागेगा 3. मर्यादा 4. अत्यधिक गहरा 5. वृद्धि करेगा 6. कलियुग ने 7. मेरी अवधि में है 8. भगवान् 9. कुरुक्षेत्र 10. धर्म वालों ने 11. किस कर्म में सिद्धि प्राप्त होगी 12. वृद्धि 13. केवल अपनी पत्नी को पालेंगे 14. आमंत्रित किए जा कर भोजन प्राप्त करेंगे 15. त्याग देंगे 16. बहू 17. झूठी

सिख उपदेशैं गुरु को अंन अपावन खाइ।
न्हाण तजैं काया दुखी खावैं बहु रुचि भाइ।। २४।।
प्रीत थोर खुशमति बचन[1] उदर भरन के काज।
नारी मिलना भोग कवि ग्रिह ग्रिह जजीए साज[2] ।। २५ ।।
वेद वेदचदे वेदधर[3] भूमि वंचते छत्रि।
घर वेचे बनीए बहुत, शूद्र वेचते पुत्र।। २६।।
भूखे मरते काम बिन भगवा करि के भेख।
जटां बंधि करते सुरस[4] म्रिगछाला परवेख[5] ।। २७।।
लोकन कउ ऐसे कहें संत संग ह्वै भाग।
आप नरक अवरन नरक करनी बनै न लाग[6] ।। २८।।
लोकनि को बंचत करैं कथैं ग्यान की बात।
सिर धुन लोचन जल श्रवत कपटी अधिक सुहात।। २९।।
गरभ गिरावैं रंड का; सुभगा होइ न गरभ।
भूत प्रेत सेवन करैं, नहिं सिमरैं श्री प्रभु।। ३०।।
जहां चाह तहिं विघन बहु, बिनां चाह हुइ काम।
मित्र करैं अति शत्रुता शत्रु मीत का काम।। ३१।।
सुनि बोले कउतक भले तूं ता नट जिउ पंथ।
नाम दान हुइ पथ महिं, करीअहु अपनी संथ[7] ।। ३२।।
तबि बोले सतिगुर सही सुनै सुनाव उदात।
हम हमरे संगति भगत कहां तुमारी बात।। ३३।।
कलजुग बोल सुनाइओ सुनी हमारी ख्यात।
कथा सुनावहुं आदि की मत करीअहु विख्यात[8] ।। ३४।।
कलि नामा गुरबखशसिंह तो को दीनो एह।
सतिगुर आप सुनाइआ साधु सुनावौं तोह।। ३५।।
कलिजुग कहिता-- आदि मैं ब्रह्म जनता कीन[9]।
कहैं सकल हम है अधिक हंकारी लखि लीन।। ३६।।
तबि ब्रह्म समुझायहु—तुमरा न्याइ समाज—।
कहि समाधि करि मौन हुइ चितवा पुरख जुराज[10] ।। ३७।।

---

1. प्रशंसापूर्ण शब्द 2. संभोग सम्बंधी कविता करेंगे 3. ब्राह्मण 4. रस-भोग करते हैं 5. धारण करके 6. शुभ कर्म करने के लिए तैयार नहीं होंगे 7. सम्बंध कायम करवाओ 8. प्रकट न करना 9. ब्रह्मा ने हमारी रचना की 10. युवराज (सत्युग)

एक खरा, दूवा हूया, तीचा चौथा सुवन।
प्रथम जनम को सौंप करि नीति पढ़ाई गुन[1] ॥ ३८ ॥

बिधि बूझहु—क्या वरतणी पुत्र करेंगा जाइ ?
सो इहां कहु मोहि ढिग हुकम राज महि दाइ[2] ॥ ३९ ॥

सत बोल्यो तबि—पुरखि नै देश देश दियो बांट।
जिसै देश तांका लिखौं पाप पुन की सांट[3] ॥ ४० ॥

तपि, सत, अरु मख,[4] अरचना, लोक कराऊं रोज।
ब्राह्मण ब्रह्म परायणी ऊचावन बसि जोज[5] ॥ ४१ ॥

बीज फलाऊ बेर सौ, उमर लाखि इक बरस।
जोग बिखैं लाऊ नरनि शुभ गुन उपजैं सरस ॥ ४२ ॥
शसत्र धरम छत्री करें, पुन्य बिहारी[6] बैस।
तीन बेद तीनों बरन सभिनि लखऊं ऐस ॥ ४३ ॥
दूजा[7] बोल्यो—पिता जी! शसत्रधरम मुहि खूब।
सभौ चलाऊं रीति मैं देवौ सेवा हूब[8] ॥ ४४ ॥
जग्य कराऊं अरथ संजि पाप मिटाऊ लोग।
सुरग लोक लग करम ही, दस बोई ले भोग[9] ॥ ४५ ॥
दस सहंस्र जीवैं सकल, पाप डरन सभि आह।
वडे भ्रात ते ऊन दस धरम चलाऊं राह ॥ ४६ ॥
चुप होइ, तीजा[10] कहे—अरचा घर की वंड[11]।
संहस्र जीवना, चार बीज, अरध पुन अघ खंड[12] ॥ ४७ ॥
अधिक बिप्र अर छत्रकी वणज करै जन आप।
राजा को गुर मानिकै न्याइ करावै आप ॥ ४८ ॥
चुप हुआ, चुप चतुरथा, ब्रह्मा कहि—तूं बोल।
तबि हम करि जोरे नम्र आढिस तुमरी कोल[13] ॥ ४९ ॥

---

1. विचार किया 2. दोगे 3. उसका बदला दिया लाएगा 4. यज्ञ 5. जो बनों में बस कर अपने आपको यज्ञों के द्वारा श्रेष्ठ बनाएंगे 6. पुण्य धर्म का व्यवहार करेंगे 7. दूसरा 8. भावना सहित 9. एक बार बीज कर दस बार खाएंगे 10. तीसरा 11. बांट कर 12. आधा भाग 13. मेरी तुम्हारे आगे प्रार्थना है

सम करि ब्रह्मा बोलिये—पुत्र पिछारी मोर।
तेरी इछा होइजो सो मेरे मन लोर[1] ॥ ५० ॥

कुछ तो हौं कहिने लगा जन घर पुनरु पाप।
बय सौ बरख दु बीज ले करैं सु भोगैं आप ॥ ५१ ॥

बहुत पुत्र हु बाशना इछ्या सिछ्या सार।
शूद्र राज घर, हीयरन बेद जाप हरि धार[2] ॥ ५२ ॥

भगत करैं पापी तरैं नर नारी दिज सूद।
नीच बाल ज्वानी तुरक संकर आसम खूद[3] ॥ ५३ ॥

नाम बिना दंडों सकल नरक सुरग मम राज।
भूही दोनो गतरदे[4] जोनी अरथ समाज[5] ॥ ५४ ॥

इह भावी पूरन करौ तबि जावौगा खुब[6]।
एक तुमारे दंड सहु अवर न जानौं दूब[7] ॥ ५५ ॥

सतिगुर कहि इक समे मैं ब्रह्मा कहति सहात।
सुनि सुत ! भूमि जाईअहु धरम करम विख्यात ॥ ५६ ॥

सुनि करजुग ! मेरो हुकम, तू मम आग्यावारू।
सरब मंत्र तुहि राज रद[8] नाम मंत्र सिध सारू ॥ ५७ ॥

और जुगन महिं आसरा बहुत जग तपु अरच।
राम नाम जपु रसन स्वास कलि महिं कारज सरच[9] ॥ ५८ ॥

तोहि राज हुइ पुत्र ! जबि, सभि देवन द्यो वरज।
जिऊ इछा तिऊ वरतीए[10] नाम महातम गरज[11] ॥ ५९ ॥

भला तुमारा राज हुइ सकल सिध हुइ वाच[12]।
थोड़ी करनी फल अधिक तीन[13] राखीओ साचु ॥ ६० ॥

पर अंशी परनार तजि नाम सराहै स्वास।
हरि भज, हरि चित, होत हरि, हरि सिदकी कुल आस ॥ ६१ ॥

देह अंत भी हरि भजे तऊ भी हुइ निसतार।
ऐसे हरि को निज भजै भउजल उतरै पार ॥ ६२ ॥

---

1. मेरा मन वह सुनना चाहता है 2. अहीर लोग वेदों का पाठ करेंगे और हरि जाप भी करेंगे 3. आश्रम से वंचित 4. भूमि पर दो ही ढंग प्रचलित करूँगा 5. विषयों का भोग और पदार्थों का संग्रह 6. भली भांति 7. दूसरा अन्य 8. अस्वीकार कर दूंगा 9. कार्य सम्पन्न करने वाला होगा 10. व्यवहार करो 11. ऊंचे घोष से सुनाओ 12. वचन 13. तीन युग

ब्रह्म पराइण होइकै तन मन अरप जोइ ।
तांका भी तूं भै करीं इहै हमारी खोइ[1] ।। ६३ ।।
अपर सकल तजि असरे एक नाम को प्रेम ।
तीन लोक कउ वेधिकै जाइ साजुजी खेम[2] ।। ६४ ।।
अपनी नारी, सच ब्रित[3], खाज अखाजी ब्रित ।
सोई संत गुरु मानीयहु कलू पुत्र ! सति चित ।। ६५ ।।
सतिजुग मेरे सिर बसहु, भुजा बसहु त्रितेय ।
दुआपुर वसीयहु जंघ मम, तूं बरनन को सेय ।। ६६ ।।
अंग अंग की मुकति इह बेद मांझ लिखि दीन ।
सई सो साची भली सकल समाला कीन[4] ।। ६७ ।।
अपनो अपनो राज करि तुम आइअहु मम धाम ।
करि करि करनी कलप लग[5] पाईअहु आइ अराम ।। ६८ ।।
ब्रह्म वाक कहि संघता, परा पसंती जापु ।
मधमा, वैखरी जाप रसि चार वेद इस थापु[6] ।। ६९ ।।
नाराइन देवहै परा का, नर पस्यंती इशट ।
वागदेवी मधमा बसै, व्यास वैखरी शिशटि ।। ७० ।।
स्वास ठहिरावै नाभि घर उठे तरंगी तौज[7] ।
नाम भजन की जुगत इह मथरा[8] बखशी मौज ।। ७१ ।।
कहि करि साहिब सिह सुनहु, चुप कीनी, कलि गम[9] ।
इह साखी सतिगुर दई पड़ति सुनति सुख संम[10] ।। ७२ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते 'कलजुग प्रसंग' बरननं नाम पंच बिसती अंशु ।। २५ ।।

---

1. स्वभाव 2. सायुज्य मुक्ति 3. वृत्ति 4. तुम्हारी संभाल में दे दी है 5. तक 6. चार इन के देवता हैं 7. आनंद की लहरि उठेगी 8. कवि का नाम 9. कलियुग चला गया 10. सुख संयुक्त हो

अंशु २६

कवियनि प्रसंग

दोहरा

सभा सरब कवीअनि बिखै, इस बिधि भयो संबाद।
धन धन सभि ही कहै, रिदे अधिक अहिलाद ॥ १ ॥

चौपई

उठे प्रभु मंइर को गए। नाना रस अहार अचि लए।
पुन प्रयंक पर कर्यो अरामू। इस संबाद कविनि अभिरामू ॥ २ ॥
देश बिदेशनि महिं कवि गुनी। आवैं चले सु कीरति सुनी।
दरब करोरहुं लग बखशंते[1]। जुग लोकनि के सुखनि लभंते ॥ ३ ॥
अंम्रित राइ कवी इक आयो। करि कीरति को कवित लियायो।
मिलयो प्रथम हूं कीनि प्रणामू। बहुर सुनाइ सुजस अभिरामू ॥ ४ ॥

कबित्त

जांही ओर जाऊं, अति आदर तहां ते पाऊ,
तेरे गुन गन को अगाऊ गनै शेश जू[2]।
हरि चीरं मुकता जे, देति दिन प्रति दान,
तिनै देख देख अभिलाखति धनेश[3] जू।
गुनन मैं गुनी कवि अंमृत पढया मेरो,[4]
जब इतै हेरो प्यार कीज अमरेश[5] जू।
श्री गुरु गोबिंद सिंह छीर निधि पार भई,
कीरति तिहारी तूमैं कहि के संदेस[6] जू। १।

सुनि प्रसंन कलगीधर ह्वै के। राख्यो निकट मान बहु कै के।
रोज[7] दयो करि दरब घनेरा। इम सुनि सुनि करि सुजस वडेरा[8] ॥ ५ ॥

---

1. प्रदान करते थे 2. पहले से ही शेष नाम गिन रहा है 3. कुबेर 4. पढ़ने वाला है 5. देवताओं के स्वामी, गुरु गोबिंद सिंह 6. यह संदेश तुम्हें सुनाने के लिए आया हूँ 7. नित्य 2. बढ़ा, महान्

करण परब[1] भाखा तिन कीनी। छंद बंद सुंदर [गति लीनी।
लाख दरब की बखशि पाई। गुर की कीरति महिद[2] बनाई ॥ ६ ॥
हंसराम कवि परब बनायो। द्रोण पर्व कुवरेशा सुनायो।
इसी रीति वहु भाखा बनी। मिले आनि इसही बिधि गुनी ॥ ७ ॥
बावन कवि गिनती महिं नीति। रहैं निकट हरखावैं चीति।
इक दिन सतिगुर सभा लगाइ। बैठे हुते महां दुति पाइ ॥ ८ ॥
एक कवी चलि करि तहिं आयो। निज बिद्या हंकार बढायो।
कीन सवैया अरथ छपायो। अभिलाखति गुर ने परखायो ॥ ९ ॥
हाथ बंदि करि वंदन छानी। वैठि प्रभु के निकट बखानी।
देश देश महिं रावरि कीरति। जिस ते सुनयति बिसतीरति[3] ॥ १० ॥
सभि विद्या के गुनी बखाने। रहैं सभा तुमरी सनमाने।
छंद रचहिं लाखहु रहिं तीर। परखहु सभि के गुनी गहीर ॥ ११ ॥
एक स्वैया रच्या नबीना। अरथ अजाइब शुभ धरि दीना।
सभा आप की महिं नहिं ऐसा। जाहर कहैं अरथ को जैसा ॥ १२ ॥
सुनि हंकार समेत उवाचा। बोल्यो पातशाहु गुर साचा।
निज मति करिकै कीनसि जथा। सभा मझार उचारहु तथा ॥ १३ ॥
जिस प्रकार करिकै कवि ल्यायो। श्री सतिगुर को तबै सुनायो।
सभा बिखै सभिहूँ सुनि लयो। सो मैं इहां पाठ लिखि दयो ॥ १४ ॥

स्वैया

नवसात तिये[4], नवसात किये[5],
नवसात पिये, नवसात पियाए[6]।
नवसात रचे[7], नवसात बदे,
नवसात पया पहि दायक पाए[8]।
जीत कला[9] नवसातन की,
नवसातन[10] के मुख अंचर छाए।
मानह मेघ के मंडल मैं,
कवि चंदन चंद कलेवर[11] छाए।

---

1. महाभारत का एक पर्व 2, बहुत अधिक 3. विस्तृत 4. सोलह वर्ष की युवती 5. सोलह शृंगार किए 6. सोलह मास के पश्चात् प्रियतम आए 7. सोलह घरों वाला शतरंज का खेल 8. सोलह वाली विशेष चाल प्रिय की पड़ जीने के कारण वह जीत गया 9. बाज़ी 10. सोलह कलाओं वाले मुख रूपी चंद्रमा 11. चंद्रमा के आकार अथवा शरीर पर]

श्री कलगाधर सुनि मुसकाए। कहि चंदन को गरब्र गवाए।
इस जैसनि को अरथ बिचारन। हमरे घाही[1] करहिं उचारनि ॥ १५ ॥

इह लाइक कवियनि के नांही। मिलि आपस महिं करते घाही।
छंद सभा हमरी महिं सरसति[2]। जिनके पाठ करे रस बरसति ॥ १६ ॥

कवीयनि के हमरे हय- दास। पठति सुनति आनति जबि घास।
चंदन कवि गुर के बच सूने। बोल्यो धार करि अचरज घने ॥ १७ ॥

इक घाही को लेहु बुलाइ। जो इस के दे अरथ सुनाइ।
जिस ते आवै मोहिं प्रतीत। सभा गुरु की है कवि जीत ॥ १८ ॥

हेम लशटका जुति तहिं खरियो। प्रभु सुनि, तांहि पठावनि करियो।
आनहु धंनासिह हकारि। इसही छिन कुछ लगहि न बार[3] ॥ १९ ॥

सतिगुर हुकम मानि सो गयो। धना सिंह संग कहि दयो।
सुनिकै तिन सो बूझन कीना। किम सिमर्यो मुझ कहहु प्रवीना? ॥ २० ॥

चोबदार तवि कह्यो प्रसंग। जिम गुर भन्यो कवी के सग।
धना सिंह सुजान सभि जानी। सफल करी चाहै गुरबानी ॥ २१ ॥

बहुत मोल के बसत्र उतारे। जीरण मोट देहि पर धारे।
इक खुरपा[4] ले करि जुत जारी[5]। इकठी करि सिकध पर डारी ॥ २२ ॥

सभि घाही को वेख[6] बनायो। शंक बिहीन सभा महिं आयो।
गुर पद पदम कीन तबि नमों। उचति थान बैठ्यो तिह समो ॥ २३ ॥

श्री कलगीधर हुकम उचारा। इह कवि है मतिवान उदारा।
रचि करि आन्यो एक सवैया। अरथ बिचारहु देहु सुनैया ॥ २४ ॥

सुण धंना सिंह अरथ बखाना। तिय खोड़स वरखन बयवाना[7]।
तन खोड़स शिगार सुहायो। खोड़स मासन महिं पिय आयो ॥ २५ ॥

खोड़स घर को चौपर रचियो। खोड़स दाव लाइ सुख मचियो।
सोई खोड़स प्यारो ल्यायो। खोड़स की बाजी जै पायो ॥ २६ ॥

खोड़स कला चंद मुख जोई। हार पाय त्रिय छादति सोई।
मनहुं मेघ महिं निसपति छायो। इम अंचर महिं मुखि दरसायो ॥ २७ ॥

सत्तिगुर सहित सभा सभि सुनियो। अरथ जथावति जिम इह भनियो।
सुनि चंदन कवि तजि हंकारा। हाथ जोरि गुर साथ उचारा ॥ २८ ॥

---

1. घास खोदने वाला 2. श्रेष्ठ 3. देर, विलंब 4. घास खोदने का एक औज़ार 5. घास बांधने के लिए रस्सियों से बना जाल 6. वेष 7. आयु

महाराज ! बल नहिं बुधि केरा। करामात साहिब को चेरा।
गरब न चलहि आप के आगे। सिमरहि नाम बनावन लागे[1] ॥ २९ ॥
तबि कलगीधर बाक सुनायो। धना सिंह जु तोहि बनायो।
सो पठि. इस ते अरथ करावहु। सुनहु भले पुन आप सुनावहु ॥ ३० ॥
सभा बिखो जबि सतिगुर कहियो। आशै सकल सिंह ने लहियो।
कथहु अरथ जे करि लखि पायो। उभैं[2] सवैया कर्यो सुनायो ॥ ३१ ॥

स्वैया

मीन मरे जन के परसे कबहूं न भरे पर पावक पाए।
हाथी मरे मद के परसे कबहुं न मरे तन ताप के आए।
तीय मरे पीय के परसे कबहूं न मरे परदेश सिधाए।
गूढ़ में बात कही दिज राज बिचार सके न बिना चित लाए ॥ १ ॥
कउल मरे रवि के परसे कबहुं न मरे ससि की छबि पाए।
मित्र मरे मित के मिलिबे कबहूं न मरे जबि दूर सिधाए।
सिंह मरे जबि मास मिले कबहूं न मरे जबि हाथ न आए।
गूढ़ मैं बात कही दिज राज बिचार सके न बिनां चित लाए ॥ २ ॥

चौपई

घंना सिंह बनाइ सुनाए। चंदन कवि ते अरथ न आए।
रह्यो बिचारति थिर चिर काला। पुन लजा धरि रह्यो बिसाला ॥ ३२ ॥
भयो दीन तबि गुर अगुवाई[3]। मुख ते कछू न बोल्यो जाई।
महिंमा महां जानि प्रभु केरी। बिनती करति भयो तिस बेरी ॥ ३३ ॥
जे रावर की चरनी लागे। मूरख भी चातुर बड भागे।
कौन चहे समता तिन केरी। चहे जु होइ दशा जस मेरी[4] ॥ ३४ ॥
बोल्यो दीन गरब जबि हर्यो। श्री गुर सो भी राखनि कर्यो।
इसी प्रकार अनिक गुनवंते। सुनि सुनि जस को आइ रहते ॥ ३५ ॥
करि चरचा प्रभु को परचावैं। अनिक जुगत जुति कवित सुनावैं।
बखशिश[5] लेति महां मन भाई। रीझहिं रिदे गुननि अधिकाई ॥ ३६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते **'कवियनि प्रसंग'** बरननं नाम खशट बिसती अंशु ॥ २६ ॥

1. कविता बनान लग जाता है 2. दो 3. सामने 4. जिस प्रकार मेरी हुई है 5. कृपा का प्रसाद, दान

अंशु २७

जपु सलोक महातम प्रसंग

दोहरा

इक दिन गुर कहिं सभा महिं श्री अरजन की रहित।
कलि महिमा सुखमनी बहु जपुजी महिमां महित[1] ॥ १ ॥
जिन के सेवन ते मिटैं बिघन कलुख समुदाइ।
नित पाठ चित प्रीति ते अंत भली गत पाइ ॥ २ ॥
सुनि करि तबि नंदलाल इक पंडत पिंडी लाल।
दोनहुं बूझनि लगे शुभ महिमा जथा विसाल ॥ ३ ॥
श्री अरजन जी रची ए[2] श्री नानक जपु कीन।
श्रीमुख ते बरनहुं अबै जथा महातम पीन ॥ ४ ॥

चौपई

इतने बिखे नंद सिंह कहियो। महाराज मैं अचरज लहियो।
बिच सराइ के इक सिख हेरा। तिस महिं प्रविश्यो प्रेत बडेरा[3] ॥ ५ ॥
इतनो ई प्रस्ताव चलाए[4]। कवी गुनी गन गुर ढिग आए।
पठनि सुननि को परचा जोइ। जिन के संग करैं रस सोइ[5] ॥ ६ ॥
[6]बिधीचंद पंडत ब्रिज लाल। खान चंद, अरु चंद निहाल।
मानदास बेरागी जेब। सैन पति पंडति सुखदेव ॥ ७ ॥
आलमशाह, मदन गिर आयो। ब्रिखा सुखू, गुनीआ भायो।
गुना, अली हुसैन अल। उदेराव, रावल, कवि बल ॥ ८ ॥
सुखीआ, धरम सिंह अरु चंदा। बलभ कवि, कुवरेश बिलंदा।
मघू, लखा, ईशुरदास। ध्यान सिंह, धंना सिंह दास ॥ ९ ॥
हंस राम आदिक, कवि और। बिद्यावंतनि के सिर मौर।
प्रिथक प्रिथक सभि टेक्यो माथा। बैठे सभा देखि गुर नाथा ॥ १० ॥

---

1. बड़ी 2. अभिप्राय-सुखमनी 3. बड़ा 4. प्रसंग चल रहा था 5. जिन के साथ गुरु जी रसिक वार्तालाप करते थे 6. गुरु जी के दरबारी कवियों के नाम

इन पशचाती आइ शिताबी[1]। सदू मदू दोन रबाबी[2]।
किरतन[3] करनि लगे तबि आए। थिर चित जबहि थिरे समुदाए ॥ ११ ॥
तत्रि श्री मुख ते उतर कह्यो। प्रेत लग्यो जिह सिख को लह्यो[4]।
सो नहि पढति होग जपु रसना। जिनहुं कंठ तिन पर कछु बस ना ॥ १२ ॥
निकट खालसा गुर वच सुनियो। बूझनि कारन नीके भनियो।
श्री प्रभु पातशाह गुर साचे। दिहु बताइ संसै चित राचे ॥ १३ ॥
लेति मुकति जपु पाठक जोइ? कै सरीर की रछा होइ।
इह निरनै हम पावहिं जैसे। सिखन हेत उचारहु तैसे ॥ १४ ॥
श्री मुख ते फुरमावन कीन। अम्रित फल किसहूं कर लीन।
जो अचि लेह अमर हुइ जाइ। भूख त्रिखा भी दुख बिनसाइ॥ १५ ॥
अम्रित फल जिम दोनों करे[5]। तथा शकति जपुजी जुग धरे।
तन की रछा मुकति पदारथ। दे दोनों के सदा सकारथ[6] ॥ १६ ॥
सुनि करि तबि पंडति ब्रिज लाल। बिनती करति भयो तिस काल।
पातिशाहु सुनि मेरी बात। इक दिन सुपने महि बिख्यात ॥ १७ ॥
श्री नानक को दरशन कीनो। जनम क्रितारथ में निज चीनो।
परम अरथ जपुजी को होइ। मै भी सुन्यो, सुणावौं सोइ ॥ १८ ॥
कर्यो शलोक सुनावन चहौं। तहि ते सुनि जेतिक मैं लहौं।
सतिगुर तबै उचारन कीनो। गुरघर को पंडत मति पीनो ॥ १९ ॥
गुर महि तुव प्रतीत है भारी। सुन्यो जथा अबि करहु उचारी।
सुनि कलगीधर ते दिज बर तबि। कर्यो सुनावन आशे निज सबि ॥ २० ॥

श्लोक

हरि शत्रुनि मम ग्रिहे दिवार त्नोहि दुख दानि।
त्नाहिमा द्रस्य गुरो स्वपन सलोकोकति उकतवानि[7] ॥

---

1. शीघ्र 2. मुसलमान गायकों के नाम 3. कीर्तन 4. देखा है 5. दो प्रकार के प्रभाव पड़ते 6. अच्छी बुद्धि वाला 7. इस श्लोक की भाषा बहुत अशुद्ध है तथापि इस का अर्थ इस प्रकार बैठ सकता है—हे गुरुदेव ! मेरे घर से रात-दिन दुःख देने वाले शत्रुओं से रक्षा करो और मुझे अपना दर्शन भी कराओ जो श्लोक रूप वचन के द्वारा प्राप्त हुआ

चौपई

इम पड़िओ पंडत ब्रिज लाल। पुन बोल्यो संगत के नाल[1]।
श्री नानक गुर अरजन जोऊ। स्वपन बिखे दरसे तबि दोऊ॥ २१॥
तहां सुन्यो सो करहुं सुनावनि। सुनहु भले शुभ चरचा पावन।
महिमा गुर बच अर गुर केरी। कहैं कौन जो बडिहुं बडेरी[2]॥ २२॥

श्लोक

घोखे च प्राणे गुणे द्रब्य लाभे भरम विरकतो सुर सेवने वा।
योखत सु दासे सत पुत्र याने सग्रहि सुभावे रिसटो परमदे।
मनो निरोध युधि सति प्रग्रहे धरमच नीतौ दाने गुण करे।
ऐते खु करयाति सतिनाम बाणि मां कारि मादो कलिस दधान[3]।

चौपई

सुनिकै संगति बहुर सुनायो। सुपने महिं सलोक सिख आयो।
भाव अरथ इसको समुझावो। कहि श्री मुख ते आप सुनावो॥ २३॥
सुनि कलगीधर उच्रयो नीको। जानहुं परम मंत्र जपुजी को।
अहैं मानसी पंची अछर[4]। बांछति दे सिम्रयों जिन रिद धरि॥ २४॥
तिसको अरथ कर्यो गुरद्याल। हित सिखनि के करन निहाल।
बरन पचीह अजपा जपै। कै रसना रस ते मन रपै॥ २५॥
तिस ते दूखन, दुख, रुज[5] तीन। बात पित कफ करता हीन।
मुकति जुगति उतम पद पावै। सुखी होइ नहिं अवगति जावैं॥ २६॥
जे भोजन पर करहि उचारनि। वधै रिधि हुइ अन बिकार न।
सुख सों पचहि, न रुज उपजावैं। कालरहित[6] हुइ दोख मिटावै॥ २७॥
दरब लाभ महिं, धरम मझारा। बीच उदासी के सुखकारा।
इसत्री ब्याहनि, सुत उपजंते। देश बिदेशन को गमनंते॥ २८॥

---

1. साथ 2. बड़ी से बड़ी, अधिक से अधिक 3. मुक्ति में प्राणों की रक्षा में, गुण और धन के लाभ में, धर्म में, उदासीनता में, देव पूजा में, आज्ञा का पालन करने वाली स्त्री में, श्रेष्ठ पुत्र के प्राप्त करने में, यात्रा करने में, श्रेष्ठ स्वभाव के ग्रहण करने में, दु:खदायकों को प्रसन्न करने में, मन को रोकने में, युद्ध में अस्त्र ग्रहण करने में, वशीकार प्राप्त करने में, धर्म नीति में, दान में, गुण एकत्र करने में और कलियुग में सही स्थिति को प्राप्त करने के लिए उस वाणी को ग्रहण करे जिसके आरंभ में ओंकार शब्द आता है 4. पचीस अक्षरों का 5. भाव रोग यथा काम, पित्त, वात 6. दीर्घ आयु वाला होगा

जुध चढनि महिं शसत्र प्रहारनि। होनि अरूढनि बाजी बारन।
सुर पूजन महिं मोहन करन। सिमरनि करि है पचीह बरन[1] ॥ २९ ॥

सदन प्रवेशनि, बाहर जान। इत्यादिक जे काज महान।
मसतक नम्रि करहि गुर आगे। द्रिड प्रतीत करि सिमरन लागे ॥ ३० ॥

दे दसवंध गुरु को सिख। करन कराह[2] करहि सुभाविख।
दान देनि लेत महिं प्राहि[3]। अति सुभाव की पलटन मांहि ॥ ३१ ॥

भूत, कि प्रेत, डाकनी डीठि। सहित प्रतीत पठहि दिढ नीठ।
सुपने महि श्री अरजन कह्यो। दिज ब्रिजलाल सु पंडित लह्यो ॥ ३२ ॥

दसमे पातशाहु गुर साचे। लिखवाए श्री वचन उवाचे।
आगे लागे लिखनि लिखारी। जिम महिमा बिधि सहित उचारि ॥ ३३ ॥

दोहरा

चलन समै, संगहिण महिं,[4] दान देनि औ लेनि।
अति सुभाव की पलट महिं, भूत डाकनी सेन[5] ॥ ३४ ॥

मन जीतन, रण महिं धरा[6] राज काज सुखवाहि।
मिलने गिलने बंधु महिं राज जोग उतसाह ॥ ३५ ॥

इन कारज की अटक महिं पंच पचीसा जाप।
छत्री अठती जाप करि लाख अरध ते लाख ॥ ३६ ॥

बरण पंच पचीस के अथवा छती[7] होइ।
जप हजार सम वरण कै पाठ करहि नर जोइ ॥ ३७ ॥

करै होम गुरमुंत्र को सकल बिघन दे शाप।
कारज हुइ बंधन तुटैं श्री मुख गुरु प्रताप ॥ ३८ ॥

ब्रहमण विदिआ युत पढे एक भाग दुइ मूड।
छत्री तैं शूद्रं चतर, साढे त्रै विश[8] गूड ॥ ३९ ॥

ग्यानी, ध्यानी, जोगधरि, करमी, सुक्रित[9] मध।
उतना ही लिखिआ सही जे गुरशरधा सिध[10] ॥ ४० ॥

---

1. पचीस अक्षरों का मूल मंत्र 2. कड़ाह प्रसाद 3. पढ़ना, जपना 4. संग्रह में, सभा में, संग्रह करते समय 5. दृष्टि, नज़र 6. शस्त्र धारण करते समय 7. कुछ विद्वान् मल मंत्र के 'गुर प्रसादि' तक 36 अक्षर गिनते हैं 8. वैश्य 9. शुभ कर्म करने वाला 10. सही

गुर प्रसदि लग मुकतिमय, पंच ग्यान के जोग।
हिरदे शोधन संग्रह मैं पची लगि संयोग ॥ ४१ ॥

प्रथम मारजन होम बिधि लिखि करि सभि समुझाइ।
महा महातम मंत्र इह चार पदारथ दाइ ॥ ४२ ॥

ओअंकाराय नमह। १। सत्याय नमह। २।
तग्याय नमह। ३। नाराइणाय नमह। ४।
मख्याय नमह। ५। करत्ते नमह। ६।
रखत्ते नमह। ७। तारकाय नमह। ८।
पुरखोतमाय नमह। ९। रुकमा करत्ते नमह। १०।
खातमने नमह। ११। निरंजनाय नमह। १२।
रथांगातमने नमह। १३। भवांतकाय नमह। १४।
उत्तम यससे नमह। १५। नित्त रूपाय नमह। १६।
रजातमने नमह। १७। बैकुंठाय नमह। १८।
रमाय नमह। १९। अखराय नमह। २०।
कालाय नमह। २१। लखमी पतियाय नमह। २२।
मूरति धाराय नमह। २३। रमापतीये नमह। २४।
तिलोकेशाय नमह। २५। अख्याय नमह। २६।
जगदीशाय नमह। २७। निराकाराय नमह। २८।
सदमेसाय नमह। २९। इकार वाग वाइने नमह। ३०।
भंजनाय नमह। ३१। उकाराय नमह। ३२।
स्वाहा प्राण हुतो जपु इति। सिख सुखाय नमह। ३३।[1]

1. यह 'सौसाखी' का उद्धरण है। इस में लेखक ने 'जपु' वाणी के मूल मंत्र के शब्दों के प्रथम अक्षर लेकर उनके आधार पर परमातमा के नामों का स्मरण किया है

अखर छतीस पंच पुन पंची तत सुजान।
गुर प्रसादि पढि अग्र त्यै लखहु सिख बुधिवान ॥ ४३ ॥

अरु लिखिबे[1] मैं बरन अठ, पांच प्राण के मांझ।
पंची सभि विवहार में छतीस लखि गुन सांझ ॥ ४४ ॥

छतीस लाख आहूति दे मुकति होइ ततकाल।
जप ते आतम शुध हुइ मारजन दुखन टाल ॥ ४५ ॥

प्रथम सलोक जपु को भलो तिस की बिधि कहिदीन।
आगै सभि पौड़ीन[2] को कहैं सु सुनहु प्रबीन ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते **'जपु सलोक महातम प्रसंग'** बरननं नाम सपतबिसती अंशु ॥ २७ ॥

---

1. पत्र लिखते समय 2. पंजाबी भाषा का एक छंद विशेष जिस का सामान्यतया प्रयोग वीर-काव्य के लिए होता है

अंशु २८

जपु महिमा प्रसंग

दोहरा

श्री जपुजी पौड़ी प्रथम करहि कामना पूर।
पाठक सभि दुख पाइकै बिघन बिनासै कूर[1] ॥ १ ॥

आशा पर दूजी पड़ै आदि सचु जिह नाम।
देव मंत्र अर चलन मैं, औशधि, रसायन[2], शाम[3] ॥ २ ॥

बिपदा कारज हान महिं 'गावहि को' रहि[4] लागू।
कारज काहूं अटक महिं देय भेट गुर भाग ॥ ३ ॥

नव घर, नव गुण संग्रहे चौथी को करि ध्यान।
जपु जपु सम पड़ि सपत दिन सपत भेट धरि मान ॥ ४ ॥

उदम पंज जुध मैं छेवीं, सपतम बंध[5]।
अटकी[6] नारी आठवी, नावीं मंत्रहि संध[7] ॥ ५ ॥

दसवीं दसदे वनज जै वाहन लैबे बीच।
चड़ने क्रिय विक्रय विखे ग्यारा पौड़ी खीच ॥ ६ ॥

बाहरी[8] पड़ कलपन करे दुख अरिशट को नाश[9]।
तेरा ते सिधन भजै कारज राजसि रास ॥ ७ ॥

जंत्रनि महिं चौदस कह्यो, पंचदशी ते भूत।
खोड़सि ते डाकन तजै सतदस भोजन कूत[10] ॥ ८ ॥
पड़हि अठारहि आठदस नित उठि विद्या हेत।
खट माहे विद्या वधे[11] निरमल बुधि सुचेत ॥ ९ ॥

---

1. कठोर 2 रसायन बनाते समय 3. शरण में जाते समय 4. वह पउड़ी जिस का आरंभ 'गावहिको' से होता है 5. किसी बंधन में पड़ते समय 6. प्रसूत काल में पड़ी रुकावट 7. किसी द्वारा किए मंत्र के प्रभाव को नष्ट करने के लिए 8. बारहवीं 9. आधि, व्याधि और उपाधि का नाश हो जाएगा 10. मनोमोहक भोजन प्राप्त हो 11. वृद्धि होगी

उनी सुनी जोग महिं, बिसी नार संयोग।
संतति हित इकीसवीं, म्रित सुत बावी जोग ॥ १० ॥
तेई रिधन अखुटमैं चौवी चातुर प्रीत।
पंच विसवी आदरे सभि को मोहन रीत ॥ ११ ॥
छवी छल मैं, बल धरे सपतविंश का जापु।
आठाविंस भै दूर को होइ बज्र सम पापु ॥ १२ ॥
विख पीवै विखीआ कटे उनतीसे का झाड।
दूध वधावै वजन मैं तीस पौड़ीआं गाड ॥ १३ ॥
एकी छेको[1], दोकी भागे त्रै,[2] तेते इक ताप।
नित ज्वरी चौती पड़ै चाली चाली मापु ॥ १४ ॥
करम मांझ दस को पढै अरथ माहि वीह पाठ।
तीह कामना संचरति, चाली मुकत सु राठ ॥ १५ ॥
पैंतीं पंगत, छती गढ़, सूर काज सैंतीस।
अठती मिलने साध के, कै न्रिप पौर असीस ॥ १६ ॥
उनताली तन देव को चाली चतर भुज रूप।
चार भांत जप लिखि हुते भोजन अखै सरूप ॥ १७ ॥
जप महिमा पौड़ी पड़ै करिहै गर सन प्रीत।
निहचा जांका गुरनि मैं होइ सफल तिह रीति ॥ १८ ॥
इह जप गुर अरजन सबिधि[3] गुर नानक मुख मंत।
लिख्यो सु कर गुर राज[4] सतिगुर सनमुखि सुख संत ॥ १९ ॥
सभि साधन प्रगट कीए नहिं दुशट को देह।
फलहि सख परतीत ते विप्र साध की सेव ॥ २० ॥
उसतति निंदा पर हरै, कलहि ईरखा मान।
बेद बचन सम गुर बचन सभि संतन परमान ॥ २१ ॥

स्वैया

जपु जापु किये अध कोट हरै, नित दान वधै[5] बुधि सार धरै।
मन भाव वधै सुख काम सधै, सुरसाधन[6] मै तम पुंज हरै।
धन मैं, तन मैं, वर मैं, सुत मैं, अरु नारि विखै सभि दोख टरैं।
जिह प्रीत नहीं, परतीत नहीं तिस को सिख देहि, सु दोख करै ॥ २२ ॥

---

1. एक ताप विशेष 2. ताप विशेष 3. विधिवत रूप दिया 4. गुरु राम दास 5, बृद्धि हो 6. दैवी साधनों में

जिस की बिधि एह कही गुर पूरन ह्वै सिख प्रापत साधन ते ।
सभि पाठनि गीत खड़ंगन[1] ते उपज्यो फल को तत जोगन ते ।
तिम साधन सिध सुचेत भली बिधि काज सरे सुख भोगन ते ।
सभि सिध कीए गुर भेट दीए इह बीज धरे गुर मोदन[2] ते ॥ २३ ॥

दोहरा

गुर नानक करुना करी पंथ बतायो सिख ।
गुर अरजन बरनन करी अरथ ख्याति भा लिख ॥ २४ ॥
सुपनि बात परगट करी सतिगुर पूरन ख्यात ।
इहां अरथ बिदताइ सो लिख्यो जु सिख सुहात ॥ २५ ॥
पाठक पर पूरन क्रिपा अरजुन गुरु प्रताप ।
देखि पड़े, दे लिख[3], सुने करि पूजा, गुर जाप ॥ २६ ॥
कलजुग मैं चहु वरण को चार भांत का जाप ।
परा, मधमा, वेद कहि पसयंती जिस माप ॥ २७ ॥
बैखरी चारे थान महि तन मैं करि हो वास ।
प्रकट होत मुख महिं वसहि सभि नर करति प्रकाश ॥ २८ ॥
नाभी पहिली, रिदे दुइ, कंठ त्रिती मुख बोल ।
जिउं किउं पठ फल अधिक हुइ इही जाप को मोल ॥ २९ ॥
जाप अजपा जप पठहु दिजबर कुल नंद नंद ।
गुर अरजुन ढिग दास को पाइओ परमानंद ॥ ३० ॥

चौपई

इस बिधि पंडति पिंडी लाल । बिधीचंद, नंद लाल, गुपाल ।
खान चंद, अरु आलमशाहू । साध सदन गिर सुनति उमाहूं[4] ॥ ३१ ॥

दोहरा

[5]मान्यो गुर ते रात को उड्यो विहंगम भांति ।
भेट्यो पुरख पूरन तहां पुछ्यो पुन को शांति ॥ ३२ ॥
तीन वार गुर इव कही इह जपु रतन अमोल ।
जांते मुझ को भेटिओ इही अंत को चोल[6] ॥ ३३ ॥

1. छः प्रकार के वेद पाठ से 2. प्रसन्नता से 3. दूसरों को लिख कर देता है 4, गुर-दरबार में रहने वाले पंडितों और साधूओं की नामावली 5. ब्रजलाल फिर अपना कथन प्रारंभ करता है 6. अंतिम जन्म है

'इको ओअंकार' कहु पुन 'सतिगुर प्रसादि'।
'सति नाम करतापुरख' जपहि जाप अहिलाद ॥ ३४ ॥
जपे जाप तनताप खपु आरबला बध[1] जाइ।
करहि कामना जथा उर तथा जाप ते पाइ ॥ ३५ ॥
नारी सुत के कारने अख्यर जप अरधैन[2]।
सकल काम साधन सिधै, साधक सुख बहु चैन ॥ ३६ ॥

श्लोक

शुभं प्रभाते स्वरथे च मधये कामे पराह्ने मोखयेच सिधये।
मोहन प्रदोखे वसतैक यामे रिपूदघातै रन्ांन्यरद्य बीते।
मुकती परायणे प्रहरेच शेरवे शूरजोदएच किं नैव सिधयं।
इदं फलं वै विरचतं दिजे नौ श्री गुरुकरं श्री केशवे नां[3]।

श्री गुरु अरजन बचन जबि सुन्यो सिख सुखदाइ।
ता दिन ते घर सुरपडे[4] मिट्यो दूख को भाइ ॥ ३७ ॥
अबि सुनीए इक जप पड़ै सतिगुर सिख के संग।
भुगत मुकति बखशी गुरु दरगहि जाहि निसंग ॥ ३८ ॥
सभि प्रसंग के अंत महिं कहिं दशमै पातशाहु।
कर्यो नेम नित जप पड़े सभि बय लग निरबाहु ॥ ३९ ॥
आतम दरसी की गती प्रापति तिस को होइ।
रहे संग तिह सतिगुरु पाइ सहाइक सोइ ॥ ४० ॥
जिउ धने की धेनु को ठाकर चारे नित।
करि प्रतीत नित जप पड़े तिम तिह सतिगुर मित ॥ ४१ ॥
पड़ै सुनै चित लाइ कै जो लिखि देय सप्रीत।
मन चिंतति फल पाइकै तरिहै सुख भै भीत[5] ॥ ४२ ॥
भेटा करि उपदेश गुर तबी फलै गुर सिख।
जथा शकति जप को जपै सिध होइ गुरमुख ॥ ४३ ॥

---

1. बढ़ जाए 2. आधान, गर्भ 3. इस श्लोक में विभिन्न कालों में किए गए पाठों का माहात्म्य बताया गया है। इस श्लोक की भाषा शुद्ध प्रतीत नहीं होती 4. पाठांतर 'सुरग में'—स्वर्ग में 5. अभिप्राय—संसार

'आदि सच जुगादि सच है भी सच' बखान।
'नानक होसी भी सच' इस पौड़ी पड़हु प्रमान ॥ ४४ ॥
सिरै मंत्र पौड़ीअनि इह पौड़ी लखि सार[1]।
अंत समै चलिदै गुरु कीनो इही उचार ॥ ४५ ॥
सति नाम सतिगुर प्रसादि सिध मंत्र इह जान।
राम कुइर भाखै भले साहिब सिंह सुनि कान ॥ ४६ ॥
हम भी जब कबि जपति हैं इही मंत्र बर सार।
गुर धरि कै अवतार को कीनो जगत उधार ॥ ४७ ॥
सतिगुर चलित दिखाइआ देह धारिकै मीत।
सभि देखा सतिगुर चलित सिमरैं अहिनिस चीत ॥ ४८ ॥
एक बार सतिगुर कह्यो मंत्र जंत्र कलि मांहि।
लोग करहिंगे जगत महिं मेरा सिख न चाहि ॥ ४९ ॥
एक समै मंत्री बहुत घरि घरि बाजहि बाज।
जप तप निहचा न रहै करिहै देखति साज ॥ ५० ॥
जैसी गुर की भावना तैसी गति हुइ शकति।
शरन भजहु श्री राम की कलिमहिं निहचा मुकति ॥ ५१ ॥
वाहिगुरु[2] इह मंत्र जपु सगल सरैंगे काम।
सिख गुरु के हित करहु नित सवार अराम[3] ॥ ५२ ॥
घोड़ा अटक्यो चलति ही बडो कुध इक बेर।
सतिगुर बोले मदनसिंह ! घोरा घास जु हेर[4] ॥ ५३ ॥
देखति निकस्यो घाह महिं परा तमाकू रंच।
बोले सतिगुर पाहुली[5] इस ते रहै सकुंच ॥ ५४ ॥
मेरे घोरे घाह महिं देखि संभारो सिख।
दुशट बीज तुरकन कर्यो हिंदी तोरि रिख[6] ॥ ५५ ॥
हिंदू हलका मुकति है तजै दुशट गुरवाक[7]।
जहां तमाकू होति है सो खेती नापाक[8] ॥ ५६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंयम रुते 'जपु महिमा प्रसंग' बरननं नाम अशट बिसती अंशु ॥ २८ ॥

---

1. सार रूप समझो 2. परमात्मा 3. रात दिन 4. घोड़े के सामने पड़ी हुई घास को देखो 5. जिस व्यक्ति ने गुर गोविंद सिंह का अमृत पान किया हो 6. हिंदुस्तान के ऋषि की शक्ति को समाप्त कर दिया 7. हिंदू किसान इस दुष्ट वस्तु को बीजना छोड़ दे और गुर-वाक्य को माने 8. अपवित्र

अंशु २६

सिर मुंहाविन द्विज को प्रसंग

दोहरा

इस प्रकार कहि सतिगुरु सदन प्रवेशे जाइ।
बहुर सभा मंहि थिर भए मिले सिख समुदाइ ॥ १ ॥
भलक भयो सतिगुर सभा सिख संगति की भीर।
हाथ जोरि सतिगुर पुछे सुलतानी[1] सिख बीर ॥ २ ॥
दोइ भ्रात को उमगता खत्री तन सुलतान।
पाड़े संगत सुवन दो[2] कहैं तमाकू कान[3] ॥ ३ ॥
श्री सतिगुर बोलति भए मेरी बात प्रतीत।
सकंध संघता शिव कहा कथा भविखत रीत ॥ ४ ॥
सकंध पुछा—हे पिता जी ! जगत जूठ क्या निंद।
कलिजुग कैसे वरतीए, इहु[4] किन कीन मुनिंद[5] ॥ ५ ॥
शिव कहिना—सुन पूति हित जांकी चरचा आहि।
अघ मरखण[6] ते शुधमन छुहे गंग जल नाइ ॥ ६ ॥
खावति जपु तपु नाश हुइ, मत्र भ्रिसट कियो पान।
खेती मगहर सम जिमी सुध बरखते[7] जान ॥ ७ ॥
कथा सुनो सतिजुग नहीं, त्रेता नहिं जुग दूज।
नेम नाथ न्रिप पंड कुल प्रजा दुखाइ अकूज[8] ॥ ८ ॥
प्रजा वार टूटी[9] जबै दुखति भए सभि लोगु।
पीर मलेछ पशचम तपे तापहि गए ससोगु ॥ ९ ॥

---

1. पाठांतर—मुलतानी 2. संगत नामक व्यक्ति के दो पड़े हुए पुत्र थे 3. तम्बाकू के लिए क्यों रोकते हो 4. तम्बाकू के लिए 5. मुनि राज 6. ऋग्वेद का एक मंत्र जिस का पाठ पाप विनाश के लिए किया जाता 7. वर्षा से 8. अकारण 9. सहनशीलता की सीमा जब टूट गई

तिन मेले बुरकान न्रिप बडा मलेछनि राज ।
तांके घर अजमेर सुत संगी प्रजा समाज[1] ।। १० ।।

मुनि रूप दिखि देश मनु[2] गयों सु पुशकर माझ ।
शिवबन गहिबर ग्वाल अज[3] पाइ खोज इक सांझ[4] ।। ११ ।।

तिन कहिआ सुनि साध जी मुहि जल पात्र सु चोइ[5] ।
प्रगट्यो नर मुहि कहि उठ्यो मांग, धरन जसु होइ[6] ।। १२ ।।

लेता[7] को तप करतबो इक दिन तहिं अजमेर ।
पुरख वाज[8] गो मेघ कयो औखध दे सिध तेर ।। १३ ।।

पशचम गोमेधी धरन सिध खाल ते ल्याइ ।
इहां आइ परगट कियो वधी मेलेछी दोइ ।। १४ ।।
अजापाल राजा भयो ताकी बेटी सुंठ[10] ।
मुनि सुत जीता पान ते पूठी पीर समुंठ ।। १५ ।।
गऊ मेध के कुंड ते उपजी पापनि पाति ।
जपु तपु ब्रत संजम दहैं तीरथ फल सभि खाति ।। १६ ।।
गो हत्या सम जगत जूठ पीर अजमेर लिआइ ।
हिंद देश फैलति सही कलि की ऐसी वाइ[11] ।। १७ ।।
पोते थोम अरु करन[12] ते होइ तमाकू निंद ।
मन मुरता स्वै इशट ते तांते तजि पूतिंद[13] ।। १८ ।।
जां दिन खाइआ बीज तिस त्यागी भू-सुर पितर ।
सोई दिज केशव कह्यो साची त्यागी मित्र ।। १९ ।।
तांते हम छोर्यो सुन्यो संगती बरजि ।
कथा इही बरनन करही देख कलंकी खरज[14] ।। २० ।।
सुनो सिख मम रहित जो तजहु तमाकू संग ।
मरन मरे तो अति भलो जगत खूठ नहिं अंगि ।। २१ ।।
तनक तमाकू सेवीए देव पित्र तजि जाइ ।
पानी तांके हाथ को मदरा सम अघ दाह ।। २२ ।।
मदरा दहिता सपति कुल भंगु[15] दहै तन एक ।
शत कुल दहिता जगत जूठ निंदा दहै अनेक ।। २३ ।।

---

1. प्रजा का साथी बना कर भेज दिया 2. मनु के देश में अर्थात् भारत में 3. बकरियों का 4. सायंकाल 5. दूध डाल दूं 6. धरती पर मेरा यश हो 7. वर को प्राप्त करते ही 8. मुनि ने आवाज दी 9. सुंदर 10. छलने के लिए 11, ऐसी वायु चल पड़ी है 12. गाय के कान से 13. पुत्र 14. निष्कासित करना 15. भांग

तजै तमाकू मनुख कलि उधारआ दर परवान।
पूरी परी तिस भावना सफल कमाई मानि ॥ २४ ॥
शासत्र अखाजि याको कहै, कहै अपेया मद।
निंदा करहि इह नीचनी पुरख कु संगु कुबुधि[1] ॥ २५ ॥
घोड़ी चढ़ना खत्रि का, बिप्र चडै जो बैल।
घोड चढ़े संन्यसत जो, नारी पुरखन खेल ॥ २६ ॥
पंडित इरखा वान जो, शूद्र पछ[2] महि बिप्र।
राजा हुइ वढी[3] लए, मतसर ज्ञानी खिप्र[4] ॥ २७ ॥
कन्या जारी, ब्रिध काम[5], बहु नारी परसंग।
ब्याह दाम दे, खर वीरज लैं[6], बैल निपुंसक पंग[7] ॥ २८ ॥
धेनु लादु, पर बसत्र ले, उचिश्ट भोग,[8] कुल रीत।
जीव जीवका अप हरे, चुगली तोरे प्रीत ॥ २९ ॥
धिक जीवन इह पाप है सुरग न लहि किह काल।
सिदक छोरि गुर बचन हति दोख अणगणै भाल[9] ॥ ३० ॥
दस करमनि के सालसी[10] कायां मन अर बाच।
चार बरन महिं साध सो, जम ग्रिह जाइ न साच ॥ ३१ ॥
हिंसा, परत्रिय, परद्रव, तीन तजै इह देह।
बुरा न चितवै आन का असत वेसतु नहिं केह ॥ ३२ ॥
पर नारी चिंता तजै, तीन मानसी त्याग।
परुख, असति, सालाघ नहिं, अरित मंद तजु वाग ॥ ३३ ॥
पीछे भूला बखशीऐ, सदा करै द्रिढ मूढ़।
कहिनी ए रहिनी सदा श्री गुर बखशी गूढ़ ॥ ३४ ॥
नाम जपन द्रिढ़ साधना सिख हमारा सोइ।
तरन उपाव तां इह[11] कहे डूबन कहे न कोइ ॥ ३५ ॥
समता नमतावंकता[12], सिदक साबती जांहि।
सो मेरा नित मिल्यो मुहि मन तन मुहि तिस आहि ॥ ३६ ॥
मरने का सहिसा नहीं जीव न लीना नाम।
सभि दोख संसकत[13] महिं मोहि बिगारा काम ॥ ३७ ॥

---

1. इन की संगति में रहने वाला पुरुष मूर्ख है 2. पक्ष 3. घूस 4. ईर्ष्या में खपत ज्ञानी व्यक्ति 5. वृद्ध स्त्री के साथ काम भोग 6. खच्चर उत्पन्न करना 7. चुभोना 8. जूठा भोजन खाना 9. मस्तक पर अनगिनत दोष लिखे जाते हैं 10. उपेक्षा वृत्ति रखने वाला 11. तो यह 12. नम्रता और सरलता 13. आसक्त, अनुरक्त

खादे की उपमा बुरी, बुरी खुशामति नित।
बुरा बहुत बोलन अधिक, बुरा परबती[1] मित ॥ ३८ ॥
नाम न छोरे, शसत्र हित, सिख समाला होहुं।
खुजति तरक[2] न कीजीए मेरी करै न सौंहु ॥ ३९ ॥

चौपई

इक दिन पिखि सतिगुर की मरज़ी। संगत हाथ जोडि किय अरज़ी[3]।
साचे पातशाहु ! इह[4] कहीए। चतुर बरण मुडति ही लहीए ॥ ४० ॥
पूरब तीन जुगन की बात। सुनी पुरानन महिं बख्यात।
सभि के सिर पर हुते सुकेश। शमस[5] मूछ को धरति विशेश ॥ ४१ ॥
किस प्रकार सभि मुंडन भए। झगरनि अबहि बंधी पख लए।
जग होयहु सगरो इक सारे। जे बूझहिं कहिं श्रुती उचारे ॥ ४२ ॥

कबित्त

सुंदर सरूप ते करूप बन रोडे[6] होति जैसे भूप दंड देति नैक ना शरम है।
मल मूत बासन मलीन ते मलीन महां, सिसनू लगति ऊच नीच के चरम है।
पाक मुख मूंड पै निपाक[7] को फिरावै नित आगे करि देत जैसे रांड को करम है।
शोभा लोक गाति, परलोक की बिगारै मूढ, मुंडन कराए फेर भाखते धरम हैं ॥ ४३ ॥

चौपई

इह किम होए करहु बतावन ? आप पंथ मोहिं करे रखावन[8] ?
सुनि श्री कलगीधर तिस काल। कह्यो प्रसंग सभिनि के नाल[9] ॥ ४४ ॥
राज पांडवन को छै भयो। चिरंकाल बहुरो बित गयो।
भूप नंद के[10] भे छित मालिक। वध्यो[11] राज बहु शत्रुनि घालिक ॥ ४५ ॥
छीन लीन भूपति समुदाई। फेरी सभि जगु अपनि दुहाई।
चारों बरन चले अनुसारे। परसराम सम छत्री मारे ॥ ४६ ॥
डेढ हजार बरस तक राजू। करनि रहे बड भयो समाजू।
संग्या सभिनि नंद के रही। एक बिसाल वध्यो तिन मही ॥ ४७ ॥
जे महीप तिन देश निकारे। तिन ते रिदे त्रास इम धारे।
बिप्रन ते बरनी[12] करिवाइ। मेरो राज देहिं बिनसाइ ॥ ४८ ॥
दुरि दुरि मंत्र जाप दिज करैं। मो ते राज तेज सभि हरैं।
करैं इकत्र सचिव निज सारे। अपनो त्रास सुनाइ उचारे ॥ ४९ ॥

---

1. पहाड़िया 2. तर्क वितर्क 3. प्रार्थना 4. यह 5. दाढ़ी 6. मुंडित सिर 7. उस्तुरा 8. केश रखवाए हैं 9. साथ 10. के पुत्र 11. वृद्धि हुई 12. मंत्रजप

मिलि सभिहिनि मसलत मति धारी। मंत्र सिध नहिं होइ बिचारी।
दिजवर बिद्या जितिक प्रवीना। सभि को कीजहि केश बिहीना ॥ ५० ॥
शूद्र छाप अपनी दिहु लाइ[1]। मूंडे सीस मंत्र निफलाइ।
बरनी सिध न किस की होइ। अनिक उपाइ करहि जे कोइ ॥ ५१ ॥
सुनि महिपत के मन महिं भाई। जहिं कहिं ते दिज लीए बुलाइ।
निज बल करिकै सिर मुंडवाए। शमस[2] समेत केश बिनसाए ॥ ५२ ॥
कवीअनि ते शलोक बनवाइ। बहु ग्रंथनि महिं दए लिखाइ।
सभि जग मुंडति भए बिप्र जबि। इह भी धरम बखनति भे तबि ॥ ५३ ॥
पठहिं शलोक सुनावनि करे। छत्री वैशनि के कच हरे[3]।
सकल लोक हैं पशु समाने। बिप्र चुगावनहार महाने ॥ ५४ ॥
पठनि शलेक लशटका हतैं। जित को चहैं चलावैं तितै।
बिप्रनि अपने सिर मुंडवाए। अपर लोग मग इसी चलाए ॥ ५५ ॥
जगत जूठ कहु अंगीकारा। सीस मुंडावनि पथ बिथारा।
इन दोनो ते कलि को काला। जहिं कहि दीखति भयो बिसाला[4] ॥ ५६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज पंचम रुते 'सिर मुंडावनि दिज को प्रसंग' बरननं नाम एक ऊन तिंसती अंशु ॥ २९ ॥

1. उनके शरीर से उस्तुरा लगा दो, अर्थात् उनका मुंडन कर दो 2. दाढ़ी 3. बाल मूंड दिए 4. कलियुग का विस्तार हो गया

अंशु ३०

कुरछेत्र प्रसंग

दोहरा

सुनि संगति अरु खालसा तां दिन ते असरीति ।
जगत बिखै दिन प्रति वधी कलू कीन बिप्रीत ॥ १ ॥
महिपति दीनो दंडि जो सो अबि धरम सथाप[1] ।
झगरति जुगति अनेक ते बने चहै सच्च आपि ॥ २ ॥
चोर ठगनि के कारने बंधन संगल कीन ।
विधिनि खेप सुरपुर नरक जग लोगन कहु दीन ॥ ३ ॥
संत भगत भगवंति के इन पर दुंद न जोइ ।
जथा मुसाहिब भूप के नहिं अटकहि कित कोइ ॥ ४ ॥
जिनि जानिआ तिन जानिआ बहुता किआ बकबाद ।
करनी वाला तर गिआ डूबा बकहि जुबाद ॥ ५ ॥
सगल ईशता[2] ग्यान की, भगत राज की मंड ।
युति विकार परजा सरब विपुल दुख क्रम कंड[3] ॥ ६ ॥
तीरथ, जपु, तपु, दखणा, नेम, संजम अर दान ।
वरणाश्रम इह वेद विध रच्यो बिधाते थान ॥ ७ ॥
मन को मन इंद्रनि इंद्र मति मो मति अनुराग ।
ईश जीव की भेदता मूरख हिय रहि लागू ॥ ८ ॥
साहिब सिंह तूं जानि अबि हमहिं द्वैत नहिं दिस ।
सतिगुर दरशन सफल भा, पाइ रूप हिय सरस ॥ ९ ॥
रामकुवर भाई भनै पिख्यो आतमा रूप ।
बरन्यो जाइ न जिह कछू परम अनंद अनूप ॥ १० ॥

---

1. उसको धर्म कर्म स्थापित कर लिया। 2. ऐश्वर्य 3. कर्मकांड

सुनिकैं निहसंसे भए श्री मुख ते सभि बात ।
बहुर उठे देखनि लगे हय वेगी[1] सम बात ।। ११ ।।

चौपई

इस प्रकार सिखनि उपदेशैं । सुनि धारहिं जे भाग विशेशैं ।
वहिर अखेर[2] ब्रिति को करैं । संग खालसा बन महिं फिरैं ।। १२ ।।
केतिक ग्राम छीन करि लीने । केतक भेट देहिं डर भीने ।
जे नहिं मिले गरब कुछ धरैं । तिन हित ब्रिंद खालसा चरैं[3] ।। १३ ।।
करहि शिकार तहां मन भायो । भाजहिं तजहिं ग्राम डर पायो ।
क्रिखी[4] बढाइ पुंज ले आवैं । आनंदपुर तुरंग सो खावैं ।। १४ ।।
भीमचंद देखै दुख लहैं । लर नहिं सकै त्रास मान लहैं ।
कलगीधर रस बीर मझारा । चहैं जंगु को सदा अखारा ।। १५ ।।
सिंहन को नित लरन सिखावनि । तुरकन गन सन बैर बधावन[3] ।
रण जे करति रहैंगा पंथा । सभा शसत्रनि की सीखहि संथा ।। १६ ।।
जुध करन हथिआर मारहि । तौ छित बल ते राज संभारहि ।
इह[6] आशै सतिगुर के मन को । जिस ते चित चाहति नित रन को ।। १७ ।।
यांते अनिक प्रकार बखेरा । परबति पति पुंजनि सन झेरा ।
त्रासति होइ लरति नहिं कोई । तुरकनि की सहाइ चहिं सोई ।। १८ ।।
दरब पठावति रहै बिसाला । जात वकील सुनाइ कुचाला ।
अवरंग[7] निकट कितेक सिधावैं । को सूबेनि समीप सुनावैं ।। १९ ।।
दसमें गुरु उतारी धूम । राज कारन कौं छीनति भूम ।
गिर के देश जि ग्राम उजारे । लूटहिं कूटहि सभि हम हारे ।। २० ।।
इस प्रकार नित करते रहैं । गुर सन संधि बारता कहैं ।
इम केतिक समा बितायो । सूरज ग्रहण परब दिन आयो ।। २१ ।।
कुछक सैन लै सिंहनि केरी । भए त्यार चलिबे तिस बेरी ।
श्री गुजरी माता ते आदि । रुख[8] गुर को लखि सदन अबाद[9] ।। २२ ।।
गमने प्रभु असवारी छड़ी[10] । प्रेरि तुरंग बाग कर फडी[11] ।
मंजल दूर की करति सिधारे । ग्रहण बिखै दिन अलप बिचारे ।। २३ ।।

1. बेगी नामक घोड़े को देखने लगे जिस की गति पवन के समान थी 2. शिकार 3. उन पर जा चढ़ता 4. खेती 5. बढ़ाते 6. यह 7. औरंगजेब बादशाह 8. मुख 9. घर ही स्थित रहे 10. अकेले 11. लगाम हाथ में पकड़ ली

जिस थल मँहि तीरथ समुदाए। नगर थनेसुर[1] मँहि चलि आए।
दखन दिश महि तीरथ महा। डेरे हित चाहति भे तहां ॥ २४ ॥
उतरे पुंज तीर नर नारी। मेला भयो ग्रहण को भारी।
उरे[2] नगर ते परी जमात। जे जोगी जग मँहि बिख्यात ॥ २५ ॥
मदन नाथ सभि बिखैं महंत। तिन देखे आवति भगवंति।
आगे होई मिल्यो तिस वारी। मुख आदेश अदेस उचारी ॥ २६ ॥
खरे भाए अविलोकि गुसाईं। सतिगुर को आदेस बुलाई।
पुन जोगी ने बूझनि करे। बुरका[3] शेरनि को तन धरे ॥ २७ ॥
करनी सिंघहु की शुभ धारी। तुमरी अदभुत बात बिचारी।
तवि कलगीधर बहु सनमाना। सुनहु नाथ जी कौन वखाना ॥ २८ ॥
तुरक गुफतार[4] अधिक जग मांही। दंड बिना बसि होइ सु नांही।
कहि जोगी चरचा सु चबाइ[5]। हुइ कबूल[6] सिधी पतिशाहि ॥ २९ ॥
रहिणी[7] सिध नानक के फकीर। खेरज[8] भेख काज दशतरीर[9]।
जिऊ दिल नेकी होइ ज़वाल[10]। करणी कुदरति केर खिआल[11] ॥ ३० ॥
इम कहि सुनिकैं आपस महीआ। रीझे दुहिदिश आनंद लहीआ।
बोल्यो नाथ बिनै तिह साइत[12]। कुछ जोगी की चहिय हिमायत ? ॥ ३१ ॥
मेल सकारथ रावर केरा। सुनि बोले सतिगुर तिस बेरा।
फरका अमुंड द्वै फरकस[13]। खालसह बली सु कसे तरकस ॥ ३२ ॥
सुनि जोगी ने वाक वखाना। मोहि दिखावहु छोरहु बाना।
धन बिद्या महिं सुनों बिसाला। यांते चहौं पिखनि इस काला ॥ ३३ ॥
तवि सतिगुर सर गुन पर धरिके। ऐंची धनुख छोर्‌यो बल करिके।
किला मुगल को हुत सु कोस। तिस की दिश मार्‌यो युति रोस ॥ ३४ ॥
शिखर दुरग के जबिहूं गयो। जोगी देखति बोलति भयो।
बिद्या धनु जिह होहि कमाई। कोइ न करि सकहै समताई ॥ ३५ ॥
त्रेते महि रघुबर की सुनी। द्वापुर मँहि अरज़न की गुनी।
मोहि भयो अबि द्रिड़ निचशा सु। हुइ तुम हाथ तुरक गन नाश ॥ ३६ ॥
हम कटास[14] पर करि हैं वासनि। बालगुदाई सिध के आसन।
तहां पहुंचना जलधि बिबेक। राखहु भले फकीरी टेक ॥ ३७ ॥

---

1. कुरुक्षेत्र के पास एक सुप्रसिद्ध तीर्थस्थान 2. नगर की इस ओर 3. वस्त्र 4. तुर्कों के अत्याचार की बात 5. कही जा रही है 6. स्वीकृति प्राप्त हो 7. रहने की मर्यादा 8. बाह्य 9. प्रजा की सहायता के लिए 10. तुर्कों का विनाश अवश्य होना 11. के अनुकूल है 12. उस समय 13. हमारा सम्प्रदाय केश धारी है और हिंदुओं और मुसलमानों से भिन्न है 14. प्रेमियों का प्रसिद्ध धाम

सभि सिधन को दरशन दीजै। सरब देश की सैल करीजे।
श्री मुख ते मुसकाइ बखाना। सुनहु नाथ जी तहां न जाना ।। ३८ ।।
होयहु हुकम न डाढे केरा[1]। जो सभिहनि ते बडहु बडेरा[2]।
सदी तेरहवीं[3] जबिहूं आवै। तुरकनि राज तेज बिनसावैं ।। ३९ ।।
तबि पहुंचहिगो पंथ हमारा। राज लेहि तिस देशनि सारा।
तीर गुदावरि के हम जेहैं। तहिं ते पुन परलोक सिधैहैं ।। ४० ।।
सुनि करि सिध सगरे हरखाए। लीन प्रसादि दीन तिस धाए।
सभिहिनि बहुर अदेस बखानी। सनमानति कलगीधर मानी ।। ४१ ।।
चले अग्र नगरी महिं आए। इत उत बिचरे देखति थाए।
पुरि विलोक करि गरी बजारे। बहुर अगारी निकास पधारे ।। ४२ ।।
दखन दिश तीरथ पर आए। सिह उतारे दूर किथाए।
आप बिलोके सुंदर तीर। मेला होइ रह्यो बहु भीर ।। ४३ ।।
एक अटारी अटण शाहू[4]। उतरे प्रभू जाइ तिस माहूं।
पशचम दिश तीरथ की बाही। निस महिं बास करति भे तांही ।। ४४ ।।
भई प्रभाति पुंज दिए आए। सुधि को सुनि सुनि बहु उतलाए[5]।
सभि को दरब इकत्रै दीनो। आपस महिं तिन बंटन कीनो ।। ४५ ।।
रामदत किंगरीआ एक। जिस के उर कुछ गुरनि[6] बिबेक।
रह्यो हजूर बिलोकति दरशन। अभिलखति कलिआन अपनि मन ।। ४६ ।।
क्रिपा द्रिशटि पिखि कह्यो संग तिह। जाचहु दिजि सभि कुछ गुरघरि महिं।
सुनि कलगीधर ते वडभागी। बोल्यो बिप्र श्रेय अनुरागी[7] ।। ४७ ।।
मैं लोभी नहिं लेवनि केरा। कर पकरहु छोरहु नहिं मेरा।
किसहूं की ह्वै पहुंच न जहां। मोहि दीन को राखहु तहां ।। ४८ ।।
श्री गुर कह्यो सहित परवारा। तहां बुलाईऐगा सुख भारा।
इम कहि घोड़ा एक कटार। दई अशरफी कितिक निकारि ।। ४९ ।।
दे करि कह्यो सदन भरपूर। गुरु दियो करि तेरो रूर[8]।
बहुर रामदत की गहि बाहू। तीरथ के तट तट चलि जाहू ।। ५० ।।
वायु[9] कोन तीरथ की वेसे। दरसहिं लोक दूज ससि जैसे।
एक सुदागर तबि तहिं आइव। करि बंदन को बाक सुनाइव ।। ५१ ।।

---

1. शक्तिशाली परमात्मा 2. बड़े से बड़ा 3. हिजरी की 13वीं शती 4. एक फकीर का नाम 5. उत्सुक हुए 6. अधिक, अपेक्षाकृत बड़ा 7. मोक्षाभिलाषी 8. तुम्हारा शुभ कल्याण कर दिया है 9. उत्तर पश्चिम

प्रभु जी ! अहैं तुरंग विकाऊ। अबि लगि नहिं लीनों किन राऊ।
रावर लेहिं तु करौं दिखावन। पाइ हुकम तहिं कीनो ल्यावन ॥ ५२ ॥
चढिकै ऊपर फेर धवाए। चाल दिखावनि करी कुदाए।
तीन तुरंगम कौन पसंद। चंचल बेगी बली बिलंद[1] ॥ ५३ ॥
पुन बैठे दीवान लगाए। थिर्‌यो खालसा ढिग समुदाए।
मेले की संगति सुनि करिकै। महां लाभ को रिदै बिचरिकै ॥ ५४ ॥
कलगीधर को भा आगवनू। मिलि सिख संगति जवन रु कवनू।
दरशन करन हेत चलि आए। जथा शकति को भेट लिआए ॥ ५५ ॥
देखि देखि मनु कामन पाई। सभि दिन थिरे रहे तिस थांई।
सुखा छकि अफीम को फेर। सौच शनान करे तिस बेर ॥ ५६ ॥
मोल हयनि को दरब हज़ार। गइओ सुदागर बंदन धारि।
तिस निस बसि करि प्राति शनाने। चढि तुरंग प्रभु कियसि पियाने ॥ ५७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते **'कुरछेत्र प्रसंग'** बरननं नाम त्रिंसती अंशु ॥ ३० ॥

---

1. वड़े, ऊंचे

अंशु ३१

संगति प्रसंग

दोहरा

चढे इकाकी सतिगुरु आवलखेड़ी[1] ग्राम।
पहुंचे तिस थल जाइ करि उतरे हित बिसराम ॥ १ ॥

चौपई

इक ब्रिधा ने गुरु पछाने। शरधाधिक प्रणाम पग ठाने।
पुन गहि करि गुर हय को लीनो। एक जाम जबि बीतन कीनो ॥ २ ॥
देखति खोज सिंह चलिआए। सेवक अरु समाज समुदाए।
तबि करि जोरि ब्रिधा कहि माई। प्रभु जी! कुछ प्रसादि लिहु खाई ॥ ३ ॥
बिन बिलंब ते करहुं त्यारी। अचंहु इहां, पुन करि असवारी।
देख श्रधा को सतिगुर बोले। हाज़र जो प्रसाद हुइ सो ले ॥ ४ ॥
सुनि बिरधा ततकाल सिधारी। बासन दुगध उठायहु भारी।
लेकर मधुर सहित[2] तहिं आई। धर्‌यो सरब प्रभु के अगुवाई ॥ ५ ॥
जुति मिशटान सु दुगध मलाई। सीतल कीनसि बायु झुलाई[3]।
श्री प्रभु को भरि दीयो कटोरा। कर्‌यो पान रुचि जितिक, सु छोरा ॥ ६ ॥
पीछे कीन सभिनि ही पाना। पुन सिंहनि पिखि बाक बखाना।
शरधा घनी पिखि इस माई। सेवा करी दुगध बहु ल्याई ॥ ७ ॥
श्री मुखि ते बोले मुसकात। उदे सिंहु सुनि इस की बात।
दिन थोरनि काइआ इह त्यागहि। जाट सदन जनमहि बड भागहि ॥ ८ ॥
तबि इस ते इक सिध जनमैं है। जंमन जती नाम तिस ह्वै है।
माननीय सभि लोकनि केरा। बचन शकति धरि गुनन बडेरा ॥ ९ ॥
अचरज उदे सिंह सुनि ह्वै कै। बूझनि करे अपन हित पैंके[4]।
श्री प्रभु भविख्यत ग्याता। जथा बद्रिफल[5] कर पर जाता ॥ १० ॥

---

1. कुरुक्षेत्र के पास एक ग्राम 2. शक्कर सहित 3. पंखा करके दूध को ठंडा किया 4. अपने सम्बन्ध में 5. बेर

करहु बतावनि कुछ गति मेरी। कहा जनम कौ धरिहौं फेरी।
प्रिय सेवक ते सुनति उचारी। पंथ खालसे की सिरदारी ॥ ११ ॥
चार बार लै करि हुइ मालिक। करहिं राज भारी महिपालक।
बार पंचमी उपजाहिं तबै। मौन गारकी[1] प्रापति ज़बै ॥ १२ ॥
हुइ करतार को इम ही भाणा[2]। राज खालसा कराह महाणा।
इम कहि सतिगुर चढि करि चले। डेरा आनि कर्‌यो इक थले[3] ॥ १३ ॥
क्रम क्रम मग उलंघ करि आए। बसहि ग्राम चमकौर जि थाए[4]।
उतर परे करिबे हित डेरा। आइओ सकल वहीर पिछेरा[5] ॥ १४ ॥
सगल तुरंगमय दए लगाइ। त्रिण दाणा आन्यो समुदाइ।
खान पान सभिहिनि तहिं करिकै। भई जामनी सुपते परिकै ॥ १५ ॥
रात पाछली जागनि करे। गुरबाणी को सिहनि खरे।
सद्दू मद्दू[6] आसावार। कीरतन करते राग सुधार ॥ १६ ॥
सौच शनान कर्‌यो प्रभु थिरे। बसत्र शसत्र को पहिरन करे।
भई प्रात पिखि थल अभिराम। सतिगुर कीनसि तहां मुकाम[7] ॥ १७ ॥
दिवस चढे ते सिख समुदाए। नमो करहिं दीवान लगाए।
जहिं जहिं सुध होई जिस गाऊं। दरशन हित आए चित चाऊ ॥ १८ ॥
दुगध दहीं ले रसत घनेरी। अरप उपाइन बहु तिस बेरी।
पशचम दिश की संगति घनी। सतिगुर की सुध इत की सुनी ॥ १९ ॥
इक दिन बीते सो चलि आई। प्रेमी सिख हुते अधिकाई।
बलख बुखारा अरु कंधार। गज़नी काबल नगर उदार ॥ २० ॥
पुरी जलालबाद पिशौर। सभि पुरि के ह्वै कै इक ठोर।
दरशन कारन मिलि करि चले। आइ ग्राम चमकौर सु मिले ॥ २१ ॥
सतिगुर बैठे सभा लगाइ। संगति ले अकोर[8] समुदाइ।
अरप अरप करि पग सिर धरै। बैठि समीप दरस को करै ॥ २२ ॥
सिख मुखी[9] जे संगत केरे। हाथ जोरि बोले तिस बेरे।
प्रभु जी ! दरशन होइओ भले। गुर घर ते बखशिश कुछ मिले ॥ २३ ॥

---

1. अंग्रेज़ों के आगमन काल में 2. इच्छा 3. स्थल 4. जिस स्थान पर हैं 5. पीछे 6. दो मुसलमान गायकों के नाम 7. ठहरने के लिए स्थान निश्चित किया। 8. भेंट 9. प्रमुख

ठहिरहु, श्री गुर बाक अलावहिं। धन को देवैंगे ? मरिवावैं।
सुनि सिख तूशन[1] भे धरि त्रासा। कही बाक इह गुरु प्रकाशा ॥ २४ ॥
करि बिचार बोले तिहि समै। देहु हुक्म धंदे को हमैं।
अर बखशहु जीवन की खुशी। क्रिपा करहु संगति पर तुसीं[2] ॥ २५ ॥
प्रेम धरे दरशन को आए। चाहैं मनोकामना पाए।
सफल बिलोकनि अहैं तुमारा। सुनि श्री मुख ते बचन उचारा ॥ २६ ॥

छंद

बरसै बादल खुशी करि जल लेय न खेत।
चात्रिक चुपका होइ रह्यो क्या बादल हेत।
चंदन परउपकार हित बन रहे सुचेत।
गंगा पापां दूर हित क्या न्हाह उचेत।
गुरु विचारा क्या करै सिख फसिआ एत[3]।
मीठा देवै बाल नूं[4] ओह मांगे रेत।
घड़ा लज[5] हथ[6] खसम दे[7] क्या कूप न देति।
बाप माइ हित क्या करे सुति देति न भेत।
लीपन हारे दोष क्या भीत गिरदी[8] रेत।
अटका जल ता बांधीए जां बंधनिकेत।
धन वडिआई[9] देह किस खर धूड़ी लेति।
भाड़[10] विचारा सीत किउं जां झुलका[11] देति।
धंदे अटके सिख सुण परवार समेत।
कारीगर खाती[12] क्या करे कशट नहीं खेत।
नदी वार किउं पीवीए कुणीआ नां लेत[13]।
खाणा कीकूं पकणा[14] जे अग[15] न निकेत।
विना समें ते बुध नहिं किआ हठ का हेत।
मन ही[16] चक्र घुमार का घड़ि भांडे[17] देति।
मुह का आखण रीस है फिर मन ही चेति।
पहिलां मंगे संगती गुर देणम[18] हेत।
करम कड़ाका हाथ का मुह मारै सेत[19]।
हउं बार बार बलिहारने जिह मर मन नेत[20]।

---

1. चुप 2. आप अथवा प्रसंन होकर 3. इस लोक के प्रपंच में फंसा हुआ 4. को 5. रस्सी 6. हाथ 7. के 8. गिरती 9. बड़ाई 10. भट्ठा 11. ईंधन डालता जाए 12. बढ़ई 13. बूक नहीं भरता 14. खाना कैसे पकेगा ? 15. अग्नि 16. संकल्प मात्र से 17. बरनन 18. देने में 19. सफेद कर लिया 20. जिस के मन में मृत्यु का भाव नित्य रहता है

सुनि सिखहु मन नहीं बिचारा। तुमरे हित हम गिरा उचारी।
'ठहिरहु', मन ठहिरावन कह्यो। इह तुम अरथ न उर महिं लह्यो॥ २७॥

देहिं मुकति धन सतिगुर भले। इह भी अरथ न मति महि मिले।
'मरवावहिंगे', कीन उचारे। अरथ कि कांटहिं जनम तुमारे॥ २८॥

घरि को ही धंदा तुम चहियो। अजहूं शेश करम को रहियो।
तऊ न सहिसा[1] उर महिं धरो। विलम कछू, न उतावल करो॥ २९॥

परचो शबद साध लिवलीन। हरि कीरतन तुम को गुर दीन।
तारहिंगो जग सिदक[2] तुमारा। रहहु सुचेत सु हुकम उचारा॥ ३०॥

हम भी नदी न उतरहिं पार। वसि हैं आनंद पुरी उरार।
श्री अम्रतसर पहुंचहुं नांहि। रहैं उरे[3] के देशनि मांहि॥ ३१॥

छंद

रामदास सर संगती नावै सभि नित।
छे जोजन गुर नगर वस हम आवहि मित।
बैठ दुलीचे चमर ढुल सिख दरशन चित।
सिंह लाख दस एकठे गज बाज समेत।
लूट पिआरी मेरिआं[4] घर घन का खेत।
सभ[5] संगत नूं[6] मेल लै को करौं न छेत[7]।
पहिलां आवै उदे सिंह फितकारी फेत[8]।
भाणां मंनिआं[9] सीस पर होइ जीवन जेति[10]।

इम सतिगुर के बाक सुहाए। सुनि करि सिख मन महुं पछुताए।
गुर के बाक न उचित हटावन। मानहिं शरधा जुति सुख पावन॥ ३२॥

---

1. संशय, संदेह 2. निष्ठा, विश्वास 3. इस ओर के 4. मेरे अनुयायियों का 5. सभी 6. को 7. निष्कासित करना 8. विजेताओं पर विजय प्राप्त करेगा 9. इच्छा को पूर्णरूपेण स्वीकार करना 10. विजयी

अपनो हित मानन मांहि जानहि। महां अहित जे मोरन ठानहि[1]।
सकल खालसे गुर बच सुने। दात प्रभू की लखी न गुने ॥ ३३ ॥
श्री गुर बास कीन चमकौर। संगति घनी बसी तिस ठौर।
आनंदपुरि मंहि सुधि जबि गई। सैनां सिंहन आवति भई ॥ ३४ ॥
अपर समाज घनो चलि आयो। जो चहियहि सो मंगवायो।
डेरा भयो गुरु को भारी। राखे दूत लगाइ पहारी[2] ॥ ३५ ॥
चितवति द्वैश गुरु के संग। सैनप[3] तुरक करहिं को जंग।
करते रहे प्रतीखन सदा। को उमराव लरावैं कदा ॥ ३६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते **'संगति प्रसंग'** बरननं नाम एक त्रिसती अंशु ॥ ३१ ॥

---

1. आज्ञा का यदि पालन न करें 2. पहाड़ी राजाओं ने 3. सेनापति

अंशु ३२

सैदा बेग प्रसंग

दोहरा

द्वै उमराव लहौर क दिली के मग जाति।
भीम चंद सुनि बात को घात जानि भलि भांति ॥ १॥

चौपई

आदिक भूपचंद हंडूरी। सभि के संग गिनी विधी रूरी।
औचक[1] आनि बनी क्यों टरो। तुरक लरावहु आप न लरो॥ २॥
केतिक दरव देउ उमराऊ। सतिगुर पुरि बहिर परथाऊ[2]।
महीं दुरग बड लरिबे कारन। थोरे सिंह धरे हथीआरिन॥ ३॥
आप आपने अहै टिकाने। सो नहिं पहुंच सके तिस थाने।
भेड़ अचानक ही बन जाइ। कौन लरै तुरकनि अगवाइ[3]॥ ४॥
लुट जावहि सतिगुर को डेरा। किमहूं बचै न, हुइ भट भेरा[4]।
हत्यो ज़ाइ गुर किधौं पलाए। हमरी बात भली बनिजाए॥ ५॥
नहिं कलगीधर करहि बिगारा[5]। हमरो देश त्रिभै[6] हुइ सारा।
इम गिनि सभिनि प्रधान पठाए। मिले पंथ महिं हुइ अगुवाए॥ ६॥
सभि राजन को कह्यो सुनायो। लघु दल जुति गुर सिवर[7] वतायो।
मजल मजल प्रति दरब हजार। हमरो कारज देहु सुधारि॥ ७॥
हज़रत के संग सदा बखेरा। खुशी होइ सुनिकै तिस बेरा।
लुदक[8] नगर के पंथ न जावहु। घाट दूसरे सुगम सिधावहु॥ ८॥
परले पार[9] ग्राम चमकौर। बुरज न दुरग अटा[10] तिस ठौर।
थल मदान महि उतर्यो डेरा। परहु अचानक लीजै घेरा॥ ९॥

1. अचानक 2. दूसरे व्यक्ति के क्षेत्र में हैं 3. सामने हो कर 4. लड़ाई 5. हमारी हानि नहीं कर पाएंगे 6. निर्भय 7. शिविर 8. लुध्याना 9. दूसरी ओर 10. अटारी

सैंदावेग एक का नाउ। अलफखान दुसर उमराउ।
सुनि करि दौन लोभ के प्रेरे। तिसी पंथ महिं पाइन गेरे[1] ॥ १० ॥

सतुद्रव उलंघि आइ दल सारा। सुनयो खालसे बजति नगारा।
इतने महिं इक नर चलि आयो। दल महिं हुतो भेत सभि ल्यायो ॥ ११ ॥

हाथ जोरि गुर साथ उचारा। किम नचिंत प्रभु डेरो डारा ?
तुम पर दस हजार अवतार। दो उमराव आइ रिस धारि ॥ १२ ॥

प्रेरि गिरेशुर[2] इत ले आए। सावधान प्रभु रचउ उपाए।
मैं रावरि सिख सुनि कै धायो। आनि भेत गन रिपुनि बतायो ॥ १३ ॥

सुनि कलगीधर हुकम उचारा। दिहु बजाइ रणजीत नगारा[3]।
डालि हयनि पर जीन उताले[4]। तुपक खडग धनु ढाल संभाले ॥ १४ ॥

सावधान ह्वै रोक्यो आगा। सिंहनि रिदै बीर रस जागा।
दल मुकाबले दोनहुं होए। गोचर द्रिशटि परसपर दोए ॥ १५ ॥

पंज हजारी इक उमराव। सैंदा बेग जिसी को नाव।
तिन सतिगुर दिश द्रिशटि चलाई। ततछिन रिदे सुमति हुइ आई ॥ १६ ॥

जाग परे पूरबले[5] भागा। सुपति उठ्यो जिम लग अनुरागा।
जेतिक चमूं कहे मैं हुती[6]। सभि को अपन संग कर मुती ॥ १७ ॥

जेतिक हुती शाह दिश केरी। सभि को त्याग कीन तिस बेरी।
प्रिथक होइ दुंदभि बजवायो। सने सने संग्राम मचायो ॥ १८ ॥

जबि घमंड[7] की मची लराई। ज्वालाबमणी ब्रिंद[8] चलाई।
फरि हयनि को सिंह प्रहारैं। तथा तुरक सनमुख ह्वै मारैं ॥ १९ ॥
सुभट तुरंग अंग लग गोरी। गिरहिं धरन पर मुख नहिं मोरी।
दिश दोइनि ते टिकी लराई। अवलोकहिं थिरे होइ गुसाई ॥ २० ॥
नहीं प्रहार सरनि[9] को करै। गाढे होइ खालसा लरै।
कितक बेर जबि लरति बिताई। सैंदावेग चहै शरनाई ॥ २१ ॥
तजि तुरकनि के दल को साथ। मिल्यो खालसे सन कहि गाथ।
जिम तुम गुर के सिख बडेरे[10]। तथा पिखीजै मो को चेरे ॥ २२ ॥
जग जीति कै मिलिहौ फेर। इम कहि मिलि करि भयो दलेर।
सिंहन ते आगै हुइ लरिओ। गन तुरकन को मारन करिओ ॥ २३ ॥

---

1. रखे 2. पहाड़ी राजागण 3. एक नगारा विशेष 4. शीघ्र ही 5. गत जन्मों के 6. जितनी सेना उस की आज्ञा के अधीन थी 7. घमसान 8. बंदूक 9. तीरों के प्रहार 10. बड़े, महान्

अलफ खान पिखि करि बिप्रीत । साथी फट्यो[1] कहां अबि जीत ?
सने सने[2] निज सैन हटाई । तउ खालसा मारति जाई ।। २४ ।।
सैदाबेग सिंह मिलि सारे । दूर भजावति लग बहु मारे ।
ले करि फते हटे पशचाती । तुरक पुंज के बन करि घाती ।। २५ ।।
जहां खले[3] कलगीधर धीर । उर प्रमोद धरि पहुंचे तीर ।
सैदाबेग उतरि हय तरे । गुर के चरन वंदना करे ।। २६ ।।
बोले प्रभू उमर बरकरार[4] । मिले सुखूब इन तकरार[5] ।
सैदाबेग समझ तूं बेग । अहो कंधारी बांधहु तेग ।। २७ ।।
पूरब गुर नानक तुम मिलै । सेवा करी हुती तबि भले ।
तबि हम तो सों इम कहि गए । कबहि बुलावहिंगे हित किए[6] ।। २८ ।।
शसत्र बिलोकन करैं तिहारो । तबि परखहिंगे जथा उचारो ।
परचा प्रथम शबद को कीआ । पाछे इस प्रकार कहि दीआ ।। २९ ।।
तुपक कमाइल करामात[7] । चिन खैर खिलस जनाति[8] ।
एती बात गुरु जबि कही । समझ्यो मुगल रिदे तबि सही ।। ३० ।।
पर्यो अगारी दंड समान । राखि राखि मुझ पीर महान ।
रावरि दरस सुने बच जबै । पूरब सिम्रत भी अबि सबै ।। ३१ ।।
भई शकति मुझ बिखै बिसाल । रखहु पीर जी लेहु संभाल ।
जितिक प्रथम की बाति उबाची । सभि जानी मैं बिती सु साखी ।। ३२ ।।
दे धीरज तबि प्रभु ढिग राखा । जिस को नित दरशन अभिलाखा ।
मुगल प्रमोद घनो उर पायो । जेतिक डेरा सकल लुटायो ।। ३३ ।।
सभि किछ त्यागि रह्यो प्रभु पास । हुइ प्रलोक सुख, लागी आस ।
सगले तुरक गए जबि दूर । उतरे डेरे बिखै हजूर ।। ३४ ।।
खान पान दाना त्रिन पाइ । बसे निसा पूरब की थाइ ।
भई प्रभाति कूच करि दीन । सैदाबेग हकारनि कीन ।। ३५ ।।
वखशे शसत्र गुरु जी फेर । चढि तुरंग पर मुदति बडेर[9] ।
चल्यो संग मिलि सिंहनि साथ । गमने आनंदपुरि दिश नाथ ।। ३६ ।।
सगलो पंथ उलंघनि करिओ । दुंदभि शबद श्रोन महिं परिओ ।
पुरि जन सुनि कै बहु अहिलादे । निकसे चारो साहिबज़ादे[10] ।। ३७ ।।

1. साथी के टूट जाने पर 2. धीरे धीरे 3. खड़े थे 4. दीर्घ आयु हो 5. प्रण के अनुसार 6. प्रेम करके 7. बंदूक चलाने में सिद्धहस्त होना चमत्कार है 8. ऐसे व्यक्ति को मित्रों और स्वर्ग वाली नेकी की प्रगति होगी 9. अधिक 10. गुरु-पुत्र

मिलि मानव सभि वहिर पधारे । दरशन करति बंदना धारे ।
कुशल प्रशन प्रभु सभि प्रति गाए । मिले अग्र जे दरशन पाए ।। ३८ ।।
अनिक बिधिनि की अरपि उपाइन । परसति श्री सतिगुर के पाइनि ।
अग्र आइ सभि मिलि नर हरखे । पुरि महिं बरे पुशप गन बरखे ।। ३९ ।।
गए पुरंगम पंथ बजारे । सगरे नर बंदन कहु धारे ।
उतर परे निज मंदर गए । प्रथम मात को बंदन कए ।। ४० ।।
आशिख दे सिर पर कर फेरा । श्री गुजरी उर अनंद बडेरा[1] ।
बैठन के सथान पुन गए । रुचिर प्रयंक डसावनि[2] कए ।। ४१ ।।
दिन केतिक पुरि बसे गुसाई[3] । संगति चली आइ समुदाई ।
दरशन करहिं कामना पावहिं । बसहि निकट पुन सदन सिधावहिं ।। ४२ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पचम रुते **'सैंदाबेग प्रसंग'** बरननं नाम दवेत्रिसती अशु ।। ३२ ।।

---

1. बड़ा, अधिक 2. बिछवाया 3. गुरु गोविंद सिंह

अंशु ३३
दिज प्रसंग

दोहरा

सैंदबेग ते सबि सुन्यो गिरइश्वरन[1] ब्रितांत।
सैन गुरु पर दरब दे ल्याए लरन प्रयाति[2] ।। १ ।।

चौपई

उदे सिंह आलमसिंह आदि। सभि सुनि करि होए बिसमाद।
मंदमती सभि दुशट पहारी। रच्यो कपट आन्यो दल भारी।। २ ।।
इक दिन सतिगुर सभा मझारा। थिरे, खालसा आयहु सारा।
दइआ सिंह मुहकम सिंह धीर। धरम सिंह हिमत सिंह बीर।। ३ ।।
ईशर सिंह टेक सिंह आए। इत्यादिक गुर को दरसाए।
आलम सिंह कही तबि बात। प्रभु जी! गिरपति गति बिख्यात।। ४ ।।
ऊपर ते मिलि कीनस मेला। राख्यो अंतर कपट दुहेला।
सैन अचानक तुरकनि केरी। लरिबे हेत आनि करि गेरी।। ५ ।।
सैंदाबेग बतावति सार[3]। गहिबे हित तुमको छल धारि।
रावर को प्रताप है भारा। छुइ न छाव भी सकैं गवारा।। ६ ।।
दे करि दरब तुरक गन आने[4]। इसी जतन महिं लगे महाने।
सुनि करि उदे सिंह भी कह्यो। सिर लग वैर इनहुं को लह्यो।। ७ ।।
सतिगुर छिमा धरति हैं जिउं जिउं। मूरख कपट रचति हैं तिउं तिउं।
लेनि देनी इन को नहिं कोई। तऊ मूढ छल ठानहि सोई।। ८ ।।
श्री कलगीधर दाक अलाए। इह पलटो सभि लेहिं बनाए।
करै खालसा महिद बखेरा[5]। दूणनि बिखे[6] पाइ है फेरा।। ९ ।।
समां पाइ इन की जर जाइ। राज खालसा करै बनाइ।
अबि भी सुख सों सुपति न दीजै। कही[7] ग्राम ख्रिखी अरि लीजै।। १० ।।

1. पहाड़ी राजाओं का 2. वास्ते, के लिए 3. सार, सम्पूर्ण 4. लेकर आए 5. बड़ा बखेड़ा 6. पहाड़ की घाटियों में 7. कही करना, उजाड़ना

खडग केतु[1] नित हमहु सहाइक। को गहि सकै, कौन हुइ धाइक ?
प्रथम मेल भी इनहूं कीनो। बहुर कपट मूढनि चित दीनो ।। ११ ।।
पलटा लेहि खालसा इन ते। राज तेज विनसहि नित हनते।
श्रीमुख ते इम हुकम वखाना। सुनि हरख्यो सभि पंथ महाना ।। १२ ।।
सिखता उचितै[2] कहां पहारी। सुधरहिं मूढ परहि जबि मारी।
सो बासुर निस जुगत बितायो। भई भोर[3] दुंदभि बजवायो ।। १३ ।।
सिंहन जीन तुरंगनि डाले। कसी कमर गन तुपक उठाले।
चढ्यो खालसा हेत शिकारा। गए दूर लग दून मझारा ।। १४ ।।
सुनि दुंदभि धुनि को चलि आवहि। अरपहि भेटनि बिनै अलावहि।
तिस को त्यागहिं, बसहि सु चैन। बचहि पदारथ सगरे ऐन[4] ।। १५ ।।
आगै आइ मिलहि नहिं जोऊ। राजनि ओज हंकारहिं ओऊ।
तिन पर हुए सभि की हथ छोर[5]। कही करहिं[6] दें संकट घोर ।। १६ ।।
लूट कूट करि ग्राम उजारहिं। सभि विधि को हंकार निवारहिं।
जाइं पुकारु राजनि पास। दीन होइ करते अरदास[7] ।। १७ ।।
सुनि गिरपति उर कुपहिं घनेरा। धरहिं त्रास लर सकहिं न फेरा।
भले सूर नर प्रथम संहारे। आदि केसरीचद जुझारे ।। १८ ।।
तऊ न सतिगुर लरि त्रिपतायो। दल तुरकन को अनगन आयो।
मारन मरन हजारों केरा। मिट्यो न कैसे सिंहनि झेरा ।। १९ ।।
इक दुइ मास इसी विधि बीते। चढहि अखेर खालसा नीते[8]।
लूट कूट करि कितिक उजारे। केतिक अपने करि प्रतिपारे।। २० ।।
खेती बंटन पर[9] सिख रहे। ढिग ढिग ग्राम जि गुर पुरि अहे।
परजा भरन लगी सभि हाला[10]। खुशी बसन लागे तिस काला ।। २१ ।।
दिन प्रति वधति प्रताप उचेरा। मानहिं आन बास जिन नेरा।
नहीं अनीति करन को पावै। चोर जार प्रकर्यो दुत[11] जावै ।। २२ ।।
नहिं बटपार करहिं बटपारी। करै सु पकर्यो जाइ दुखारी।
पिखि राजे दुख पाइं सचिंता। गुरु खालसे तेज बधंता ।। २३ ।।
इक दिन श्री सतिगुर भगवान। बैठे सभा सहित उच थान।
चामर चारू चलाचल[12] फेरै। सिख हजारहुं दरशन हेरैं ।। २४ ।।

---

1. ब्रह्म का सूचक शब्द 2. शिक्षा देने के उचित (ये पहाड़ी कहां हैं) 3. प्रातःकाल हो गया है 4. घर 5. अभिप्राय हाथों की मार 6. विनाश करें 7. प्रार्थना 8. नित्य 9. बढ़वाने पर 10. प्रति हल पर लगाया गया कर 11. शीघ्र 12. चंचल

इक दिज दीन दुखी चलि आयो। रोदति ऊचे वाक सुनायो।
हे प्रभु! हिंदु धरम की धुजा। दीन द्याल दीरघ बल भुजा॥ २५॥
सभि थल ते मैं होइ निरासी। फिर आयो रावर के पासी।
अति अनिआइ मोहि संग कीना। दुशट पठान गरब दुख दीना॥ २६॥
तनक परी धुन श्रुति दुख भरी। तबहि दयानिधि आग्या करी।
को बोलति है शोक समेता? किन मार्यो दोही इह देता॥ २७॥
चोबदार तबि बूझनि गयो। निकट होइ सभि उचरति भयो।
पुरि हुशीआर निकट इक बसी[1]। बसै पठान तहां मति नसी[2]॥ २८॥
मैं मुकलाइ[3] बधू को डोरा। गवनति जाति अपन घर ओरा।
करी बिलोकनि तिन मम दारा। छीन बर्यो ले सदन मझारा॥ २९॥
मैं जबि ऊचे कीन पुकारा। नर ते गहिवायो बहु मारा।
तिस हित मैं बहुतनि ढिग गयो। तुरक जहां कहिं धन तिन दयो॥ ३०॥
नहीं फिराद[4] लगन कित दीन। जिउं किउं जतन अनिक मैं कीन।
काजी कोटवार ढिग फिरियो। किनहूं न्याउं न मेरो करियो॥ ३१॥
लखि के गुर हिंदुनि सिरमौर। परम दुखी आइओ इस ठौर।
सभि ब्रितंत सुनिकै हटि गइउ। गुरु समीप निवेदति भइउ॥ ३२॥
सुनि दिज को तबि निकट बुलायो। हाथ जोरि गुर सनतुखि आयो।
छीनी दारा सकल ब्रितंता। कर्यो सुनावनि पुन भगवंता॥ ३३॥
श्री प्रभु! कै अबि त्रिय को पाऊ। नतु[5] मैं द्वार अग्र जर जाऊं।
जीवन धरम नहीं अबि मेरा। तुम बिन जतन नहीं को हेरा॥ ३४॥
सुनि कलगीधर धीरज दीन। जरहु न, दुख चिंता करि हीन।
करै जतन तुव दारा हेत। जिउं किउं लै देंहि निकेत[6]॥ ३५॥
तिस छिन पुत्र बिसाल[7] बुलायो। सुनति हुकम को पित ढिग आयो।
तरुन अवसथा जिस तन सोहै। जनु अरजन सुत अभिमनु ओहै॥ ३६॥
खडग सिपर[8] जिह अंग लगाए। अधिक[9] सपूत सुंदरी जाए।
सकल कुटंब मोद को दाइक। मित्रनि सुखद शत्रु गन घाइक॥ ३७॥
चपल बिलोचन युति बिसतारा। पित के गुन अरु तन अनुहारा[10]।
सभा मझार गुरु ढिग आयो। उडगन रवि ससि सम दरसायो॥ ३८॥

---

1. बस्ती, ग्राम 3. नष्ट हो चुकी है 3. गौना 4. दुःख भरी प्रार्थना 5. नहीं तो 6. घर वाली, भाव स्त्री ले देंगे 7. बड़े 8. ढाल 9. बड़े 10. अनुरूप

पिता गुरु के पग करि नमो। सादर बैठि गयो तिह समो।
सरब सभासद बंदन कीन। देखि देखि दिस भान सु लीन।। ३९।।
पिखि सपूत को हुकम बखाना। लेहु सिंह संग करहु पिआना।
बलि तुरंगम पर शुभ जीन। खर खपरे[1] धरिकै धनु पीन।। ४०।।
दिन को दुख, छीन खल दारा। दोही दीन, दीन लखि मारा।
बसी बसी इक[2] तिस महिं बसे। करि अन्याइ खुशी युति हसे।। ४१।।
आनहु दिज की त्रिया समेत। औचक[3] घेरहु जाइ निकेत।
आवति जाति न बिलम लगावहु। गहि दोनहुं को तूरन[4] ल्यावहु।। ४२।।
पिता हुकम को सुनि पदबंदे। तुरत त्यार हुइ रिदै अनंदे।
सौ असवार सिंह चढि चाले। ज्वालाबमणी[5] हाथ संभाले।। ४३।।
सतुद्रव को जल उतरे पार। द्वै घटिका बासुर तिस बार।
बिप्र संग ले निस महिं चाले। ग्राम ग्राम ते नरहि निकाले[6]।। ४४।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते **'दिज प्रसंग'** बरननं नाम तीन त्रिसती अंशु।। ३३।।

---

1. तेज़ तीर 2. बसी मामक एक बस्ती है 3. अचानक 4. तुरन्त 5. बंदूक 6. मार्ग जानने के लिए ग्रामवासियों से पूछते जाते

अंशु ३४

सतिगुर प्रसंग

दोहरा

घेरे तूरन[1] तोर[2] करि, बसी बसी जिस थांइ[3]।
बसि है वास पठाण को दीनो बिप्र बताइ ॥ १ ॥

चौपई

तुरक सुपत जहि सहिज सुभाइ। जाइ अचानक घेरो पाइ।
सकल ग्राम के जेतिक खान। देखि सैन को भए हिरान ॥ २ ॥
किमि दुरे को पूछन लागे। केतिक दाव पाइ करि भागे।
केचित कह्यो न दोश हमारो। दोखी तजहु गहो कै भारो ॥ ३ ॥
किसहुं न आगे शसत्र उठायो। गह्यो पठान सु बधि चलायो।
दिजनी[4] को इक तुरंग चढायो। इह कुरीति फल सभिनि सुनायो ॥ ४ ॥
गहि दोनहु को, अपर न छेरा। शीघ्र करति गमने तिस बेरा।
जिस मग गए तिसी मग आए। केतिक चढे दिन पुरि नियराए[5] ॥ ५ ॥
सतिगुर सभा माहि जबि आए। तबि ले दोनों पहुंचति भए।
वाहिगुरु जी की कहि फते[6]। सभि को भयो हरखा उर अते ॥ ६ ॥
दोनहुं को गुर निकट बिठाए। आप उतर करि श्रम बिसराए[7]।
दिज की दारा दिज को दई। आशिख बंदि कह्यो सुख मई ॥ ७ ॥
तुरक पठान अरध गडवायो। तीरन सो तिस को मरवायो।
इस चरित्र को सुनि जग सारा। श्री सतिगुर जस महिद[8] उचारा ॥ ८ ॥
जथा चांदनी निरमल होति। तिस घर घर महि सुजस उदोत।
मनहुं मालती फूलति झूली। राइबेल कै सुंदर फूली ॥ ९ ॥
जहि कहि कीरति बरनन करते। धन धन प्रभु धन उचरते।
इक दिन श्री गुर चढिबो चहियो। बाजी के सेवक संग कहियो ॥ १० ॥

1. तुरंत 2. चला कर 3. स्थान 4. द्विज पत्नी 5. आनंदपुर के पास आए 6. जयघोष किया 7. थकान दूर की 8. महान्

जाट कपूरे तुरंग पठायो। दल बिडार[1] के निकट बंधायो।
मिशट घ्रित को रातब करियो। अबि लौ भली भांत प्रतिपरियो॥ ११॥
आज पाइ करि जीन शिंगारो। भूखन करन हमेलां डारो।
कंचन के जेवर पहिरावो। भले त्यार करिकै ले आवो॥ १२॥
हुकम मानि सेवक किय त्यारा। अलंकार कंचन शिंगारा।
कलगी धरी सीस पर खरी[2]। लूल[3] हमेल सजावन करी॥ १३॥
तहिरु डाल,[4] बसतनी[5] लाल। जे बहु मोला हुतो दुशाला।
तंग[6] रेशमी ऐंचनि कीन। दोनो चारु रकाबनि पीन॥ १४॥
कवका[7] दे करि ल्यायहु तहां। प्रभू बिराजहिं बैठे जहां।
अवलोकन करि सुंदर घोरा। सेवा करे भयो तन जोरा॥ १५॥
उठि करुनानिधि तबि चलि आए। इक रकाव पग पंकज पाए।
ग्रीव केस गहि हय के जबै। उकसे ऊपर चढिते तबै॥ १६॥
उछर्यो घोरा बल को भरियो। नहिं आसन पर श्री प्रभु थिरियो।
अवनी पर तिस ते थिर खरे। दाहन भुजा झटकबो करे॥ १७॥
चढे बहुर, पीडा कुछ भई। सेत रुमाल संग बंधि दई।
प्रिथम तुरंग तोर करि चाला। फोर्यो फेर सतेज बिसाला॥ १८॥
बहु धवाइ करि भले फंदाइओ[8]। पुन जननी मंदर प्रभु आइओ।
उतरि तुरंग ते अंतर बरे[9]। माता निकट बैठिबो करे॥ १९॥
गुर सपूति पर द्रिशटि पसारी। अति प्रिय हेरति ह्वै बलिहारी।
मुख को पिखि, सकंध पुन पेखा। बंध्यो बसत्र साथ अवरेखा॥ २०॥
हुइ शकति सुत को पुन कह्यो। इह क्या भयो बसत्र बंध रह्यो?
अहै कुशल सभि देह तुमारे? को कारन कहियति निरधारे[10]॥ २१॥
सुनि जननी ते कह्यो क्रिपाला। चढन लगे जबि तुरंग बिसाला।
उछर्यो बल ते भुज अटकाई। खाइ जोर पुन पीर उठाई॥ २२॥
सुनि संकति जननी तबि भई। ब्रिंद समग्री संचन कई।
कारदार सन भनि ततकाला। करी मंगावनि, सुत बेठाला॥ २३॥
तेल माहिं सतनाज अणाइ। लोहा, तिल, कंचन मंगवाइ।
गुर सपूत के अंगन लाए। इस छुहाई करि दिजन दिवाए॥ २४॥

---

1. घोड़े का नाम 2. अच्छी, सुंदर 3. एक प्रकार का भूषण 4. ज़ीन के नीचे डाला जाने वाला कपड़ा 5. एक प्रकार का वस्त्र जो घोड़े पर डाला जाता है 6. कमर से डाली जाने वाली रस्सी 7. लगाम 8. इधर-उधर उछाला 9. दाखिल हुए 10. खोल कर बताओ

तबि दिज लेकरि निकस्यो बाहर। थिरे पौर पर सिंह सु जाहर।
बूझ्यो बिप्र कहा इह ल्यायो ? सिर सदका[1] सतिगुरु दिवायो ॥ २५ ॥
सो बिप्रनि को जननी दीन। जांहि सदन को हम सभि लीन।
जबि सिर सदक सिंहन सुनिओ। मिलि आपस मँहि नीके गुनिओ ॥ २६ ॥
सिर सदक नहिं दैबो बनै। हम सिख गुर के हैं हित सनैं ?
इम बिचार करि लीनिस छीन। विप्र पुकार रह्यो, नहिं दीन ॥ २७ ॥
करति पुकार मात ढिग आयो। सिंहन छीन्यो, सकल सुनायो।
सुनि जननी कार कोप बिसाला। ऊचे बोलि कह्यो तिस काला ? २८ ॥
कैसे सिंह पौर पर राखे। लेनि दान पर जे अभिलाखे।
आवन जानो बंद करंते। दिज आदिक सभि संग लरंते ॥ २९ ॥
कहे सुने महिं किसके नाहीं। उचित अनुचितै लखि न सकाहीं।
ऊचे बोल मात के सुने। श्री सतिगुर श्री मुख ते भने ॥ ३० ॥
माता ! कोप किह सन अस कीना ? हुकम तुमारो को नहिं चीना[2] ?
सुनि सुत ते प्रसंग कहि दयो। तउ सिर सदक बिप्रनि लयो ॥ ३१ ॥
लए जात सो सिंहनि छीने। हुइ निसंग अस ऊधम कीने।
श्री सतिगुर सुनि बिप्र बुलायो। बूझनि हेत निकट ठहिरायो ॥ ३२ ॥
कहु दिज ! सिंहन संग प्रसंग। किम बोले किम कीन कुढंग ?
महांराज ! हम ले करि गए। पौर सथान पहुंचते भए ॥ ३३ ॥
बूझन लगे—कहा तुम आन्यो[3] ? गुर सिर सदक—हमैं बखान्यों।
इम सुनि सिर ते पट उतारी। कहैं कि—इस के हम अधिकारी ॥ ३४ ॥
अपर किसी को हम नहिं देति— । इस बिधि कहि ले धरी निकेति।
सुनि सतिगुर जननी संग कहियो। अपर दान जेतिक बच रहियो ॥ ३५ ॥
सो इन को दिहु, निकसहु पौर। जे बूझहिं सिख पुन तिस ठौर।
कहहु—संकलप करि दीआ दान। सो हम लए जात निज थान ॥ ३६ ॥
बहुर बंधि के पोट पयानो। सिंहनि बूझे तबहि बखानो।
करि संकलप दयो गुर दाना। सो सामिग्री हम अबि आना ॥ ३७ ॥
सुनति खालसे तबि कहि दयो। जाहु मिसर जू आछो भयो।
प्रथम समिग्री छीनी जोइ। अन देग महिं पायो सोइ ॥ ३८ ॥
कंचन आदिक वसतु बिकाई। ले करि मैदा घ्रित मिठाई।
पंचाम्रित[4] सभि को करिवायो। सकल खालसे महिं वरतायो ॥ ३९ ॥

1. सिर पर न्योछावर करके 2. समझा, माना 3. लाए हो 4. कड़ाह प्रसाद

जहिं कहिं भेज्यो सभि के डेरे। सुनिकै संगति संत अछेरे।
भयो प्रमोद कहैं किय नीको। सिर सदक श्री सतिगुर जीको ॥ ४० ॥
बहुर होइ जिस पर अरदास[1]। मालक तांहि खालसा[2] खास।
जिस को जोगी खोजति हरि। पाइ न सकहिं सुएसुर पारे ॥ ४१ ॥
सो सरूप जग तारण हेता। प्रगट भए वेदी कुल केता।
तिसको दसम रूप अवतारा। सिर सदक प्रभु होनि सुखारा ॥ ४२ ॥
तिह ले जाति अपर को भौन। तबहि खालसा होवति कौन।
इम विचार सगरे हरखाए। इस बिधि केतिक दिवस बिताए ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते **'सतिगुर प्रसंग'** बरननं नाम चतर त्रिसती अंशु ॥ ३४ ॥

---

1. प्रार्थना 2. केशधारी सिख

अंशु ३५
राजन को रण प्रसंग

दोहरा

इम बीते केतिक दिवस भीमचंद दुख पाइ।
पठे दूत गिरपतिनि[1] ढिग अपनो कशट बताइ ।। १ ।।

चौपई

श्री गुर गोबिंद सिंह उदारा। नित चाहति संग्राम अपारा।
पंथ रच्यो नित शसत्रनधारी। मारन मरन बनहिं बल भारी ।। २ ।।
आगै रण घाले घमसाना। मरे बीर लरि लरि करि जाना।
दिली पति के दल बहु आए। किस बिधि किस को बस न बसाए ।। ३ ।।
गह्यो न गयो न मार्यो गयो। इह प्रसंग तौ दूरहि भयो।
लरति जुध नहिं—किनहुं भजावा[2]। अर्यो रह्यो जै को करि दावा ।। ४ ।।
इत्यादिक लिखि सकल हकारे। पठे पत्र पठि हुइ न्रिप त्यारे।
मित्र कि शत्रु कि सम गुर साथ। चलि आए इक थल गिरनाथ ।। ५ ।।
प्रथमे भीमचंद कहि लूरी। भूप चंद सैलप[3] हंडूरी।
आइ चंबेल, फतेपुरी वारो। नाम वजीर सिंह बलि भारो ।। ६ ।।
देव शरण नाहण को राजा। ले करि संग सिपाह समाजा।
देखा देखी बहु चलि आए। गिरपति ह्म भ्राता समुदाए ।। ७ ।।
हान लाभ महिं चहियति मेले। इम बिचार सभि भए सकेले।
करि करि सभि मनमान उतारे। खान पान करि राति मझारे ।। ८ ।।
सुपति जथा सुख भी भुनसारा[4]। सौच शनान ठानि हुइ त्यारा।
लघु दीरघ मिलि करि समुदाई। भए एक थल सभा लगाई ।। ९ ।।
मीए[5], राजे, राव के राणे। सचिव समीपी जे मति स्याणे[6]।
बैठे सभि निशचल जबि ह्वै कै। आपस मै जै देवा कै कै ।। १० ।।
भीमचंद सैलिंद्र बिलंदा[7]। भन्यो सुनहु तुम सकल गिरिंदा।
क्यों न भविखत बात बिचारो। सिर पर शत्र प्रबल बिचारो ।। ११ ।।

---

1. पहाड़ी राजागण 2. भगा सका 3. पहाड़ी राजा 4. प्रात:काल 5. पहाड़ी राजाओं की एक उपाधि 6. समझदार 7. बड़ा पहाड़ी राजा

दित प्रति वधति दूत जिम चंद। देखति देखति भयो बिलंद।
जिनहु इरादा लेवे देश। लरन मरन की करि विशेश ॥ १२ ॥
हम तुम सभि को इक सम जानो। आज मोहि पुन तोकहु मानो।
गुरु गुबिंद सिंह भुज भारी। शाहु आदि ते त्रास न धारी ॥ १३ ॥
देश उजार्यो, छीने ग्राम। कई वेर कीनो संग्राम।
मुखि सैना के मरे हमारे। आदि केसरी चंद जुझारे ॥ १४ ॥
पुजहि न समता लरिबे मांहि। परखे कई वार बल जाहि।
जे अबि वैठि रहिं करि टारा। राज देश को छीनहि सारा ॥ १५ ॥
नित प्रति दल सिंहन को आवैं। लूट कूट करि मिटि हटि जावैं।
बाजति रहै बंदूक सदाई[1]। मरहिं कि मारहिं फते बुलाई ॥ १६ ॥
शाहु पुकार सुनी इकसारी। लर्यो आनि लशकरि तबि भारी।
अबि कै जाइ कहां कहि शाहू ? निरबल अधिक लखहि मन मांहू ॥ १७ ॥
बारि बारि की सुनहि पुकार। कै खिझ परहि करहि बुरिआर।
इक सौ जे गुर के सिख मरैं। आइ हजारहूं केसनि धरैं ॥ १८ ॥
नहिं निपटहिं नहिं पाइ पराजै। हान लाभ को लखहिं न काजै।
सुनहु गिरीशहु ! करहु उपाइ। यौं बिगरति कारज समुदाइ ॥ १९ ॥
सुनति घमंड चंद तबि भाखा। को उपाइ तुम ने अभिलाखा ?
बिना लरन ते अपर न कोऊ। मिले न बचहु, छीन ले सोऊ ॥ २० ॥
प्रथम शाहु ढिग बनहि न जाना। सैना संचि घालि घमसाना।
लरिबे कहु न्रिप धरहि जि आलस। राज करन की धरहि न लालस[2] ॥ २१ ॥
रिपु वस होहि न दंड बिहीना[3]। वधहि प्रताप स दंड अधीना।
बिना दंड ते कोई न जानहि। प्रजा दीन भी त्रिसक्रित ठानहि ॥ २२ ॥
जग महिं ऊच कि नीच समाजा। दंड देनि ते सरै सु काजा।
सुनति घमंड चंद को आशै। भूपचंद पुन बाक प्रकाशैं ॥ २३ ॥
जथा जोग तुम नीति उचारी। उचित न मिटहि मान करि हारी[4]।
मरे जुध महिं वीर घनेरे। सिमरहिं तिनहुं मरन डर हेरे ॥ २४ ॥
राजनि को इह बात न नीकी। उदम करन बनति है नीकी।
थोरे सिंह अबहि गुर तीर। लरहु भले लै करि भट भीर ॥ २५ ॥

---

1. सदैव 2. लालसा 3. बिना 4. हार मान कर रहना उचित नहीं

हमरी भूमि बिखै नहिं फिरै। जे नहिं मिटति उचित हम लरै।
इत्यादिक मिलि मसलत[1] करी। ओरक[2] लरन हेत बुधि धरी ॥ २६ ॥

सकल समाज त्यार को कीनि। गुलकां[3] अर बरूद भरि लीनि।
सतिगुर कै ढिग लिखे पठाए। अबि लौ टरे रहे गम खाए ॥ २७ ॥

नित बिगार करि सिंह सिधारैं। लूट कूट क्रिखि[4] मानव मारै।
तुम नहिं टरो हेरि हम हारे। अबि बाजहिंगे लोह करारे ॥ २८ ॥

नांहि त इत को पाय न फेरे। बैठे रहहु हरख जुति डेरे।
सभा मझार लिख्यो जबि आयो। श्री कलग़ीधर सो पढवायो ॥ २९ ॥

सभि राजे इकठे पुन ह्वै कै। सैंन सकेली धन बहु दै कै।
चाहति लर्यो फेर तुम संग। रन प्रिय सुनिकै न्रिपनि कुढंग ॥ ३० ॥

लिखवायहु उतर ततकाला। गिर देखनि को राज बिसाला।
करहिं अखेर[5] न्रित जत्रि जै हैं। को अर परहिं[6] त सिंह लरैं हैं ॥ ३१ ॥

फिरति दूण[7] महिं देख न सको। नाहक[8] जंग करने को तको।
तौ इत कहां त्रास को धारैं। बैठि रहैं, नहिं वहिर पधारैं ॥ ३२ ॥

लरिबे चहौ, खालसा लरै। मारन मरन जुध महिं थिरै।
चढहु जि तुम, इहठां नहि देर[9]। देखहु पुन करिके भट भेर[10] ॥ ३३ ॥

लिख्यो गुरु को पहुंच्यो जाइ। पठिवायहु सुनि सभि गिरराइ।
सैंन सकेलनि कीनसि त्यारी। अबि हुइ ठाठ टरै नहिं टारी ॥ ३४ ॥

सभि राजन के बजे नगारे। जीन तुरंगनि ततछिन डारे।
मुजरा[11] सभि सुभटनि को लयो। दस हज़ार गिनती महिं भयो ॥ ३५ ॥

चढि अनंदपुरि की दिश आए। आयुध्र गहे भटनि समुदाए।
तोमर, तीर, तुपक, तरवार। सिपर, कमान, जमधरा धारि ॥ ३६ ॥

चलि थोरे ही कीनस डेरे। सकल संभारे जिस जिस केरे।
सुध सतिगुर पहि ततछिन आइ। गिरपति चढि आए समुदाई ॥ ३७ ॥

पहुंचे लखहु आपने तीर। गहे तुपक, तोमक, धनु, तीर।
सुनि सतिगुर त्यारी करवाई। गुलकां[12] अरु बरूद समुदाई ॥ ३८ ॥

---

1. मंत्रणा 2. अन्त में 3. गोलियाँ 4. खेती 5. शिकार 6. अड़ते हैं 7. वादी, घाटी 8. व्यर्थ 9. यहां भी कोई देर नहीं है 10. लड़ाई 11. सलामी 12. गोलियां

ले ले सिंह धरैं उतसाहू। कहैं प्रहारहु रिपु रण मांहू।
हुकम दीन रणजीत नगारा[1]। दिहु बजाइ दल ह्वै सभि त्यारा ॥ ३९ ॥
सकल खालसे गर धरि असी[2]। सिपर समेत तुरत कट कसी[3]।
लरन जिनहु को नित बिवहारे। भए सनधबध सभि सारे ॥ ४० ॥
आप चढे तबि गोबिंद सिंह। मत गजनि पर जिम कुप सिंह।
जरासंध पर गोबिंद जैसे। जादव संग खालसा तैसे ॥ ४१ ॥
सिंहन भन्यो प्रभू सुनि लीजै। चलो अग्र ही रण को कीजै।
इहां न पहुंचै रिपु समुदाई। वधि आगे[4] ही लेहि लराई ॥ ४२ ॥
दूर अनंदपुरि की तजि गए[5]। राजनि के मुकाबले भए।
हित संग्राम होहि करि त्यारे। हरख समेत सुचेत उदारे ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते **'राजन को रण प्रसंग'** बरननं नाम पंचत्रिंसती अंश ॥ ३५ ॥

---

1. नगारा विशेष 2. गले में तलवारें धारण कर लीं 3. कमर बांध ली 4. आगे बढ़कर 5. त्याग गए, छोड़ गए

अंशु ३६
संग्राम प्रसंग

दोहरा

उमडे दल दिश दुहनि ते करी तुफंगैं त्यार।
दसतरवां कर तजि दई[1] होनि लगी तबि मार ॥ १ ॥

चौपई

हित हेरिन के जंग तमाशा। श्री कलगीधर ह्वै इक पासा।
ऊचे थल पर ह्वै थित रहे। दोनहुं दिश के दल को लहे[2] ॥ २ ॥
सिंह आठ सै हुइ सावधाने। दस हज़ार गिरपति भट आने[3]।
ज्वालाबमणी[4] की थिर माला। छुटि इक बार प्रकाशी ज्वाला ॥ ३ ॥
घटा चमूं महिं तड़िता जागी। करका बरखति गुलकां[5] लागी।
हय को फेरि तुफुंग चलावै। वधे अग्र को मारि गिरावैं ॥ ४ ॥
देखि परसपर भनहिं पहारी। इह बिद्या सिंहन महिं भारी।
हय धवाहि पुन हतैं निशाने। निज बचाइ करि वहुर पयाने ॥ ५ ॥
करि हंकार खालसा रिदे। ओरड़ परे अग्र को तदे[6]।
भीमचंद निज अंग बचाए। रण के सनमुख सकै न आए ॥ ६ ॥
भूप चंद हुंडूरी धायो। देव शरण को संग मिलायो।
बहुर वजीर सिंह रण घाला। छूटति गुलकां नाद कराला ॥ ७ ॥
सभि सिपाह को आगै धरिओ। आप भि लरन हेत मन करिओ।
होति तड़ाभड़ शब्द तुफंगनि। गिरहिं सूर लागी जिन अंगनि ॥ ८ ॥
रुधर निकसि छित रकत बिसाला। लगे कराहनि घाइल जाला[7]।
पुन चंबेल आनि कर लरे। आयुध अनिक प्रहारन करे ॥ ९ ॥
कुलू कैंठल[8] कै जसुवारी। बीर सिंह पहुंच्यो बलि भारी।
इति ते आलम सिंह अगारे। उदे सिंह गन वन प्रहारे ॥ १० ॥

---

1. हाथों को चला कर बंदूक गतिमान कर दीं 2. देख रहे थे 3. लाए 4. बंदूक 5. गोलियां 6. तभी 7. समूह 8. पहाड़ी रियासतें

तिस छिन भेज्यो नर गोसाईं। सकल खालसे दयो सुनाई।
वधहु न आगे[1], थिर ह्वै लरो। ज्वालाबमणी[2] छोरन करो ॥ ११ ॥
सुन्यों हुकम को टिकि टिकि लरे। आगै नहिं बधै भट भिरे।
मिलि पहारीयनि घाल्यो हेला[3]। मारि मारि करि रौरहिं मेला ॥ १२ ॥
दुंदभि ढोल पटहि वहु वाजे। मारू राग सुनति भट गाजे।
नट जिम उछले छाल छलंगी[4]। गहिकै सिपर क्रिपानै नंगी ॥ १३ ॥
ओरड़[5] पडे वीर इक वारी। सिंहन लग पहुंचे बलि भारी।
सेले बरछे आनि चलाए। सिंहनि सनमुख घाव सुखाए ॥ १४ ॥
थाव[6] न तजी अरे रण रहे। गुर प्रताप ते रिपु गन दहे।
घाली हेल झाल भट खरे। इतने बिखै सिंह रिस भरे ॥ १५ ॥
खड़ग म्यान ते खैंचि निकारे। तुरत फुरत करि हते जुझारे।
जबि दस बीस अग्र के मारे। हटे कुछक शत्रु डर धारे ॥ १६ ॥
देखति भयो खालसा आगे। मुहरा[7] छोडि पहारी भागे।
परे गैल महिं टले न टाले। खडक्यो खडग कराल बिसाले ॥ १७ ॥

छंद

जबै जुध जागा। कटे सीस बागा[8]।
बढे खग धारा। जथा काठ आरा ॥ १८ ॥
गिरे जुध सूरा। न्रिपै नंद कूरा[9]।
गुरु देखि दूरं। भयो जग भूरं ॥ १९ ॥
कड़ाकड़ माची। जिमी श्रोण राची।
भजे डोगराने। तज्यो खेत बाने ॥ २० ॥
जबै सिहं धाए। पहारी पलाए।
तज्यो नाहि गैले। डरे नाथ सैले ॥ २१ ॥
न आग्या गुसाईं। अगारे सिधाई।
सु बातैं विसारी। नहिं याद कारी[10] ॥ २२ ॥

---

1. आगे न बढ़ो 2. बंदूक 3. आक्रमण 4. छैल 5. इकट्ठे होकर, झुक कर 6. स्थान 7. सामने की ओर 8. बांके, सुंदर 9. झूठे गए 10. काम आने वाली बात

गुरु है बिचारे । महा ए हंकारे ।
बड़ी जीत पाए । चले जाति धाए ।। २३ ।।

उठे आप स्वामी । चढे तेज गामी ।
हय रंग नीला । शिगार्यो छबीला ।। २४ ।।

परे पंथ पाछे । बडी चाल गाछे[1] ।
सु त्यागे लराई । चले जाति धाई ।। २५ ।।

दोहरा

सिंह बिलोकति भे कितिक गए गुरु रण छोरि ।
पाछै करति न डीठ भी जाति अनंदपुरि ओर ।। २६ ।।

चौपई

गुरु चरित्न को पिखि बिसमाए[2] । नहिं मारन को शसत्न उठाए ।
केतिक लरति पाछ को हटके । रण को त्यागति इत उत सटके ।। २७ ।।
तबि पहारीअनि इन गति जानि । हटि घाल्यो हेला घमसान ।
परी खालसे महिं बहु भाज । पीछ भजे त्याग सभि लाज ।। २८ ।।
घनी परी शसत्ननि की मार । केतिक ऊचे कीनि पुकार ।
श्री प्रभु ! पंथ आप को अहै । कटीआ होति पराजै लहै ।। २९ ।।
किउं न संभारति हटि पिछवाई ? कौन खता[3] इन के गर पाई ।
जे करि सिंह हैं अवगुनियारे । तऊ आपके जगत उचारे[4] ।। ३० ।।
इत्यादिक बोलति समुदाए । मिले आनि को हयनि धवाए ।
करति पुकार सु आइ घनेरी । हित हेरनि गर ग्रीव न फेरी ।। ३१ ।।
कहैं बहुत प्रभु छिन भर थिरो । लरति पंथ अवलोकन करो ।
कहि जबि रहे, खरे नहिं होए । नौरंग सिंह मिल्यो प्रभु जोए ।। ३२ ।।
तुरत[5] तुरंग उतर्यो अगुवाई । ऐंचि लकीर दई सहिसाई ।
भाख्यो नील्या[6] थिरो इथाएं[7] । गुर की आन अग्र नहिं जाए ।। ३३ ।।
सुनि करि दल बिदार[8] थम गयो । पाइ अग्र नहिं पावति भयो ।
तबि गुर मार्यो एडनि जोरा । लंघ्यो लकीर नहिं किम घोरा ।। ३४ ।।

---

1. चले 2. हैरान हुए 3. ग़लती 4. जगत उन्हें आपका ही कहेगा 5. शीघ्र, तुरन्त 6. नीले रंग वाला घोड़ा 7. इसी स्थान पर 8. घोड़े का नाम

छरी हाथ मैं पतरी हुती। द्वै चारिक करि बल ते हती।
खाइ मार नहिं चरन उठावा। फुरकति इत उत अग्र न जावा ॥ ३५ ॥

ज्यो नहरी कंटक मुख दीनी। रुक्यो तहीं तैसी बिधि चीनी।
जबि सतिगुर हय एव बिलोका। दे करि आन[1] चलनि ते रोका ॥ ३६ ॥

तरे[2] उतरि करि तहिं ततकाले। कलगीधर भाख्यो असु नाले[3]।
प्रथम जनम तेरी हम जान्यो। जिस ते थिर्‌यो बाक सिख मान्यो ॥ ३७ ॥

हुतो मसंद लेति बहु धन को। रह्यो अचति[4] भोजन तबि इनको।
सिखन ते ले करि गुरकार[5]। खावति रह्यो अनेक प्रकार ॥ ३८ ॥

सुनि सतिगुर ते जथा अलायो। सिर हिलाइ घोरा फुरकायो।
तबि श्री प्रभु बैठे तिस थाना। सभिनि सुनावति ऊच बखाना ॥ ३९ ॥

दोहरा

खालसा गुरु गुरु खालसा थिरहु खालसा जुध[6]।
हतउ रिपुनि दल को दलहु पकरहु शसत्रनि क्रुध ॥ ४० ॥

चौपई

सुनि सतिगुर के वर सम बैन। हट्यो खालसा रिस करि नैन।
धरि ज्वालाबमणी[7] अरि दमणी। छोरी गुलकां[8] गन रिपु शमणी ॥ ४१ ॥

श्री गुर थिर ह्वै धनुख संभारे। सपत बान ऐंचन करि मारे।
परी गगन महि गरव[9] गुंजार। बिसमाने रिपु सुनि धुंकार ॥ ४२ ॥

इक ही बार हटे सभि सिंह। म्रिग बिलोकि जिउं भूखा सिंह।
अग्र जु मारति आवति धाए। कितिक हते को मारि हटाए ॥ ४३ ॥

तोमर, सेले, सांग प्रहारे। सिपर अग्र करि किस खग मारे।
गुर बच ते शहीद[10] गन दउरे। परे हेल करि, भे रिपु बौरे ॥ ४४ ॥

मची मार दीरघ इक बारी। मरि मरि परते पाइ पसारी।
जनु मलंग[11] भंगहि[12] को खाइ। लिटहि परे इस बिधि समुदाइ ॥ ४५ ॥

---

1. शपथ 2. नीचे 3. घोड़े से 4. पाठांतर 'अंचित' 5. गुरु की भेंट 6. युद्ध-भूमि में खालसा स्थिर हो कर युद्ध करे 7. बंदूक 8. गोलियां 9. गंभीर 10. बलिदान जिन्होंने दिया हो 11. साधु, मस्त व्यक्ति 12. भांग को

सुभट तुरंग मरि खेत मझारी। लोथनि[1] सों पूरन थल सारा।
सरब गिरेशुर[2] ओज लगाए। परी भांज किम पग न जमाए॥ ४६॥

फेरि तुरंग सिपाह हटावैं। म्रिग सम भाजे किम अटकावैं।
बजी वंब रणजीत नगारे[3]। भाजे शत्रु केतिक मारे॥ ४७॥

रुंड मुंड हुइ परे हजारां। ग्रिध ब्रिध उड़ि गगन मझारा।
कहिं लग बरनौ जुध बिसाला। भई बिजै सिंहनि तिस काला॥ ४८॥

सगरी सुख होई सभि मांही। घाइल म्रितक तज्यो को नांहो।
चढे अनंदपुरि को चलि आए। हटे पहारी गे निज थांए॥ ४९॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते **'संग्राम प्रसंग'** वरननं नाम खशट त्रिसती अंशु॥ ३६॥

1. लाशों से 2. पहाड़ी राजागण 3. नगारा विशेष

अंशु ३७

कलु प्रसंग

दोहरा

गए पहारी झूरते चल्यो नहिं बसि कोइ।
सुभट मराए सैंकरे जग महिं अपजस होइ ॥ १ ॥

चौपई

पुन इक थल हुइ मसलत[1] कीनी। भली लराई क्यों हुं न चीनी।
भीमचंद सभि बिखै उचारी। मैं पूरब ही गिनती धारी ॥ २ ॥
गुरु संग जंग नहिं बनि आवै। जिन ते जै क्योंहुं न[2] के पावै।
गुर चलि गए भाग किछ परी। ठहिरे बहुर बाहनी मुरी ॥ ३ ॥
परी मार ऐसी किछ आइ। नहिं संभाल भई किस थांइ।
दस हजार संग हुती सिपाह। रहे हटाइ हटी किम नांही ॥ ४ ॥
अबि तुरकनि की सैन चढावहु। देहु दरब तूरन[3] अनवावहु।
सभि गिरपति के सचिव सिधावैं। गैल आपने लै करि आवैं ॥ ५ ॥
मानी भूप चंद हंडूरी। भनी घमंड चंद भी रूरी।
ततछिन दिली सचिव पठाए। मिले सु अवरंग[4] के उमराए ॥ ६ ॥
सकल जिकर तिन खोलि सुनायो। दरब इतिक तुम निकट पठायो।
पुन कदीम[5] हैं प्रजा तुमारी। बनहु आप सभि की रखवारी ॥ ७ ॥
गुर ते दे करि हाथ बचावहु। पुन धन पठैं अधिक इत आवहु।
इम गिरपति बहु सचिव पठाए। इत अनंद पुरि सतिगुर आए ॥ ८ ॥
कर्यो कराह[6] बहु वजी वधाई। आए जीत शत्रु समुदाई।
दान ब्रिंद रंकनि को दीनो। सुजस पसारन जहिं कहिं कीनो ॥ ९ ॥
मंगल करे अनेक प्रकारा। मंगल मूल गुरु दातारा।
बजहिं म्रिदंग रबाब घनेरे। गाबैं शबद सुखद गुर केरे ॥ १० ॥

---

1. मंत्रणा 2. किसी ढंग से भो 3. तुरन्त 4. औरंगज़ेब 5. आदि काल से, प्राचीन काल से 6. कड़ाह प्रसाद

घायल साल पत्र[1] को लाए। मिले घाउ उठि तुरत नहाए।
केतिक दिन इस रीति बितीते। आइं जाइं सिख संगत प्रीते ।। ११ ।।
इक दिन सतिगुर सभा लगाए। बैठे सिंह आनि समुदाए।
बीर सिंह जसपाली आयो। मिलिं श्री प्रभु को सीस निवायो ।। १२ ।।
मदन सिंह रजपूत दरस करि। बंदन करी सभा महिं ह्वै थिर।
इन ते आदिक अपन बिराने[2]। बैठे सकल सुनहिं बच काने ।। १३ ।।
श्याम सिंह प्रभु के ढिग बैसा। हाथ जोरि बूझति भा ऐसा।
श्री प्रभु चित संसै बहु मेरे। उतर कहो आप इस वेरे ।। १४ ।।
हिंदू मुसलमान हैं घने। जहिं कहिं जग महिं दुशट सु बने।
पंथ खालसा होयसि थोरा। पयति कहूं कहूं को टोरा[3] ।। १५ ।।
सकल शत्रु को हति करि कैसे। राज पाइ किम ? कहीयहि तैसे।
वधहि तेज किम लैहै धरनी ? ठहिरहि राज कौन करि करनी ? ।। १६ ।।
बहुतनि की क्रित अलप करैं किम ? बनहि अलप की बहुतनि ते तिम[4]।
हिंदू तुरकनि बडो समाजू। सभि रिपु पर किम ठहिरहि राजू ।। १७ ।।
कहीयहि पंथ सुनहि प्रभु तेरा। हान लाभ जानहीं इस बेरा।
वरतहि वरतारा जग जथा। श्री मुख सुंदर ते कहि तथा ।। १८ ।।

दोहरा

बरतारा वरतै जगत सुनो सिख चित लाइ।
सतिगुर जैसी भावसी तैसी चलसी बाइ[5] ।। १९ ।।
खाइगो खरच लेईगो लाल ।
सरकै गा[6] जुध मांहि, करैगो निहाल ।। २० ।।
खारी लग लछमी सिमटी सगरी आने सार[7]।
खड़े लड़े संग्राम महिं खलक करैगो पार ।। २१ ।।
खान[8] खाइ लशकर परे करै सार का मेल।
तबै खालसा जगेगो जानहु भारथ पेल[9] ।। २२ ।।
खंजोगी लंभोग महिं सार संग्रहण मांझ[10]।
सुन ध्यान गुण ग्यान महिं करै खालसा सांझ ।। २३ ।।

---

1. घावों को भरने वाला एक विशेष पत्ता 2. अपने और पराए 3. ढूंढने पर कहीं कहीं मिलेगा 4. थोड़े खालसा की अधिक संख्या वाले धर्मों पर कैसे सत्ता कायम होगी 5. उसी प्रकार वायु चलेगी 6. आगे बढ़ेगा 7. लोहा लेकर 8. पठानों को 9. युद्ध 10. अभिप्राय योग, भोग और वीर रस का खालसा समन्वय करेगा

खादरु ला दरु सागरे[1] बीच करैंगो राज ।
दिली टिकै न राज सिख गुर नानक बखशी सांझ ।। २४ ।।
मालव, कुर[2], जांगुल, किले, माझा, परबत, अटक ।
कशमीरी सो हंहपुर[3], मलक पुरे में सटक[4] ।। २५ ।।
पिशौर, जलाला कावली लेवैंगे जउ केस[5] ।
तवै खालसा सिध दुर दिलीकेसुर[6] भेस ।। २६ ।।
रूप रंग सभि छिपैगी दीप सिंह नवरंग ।
जोती जोत समाइ करि लोहे छोह भुजंग[7] ।। २७ ।।
कोऊ दित खाहे सही लवपुरि अरु कशमीरु ।
साधैगा सो खालसा हुइ मम दसतंगीर[8] ।। २८ ।।
अहै गुरु का खालसा गुरु खालसा होइ ।
इम सुनिकै सभि सिंह तवि नमो करै सभि कोई ।। २९ ।।
गुर बूझे पुन आप को दरशन होइ कि नांह ?
बोलि हौं बनि खालसा वरतौंगे सभि मांहि ।। ३० ।।
खारी लग[9] लछमी जहा तुकां लिख़ी बनाइ ।
तिन के अरथ बिचारीये तीन बरण निकसाइ ।। ३१ ।।
इक खकार को लीजीए वहुर लकार सकारु ।
तीनहुं को पद खालसा कीन अरथ उचारु[10] ।। ३२ ।।

चौपई

इम कहि तूशनि[11] भए गुसाईं । देशत सभि दिशा द्रिशटि चलाई ।
लख्यो सुभाइ खालसे गुर को । बूझ्यो पुन जो संसै उर को ।। ३३ ।।
श्री प्रभु किम वरतहि वरतारा[12] ? किम भाणा[13] होऐ करतारा ?
समे कलू को को को होइ ? वधहि राज न्रिप कहिआहि सोइ ।। ३४ ।।
रिदै खालसे लालस लहो । भूत भविखत की गति कहो ।
इम सुनि सिंहनि की अरदास[14] । श्री कलगीधर कीनि प्रकाश ।। ३५ ।।
चार लख वतीह हजार । कलू आरबल[15] करी उचारा ।
जिस महिं संत होइ ब्रह्म ग्यानी । सगरे दख करहि सो हानी ।। ३६ ।।

---

1. भूमि से समुद्र तक 2. कुरुक्षेत्र 3. हांसी 4. जाएगा 5. केशधारी सिख 6. दिल्लेश्वर 7. नवयुवक सिख 8. सहायक 9. समुद्र तक 10. यहां तक 'खालसा' शब्द की व्याख्या की गई है 11. चुप 12. संसार में कैसी वर्तनी होगी 13 इच्छा 14. प्रार्थना 15. आयु

दोहरा

कलि दरशन[1] के कारणे उठे प्रात इक बरख।
नगर दूर हुइ देखीऐ तबि दरसावै हरख ॥ ३७ ॥
नगन शिशन, बातल वपू, कर मैं भोजन खाइ।
नील वसन, बोलै हसै, सहिज सुभाइ नहाइ[2] ॥ ३८ ॥
दरशन ते पातक गए, मिटी संक सभि देह।
जो बोलै सो वाक[3] उठि चितवति पूरन लेहि ॥ ३९ ॥

चौपई

जबि पांडव हटि गयो समाजा। माघध इक हजार किय राजा।
तिन पश्चात नंद के राजे। डेढ हजार सु भुग्यो समाजे ॥ ४० ॥
परसराम सम से जग होइ। शूद्र छाप कीनी सभि कोइ।
जग महिं दिज आदिक जे भए। सिर मुख सभिनि मुंडाइ सु दए ॥ ४१ ॥
केश दूर सभि इक सम करे। दोख अधिक व्याप्यो समसरे।
राजूपत जै दासीनंद[4]। पंच पुशत किया राज ब्रिलंद[5] ॥ ४२ ॥
सौरज[6], मौरज[7], तूरज[8] होइ। बहुर पठान राज लिय सोइ।
मुगल भए तिन ते पशचाती। प्रजा भई सभि औरे जाती ॥ ४३ ॥
पुन रौरा केतिक दिन परै। सैन काबली ते सभि डरे।
दछन के दल उमडहिं घने। लूट कूट जग को दुख बने ॥ ४४ ॥
तबहि सिंह गरजै बड भारी। परहि जंग संग सैन कंधारी।
पूरब बिखै मोन वध जावैं। लर करि सभि की सफा उठावें[9] ॥ ४५ ॥
इतै सिंह उत होइ फिरंगी[10]। दल दोनहुं के ह्वै बड जंगी।
केतिक समति इमहु वितावें। मिलि करि मसलत[11] राज कमावें ॥ ४६ ॥
वधहि खालसा ले बड राजा। सभि बिधि ते अधिकाइ समाजा।
जित कित सिंह नाम गुर जपैं। चहैं ऊथपहि किस हूं थपै[12] ॥ ४७ ॥

दोहरा

घर घर उजरै घर घर वसै घर घर रोवै नारि।
घर घर पूजा, घर घमंड[13], घर घर हुइ मरसार[14] ॥ ४८ ॥

---

1. गुरु नानक के दर्शन करने के लिए 2. झुक गया 3. गुरुवाणी 4. दासी पुत्र नंद 5. बड़ा 6. सूर्यवंशी 7. मौर्यवंशी 8. एक राजपूत जाति अथवा ईरानी 9. विनष्ट कर देंगे 10. अंग्रेज 11. मंत्रणा 12. किसी को उखाड़ दें, किसी को बसा दें 13. पाठांतर—घर-घर घमंड 14. श्मशान भूमि

चौपई

चिरकाल लो राज कमावैं। पाछै पुन मलेछ वधि जावैं।
कलजुग घोर होइ जिस काल। निहकलंक तबि तेज बिसाल ।। ४९ ।।

इस प्रकार गुर सकल सुनायो। सुनि सिंहनि सभि सीस निवायो।
कहि गुरबखश सिंह शुभ कथा। सिख श्रोता प्रेमी सुनि तथा ।। ५० ।।

दोहरा

राम दास कुल रामकुइर गुर उकर्ती कहि चुप।
कहिते लगी समाधि पद लई गुपति रस गुप[1] ।। ५१ ।।

कल वरतारा[2] पढि सुनै कलजुग तांका दास।
पाप भगै, भगती जगै, धन सिख की आस ।। ५२ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते '**कलु प्रसंग**' बरननं नाम सपत त्रिसती अंशु ।। ३७ ।।

---

1. गुप्त 2. वर्तनी

अंशु ३८

रहित प्रसंग

दोहरा

केतिक दिन बीते बहुर बैठे सभा मझार।
करैं रबाबी[1] कीरतन सुंदर शबद उचारि॥ १॥

चौपई

रामकुइर निज त्याग समाधि। रिदे ध्यान धरि गुरु अगाध।
सिख संगत गन सिंह जि श्रोता। सुनि सुनि सभि के अनंद उदोता॥ २॥
सतिगुर कथा करन लगं भाई। गुर सेवक के तन मन भाई।
भगति बयान ते पूरन जोई। सिखी अरु विराग महिं भोई[2]॥ ३॥
सदू मदू[3] दोनहुं भ्राता। गावैं राग सुरनि[4] के ग्याता।
करी बिलावल चौंकी[5] चारु। भोग पाइ अरदास[6] उचारि॥ ४॥
पीछे सिंहन बिनती कीनि। सकल कला समरथ प्रवनि।
कल महिं कर्यो खालसा बीर। सभि ते उतम गुनी गहीर॥ ५॥

दोहरा

सरब शिरोमण खालसा रच्यो पंथ सुखदाइ।
बिन इक गंदे धूम ते जग महिं अधिक सुहाइ॥ ६॥
पूछैं परम सु प्रेम करि रहिनी को बिरतंत।
किस को देवें, किम रहै, कैसे वरतैं[7] संत ?॥ ७॥
गुरु कहैं सुनि खालसा केस पाहुली[8] मुकति।
खंडे[9] की सभि ते भली कै चरनन की जुगति॥ ८॥
जुग जुग महिं हम अवतरैं अपने भगतनि काज।
रहिनी रहै सु खालसा सो मेरो सिरताज॥ ९॥
धरैं केस पाहुल बिना भेखी मूरख सिख।
मेरा दरशन नहिं तिस पापी त्यागे सिख॥ १०॥

---

1. मुसलमान गायक 2. मिश्रित 3. मुसलमान गायकों के नाम 4. स्वर 5. कीर्तन 6. प्रार्थना 7. व्यवहार करें 8. अमृत 9. दो धारी तलवार

एक मज़ब[1] रहिना भला दो मैं रहै न कोइ।
मेरो सिख कहाइकै भरमै पापी सोइ ।। ११ ।।
त्रै प्रकार मम सिख है सहिजी[2], चरनी[3], खंड[4]।
यां ते केसी होइ सिख तीनों करै बिहंड[5] ।। १२ ।।

चौपई

मेरा सो जो राखै रहित। गुर आइसु महिं निस दिन रहति।
पहिर रात ते करै शनान। सुच संजम सों हुइ सवधान ।। १३ ।।
जप आदिक गुरवाणी पाछ। पढैं गुरमुखी[6] तजि जन ठाठ।
श्रुत अरु सतिगुर बाकनि धारैं। और ब्याध सम सगरी टारै ।। १४ ।।
नहिं पारसी अरबी पढ़ै। मुख ते निस दिन गुर गुर रढ़ै।
नहिं तुरक को सीस निवावै। नहिं संगति बैठहि, नहिं खावै ।। १५ ।।
चाकर बनै जीविका हेत। धरै शसत्र रण रहै सुचेत।
कबहुं न ठहिरै लोभी मीत। सिख पहाड़ी[7] करै न प्रीत ।। १६ ।।
चार बरन सों बरतै ऐसे। सुनो सिख मम बचहै जैसे।
बाहमण चरण पाहुली होवै। अथवा सहिजे सिखी जोवै ।। १७ ।।
मेरो सिख आन सभि त्यागै। भेखी बाहमण दान न लागै।
दिज लोभी नहिं निकट बुलाव। मेरो होइसु मुख नहिं लावै ।। १८ ।।
सरवर[8] गुगा आदि जि पीर। दिज दिजनी सेवै हुइ भीरु।
तिस की संगति सिख न बसे। देनो दान कहां फल हसे ।। १९ ।।
गुरु गुर सिख की निंदा करै। तिस दिज को दे सो दुख भरै।
जे को मेरा होइन सिख। तिस बामण को देइ न भिख[9] ।। २० ।।
दिज बिन केस जु पाहुल धारे। तिस पाखंडी दूर निवारे।
सुच संतोख रहित को राखण। धारै धरम, श्रुत करै जु भाखण ।। २१ ।।

दोहरा

मेरे सिखनि वेख[10] धारे दान लूटिबे हेत।
धरे केस रिख धंध तजि कपटी पापी केत ।। २२ ।।
बिप्र वरण उतम बड़ा तीन देव को रूप।
पलट मजब[11] पीरन जजै सो पापी परे कूप ।। २३ ।।

---

1. धर्म 2. जिसने अमृत पान न कर के सहज रूप में रह रहा है 3. जिसने चरणामृत लिया है 4. जिसने दोधारी तलवार का अमृत पान किया हो 5. तीनों में पूर्णता प्राप्त की हो 6. गुरमुखी लिपि की रचनाएं 7. पहाड़ी व्यक्तियों के साथ 8. सखी सरवर 9. भिक्षा 10. भेख 11. धर्म

भेस केस धरि आन सिख पूजति तुछन देव ।
तांहि न पानी दीजीए, मेरा सिख सु सेव ।। २४ ।।
केसा धारी भेखीआ जीवन के तिन काज ।
धरे केस चंडाल सम देह दान हुइ पाज[1] ।। २५ ।।

चौपई

मड़ी मसाणी गोर[2] न मानै । भेखी को नहिं देवै दानै ।
जहिं कहिं को नहिं खाए प्रसादि । करै जि तीनो सिख सु बाद[3] ।। २६ ।।
बिन बूझे देवनि को जजै । मैं छोडा सो सिख मम तजै[4] ।
मेरा सिख जु तीरथ जानै । देहि अथित को भोग भुगावै ।। २७ ।।
देय जु दान परब को मानि । गुर विशवाशी गुरु सथान[5] ।
वेखो[6] नांहि तीरथन पांडे । करे भेख बन आवहि आंडे[7] ।। २८ ।।
रहै इकांत प्रीत जन दूर । मम बिचार सो नित भरपूर ।
सिख भुगावै मेरा सिख । केस भेस नहिं मेरो ब्रिख[8] ।। २९ ।।

दोहरा

हुइ सकेस कै केस बिन मेरा होइ निसंग ।
बामण सोई ब्यास सम देवै दान उमंग ।। ३० ।।
कन्या देवे सिख को लेवै नहिं कुछ दाम ।
सोई मेरा सिख है पहुंचे लै मम धाम ।। ३१ ।।
सरवर[9] गुगा[10] पीर जै, जोगी, भूत न सेव ।
गुर पूजे सभि काम महिं पहुंचहि मम घर एव ।। ३२ ।।
जपु, अनुंद, पढि जाप नित थोड़ा सारा सिख ।
रहिरास, आरती शबद पुर कीरतन करै सुभिख ।। ३३ ।।
सिख सिखणी[11] मिलि बहैं चरचा करै अपार ।
भजन सिखावैं पुत्र को नित भजि बारंबारु ।। ३४ ।।
खत्री वैश कि शूद्र सिख श्राध पित्र को जानि ।
करै करावे बिप्र सिख आन बिप्र नहिं मान ।। ३५ ।।

---

1. भाव—निष्फल 2. मठ अथवा समाधि-स्थल, श्मशान और कब्र 3. व्यर्थ 4. छोड़ दे, त्याग दे 5. गुरु-धाम पर 6. देखो 7. भेख धारण करके आते हैं 8. सिख पंथ से सम्बन्धित नहीं है 9. सखी संरवर 10. गोगा 11. सिख की पत्नी

देइ कुदान जु सिख मम ग्राहक जावै नरक।
अपन भला तांको बुरो तांही ते करि फरक[1]॥ ३६॥
गुरु भरोसा, आस गुर, नहिं को लोक प्रलोक।
ग्यान ध्यान, इशनान जुति सिखी रीति अशोक॥ ३७॥
पर नारी रमता जुई, पड़ै पारसी जीव।
नां मैं तांका नांहि मम सिख न तिस जल पीव॥ ३८॥
पढै पारसी जांहि घर तांका नहिं विसाहु।
तांका छुहिआ न खाईए तज्यो धरम को राहु॥ ३९॥
श्राध कराई ब्याह धन, मम सिख विप्र जि खाहि।
सो भेखी पापी अधिक अतिथनि देहि जु नांहि॥ ४०॥
ग्रह पूजा, पुन गाइत्री वेचि दाग लै, विप्र।
ग्रहण दान, छाइआ, पसू, खावति नरकी छिप्र[2]॥ ४१॥
ग्रहण समे पूजा, जप, तरपण होम, शनान।
छूटे ग्रहण दे दान को सो मम सिख शुभ जान॥ ४२॥
दान लेइ जो ग्रहण मै आतमघाती मूढ़।
मेरा सिख तिस विप्र को गेरे कूपन गूढ़[3]॥ ४३॥
दान पतिग्रह निरधना लेति कुलीनी जोइ।
सम मेलेछ हुइ बिप्रता तांहि स्वरग नहिं होइ॥ ४४॥
कन्या धन, जो ग्रहण धन, देव पूज जो खाइ।
इहां तजें तिह को सकल, भली न गति को पाइ॥ ४५॥
मेरा सिख ग्रंथ की पूजा ले अरदास[4]।
लिखि खावै झूठा चुगल सो मेरा नहिं दास॥ ४६॥
जो ले पूजा दरव को देगा[5] देह बंट खाइ।
करहि न मन महिं लोभ को, कंर जु लहैं सजाइ॥ ४७॥

चौपई

खालसा सो जो लेइ न दान। हिंदू तुरक की रखै न आन।
दिज पतिग्राही छुवे न अंग। सो मेरा हउ तिस के संग॥ ४८॥

---

1. लेने से भिन्न अथवा दूर रहे, अंतर रखे 2. शीघ्र 3. गंभीर, गहरे 4. भेंट चढ़ाते समय की गई प्रार्थना 5. कड़ाह प्रसाद, खाद्य सामग्री

दोहरा

शासत्र धारिक खाईए इह छत्रिन की रीति।
दिज संतोखी दान भल खावै भजै सु मीत ॥ ४९ ॥

भेख न प्यारो मोहि को, वरन नहिं प्रिय काहि।
रहित सु प्यारी मोहि कउ सिदक[1] महां प्रिय आहि ॥ ५० ॥

रहिनी सतिगुर सिख की कही जु हित चित लाइ।
पड़ै सुनै भगती लहैं मुकति गुर घर जाइ ॥ ५१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते '**रहित प्रसंग**' वरननं नाम अशट त्रिसती अंशु ॥ ३८ ॥

---

1. निष्ठा, विश्वास

अंशु ३८
भविखत प्रसंग

दोहरा

प्रथम समै श्री गुरु जी धरम सु प्रीछा हेत।
कह्यो जग निवता दयो भोजन कर्‌यो संकेत ।। १ ।।
भाख्यो हुतो सुनाइकै मास खाइ दिज जोइ।
शरफी[1] इक दछना तिसै लै गमने घरि सोइ ।। २ ।।
खीर खंड को भोगता एक रुपया पाइ।
खाइ चुके वहु लोभ करि मास अहारी आइ ।। ३ ।।
खीर अहारी मुहर दैं मास रुपया दीन।
वाक कह्यो श्री गुर तबै, धन लोभी ध्रम हीन ।। ४ ।।
इह साधू जिन लोभ नहिं धरम कमाइओ सति।
मास खाइ विपर कहां सो चंडाल का मित ।। ५ ।।
पीछे सतिगुर इम कह्यो सुनो सिख चित लाइ।
सिख होइ आमिख[2] भखै, बिप्र नहिं सो खाइ ।। ६ ।।
बचन सुन्यो सभि संगती करी बेनती इह।
जो दिज हुइ सिख पाहुली ताकी करनी केह ? ।। ७ ।।
वाक भयो तवि गुरु का आलम सिंह सपूत।
छत्री धरम सु पाइके दिज ते भा पुरहूत[3] ।। ८ ।।
तांकी दिजता छत्रकी, करै खडग की सेव।
निवता दान न पूज ले, जो देयस दुख तेव ।। ९ ।।
जांही ते हम उतरिओ[4] जगुपवीत की आन।
मदरा आमिख छोरना इही बिप्र की मान ।। १० ।।
ब्राह्मण हो कै बिधि करै[5] हिंसा मासु न खाइ।
खावै जो लुचा[6] सु दिज सम चंडाल कहाइ ।। ११ ।।

---

1. अशरफ़ी, सोने का सिक्का 2. मांस 3. इंद्र बन गया है 4. उतार दी है, त्याग दी है 5. वध करे 6. बदमाश

लोभ हीन समता धरै, करै ग्यान को अंगु।
देव रिखी सो होति है, मेरे बाक अभंग ॥ १२ ॥
जो ग्रेही ज़ंगल बसै वेद पड़ै चित लाइ।
ऊछ सिला[1] करि जीव है, जो दिज मुनी कहाइ ॥ १३ ॥
नगर बास ग्रिह धरम जुति, निंद ईरखा छोरि।
सो ब्राह्मन है बिप्र बर ऐसे जानहु मोर ॥ १४ ॥
शसत्रीन तो छत्री भयो हटी[2] ते है वैस।
कसवदार[3] हुइ शूद्र सो दिज के जानहु वेस[4] ॥ १५ ॥
गाइ निरत तो बिप्र नट, चुगल सु दूत मलेछ।
खट करमनि ते हीन दिज अघी सु बरते स्वेछ[5] ॥ १६ ॥
भखाभख समझै नहिं मद मास पर-नार।
सो चंडाल, हित त्याग करि मेरो सिख न निहार ॥ १७ ॥
आप लेय लोभी वड़ा अवरन पिखि घुरराइ।
सो मंजार दिज जानीओ तांहि न देवै भाइ ॥ १८ ॥
पाधा ब्रह्मण ब्याह धन दखना लेइ प्रयोग।
कसवी विप्र सु पाप घर तहिं दाता अघ भोग ॥ १९ ॥
बिप्र पढै, प्रभु को भजै निंदा उसतति त्याग।
कर सुभावक करम को सो पातर शुभ वाग[6] ॥ २० ॥

चौपई

बिप्र होइकै एको ब्याह। बिप्र बरन के ब्याहन ब्याह।
ब्याह कराई लेइ न दान। आन देव की करै न कान ॥ २१ ॥
बिधि करि तागा बिध करि बेद। बिधि करि दान न धारै भेद।
भोजन दान कुदान सु त्यागै। सो दिज बर पूजति वड भागे ॥ २२ ॥
ग्रहन न लेवै, तुला न मूरति। छाया, म्रितक, जनम कि दूरति[7]।
बिन मांगे पढि वेद पुरान। देव दत भोगै सुर ग्यानि ॥ २३ ॥
लेवै देवै मोह न करै। सो दिज सकल जगत ते परै।
तिन के पाइ परै हुइ तेज। देव गिआनी करम धरेज ॥ २४ ॥

1. खेतों में गिरे पड़े अन्न को उठाकर 2. दुकान 3. किसी विशेष कला द्वारा सेवा करने वाला 4. भेस 5. स्वेच्छा से व्यापार करने वाला 6. वाणी 7. दूर रहे

मैं जो पंथ कर्यो तिस कारन। नहिं तौ मेरो जनम अकारन।
मेरा सिख वैरागी रहै। आज काल करि काल संग है[1] ॥ २५ ॥
स्वामी धरम सदा प्रतिपाले। धरमपाल शुभ रसता भालै[2]।
समैं समै सिर भोजन सेवा। जढता तजि बाणी गुर गेवा[3] ॥ २६ ॥
सुनहु सिख ममता नहिं करनी। भले बुरे की सेवा धरनी।
नीच संग नहिं कीजै मित्र। वचन हार का झूठ चरित्र ॥ २७ ॥
जो मेरा शुभ सिख कहावै। पाहुल[4] ले शुभ करम कमावै।
पिछले अघ सभि जाइं बिलाइ। गुरशरनी जबिही परि आइ ॥ २८ ॥
असुर भूत की सेवा तजै। पाहन की पूजा नहिं जजै।
पाहन पूजा कलि का भाउ। मड़ी मसाणी झूठ सुआउ[5] ॥ २९ ॥
डिंम करहि मूंदहि जे नाक। जपनी फेरै बड़ा नपाक[6]।
जिनके भाउ न अंतर फुरा। किउं मूरख तीरथ भ्रमि फिरा ॥ ३० ॥
कीरतन भजन गंग जल धार। सोई मुकति जु भजै मुरारु।
इम सिखनि सो प्रथम प्रसंग। कर्यो सुनावन चित हित संग ॥ ३१ ॥

दोहरा

दीपसिंह हुइ अवतरै कूड़े[7] करसी रास[8]।
सिख हमारे अमर सद तिन की करी प्रकाश ॥ ३२ ॥
एक बेर सतिगुर कह्यो कलि महिं सिखी मोर।
धरम कमावे बचे सो सिदक[9] बिना सभी थोर ॥ ३३ ॥
भंगाणी के खेत महिं जूझे सिख बहु तांहि।
सुख भोगे आनंदपुरि माखोवाल[10] कि मांहि ॥ ३४ ॥
भयो युध नादौण महिं गए पहाडी भाज।
आए तुरक लहौर ते नुरंग[11] गुलामी पाग ॥ ३५ ॥
राजे फूटे आप महिं मर्यो तुरक सरदार।
हमैं बचायो हाथ दै सो मारे करतार ॥ ३६ ॥
लखगउती के गुम पुरि[12] भए जुध सभि सुध।
दिली पति की फौज चड़ि मारे तुरकनि ब्रिध ॥ ३७ ॥

---

1. मृत्यु को सदा स्मरण रखे 2. ढूंढे 3. गाए, कीर्तन करे 4. अमृतपान करके 5. समाधि-स्थलों और श्मशान भूमि में जाना मिथ्या प्रयोजन हैं 6. अपवित्र 7. झूठे 8. सही ठीक 9. निष्ठा, विश्वास 10. आनंद पुर वाले स्थान का पहला नाम 11. औरंगज़ेब बादशाह 12. दो बस्तियों के नाम

बडे जुध करि खालसा जीते शत्रु उदार।
जीत खालसा कुल नाश करि सीस दिए ध्रमकार[1] ॥ ३८ ॥
अबि भी मलेछी बहु बधी[2] सिंह खपावैं बीर।
मेरी सिख्या सति लखि नांहि भुलावहु धीर ॥ ३९ ॥
सिख हमारे होहिंगे घरि धरि हुइगा राज।
तां पीछे इक सिख मम धरे पंथ की लाज ॥ ४० ॥
बहुत बरख बीतहिं लगति सभि सिखन को भूप।
तेजवान राजो अधिक हुवैं खालसा रूप ॥ ४१ ॥
फिर पीछे बहु दिनो ते राज खालसा ठहिर।
पशचम जीते परबती पुन कशमीर जु शहिर[3] ॥ ४२ ॥
हुकमी[4] सिख अर परबती करै खालसा द्रोह।
मार मार करि मरैंगे ज्यों ओले को बोह[5] ॥ ४३ ॥
जिउं हीरा नूतन मुकति लसै दीप की क्रांत[6]।
कूट अरथ सिखनि वरज[7] आप आप मैं शांत ॥ ४४ ॥

चौपई

भाखै रामकुइर कथ भाई। द्रिशट कूट जवि श्री मुख गाई।
मैं तबि भाख्यो पंथ मझारी। होइ खालसे महिं अवतारी ॥ ४५ ॥
इतनी कहि करि बोलै नांही। परचे शसत्र बिलोकनि मांही।
आलम सिंह की दिश तबि हेरि। चार घरी महिं बोले फेर ॥ ४६ ॥

दोहरा

श्री मुखि ते मुसकाइ कहि करुना द्रिशटि निहारे।
आलम सिंह रंघड़[8] बड़ा तूं हम पिख्यो बिचारे ॥ ४७ ॥
कहि आलम सिंह जोरि कर मै सिख रावर केर।
जानहुं अपनो दास मुझ रखौं भरोस बडेर[9] ॥ ४८ ॥

चौपई

कह्यो लोह को काटहि लोहा। रंघड को रंघड हति रोहा।
जनम फेर रंघड घर धरे। राजे सभि मौजूद तुव करे ॥ ४९ ॥
दियो राज तोकहु हम सारा। सिखी अरध दई, हित धारा।
आलम सिंह बंदि कर दोइ। कह्यो कि दरशन भी तुम होइ ॥ ५० ॥

---

1. धर्म निमित्त 2. बढ़ गई है 3. नगर 4. आज्ञाकारी 5. ढेर 6. कांति 7. अर्थ जानने से सिखों को रोक दिया 8. मुसलमान राजपूतों की एक जाति 9. अधिक

दोहरा

कह्यो गुरु हम भी रखहिं हिदे भावनी[1] सोइ ।
श्री अम्रितसर पहुंचिबे राम सरोवर जोइ ।। ५१ ।।

चौपई

बेर ग्यारवी हम चलि आवहि । जिस ते कोइ न हम लखि पावहि ।
पंथ खालसा खेती मेरी । करौ संभालनि मैं तिस बेरी ।। ५२ ।।

चौपई

वधहि[2] राज छित सिंह गन उमत[3] होइ बिनास ।
ठेडे खावै खालसा, मोहि संभालै सास[4] ।। ५३ ।।
उतरोंगा मै तबी दिन जा दिन मुकत सिंह ।
फूड गूड अर मूड न्रिप जाइ खपैंगे पिंघ[5] ।। ५४ ।।
सभै सिरंदी[6] नाश हुइं कुल मेरी हुइ नाश ।
जिउ जादव लै गे क्रिशन काटें कुल जिम घास ।। ५५ ।।
पंच सिख सरदार मम कीने कूट बखान ।
इन को अरथ न बूझीओ, मम हम सुत का आन[7] ।। ५६ ।।
इतनी कहि श्री प्रभु उठे परचे पिखनि तुरंग ।
गिने तबेले महिं सकल खुशी भए मुद संग ।। ५७ ।।
पुन श्री गुर लंगर[8] गए छक्य छकाइ प्रसादि ।
लेटे पुना प्रयंक पर सिंह धरे अहिलाद ।। ५८ ।।
निज निज डेरे खालसा गयो महां सुख पाइ ।
कवि संतोख सिंह बंदना करी गुरनि के पाइ ।। ५९ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रुते **'भविखत प्रसंग'** बरननं नाम एक उन चतवारिंसती अंशु ।। ३९ ।।

---

1. भावना, इच्छा 2. बढ़ेगा 3. इस्लाम 4. श्वास-श्वास 5. पंगु होकर नष्ट हो जाएंगे 6. सरहिंद वासी मुसलमान 7. शपथ 8. रसोई

अंशु ४०

शसत्रन अभ्यास प्रसंग

दोहरा

इक दिन बैठे सभा महिं श्री गोबिंद सिंह राइ ।
थिर्‌यो खालसा चहुं दिशनि यथा कुबेर सुहाइ ॥ १ ॥

चौपई

सिखनि को उपदेश बतावति । जिन ते जनम मरण छुटि जावति ।
भ्राता सिखहु ! हित की सुनहु । सतिनाम सतिगुर नित भनहु ॥ २ ॥
जिन ते पाइ परम सुख थिरहु । लख चउरासी जून न फिरहु ।
बडे भाग मानुख तन पायो । हान लाभ जिस मे दरसायो ॥ ३ ॥
महां रतन को पाइ न खोवहु । रहि न सथिर नहिं, नीके जोवहु ।
सिमरन श्री सतिगुर सतिनामू । लाहा नर तन को आभरामू ॥ ४ ॥
इस बिधि कहति हुते जिह समैं । इक सिखनी[1] आई किय नमैं[2] ।
थिर समीप हुइ लागी रोवनि । अश्रुपात ते बसत्र भिगोवनि ॥ ५ ॥
श्रीमुख ते तबि बूझन करी । किउ बिरलापति क्या दुख भरी ?
पुन कर जोरि उचारनि लागी । सुनहुं गुरु जी मैं दुख पागी ॥ ६ ॥
मम भरता दरशन हित आयो । इत मरि गयो अधिक दुख पायो ।
साचे पातशाहु क्या करौं । मैं परदेशनि अबि कित थिरौं[3] ॥ ७ ॥
नगर जलालाबाद सु दूर । बिधवा भई पर्‌यो दुख भूर ।
अबि मेरा कोइ न इस देश । इस प्रकार को पर्‌यो कलेश ॥ ८ ॥

दोहरा

हुआ बचन तबि संगती, आयुध बांधहु नित ।
सुणिआं मंनिआं बाक तिन शसत्र संगती मित[4] ॥ ९ ॥

---

1. सिख पत्नी 2. नमस्कार किया 3. ठहरूँ, रहूँ 4. मित्र के समान धारण किए

लड़ती संगति गुरु की सुनि पिखि सतिगुर द्याल ।
वार भगौती पठन करि, संगति तुरकनि साल[1] ।। १० ।।

सिख बडाई करति आप शसत्र करै बहु जुध ।
तुरकनि सों वधता[2] गया सभि संगत को क्रुध ।। ११ ।।

वधती होवै[3] मरै मार करै पयाना नाक[4] ।
बढ्यो हौंसला जगत को होवति सिख गुरवाक ।। १२ ।।

प्रीतो प्रीता मीतो मीता लगे होनि तबि लोग ।
भले बुरे बिदतैं दुरै[5] कहुं हरख कहूं सोग ।। १३ ।।

नाम जपैं उर सिदक[6] गुर हौवै अधिक प्रसादि ।
श्री गुर के पाइन परै मेटें जगत बिखाद ।। १४ ।।

साल पत्र[7] सतिगुरु जी सिखनि देति अनाइ[8] ।
जखम मिटे घाइल खरो इह बिधि दई बताई ।। १५ ।।

शाह सिकंदर गुरम का आयो विच पंजाब ।
तिन घर इलमी, तलब को तालाब कीन शताब ।। १६ ।।

विद्या तिस के सदन इह, वीते बरख पचास ।
लुदक[9] नगर महिं वास ह्वै, सति वसत[10] चहि तास ।। १७ ।।

रही वरख बय मिल्यो तवि सररुवाल के साथ ।
वरख रह्यो मरने समै दीनस विद्या पाथ ।। १८ ।।

तहिं ते विद्या गुरु घरि साल पत्र की आइ ।
कैसे घाइल वडो[11] हुइ लगे तांहि सुख पाइ ।। १९ ।।

सिखणी[12] मसतक टेकि कै पाइ कामना जाचि ।
गई आपने देश को जपतति रही गुर साच ।। २० ।।

नितप्रति गुर उपदेशहीं सुख साधन के मुख्य ।
सुगम पाइं कल्याण को करहिं निवारन दुख ।। २१ ।।

सूख ममत नहि पढन महिं तिमंही श्रवन मझार ।
करन जंग तिन प्रति कहें सुरपुरि बसहिं जुझार ।। २२ ।।

---

1. चीरती है, काटती है, दुःख देती है 2. बढ़ता गया 3. जहां तुरकों से ज्यादती हो जाए 4. अपना बलिदान देते 5. प्रकट होने और छुपने लग गए 6. निष्ठा 7. विशेष पत्ता जिससे घाव भरते हैं 8. मंगवा कर देते 9. लुध्याना 10. सत्य वस्तु, परमार्थ 11. बड़ा, अधिक 12. सिख पत्नी

पीठ देनि करि प्रान प्रिय कातुर शुभ मति हीन।
आप[1] पलावै अपर के धीरज करता छीन ॥ २३ ॥
बहु पापनि फल भोगता परै नरक महिं सोइ।
पाइ भांज निज भाजकै धरम प्रहारी होइ ॥ २४ ॥
जंग विखै नहिं संग लिहु संग जि रहें पिछार[2]।
योधा अग्र वधै अधिक निरभै धीरज धारि ॥ २५ ॥
उतम मधम अधम हैं जोधा तीन प्रकार।
अभ्यास शसत्रनि हतनि नित प्रात बारंबार ॥ २६ ॥
टिकै जंग लरता रहै, बाम दाहने होइ।
सनमुख हतै कि हेल[3] महिं शत्रु बिनासे जोइ ॥ २७ ॥
टिके जंग महिं अग्र वधि[4] मारहि रिपु को धाइ।
मधम जोधा जानीए पर दल देइ चलाइ[5] ॥ २८ ॥
भाज्यो परदल देखिकै दे ध्रित[6] सभिनि हटाइ।
फिरै आप रिपु समुख हति उतम लखहु सुभाइ ॥ २९ ॥
दल पलाइ धरि त्रास को टिकहि न पाइ जमाइ।
दुशतर तिनहुं बहोरना जिम जल हड़[7] को जाइ ॥ ३० ॥
म्रिग गन थंभै न भाजते तिम पलाइबो जंग।
तबि धीरज धरि हुइ खरो जिम रण खंभ निसंग ॥ ३१ ॥
करहि वार तबि आपने, रिपु ते सहिकै अंग।
खरे करे भट संग कै[8] रोकहि शत्रुन जंग ॥ ३२ ॥
भए पलाइन बीर जे जो रोकहि धरि धीर।
फल प्रापति असुमेध को उतम सूर अभीर ॥ ३३ ॥
सुभटनि ते परवारिओ[9] मारहि सहहि प्रहार।
पहुंचे अछे सु लोक महिं तन कलंक सभि डारि ॥ ३४ ॥
कहै कलीव न बाक को[10], व्याकुल होइ न जोइ।
असत्र शसत्र को नहिं गनहि मारन महिं रिस होइ ॥ ३५ ॥
मरन बिखै निशचै जिसै रण प्रिय धीर समेत।
प्यारे करै न प्रान को लरै धरम के हेत ॥ ३६ ॥
चमूं व्यूह के अग्र मै ठहिरावै बर बीर।
हुइं जोधा इक जोर के बिच ते भजै[11] न भीरु ॥ ३७ ॥

---

1. भागते हैं 2. पीछे 3. हमला, आक्रमण 4. बढ़कर 5. दौड़ा दे, भगा दे 6. धैर्य देकर 7. बाढ़ 8. अपने साथी 9. घिरा हुआ 10. जो कायर की वाणी न बोले 11. दौड़े

मुख लछन इह जीत को, हियै हरख भट होइ।
हतै शत्रु को जंग महिं यहै चहै सभि कोइ ॥ ३८ ॥
वायु पिशटि, रवि प्रिशट पर, घन भी हुइ पशचात।
पीछे बोल बिहंग हुइ लखै जीत की बात ॥ ३९ ॥
वया[1] बाकी जावद अहै मरे नहिं किस थांइ[2]।
पूर आरबल[3] होनि ते बचहि न कोट उपाइ ॥ ४० ॥
इम लखिकै धीरज धरै पर दल करै बिनाश।
जीते धनु जसु प्रापति, मरे सुरग महिं बास ॥ ४१ ॥
शसत्रनि महिं करि प्रेम को नित ले सार[4] संभाल।
निरमल करि धरि कर बिखै, अरपहि पुशपनि माल ॥ ४२ ॥
धूप धुपाइ, चंदन, चरचि, सौरभ अरपि चढाइ।
धारै आदर सहित भट राखै अंग लगाइ ॥ ४३ ॥
प्रथम टिकावहि हाथ निज अनिक गुलेले मारि।
पुन धनु खैंचनि के बिखे नित ही जतन संभारि ॥ ४४ ॥
हाथ सिकंधै सम करै निशचल नैन समेत।
द्रिशटि मुशट ते लछ को छादहि इकता लेत[5] ॥ ४५ ॥
द्रिशटि, मुशट, मन, लछ जबि इक संगत को पाइ।
नहिं चूकहि सो हतनिते[6] इम अभ्यास कमाइ ॥ ४६ ॥
बाम मुशट धनु पर टिकी तथा तुपक के साथ।
बल पर निहचल होति है नहिं डलहि पुन हाथ ॥ ४७ ॥
दीदमान[7], मन, द्रिशट, लछ मखी जुत सभि सोइ।
पंचहुं जे इक सूत[8] ह्वै हत्यो बचै नहिं कोइ ॥ ४८ ॥
नित अभ्यासहि, कर टिकहि मिल्यो रहै तिन संग।
सो आयुध भट हाथ के क्यों न काज दे जंग ॥ ४९ ॥
सिर तर रखहि न शसत्र को अदब सहित धरि पास।
अंग संग लायो रहै करहु न रिपु बिसवास ॥ ५० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते **'शसत्रन अभ्यास प्रसंग'** बरननं नाम चतवारिसती अंशु ॥ ४० ॥

---

1. आयु 2. स्थान 3. आयु 4. लोहा, शस्त्र 5. दोनों को एक सीध में कर ले 6. मारने से 7. निशाना साधने के लिए जिस सुराख में देखा जाता है 8. एक ही सीध में

अंशु ४१

भरम निरनै प्रसंग

दोहरा

नित प्रति बैठहि सिंह ढिग रहिणी[1] रहति बताइ।
भगत ग्यान की वारात सुनहिं सदा चित लाइ ॥ १ ॥

चौपई

सभि सिखन बूझे कर जोरि। प्रानी करम बंध पर घोर[2]।
तिन को निरना करहु सुनावन। जिस के जानहि करहि बचावन ॥ २ ॥
श्री मुख ते सभिहूंनि उचारा। दइआ सिंह मम रूप उदारा।
करहु प्रशन जेतिक रचि होइ। उतर कहै सकल ही सोइ ॥ ३ ॥
इम कहिकै गुर अंतर गए। अपर सरब तहिं बैठति भए।
निरनै करन विखै चित दयो। दया सिंह तबि बोलति भयो ॥ ४ ॥
सरब प्रकार गुरु सरवग्य। हम तिन अग्र कहां अलपग्य।
तिम बोलौं मैं जथा बुलावैं ? नर पुतली को जथा नचावैं ॥ ५ ॥
सोऊ निज मुख बोलि सुनावहिं। लोक लखहिं पुतली सु अलावहिं।
पूरव सुनहु करम की गाथा। नरक सुरग हुइ जिन फल साथा ॥ ६ ॥
तीन विधिनि के करम पछान। संचति, परालबध, किरेमान[3]।
तरकश अंतहकरन मझार। त्रै विधि बाण सि बसिबेहार[4] ॥ ७ ॥
चेतन आतम छाया जोइ। प्रतिबिंबति अंतहकरण होइ।
अरु अग्यान अंस के सहित। तिस महिं करम बीज गन रहति ॥ ८ ॥
अंतहकरन आप जड अहै। जबि लौ सता चितन न लहै।
तबिलौ करम धरण समरथ नहिं। चेतन छाइआ ते समरथ लहि ॥ ९ ॥
अंतहकरण अहैं मन जोइ। जबि अग्यान समेते होइ।
तबि समरथ करम धरि सारे। बिन अग्यान करम नहिं धारे ॥ १० ॥

---

1. रहणी 2. प्राणी भयानक कर्म बंधनों में पड़ा है 3. क्रियमाण
4. बसने वाले हैं

दोहरा

अंतहकरण, अग्यान द्वै, चेतन आतम तीन।
ह्वै इकत्र धारहिं करम, धरे न ह्वै इकहीन ।। ११ ।।

चौपई

इस को कहौं सहत द्रिशटांत। सुनहुं खालसा है जिस भांति।
सतिगुण रूप म्रितका आहि। अंतहकरण पिंड है तांहि ।। १२ ।।
आतम चेतन रूप अकाश। अरु अग्यान रूप जल रास।
म्रितका पिंड मिलै जल संग। ताब घट रूप बनहि सरबग ।। १३ ।।
अंतर लाए गगन को होइ। करम अनाज धरे तबि सोइ[1]।
तीनहुं मिलि करि घटा सुधारे। समरथ होइ पदारथ धारे ।। १४ ।।
तीनहुं निज निज ह्वै करि न्यारे। धरन पदारथ शकति न धारे।
तिस प्रकार इक आतम जोड। करम धरै समरथ नहिं सोइ ।। १५ ।।
केवल अंतहिकरण न धारे। तम अग्यान न धरहि, निरारे।
तीनहुं को संजोग जबि होइ। करम धरनि समरथ हैं सोइ ।। १६ ।।
अंतहिकरण रूप तरकश महि। करम बाण बासा नितप्रति लहिं।
जो तरकश ते तीर निकारा। ऐंचि धनुख छुटि चल्यो अगारा ।। १७ ।।
अपनो बेग सु सभिही करिके। निशफल होति रहै धर परिके[2]।
परारबध हैं यांके नाम। दे फल सभि को होइ बिराम ।। १८ ।।
थिर तरकश महिं जेतिक बान। तिन को संचित नाम बखाना।
धनुश जेह सों जोर्यो जोइ। नाम सु किरेमान[3] तिस होइ ।। १९ ।।
जिन करमनि को दियो सरीर। परारबध स जानहुं धीर।
अनिक जनम के करे इकत्र। सो संचित हैं नाम बचित्र ।। २० ।।
क्रिआ होति नित जुति अभिमान। किरेमान ए जान सुजान।
किरमान जो कह्यो बनाइ। त्वै संग्या इसकी हुइ जाइं ।। २१ ।।
प्रथम अवसथा महिं किरेमान। दुतीए महि संचति इह जान।
त्रिती अवसथा जबिही पाइ। परारबध संग्या हुइ जाइ ।। २२ ।।
जिम इक काल भविखत होइ। बहुरो बरतमान है सोइ।
सोई काल भूत ह्वै जाइ। लखहु खालसा तिन ही भाइ ।। २३ ।।

---

1. तब वह घड़ा कर्म रूपी अनाज को धारण करता है 2. भूमि पर गिर कर
3. क्रियमाण

परारबध के फल है तीन। जाति, आरबल[1], भोग, सु चीन[2]।
सुर नर आदि चराचर देहि। उतम मधम अधम अछेह[3] ।। २४ ।।
सभि के विखै होति है नाना। इह जानहु फल जाति बखाना।
निमख आदि हुइ जीवन जेतिक। आरबला फल जानहुं तेतिक ।। २५ ।।
दुख सुख, को जो अनुभव रूप। ब्रिध किधौं लघु करन अनूप।
इस को नाम भोग बुधि कहैं। चौदहि लोक बिखै जन लहै ।। २६ ।।
द्वै जि करम संचति किरेमान[4]। आतम ग्यानी के हुइ हान।
जिम तरकश महिं सर सु मिटाइ[5]। धर्यो पनच पर सोपि हटाइ ।। २७ ।।
परारबध जो छुट्यो सु बान। तिस को कर न सकै को हानि।
अग्य तग्य[6] कै इक सम होइ। परारबध फल दे सम दोइ ।। २८ ।।

दोहरा

संचति ग्यान प्रभाव सों ग्यानी करहि बिनास।
जिम अनाज मंदर सहज दाहै अगनि प्रकाश ।। २९ ।।
मंदर सहज अनाज के जबि भा जलि कै छार।
अंकुर के न समर्थ पुन जानो तिसी प्रकार ।। ३० ।।

चौपई

संचित करम सो अंतहकरण। ग्यान अगनि ते करे प्रहरण[7]।
बहुर जनम दाइन नहिं सोइ। जले अनाज अंकुर न होइ ।। ३१ ।।
अंतहकरण नाश इस भांति। चित सति होइ जाति सभि शांति।
चित सति को अबि अरथ बखानो। अंतहकरण रूप अस जानो ।। ३२ ।।
जिस ते दरश असमक[8] पिखै। आतमबुधि अनातम बिखै।
जगत असति बिखै सति बुध। आतम सति असति की सुध ।। ३३ ।।
नाम इसी को मन पहिचान। जबि है प्रापति आतम ग्यान।
तबि इस विधि को भाव बिनाशे। जिउं का तिउं सु पदारथ भासे ।। ३४ ।।
जबि चित सति इस बिधि को भयो। तबि संचति जुति मन जलि गयो।
जिम अंदर जुति जल्यो अनाज। पुन अंकूर नहिं उपराज[9] ।। ३५ ।।
किरेमान[10] जो करन कराहीं[11] ? ग्यानी के उपजति सो नांही।
परारबध करि क्रिआ जु ठानि। होति अनातम जुति अभिमान ।। ३६ ।।

---

1. आयु 2. जानो 3. जो हैं 4. क्रियमाण 5. रोका जा सकता है 6. ज्ञानी और अज्ञानी 7. नाश कर देता है 8. अयथार्थ 9. उत्पन्न होना 10. क्रियमाण 11. किए जा रहे हैं

वही क्रिआ होवै क्रियमान। जाति प्रणमति अपर विधान[1]।
सोई क्रिया हीन अभिमान। उपजै नहिं कदाचित जान ॥ ३७ ॥
परारबध ते हुइ किरमान। भोजन रूप क्रिया जिम ठानि।
परारबध को रूपहि सोइ। भोजन करे पुशटता जोइ ॥ ३८ ॥
सो क्रियमान रूप पहिचान। देहि सरुज[2] सो पुशट न जान।
जे अरोग सो पुशट बडेरी[3]। तिसी प्रकार जुगति लिहु हेरी ॥ ३९ ॥
होइ क्रिया जुति तन अभिमान। सोइ क्रिया है उपजनवान[4]।
तन अभिमान न ग्यानी धरै। यांते नहिं बंध को करै[5] ॥ ४० ॥
करम माल सभि के गर परी। तन हंता त्यागे, तिन हरी[6]।
बिना त्याग ते अनिक कलेश। जनम मरन के कशट अशेश ॥ ४१ ॥
यांते सतिगुर ने बहु बार। बरनन कीनो ग्रंथ मझारि।
"हउ विचि आइया हउ विचि गइआ। हउ विचि जमिआ हउ विचि मुआ" ॥ ४२ ॥
इत्यादिक कुछ गिने न जांहि। कह्यो[7] देहि हंता करि नांहि।
तन हंता महिं सभि उपजात। दुख प्रापति पुन पुन पछुतात ॥ ४३ ॥
जनम असंख इसी ते धरै। अप्रमान[8] संकट ते मरै ॥
ममता आदि बिकार अनेक। तन हंता जनती[9] अविबेक ॥ ४४ ॥
जिस जन पर होवे गुर करुना। तन हंता को करहि प्रहरना।
तत उपदेश नाम लिव लावै। जनम मरन दुख ते छुटि जावै ॥ ३५ ॥

इति श्री सूरज प्रताप ग्रंथे पंचम रुते **'भरम निरनै प्रसंग'** बरननं नाम इक चतवारिंसती अंशु ॥ ४१ ॥

---

1. अपना स्वरूप परिवर्तन करते जाते हैं 2. बीमार, 3. बड़ी, अधिक 4. उत्पन्न होने वाली, अर्थात् फलदायक 5. बाँध नहीं पाते 6. इस माला को सतार फेंका है 7. कहा गया है 8. अत्यधिक 9. उत्पन्न हुई है

अंशु ४२

सूखम बिचार प्रसंग

दोहरा

पुन सिहन बूझनि कर्‌यो कहो रूप अग्यान।
माया बहुर अबिदिआ, बंधन, मोख बखानि ॥ १ ॥

चौपई

जाग्रत, सुपन, सुखोपति तीन। एह अवसथा कहो प्रबीन।
मुरछा रूप, समाधि कहीजै। तुरी आवसथा रूप भनीजै ॥ २ ॥
इक साखी अरु जीव जि होइ। जस इन रूप बखानहु सोइ।
पुनहु ब्रह्म निरनै करि लहो। पंच कोश को रूप सु कहो ॥ ३ ॥
पंद्रह प्रशन सुने सभि कान। दइआ सिंह जी करति बखान।
जिस पर गुरु प्रसंनता धरै। सुनिकै दिढ निशचै सो करै ॥ ४ ॥
सुनीअहि सभि के रूप बखानों। गुर करुना ते मैं जिम जानो।
जिस जाने अर निरनै करे। जम सागर ते सो नर तरे ॥ ५ ॥

स्वैया छन्द

बिन अकार, बिन जनम, अनादी रहि इक देश ब्रह्म के मांहि।
नाम अग्यान, लिए खट संग्या इक चिंतन व्यापक विच तांहि[1]।
चेतन, सोसबंध ईश्वरता, चतुरथ संग्या जीव जि आहि।
ईशुर जीव विभाग पंचमों चिदाभास खशटम लखि वाहि ॥ ६ ॥
जिस अग्यान बिखै इह[2] खट हैं सूखम भूत प्रगट हुइ नांहि।
जिम बटबीज बिखै जट, तुक, दल, शाखा, कांड, सहति फल आहि।
तिस ही को—अव्याक्रित कहीयहि पुन 'अव्यकत' नाम भी तांहि।
साम्य अवसथा प्रथम इही[3] है बेदन आदि संत सभि प्राहिं[4] ॥ ७ ॥
त्रिगुणातमका साम्य अवसथा चेतन भास सहित पहिचान।
होइ विकार अवसथा तिस की प्रिथक बन त्वैं गुनवान।

1. उन सभी में एक ही व्यापक चैतन्य तत्त्व है 2. यह 3. यही 4. कहते हैं

सत, रज, तम गुण सुधासुध इह चिदाभास जुति लिए प्रधान।
सुनहुं सिख सो 'माया' लखीअहि, समुझि रिदे सभि करहिं बखान ॥ ८ ॥
साम्य अवसथा चिदाभास ले भई बिकारावसथा सोइ।
शुध सत्व लै माइआ जिम भी मलिन सत्व मुख त्रैगुण जोइ।
तिस को लए अविद्या जानहुं गुर उपदेश बिनाशी होइ।
अंतशकरण बिरति जबि उपजी अहंब्रह्मासमि द्वैत न कोइ ॥ ९ ॥

दोहरा

बिरत अखंडाकार अस 'विद्या' नाम सु जान।
कारण कारज भेद ते दुबिधा हान अग्यान ॥ १० ॥

चौपई

तन इंद्री, मन, प्राण, अनातम। इस संघात विखै बुधि आतम।
'बंधन' इही, सदा दुख कारण। अहं देह, लखि करहि उचारण ॥ ११ ॥

दोहरा

अभ्यासै गुर शबद को मिटहि देहि अभिमान।
सत चेतन आनंदमय 'मुकति' सु जान सुजान ॥ १२ ॥

स्वैया छन्द

अध्यातम गो रूप चतरदस[1], इते विखय अधभूत सुजान।
इनहु देवे अविदेय चतरदस, व्याली फेरहिं भाव बिदमान।
सुखपति सुपन अभाव, फुरैंगन मूरति व्याश्ट समश्टि पछान।
फुरै सरबसाखी महिं जाग्रति विश्व अभिमानी की लिहु मानि ॥ १३ ॥
थूल सरीर न थूल विख्यानहिं सुखपति को अभाव जिस मांहि।
जे चौदहि अध्यातमादि की रहति समग्र वाशना जांहि।
अविद्या मय सूखम विवहार जु फुरै अमूरति साखी मांहि।
तैजस अभिमानी की जानहु सुपनावस्था कहीयै तांहि ॥ १४ ॥
समग्र वाशनामय जु अमूरति सरब अविद्या को विवहार।
कारण देह अविद्या महिं ए भए लीन सूखमता सार।
साखी ग्यान रह्यो सत[2] मात्र प्राग अभिमानी की निरधार।
इह सुखपती अवसथा लखि सिख तीनहुं भली भले उर धारि ॥ १५ ॥
जाग्रति महिं किस कारण ते किल लगहि चोट जहिं मरम सथान।
किधौं रग, कै अपर हेत हुइ, जौ लौ रहै अचेत महांन।

1. चौदह इंद्रियों के समुदाय को 2. सत्य

तौलौ साखी केर अवांतर विश्व अभिमानी को पहिचान ।
कहै मूरछा को सरूप इह, जावद नहीं प्रान को हान ॥ १६ ॥
त्रिपुटी ग्याता ग्यान मेय जहिं भासै ब्रह्म भाव को लीन ।
तिह समाधि सविकलप कहति हैं, जहिं त्रिपुटी विकलप विहीन ।
इक ब्रह्म भाव समेत समाधी निरविकलप तिह को मन चीन ।
विश्व अभिमानी की साखी महिं दुइ प्रकार की कहै प्रबीन ॥ १७ ॥
समाधि मूरछा, तीन अवसथा, सभिनि प्रकाशै भावाभाव ।
निज अनसूत सभिनि महिं देखै, हउंही पिखनहार उर स्थाव ।
जाग्रति थूल विरति सों मिलकै सुपने सूखम बिरति मिलाव ।
बिरति अविद्या सुखपति महिं मिलि पिखहि जु तुरीयावसथा गाव ॥ १८ ॥

दोहरा

निरविकलपता ते रहति सभि महिं मोहि सरूप ।
तुरीयावसथा जानीए तुरीआ तत अनूप ॥ १९ ॥

स्वैया छन्द

जाग्रति आदि समाधि अंत लौ त्रिधाभिमानी मलिन सु जीव ।
तुरीया जाग्रितादि सभिहिन कहु अहै प्रकाशी साखी थीव[1] ।
सो सरूप है सुध्र जीव को ब्रह्म रूप लखि आनंद सीव[2] ।
तुरीआ साखी साखी तुरीआ यांते एक रूप लखि लीव[3] ॥ २० ॥
ईशुर, ब्रह्मा, बिशनु, रुद्र कहु मूरति धारी त्रिधा अनूप ।
ब्रह्म सरूप सु तुरीआ जीवहि ईशुर तुरीया ब्रह्म सरूप ।
ईशुन जीव एक इम जानहु द्वै तुरीया ही इन को रूप ।
साखी को सरूप निरविकलप सोई ब्रह्म जान सुख रूप ॥ २१ ॥

दोहरा

सो ब्रह्म किह सों मिल्यो नहिं न्यारो नहिं किह साथ ।
निरविकलप सो ब्रह्म है उर जनाइ गुर नाथ ॥ २२ ॥
ब्रह्म रूप आनंद है आनंद सो ब्रह्म रूप ।
जिस जाने बंधन कटैं मिटहि अंध तम कूप ॥ २३ ॥

स्वैया छंद

इशट कहैं प्रिय बसतु कि दरशन सीस इही पंछी को जान ।
सो प्रापति लखि मोद दहिन पर, भोगन ह्वै प्रमोद पर आन ।

1. होते हैं 2. आनंद स्वरूप हो जाता है 3. देख लो, जान लो

होनि अनंद सरूप कोश को, ब्रह्म पूछ लखीयहि पिशटान।
ब्रह्म अवैव भयो नहिं शंकहु आश्रित ते कहि पुछ समान ।। २४ ।।

दोहरा

कारण इही सरीर है ब्याशिट जीव इक केर।
तिम समशिट है ईशु को अंतर सभि ते हेरि ।। २५ ।।
इस ऊपर त्रै कोश जो जानो लिंग सरीर।
ब्यशिट जीव के एक हे समशिट ईश को धीर ।। २६ ।।
कोश अनमय वहिर को जानहु सकल सरीर।
सिर सिर बाहू बाहु द्वै प्रिशट थिरै जहि धीर ।। २७ ।।

चौपई

पंच कोश पंछी पंच कहे। बीच बेद के संतनि लहे।
पंच करम इन्द्री, पंच प्रान। कोश प्राणमय जान सुजान[1] ।। २८ ।।
एक प्राण की चारहुं पौण[2]। सिर इक पर द्वै पूछ इक तौन।
करम इंद्रीआ मन के सहति। कोश मनोमय इसको कहति ।। २९ ।।
गिरा बैखरी इसको सिर है। पशयंती, मधमा, जुग पर हैं।
परा पुंछ इह जान सुजान। भयो बिहंगन इसी विधान ।। ३० ।।
पंचहु इंद्रै ग्यान सुहाइ। और खशटमी बुधि मिलाइ।
कश बिग्यान मयं इह जानो। तिन सम इह पंछी पहिचानो ।। ३१ ।।
तीन कोश जो करे बखान। ए हैं लिंग शरीर पछान।
पंचहुं कोश रु तीन सरीर। बरनन करे लखहु उर धीर ।। ३२ ।।
सति चेतन आनंद सरूप। सूखम ते सूखम अनरूप।
इंद्रय थूल[3] बिशै किम होइ? बुधि सुखम ते लखीए सोइ ।। ३३ ।।
तिस के ढिग वरती[4] बुधि एक। यांते इह लखि सकहि बिबेक।
रच्यो जु मन को महिद[5] प्रवाह। कर्‌यो वहिर को अंतर नांहि ।। ३४ ।।
तिम इंद्रै जे पंचहुं ग्यान। इन को भी किय वहिर पयान।
पंचहुं विशै वहिर को गहैं। किस प्रकार मन को नहिं लहैं ।। ३५ ।।
मन सवधान होइ इन प्रेरै। प्रेरति को हटि करि नहिं हेरैं।
मन सूखम इंद्रै हैं थूल। यांते इनको बिशै न मूल[6] ।। ३६ ।।

---

1. विद्वानों, समझ लो 2. पवन 3. स्थूल 4. विचरण करने वाली 5. महत्त्व-पूर्ण 6. पूर्णतया नहीं है

तैसे मन को बिशै न आतम। जान सकै नहिं अहि अनातम।
सूखम आतम, मन हैं थूल[1]। नहिं जाइ तिस की दिश भूल ॥ ३७ ॥
पंचहुं इंद्रै मन खशटम है। वहिर मुखी इह करे प्रथम है।
यांते हति होए इस रीति। त्रिपतहिं नहिं धावते नीति ॥ ३८ ॥
बिन सतिगुर की शरनी परे। अंतरमुखी न ब्रित को करे।
जिस ते थिर ह्वै लहैं अराम। प्रापति होहिं अपन धन धाम ॥ ३९ ॥
बिगर गए जिम पशु हरिआउ[2]। जित कित दौरति सहिज सुभाउ।
सदा जीत को बड[3] दुखदानी। म्रिग त्रिशना के हरन समानी ॥ ४० ॥
जिम कसतूरी मिरग पलावै। ठहिरहिं, मुख जबि नाभि लगावै।
तिम ही ब्रह्म को जबि इह जानहि। गहैं सथिरता आनंद मानहिं ॥ ४१ ॥

दोहरा

वसतु विचार धिआवते[4] मन पावै बिसराम।
रस स्वादित सुख ऊपजै अनुभव जांको नाम ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते **'सूखम बिचार प्रसंग'** वरननं नाम बिआलीसमों अंशु ॥ ४२ ॥

---

1. स्थूल 2. हरे खेत को देख कर खाने के लिया आया पशु, अर्थात् पर-धन हड़पने वाला 3. बड़ा 4. आराधना करते हैं

अंशु ४३

ग्यान बिचार प्रसंग

दोहरा

अथ करता :—

नख शिखलौ तन थूल महि अहं बिरति जिन कीनि ।
सो करता लखीयहि रिदे चीनहु सिख प्रबीन ॥ १ ॥

क्रिया :—

इंद्रय द्‌वारा निकसिकै विरति विखय लौ जाइ ।
क्रिया कहै तिस विरति को सतिगुर देति सुनाइ ॥ २ ॥

करम :—

विखय अहैं शबदादि जे सभि के सहिज सुभाइ ।
तिन संग ब्यापहि विरति जबि कहीयहि करम बनाइ ॥ ३ ॥

ग्याता अर ग्यान :—

अहं विरति चिद भासजुति सो ग्याता पहिचान ।
क्रिया विरति महि भास चिद ताको ग्यान बखान ॥ ४ ॥

गेयअर प्रमाता :—

करम विरति महि भास चिद इस जुति गेय सु होइ ।
ग्याता परमाता अहै इक कै आखय दोइ ॥ ५ ॥
ग्यान कहैं प्रमाण को गेय प्रमेय सुजान ।
त्रिपुटी मै लखि आप को कहैं अपरमा ग्यान ॥ ६ ॥

प्रमा ग्यान :—

त्रिपुटी को जु प्रकाश ही अर सभि को धिसठान[1] ।
अपनो आप सुजान ही सो कहि परमा ग्यान ॥ ७ ॥

---

1. अधिष्ठान

स्वैया छंद

महांवाक वेदांत कि सतिगुर तिस को होनि यथारथ ग्यान।
अधिकारी जु चतुश्टै साधन विखय जीवश्वर इकता जान।
बोध ब्रह्म बोधक वेदांत सु इह सबंध नीके पहिचान।
दुख निविरति परमानंद प्रापति इही प्रयोजन करहिं बखान ॥ ८ ॥

दोहरा

इह चारों अनुबध को ग्यान रिदे जबि होइ।
कहैं गिआन प्रकरण सो, संतन के मत जोइ ॥ ९ ॥
ब्रह्म अखंड चेतन को ग्यान जथारथ[1] जान।
जिसी वाक्य ते होत है महांवाक सो मान ॥ १० ॥

चौपई

प्रग्यान मानंद[2] ब्रह्म इह। महां वाक्य रिग वेद बिखे कहि।
अहंब्रह्मासमि जुजर बखाने। शामवेद तत्वंमसि मांने ॥ ११ ॥
अयं आतमा ब्रह्म अथरबण। महांवाक्य ए चारहुं श्रुत गण।
इह चारों ही जपु जी बिखे। श्री नानक जी कहि करि लिखे ॥ १२ ॥
"तूं सदा सलामत[3] निरंकार"। चार बार तुक करी उचार।
श्रवण, मनन, इह पूरब लह्यो। 'पंच प्रवाण' निध्यासन कह्यो ॥ १३ ॥
साखयात पर ए तुक चार। चारहु महांवाक निरधार।
पुन श्री अरजन तुकें बनाई। महांवाक जिस बिखै लखाई ॥ १४ ॥
"सरगुण निरगुण धापै नाउ। दुह मिलि एकै कीनो थाउ"।

पुनः—

"निरगुन, आपि सरगुन, भी ओही।
कलाधारि जिनि सगली मोही।"

पुनः—

"मैं नाही प्रभ सभ किछु तेरा।
ईघे निरगुण ऊंघै सरगण केल करत बिचि सुआमी मेरा।"

पुन इकता जपुजी महि कही। सो मैं करउं सुनावन सही।
जीव ईश इक ब्रह्म सरूप। सभि बिधि कीन अभेद अनूप ॥ १५ ॥

---

1. यथार्थ 2. के समान 3. स्थायी रहने वाला

"सालाही सालाहि एती सुरति न पाइआ[1]।
नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि[2]।"

सदा सलामति तनि पद जान। तूं ते पूरब अन्वै ठान।
तन तूं दोनहुं है निरंकार। सत चेतन आनंद इक सार॥ १६॥
निरगुन जीव रु ईशुर सगुना। चेतन कला दुहन सम, भला।
नदी ईश वाहा लखि जीव। परे समुद्र रूप जल थीव॥ १७॥
इत्यादिक लिहु अरथ विचार। वधै[3] ग्रंथ जि करहुं बिसथार।
सूछम बिधि मैं सकल जनाई। महांवाक इम दए दिखाई॥ १८॥
श्री ग्रंथ साहिब महिं और। एक अभेद कह्यो बहु ठौर।
सुमति वंति जे अरथ विचारहिं। महांवाक इस बिधि निरधारहि॥ १९॥

प्रक्रितिवाक :—

स्वैया छंद

नहि विनाश सुख दुख ध्रमवंत न साधक नहिं ममुख[4] न कोइ।
मुकति निविरति न बिद्या कोई लोक अलोक देव नहिं होइ।
बेदा वेदा, माता माता पिता पिता, इम लखीयहि सोइ।
सुखपति महिं नहिं जीव ब्रह्म है जिस ते नहिं संसार को जोइ॥ २०॥

दोहरा

इत्यादिक जे वाक्य हैं अरथ न जिह ब्रिबचार[5]।
वाक प्रकिरत पछानियो जिनको इम निरधार[6]॥ २१॥

सविकलप वाक्य :—

स्वैया छंद

जिस ते भूत भए सभि उतपत पुन जिस ते जीवति थित होइ।
अंत समै सभि लै ह्वै तिस महिं कर निशचै उरधारहु सोइ।
जाग्रति सुपन कूल उभियात, महिं महां मतिस बिचरनि लखि जोइ।
तिस आतम ते नभ सं भूतं वाक्य इत्यादि सविकलप ओइ॥ २२॥

---

1. प्रभु की सराहना करने वाले सराहना करते हैं (किन्तु उस की बड़ाई कितनी है) इसकी उन्हें बुद्धि प्राप्त नहीं होती 2. जैसे नदी नाले समुद्र में पड़ते हैं किंतु वे उसे जान नहीं सकते 3. बढ़ जाता है 4. मुमुक्षु, 5. व्यभिचार 6. निर्णय किया है

निरविकलप वाक :—

चौपई

सत्यं ग्यान मनंतं ब्रह्म। अयं विग्यान रूप बिन भरम।
प्रान रिद्यंतर जोती जोइ। निरविकलप वाक्य अस होइ।। २३।।

दोहरा

निरिवकलप आदिक लखो महांवाक्य ते आन।
वाक अवांतर जान सभि जैसे करे बखान।। २४।।

करमकांड :—

दोहरा

काम्यक करम निखिध बिन नित नमित जि दोइ।
करम प्रायशचित तीन गिन, करमकांड इह होइ।। २५।।

स्वैया छंद

नित्य करम संध्या बंदनादिक, सुत जनमादि नमित्यक जान।
प्रायशचित क्रिछ चद्रायन आदिक कलमल[1] छै साधन पहिचान।
अगनी जोतिश टोमादिक जो कामक ऐसे वेद बखान।
हननि ब्रह्मादिक इह 'नखिध' हैं, करम पंच ए जान सुजान।। २६।।

दोहरा

किंवा चारहु वरण को आश्रम धरम जितेक।
करम कांड सो जानीयहि, भाखति सुमति विबेक।। २७।।

उपासना :—

स्वैया छंद

त्रिगुण रूप :—

बिधि,[2] बिशनु, रुद्र जो, ब्रह्ममातम लखि चितवन तीन।
अवयाक्रित कि वैश्वानर को हिरणगरभ आतम चित चीन।
चितवहि एक आतमा इन प्रति, किधौं उपासहि सगुण प्रवीन।
अहं ब्रह्मासमि चिंतन किंवा त्रिगुण उपास भाव इक भीन[3]।। २८।।

अथ पत्यांतर :—

स्वैया छंद

अकार, उकार, मकार, नादबिंद, बिधु, हरि, शिव, सदाशिव जान।
छित, अप, तेज, वायु, नभ, रवि ससि, पुरख स एतत आतम मान।
इक उपासय, अरु करि उपासना, ब्रह्म आतमा एक समान।
इक प्रतीक उपासना किंवा कहैं अपर सुनीआह दै कान।। २९।।

---

1. कलिमल, पाप, दोष, 2. ब्रह्मा 3. भीगा रहे

अथवा विलै[1] अकार उकारे, विलै उकार मकार मझार।
अरध मात्र महि करि मकार ले, अरध मात्र को पुरख उदार।
पुरख प्रमातम एव तिश्टते, ब्रह्म आतमा शेख बिचार।
इत उपासना नर कुरयातहि, भिन भिन लीजहि उरधार ॥ ३० ॥

अथ गिआन कांड :—

स्वैया छंद

'सत्यं ग्यान मनंतं ब्रह्म' जु 'तत्वमस्यादि' वाक्य जे चार।
'सरवातम ब्रह्म' 'ब्रह्मस्रबातम' अदुति द्वैत नासती धार।
सत्यं ग्यान मनंत आतमा ब्रह्म एक अद्वै निरधार।
सत्यं सत्यं ग्यानं ग्यानं इकं, अनंत अनंत बिचार ॥ ३१ ॥
इकमेवा दुतीयं ब्रह्म नेह नानासति किंचन सोइ।
करम उपासन दुऊ विवरजति पुरख साध्य ते बरजति होइ।
केवल ग्यान मात्र ही तिश्टात ग्यान कांड को लछन जोइ।
ग्यान कांड उपनिशद कहैं सभि वेद अंत वेदांतक होइ ॥ ३२ ॥
जहि लौ पुरख साध्य करतबयं पुरब मिमांसा करहिं बखान।
तहि लग[2] शबद वेद इह कहीयहि जहां जानि वो जान सुजान।
सो वेदांत भाखीयहि आखय[3] इसी प्रकार भेद पहिचान।
कवि संतोख सिंह लखि सरूप को सगरे सफल तबहि मन भान ॥ ३३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते **'ग्यान बिचार प्रसंग'** बरननं नाम त्रितालीसमो अंशु ॥ ४३ ॥

---

1. विलय, लीनता 2. वहाँ तक 3. कहा जाता है

अंश ४४
विचार निरनै प्रसंग

अथ जोग :—

स्वैया छंद

अंग जोग के अशट गिनीजहि जम, अर नेम[1], सु आसन तीन ।
प्राणायाम रु प्रत्याहारहि, और धारना ध्यान, प्रवीन ।
अशटम अंग समाधि, लखीजै, पूरब यम: पंदरां बिधि चीन ।
लय, विखेप, परमादि, जु निंद्रा, इन चारन ते मन हुइ हीन ।। १ ।।

जथालाभ संतुशट रहिन द्वै, मौन तजनि मिथ्या बच[2] होइ ।
शवदादिक के विखय तयागनि इंद्रय निग्रहि यांको जोइ ।
दया भूत प्राणी संग वैर न, आरजव बिना कुटिलता जोइ ।
दाखण विवहारन महिं चातुर आग्रहि को तयागनो सोइ ।। २ ।।

मन ते करै न दंभ कमावै इक लालस करिबे कल्यान ।
परारबध करि प्रापति होइ जु तिस को बरतै आनंद मानि ।
हेरि पदारथ अपरन के ढिग नहिं मतशर को धरहु सुजान ।
आसतक्य जो ग्रंथ मुकति दे तिन महिं विशवाशी मन जान ।। ३ ।।

कोमलता को कहै 'मारदव', उर निशक्रोध 'छिमा' इस नाम ।
रज तम गुण बिन अंतश करनं 'भाव शुध्र' भाखहि अभिराम ।
पर को पीर न दे बच क्रम ते नाम 'अहिंसा' लखि सुख धाम ।
ब्रह्मचरज सो अशट प्रकारनि मैथुन त्यागनि ह्वै निशकाम ।। ४ ।।

सिमरण[3], श्रवण, केल अर देखण, गुह्य भाखण, संकलप सु कीन ।
अधिवसायं, क्रिया निवरतै इह मैथुन अशटांग बिहीन ।
जनम रोग दुख तथा जरा दुख त्रै को चितवन सिम्रत चीन ।
मन तन प्राण रिखीकिन दुख ते निशचल रहै सु ध्रित प्रबीन ।। ५ ।।

यम दस पंच कहे इकि अंगहि, दूसर अंग नेम[4] अठ सात[5] ।
समै उचित अशनान करै जल, जोग साध्य इह सौच सु गात ।
अंतहकरण सौच इम जानो भाव शुध यम ते हुइ जाति ।
जोग साधिबे महिं प्रभु पूजन 'क्रितू' नाम नेम सु बख्यात ।। ६ ।।

---

1. नियम 2. वचन 3. स्मरण 4. नियम 5. पंद्रह

सत्य अरथले कहै सत्य सो प्रणव जाप को 'जपु' कहियंति ।
जठरागन कहि जुगत अहारं होमहि भले 'होम' लखियंति ।
'तरपण' जल पीवहि सुरसरि के, इंद्री निग्रहि 'तपु' सु तपंति ।
ममुखी[1] को उपदेशनि 'दान' सु, 'ततिख्या' राग रु द्वैख सहंति ।। ७ ।।

खाइ अहार सूर सुर 'ब्रत' सो, खाइ अयुकति न इह 'उपवास' ।
'निरअगनी' सो अगन न तापहि 'इसत्री बरजन' संग न तास ।
'मादक बरजण' भंग आदि जे पानि न करहि अमल निरजास[2] ।
इह पंद्रा गिन नेम[3] कहे सभि अंग जोग को दुतिय प्रकाश ।। ८ ।।

लख चौरासी जोनि जीव की बैठक तिती सु 'आसन' जानि ।
तिस महि सार चुरासी लखीयहि, सार इनहूं महि खोडस मान ।
स्वसत, पदम, गोमुख, अरु हंस, आसन चार ब्रह्मा के स्थान[4] ।
गरुड़, नाग, कूरम, नरसिंहहि चारहु बिशनु केर पहिचान ।। ९ ।।

वीर, मयूर, वज्र, सिध चारहुं रुद्रासन इह करै बनाइ ।
होति 'भगासन' कहैं शकति को, शिव को 'पसचमतान' सुहाइ ।
'धनुख', 'उतान' दोइ इह, सभि के सोलहि आसन दए बताइ ।
पख्यांतर खोड़स महि चारहुं हैं श्रेशट सो इउं सुनाइ ।। १० ।।

सिंह, पदम, सिध, भद्र चार गिन, इन महि द्वै श्रेशट लखियंति ।
सिध, पदम, इन द्वै महि 'सिध' बर इस प्रकार आसन करियंत ।
प्राणायाम त्रिया, इक 'उतम', 'मध्यम' अरु 'कनिशट', जनियंत[5] ।
द्वादश मात्र चंद करि पूरै कुंभक शकति प्रमाण रखंति ।। ११ ।।

रेचै खोड़स मात्र सूरज करि प्राणायाम 'कनिशट' पछान ।
इसै करहि दुगुनी कहि 'मध्यम', त्रिगुणी मात्र सु 'उतम' जानि ।
उठै बिरति इक ग्रहण करै तिह 'प्रत्याहार' नाम पहिचान ।
बिधि, हरि, हर की, कै पंचतत की करण 'धारणा' इसै बखान ।। १२ ।।

एक बिखै ब्रित टिकहि 'ध्यान' सो लखहु, 'समाधी' दोइ प्रकार ।
इक सविकलप दुती निरविकलप अंग जोग के अशट बिचार ।
श्रोत्र, तुचा, चखु, जीह[6], रु नासा, ग्यानिंद्री एह पच उचार ।
वाक, पान, पद, मुदा, उपसथं, पंच करम इंद्रे उरधार ।। १३ ।।

---

1. मुमुक्षु 2. निर्णय कर के 3. नियम 4. पहचानों, जानो 5. जानना चाहिए 6. जिह्वा

शबद, सपरस, रूप, रस, गंध्यं, बिखयपंच ग्यानिंद्री केर।
कहिण, ग्रहण, गति, अनंद, बिसरगं करमेंद्री के बिखय बडेर[1]।
मन, बुध, चित, अहंकार चटुशटै अंतशकरण रूप इह हेरि।
संकलप, निशचै, अनुसंधानं, गरव, जथाक्रम बिखय निबेर[2] ॥ १४ ॥

दिशा, पौन, रवि, जल पति, छित, सुर, अगनी, इंद्र, उपिंद्र, बखान।
प्रजापती, म्रित्यू, ससि, ब्रह्मा, खेत्रग, रुद्र, देवता जान।
प्रान, अपान, समान, उदानं, ब्यान, नाग, कूरम, पहिचान।
किरकल, देवंदत, धनंजय, इह दस बयाश्ट गिनीजै प्रान ॥ १५ ॥

क्रिया शकति ने प्रान समशटे, कारन सूखम थूल[3] सरीर।
वैराट, सूत्र, अब्याक्रित[4] जेई इही समशटि सरीर गंभीर।
अभिमानी विशट तेजस, प्रागहि इह बयशटि के तीन सधीर।
ईश्वर हिरणगरभ बैश्वानर इह[5] समशटि अभिमानी बीर ॥ १६ ॥

बशयटि समशट अधयस्त लखहु द्वै जिम सरपादि जेवरी[6] मांह।
सीप विखै रूप जिम कलपति तिम ब्रह्मातम चेतन आहि।
है अग्यान करि कलपति सभि जग, अधिश्टानि आतम इक चाहि।
नहिं जेवरी जानहि जौ लग[7] तौ लग कलप कलप दुख पाहि ॥ १७ ॥

प्रलय :—

ततपंचीक्रित पंच अपंचिक्रित जबि सगरे लैता कहु पाइं।
भूत अपंचीक्रित पुन सारे अब्याक्रित मैं लै हुइ जाहिं।
भूत सथूल होइं लै जबहूं याको प्रलै रैन दिन नाइ[8]।
सूखम भूत होति लय जानहु 'प्राक्रित पलै' सु नाम कहाइ ॥ १८ ॥

ब्रह्म सचिदानंद ग्यान ते सभि को जबि अभाव हुइ जाइ।
सीप रजू को ग्यान होइ जबि रूपा सरप नहिं जिस भाइ।
तथा अधयशट ग्यान ते नाना हुइ अभाव सभि द्वैत बिलाइ[9]।
ग्यान प्रलै, इस नाम कहित हैं सतिगुर उपदेशनि ते पाइ ॥ १९ ॥

उतपति :—

भूत अपंचीक्रित जुति कारज पंचीक्रित सकारज होइ।
इन को उपजन आदि पुरख ते 'उतपति' नाम जानीए सोइ।

---

1. बड़े, विस्तृत 2. समझ लिया जाए 3. स्थूल 4. माया 5. यह 6. रस्सी 7. जब तक 8. नाम, संज्ञा 9. नष्ट हो जाती है

सथिति :—

उपजि प्रपंच थिरै विधि वय लग इस को नाम 'सथित' तूं जोइ[1] ।
'सथितिअवांतर' भेद जु विधि निस निस 'बिधि प्रलै' कहैं सभि कोइ ।। २० ।।
पूरण आयू, ब्रह्मा लैहुइ दुती प्रलै सभि को छै जानि ।
जिस महिं उतपति, सथित न परलै, त्रिती होति है 'प्रलै ग्यान' ।
मुकति काल अद्‌वैत अखंड इक ऐसो रूप तांहि पहिचान ।
जौ लग[2] विद्‌या ग्यान न उपजै[3] काल अखंड अविद्‌या मान ।। २१ ।।
संचित, परारबध, क्रियमाण जु त्रिधा करम जावत नहिं ग्यान ।
भूत, भविख्यति, बरतमान को इह प्रतिबंध लए पहिचान ।
त्रिगुणी माया लिए चेतन महिं जीव स्वभाव ग्यान बिन जान ।
सत, रज, तम गुण तीनहु तबिलौ जबिलौ ग्यान न भयो महान ।। २२ ।।
गुन की परविरतन ते रहित न, भिन लखहि निज, 'निरगुण' सोइ ।
जबहि त्रिगुन महिं चितंन अपनिपौ लखि अग्यान ते 'सरगुण' होइ ।
नाशवंत आकार पछानहु, निराकार अबिनाशी जोइ ।
कवि संतोख सिंह, कहिं सतिगुरजी सार ग्रहण बिन सार[4] सु खोइ ।। २३ ।।

चौपई

तन, इंद्रै, मन, प्राण अनातम । लखहु अकार अग्यान सहित तम ।
निरंकार साखी ब्रह्मातम । आपनपौ जानहि जु अनातम ।। २४ ।।

सोरठा

चित ब्रह्म निज लखि नांहि सो अकार निरकार नहिं ।
कियो अपनपौ नांहि बिसर[5] पर्‌यो जो आप ही ।। २५ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते '**विचार निरनै प्रसंग**' बरननं चौतालीसमों अंशु ।। ४४ ।।

---

1. तुम जानो 2. जब तक 3. पैदा हो 4. तत्त्व 5. भूल गया है, विस्मृत हो गया है

अंशु ४४
सूखम बिचार प्रसंग

दोहरा

गुरू :—

ईशर मूरत ग्यान की सिख संसार ते[1] पार।
सो सतिगुर उतम अधिक, इतर गुरू विवहार[2] ॥ १ ॥

चौपई

सिख :—

बिबेक, विराग, ममुखता, तीन। खटधा चतुरथ, सम, दम, चीन।
उपरति, ततिख्या, शरधा, करै। समाधान, चातुशटै धरै ॥ २ ॥
सिख सोई लख लहि कल्याण। अपर देह पोखनि के जानि[3]।

उपदेश :—

होइ विचार आतमानातम। ग्यान सरूप पाइ उरहातम[4] ॥ ३ ॥
सिख के नासहिं बंध कलेश। तिस को नाम भनैं 'उपदेश'।

दीख्या :—

बिमल ग्यान दे गुर भव हाना। इह 'दीख्या' सभि कशट मिटाना[5] ॥ ४ ॥

मंत्र :—

'मंत्र' शिरोमणि कहि सतिनाम। जिस के सिमरण लहि सुख धाम।

अथवा : —

अद्वैत वाक तत्वंमसि जोइ। तूं है ब्रह्म सुनै सिख सोइ ॥ ५ ॥
'अहं ब्रह्मासमि' बहुर उचारे। महावाक्य इह 'मंत्र' सु धारे।

वरण :—

लए प्रकिरति सतिगुण द्विज जाति। सत रज मिस्रत छत्री भांति ॥ ६ ॥

---

1. से 2. इससे भिन्न गुरु व्यावहारिक रूप में ही गुरु हैं 3. अन्य सिख केवल शरीर को पालने वाले हैं 4. उर का अंधकार 5. मिटा दे

रज तम लए प्रक्रित तन बैस। तम प्रक्रिति ते शूद्रन हैस[1]।
त्रिगुणी प्रक्रिती चार वरण गण। इक इक बरण महिं चारहुं बरण ॥ ७ ॥
अथवा वरण दोइ इस ढाल। ब्रह्मन आदि अंत चंडाल।
ब्रह्म अभिमानी ब्रह्मण कहीए। तन अभिमानि चंडाल सु लहीए[2] ॥ ८ ॥
ब्रह्मण सो जो ब्रह्म जानाति। बेद ग्रंथ भाखति बख्याति।

आश्रम :—

आश्रम ब्रह्मचारी चत्वास। ग्रहसथ वान प्रसथं संन्यास ॥ ९ ॥

अतिवरणश्रम :—

उलंघहि वरणश्रम अभिमान। अति वरणश्रमवान सु जान।

धरम :—

अति वरणाश्रमीय बिभचार न[3]। ब्रह्म निशठ आतम ध्रम धारन ॥ १० ॥

अधरम :—

धरमआतमा ते जबि हीन। रहै अनातम धरमं तीन।
इह अधरम करीजै बरण। सतिनाम सिमरण नहिं मरण ॥ ११ ॥

मरण :—

अथवा सचिदानंद सरूप। निह सिमरण सो 'मरण' कुरूप।

जनम :—

सतिनाम लिव अहं ब्रह्मासमि। इस विद्या की उतपति 'जनम' ॥ १२ ॥

बिख, अंम्रत :—

द्वै संसार की प्रापति जोइ। निज सरूप बिसरहि बिख सोइ।
हुइ जु ग्यान ते सफुरण स्वरूप। सोई अंम्रित मोख अनूप ॥ १३ ॥

गुण, दाख :—

बिन बिवहार आतमा देख। इही[4] वडो गुण सुमति परेख[5]।
त्रिगुण समेत आतमा पिखे। बडो दोख ग्यानी इह लखे ॥ १४ ॥

जस, अपज स :—

ग्यान भए ते[6] जीवन मुकति। सुजस बिसाल इही हुइ जुगति।
जीवन मुकति आतम ग्यान। होई अपजस महिद[7] महान ॥ १५ ॥

---

1. उत्पन्न किया हैं 2. समझना चाहिए 3. ब्रह्म से भिन्न किसी और के प्रति निष्ठा नहीं रखता 4. यही 5. देखते हैं 6. प्राप्त होने पर 7. बहुत अधिक

दोहरा

पंडत संत :—

बुधि रहहि ब्रह्म भाव महिं ब्रह्मादि शेख परयंत।
इकता महिं निशचा लहै सोई पंडति, संत ॥ १६ ॥

चौपई

रोगी अरोगी :—

हंममता अभिमानी थीव। रोगी सो संसारी जीव।
अहं ममताभिमान ते हीन। ग्यान सरूप अरोगी चीन ॥ १७ ॥
बुधि अनामत महिं सो रोगी। ब्रह्मबुधि तिह जान अरोगी।

धनी निरधनी :—

आतमधन प्रापत सो धनी। बिन आतम पाए निरधनी ॥ १८ ॥

निशकामता :—

जग्यासी नर चहै जु शेष। ऊतम करम करै हित देय।
नहिं अभिलाखा फल की करै। हुइ निशकाम ब्रित दिढ धरै ॥ १९ ॥

पंच करम :—

करिबे करम पंच परकार। इक तौ 'नित करम' हित धार।
मजन गुरबाणी को पठना। संध्यादिक सतिनाम सु रटना ॥ २० ॥
श्राध आदि 'नैमित्यक' अहैं। किह नमित ते करन जु लहै।
'प्राशचितादिक' त्रितीओ धरैं। बरत चंद्राइणादि जे करैं ॥ २१ ॥
चतुरथ है 'उपासना' रूप। पूजन अपनो इशट अनूप।
इह चारहुं शुभ करै सदीव। हुइ निशकाम भले निर नीव[1] ॥ २२ ॥
परमेशुर कै सतिगुर पास। अरपहि सकल करम निरजास[2]।
करम पंचमो 'निखिध' पछान। आदिक पर इसत्री रति ठानि ॥ २३ ॥
इन को अंगीकार न करे। जो नर श्रेय चाह को धरै।
भगति जोग करि जबि निशकाम। शुध अंतहकरण हुइ अभिराम ॥ २४ ॥
जथा मलीन बसत बहु कारे[3]। उजल साबण साथ पखारे।
इम उपाइ ते मन शुधि जबै। ईश प्रसंन होति है तबै ॥ २५ ॥

चार साधन :—

चारहुं साधन उर उपजावै[4]। सुधरे खेत अंन जिम पावै।
इक 'बैराग' फुरै मन ऐसे। विशटा काग सुरग सुख तैसे ॥ २६ ॥

---

1. नम्रता धारण करे 2. निर्णय करे 3. बहुत काली 4. उत्पन्न करे

लोक प्रलोक विशय सुख जेते। बमन समान न भावै तेते।
तत मिथिआ को फुरै बिचार। साधन दुतिय बिबेक उचार ।। २७ ।।
रूप जथारथ आतम जाने। सदा सत है तत पछाने।
साच झूठ ह्वै इक ही बिखै[1]। मिथिआ नाम इसी को लखै ।। २८ ।।
जबि अधिशटान साच करि जाना। तिस महिं कलपति झूठ पछाना।
रजु महिं सरप, सीप महि रूपा[2]। भूखन हेम विखै अनरूपा ।। २९ ।।
तिम आतम सति रूप मझारा। देहादिक परपंच पसारा।
इम तत मिथिआ करन बिचार। साधन दुतिय 'विवेक' बिचार ।। ३० ।।
जितिक बासना मन महि जोइ। त्यागण तिनहु नाम 'सम' होइ।
बिशियनि सभि ते रुकै रिखीक[3]। इह 'दम' नाम कहैं मति नीक ।। ३१ ।।
प्रापति भए आन करि विसै। फुरै न त्रिशना मन महिं जिसै।
अंगीकार न करिबे भावैं। नाम 'उपरति' इसी को गावैं ।। ३२ ।।
सीत ऊशन आदिक दुख सारे। सहै 'ततिख्या' नाम उचारे।
इशट देव महिं रिदै[4] लगाइ। 'समाधान' इस नाम कहाइ ।। ३३ ।।
गुरु बचन पर साच प्रतीत। 'शरधा' नाम कहैं सुध चीत।
खशट संपदा भनी सुनाइ। साधन त्रिती रिदे हुइ आइ ।। ३४ ।।
छुधिति त्रिखति को अंन रु पानी। इड बिन नहिं भावै कुछ प्रानी।
तथा आतमा प्रापति कांखा[5]। नाम 'ममुखता' इस को भाखा ।। ३५ ।।
जबि ए चारों साधन पाए। सतिगुर शरणि रहहि अधिकाए।

ब्रह्म नेश्टी ते ब्रम श्रोती गुरु :—

श्रोत्री ब्रह्म निशठी गुर पूरा। तिस ते लहै परम पद सूरा ।। ३६ ।।
केवल श्रोत्री ब्रह्म ते कल्यान। पाइ ग्यान नहिं ह्वै दुख हान।
केवल ब्रह्म निशट थे नांही। इस पर जुगति सुनहु श्रुति मांही ।। ३७ ।।
बेद शासत्र सभि ही पढि लह्यो। ब्रह्म साख्यातकार नहिं भयो।
सो श्रोत्री संसे करि दूर। होइ न अनुभव आतम पूर ।। ३८ ।।
सरिता पार उतरने हार। आइ पिख्यो अंधा करुनधार[6]।
पार करार[7] द्रिशटि नहिं आवै। आप तरै नहिं अपर तरावै ।। ३९ ।।
पिंग गुंग है केवट दूजा[8]। सो भी मिले न कारज पूजा।
ब्रह्म निशट तौ किम हुइ गयो। बेद शासत्र को लखति न भयो ।। ४० ।।

---

1. एक पदार्थ में ही 2. चाँदी 3. इंद्रियों को रोके 4. हृदय को लगाए
5. इच्छा 6. नावक, मल्लाह 7. किनारा 8. दूसरा

सो भी देय न सकही श्रेय। कहिबे की समरथ न जेय।
आप तरनि को समरथ दोऊ। अपर तराइ सकहिं नहिं कोऊ॥ ४१ ॥

यांते सुनहु खालसा श्रोन। हमरे गुरु सकल गुन भौन।
श्रोत्री, ब्रह्मनिशटी: हितकारी। करहिं क्रिपा ते श्रेय[1] हमारी॥ ४२ ॥

इशटदेव भी इही[2] हमारे। सतिगुरु रूप प्रतापी भारे।
अहै जगतपति के अवतार। चार पदारथ देति उदार॥ ४३ ॥

इन की शरन न त्यागन जोग। ग्रिहसत भोग महिं देते जोग।
निज करुना बल ते कलिआन। देति सिख उर ब्रह्म गिआन॥ ४४ ॥

दस पतिशाह[3] इसी बिधि भए। कोटन सिख उधारनि कए।
गुरु रूप ह्वै हरि अवतार। तुम को प्रापत भए उदार॥ ४५ ॥

भले भाग अपने मन जानों। इन कौ संग सदा तुम ठानो।
तन मन अरपहु बनि करि दास। जग सागर उबरहु अनयास[4]॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते **'सूखम बिचार प्रसंग'** बरननं नाम पैंतालीसमो अंशु॥ ४५ ॥

---

1. कल्याण 2. यही 3. दस गुरु 4. बिना किसी प्रकार के प्रयास किए

अंशु ४६

उपदेश प्रसंग

दोहरा

गुरु :—

ऐसे सतिगुर पास ते लहति जीव कल्यान ।
जस देखति अधिकारि जन तस उपदेश बखान ॥ १ ॥

चौपई

खटगुण सहति गुरु भगवान । जथा बिशनु के महद[1] महान ।
यांते निज शकती ते लखैं । गुन अवगुन जग्यासी बिखै ॥ २ ॥
जथा जराह होति मतिवंता । घाव मझार बिकार लहंता[2] ।
तौ मेलन अउखध नहिं लावै । मेले ते नसूर रहि जावै ॥ ३ ॥
टूट्यो असथी आदि बिकार । तिस को पूरब लेति निकार ।
पुनह घाव मेलति सुख देति । काच जराह होती दुख हेत[3] ॥ ४ ॥
इम हमरे सतिगुर गुनवंते । सिख को नीको बिधि परखंते ।
जिस करि पावहिं जन कलिआन । इम उपदेशति हैं हित ठानि ॥ ५ ॥

अधिकारी :—

जिनकी ब्रिति सुख दुख महिं भारी । राम द्वैख के नित अनुसारी ।
सुत बित आदि पदारथ सारे । इन हित बैस बिताइ बिचारे ॥ ६ ॥

सेवा

तिस को कहै करहु ध्रमकार । सेवहु सिखनि देहु अहार ।
जथा शकति दिहु छादन आछे । चांपहु पग, करीऐ सिख बांछे[4] ॥ ७ ॥
मरदन करि इशनान करावहु । बसत्र पखारहु सुध बनावहु ।
हांकहु पौन स्वेद जबि होइ । झारहु पनही, पग को धोइ ॥ ८ ॥

1. बड़े 2. देखता है 3. दु:ख का कारण बनना है 4. इच्छा पूर्ण करे

जूठ भांजानि मांजन करहु[1]। सीतल नीर कूप ते भरहु।
रदधावन[2] को अरपहु आनि। करहु रसोई सुध महांन ॥ ९ ॥
इत्यादिक सेवा बहु भांति। सिखन की कीजहि दिन राति।

गुरबाणी :—

सतिगुर गिरा सीखि निति पठो। सतिनाम कहु मुख तें रटो ॥ १० ॥

इशनान :—

निजे निज धरम रहहु सवधान। वडी राति ते कार अशनान[3]।

दइआ :—

छुधति कि नगन बिना धन कोइ। दिहु भोजन छादन तिस जोइ ॥ ११ ॥
देखि दुखी के दइआ उपावहु। जथाशकति तिस कशट मिटावहु।
करत दइआ को पुंन घनेरा। दइआ करति हुइ बडिहुं व्रडेरा[4] ॥ १२ ॥
जे जे बडे दया उर धारैं। मन कोमल ते कशट निवारैं।
करहिं दीन को सुखी बिसाला। आदि प्रमेशुर बडे क्रिपाला ॥ १३ ॥

सचु :—

सचु बोलहु सुखि देति बडेरा। तजहु कूर[5] दुख दाय घनेरा।

मैत्री भाव :—

पर सुखि पिखि तपतउ[6] उर नांही। पाप व्रिअरथ होति सिर ताही ॥ १४ ॥
इक तौ रिदा तपहि दुख पावै। पिखहु भले कुछ हाथ न आवै।
पुन परमेशुर कोप करंता। मोहि दियो पिखि एह जरंता[7] ॥ १५ ॥

संतोख :—

इत्यादिक इस महि बहु दोख। लालच तजै धरै संतोख।

त्यागने योग्य कर्म :—

परत्रिय परधन पर की अंश। नहिं लिहु, लेहि जु करहि बिध्वंस ॥ १६ ॥

खिमा :—

अपने ते निरबल को जानि। तिस पुर कोप न करहु सुजान।

---

1. जूठे बरतनों को साफ करे 2. दातौन 3. स्नान 4. अधिक 5. झूठ 6. ईर्ष्या 7. जलता है

निर अभिमानता :—

बिदिआ के सरूप है तन को। बुधि बिसाल कै दीरघ धन को ।। १७ ।।
इत्यादिक ते गरब न धरीयहि। दाता ईशुर एक बिचरीअहि।
तीरथ बरत आदि करि करम। नहिं अभिमान धरहु जुति शरम ।। १८ ।।
करहि सु करम धरहि अभिमान। निफल जाति जिउं गज इशनान।
अपनो जस परनिंद न कहै। कहै त इस ते भी अघ[1] लहै ।। १९ ।।
दान कर्‌यो मुख ते नहि भाखै। सदा छपावन को अभलाखैं।

मीठा बोलना :—

मधुर कहै सभि को त्रिपतावै। फीका बोल न किसी दुखावै ।। २० ।।

धरम किरत :—

धरम क्रित कर दरब कमावै।

वंड छकण[2] :—

बंट[3] अतिथनि की पुन खावैं।

स्वछता :—

ऊपर बसत्र न रखै मलीन। तिम काया का नित मलहीन ।। २१ ।।

कुसंग :—

चोर, जार, बटपार, जुआरी। क्रितघन, बंचक, छली, कुचारी।
सुपने महि भी इनकी संगति। करे न कबिहु, थिर न पंगति[4] ।। २२ ।।
बिशियनि ते बिशई नर बुरो। लोडन दुरजन तातछिन परहरो।
जथा अगनि ते लोह अपायो। दिपति[5] जाति नहिं हाथ छुवायो ।। २३ ।।

सतिसंग :—

जन सुशील की संगति करीए। जिन मिलिते अवगुन परहरीए।

कथा श्रवण :—

सुनीअहि अवतारन इतिहास। सतिगुर दस जिम करे बिलास[6] ।। २४ ।।
बहुर ब्रह्म को निरनै जहां। सूखम बुधि करि सुनीअहि तहां।

श्री अम्रितसर यात्रा :—

श्री अम्रितसर मजन करीए। जनम जनम के अघ परहरीए ।। २५ ।।

---

1. पाप, दोष 2. बाँट कर खाना 3. बाँट कर 4. इन की पंक्ति में न बैठे 5. वेश्या 6. सांसारिक जीवन व्यतीत किया

हरिमंदिर दरसहु दरबार। होति सदा गुर गिर उचार।
सहति अदब[1] के बैठहि मांहि। गुर बिन मन न डुलावै कांहि ॥ २६ ॥

सतिगुर जोति जागती जहां। नित प्रति सादर दरसहु तहां।
किधौं परब के दिन चलि जावहु। किधौं खशटमे मास सिधावहु ॥ २७ ॥

अधिक दूर हुइ संमत मांहि। सतिगुर घर को दरससि जाहि।
तन मन ते गुर सिख हुइ करिके। गयो न दरशन अम्रितसर के ॥ २८ ॥

किउं तिन जनम धर्यो जग आइ। निशफल भयो गयो पछुताइ।
जे दरसहि अरु सरुवरु मजैं[2]। पाइं पदारथ, सभि अघ भजैं ॥ २९ ॥

अस उपदेश प्रथम गुर करैं। अंतहकरण सुधता धरैं।
सतिनाम सिमरति जन जोइ। हरि गुर संग प्रेम जिस होइ ॥ ३० ॥

भगती :—

तिसै नितांप्रति भगत द्रिड़ावै। भाणा मंनण को सिखारावैं।
कशट आपदा परै जि कोइ। किधौं सरीर बिखै रुज[3] होइ ॥ ३१ ॥

बिपरै[4] सुत बित आदिक मांही। परारबध करि हुइ कुछ जाही।
प्रभु महि दोश अरोपे कोइ न। नीको लखै, दीन मन होइ न ॥ ३२ ॥

भला करहि परमेसर मेरा। अघ फल निबरहि, मैं नित चेरा।
इत्यादिक बहु रिदै मझार। हरखै ईशुर क्रिति[5] बिचार ॥ ३३ ॥

करनैहार न दूजा[6] कोई। जे हरि करै त बुरी न होई।
इह निशचा गुर भले टिकावै। ईशुर की क्रिति पर हरिखावै ॥ ३४ ॥

निस दिन लिवलाबन सतिनाम। पुन उपदेश इह अभिराम।
ऊठति बैठति सोवति चालहु। क्रिति करिबे महि नाम संभालहु ॥ ३५ ॥

हाथ पांव ते कार सुधारहु। मन ते मुख ते नाम उचारहु।
सने सने[7] तनहंता त्यागन। उपदेश करति इस लागत ॥ ३६ ॥

सभि महि रम्यो एक प्रभु मेरा। शत्रु मित्र अर ठाकर चेरा।
यांते राग द्वैख को त्यागहु। नींद अविद्या तजि करि जागहु ॥ ३७ ॥

गुर की गिरा विचारहु नीके। जिस ते भले होति इस जीके।
कीरतन करहु, प्रेम को सीचि। लखहु सकल गुन प्रभु के बीच ॥ ३८ ॥

आदि शरीर पदारथ सारे। जिस प्रभु दीने हमैं बिचारे।
अस ईशुर किउं बिसारहु। निस बासुर मन जीह संभारहु ॥ ३९ ॥

---

1 सत्कार, आदर 2. सरोवर में स्नान करे 3. रोग 4. विपरीत स्थिति में 5. परमात्मा का किया काम 6. दूसरा 7. धीरे धीरे

श्री गुर ग्रंथ साह्ब के मांहि। भगति उपदेश अधिक अधिकाहि।
इक तौ सतिनाम को सिमरन। लिव लगाइ, नहिं त्यागहि निस दिन ॥ ४० ॥
दुतीए भाणा[1] प्रभु को माने। प्रभु क्रित ते उर हरख सु ठाने।
त्रितीए तनहंता को त्यागे। तजि कूरे[2] सच पर अनुरागे ॥ ४१ ॥
इन तीनहु मैं परपक होइ। ब्रह्म ग्यान अधिकारी सोइ।
फुरहि चतुशटै साधन रिदै। लखैं उचित उपदेशनि तजै ॥ ४२ ॥
शरण पर्यो सिख को पहिचान। परे कुबंधन करैं प्रहान।
अस दस गुर साचे पतिशाह[3]। सिमरहु वाहि गुरु गुर वाहि ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रुते '**उपदेश प्रसंग**' बरननं नाम छितालीसमो अंशु। ४६ ॥

---

1. इच्छा 2. झूठ 3. दस गुरु

अंशु ४७
गिआन निरनै प्रसंग

दोहरा

चारहुं साधन पाइकै सतिगुर शरणि सिधाइ ।
परखै महां सुजान तबि ब्रह्म बिदिआ सिखराइ ।। १ ।।

चौपई

चार प्रकार अहै ब्रह्म ग्यान । श्रवण, मनन, निध्यासन जान ।
चौथे साख्यात गुर कहैं । जिस को पाइ न जग महि बहै[1] ।। २ ।।

श्रवन :—

प्रथम श्रवण खट लिंग[2] प्रकार । जिस ते चेतन अदुति मझार ।
तातपरय के निशचै होइ । श्री सतिगुरु 'श्रवण' कहि सोइ ।। ३ ।।
इक 'उपकरम अरु उपसंहार' । दूजे[3] को 'अभ्यास' उचार ।
'श्रवण अपूरबता' लखि तीन । 'फल' पुन 'अरथवाद' को चीन ।। ४ ।।
उपपति खशटम करहिं उचारन । अबि इन के करि अरथ बिचारन ।
अरथ जु आदि ग्रंथ महि धरना । तिसको प्रतिपादन बहु करना ।। ५ ।।
तिसी अरथ महिं होहि समापति । उपक्रम उपसंहार जान चित ।
श्री नानक जी कीन बनाइ । उदाहरण सुनि लिहु सुख पाइ ।। ६ ।।
"आदि सचु जुगादि सचु । है भी सचु नानक होसी भी सचु ।।"

चौपई

आदि जगत के सच दिखयो । अंत सकल के सच बतायो ।
आदि अंत महिं वरन्यो एक । 'उपक्रम उपसंहार' बिबेक[4] ।। ७ ।।

अभ्यिास :—

जोग निरूपण के जो अहै । बखतु अदुती जु चेतन लहै ।
बार बार तिस करहि प्रकाशा । ग्रंथ बिखै, सो लखि अभ्यासा ।। ८ ।।

---

1. चलायमान नहीं होता 2. चिह्न । 3. दूसरे 4. जानो

जपुजी बिखै निरूपण करिओ। बार बारहि अरथ सो धरिओ।
"साचा साहिबु साचु नाइ।" "थापिआ न जाइ कीता न होइ।"
इत्यादिक पउड़ी[1] बहु मांहि। बरनन कर्‌यो सचु सुख पाहि॥ ९॥

अपूरवता :—

जो प्रतिपादय अदुती वसतु हुइ। प्रमाणांतर कहि अविशै सुइ।
श्रवण अपूरबता लखि तीजा[2]। सच एक है अवर न बीजा[3]॥ १०॥
"कथना कथी न जावै तोटि। कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि।"
'कहणा कथनु न जाई' उदार। 'वारिआ न जावा एक वार।'
प्रतछ प्रमाण आदि सभिहिनि ते। बिशै न होइ सकहि जिन किन ते॥ ११॥

फल चलिआ :—

प्रतिपादन करिबे को जोग। आतम ग्यान कहैं प्रभु लोग।
तिसी ग्यान को जो अनुशठान। सेवन करनो महिद[4] महान॥ १२॥
चौथे श्रवण प्रयोजन सोइ। फल भी नाम, सुनहुं जिम होइ।
'गुरमुखि नादं गुरमुखि बेदं'। गुरा इक देहि बुझाइव भेदं॥ १३॥
नित सतिगुर की सेवा करनी। गुर ते ग्यान प्रापती बरनी।
मुकति देति है आतम ग्यान। इत्यादिक जहिं कीन बखान॥ १४॥
पंचम 'अरथवाद' सुनि लछन। जो भाखति हैं ग्यान विचछन।
वरनन जोग वसतु है जोइ। तिस महिं तिस की उसतत होइ॥ १५॥
'नानक निरगुणि गुण हि करेइ। 'गुणवंतिआ' जो हुइ गुण देइ।
'तेहा कोइ न सुझई' परे। 'जे तिसु' को 'गुण कोइ करे'॥ १६॥
सभि ते ग्यानवान हुइ दीहा[5]। तिस पर को उपकार करीहा।
चाहै सु करै आप समरथ। ब्रह्मग्यानी कै सभि किछ हथ[6]॥ १७॥
'उपपति' खशटम श्रवण सु लछन। कहति बेद सतिगुरु बिचछन।
जो प्रकरन करिकै शुभ अरथ। प्रतिपादन के जोग समरथ॥ १८॥

दोहरा

तिसी अरथ सिध करन मैं तिसी प्रकरण मझार।
श्रवण करी है जुगति जे सो उपपति बिचार॥ १९॥

---

1. छंद विशेष, पद्य 2. तीसरा 3. दूसरा 4. 'महान श्रेष्ठ' 5. बड़ा 6. हाथ

"सालाही सालाहि एती सुरति न पाइआ।
नदींआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि।
समुंदि साह सुलतान ॥"[1]

चौपई

नदी ईश है; जीव सु वाहा। दोनहुं मिले उदधि ब्रह्म मांहा।
नाम नदी वाहा मिट जाइ। तिमही ईश जीव न रहाइ॥ २० ॥
सिंधु रूप बनि सिंधु कहावैं। तथा ब्रह्म सों द्वै मिलि जावै।
कोट जतन ते न्यारे होइ न। मिले विभेद सकै करि कोइ न॥ २१ ॥
जुकति उकति इकता महिं ऐसे। उपवति श्रवणरूप लखि तैसे।
बेद छांदोग खशटमे ध्याइ। तहा करे खट श्रवण बनाइ॥ २२ ।
सो जपुजी महि गुरु दिखाए। श्रवण पौड़ीआं[2] चार बणाए[3]।
श्रवण महातम को दिखरायो। श्रवण रूप को नहिं बतायो॥ २३ ॥
सो खट रूप प्रगट दिखराए। सिख मुमोखी को समुझाए।

मनन

मनन ग्यान को भेद बतावति। जिस के करे परमगति पावति॥ २४ ॥
मनन करे मन होति बिलाइ[4]। जो मन द्वैत रह्यो लपटाइ।
सतिचेतन आनंद अपार। ब्रह्म आतमा हीन बिकार॥ २५ ॥
इकरस सदा, बाल नहिं तरुण। नहिं जरा ते जर जर मरण।
जड सो नहिं, नहिं दुख रूप। एक आतमा अचल अनूप॥ २६ ॥
तीन सरीरन ते नित भिन। साखी रूप, नहीं परछिन।
थल देहि बिनसति अरु जनमहि। आतम जिउं का तिउं लखि मन महिं॥ २७ ॥
अवनी कै सिहजा[5] पर परै। थूल[6] देह जड समसर थिरै।
आतम लिंग देह परकाशै। अनिक प्रकारनि सुपना भासै॥ २८ ॥
सुपने केर पदारथ भारे। अरु सुपने परकाशहि सारे।
जबि सुखपती अवसथा होइ। तबै अभाव लिंग तन होइ॥ २९ ॥
जीव आतमा इंद्र सरूप। इद्राणी ले बुधि अनूप।
रिदे सदन महिं लहि बिसराम। तबि लौ सुखपति है सुखधाम॥ ३० ॥
बहुर उठहि लैके निज रानी। सरब सरीर करहि सवधानी।
जाग्रति अवसथा को जबि पाइ। गहै बिशै को सहिज सुभाइ॥ ३१ ॥

---

1. प्रभु की सराहना करने वाले सराहना करते हैं, परन्तु उसकी बड़ाई जानने की उन्हें बुद्धि प्राप्त नहीं होती। जैसे नदी नाले समुद्र में पड़ते हैं, किन्तु वे उसे जान नहीं पाते। समुद्र उनका बादशाह अथवा स्वामी है और वे समुद्र रूप हैं।
2. पद्य 3. बनाए 4. लय हो लाता हैं 5. सेना 6. स्थूल

लहै सथिरता लोचन दाए। बुधि इंद्राणी थिर ह्वै बाए।
इंद्रय विशै प्रकाशनि ठानै। सुपन सखो पति तबि द्वै हानै ॥ ३२ ॥
यांते मिथ्या तीन अवसथा। मिथ्या तीन सरीर बिवसथा[1]।
बारंबार बिचारन ऐसे। 'मनन' बिचार नाम इस हैसे ॥ ३३ ॥
मनकी ब्रितां पंच विधि होइ। इक परमान, विपरजै दोइ।
विकलप, निंद्रा सिम्रिति, जानि। सुनहु सरूप जु ब्रिति प्रमान ॥ ३४ ॥

प्रमाण :—

अंतहिकरण ब्रिति है जोइ। इंद्रय द्वार। निकरै सोइ।
नाना घट पट धरे पदारथ। तिनहि जानिबो होइ जथारथ ॥ ३५ ॥

विपरजै :—

दुती 'विपरजै' इस को कहैं। रजू[2] परी सरप तिस लहै।

विकलप :—

ब्रिति 'बिकलप' रूप इह मान। शबद अरथ को लीज जानि ॥ ३६ ॥
तातपरय महिं रहै संदेहि। निहचै भयो न लखीअहि एह।

निंद्रा :—

अभाव ग्यान को आश्रै ब्रिति। 'निंद्रा' ब्रिति कहिं समझहु चित ॥ ३७ ॥
जाग्रति सुपन जु ब्रिति अभाव। करणहार सो तमुं गुण भाव।
सुखपति तमु गुण ग्रहण जु करै। निंद्रा ब्रिती नाम तिस ररैं ॥ ३८ ॥

सिम्रति :—

प्रथम समें कुछ अनुभव कीन। अपर समैं चितवै सत चीन।
जथा भने इह नर है सोई। पूरब पिख्यो थाव किस जोई ॥ ३९ ॥
जिस कर चित करना इह होइ। सिम्रित ब्रिति जानीअहि सोइ।

सथिती :—

पंच ब्रितां[3] बिन चित हुइ जावै। आतम के सरूप दिश धावै ॥ ४० ॥
मन प्रवाह जबि इस बिधि होइ। नाम 'सथिती' बखानैं सोइ।

अभ्यास :—

इसथिति प्रापति हेत प्रयास। तिस को नाम लख 'अभ्यास' ॥ ४१ ॥
सो अभ्यास है दोइ प्रकार। एक अलप दूसर द्रिढ़ धारि।
कबि कबि आतम को अभ्यासै। इह तौ 'अलप' नाम कहु भासै ॥ ४२ ॥
सादर, दीरघ काल, निरंतर। सो 'द्रिढ़ भूमि' रूप लखि अंतर।

---

1. व्यवस्था 2. रस्सी 3. वृत्तियां

वैराग :—

मिटी प्रीत विशियनि ते जबै। नाम विराग होति हिय तबै ॥ ४३ ॥
सो वैराग है चार प्रकार। इक 'यतिमान' 'पित्रेक' बिचार।
'इक इंद्रै' अरु 'वसीकार' कहिं। इसके लछन भनौं जथा लहि ॥ ४४ ॥

यतमान :—

दुख रूप संसार पछाना। संतन सेवा रुची महाना।
संति रूप परमेशर पाऊ। बंधन करम पए छुटकाऊं ॥ ४५ ॥
इसको 'यतिमान' मन जानि। संतन संगत कीन महान।

वित्रेक :—

लग्यो बिचारन गुन अरु दोख। दोख तजों, किस गुन ते मोख ? ॥ ४६ ॥
सति संतोख आदि बिरधावै[1]। काम क्रोध मोह आदि घटावै।
इह वैराग 'वित्रेक' पछान। इंक इंद्री को सुनि दै कान ॥ ४७ ॥

एक इंद्रै वैराग :—

वहिर विशै गुन त्यागन कीन। मन महिं तनक होइ लिवलीन।

वसीकार :—

वसीकार को सुनि इस बेरे। बिशै भोग जुग लोकनि केरे ॥ ४८ ॥
शबद, सपरश, रूप, रस, गंध। इन ते छूट गयो मन बंध।
बाइस[2] विशटा सम सभि बिशे। बमन सरस नहिं भावति जिसे ॥ ४९ ॥
अस वैराग संग मन जीत। गहे सथिरता आतम नीत।
ब्रह्म ग्यान सूरज के संग। तम अग्यान सकल दे भंग ॥ ५० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रुते **'गिआन निरनै प्रसंग'** बरननं नाम सैंतालीसमो अंशु ॥ ४७ ॥

---

1. वृद्धि करो 2. काम

अंशु ४८

गिआन निरनै प्रसंग

दोहरा

निध्यासन :—

करति मनन नीकी बिधिनि पुन निध्यासन होति ।
रात दिनस अभ्यास ने पुन सख्यात उदोत ।। १ ।।

चौपई

सुनियहि निध्यासन को लछन । जिम भाखति हैं संत बिचछन ।
देहादिक प्रतीत करि जोइ । खंडी जाइ न किस ते सोइ ।। २ ।।
ब्रिति[1] सरूप अभ्यासन भई । किस ते नशट होति नहिं जुई[2] ।
मोह आदिक जो अखिल बिकार । इन बिधननि ते रहि इक सार ।। ३ ।।
सति संतोख आदि गुर पाइ । ब्रह्म विखै ब्रिति लागति जाइ ।
अलख लखन के हित अनुरागी । प्रथम लख्यो तिस ते हुइ त्यागी ।। ४ ।।
कारन कारज इकता करनी । जल तरंग की रीती बरनी ।
आदि उपकार बरण जे नाना । मसू[3] बिना नहिं कुछ आना ।। ५ ।।
अंतहिकरण ब्रिति उठि जबै । ह्वै अनमृत[4] चिंतन के तबै ।
निकसी बाहिर लोचन दुआरे । गेय पदारथ आगे सारे ।। ६ ।।
तदाकार तिनके संग होइ । प्रापति ग्यान तबहि तिह सोइ ।
ब्रित अवछिंन चित, घट अवछिंन चित । दोनहु के अवरन[5] संहार कित ।। ७ ।।
जबि इकता[6] को प्रापत होइ । ब्रिख अनेक ग्यान लहि सोइ ।
त्रिपुटी ग्याता गेय रु ग्यान । मिल्यो ब्रह्म सभि बिखै समान ।। ८ ।।
जथा ताल महि नीर बिसाला । कूल के द्वारा ह्वै करि चाला ।
क्यारी रूप बनहिं सो जाइ । तीनहु महि अकाश इक भाइ ।। ९ ।।
ताल, कूल क्यारी मैं नभ है । तिम त्रिपाटी महि ब्रह्म सुलभ है ।
ब्यापक है अकाश की न्याइ । सभिनि प्रकाशहि सभिनी थांइ[7] ।। १० ।।

---

1. वृत्ति 2. जो 3. स्याही 4. अंतहकरण की वृत्ति 5. पर्दा
6. एकता, एकत्व 7. स्थानों में

अंतहिकरण ब्रिति इस केर। अहै प्रकाशक दुहन बडेर[1]।
अहंब्रितादि बिनां किस कोइ न। आतम को प्रकाश सिध होन न ॥ ११ ॥
अहंब्रितादि जुगत चित होइ। तबहि प्रकाश होति है सोइ।
ब्यापक अपर प्रकाशक भाव। वासतव ब्रह्म महिं नहीं लखाव[2] ॥ १२ ॥
वासतव आतम तत निरंकार। निरविकलप अरु बिना विकार।
अहं अहं की ब्रिती जु सबै। होइ सबंध तदातम जबै ॥ १३ ॥
जथा लोहे के गोले संग। अगनि तदातम हुइ इक रंग।
पाइ अगनि के गुन को लोहा। त्रिण आदिक को दाहित ओहा[3] ॥ १४ ॥
आतम अहं सबंध को पाइ। ब्यापक अपर प्रकाशकताइ।
इत्यादिक नितप्रती बिचारै। निध्यासन को नीकै धारै ॥ १५ ॥
तीन सरीरनि ते मैं न्यारो। तीन अवसथा साखी धारो।
नित सुध है ग्यान सरूप। इकरस अचल अनंद अनूप ॥ १६ ॥
इस बिधि 'प्रोख ग्यान' हुइ आवै। तन अभिमान खीन हुइ जावै।
अरु जबि मनन निध्यासन द्वारा। होति भयो सख्यात उदारा ॥ १७ ॥
ब्रह्माकार ब्रिति द्रिड भई। मूल अविद्या छै हुइ गई।
तन अभिमान कहा पुन रहै। अपन सरूप जथारथ[4] लहै ॥ १८ ॥
उर सिमरण आतप विग्यान। ग्यान विग्यान प्रकाश महान।

छे प्रमाण चले :—

खट प्रमाण करि लह्यो प्रकाश। तिन ते भई अविद्या नाश ॥ १९ ॥
अपन मोह कारज कहु करिवे। नहिं अविद्या समरथ धरिवे।
सो प्रमाण खट सुनि चित लाइ। जिस ते संसे सभि बिनसाइ ॥ २० ॥

शब्द प्रमाण :—

वेद रु सतिगुर शब्द जु सुनि करि। महांवाक ते निरनै उर धरि।
सबद प्रमाण इही इक जान। ब्रह्म आतमा निरनै ठानि ॥ २१ ॥

अनुमान : —

दूसर जो अनुमान कहित हैं। चिन्ह देखि करि वसतु लहति है।
मन चख्यादि[5] सुते जड जोइ। जिस ते ग्यान पाइ सभि कोइ ॥ २२ ॥
सो आतम है—जान्यो जाइ। साखी तीन अवसथा गाइ।
नित सुध सनि जु परमानंद। श्रवण कर्यो जो प्रथम बिलंद[6] ॥ २३ ॥

---

1. बड़े 2. दिखाई नहीं पड़ते 3. वह 4. यथार्थ 5. चक्षु आदि 6. ऊँचा, बड़ा, महान्

शबद, सपरश, रूप, रस, गंध। जिस ते लखति इंद्रै संबंध।
सो आतम साखी है कोइ। इम जबि समझ बिलोकन होइ ॥ २४ ॥

उपमान :—

इसक[1] नाम जान 'अनुमान'। श्रवण उपरंत मननि इस जान।
सति, निरंस, अनंत, अखंड। वहिरंतर पूरन ब्रहिमंड ॥ २५ ॥
व्यापक है अकाश को न्याई। घट मठ महि लखीए सभि थाईं[2]।
इह उपमान प्रमाण लखीजै। जहिं दूसर की सम जानीजै ॥ २६ ॥

अरथापती प्रमाण :—

इह नर दीखत पीन महान। दिन महि भोजन करं न खान।
इस ते लखीयति निस मैं खाइ। देह पीनता देति जनाइ[3] ॥ २७ ॥
जौ इह रात अहार न खाइ। नहिं सरीर मोटा हुइ जाइ।
यांते निस महि भोजन खायो। यहि निशचै निरनै ठहिरायो ॥ २८ ॥
तिम आतम के विखै विचारै। जाग्रति आदि पदारथ सारै।
जिस आतम करि जाने जाहीं। सुखपति आदि अभाव जि आहि ॥ २९ ॥
सो आतम ही करि सिध होइ। सिध करता है अपर न कोइ।
जे करि ह्वै न आतमा परै। आदि अभाव सिध किम करै ? ॥ ३० ॥
कारज जिस को जगत प्रतछ। 'अरथापति' विखै इम लछ।

अईतेजक प्रमाण :—

कह्यो किसी ने इस तरु विखै। यख्य बसति है, किस नहिं पिखै ॥ ३१ ॥
जान्यो जाइ न किय अनुमान। नहिं किह शासत्रहि कीन बखान।
परंपरा सुनिबे महिं आवै। आईतेजक परमाण कहावे ॥ ३२ ॥
तिम आतम इह कहैं सनातन। परंपरा सभि कथैं पुरातन।
सति परातम ईशुर जोइ। सभि को अहै आतमा सोइ ॥ ३३ ॥

प्रतख्य :—

अबि प्रतख्य सुनि नीके उर धरि। अंतहकरण की ब्रिति निकल करि।
इंद्रय दुआरा वहिर प्रकाशै। साथ पदारथ मिलि करि भासै ॥ ३४ ॥
सति चित आनंद बिखै प्रतछ। असति भांति प्रिय आतम लछ।
इह तीनहुं जित कित द्रिशटावैं। इन बिहीन किछु कित न जनावै ॥ ३५ ॥
असती है सु पदारथ साचु। चित भांती परकाश उबाच।
पाइ पदारथ प्रिय आनंद। इम तीनहुं सभि महिं बरतंद[4] ॥ ३६ ॥

---

1. इसका 2. जगह, स्थान 3. बता देता है 4. इस में होते हैं, दिखाई पड़ते हैं

तीन भेद :—

निरावेव ब्रह्म भले पछानै। तीनो भेद तिसी ते हानै[1]।
इक तरु ते जिम है तरु आन। भेद 'सजाती' लीजै जान ।। ३७ ।।
इक ब्रह्म ते दूसर ब्रह्म नांही। भेद सजाती तौ हुइ कांही।
इक तरु, पाथर दूसर लह्यो। भेद 'विजाती' है इम कह्यो ।। ३८ ।।
ब्रह्म ते अपर नहिं तिस पास। यांते भेद विजाती नास।
तरु के हैं सकंध अरु शाखा। भेद 'सुगति' दल आदिक भाखा ।। ३९ ।।
इह भी भेद नहिं ब्रह्म माही। लख्यो अभेद आतिमा जांही।
इक अखंड सचिदानंद रूप। बुधि सूखम ते लख्यो अनूप ।। ४० ।।
मिल्यो अनंद ब्रिति महिं सोई। जनम मरने के संकट खोई।
खशट प्रमाणनि कर जिस आपति। भई आतमा की सुधि प्रापति ।। ४१ ।।
तिसै अविद्या उपजे नांहि। नाश भई ते नहिं उपजाहि।
अजा अविद्या तांते नाइ[2]। बिनसी जनम नहीं पुन पाइ ।। ४२ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रुते **'गिआन निरनै प्रसंग'** वरननं नाम अठतालीसमों अंशु ।। ४८ ।।

1. इसी से नष्ट हो जाते हैं 2. नाम पड़ा है

अंशु ४६

गिआन निरनै प्रसंग

दोहरा

'बिशै प्रमाणनि को भयो कह्यो अबिशै सरूप'।
इह संसै बूझनि कर्यो सुनिकै गाथ अनूप ॥ १ ॥

चौपई

शंका करी खालसे जबै। दयासिंह बोल्यो शुभ तबै।
'बिधि मुख सिख जनाइवे हेत। कह्यो ब्रह्म को बिशै संकेत ॥ २ ॥
नेति नेति करि निखिध पछान। तौ प्रमान को बिशय न जान।
जिम नहिं बिशै सुनहु दे श्रौन :—अगम अगोचर कहीए तौन[1] ॥ ३ ॥
इंद्री ते प्रतच्छ नहिं सोइ। प्रतच्छ प्रमान अबिशयै होइ।
चिन्ह ब्रह्म कै कोइ न अहै। जथा धूम ते पावक लहैं ॥ ४ ॥
नहिं अनुमान बिशै इम जानि। अद्वै एक आतमा मानि।
चेतन सम चेतन नहिं कोइ। बिशै 'उपमान' न यांते होइ ॥ ५ ॥
कारण कारज भेद न अहैं। 'अरथापत्ति' बिशै नहिं लहै।
मन बानी को बिशै न जोइ। शबद 'अईतेजक' बिशै न होइ ॥ ६ ॥
देश काल नहिं वसतु प्रछिन। एक आतमा अनंद अभिन।
देश नहीं ऐसो कित लहो। चेतन ब्रह्म नहीं जिह, कहो ॥ ७ ॥
सकल देश महिं पूरन पिखीए[2]। देश प्रछेद न यांते लखीए।
भूत भविक्खत अरु ब्रतमान। ब्रह्म आतमा एक समान ॥ ८ ॥
बाध न घाट, जनम नहिं नाश। इकरस सदा रह्यो सु प्रकाश।
यांते काल प्रछेद न कोइ। अक्रै[3], अचल कूट सम सोइ ॥ ९ ॥
सरब आतमा सभि महिं बासा। सरबाधार समसति[4] प्रकाशा।
यांते वसतु प्रछेद न कोई। तीनहुं ते परछिन न होइ ॥ १० ॥

---

1. उसको 2. देखिए 3. निष्क्रिय 4. समस्त

दोहरा

आश्रै विखै अग्यान को होति ब्रह्म ही एक।
सुनीअहि जुति द्रिशटांत के, कीजै बहुर बिबेक ॥ ११ ॥

चौपई

जिम कोशट के बीच अंधेरा। छादन कीनस परै न हेरा।
कोशठ कर्यो विखै तम होइ। दिखिबे मर्हि नहिं आवति सोइ ॥ १२ ॥
अरु कोशट ही आश्रै तम को। इम ही जानो रूप ब्रह्म को।
तिस ते ही उपज्यो अग्यान। यांते अहै आसरो जान ॥ १३ ॥
ब्रह्म को लखन देति नहिं सोइ। यांते ब्रिशै ब्रह्म हो होइ।
द्वै शकती धारति अग्यान। इक आवरन, विखेपै आन ॥ १४ ॥

आवरन शकती

ब्रह्म कर्यो आछादन जांहि। जिस ते जान सकहिं किम नांहि।
इह आवरन शकति द्रिड़ अहै। जिव के भए जीव जग[1] बहै ॥ १५ ॥

विखेप शकती

पुन नानत्व दिखाव्रन करे। गज, बाजी, बन, गन तरु हरे।
शकति विखेप इही[2] तिस मांहिं। एक रूप किम जानति नांहि ॥ १६ ॥
श्रवण, मनन, निद्यासन द्वारा। जबि होइओ सक्ख्यात उदारा।
त्रै गुण तीन अवसथा छोरि। थिरी ब्रिति चलि तुरीआ ओर ॥ १७ ॥
अनंदातम मर्हि थिरता भई। जित कित एक रूप ह्वै गई।
दोनहुं शकति सहित अग्यान। गुरू बाक ते कीयसि हान ॥ १८ ॥
जीव ईश नदि वाहा रूप[3]। परे बीच भे समुंद्र अनूप।
जहिती[4] ते न एकता बने। गंग घोख इक तजिबो भने ॥ १९ ॥
जीव ईश दोनहुं परहरे। तबि इकता कहु किस की करे।
तथा अजहिती ग्रहन करन मैं। इह भी बनहि न, सुनहुं श्रवण मैं ॥ २० ॥
जीव ईश दोनहुं को राखै। और ग्रहन किह करन भिलाखै।
अरथ न सिद्ध दुहनि ते होवा। तबि सतिगुरनि त्रिती पख जोवा ॥ २१ ॥
लछणां दोन मिलाइ बिचारा। 'भाग त्याग' तिह नाम उचारा।
इकता करन अरथ भा सिद्ध। श्रोता सुनहुं कह्यो जिम ब्रिद्ध ॥ २२ ॥
जीव वाच्य करि है अलपग्य। ईशुर वाच्य अहै सरबग्य।
जनम मरण उरमी[5] तन दोइ। छुधा त्रिखा प्राणनि की होइ ॥ २३ ॥

---

1. बैठा रहता है अथवा प्रवाहित होता है, इस संसार में गतिशील रहता है
2. यही 3. छोटा नाला 4. लक्षण 5. तरंग, लहर

हरख सोग मन की पहिचान। इन खट सहित जीवको मान।
लच्छमी, ग्यान, बिराग, उदार। जस, ऐश्वरज, गुण खशट उचार ॥ २४ ॥

जीवन महिं इनको कित अंश। ईशुर बिखै खशट सरबंस।
यांते त्रिशटि उपावनि, पारनि। नाशन करनि ईश त्रै कारन ॥ २५ ॥

जीव प्रतंत्र दुखी गुण हीन। किम दोइनि की इकता[1] लीनि।
वाच्य विखै इकता नहिं जोइ। लखणा करे लख्य मैं होइ ॥ २६ ॥

दुखी, प्रतंत्र, अलपता, जीव। तीनो तजि पाछै जो थीव।
सरबगता, खट गुण, सुख ईश। तीनो तजि पशचाति रहीस ॥ २७ ॥

सच्चिदानंद दुहनि महिं रह्यो। यांते इकता दोनहुं लह्यो।
जथा अगनि के गुन है तीन। दाहक, उशन, प्रकाशक, चीन ॥ २८ ॥

तिसी अगनि के तीनहुं रूप। बन दौ, दीप, मसाल, अनूप।
त्रैगुण तीनहुं रूप मझार। ईश जीवतिम ब्रह्म बिचार ॥ २९ ॥

इक[2] अकाश त्रै भेद बनाए। 'घट, मट, महांकाश द्रिशटाए।
छोटो बड उपाधि ते होइ। नाश उपाधि एक ही सोइ ॥ ३० ॥

इम साख्यातकार मैं एक। रहै, न भावाभाव बिबेक।
'तत्वंमसी,' 'अहंब्रहमासमि'। इक रस ब्रिति, न उथतै भरम[3] ॥ ३१ ॥

श्रोत्री ब्रह्म निशठी ते ग्यान। पाइ ममोखू बंधन हान।
जो काचे गुर ते लहि कोइ। किधौं ग्रंथ पठि आप होइ ॥ ३२ ॥

तिन की गति श्री नानक कही। अहं ब्रह्मासमि बोले सही[4]।
ग्यानवान की बनै न रीस[5]। हुइ कूड़नि[6] की कूरी ठीस[7] ॥ ३३ ॥

श्रीमुख वाक

नानक गुरू न चेतनी मनि आपणे सुचेत।
छुटे तिल बूआड़ जिउ सुर अंदरि खेत[8]।
खेतै अंदरि छूटिआ कहु नानक सउ नाह[9]।
फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह[10] ॥

---

1. एकता 2. एक 3. भ्रम नहीं उठता 4. बोलता तो है 5. तुलना की भावना 6. झूठे व्यक्तियों की 7. फूट जाएगी 8. वे झूठे तिलों के पौधे के समान शून्य खेत (संसार) में छोड़ दिए जाते हैं 9. इस अवस्था में उनके सैंकड़े मालिक होते हैं 10. फूलते फलते हुए भी उन बिचारों के शरीर में राख ही रहती है

चौपई

पढे ग्रंथ बन बैठे ग्यानी। नाना जुगतिनि करहिं बखानी।
'अहं ब्रह्मासमि' कहैं सुनाइ। तनहंता नहिं छुटि बलाइ ॥ ३४ ॥
तिन महिं सार न पय्यति कैसे। भसम बूआड़[1] तिलनि महिं जैसे।
किधौं ग्यान ब्रिति काची रही। थिरता भले न मन ने लही ॥ ३५ ॥
करमनि महिं निसंग हुइ बरता। बहै सु जनम मरन की सरिता।
सुनहुं खालसा! सतिगुर मत को। जिस ते जीव पाइ सदगति को ॥ ३६ ॥
बेद शासत्र को सार निकारा। हित सिक्खनि सतिगुरू उचारा।
सकल मतनि सों मिल्यो पछानो। अर सभि ते न्यारो पहिचानो ॥ ३७ ॥
जात श्रिखला अर जग लाजा। इन ते दुखि कै दारिद साजा।
निकसनि चह्यो लेनि सुख हेत। तजि कुटंब को बन्यों सुचेत ॥ ३८ ॥

कबित्त

सदन की कार होति अनिक प्रकार बहु करति करति हार जाति दुखी मन मैं।
सुनि कै सु पंथ की बडाई[2] आयो खालसे मैं, जीवका की चाह बसि रही रैन दिन मैं।
अंम्रित को पान कीन गुरबानी रिदे भीन, सिंह नाम लीन, भयो बीर धीर रन मैं।
इस लोक बिखै सुख पाइ सभि भांतिनि को सादर सों जाति है प्रलोक सुरगनि मैं ॥३९।

चौपई

दसहुं गुरनि की शरनी परे। बिबध बिधिनि ते प्रानी तरे।
गुर की सेव कि सतिसंग सेवा। करे रिझावन स्री गुरदेवा ॥ ४० ॥
कै निज घर ते प्रेम उपाइ। छादन भोजन दे समुदाइ।
यांते भी प्रसंन गुर करे। जग संकट ते सिक्ख सु तरे ॥ ४१ ॥
किधौं रहै सतिगुर के तीर। खड़ग, तुपक कै धरि धनु तीर।
लरहि जुद्ध महिं शत्रनि हते। गुरनि रिझावैं लैं करि फते[3] ॥ ४२ ॥
किधौं जंग महिं तजिकै प्रान। सतिगुर आगै बहु बलि ठानि।
किधौं भविक्खत महिं गुर हेत। लरहि मरहि मारहि रण खेत ॥ ४३ ॥
तिन को भी गुर सदगति दैहैं। जनम मरण संकट नहिं पैहै।
इत्त्यादिक कारन गन जान। जिस ते बंधन जग के हान ॥ ४४ ॥
ग्यान देनि की गति है जथा। उपदेशति है सतिगुर तथा।
सो मैं बरनौं भली प्रकार। सुनहु खालसा! सभि निरधार ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते **'गिआन निरनै प्रसंग'** बरननं नाम एक ऊन पंचासती अंशु ॥ ४९ ॥

---

1. झूठे तिलों का पोधा 2. बड़ाई 3. विजय

अंशु ५०

सिंहन उपदेश प्रसंग

दोहरा

(इशनान)

सत्रा जाम, कै जाम निस खट घटिका कै चार।
सौच शनानै सिख तनु सरिता सरु, बर वार[1] ॥ १ ॥

चौपई

(नाम)

सत्तिनाम सिमरन को लागै। पाछल रति नितप्रति जागै।
गुरबाणी पठि अरथ बिचारै। गुन संग्रह, अवगुन गन टारै ॥ २ ॥
दिनस चढे कारज जो करै। सतिनाम मुखि ते उर धरै।
निसदिन महिं नहिं कबहुं बिसारै। जिउ लोभी धन महिं मन धारै ॥ ३ ॥
लिव लग जाइ पके अभिआसा[2]। सने सने[3] तन हंता नासा।
श्रवण ग्यान महिं पुन लग जाइ। सचिदानंद ब्रह्म जिस भाइ ॥ ४ ॥
कर निरनै मन दे करि सुने। तजहि न तबि सिमरन नित भने।
मनन करहि पुन जुगति अनेक। ब्रह्म आतमा केर बिबेक ॥ ५ ॥
तबि भी नित सिमरहि सतिनाम। नहिं त्यागहिं जानहि सुख धाम।
पुनि ब्रिति चढी निध्यासन जाइ। अनंद आतमा बिखै टिकाइ ॥ ६ ॥
सजाती प्रतै बिहै प्रवाह[4]। प्रापति भयो अनंद के मांहि।
तबि भी नांहिन नाम बिसारहु। रिदै बिखै कै मुखहुं उचारहु ॥ ७ ॥
पन सक्ख्यातकार हुइ जाइ। तबि इक हुइ आपे मिट जाइ।
जब लग आपा जानहि न्यारा। नहिं अभेदता भली प्रकारा ॥ ८ ॥
तबि लौ सत्तिनाम लिव लावै। नाना बिघन होनि नहिं पावै।
शुभ गुन श्रवन मनन निद्ध्यास। इह फुलवाड़ी रही प्रकाश ॥ ९ ॥
काम क्रोध ते आदि बिकारो। इह म्रिग नाना बिधिनि हजारों।
सत्तिनाम को हरि बलि भारी। इनहुं बिनाशे बिना अवारी[5] ॥ १० ॥

---

1. साफ अथवा पवित्र जल में 2. अभ्यास 3. धीरे-धीरे 4. सजाति प्रवृत्ति का ब्रह्म में प्रवाह चल पड़ता है 5. बिना देर किए

निद्ध्यासन लग चहै सहाइ। रथी, महारथि है जिस भाइ[1]।
है अतिरथी ग्यान सक्यात। सगरे बिघन करति है शांति ॥ ११ ॥
चाह सहायक की नहिं धरै। जुति अग्यान बिकारन हरै।
सालाही सालाहहु तबि लौ[2]। सुरति न मिलहि ब्रह्म महिं जबि लौ ॥ १२ ॥
जिम नद वाह[3] समुंद्र महिं मिले। एक रूप नहिं होवति भले।
तबि लौ सत्तिनाम को सिमरन। रहहु सलाहति प्रभु को निसदिन ॥ १३ ॥
इम सतिगुर को मति पहिचान। सूखम मति ते निशचै ठानि।
एक रूप होवन लग[4] नीके। सत्तिनाम सिमरहि विच[5] जी के ॥ १४ ॥
प्रभु की भगति नहीं कबि त्यागै। साखियात लग उर अनुरागै।
सालाही सालाह[6] मझार। इह[7] आशै गुर कीन उचार ॥ १५ ॥
साखिआत पर तुक जहिं बनी। तहां भगति श्री नानक भनी।
'जो तुध भावै साई भली कार[8]। तूं सदा सलामति[9] निरंकार' ॥ १६ ॥
श्रवन मनन निद्ध्यासन पाछे। प्रभु भाणा[10] पुन मानहि आछे।
साखियात की तुक के नेरे। चार ही थान कही चहुं बेरे ॥ १७ ॥
श्रुति महिं महांवाक जिम चार। तिम जपुजी महिं चार उचार।
मिल्यो भगति सों ग्यान वखाना। कल महिं केवल नहिं शुभ जाना ॥ १८ ॥
शुभ गति तो कोई नर पावै। सुनि ब्रह्म ग्यान बिगर बहु जावैं।
यांते रूखो ग्यान न भनयो। जहिं कहिं कह्यो भगति के सनयो ॥ १९ ॥
अहंब्रह्मासमि वहिर न गावो। इह ब्रिति हियरे बिखै टिकावो।
बाहर प्रभु के दास उचारहु। संतन बिखै भाउ को धारहु ॥ २० ॥
जिउं किउ शकति महित को धरहु। त्यों त्यों छिमा अजर को जरहु।
उर महिं नभ अंगुशट प्रमान। जीवातम को बास पछान ॥ २१ ॥
बुधि महिं प्रतिबिंबति भा ब्रह्म। जड़ चेतन मिल भे इक धरम।
मन साधन संकलप करन को। अति चंचलता करहि धरन को ॥ २२ ॥
रवि के अग्र तिखरा[11] जैसे। मन सरूप सूखम लखि तैसे।
इन्द्रै-ग्यान उपावन हारो। मन ते बिना न अपर बिचारो ॥ २३ ॥
तुच के संग सपरश होई मन। पंचहुं ग्यान उपावन ततछिन।
सुखपति महिं इक नारि मझारे। नहिं सपरश तुच सों तबि धारे ॥ २४ ॥

---

1. जिस प्रकार 2. तब तक परमात्मा की सराहना करो 3. नाले 4. तक 5. में, भीतर 6. सराहना 7. इस 8. जो तुझे अच्छी लगे, वही भली करनी है 9. कायम 10. इच्छा 11. सूर्य के प्रकाश में दिखाई पड़ने वाले सूक्ष्म अंश जो उड़ते रहते हैं

लपट्यो रहिति नार के मांही। प्रापति तबहि ग्यान की नांही।
जाग्रति महिं सपरश तुच होइ। ग्यान पाइ सभि को तवि सोइ ॥ २५ ॥
सौमो भाग चीरिये बार। अस अति सूखम है इक नारि।
सुपनावसथा तिस महिं पावै। थिर नारी महिं सकल बनावै ॥ २६ ॥
सभ छित, सिंधु, धराधर भारे। सूरज, चंद, गगन, गन तारे।
शकति ब्रहमंड रचन की होइ। सूखम बिखै थूल इम जोइ ॥ २७ ॥
जिम सुपना जीवातम केरा। जो चाहै रचि लेति बडेरा[1]।
तिम ईशुर को सुपना अहै। बिधि प्रपंच जेतिक द्रिश लहै[2] ॥ २८ ॥
इस जग महिं सभि जीव दुखारे। बसि अग्यान बंध महिं भारे।
अति संकटि ते तन को तजै। अघ ते दूत सासना सजै[3] ॥ २९ ॥
नाना नरकनि कशट भुगावै। अघ फल भुगे वहिर निकसावै।
तिम ही नाना सुख को देति। करति पुंन जो रहैं सुचेत ॥ ३० ॥
पापी पुंनी दुख सुख पाइ। चंद अंस महिं पुन मिल जाइ।
तिन द्वारा अंनन माहिं आवै। चाकी[4] मूसल ते दुख पाही ॥ ३१ ॥
अगनी बिखै पकावति फेर। भोगहिं नाना कशट बडेर।
पुन प्रानी के दाड़नि मांहि। चिथि[5] बहु भांतनि ते दुख पावै ॥ ३२ ॥
उदर बिखै जठरागनि तेज। तहिं संकट लहि असन अमेज[6]।
पुन रस संग नसा महिं बसै। तन को रुधर होति दुख गसै ॥ ३३ ॥
बहुर श्रोन ते आमिख बनै। तहां पहुंचि बड[7] संकट सनै।
सने सने[8] पुन भेद मझारा। तांहि बसहि सभि रीति दुखारा ॥ ३४ ॥
असथी महिं मुशकलता[9] पाइ। इमही सपत धात महिं जाइ।
पुन बीरज के मिलिकै संग। प्रानी के उपजाइ अनंग[10] ॥ ३५ ॥
इसत्री के संजोग को पाइ। निकस लिंग ते भग महिं जाइ।
रज को रुधर बीरज लपटंति। गुलका सम ग्रभ थल थिरियंति[11] ॥ ३६ ॥
तहिं नौ मास बास को पाइ। दुख भोगै बनि सिर तरवाइ।
मिल्यो रहै मल मूत्र के संग। बनहि ब्रधहि काइआं सरबंग ॥ ३७ ॥
कशट गरभ के गिने न जाइ। जिन को सुनि रुमंच ह्वै आइ।
भग द्वारा निकसति दुख पावै। नीठ नीठ बाहर को आवै ॥ ३८ ॥
द्वार तंग तन थूल बडेरा। जंती सम[12] खैंचिय तिस बेरा।
आप दुखी, जननी दुख देति। निकसति गिरता होति अचेत ॥ ३९ ॥

---

1. बड़ा 2. दिखाई पड़ता है 3. यातनाएं सहन करता है 4. चक्की 5. चबा कर 6. भोजन में मिला हुआ 7. बड़ा 8. धीरे धीरे 9. कठिनाई 10. काम 11. स्थित होता है 12. सुनार के तार खेंचने के समान

जथा बिरण ते परहि सु कीरा[1]। तिम बाहर भा बहु दुख पीरा।
केतिक समें महिं चेतन होइ। सुध को पाइ उठति है रोइ ॥ ४० ॥
बाल अवस्था महिं दुख घने। राव रंक के इह सभि बने।
सगरे गरभ बिखै परिआवै। बाल मूड़ रोदन तपतावैं ॥ ४१ ॥
कशट होति नहिं जाति बतायो। सदा अशुचि डहिकति[2] डरपायो[3]।
रहै अशकति क्रिया नहिं होइ। जाचहि चंद कहां दे कोइ[4] ॥ ४२ ॥
इत्यादिक संकट गन पाई। भयो तरुन तरुनी चित लाइ।
बधे बिकार अनेक प्रकारा। शत्रु मित्र करि बंध अखारा ॥ ४३ ॥
चह्यो पदारथ हाथ न आइ। जो प्रापति सो नहिं खुस जाइ।
जित कित धन को लैबे हेत। जतन करति बल बुद्धि समेत ॥ ४४ ॥
त्रिपति होनि लग प्रापति नांही। बोलै कूर[5], न धरम रखाही।
भयो ब्रिद्ध निरबल तन रहियो। जीरण अधिक जरजरी लहियो ॥ ४५ ॥
खांसी आदि ब्याधि हुइ ब्रिंद। अपमानत परवार बिलंद[6]।
संकट अधिक पाइ मरि रहै। जीव गती जिम, क्या करि कहैं ॥ ४६ ॥
लेशमात्र दुख बरनन करे। सरब जि कहैं ग्रंथ इक भरे।
जनम करोरहु धरि धरि मरियो। किसी शरीर बिखै नहिं थिरियो ॥ ४७ ॥
जनम असंख भविक्खति लहै। दुख सुख कूर भोग मरि रहै।
बिन सतिगुर की शरनी परे। कोइ न बंद खलासी करे ॥ ४८ ॥
भूर भाग ते भाउ भगति लहि। बनहि सिक्ख गुरचन शरन रहि।
तन करि मन करि धन करि सेवा। छल बिन ह्वै रिझाइ गुरदेवा ॥ ४९ ॥
ले उपदेश कमावै मन ते। सेवा करहि सरब ही तन ते।
तौ इस को होवति छुटकारा। करम बंध तजि बनहि सुखारा ॥ ५० ॥
नांहि त वह्यो फिरति ब्रिलपावति[8]। जग समुंद्र के पार न पावति।
दइआ सिंह उपदेश बतायो। सुनति खालसे धरि सुख पायो ॥ ५१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते **'सिंहन उपदेश'** बरननं नाम पंचासती अंशु ॥ ५० ॥

---

1. जिस प्रकार फोड़े से कीड़ा गिर पड़ता है 2. घबराता है 3. डरता है 4. कोई कहाँ से लाकर दे 5. झूठ 6. बड़ा ऊँचा 7. झूठ 8. व्यर्थ में रोता फिरता है

अंशु ५१

कवीयनि के कबित्त प्रसंग

दोहरा

अबि आगे बरनन करौं कवि जि रहैं गुर पास ।
सुजस[1] कबित्तन महिं कर्‌यो लेति भए धन रास ।। १ ।।

चौपई

धन अरथी धन गन को पायो । निज बुधि करि गुरदेव रिझायो ।
अपर पदारथ जिन किनि चाहा । दसम गुरू ते लीनस पाहा[2] ।। २ ।।
महां उदार मुकति ली देति । चहुं दिश ते कवि त्यागि निकेत ।
आनि अनंदपुरि कीनसि बासा । सुत बित आदि पाइ सुख रासा ।। ३ ।।
जे निशकाम मुकति ही दई । कितिक संपदा अरु गति लई ।
चारहुं चक्कनि[3] गुरजस फैला । मनहुं चंद उज्जल बिन मैला ।। ४ ।।
केतिक कवीयनि केर कबित्त । लिखौं सुनावनि के हित मित्त !
गुर सिखनि के हेत रिझावनि । अर प्रभु लोगनि जिन मन पावन ।। ५ ।।
श्री कलगीधर की बर कथा । कथों जथामति सुनीयहि तथा ।
अदभुति करे चरित गुन खानी । कहे जिनहुं भई पावन बानी ।। ६ ।।
गुर की दात[4] बीरता भारी । बीच कबित्तनि जथा उचारी ।
अबि सो लिखौं कविनि कहि जैसी । सुनहुं खालसा ! उपमा तैसी ।। ७ ।।

कबित्त

अवध अनाए[5] कहां, तिलक बनाए कहां, द्वारका छपाए कहां तन ताईयति है ?
कोविद[6] कहाए कहां, बेनी के मुंडाए कहां काशी के बसाए कहां लाहा लखीयति है ?
मोहन मनाए कहाँ, भूपति रिझाए कहां, कहां हंसराम[7] जो धरा मैं धाईयति है ?
चारहूं बरन तांके हरनि कलेश गुर गोबिंद के चरन मुकति पाईयति है ।। ८ ।।

---

1. गुरु जी का यश 2. प्राप्त कर लिया 3. चारों दिशाओं में 4. दी हुई वस्तु 5. आ कर स्नान करने से 6. पंडित 7. कवि का नाम

जहां दिनकर को प्रताप दिनमान नांही[1], जहां न दिलेश को प्रताप छाईयति है ।
जहां न कलानिधि की कला की किरन एक, जहां म्रिग राजन के रथ धाईयति है[2] ।
जहां सुरपति की न गति, रतिपत्ति की न मति, कहां धौल पतिहूं[3] मैं पाईयति है ।
जहां श्रुति सिम्रति सुनी न श्रोन सुपने हूं, तहां गुरू गोबिंद को जस गाईयति है ॥ ९ ॥

सवैया

कौन बनारसी बास करै जहिं बाशक नाग हीये मैं लसै ।
औध को औसर[4] नाथ भइओ रघुनाथ के पाइ न पाप नसै[5] ।
करि मुंडन कौन सितासित[6] में जहिं देखिकै लोकरु देव हसैं ।
इम तेग बहादर नंद जगे, किन गोबिंद राइ गुरू दरसै ? ॥ १० ॥

कबित्त

चारों चक्क सेवैं गुरू गोबिंद तिहारे पाइ, मेरे जानै आज तूंही दूजो करतार है ।
प्रबल प्रचंड खंड खंड महिमंडल महिं, साचो पातशाहु, जांको साचो सिर भार है ।
कामना के दान बान जांकी, हंसराम कहैं, परम धरम देखै बिबध विचार है ।
परम उदार, पर पीर को हरनहार, कौन जानै कउनै भांति लीनो अवतार है ॥ ११ ॥

अथ शिकार बरननं

कबित्त

बेश बेसरा[7] है गुरू गोबिंद की सरकार, जांकी दहिशत[8] गिरे कुहन के घर हैं ।
जांकी दहिशत बर बाजन बर न धरैं, जांकि दहिशति छुटे बहिरी[9] के बर हैं ।
जांकी दहिशत चारा चुगति न चक्क्रवाक, जांकी दहिशत शारदूल सुरत रहै[10] ।
सगरे जहान के बिहंग जिन भंग कीने, कोप सुनि आवति कुलंग[11] पाइ तर हैं[12] ॥ १२॥
गरुर गरूर[13] तजूयो, बाज़ सभि बाज़[14] आए, ज़ोरावर जुर्रा[15] जानि ज़ेर[16] आन है भए ।
हाथ गुरू गोबिंद के बेसरा सिधायो मानो छूट्यो लखि लाखन बिहंग लीन ह्वै गए ।
चरन चपेट, चिच चोभते चिमिट चपि मार्‌यो कुलमुरग, कलोल जीअ मैं भए ।
तांही खिन तीखे तेज़ तरल तुरंग केते मौज सों मंगाइ मोल महां बाहु तैं दए[17] ॥ १३ ॥

---

1. दिन वार की गिनती नहीं है 2. जहां शेरों के झुंड दौड़ते हैं 3. शिव जी 4. अवसर विशेष पर 5. नष्ट नहीं होते 6. सफेद और काला, अर्थात् जहाँ गंगा और यमुना का मिलन होता है, भाव प्रमाण 7. बेसरा (एक प्रकार का शिकार पक्षी) बहुत बढ़िया है 8. भय से 9. एक शिकारी पक्षी 10. शेरों की सुरति रह जाती है 11. सारस 12. पैरों में आ जाते हैं 13. अहंकार 14. रुक गए 15. बेसरा पक्षी 16. अधीन 17. तुमने दिए

सैलहिं दबति, ऐल परति अलंक[1] परि खैल भैल खलक खलन[2] घर बार है ।
कानन कुरंक. बाचे मद के मतंग, कहूं बाघन, बिहंग, ब्रिक, बानर कहां रहैं ।
झांख रोझ, रीछ, घर झाखर, बराहनि के, दाहनि दरत देवि बाहन सु मार हैं ।
परन पुकार अरि छोडे घर बार भाजे, सो तो गुरु गोबिंद की सहिज शिकार हैं ।।१४ ।।

सवैया

साज शिगार चढे गुर गोबिंद पब्यन श्रिग पिसान[3] भए नित ।
लंक अतंक पुकार परी, पुरि शंक बिभीखन रंक भयो तित ।
टूटि फनी फन, हूटिगे दिग्गज, धीरज धौल की जाइ रही कित ।
कच्छप कोल[4] बिहाल भए सभि, चाल परे चतुरंग चमूं चित ।। १५ ।।

दान के कबित्त

एक संग पढे अवंतका संदीपन के, सोई सुध आई तो बुलाइ बूझी बामा मैं[5] ।
पुंगीफल होति तौ असीस देतो नाथ जी को, तंदुल ले दीजै बांध लीजै फटे जामा[6] मैं ।
दीन दुआर सुनिकै दयालदरबार मिले एतो कुछ दीनो पाई अगनत सामा[7] मैं ।
प्रीति करि जाने गुर गोबिंद कै माने, तांते वहै तूं गोबिंद वहै बामन सुदामा मैं ।।१६।।

भ्रिगूनंद दान दीन, तांके ही अछत छीन, जाचति फिरति दीन दिग्जन को गोत है ।
रामचंद अनंद संदोह असुमेध बिखै पायो दान, खायो पूत पोते नाती पोत है ।
पंड पूत, सूर सुत, आदि जे संतोखसिंह दीनो जिन दान पुन छीनता उदोति है ।
श्रीगुरू गोबिंदसिंह दान दीनो को न सम, दिन दिन दूनो दूनो चौनो चौनो होति है ।।१७।।
अरब अराकवै[8] द्वै नाब[9] रकाब वारे, बारे बडे डील पील सैनक हैं कूत के[10] ।
चपला से चपल, चलाक चहूं पाइ पूरे, पौन गौन, पल कौ सके न दिन दूत के ।
मन के हरन, मन मीन के दरन, जिनै चाहन की चाह पातशाहन के पूति के ।
बखशे तिहारे गुर गोबिंद जी ऐसे है बिरथ[11] हैं, न जाइ पाइ गए पुरहूत के ।। १८ ।।
पारथ समान महांभारथ मचायो तहां खायो मासहारनी अहार जेतो खाइगो ।
मंदर से मोकल[12] गइंदनि की गरजनि धौंसा की धुंकार धरासीस अकुलाइगो ।
ऐसो कीनो समर अमरलोक सुनियति तेरो ही बखान खानपान सो भुलाइगो ।
मारिकै मदान अरि डारे गुर गोबिंद के काल कला फेर कोऊ कालहि सुहाइगो[13] ।।१९।।

---

1. आकाश में शोर पड़ जाता है 2. प्रजा में और दुष्टों में 3. पीस देते 4. शूकर 5. स्त्री को बुला कर पूछा 6. वस्त्र में 7. सामान 8. इराक के 9. दुर्लभ 10. सूर्य के घोड़े इनके सामने तुच्छ हैं 11. विशेष सवारी के घोड़े 12. निकल कर 13. फिर जीवित कर सके

महां बाहु बीर गुर गोबिंद तिहारे त्रास बैरिनि की सैना बन बन बिचरति है ।
गहि करवार[1] काढि काटिकै दुजन दल जोगि जुरे जोगनि जमात[2] बिहरति है ।
सैहथिनि[3] हने रिपु हाथनि के घाइन ते रुद्ध्र धार ऐसी बही आस न धरति है ।
आग लागे धूम भए घरनि अकार सम मानहु झरोखनि झरप्पिन करति है ।। २० ।।
दिश दिश देश देश एश दिगपाल केते आज करे काल केते गुनहि गहति हैं[4] ।
प्रबल प्रतापी पातशाह साजे सुनीअति तेरे सिर भार भू को सारदा कहित है ।
ओजन के सूर महां मौजन सों घेर मार और न बिचार कीजै दारिद दहति हैं ।
हरि मांगे बर देति मांग गुर गोबिंद को करतार मांगे करतार दे रहति हैं ।। २१ ।।
जौनै देश जयटति नरेशनि के पास तहां, ठौर ठौर तुमरो ही जस गाईयति है ।
पाइ गहे तेरे पाइ गहे पाईयति, कहूं और जाइ गरज़ाइ ग़री पाईयति है ।
ऐसे गुर गोबिंद की सुकबि शरन्न ताको पूरन प्रताप जांको जग्ग छाईयति है ।
राज़ी हूजीयति गाजीयति[5] जांके दरबार घर बाजी बांध बाजी लैनि आईयति है ।।२२।।

सवैया

श्री गुर गोबिंद खग्ग गह्यो अरि फौजनिके इभ सैल बिभैलहि[6] ।
सोंग संभारि दई गज सीस, असीस दई हरि घूमति गैलहि[7] ।
घाइन ते भभकै निज श्रोन फुहारनि लौ उपमा छवि फैलहि ।
दो भुज हेल मनो हनुमान हिलावति जानि सजीवनि सैलहि[8] ।। २३ ।।

कबित्त

महांबाहु बिरच बनैति[9] गुर गोबिंद जी अरि गज मारि डारे मानो दरखत[10] हैं ।
भैरों औ बिताल भूत करति बिहार तहां हार करिवे को मुखीपंच परखति हैं[11] ।
लहू कीच भरे गज मोती लै गगन गीध गरजे अगन देखे हर हरखति हैं ।
धोखे न भखति, छूटि धरन लखति मनो बिथरे ह्वै बादर नखत बरखति हैं[12] ।। २४ ।।

छपय छंद

डुल्लति अपर नरेश पत्ति हत्थहि जिम हल्लै[13] ।
सूखति साइर सलल, संक धूअ धाम नचल्लै[14] ।
खलक खैल खलभलति भैल[15] भगहि तिलोक महिं ।
पलक पेल गढि लेनि हेत हुंकति[16] सु जंग महिं ।
कहि हंसराम सति सिमरकै सकुच रहति दिगपाल तबि ।
धसमसति[17] धरन दल भार ते सो बिरचराइ गोबिंद जबि ।। २५ ।।

---

1. तलवार 2. समूह 3. भाला, बरछा 4. ग्रहण करते हैं 5. गरजा जाता है 6. हाथी को द्वार की ओर प्रेरा 7. रास्ता बदल लिया 8. पर्वत को 9. शस्त्रबद्ध होकर विचरण कर रहे हैं 10. वृक्ष 11. शिव जी परखते हैं 12. बादलों से तारे बरस रहे हैं 13. जिस प्रकार हाथ में पकड़ा पत्ता हिलता है 14. डावाँडोल होता है 15. भय युक्त होकर 16. हुंकार करने से 17. नीचे दबने लग जाती है

कबित्त

बाजति निशान के दिशान भूप भहिरति, हालाडोल[1] परति कुबेर हूं के घर मैं ।
होति है अतंक शंक लंक हूं मैं मानीयति, रंक ह्वै बिभीखन सो डोलति डहर[2] मैं ।
भूमैं गुरगोबिंद सों भूपति कहित ठांढे, भू मैं हमैं राख जो तुहारे आवै धरमैं[3] ।
अरिनि की रानी, बिललानी चहैं पानी, तेवै मोतिन की माल लै, निचोवती
अधर मैं ।। २६ ।।

शोभा हूं के सागर नवल नेह नागर हैं, बलि भीम सम, शील कहां लौ गिनाईए ।
भूम के बिभूखन, जु दूखन के दूखन, समूह सुख हुं के, मुख देखे ते अघाईऐ ।
हिंमत निधान, आन दान को बखाने जाने, आलम तमाम[4] जाम आठं गुन गाईऐ ।
प्रबल प्रतापी पातिशाहु गुरू गोबिंद जी ! भोज की सी मौज तेरे रोज रोज[5] पाईऐ ।।२७।।
शील रस साइर, रजीलो[6] रण रंग धीर, जंग जुरे जैतवार[7] करनी कुबेर की ।
कहै कबि कौन, तेज तरनिलो तपे तुअंग[8] पारावार लगि फैली जीत शमशेर[9] की ।
कर रण रोस खल खंडनि कटक कूट[10], दुज्जन दरेर जग जीत, ज़िमी जेर की ।
तेग त्रास साचो गुर गोबिंद जू तेरो जस जगर मगर[11] भए शोभा गई मेरु की ।। २८ ।।
दुँदभि धुंकारे बाजे, मानो जलधर गाजे, राजति निशान भय भानु छिपे जाति हैं ।
हाथिनि के हलका हज़ारनि, गने को हय, जटति जवाहर जो जगमग गात हैं ।
कोर साजे जोर कर, नालन[12] को शोर सुनो, संकति सुरेश औ नरेश बिलखाति हैं ।
हंसराम कहित बिराजो जिन भाजो[13], गुरगोबिंद को मांगे कविराज चले जाति है ।।२९।।
साधन को सिद्ध शरणागत, समरसिंधु, सुधाधर सुंदर सरस पद पायो है ।
कुल को कलस, कवि कामना को कामतरु, कोप कीए काल, कवीयनि गुन गायो है ।
देवनि मैं, दानव मैं, मानव, मुनिनिहुं मैं जांको जस ज़ाहर जहान चलि आयो है ।
तेग़ साचो देग़ साचो, सूरमा शरन साचो, साचो पातशाहु गुरू गोबिंद कहायो है ।।३०।।

कबित्त

बेदिन महिं शाम सुनो, सिंधु मरजादा, मेरु मंडल मही मैं, गुरिआई[14] गुन गाए हो ।
शरम के सागर, सपूतनि के सिरमौर, सुंदर सुधाधर से सुंदर गनाए हो ।
रचन में दान बानि बानी हरी चंद की सी, बिदत बिनय[15] बडे बंस चलिआए हो ।
तेज को तरनि, तरवार को परसराम, गुरनि महिं ऐसे गुरू गोबिंद कहाए हो ।। ३१ ।।

---

1. हल-चल 2. बन, जंगल 3. धर्म बनता है तुम्हारा 4. समस्त संसार 5. नित्य 6. मरदानगी, वीरता 7. विजय प्राप्त करने वाले 8. ऊपर को 9. कृपाण 10. कपटी पहाड़ी राजागण 11. जगमगा रहा है 12. घोड़ों के बाल 13. भागो नहीं, ठहरो 14. गुरु पद 15. नम्रता

सुंदर अनंग, किधों चपल कुरंग सम, गरुर के संग चलि आगे ही को चेत है[1]।
पवन को पाछे करि, मन को गवन हरि, दौर मैं पलक मांहि फांध जाहि सेत है।
रवि रथ चढति उतर जाति यांही लीए मेरे एक, ए अनेक साजन समेत हैं।
ऐसे बाजी देखीऐ नां कहूं तीन भवन मैं, कविनि को जैसे गुरूगोबिंद जी देति है ॥ ३२॥

सवैया

हूरनि को नर सूर मिले बर, चौसठ जोगनि सैन अघाई।
देति असीस सबै मिलि जंबुक, गीधनि ते रणभूम सुहाई।
छाडि सुहाग लीए बिधवा इक बैरन की तिय को दुखताई।
खग्ग गहे गुर गोबिंद केहरि नारद के घर होति वधाई ॥ ३३ ॥

कबित्त

आवति न तीर तीर[2], मान न कमान करे, गोलन की गूंद दूंद बूंद मनो बार है[3]।
छीन[4] बरछीन लेय, सैहथी है को टिक, कटारन को बीर अति बैठी बरदार है[5]।
छुरी न छुहति, गुरजन हूंकी गुरजन[6], बर तबरनि को निवारती निहार है।
सैना अरि घा कीए, कहां कहूं सूहा[7] की गुरू गोबिंद के कर ऐसी वांकी तरवार है ॥३४॥
निकसति म्यान ते ही छटा घन म्यान तै ही, काल जीह[8] लहि लहि होइ रही हलिहलि[9] ॥
लागै अरि गर, गेरै धर पर धर सिर, धरति न धीर चारों चकि परै चलि चलि[10]।
कौन रहै ठांढो श्री गुबिंद सिंह ! आप आगे जल थल उथल पुथल होइ थलि थलि।
भाजै बिन देर, नेर करैं न संतोखसिंह, हेरि शमशेर समशेर तेरी पल पल ॥ ३५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते '**कवीयनि के कबित्त प्रसंग**' बरननं नाम एक पंचासती अंशु ॥ ५१ ॥

---

1. गरुड़ की अपेक्षा आप (के घोड़ों) की गति तेज़ है 2. समीप 3. जंग में गोलों की बौछाड़ मानो पानी की बूंदें हैं 4. छीन लेती है 5. झड़पने के लिए तैयार बैठे हैं 6. महत्त्व नहीं रहता 7. सफा कर दी है 8. जिह्वा 9. हिल हिल कर 10. चारों ओर इतवत मत्र जाती है

अंशु ५२

गुर महिमा कबित्त प्रसंग

दोहरा

बावन कवी हजूर गुर रहित सदा ही पास।
आवैं जाहिं अनेक ही, कहि जस, लें धन रास ॥ १ ॥
तिन कवीअनि बानी रची लिखि कागद तुलवाइ।
नौ मण होए तोल महिं सूखम लिखत लिखाइ ॥ २ ॥
'विद्याधर' तिस ग्रंथ को नाम धर्यो करि प्रीत।
नाना बिधि कविता रची रखि रखि नौ रस रीति ॥ ३ ॥
मच्यो जंग गुर संग बड रह्यो ग्रंथ सो बीच।
निकसे आनंद पुरि तज्यो लूट्यो पुन मिलि नीच ॥ ४ ॥
प्रथक प्रथक पत्रे हुते लुट्यो सु ग्रंथ बखेर।
इक थल रह्यो न, इम गयो जिस ते मिल्यो न फेर ॥ ५ ॥
वाहठ पत्रे कहुं ते रहे अनंदपुरि मांहि।
तिन ते लिखे कबित्त इहु गुरजसु बरन्यो जांहि ॥ ६ ॥
कितिक लिखौं आगे अवर सुनि श्रोता चित लाइ।
गुरजस ते उचटहु नहीं, चतुर पदारथ दाइ ॥ ७ ॥

कबित्त

अनंद[1] दा वाजा नित वज्जदा अनदपुरि, सुणि सुणि सुधि भुल्लदीए नरनाह दी[2]।
भौ[3] भया बिभीछणे नूं[4] लंकागढ़ वस्सणे दा[5], फेर असवारी आंवदी[6] ए महांबाहु दी[7]।
बल छड[8] बलि जाइ छपिआ पताल बिच[9], फते दी[10] निशानी जैंदे[11] द्वार दरगाह दी।
सवण न देंदी सुख दुज्जणा नूं[12] रात दिन नौबत गोबिंद सिंह गुरू पातशाह दी ॥ ८ ॥

---

1 आनन्द का 2. राजाओं की सुधि समाप्त हो जाती है 3. भय 4. को 5. बसने का 6. आती है 7. की 8. छोड़ कर 9. में 10. विजय की 11. जिसके 12. दुर्जनों को सुख से सोने नहीं देती

ऊपर नरेश हूं की, हहिं शुभ वेश हूंकी, काशमीर देश हूं की भरी आन धामरी[1]।
बुनी कारीगर भारी, करी खूब गुलकारी पहिरें भिखारी, मोल पावैं लाख दामरी।
सीत हूंको जीत लेति, ऐसी शोभा देह देति मंगल सुकबि ज्यों कन्हयाजी को कामरी।
श्याम, सेत, पीरी, लाल, ज़रद, सबज़ रंग गुरू जी गोबिंद ऐसी देति मौज पामरी[2] ॥९॥
चढति ही बाजी, चढ्यो गाढे गढ चाहबे को, दाहिबे को दुःख रीझे बरज्यों भवानी[3]को।
आवति ही दाढी, छाती दाढी[4] छित पालनि की रज के कय्या[5] उन ही की रजधानीको।
महांबाहु गुरू जी गोबिंद सिंह पारथ जिउं भारथ को जीत लेति बसुधा बिरानी को।
पाग हूं को बांधबो कछुक दिन पाछे सीख्यो पहिले ही सु सीख्यो सिंह बांधिबो
क्रिपानी को ॥ १० ॥
जाचे ध्रू पायो है अमरपद सुरलोक, नामा जू के जाचे दीओ देहुरा फिराइ जी।
बिपदा मैं लंका दीनी जाचे ते बिभीखन को, मंगल सु कबि जाचौं मंगल सुनाइ जी।
द्रोपती नगन होति जाच्यो सभा मांहि ठांढो, अवर लौ अंबर मही पै रहो छाइ जी।
ऐसो दान दैबो कौन कोऊ सतिगुरू बिनां और कउ न जाचीए बिनां गोबिंद राइजी ॥११॥
असुर बिदारिबे को, सुरपति पारिबे को, भगत उधारिबे को मुकति की जरी[7] है।
अरि दल भंजिबे को, गाढ़े गड़ गंजिबे को, सभि सुख संजिबे को, महां सुख भरी है।
करति कलोल, गुर गोबिंद के कर मांहि, चक्क्र साथ हूं ते मारिबे की बिधि परी है।
फते की निशानी यहि, पूरब जनम हूं की, तबि हुती गदा, अबि श्यामरंग छरी है ॥१२॥
कुंज कुंज गलिनि, बजाई बन बांसरी सी, उनही के संग सोई, सारदा[8] कहति है।
जमना के तट बंसी बट के निकट सोई तट सतुद्रव आनि साहिबी करति है।
देखो भूप भूपनि के भूम के भगत लोगो भाग या छरी के मो सो कहिबे बनति हैं।
कान्ह ह्वै कै औतर्‍यो[9] तो मुख ही रहति लागी, गोबिंद ह्वै औतरयो तो हाथ ही
रहित है ॥ १३ ॥

कबित्त

पूरन पुरख अवतार आनि लीनि आप, जांके दरबार मन चितवै सो पाइए।
घटि घटि वासी, अविनाशी नाम जांको जग, करता करनहार सोई दिखराईए।
नौमे गुर नंद जग बंद, तेग त्याग पूरे मंगल सु कबि कहि मंगल सुथाईए[10]।
आनंद को दाता गुरू साहिब गोबिंद राइ, चाहै जो अनंद तौ अनंदपुरि आईए ॥१४॥

कबित्त

दिज्जन के दल, जोगी जंगम जमात द्वार, बंदी जन कितक हैं, जगत मैं जांहि की।
शुभा शुभ[11] लेति देति, लच्छन को लच्छ रोज देखिदेखि सुधि भूल जाति सुर नाहिकी।

---

1. घर को 2. दुपट्टा 3. शिवजी 4. जला दी 5. मिट्टी के समान कर दिया 6. वैरियों की धरती को 7. जड़ी बूटी 8. कवि का नाम 9. अवतरित हुए 10. यह स्थान 11. शुभ शोभा

गोबिंद गुरू को दान मालम जहान भयो, भिच्छक कीए हैं भूप, परवाह न काहि की ।
बलि, बैन, बिक्क्रम न भोज हूं मैं मौज ऐसी, जाकी एक मौज नवरोज[1] पातशाहि की।।१५।

कबित्त

रावन ते छीनि दई बखश विभीखण को, बावन ह्वै बांध्यो बलि जबि तुम चाही है।
कबि चारमुख[2] रच्यो, थंभ बीच नरसिंह, प्रहिलाद जू की पैज, पूरन निबाही है ।
गुरू जी गुबिंद राइ, चाहो तुम सोई करो, बूझि देखो वेद इस बात को उगाही है[3] ।
और पातशाही सभि लोगनि को पातशाहु, पातशाहों पर साची तेरी पातशाही है ।।१६।।

कबित्त

भावै[4] जाइ तीरथ, भ्रमति सेतु बंद हूं लौ, भावैं जाइ कंदरा मैं कंद मूल खाईए ।
भावैं देहि द्वारका दगध करे छापे लाइ भावैं काशी मांहि जाइ, जुग्ग लौ बसाईए ।
भावैं पूजो देहुरे दिवाले सभि जग्ग हूके, भावैं खट दरशन के भेख मैं फिराईए ।
जौ तूं चाहें मनसा को मंगल तुरत फल गोबिंद गुरू की एक मौज हूं मैं पाईए ।।१७ ।।
समुंदर दे वार पार, विच[5] मही मंडल दे, जैंदा[6] जस देश देश सभ्भे लोक गांवदे[7] ।
सेंवदे भिखारी सेई होंदे नी हज़ारी हुण[8], वारी वारी पढिके कबित्त नी सुनांवदे[9] ।
चारों ही बरन खट दरशन जैंदे[10] द्वार 'मंगल सु कबि' मन इच्छा फल पांवदे[11] ।
वेखीं वल वांगू[12] कोई छली गुरू गोबिंद जी इक लै लै जांदे[13] इक लेवणे नू आंवदे[14]।।१८।।
तो सो बैर बांधि बैरी धीर न धरति कहुं, धौंसा की धुंकार धराधर धसकत्ति हैं ।
दल के चलति महि हालति, हलति कोल[15], कूरम कहल्ल[16], फनीफनि न शकत्ति हैं ।
प्रबल प्रतापी पातिशाहु गुरू गोबिंद जी तेरे भयभीत भारी भूप ससकति हैं ।
होति भूमचाल, दिगपाल पाइमाल[17] होति, हलके हहल्ल[18] हाथी माथे मसकति हैं ।।१९।।

कबित्त

महांबाहु बीर गुरू गोबिंद तिहारे रोस, बैरिनि की बधू बन बन बिलखानी हैं[19] ।
करो न गवन भूल भवन के भीतर ते चढती पहार निराधार अकुलानी[20] हैं ।
सुंदर सरोजमुखी दुखी भई भुक्ख प्यास, पतिनि सों खीझें कहें, मोतन महिं पानी है ।
चंद सी चकोर जानैं, बिंब से सूआ कै मानैं, कोकल सी काक, नाग मोरन की
मानी हैं ।। २० ।।

---

1. वर्ष के नए दिन को 2. ब्रह्मा 3. साक्षी 4. भले ही, चाहे 5. में 6. जिसका 7. गाते हैं 8. अब हज़ार-पति हो गए हैं 9. सुनाते हैं 10. जिसके 11. पाते हैं 12. के समान 13. जाते हैं 14. लेने के लिए आते हैं 15. शूकर 16. घबराता है 17. दु:खी 18. डरे हुए 19. दु:खी हैं 20. व्याकुल होकर

जिनको प्रताप परि पूरन पुहमि परि सोऊ तेरे चरन को करति बखान हैं।
जिनै चाह चक्कवै चकित होति हंसराम तेऊ तेरे चाहिबे के धारति धिआन हैं।
जिन को त्रिजय पारावार पार देखीयति प्रबल प्रचंड सुने ज़ाहर जहान हैं।
जिनकी न दरबार पायति महीनिक लौ, तेऊ तेरे दरबार देखे दरवान हैं ।। २१ ।।

कबित्त

करन से दाता हों, बिधाता मही मंडल के, बैरी के बिहंडनि, प्रचंड, भूअ भार को[1]।
पुरख पुरान से पुरानन में गाईयति साचो गुर गोबिद अधार निराधार को।
जौन तेरी कीरति जगातो जंबू दीप कै कै[2], पसरे उजागे परसति पारावार को।
गुरनि के बंस चलि आई हंस राम सदा, गुनी सों उदार, तोरादार तरवार को ।।२२।।

कबित्त

सतिजुग प्रबल प्रगट परसराम ह्वै कै, छेक छाडे छत्री कर काहूं अत्र ना धर्यो[3]।
त्रेतै रघुनाथ ह्वै कै रावन सनाथ कीनो, गीधन खुवायो मास लंकपति जो लर्यो।
द्वापर कन्हाइ बनि बांसरी बजाई सुनि, सुरि मुनि नर काहूं धीर न तवै कर्यो।
कलजुग तारिबे को साधन के पारिबेको, सुंदर सरूप गुरू गोबिंद ह्वै अवतर्यो ।। २३ ।।

सवैया

गौरि दुरावति गोद गनेशहि अंग विभूत महेश भलै नित।
शोर परे दिगपालन के भुवपालन के मनमांहि नहीं थित।
द्वार मुंदे पुरि शत्रुनि के गुर गोबिद ख्याल ही खग्ग गहे इति।
हाथी न साथी संभार सकै कोऊ चाल परे चतुरंग चमूं चित ।। २४ ।।

छपय

वनटूटति, गिर फटति, छुटति धीरज सु धरन तन[4]।
दिग्गज दिग कलमलति, हलति तल शेखनाग मन।
उडिय रेन हय खुरनि सूर बर कहूं लुक्क गिय।
बिभीछन भहिरतिमूंदि गड़ द्वार दुरति भय[5]।
कर गहि क्रिपाण गोबिंद गुर जबि सलोह पखर सजति[6]।
कलमलति हरति पुर चक्कवै[7] सुघरन छाड घरते भजति ।। २५ ।।

---

1. भूमि के भार को उतारने के लिए 2. दीपक बना बना कर 3. किसी ने आगे से शस्त्र धारण नहीं किए 4. धरती से शरीर धारण करने वालों के 5. भयभीत होकर छुप जाता है 6. जब घोड़े की जीन पर आकर बैठते हैं 7. चक्रधारी राजा-गण

कबित्त

सतिजुग बावन सरूप ह्वै न उपजति, 'बलि' कर जग्य सुर पुरि दैंत बासते ।
भनति संतोखसिंह ह्वेते जे न रामचंद, रावन को राज रहे कोऊ न बिनाशते ।
द्वापुरि मैं श्यामघन होते न करति कौन, दोखीन को दुख, सुख संतन के वासते ?
तैसे कली काल माहिं गुरू रूप होवति न, कौन हिंदवानो राखि ध्रम के प्रकाशते ।।२६।।
छाइ जाती एकता, अनेकता बिलाइ जाती, होवती कुचीलता किताबनि कुरान की ।
पाप ही प्र१क जाते, धरम धसक जाते, बरन गरक्क जाते सहित बिधान[1] की ।
देवी देव देहुरे संतोख सिंह दूर होते, रीति मिट जाती कथा बेदनि पुरान की ।
श्री गुरू गुबिंदसिंह पावन परम सूर, मूरति न होती जउपै करुणा निधान की ।। २७ ।।
राम छत्रि बंध पर[2], राम दसकंध पर, राम[3] जरासिंध पर, त्वैं ज्यों नरसिंह हैं ।
रुद्र जिउं मार[4] पर, बैंनतेय मार पर[5], पौन दीपमार[6] पर, मार[7] पर सिंह है ।
सूर तम ब्रिंद पर, सूर रण दुंद पर, सूर[8] दित्ती नंद पर, दूजे[9] नरसिंह है ।
काल सरबस पर, दाव बन बंस पर, त्यों मलेछबंस पर श्री गुबिंद सिंह है ।। २८ ।।

दोहरा

श्री गुर दसहुं सरूप की महिमा महां महान ।
कहति जथा मति जे सु कवि पठति सुनति दुख हानि ।। २९ ।।
सीप न सिंध उलीचीए, रज कन गिने न जाहिं ।
श्री गुर गोबिंद सिंह की महिमां पार न पाहि ।। ३० ।।
बांछति सुख परलोक जे शुभ गन सुनि लें धारि ।
तिन प्रसंन हित गुर कथा मैं बरनी बिसतार ।। ३१ ।।
महिख, कोल[10], खर, स्वान मिलि चहैं मलिन करि गंग ।
तिम बादी गुर कथा को चलै न बस कुछ संग ।। ३२ ।।
पर गुन नहीं सराहिते, अपने महिं गुन नांहि ।
इहां तपे चित दुख लहैं, मरहिं नरक महिं पाहिं ।। ३३ ।।
रुत पूरन अबि पंचमी कवि संतोख सिंह कीनि ।
गुर जस कविनि कबित्त इह[11] खोजि खोजि लिखि दीनि ।। ३४ ।।
पठहु सुनहु शरधा धरहु, हरहु भरम, करि प्रेम ।
परहु सुमग, सिमरन करहु, लहहु सुगम ही छेम ।। ३५ ।।

---

1. विधियों सहित 2. क्षत्रियों को मारने के लिए 3. बलराम 4. काम 5. गरुड़ सांपों पर 6. दीपमाला 7. शिकार 8. वराह 9. दूसरे, भाव हिरण्यकशिपु 10. शूकर 11. यह

सभिनि संग मम बंदना सुनहुं क्रोध नहिं धारि ।
जहां भूल मोते परी पठीअहि आप सुधारि ॥ ३६ ॥
गिरा[1] करनि अपनी सफल जुग लोकनि सुख हेत ।
गुरू कथा बरनन करी चार पदारथ देति ॥ ३७ ॥
जीवति जग महिं सुख दए, वांछति प्रापति कीनि ।
रिदै भरोस प्रलोक को, होइं सहाइ प्रबीन ॥ ३८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रुते गुर जस कवि संतोख सिंह बिरचतयां भाखायां '**गुर महिमा कबित प्रसंग**' नाम दुइ पंचासती अंशु ॥ ५२ ॥

पंजवीं रुत समापत हुई

1. वाणी

संज्ञा कोश

अजीत सिंह : गुरु गोविंद सिंह का सबसे बड़ा सुपुत्र, जिसका जन्म श्रीमती सुंदरी के गर्भ से सं० 1743 वि० में हुआ था।

अनंदपुर : ज़िला होशियारपुर का एक प्रसिद्ध नगर जिसकी स्थापना सिखों के नवम गुरु तेग बहादुर ने सं० 1723 वि० में की थी और जहाँ दशम गुरु ने अपने अनुयायियों को सशस्त्र क्रांति के लिए तैयार किया था। अमृत-पान का प्रथम समागम भी इसी नगर में आयोजित हुआ था, जहाँ अब केशगढ़ गुरुद्वारा है।

अमृत राय : दशम गुरु का एक दरबारी कवि, जो छैल राय भट्ट का लड़का था और जिसने गुरु जी की आज्ञानुसार महाभारत के सभापर्व का 'भाखा' में काव्यबद्ध अनुवाद किया।

अमृतसर : पंजाब का सुप्रसिद्ध नगर और सिखों का सर्वप्रमुख धर्मधाम, जिसकी स्थापना का इतिहास सं० 1621 वि० से प्रारम्भ होता है, जब तीसरे गुरु अमर दास की आज्ञानुसार गुरु रामदास ने सुलतान विंड गाँव के पास एक तालाब खुदवाया जो शनैः-शनैः परवर्ती गुरुओं के योगदान से सिखों का एक महान् तीर्थ बन गया।

अलफ़खान (अलिढखान) **:** दिल्ली के बादशाह औरंगज़ेब का एक सेनापति जिसके साथ सं० 1747 वि० में गुरु गोविंद सिंह का नादौन के स्थान पर युद्ध हुआ।

आनंद : वाणी विशेष, जिसकी रचना गुरु अमरदास ने सं० 1611 वि० में की थी और जो अब गुरु ग्रंथ में रामकली राग के अंतर्गत संकलित है। सिखों के मांगलिक अनुष्ठानों और अमृतपान के अवसर पर इसका पाठ होता है।

आरती : गुरु नानक का एक प्रसिद्ध पद्य, जिसको परम्परागत आरती के खंडन के उद्देश्य से उचरा गया था। अब यह पद्य गुरु ग्रंथ के धनासरी राग के अंतर्गत संकलित है और सामान्यतया सायंकाल को इसका पाठ होता है।

आलम चंद : एक पहाड़ी सेनापति जो गुरु गोविंद सिंह की सेना के साथ युद्ध करता हुआ घायल हुआ था।

आसावार (आसा की वार) : गुरु नानक विरचित एक वार जिस में गुरु नानक के अतिरिक्त कुछ श्लोक दूसरे गुरु अंगद के भी सम्मिलित हैं। इसका संकलन गुरु ग्रंथ में आसा राग के अंतर्गत हुआ है और सिखों के मांगलिक अनुष्ठानों में इसका कीर्तन होता है।

आसा सिंह : गुरु गोविंद सिंह का एक विश्वस्त लिपिक जिस ने एक बार गुरु जी की आज्ञा प्राप्त किए बिना एक निर्धन सिख को 500 रु० की हुंडी लिख दी थी।

उदय सिंह (उदे सिंह) : मुलतान ज़िला के अलीपुर गाँव के निवासी माईदास का सबसे बड़ा सुपुत्र जो गुरु गोविंद सिंह का अनन्य अनुयायी था। इसने सं० 1758 वि० में एक युद्ध के समय राजा केसरी चंद जसवालिया का सिर काट कर भाला में पिरो कर अपने गुरु के सम्मुख प्रस्तुत किया था।

कलमोट (खेड़ा कलमोट) : ऊँना तहसील, थाना नूरपुर का एक गाँव, जिसके निवासियों ने 'सिख संगत' को अकारण लूट लिया था। अंतत: गुरु गोविंद सिंह ने इनको दंड दिया था।

कहलूर : रियासत बिलासपुर का क्षेत्र इस नाम से प्रसिद्ध है। इसके राजा भीमचंद का दशम गुरु से कई बार युद्ध हुआ।

कीरतपुर : आनंद पुर के पास एक कसबा, जिसकी स्थापना सं० 1683 वि० में गुरु हर गोविंद सिंह ने सतलुज नदी के किनारे की थी।

केसोदास : एक तांत्रिक पंडित जिसने गुरु गोविंद सिंह के दरबार में दुर्गा को मंत्रबल से प्रकट करने का निराधार तौर पर दावा किया था।

केसरी चंद : जसवाल का पहाड़ी राजा, जो गुरु गोविंद सिंह के विरुद्ध युद्ध करते समय भाई उदे सिंह के द्वारा मारा गया था।

कैठल : शिमला के पास एक पुरानी पहाड़ी रियासत जिस का एक नामांतर 'क्योंथल' भी है। इसके राजपूतों ने दशम गुरु के विरुद्ध युद्ध में भाग लिया था।

खिदराबाद : अंबाला ज़िला की खरड़ तहसील की एक बस्ती, जिसमें एक बार गुरु गोविंद सिंह ठहरे थे और वहाँ पर विरोधियों से उनकी एक भिड़ंत भी हुई थी।

गुरबखश सिंह (राम कुँवर) : बाबा बुड्ढा का वंशज, जिसका पहला नाम राम कुँवर था और गुरु गोविंद सिंह से अमृतपान करके गुरबखश सिंह बना। गुरु जी से सदा अपनी आध्यात्मिक जिज्ञासाओं का समाधान कराते और इस प्रकार गम्भीर रहस्यों का उद्घाटन हो पाता।

गुलेर : एक पहाड़ी रियासत जिसकी स्थापना राजा हरीचंद कटोचिया ने की थी और जो अब कांगड़ा ज़िला में है।

गूजरी : गुरु गोविंद सिंह की माता का नाम, जो करतारपुर के निवासी लाल चंद सुभिखिया की पुत्री और गुरु तेग बहादुर की सुपत्नी थी।

घमंड चंद : कांगड़ा का एक कटोच राजा, जिसने आनंदपुर के युद्ध में कई बार भाग लिया था।

चमकौर : ज़िला रोपड़ का एक प्रसिद्ध गाँव, जहां पर गुरु गोविंद सिंह ने आनंद पुर को त्याग देने के पश्चात् विश्राम किया और जहाँ उनके दो बड़े सुपुत्रों ने युद्ध भूमि में वीरगति प्राप्त की।

जीतो (माता) : गुरु गोविंद सिंह की सुपत्नी, जो लाहौर के निवासी हरिजस की पुत्री थी और जिसका विवाह सं० 1734 वि० में गुरु जी से सम्पन्न हुआ था। इसने तीन पुत्रों को जन्म दिया, यथा—जुझार सिंह, ज़ोरावर सिंह और फतह सिंह।

डल्ला बैराड़ : साबो की तलवंडी नामक गांव का जाट सरदार, जिसने सं० 1762-63 वि० में दशम गुरु को अपने गाँव में ठहराया, जहाँ अब दमदमा साहिब गुरुधाम है।

दया सिंह : सोढ़ी खत्री वंश का दया राम, जो लाहौर का रहने वाला था और जिसने दशम गुरु को अमृतसंचार के प्रथम समागम के अवसर पर सर्वप्रथम अपना शीश भेंट किया और दया सिंह बना। इसकी गणना 'पांच प्यारों' में होती है।

दयाल सिंह : तहसील तरनतारन के सुरसिंह गाँव का एक सिख जिसने गुरु गोविंद सिंह के पास रह कर अनेक युद्धों में भाग लिया।

दीना बेग (अदीना बेग) : पजाब का सूबेदार जिसका मूल नाम बहराम जंग था।

दीप सिंह : पोहूविंड गाँव का निवासी खरहा जाट, जिसने अमृतपान करके अनेक युद्धों में भाग लिया। अमृतसर गुरुधाम की रक्षा के लिए किए गए युद्ध में इन्होंने सं० 1817 वि० में अपना बलिदान दिया।

दुनी चंद : भाई साल्हो मसंद का पोता, जो आनंद पुर के युद्ध के समय 500 सैनिकों के साथ गुरु दरबार में आया। जब गुरु जी ने केसरी चंद के मस्त हाथी के साथ जूझने के लिए इसे नियुक्त किया तो यह वहाँ से भाग निकला। भागते समय गिर कर इसकी टाँग टूट गई और घर पहुंचने पर साँप ने डस लिया।

धरम सिंह : हस्तनापुर का निवासी संत राम जिसने दशम गुरु से अमृतपान किया और 'पांच प्यारों' में शामिल हुआ।

धीरमल : गुरु हर गोविंद सिंह का पोता, बाबा गुरदित्ता का पुत्र जिसका जन्म करतार पुर में सं० 1683 वि० में हुआ।

ध्यानसिंह माजरिया : माजरी गाँव का रहने वाला, जिसने दशम गुरु से अमृतपान किया और उनके दरबार में कविता करता रहा।

नंदलाल : मुंशी छज्जुराम का सुपुत्र, जिस का जन्म 1633 ई० में ग़ज़नी में हुआ। यह फारसी का उद्‌भट विद्वान् और प्रबुद्ध कवि था। गुरु जी के दरबार में रहकर इस ने अनेक प्रकार की कविताएँ लिखीं। बादशाह बहादुर शाह का यह शिक्षा गुरु भी रहा है।

निरमोह : रोपड़ में एक बस्ती जहाँ गुरु जी ने एक दुर्ग का निर्माण किया। आनंद पुर से कुछ समय के लिए आकर वे यहाँ पर रहे और इसी स्थान पर पहाड़ी राजाओं से गंभीर युद्ध किया।

पंमा : राजा भीमचंद का परमानंद नामक पंडित (पुरोहित) जो गुरु गोबिंद सिंह के पास पहाड़ी राजाओं का दृष्टिकोण प्रस्तुत करने आता था। अपने कपटी स्वभाव के कारण इसने गुरु गोबिंद सिंह से पहाड़ी राजाओं के कई युद्ध करवाए। इस के स्वभाव के कारण ही इस अनादर सूचक नाम पंमा स सम्बोधित किया जाता है।

पैंडे खान : (पायंदा खान) औरंगज़ेब का एक सेनानायक, जिस ने आनंद पुर के युद्ध में गुरु गोविन्द सिंह से द्वन्द्व युद्ध करने के पश्चात् प्राणों का उत्सर्ग किया।

बचित्र सिंह : गुरु गोविंद सिंह का एक योद्धा सिख जिस ने केसरी चंद द्वारा प्रेरित मस्त हाथी को मार भगाया था।

वज़ीर खान : सरहिंद का सूबेदार जिस ने पहाड़ी राजाओं की सहायता के लिए गुरु गोविंद सिंह के विरुद्ध लड़ाई लड़ने के लिए सेना भेजी।

बसोहली : जम्मू रियासत का एक प्रसिद्ध नगर, यहाँ का राजा गुरु गोविन्द सिंह का अनन्य भक्त था।

बिभौर : एक गाँव जो ऊना तहसील में है और जहाँ गुरु गोविंद सिंह कुछ समय के लिए ठहरे थे।

बिसाली : तहसील ऊना का एक गाँव जहाँ गुरु जी कुछ समय के लिए रहे थे।

भंगाणी : पाँवटा तहसील का एक गाँव जो सात मील पाँवटा से पूर्व दिशा में है और जहाँ गुरु गोविंद सिंह का पहाड़ी राजा भीम चंद आदि से 1746 वि० में सर्वप्रथम युद्ध हुआ था।

बूड़ा भाई : सुधा नामक रंधावा जाट का सुपुत्र जिस का मूल नाम बूड़ा था और जिस गुरु नानक ने सस्नेह बुड्ढा कहा। अपनी साधना के फलस्वरूप सिख पंथ में इसे विशेष आदर प्राप्त था। दूसरे से छठे गुरु तक इसी के द्वारा अभिषिक्त हुए। गुरु ग्रंथ की मूल प्रति का प्रथम ग्रंथी यही था भाई राम कुँवर (गुरबखश सिंह) जो गुरु गोविंद सिंह के दरबार में बहुत प्रतिष्ठित था, बाबा बुड्ढा का ही वंशज था।

भीम चन्द : कोहलूर (बिलासपुर) का पहाड़ी राजा, जिसका गुरु गोविंद सिंह के साथ गंभीर वैर था और जिस ने पहाड़ी राजाओं को प्रेर कर कई बार दशम-गुरु से युद्ध किया।

मुहकम सिंह : 'पाँच प्यारे' सिखों में से एक जिसका जन्म 1733 वि० में बूड़िया गाँव में हुआ। गुरु गोविंद सिंह को शीश अर्पित करके अमृतपान किया और चमकौर के युद्ध में अपना बलिदान दिया।

रहिरास : सायंकाल के श्रद्धालु सिखों द्वारा पढ़े जाने वाले कतिपय चुने हुए पद्यों का समूह, जिसका संकलन गुरु ग्रंथ में 'जपु' वाणी के पश्चात् हुआ है।

राम कुंवर : (देखो गुरबखश सिंह)।

लोहगढ़ : गुरु गोविन्द सिंह द्वारा बनवाया गया एक दुर्ग जो आनंदपुर में है।

वार भगौती (वार दुर्गा जी) : 'दुर्गा सप्तशती' पर आधारित और गुरु गोविंद सिंह के कर्तृत्व से सम्बद्ध 55 पद्यों की एक रचना जिस में वीर रस की निष्पत्ति हुई है और जिसका संकलन 'दशम ग्रंथ' में हुआ है।

साहिब सिंह : एक सिख जिसने 1756 वि० को अपना शीश गुरु गोविंद सिंह को भेंट किया और 'पांच प्यारों' में सम्मिलित हुआ। चमकौर के स्थान पर युद्ध करते हुए इसने वीरगति प्राप्त की।

सुंदरी (माता) : लाहौर निवासी राम सरन की सुपुत्री जिस का विवाह दशम गुरु से 1741 वि॰ में सम्पन्न हुआ। इसने श्री अजीत सिंह को जन्म दिया जो गुरु जी का सबसे बड़ा सुपुत्र था और जिसने चमकौर के युद्ध में वीरगति प्राप्त की।

सुखमणी : गुरु अर्जुन विरचित 24 अष्टपदियों और 24 श्लोकों की एक लम्बी कविता, जिसका सिख लोग प्रातःकाल में पाठ करते हैं और जिस का संकलन गुरु ग्रंथ के गउड़ी राग में हुआ है।

सैद खान : औरंगज़ेब का एक सेनापति जो 1759 वि॰ में आनंदपुर को विजय करने के लिए आया, परन्तु गुरु जी का दर्शन करते ही उसने अपनी सेना को त्याग कर गुरु जी का अनन्य भक्त बन गया।

सैदा बेग : पहाड़ी राजाओं की प्रेरणा से अलिफाखान के साथ दशम गुरु से युद्ध करने के लिए आनंदपुर आया, परन्तु गुरु जी के व्यक्तित्व से इतना प्रभावित हुआ कि गुरु जी के पक्ष से पहाड़ी राजाओं के साथ युद्ध करने लगा और अंततः वीरगति प्राप्त की।

सेनापति : गुरु गोविंद सिंह का एक दरबारी कवि और लिपिक, इसने 'चाणक्य नीति' का भाखा में अनुवाद किया था।

हिम्मत सिंह : सं॰ 1756 वि॰ में शीश भेंट चढ़ा कर गुरु गोविंद सिंह से अमृतपान करने वाला एक सिख, जिसकी गणना 'पांच प्यारों' में होती है।

————